

**DUE DATE SLIP****GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DATE	SIGNATURE

# वंश भास्कर

( द्वितीय खण्ड )

[ बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित ]

मूल लेखक :

सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकण आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३



एकाधिकारी वितरक

**बाफना बुक डिपो**

चौडा रास्ता, जयपुर-३

## तृतीयराशिप्रारम्भः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ तृतीयराशिप्रारम्भस्तत्र चण्डासिमधिकृत्य तन्मुख्याऽन्व-  
वायविस्तरवर्णनम् ॥

शुद्धशौरसेनीभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

इध कइवय्यं पिअरं चण्डीआणं गामं परणगाणं ॥

करिदूण जास थवणं भोदि जडो पण्डितो पहयराओ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डवदीसो जं गुरुं हड्डवदीवि कधेदि ॥

सो तत्तंसिपवोहिरो चारणगांधो जेदि ॥ २ ॥

॥ शुद्धमार्गधीभाषा ॥

गश्चिय गावरि चउब्भुयेइन्दपस्तगायलम्मि ॥

अप्पुणोव्व कयवं पहू खन्धावात्तं तम्मि ॥ ३ ॥

जिनकी स्तुति से मूर्ख भी उत्तम पंडित होजाय ऐसे परमज्ञानी, कवियों में  
श्रेष्ठ पिता चंडीदान को प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥ जिनको हाडोती के स्वामी  
हड्डपति रामसिंह भी गुरु कहते हैं वे "तत्त्वमसि" इस महावाक्य के जाननेवा  
ले, चारणों में मुख्य चंडीदान सर्वोत्कर्ष करके वर्तमान हैं ॥ २ ॥ तदनन्तर  
चतुर्भुज(चहुवाण)ने दिल्ली नगर में जाकर अपनी राजधानी स्थापित करी ॥ ३ ॥

इह कविवर्य पितरं चण्डीदानं नमामि परज्ञानम् । कृत्वा यस्य स्तवनं भवति जडः पण्डितः प्रभावराजः ॥ १ ॥  
हड्डवतीशो यं गुरुं हड्डपतिरपि कथयति ॥ स तत्त्वमसिप्रबोधशीलरचारणनाथो जयति ॥ २ ॥ गत्वाऽथ चतु  
र्भुज इन्द्रप्रस्थनगरे । स्वयमेव कृतवान् पूभः स्कन्धावारं तस्मिन् ॥ ३ ॥ एष कृतवान् निश्चितं कर्कोटकनामक  
न्यकावरणम् ॥ तमिममपि कथयाम्यहं तातपदोपान्तध्यानलेशात् ॥ ४ ॥

गीतिः ॥

एशे काही अबले ककोडअणाअकअकावलणं ॥

तमिमंवि कधेमि हगे ताहपदावंतधाणलेशाह ॥ ४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

इंद्रप्रस्थ चहुवानः राजधानी निज रक्खिय ॥

सत्तहि ७ प्रकृति सम्हारि प्रहतं विरचन परंपक्खिय ॥

साधन तप सिव अर्थ गयो मिहिंका धरनीधर ॥

असन १ पान २ तजि अधिप होय अविचल ध्याये हरं ॥

धर चरन इक्क १ अंगुष्ठ धरि बरस बीस २० व्रत निब्वहयो ॥

ध्रुव ढिग उँपेंद्र जिम सूलधर है अपिहितं मंगहु कहयो ॥ ५ ॥

पलनं खुल्लि परि पयन भंग बंदे तब भूपति ॥

अक्खिय ईतरन इष्ट मंडहिं न तजहिं मदीयं मति ॥

सेवककी प्रभुशक्ति सबन दब्बहिं २ करि सासन ॥

सुच्छमं धरम स्वभाव सुपे जानौ ३ पेटुता सन ॥

अबुद अगेसं हरि १ अप्प २ अज ३ विरचि मोहि बैठन दयो ॥

पुर इंद्रप्रस्थ रहि तहें प्रथित भुगै भुव सुप्रज भयो ॥ ६ ॥

सुं सुनि अस्तु कहि संमु नृपहिं पुनि कहिय पिक्खि नंत ॥

इसने ककोटक नागकन्या का वरण (विवाह) करना निश्चित किया, उसका भी पिता के चरणों के ध्यान लेश की कृपा से वर्णन करता है ॥ ४ ॥  
 १ दिल्ली नगर में २ राजा को आदि लेकर राज्य के सात अङ्गों का सात प्रकृति कहते हैं ३ नाश करने को ४ शत्रुओं का ५ हिमालय ६ पर्वत में ७ भोजन ८ चलायमान नहीं होकर ९ शिव को १० भूमि पर ११ अंगूठा १२ निवाहा १३ विष्णु १४ शिव १५ प्रत्यक्ष (औंढे) होकर ॥ ५ ॥ १६ पलकों को खोल कर १७ महादेव को नमस्कार किया १८ कहा कि और कोई बांछा नहीं है १९ महादेव को २० मेरी बुद्धि २१ अमोघ आज्ञा को प्रभुशक्ति कहते हैं २२ आज्ञा २३ सूक्ष्म (बारीक) २४ चतुराई से २५ पर्वतराज २६ आप [शिव] २७ ब्रह्मा ने २८ प्रसिद्ध २९ श्रेष्ठ प्रजावाला अथवा श्रेष्ठ सन्तानवाला होकर ॥ ६ ॥ ३० सो ३१ ऐसा ही होओ ३२ नव्रता.

कर्कोट कन्यासुमना मिलन ] तृतीयराशि—प्रथममयूख (५०६)

काँद्रवेय कर्कोट सुता सुमना मुहिँ सेवत ॥

कष्ट सहत कन्या सु इष्ट धँव चहत अयोनिज ॥

अहँ तव ढिग अज्ज नारि हैहँ पटु जोनिज १ ॥

अरु जोग तोहि फुरिहँ अतुलरसिद्धिरु सेवधि४नांग५नव ९॥

भक्तहिँ समप्पि इम वर अभय भये पिहित भगवान भँव ॥७॥

॥ दोहा ॥

सुमनाकोँ समुझाय सिव, पठई सुँपहु समीप ॥

काँत अयोनिज यह कह्यो, मामँक भक्त महीप ॥ ८ ॥

जो अंगज प्रिय ज्वँलन को, विबुधँन व्यसँन विदार ॥

वपु चतुर्थ४मम बँन्दि है, काको तव सुकुमार ॥ ९॥

षट्पदी ॥

भुँ मम भक्त मँम भक्त सुतन मारँक मँख १ श्रुतिमय,

इहिँ आसापूरनि उमँहु तिहिँ हुव लाखि सुँतनय ॥

सो नृप मोहि प्रसन्न करन आयउ तुषँर अंग ॥

तव आश्रम सँन कोस तीन ३ मन्नहु पूरव मग ॥

वर विहित रूचँय जाय सु वरहु सुनि सुमना तपँवेस तजि ॥

धँव पहँ सवेग निजरूप धरि जातभई पसुनाँथ जजि ॥ १० ॥

दोहा

हरँ निदेश लहि लखत हो, सुमना सरँनि नरेस ॥

कन्या रतनहि लखि कह्यो, कित आवत राँकेस ॥ ११ ॥

१ कर्कोटक नामक सर्प कीरपति ३ योनि से उत्पन्न नहीं हुआ होय ऐसा ४ योगविद्या ५ धन ६ नव कुल के ७ सर्प ८ अन्तर्धान ९ महादेव १० अष्ट राजा के पास ११ पति १२ मेरा १३ अग्नि का प्यारा १४ पुत्र १५ देवताओं के १६ दुःख का विदारण करनेवाला १७ अग्नि मेरा चौथा शरीर है १८ तब वह कुमार किसका है अर्थात् मेरा ही है १९ सो २० बहुवाण राजा मेरा भक्त है २१ मेरे भक्त बाणासुर के पुत्रों को मारने वाला २२ यज्ञ २३ देवी २४ अष्ट पुत्रवाली हुई २५ हिमालय २६ पर्वत पर २७ से २८ बींद [ वर ] वरने योग्य २९ तपस्विनी का ३० पति के पास ३१ शिव को पूजकर ३२ शिव की आज्ञा ३३ सुमना का मार्ग ३४ चन्द्रमा.

कोन समुद्र १ पवित किय, कोन कुमुद २ गुनगोर ॥  
 अरु सुभको सिसुमार अरि ३, कोन सुदिष्ट चकोर ४ ॥ १२ ॥  
 कर्कोटक १ सुमना कह्यो, उदधि १ अथाह उदार ॥  
 कुमुद २ इन्द्रप्रस्थक प्रकृति २, भोगवती ३ सिसुमार ३ ॥ १३ ॥  
 मम तप भक्तिप्रसन्न सृष्ट, यह सूचन किय आज ॥  
 बनिहैं तोर चकोर ४ बिधुं, राज चतुर्भुजराज ४ ॥ १४ ॥  
 सु मम अग्नि ४ बर्षु सुतहुहै, अयोनिजहु तव ईष्ट ॥  
 सो मुनि मैं लहकी लती, सुरतरु तव भुज सिष्ट ॥ १५ ॥  
 कथन हमहिं भूपहु कह्यो, ईस प्रसाधित एह ॥  
 धर्मसहायहि होहु धरि, नागसुता मम नेह ॥ १६ ॥  
 मुनि लँछन नृप गोत्रके, वसत हुते जहँ बँछ ॥  
 ब्रती विरचि पाहिलें नृपहि, उन पथ सखिय अछ ॥ १७ ॥

### हरिगीतम्

आन्वितिकी १ तिमही त्रयी ३२ वार्ता ३ रु नीति ४ पढायकैं,  
 चण्डासिकों मुनि वत्स पुनि सुमना दई परिनायकैं ॥  
 सब धर्म दोउन २ कों सुनाय बहोरि आश्रम रामके ॥

कुमोदिनी [रात्रिविकाशी कमल] ॥ ११ ॥ हे गुनगौरि कौनसा शुभ शिशुमा  
 २ चक्र है कि जिसमें तेरे जैसा चन्द्रमा उदय हुआ ३ श्रेष्ठ दृष्टि रूपी कौन  
 मा तेरा चकोर है ॥ १२ ॥ ४ सुमना नामक स्त्री ने कहा कि कर्कोटक नाम  
 क सर्प तो मेरे उत्पन्न होने का अथाह समुद्र है और इन्द्रप्रस्थ के राज्य की  
 प्रकृति [राजा को आदि लेकर राज्य के सात अंग] रात्रि विकाशी कमल  
 ५ सर्पों की पुरी मेरे उदय होने का शिशुमार स्रक् है ॥ १३ ॥ मेरे तप और  
 भक्ति से प्रसन्न होकर विश्व ने आज यह जनाया है कि हे चन्द्रमा चार हा  
 गोंवाला शोभायमान राजा तेरा चकोर बनेगा ॥ १४ ॥ सो [चहुआन] अग्निरूपी  
 मेरे चौथे शरीर का पुत्र है योनि से नहीं उपजनेवाला १० तेरा प्रिय है, यह  
 सुन कर ११ बेलि रूप मैं प्रकलित हुई, हे आर्य १२ कल्पवृक्ष रूपी तुम्हारे भुजों  
 में लिपटने के अर्थ ॥ १५ ॥ १३ महादेव के वरदान का १४ राजा के गोत्र के लक्ष्मण  
 नामक मुनि १५ वत्स नामक मुनि १६ व्रत धारण करने वाला बनाकर १७ न्या  
 यशास्त्र १८ ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद १९ कृपि, गोरक्षा और वाणिज्य इन  
 तीनों को वार्ता कहते हैं, अथवा इतिहास विद्या २० चहुआन को २१ परशुराम के

भवनागमनकुलदेव्यर्चन ] तृतीयराशि—प्रथममयूख (५११)

धनुवेदकों पाठिबे यहै पठयो महातप धामके ॥ १८ ॥

कहि यों दयो नृप सिखिख सो अब जाय राज्यहि अहरो ॥

सबही फुरै तुमकों तथापि कहयो गृहस्थनको करो ॥

धनुवेद सुनि नृप सिखिखयो जमदग्निमुत सन जायकै ॥

आलीढ १ प्रत्यालीढ २ लघुवैसाख ३ मंडल ४ लायक ॥१९॥

गुरुदखिना करि ईष्ट अर्पित वत्सकों वलि बंदिकै ॥

सुमना संची सह इंद्र आयउ इंद्रप्रस्थ अनंदिकै ॥

करि और्व अंगैजकों पुरोहित धौम्य धीर्धन धर्म ज्यों ॥

करिबे लग्यो हि सम्हारि राज्यविधेय बेदन धर्म ज्यों ॥ २० ॥

आसाप्रपूरनि ईश्वरी कुलदेवि आलय थपिकै ॥

किय अष्टि १६ अंग उपेत अर्चन पुष्प अंजलि अप्पिकै ॥

निज पौर १ जैनपदादि आश्रम ३ वर्णा ४ मारग आनिकै ॥

त्रय ३ लोक त्यों अतिदान किस्तिवितान सन्निभ तानिकै ॥२१॥

पुनि अंग सप्तक ७ शुद्धकै हुंतही दिसाजयकों चढ्यो ॥

रविवंसमंडन ज्यों भरुत विरुद्ध व्यालनपै बढ्यो ॥

१ याद है २ तोभी ३ गृहस्थियों के करने का जो धर्म कहा है सो करो ४ पर  
शुरामसे युद्ध समयमें वामपग को समेट कर दाहिने पग को फैलाना ५ दाहि  
ने पग को समेट कर बायें पग को फैलाना अर्थात् दाहिना और बायां पैतरा  
बदलना ७ एक बैध (विलस्त) की छेटी से दोनों पग रख कर युद्ध करना ८ गोलाकार  
फिर कर युद्ध करना ये सब धनुर्विद्या के पदन्थास हैं ॥१६॥ ९ इच्छानुसार देक  
र १० पुनि वत्स मुनि को नमस्कार करके ११ सुमना रूपी इन्द्राणी साहित  
१२ और्व मुनि के १३ पुत्र को १४ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसे विद्वान् धौम्य  
को १५ युधिष्ठिर ने किया जैसे ॥२०॥ १६ आशापूरण नामक देवी को १७ अपने  
घर में स्थापन करके १८ सौलह अंग साहित १९ पूजन २० पुष्पाञ्जलि देकर  
अपने पुर के और २१ देश आदि के लोगों को ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थ और  
संन्यासी इन आरों आश्रमों में चारों वर्णों को लाकर कीर्ति को डेरा के २२ सदृश  
(जैसा) तान कर ॥ २१ ॥ फिर राज्य के सातों अंगों को शुद्ध करके २३ शीघ्र  
ही २४ दिग्विजय करने को चढ़ा, जैसे २५ सूर्य वंश का मंडन २६ भरुत नामक राजा  
२७ सप्तों पर चढ़ा था.

दृगगोल ठाननतैं विलोल कटाच्छ घोटक निकखसे ॥  
 वह व्योम बारनतैंहु बारिद उच्च बारन उक्खसे ॥ २२ ॥  
 नृपहू कव्यो यह अट्ट ८ सारथि सेव्यमान सु सज्जही ॥  
 दुव २ चक्रके रथ अक्र जो यहँ होंस भुगन अज्जही ॥  
 छिति तो पताकनतैं छई लगि लोक बागन वीसरैं ॥  
 पिक बंसि खेह पराग जो विनु अंब भृगन भा करें ॥ २३ ॥  
 मनि मंजु भूषण पुष्प बल्लरि गुल्म आश्रय त्यों तजैं ॥  
 हिंदोलके तरु थंभही नाहे भिदिपालन जो रजैं ॥  
 विनु स्रोत जो जल दान के न प्रनाल अद्भुत व्है वहैं ॥  
 करपत्र पत्र विहीन भल्लन केतकी सुम को कहैं ॥ २४ ॥  
 गजकुंभ जंगम रुक्ख खंध वटैलसस्यन जो लसैं ॥  
 बमथू वनैं जलजंत्र चित्रविचित्र जो नचि निकखसैं ॥  
 गजदंत केतकके सिरे विनु तिकख अग्रन जो वनैं ॥

गोल नेत्रवाले चपल घोड़े ठानों में से ऐसे निकसे किं जैसे नेत्रों में से कटाच्छ निकसता है. एरावत से और मेघों से भी ऊंचे बहुत से हाथी निकले ॥ २२ ॥ राजा भी आठ सारथियों से सेयाहुआ सभ कर दो पहियों के रथ पर वह सूर्य आज ही उस सूर्य की घराघरी की होंस को भोगने के लिये चढ़ा. तब भूमिको तौ ध्वजाओं से छा ली, जिसको देख कर लोग बागों को भूलनेलगे. अब यहां सेना और बाग का रूपक अलंकार कहते हैं. सेना में वंसी है वही तौ कोयल है; रज (धूलि) है वही पुष्परज है सो बिना ही आ मू वृक्ष के भ्रमरों को शोभित करती है; यहां सेना पक्ष में भ्रमर धीर और बाग पक्ष में भ्रमर मधुप हैं ॥ २३ ॥ बेलें और पसरे हुए वृक्षों के आश्रम को छोड़ कर सुन्दर मणियों के भूषण ही पुष्प हैं; वृक्ष के खंभों बिना के गोफण [ पत्थर फेंकने का चर्मयंत्र ] के हिंडोले शोभायमान हैं; बिना ही भरनों के हाथियों के दान के जल से अद्भुत परनाले बहते हैं; करवत हैं वही केतकी के पत्र हैं. बिना बाण के भाल [ तीर का फल ] है वही केतकी का पुष्प है ॥ २४ ॥ हाथी रूपी चलतेहुए बटल नामक वृक्ष के कंधे रूपी शाखा पर कुंभस्थलों रूपी फल शोभित हैं; हाथियों की मूंडों से जलकण निकलते हैं वेही नानाप्रकार के फुहारे नख कर निकलते हैं; हाथियों के दंत ही केतकी के से सिरे हैं; जिनका अग्रभाग तीखा नहीं है; छोटी ध्वजाओं के दंड हैं सोही सरु के वृक्ष हैं; उनके वस्त्र



लघु केतुदंडन जो सरू पटपत्र तंडवकाँ तनै ॥ २५ ॥

तनुभल्ल जो नहि मल्लिका कलिकादि सोभित स्याम व्है ॥

असि जो सुदर्शनपत्र उद्गत नीर अल्ल ललाम व्है ॥

न लताविगुंफित जालिका नरबीर वेष्टन जो करै ॥

नारंग के फल अर्द्ध गोलक जोन घंट प्रभा करै ॥ २६ ॥

विनु अंधि चाभर १ हंस २ वार्हमयूर २ जोन किलोलकै ॥

वर कुंतदंडन इच्छु जो अध उद्ध लास्य विलोलकै ॥

मखतूल फुंदन मोचिकाफल सप्त ७ रूप दिखाय जो ॥

सुभल्ल १ चर्मन कंजके विनु पुष्प पत्र सुहाय जो ॥ २७ ॥

खुर खुराण पंथ प्रनालिका बहु तोय संग न जो तजै ॥

बड केतुदंड खजूरकै छद इक्क जोन छवी छजै ॥

संदेह निर्णय गर्भ जो पृतना वखानन धी धरै ॥

नृप राम तो दल तास उपवन सत्य गोचरही करै ॥ २८ ॥

है वही सरू के पत्तों के समान नाच करते हैं ॥ २५ ॥ इयाम रंग को धारण कर  
नेवाली छोटी भालें (तीरों के फल) हैं सोही बेल के वृक्ष की कलियां शोभित हैं  
तरवार है सोही सुदर्शन वृक्ष से उत्पन्न हुए पत्ते और उसी खड्ग में आबी (नी-  
र) है वही सुन्दर गीलापन है; गुथीहुई जाली (शिर पर बांधने का फतेपेच) ही  
नल है जिसको वीर पुरुष अपनी पाघ बनाते हैं, अथवा पाघ पर बांधते हैं. घंटा  
है सोही नारंगी के आधे गोले की शोभा को धारण करती है ॥ २६ ॥ चमर है  
सोही बिना पगों के हंस और मोरछल हैं सोही मयूर किलोल करते हैं. श्रेष्ठ भा  
ला के दंड हैं सोही नीचे और ऊपर के दोनों भाग सांठा (गन्ना) के समान चप  
लता के साथ नाच करते हैं. और रेशम के फूंद ही केले सात रूप दिखाते हैं [ के  
ले सात प्रकार के होते हैं] छत्र और ढालें ही बिना पुष्प के कमलों के पत्ते शोभि  
त हैं ॥ २७ ॥ खुरों से सुंदरहुए मार्ग ही पानी का संग नहीं छोड़नेवाले धोरे हैं.  
बड़े ध्वजदंड हैं सोही एकपत्र के खजूर की शोभा से शोभित हैं. गर्भ का निर्ण-  
य करने में, गर्भ में लडकी है अथवा लडका है, बुद्धि में संदेह ही रहता है इसी  
प्रकार इस सेना के वर्णन में भी (यह सेना है कि वाग है) यह संदेह ही है  
तौ हे राजा रामसिंह! उस चहुवान की सेना के वाग की सत्यता दृष्टि से देखे  
ही होती है, जैसे गर्भ की सत्यता दृष्टि से देखे ही हुआ करती है अथवा निर्ण-  
य है बीच में जिसके ऐसे संदेह अलंकार को इस सेना के वर्णन के बीच में बु  
द्धि धारण करती है. जैसे—



आराम रसिक सु भूप सरदहु माँहि बागनमें चलयो ॥  
 यह वस्तु प्रतिनिधि आहि द्वापर तो न है हमरो छलयो ॥  
 पहिलैं पुरी मथुरा चतुर्भुज १ आय जहव बुल्लये ॥  
 तिन हारिकैं अधिके उपायन संग व्है दुतही दये ॥ २९ ॥  
 विजयाश्व पुष्कर भूप जहव आयकैं पुनि बिंटयो,  
 अजपालकी स्थितिकों मनो गरदांय नागगिरी लयो ॥  
 विजयाश्वनैं नृपकों स्वकीयें सुताहि इंदुमती २ दई,  
 ससिवंस १ पाटव वंस २ कै यह पुब्ब उढहता भई ॥ ३० ॥  
 आवंत्य १ अर्बुद २ जित्ति बल्लि सौराष्ट्र ३ तैं बल्लि ले चलयो,  
 आनूप ४ सूर्यारक ५ सुमील ६ रु कालवन ७ जयकैं दलयो ॥  
 मनु १ भानु २ चंद्र ३ कृसानु ४ के कुल यों प्रतीचिय १ के जये ॥  
 आटव्य १ सावर २ पांड्य ३ केरल ४ जित्ति कुंतल ५ त्यों लये ॥ ३१ ॥  
 मरहट्ट ६ केतुक ७ चोल ८ मूसिक ९ बिंध्य १० वासक ११ जेर कैं  
 रु विदर्भ १२ जुत कर्णाट १३ द्रविड १४ हु जित्तये न आवेरकैं ॥

“गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धसूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः ।

पतत्यथो धाम विसारि सर्वतः किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः ॥ ”

साव काव्य में नारद के आने के वर्णन में शंका हुई कि यह सूर्य है, फिर निर्णय किया गया कि सूर्य की गति तो तिरछी है और सारथि अनूरु है, इससे यह सूर्य नहीं है, फिर संदेह हुआ कि यह अग्नि है, तब निर्णय किया गया कि अग्नि तो ऊर्ध्वज्वलन है और यह तो सब ओर फैलनेवाला तेज नीचे को पड़ता है, इससे अग्नि नहीं है ॥ इसी प्रकार यहां भी सेना और बाग के वर्णन में निर्णय है बीच में जिनके ऐसा संदेह अलंकार जानो ॥ २८ ॥

१ इस प्रकार बाग का रसिक २ यह वस्तु प्रतिनिधि (एक वस्तु के स्थान में अन्य वस्तु को स्थापन करना) है, इसमें है राजा रामसिंह ! हमारा छल रुपी आपका कोई संदेह तो नहीं है, ४ चहुवाण ने ५ यादवों को ६ भेट (नजराना) ७ दी ॥ २९ ॥ ८ घेर लिया ९ अजमेर को जैसे १० नाग पहाड़ ने ११ घेर रक्खा है १२ अपनी बेटी १३ चंद्रवंश और १४ अग्निवंश के यह प्रथम ही १५ विवाह हुआ ॥ ३० ॥ १६ उज्जैन का यांत १७ पुनि १८ कर ( विराज ) १९ पश्चिम दिशा के २० मनुवंशी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी और प्रभार आदि अग्नि वंशियों को इस प्रकार जीता ॥ ३१ ॥ २१ दबाकर २२ देरी नहीं करके.

आभीर १५ अरु तैलिंग १६ देस कलिंग १७ आदिक जे सबै,  
दिस यों अवाचिय २ जित्ति प्राचिय ३ मैं मिलान दये तबै ॥ ३२ ॥  
गोनर्ह १ अंग २ सवंग ३ आंध्र ४ रु कामरूप ५ हु जित्तिकै,  
पुनि ताम्रालिप्त ६ विदेह ७ मागध ८ मद्र ९ आदिक कित्तिकै ॥

इम दब्बि पूरब ३ को उदीचिय ४ माँहि भूपति आतभो,  
तहाँ चीन १ वाल्हिक २ अर्ब ३ ऊर्गा ४ तुखार ५ दाव ६ दवातभो ॥ ३३ ॥  
लंपाक ७ पुनि काश्मीर ८ तंगणा ९ केरुप्रस्थल १० के जई,  
स्तवकार ११ मूलिक १२ जित्तिकै भुव लै दसेरक १३ लौ लई ॥  
प्रत्यंत जित्ति समस्त उत्तर ४ को हु यों अपनायकै,  
पुनि मध्यदेशन जित्तिकै सबै तप्यो नृप आणकै ॥ ३४ ॥  
सिर्व १ आसपूरानि अंबिका २ कुलदेविका ३ नतिसौ नम्यौ,  
सुमना ११ रु इंदुमती १२ उमै २ सरत्त रानिनमै रम्यौ ॥  
करि राजसूय १ रु अश्वमेध २ समस्त भूपति बुल्लये,  
इन आदि ओरहु सब तास घनै जमौतटपै गये ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

कनकजप १ वेदी २ कलित, अद्रिन सम उपहार ३ ॥

द्विज दुर्मदकरि दक्खिना, जिहि मख अतुल उदार ॥ ३६ ॥

कोसन लग जमुना जुगल २, पुलिन भये मखपूत ॥

कहन कित्ति उदधिन अवधि, दोरयो तस नडि दूत ॥ ३७ ॥

१ दक्षिणदिशा २ पूर्वदिशा में ३ मुकाम ॥ ३२ ॥ ४ उत्तरदिशा में ५ स्लेच्छ  
देश ( यहाँ पर जितने देश गिनाये हैं उन सबका यथार्थ पता नहीं लगता  
कि कौन देश कहाँ है और इनमें बहुधा देशों के पर्याय नाम भी नहीं मि  
लने कोशों में भी इन देशों के नाम यही मिलते हैं कि जो मूल में लिखे  
ग हैं, जिनका लिखना व्यर्थ है; और कितने देशों के पर्याय नाम और पते  
मिलते हैं वे इतने प्रसिद्ध हैं कि जिनका लिखना उपयोगी नहीं, इस कारण  
मे देशों के नाम को टीका हमने छोड़ दी है सो पाठक लोग समझें ) ॥ ३४ ॥  
६ महादेव को और आशापूरण नामक ७ देवी को ८ नम्रता से ९ यज्ञ ॥ ३५ ॥  
जिस अत्यंत उदार राजा के यज्ञ में सोना के यज्ञस्तंभ, प्रसिद्ध वेदी, पर्वतों  
के समान सामग्रों और ब्राह्मणों को प्रमत्त बनानेवाली दक्षिणा थी ॥ ३६ ॥  
यमुना नदी के किनारे दोनों यज्ञ से पवित्र होगये और समुद्र की अवधि

शुद्ध ब्रजदेशीया प्राकृतभाषा ॥

मनोहरम् ॥

निकसी हिमालयतैं सूचक कलिंद करि,

इन्द्रप्रस्थहीसों लाह जवतैं लयोकरी ॥

हेमजूष १ वेदी २ पात्र ३ प्रमुख पुरातन,

पदार्थ परि काली कांति कपिस भयोकरी ॥

संकल्प पूरनवहै बिप्रनन लीनैं छत्र१,

चामर२व्यजन३दहूपत्र४न छयोकरी ॥

भानुजा समुद्रनलों भूकों भूपतीके भूरि,

सत्रनके खवरि निरंतर दयोकरी ॥ ३८ ॥

गीर्वाणभाषा गीतिः ॥

चण्डासेरपि तनुजः सुमनसि सामन्तदेव२इति जातः॥

तनया तथेन्दुमत्यां जातैका सा समाख्यया श्यामा१ ॥३९॥

दत्ताभूतपुरुरवसे साऽवन्तीशप्रमारतनुजनुषे ॥

या राष्ट्रसेनजननी पितामही धुन्धुमारभूभर्तुः ॥ ४० ॥

इन्दूदय इव सिन्धुर्वदधे सामन्त२देव ऊर्जस्वी ॥

अधिगतसमस्तविद्यः स्ववीर्यसुखमन्ववीभवज्जनकम् ॥४१॥

तक उसकी कीर्ति कहने के लिये उस (चहुवाण) का नदी रूपी दूत दौड़ा ॥ ३७ ॥ सूर्य है जनानेवाला जिसका ऐसी यमुना नदी हिमालय से निकली जब से दिल्ली नगर से लाभ लेती रही, और सोने का यज्ञस्तंभ, वेदी, यज्ञ के पात्र आदि प्राचीन पदार्थों के भीतर पड़ने से काली क्रान्तिवाली यमुना काले पीले मिश्रित रंगवाली होतीरही. उस चहुवाण का संकल्प पूर्ण होकर ब्राह्मणों को छत्र चमर पंखे और दानपत्र दिये जिनसे छाईहुई रही, ऐसे सूर्य की पुत्री (यमुना नदी) समुद्रों तक भूमि को चहुवान राजा के बहुत यज्ञों की निरंतर खबर देती रही ॥ ३८ ॥ चंडासि (चहुवान) के भी सुमना नाम स्त्री में सामंतदेव पुत्र हुआ तैसे ही इन्दुमती में श्यामा नाम की एक कन्या हुई ॥ ३९ ॥ वह कन्या उज्जयिणी के पति पंचार राजा पुरुरवा को दीगई, जो राष्ट्रसेन की तौ माता, और धुन्धुमार राजा की दादी हुई ॥४०॥ चन्द्रमा के उदय होने पर समुद्र बहै इसीप्रकार पराक्रमी सामंतदेव बड़ा जि

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

षट्पदी

सब विद्या बुधसूर कुमर सामंतदेवरहुव,  
जनक मगग अनुगामि भयो अति विदित जिति भुव ॥  
जदुबर अर्जुन कुलज द्रविड नृप केतुमान जहँ,  
सुता स्वयंबर रचिय गयउ चण्डासि सुतहु तहँ ॥  
कार्मुक सहाय रनचण्ड करि जिति सबन कन्या जयो,  
प्रभु राम अपर ताको प्रकट भुव प्रचण्डरनामहु भयो ॥४२॥

दोहा

केतुमानकी कन्यका, धन्य सुरुचि २१ अभिधान ॥  
आनि कुमार प्रचण्डरइम, व्याह्रा निगमबिधान ॥ ४३ ॥

षट्पदी

अवनिईस चहुवान १ समा सत १०० भुगि अवनि सुख,  
करि प्रचण्ड अभिषेक राज्य दै तिहिँ दिलीपं रुख ॥  
आसापूरनि १ ईस २ अरचि जाया दुवर संजुत,  
जोग तुहिनगिरि जाय निरंत सद्यो सिद्धन नुत ॥  
पथ ब्रह्मरन्ध्र तजि असु पवन भैव प्रधान विरहित भयो,  
पति देह संग रानिन २ प्रनत देह जुगल रदह नहिँ दयो ॥४४॥  
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वांशगो तृतीयराशौ चडा-

इने सम्पूर्ण विद्या पाकर पिता को अपने पराक्रम के सुख का अनुभव कराया ॥४१॥  
१ पंडित २ पिता के ३ पीछे चलनेवाला ४ धनुष के ५ हे प्रभु रामसिंह ६ दू  
सरा ७ नाम ८ वेद की रीति से ९ संवत् १० राजा दिलीप ने अपने पुत्र को  
राज्य दिया जिसप्रकार ११ आशापूरण नामक कुलदेवी और १२ शिव को  
१३ पूजकर १४ दोनों स्त्रियों सहित १५ हिमालय पर्वत पर १६ निरंतर १७  
सिद्ध लोगों से १८ स्तुति किया हुआ १९ शिर के मार्ग से ( कपाल फूटकर )  
२० प्राणवायु को छोड़ कर २१ संसार में प्रकृति के जन्म मरण से २२ विर  
क्त ( मुक्त ) हुआ २३ विशेष नम्रता के साथ २४ दोनों ने २५ दोनों शरीर  
अग्नि को दिये, अर्थात् राजा के शरीर के साथ जलगाई.

सीन्द्रप्रस्थस्कन्धावारस्थापन-वामदेववरवितरणा-तत्काद्रवेयकर्को-  
टकमुतासुमनोमिलन-वत्साधीतविद्यतद्विवाहन-समात्तधनुर्वेदनिजभ-  
वनाऽऽगमनौर्वाङ्मूर्जर्चीकाऽनुजपुरोधीकरण-कुलदेव्यर्चन-वार्णाश्र-  
म्यव्यवस्थापन-दिग्विजयप्रस्थान-पुष्कराधिराजयादवावतंसविजया  
श्वतनयेन्दुमतीपरिणयन-कृतदिग्विजयनिजराज्यमहामखाऽनुष्ठान-त-  
त्संततितानकसूनुसामन्तदेवश्यामोऽहमन-चातुर्भुजीऽप्रामारिपुरू-  
रवोऽविवहन-समधिगताऽध्येतव्यचाहुवाणकुमारस्वयम्बरस्थद्रविडे-  
न्द्रकेतुमत्कन्यासुरुचिः२॥ प्रसह्यपरिणयन-कृततद्विषेकपरिणामत्स-  
पत्नीकचण्डासिऽपरिव्रजन-तत्समाहिततनुत्यजनं प्रथमोऽमयूखः  
॥ १ ॥ आदितस्त्रिचत्वारिंशत्तमः ॥ ४३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रेतभाषा

दोहा

सामन्तादिकं देव २ हू, भयो सबन सिर भूप ॥

चवणा चलाय प्रचंड २ पन, किन्तो उदित अनूप ॥ १ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पूकेपूर्वायणकेतीसरराशिमेंचहुवाणकादिल्लीकोरा-  
जधानीबनाना,महादेवकेवरदानसेउसकर्कोटकनामकसर्पकीपुत्रीसुमनाका  
मिलना,वत्समनिसेविद्यापढनाऔरउसकाविवाहहोना,धनुर्वेदपढकरघर  
आना,ऊर्वकेपुत्रऔरअर्चिकेछोटेभाईकोपुरोहितकरना,कुलदेवी  
कापूजनकरना,वर्णऔरआश्रमधर्मकास्थापनकरना,दिग्विजयपर  
चढ़ाईकरना,पुष्करकेस्वामीयादवकुलकेसुकुटविजयाश्वकीबेटीइन्दु-  
मतीसेविवाहकरना,दिग्विजयकरकेअपनेराज्यमेंबड़ेयज्ञकाअनु-  
ष्ठानकरना,उस(चण्डासि)कीसन्ततिकोफैलानेवालेपुत्रसामन्तदेव  
औरश्यामानामकपुत्रिकाकाउत्पन्नहोना,औरचहुवाणकीपुत्रीश्या-  
माकापँवारपुरूराकेसाथविवाहहोना,पढनेयोग्यविद्याओंकोपढ-  
करचहुवाणकेपुत्रकास्वयंवरमेंस्थितद्रविड़देशकेअधिपति-केतुमान-  
कीकन्यासुरुचिसंबलात्कारविवाहकरना,उससामन्तदेवकाराज्या-  
भिषेककरकेअन्तमेंस्त्रियोंमाहितचहुवाणकावानप्रस्थहोनाऔरउस  
राजाकासमाधिसेशरीरछोड़नेकाप्रथममयूखसमाप्तहुया॥१॥और  
आदिसेतैलायालीसमयूखहुए॥४३॥

१ सामन्त है आदि में जिसके ऐसा देव अर्थात् सामन्तदेव चवण ( )

नृप प्रचंडकौ सुत भयो, महादेव ३ अभिधानं ॥  
वीतिहोत्र नृप जाँमि जँनि, वीतिहोत्र कुल भान ॥ २ ॥

पटपात

महादेव ३ हुव मरूप देवराजहिँ रन दंडक ॥  
अरि गिरि खंडन अर्सनि खलन दंडन खिजि खंडक ॥  
अपर नाम कर अधिप प्रथित सो हुव परभंजन ॥  
रक्खयो जिहिँ मरुराज अटकि चालीस ४० अँहर्गन ॥  
सामंतदेव २ तजि राज्यसुख परभंजन ३ हित अपि भुव ॥  
सँजमी सुरुचि २।१रानी सहित हरि धरि हृदय गतायुँ हुव ॥ ३ ॥

दोहा

परभंजनके हत्यतै, इकादिन रमत सिकार ॥  
होमधेनु मुनि प्रमतिकी, मरी दइव अनुहार ॥ ४ ॥  
इहिँ निमित्त भार्गव दयो, बंसनासको साप ॥  
जब जान्यौ तब नृप सजँव, आनिपख्यो पय आप ॥ ५ ॥  
विनुजानै हुव विव्रती, किय इम नमू नरेस ॥  
सँदय मुनिहु दोस न समुझि, अकिख्य समुचित एस ॥ ६ ॥  
संतति व्हैहै इक सुत, तव कुल पँथित प्रसंस ॥  
पीडिन कहु अंतर परत, विस्तैर पैहै बंस ॥ ७ ॥

सोरठा

रैवत गिरि अधिराज, निमि विदेहकुल सुँदमपटु ॥

१ नामवाला २ सूर्यवंशी राजा की अथवा वीतिहोत्र नामक राजा की ३ वाहिन है ४ माता जिस की ऐसा ५ अग्नि कुल का सूर्य ॥ २ ॥ ६ मारवाड़ देश का पति ७ देवराज को रन में दण्ड देनेवाला ८ शत्रुरूपी पर्वतों को तोड़ने में वज्र ९ वह महादेव दूसरे नाम से परभंजन १० प्रासेह हुआ ११ मारवाड़ के राजा को १२ दिन १३ भूमि देकर १४ संयम रखनेवाला (ध्यान धारणा और समाधि इन का संयम कहते हैं) १५ मरा ॥ ३ ॥ ४ ॥ १६ अंगु के पुत्र ने १७ शीघ्र ॥ ५ ॥ १८ दयालु १९ कहा २० यथायोग्य ॥ ६ ॥ २१ प्रसिद्ध प्रशंसा योग्य २२ विस्तार पावेगा ॥ ७ ॥ २३ स्वामी २४ इन्द्रियों को रोकने

सोऽठ ऋद्धे समाज, जनपद बाहु अधीन जिहिं ॥ ८ ॥

सुता तदीय सुजान, परभंजन ३ आनी परनि ॥

रूपवती ३१२ अभिधान, ज्यौं राघववरवि जानकी ॥ ९ ॥

रूपवती ३१२ उरजात, रुद्रभ ६ के पहिले चरन ॥

हुव कुबेर ४ विख्यात, महादेव ३ नृपकै कुमर ॥ १० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सचरणागद्यम्

प्रचंडपुत्र राजाधिराज महादेव ३ नैं या राजकुमार कुबेर ४  
कौं दिव्यतेजा लखि अपर नाम करि देवमहा ४ हू मान्यौ ॥

ताकौंही वाक्चातुरी करि कितेक कवि भांगधादि लोकन  
कार्यवसादिनमें महोतदेव ४ नाम करि बखान्यौ ॥

या देवमहाकौं स्वजनक सासनीय प्रतिहारराज नप्ता धन्वध  
रेस देवराजनैं अपने ऊर्जा ४१२ अभिधानक अक्षरनकौं उदितका  
रिका आत्मजा विवाहि दई ॥

धर्मभंजाकैसाहस करिकुबेरनैं कैविनकी कोटिन कलित कीर्तिलई ११

राजा महादेव धर्मनीतिरको धुरंधर प्रजा १ दिन १ कौं सृगमुख

१० राशिको रवि राजमान ॥

अरु या पुरुषकारपर सूर्यके सासन करत तहाँ अधिकमासलौं

(चतुर) १ बहुत ऋद्धिवाला सोरठ नामक २ देश जिस के भुजों के  
पिथीत है ॥ ८ ॥ ३ उसकी बेटी ४ रूपवती नामक ५ रघुवंशियों के सूर्य  
(मंचन्द्र) ने सीता को आनी ऐसे ॥ ९ ॥ ६ रूपवती के पेट से पैदा हुआ  
और नक्षत्र के पहिले पाये में (आर्द्रा नक्षत्र में जन्मलेनेवालों के नाम  
'कु' 'व' 'इ' 'छ' इन अक्षरों पर होते हैं) होने के कारण कुबेर नाम प्रसिद्ध हुआ  
दूसरा ६ वचन की चतुराई से १० बड़वा भाट आदि लोकों ने ११ काव्य  
और वंशावलि आदि में १२ अपने पिता के आज्ञाकारी, पड़िहार राजा के  
दोहिते सारवाड़ के राजा देवराज ने अपने नाम के अक्षरों का उदय कर-  
नेवाली ऊर्जा (बलवान् का नाम है) नामवाली पुत्री व्याह दी १३ कवियों की  
कोटि में प्रसिद्ध कीर्ति प्राप्त की १४ धुर खींचनेवाला १५ प्रजारूपी दिन का  
भर राशि का शोभायमान सूर्य इस देवमहा रूपी सूर्य के पुरुषार्थ पर  
शासन करने समय वहाँ अन्य राजाओं रूपी चंद्रमा भाग्य के भरोसे पर,

अपनों बढिबो बोयबैठे इतर नृप दैवपर कलानिधान ॥

या प्रभुके पुण्यपावक<sup>१</sup>कौ पुहवीपै प्रसरत अखिल अघ अं-  
क अर्पित हैहयार्जुन सर समासादित स्थावर सृष्टि जानी ॥

अरु याके बर्द्धक इंदु<sup>२</sup> और अवनीस<sup>३</sup> न आपवमुनि की नहों स आनी <sup>१२</sup>  
जाके हस्तनै संकल्पनके सलिल करि सदाही मदकल महा  
करीके करको बानिक लयो ॥

अरु दीक्षा करि दंपतीके मख मख प्रति महाफलकी बधाईमें  
अंचलग्रंथी कैदी बारंवार छूटत भयो ॥

तदनंतर महीस महादेवनै देवमहा<sup>४</sup>प्रगल्भपुत्रके प्रतापसौं प्रस  
न्न होय वैखानस वृत्ति<sup>३</sup>लई ॥

त्यौही रूपवतीनै मानों मुख दिखाईहीमैं शुद्धांत स्वामिपनकी  
सुखमा अपनी लालित बधू ऊर्जा<sup>४</sup>कौ अप्पिदई ॥ १३ ॥

अधिक मास के समान अपना बढना डुबो बैठे क्योंकि अन्य महीनों में तो संक्रान्ति से अमावास्या सदैव आगे रहती है परंतु अधिकमास में संक्रान्ति के दिन अधिक और चंद्रमा के दिन न्यून होने से अमावास्या पर समाप्त होनेवाला चंद्रमा संक्रान्ति तक नहीं पहुंचसक्ता, अर्थात् अमावास्या को लोप कर संक्रान्ति आगे निकल जाती है इसीकारण से यहां पर अधिक मास के चंद्रमा की वृद्धि का डुबो बैठना लिखा है . १ हैहयार्जुन के बाणों से प्राप्त अर्थात् हैहयार्जुन बाण संधान करता था जिस समय संपूर्ण सृष्टि जड़वत् होजाती थी उसीप्रकार इस देवमहा के पुण्य रूपी अग्नि के पृथ्वी पर फैलते समय संपूर्ण पाप सूर्य में अर्पित होकर जड़वत् होगये . और इस देवमहा के बढानेवाले चंद्र रूपी अन्य राजाओं ने वसिष्ठ मुनि की होंस नहीं की ( ये दोनों कथा किसी पुराण की हैं परंतु हम को उपलब्ध नहीं हुई ) जिस देवमहा के हस्त ने संकल्प के जल से सदैव मद टपकतेहुए बड़े गजराज के शृण्ड का अनुकरण किया (मस्त हाथी की शृण्ड सदैव टपकती रहती है इसीप्रकार देवमहा के हस्त से संकल्पका जल टपकता रहा) और यज्ञ की दीक्षा से स्त्रीमर्तार के यज्ञ यज्ञ में बड़े फल की बधाई के निमित्त गठजोड़े रूपी कैदी बारंवार छूटे ( जब बड़े फल की बधाई आती है तब कैदी छोड़ेजाते हैं यह लोकप्रथा है ) उस पीछे राजा महादेव ने देवमहा जै से प्रौढ ( होशियार ) पुत्र के प्रताप से प्रसन्न होकर वानप्रस्थ आश्रमधारण किया . २ जनाने के स्वामिपन की ३ परमशोभा ४ सुन्दर ५ बहू ( जनाने का मालिकपन अपनी बहू ऊर्जा



सूत्रसरणि सरणीवृत्तिके समान विदेहराज सुदमकीसुताहू  
स्वामीके साथ सधर्मिणीभावकों सफल कीनों ॥

अरु समयके अंत दोउश्न उचित अगाध अर्थके उपमेय संपन्न  
लोकनको लाह लीनों ॥

ऊर्जा४१सहित अभिषिक्त राजा देवमहा४हू अद्वितीय ऊर्ज  
स्वी भयो ॥

जाके जसने विनाही तरंड लोकलोकलों निवास लयो ॥ १४॥  
देवमहा४सों ऊर्जा४१में राजकुमार विंदुसार ५ने जन्म पायो ।  
सोही मंत्रसंक्तिमें महाप्रभाव इतर अभिख्या करि मंत्रसहाय  
तथा मंत्रजय ५हू कहायो ॥

या मंत्रजय ५कों अनुद्रुह्य अन्वय अवतंस वैरोचनि वलिवंसद-  
र्देक कलिंगराज कृतसेनने कन्या विभावरी ५१विवाही ॥  
सूरिलोकने जाकी सुसीलता सबही सतीनसों सिवाय सिराही १५  
राजा कुवेर४तो ऊर्जा ४१ सहित अंगयकों आवास करत भयो  
अरु याको अंगज राजा विंदुसार ५ विभावरी ५१सहित राज्यभा-  
रकों धरत भयो ॥

राजा विंदुसार ५सों विभावरी ५१में राजकुमार सुधन्वा ६ने उद्गमें लह्यो  
जासमयमें सूकरपति चालुक्य रूप४के अंगज राजा पृथु ५ने

१० देकर रूपवती भी अपने पति के साथ गई ) ॥ १३ ॥ १ डोरा मूर्ख के सा-  
थ जाता है जैसे २ मार्ग चलनेवाले की वृत्ति के समान पति के साथ रहना  
३ धर्म जिस का हम ( स्त्री ) भाव को सफल किया ३ अथाह अर्थ ( मो-  
हनी ४ उपमा लगती है जिस को ऐसे ५ समृद्धिवाले (स्वर्गादि) लोकों का  
साथ लिया ६ अभिषेक कियाहुआ ७ पराक्रमी ८ नाव ९ पुराणों के मत  
१० शत्रुओं के पार सम्पूर्ण पृथ्वी के जिस पर्वत का घेरा है उसका नाम लोका-  
शोक पर्वत है ॥ १४ ॥ १० राजा की तीन शक्तियों में एक का नाम मंत्रशक्ति  
राज्यका भावार्थ है सलाह में कुशल ११ दूसरे १२ नाम से १३ अनुद्रुह्य के वंश का  
१४ कुटुम्ब १५ विरोचन के पुत्र वलिके वंश का प्रधानवाला कलिंग देश के राजा कृ-  
तसेन ने विभावरी नामक अपनी कन्या विन्दुसार को विवाही १६ पण्डितों ने  
१७ ॥ १० घन का १८ निवास १९ पुत्र २० जन्म २१ सूकर नाम क्षेत्र का पति.

अपनों दिग्विजय चह्यो ॥ १६ ॥

जानै\*प्रतीचीके विजयमें पहिलैं इन्द्रप्रस्थ पुरही आय घेरयो ॥

अरु चो४मुनों पृतनासों प्रगल्भ होय उपायन आनिबेको आदेस गेरयो  
तब मंत्रजय५ नै सद्योधारण सचिव सहित मंत्रमें अरिका असंधि१  
सील उग्रयान२ आसन३ विधेय विग्रह४ दुंराप द्वैधी भाव५ जान्यो ॥

अरु आश्रय६ को अनुचित अपने आश्रम२ को पुत्रफल मानि सिद्धा-  
तमें समरसज्जा सोयबो ही श्रेय मान्यो ॥ १७ ॥

सुधन्वा६ के पट्टमें दोय२ सिखा सिवाय करि सन्नद्ध होय मंत्रजय ५  
महारण चलायो ॥

अरु स्यंदन१ सिंधुर२ सति३ पति४ संकुलितं अनीकिनी उभय२ को स  
माज समुद्रसो नजरि आयो ॥

रथनकी रथ्या करि बीरन पहिलैं वसुमती पृथिनके प्रहार सहनलगी ॥

अरु बाननके पूबेही चक्री चक्रवाँककों पार जावनकी कहनलगी ॥ १८ ॥

\* पश्चिम दिशा १ सेना २ प्रौढ ( बड़प्पन ) पन को प्राप्त होकर ३ भेट ( नजराना ) ४ हुकुम दिया ५ सद्योधारण नामक कामदार के साथ ६ सलाह में ७ सन्धि ( मिलाप ) नहीं करनेवाला ८ चढ़ाई करने में उग्र ९ आसन ( शत्रु को दबाने के लिये पास ही पड़ाव डाल कर रहनेवाला ) करने वाला १० लड़ाई में दुर्लभ अर्थात् जिससे विजय मिलना दुर्लभ है ११ द्वैधी भाव ( ऊपर से मित्र और भीतर से शत्रु होकर रहना ) और १२ आश्रय ( शरणार्थ होकर रहने ) को अनुचित समझकर १३ अपने घर में पुत्र सोजूद है, यह गृहस्थाश्रम का फल मान कर ॥ १७ ॥ १४ अपने पुत्र सुधन्वा के पट्ट अर्थात् सिंहासन में १५ दो शिखा ( सिंहासन के पांच शिखा [ कलश ] होते हैं जिनमें अपने पुत्र की अधिकता के लिये दो कलश ) अधिक लगाकर १६ रथ १७ हाथी १८ घोड़े १९ पैदल २० हनले अवकाश रहित २१ सेना २२ दोनों राजाओं का समूह समुद्र सा दीखा रथों की जलियां ( मार्ग ) से २३ तीरों के पहिले ही २४ पूठियों के प्रहार २५ भूमि सहने लगी, अर्थात् अभी तक बीरों ने तो प्रहार सह ही नहीं, परंतु रथों के इधर उधर फिरने से पहियों की पूठियों के प्रहार भूमि सहने लगी इसी प्रकार बाण तो बीरों के शरीर में पार हुए ही नहीं, जिससे पहले ही २६ चक्री २७ चक्रों को पार ( दूर ) चलने की कहनेलगी कि यहां अंधेरा होने लगा ॥ १८ ॥

भीरुनके पूर्वही दिसानके महामंदकल मातंगैनके गाढ गिरन लगे ॥

अरु फेरंडनसों प्रथमही समुद्रनके सलिल फिरन लगे ॥

ऐसे समय राजा बिंदुसार ५ करंड उपासंगसों नागनागाच निकारे

अरु सिंजनीपैं समारोपसों सत्रुनके समूह समासम प्रसरि डारै ॥१९॥

सचिव सद्योधारणनैं चालुक्यराजको मंत्री सुमति मारिलयो ॥

अरु महीस मंत्रजय ५ नैं सामंतनको संघट्ट तोरि संपत्त पृथु-  
पैंही दाव दयो ॥

दोऊ २ धर्म धरेस जुद्ध करि स्पंदन १ सप्ति २ सारथी ३ सत्त्व

४ बिहीन होय नियुद्धको निपुणत्व दिखावत भये ॥

अरु अपनैं अपनैं सूरनको समरमें साहसही उचित सिखावत भये ॥२०॥

जहाँ पृथ्वीपति पृथु ५ को प्रकर्षण प्रहार प्रारब्धसों परयो ॥

जासों चंडासिकुलके चंद्र वसुधेश्वर बिंदुसार ५ नैं अस्त्यद्रि अ-  
मरालय आवासं करयो ॥

तदनंतर मंत्री सद्योधारण स्वकीय स्वामिकों सिमु जानि उचित

उपायनैं उपहारैं आनि अर्पित करि आत्मीय अरिको उत्सारण

करायो ॥

१ कायरों के गाढ तौ छूटे ही नहीं, अर्थात् युद्ध प्रारंभ हुआ ही नहीं, इस से पहले ही १ मदोन्मत्त २ दिग्गजों ( दिशा के हाथियों ) के गाढ छूटने लगे. युद्धस्थल में मांस भक्षण करने को ४ शृगाल तौ फिरे ही नहीं जिनसे पहले ही ( सेनाओं के चलने से ) समुद्रों का ५ जल फिरने लगा. ऐसे समय में राजा बिंदुसार ने ६ टिपारे रूपी ७ भायों से सर्प रूपी ८ बाण निकाले ९ प्रत्यंचा पर १० बाणों के चढ़ाने से सब शत्रुओं के समूह को असम करके फैला दिया, अथवा जो सम (अपनी बराबरी के ) थे उनको असम ( समता हीन ) करके बिखेर दिया ॥१६॥ ११ उमरावों का समुदाय १२ शत्रु १३ बाहु युद्ध १४ कुशलता ॥ २० ॥ १५ विशेष करके १६ प्रबलता से १७ अग्नि कुल के चंद्र भूपति बिन्दुसार ने १८ अस्ताचल रूपी १९ स्वर्ग में २० निवास किया २१ जिस पीछे २२ अपने मालिक को बालक जान कर २३ भेद २४ सामग्री २५ नजर २६ अपने शत्रु का २७ कूच कराया.

अरु सुधन्वा ६ के अभिषेक करि पठनीय पढाय पिताहीकी  
पढ़ति पर लायो ॥ २१ ॥

दोहा

विंदुसार ५ चालुक्यबल, खग्नै बल बल खाय ॥  
खाय गिरयो कैलि ज्यों करन, करन देवनुत काय ॥ २२ ॥

मनोहरम्

पृथुसे प्रतापी इंद्रप्रस्थमें उपरि आये,  
ढार्यो वहे निसंक भागधेयहीको भर है ॥  
संधि यान विग्रह दुराप देखि आश्रयकों,  
उचित न देख्यो भूप अँची असि अर है ॥  
तन गिनि भोगनकों रोचकसे रोगनकों,  
छत्र छोरि कीनै छत्र गिद्धनके पर है ॥  
मंत्रजय ५ रायनीति धर्म अधिकाय बीर,  
पान दीनो कैरपै न जान दीनों कैर है ॥ २३ ॥

दोहा

प्रविंसी बँहि विभावरी ५११, स्वामि अंग लै संग ॥  
सिसु हि सुधन्वा ६ भूप जो, जयकारक जुरि जंग ॥ २४ ॥  
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयराशौ सुरुचि ५११ सा  
मन्तदेव २ रूपवती ३११ महादेवो ३ जौ ४११ देवमहो ४ विभावरी  
१ पढ़ने योग्य २ मार्ग. देवताओं से अपने शरीर को दस्तुतियोग्य करने के लिये  
पाण्डवों की सेना को खाकर ५ युद्ध में कर्ण गिरा था उसी प्रकार बलवान् चहु  
वान् बिन्दुसार सोलंखी पृथु की ४ सेना को शतलवारों के बल से खाकर गिरा  
॥ २२ ॥ ७ कर लेने का भार डाला—संधि, यान और विग्रह में तौ उस पृथु को  
दुर्लभ जाना, और उसके आश्रित होने को उचित नहीं समझा ९ शीघ्र तर-  
वार खींची, भोगों को तृण के समान समझा १० और रोगों को सुधा (भूख)  
के समान माना, कि अंत में तौ वे खावेंहीगे. ११ कर (खिराज) पर प्राण  
तौ दिये परंतु १२ खिराज नहीं जाने दिया १३ अग्नि में ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में सुरुचि, सामन्तदे  
व, रूपवती, महादेव, ऊर्जा, देवमहा, विभावरी, बिन्दुसार के चरित्र और

५।१ बिन्दुसार ५ चरित्रसुधन्वा ६५ भिषेकवर्णनं द्वितीयो २ मयूखः  
॥ २ ॥ आदितश्चतुश्चत्वारिंशत्तमः ॥ ४४ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषां ॥

सचरणागद्यम् ॥

राजा सुधन्वा६कुलीर४के रविकी रजनी जिम वृद्धि पाय सभ  
स्त सस्त्र१सास्त्र२में सावधान भयो ॥

अरु सचिवसिरोमणि सद्योधारणा सहित अपनै चंडचक्रको  
चलाय चालुक्यराज पृथु५को पुर जरदाय लयो ॥

तहाँ राजा पृथु५दीक्षितहोय अग्निष्टोमको यजमान कितनोंक  
कर्म तो करन पायो ॥

अरु एकादस११कपालभय विष्णुको चरु१बनाय बिभाकरनको  
चरु२बनावत सुधन्वा६के संदेसहारकन जाय आहवको आँव्हान  
लगायो ॥ १ ॥

याँह अध्वरको विस्तरसों विधान तो उत्तर अयनके अंतर प्र-  
थम१पुरुषार्थ१के प्रपंचमें प्रमानिये ॥

परंतु पृथु५नै प्रारंभही कीनों हो याँतै बन्नों कर्म यहाँहुँ समाप्त  
करि जानिये ॥

जाके कुलमें सोमयाग भयो होय सोहि अग्निष्टोमको अधिकार पावै  
अरु नही भयो होय तो पहिलै इंद्र१अग्नि२के निमित्त पसुंकरि  
पीछै या अध्वरको आरंभ चलावै ॥ २ ॥

सुधन्वा के राज्याभिषेक वर्णन का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ और  
आदि से चवालीस मयूख हुए ॥ ४४ ॥

१ कर्क संक्रान्ति की रात्रि घड़े जिस प्रकार बढ कर २ प्रचण्ड सेना को ३  
सोलंखी राजा पृथु के नगर को घेरलिया ४ यज्ञ की दीक्षा लेकर ५ यज्ञ वि-  
शेष ६ बारह सूर्यो का ७ चरु ( हविष्यान्न, होमने का अन्न ) घता रहा था  
उस समय ८ दूतों ने ९ युद्ध करने का १० बुलावा (आवाहन) ॥१॥ ११ इस यज्ञ  
का विस्तार तो इस ग्रन्थ के १२ उत्तरायण के १३ भीतर १४ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,  
इनमें से प्रथम धर्म का वर्णन करेंगे उस रचना से जानना परन्तु यहाँ १५ संक्षेप से

दोहा ॥

यातैं उत्तररूपक्ष यह, राचि पृथुपंचालुकराज ॥

करनलगो श्रुतिगेय क्रतु, लहि द्विज सूरि समाज ॥ ३ ॥

प्रथम मातृश्रवर्चनशंकरि रु, आभ्युदयिक किय आह्व ॥

तदनु वरे यजमान तिहिं, ऋत्विजसोलहशंकराह्व ॥ ४ ॥

सर्व वेद बुध च्यारि४ऋक१, वेद तत्व बुध च्यारि४॥

यजुर्वेद२बुध च्यारि४अरु, च्यारि४साम३बुध धारि ॥ ५ ॥

अथ तद्वत्विङ्नामानि ॥ गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुब्युगमाविपुला ॥

ब्रह्मा१च ब्राह्मणाच्छंसी२पोता३चाग्नीध्रक४स्तथा ॥

एते४सम्पूर्णवेदज्ञा वृताऽस्मिन् पृथुना क्रतौ ॥ ६ ॥

ग्रावस्तोता१ततो होता२तथाच्छावकसा३ऽऽब्हयः ॥

मैत्रावरुण ४ इत्येते वृतास्तेनर्ग्विदो बुधाः ॥ ७ ॥

नेष्टा१चाध्वर्यु२रुन्नेता३प्रतिप्रस्थातृ४संयुताः ॥

यजुर्वेदविदो विप्राश्चालुक्येन वृता इमे ॥ ८ ॥

इस कारण से पृथु ने १ उत्तर पक्ष का आरंभ किया, अर्थात् सोलंखी पृथु ने पहिले सोमयज्ञ नहीं किया था इस कारण से प्रथम इन्द्र और अग्नि के निमित्त पशु का चलिदान करके फिर इस अग्निष्टोम यज्ञ का आरंभ किया २वेद में कहीहुई रीति से ४यज्ञ ५ पण्डितों का ॥३॥ पहिले मातृ (देवी) पूजन किया और फिर आभ्युदयिक (जिससे अभ्युदय अर्थात् प्रताप बढ़े उस आह्व का आभ्युदयिक कहते हैं) आह्व किया ४जिस पीछे उस यजमान (सोलंखी पृथु) ने ऋत्विजों (यज्ञ करनेवालों) की वरणी की जो वहाँ पर मिले उन्हीको बरा ॥४॥ चार ऋत्विज तो सय वेदों को जाननेवाले और चार ऋत्विज ऋग्वेद के तत्त्व को जाननेवाले, यजुर्वेद को जाननेवाले चार, और सामवेद के जाननेवाले चार ॥५॥ इसप्रकार सोलह ऋत्विज होते हैं, जिनका क्रम और नाम आगे बताते हैं ॥ उस यज्ञ में चारों वेदों के जाननेवाले ब्रह्मा, ब्राह्मणाच्छंसी, पोता और आग्नीध्र नाम के इन चार ऋत्विजों की वरणी करी ॥६॥ और ऋग्वेद के जाननेवाले ग्रावस्तोता, होता, अच्छावकस और मैत्रावरुण इन चारों की वरणी की ॥७॥ चालुक्य राजा ने यजुर्वेद के जाननेवाले नेष्टा, अध्वर्यु, उन्नेता और प्रतिप्रस्थाता नामवाले ऋत्विजों की वरणी करी ॥८॥

उद्गाता १ प्रतिहर्ता २ च प्रस्तोताऽपि तृतीयः ३कः ॥

सुब्रह्मण्य ४ च तत्रैते ४ समाप्ताः सामसूर्यः ॥ ९ ॥

येन्येऽप्यस्मिन् क्रतौ योग्या वृतास्तेन महीभृता ॥

श्रोतव्या रावराट् तेऽप्येकादशैश्चतुर्विंशतः ॥ १० ॥

एकः १ सोमप्रवाको १ अन्ये चमसाऽध्वर्यवो १० दश १० ॥

सभ्यत्वे मुनयः शेषा वृताश्चालुक्यभूभुजा ॥ ११ ॥

अथर्विग्वरणाविधिः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पदी

ऋत्विज पूरव समुख बैठि चालुक उत्तरमुख,

इष्ट बंधु अरू प्रथम बेर खट ६ देवरीति रुख ॥

होता १ सुचि २ अध्वर्यु २ होहु मम रवि २ जगन्नाता ॥

ससि ३ ब्रह्मा ३ पर्जन्य ४ होहु मामक उद्गाता ४ ॥

जिम होत्राच्छंसी ५ होहु जल ५ चमसाध्वर्यु ६ मयूख मम ॥

इम बरि समंत्र सुर विप्र बलि कथित २७ बरे सो सुनहु क्रम ॥ १२ ॥

सामवेद के पण्डित उद्गाता, प्रतिहर्ता, प्रस्तोता और सुब्रह्मण्य नाम को धारण करनेवाले इन चार ऋत्विजों की वरणी की ॥ ९ ॥ उस राजा ने इस यज्ञ में और भी जो योग्य थे उन ब्राह्मणों की वरणी की, हे रावराजा रामसिंह ! इस यज्ञ के योग्य वे भी ग्यारह सुनने योग्य हैं ॥ १० ॥ एक तो सोमप्रवाक और बाकी के दश चमसाध्वर्यु चालुक्य राजा ने बाकी के मुनियों की वरणी सभासदों में की ॥ ११ ॥ ऋत्विज लोग पूर्व को मुख करके बैठे और सोलंखी राजा उत्तरदिशा को मुख करके बैठा, प्रिय बान्धवों को और प्रथम छः देवताओं को रीति पूर्वक बरे सो बताते हैं, कि अग्नि तो होता ( ऋग्वेद का ऋत्विज ) और संसार की रक्षा करनेवाला सूर्य मेरा अध्वर्यु ( यजुर्वेद का ऋत्विज ) होओ, चन्द्रमा ब्रह्मा ( चारों वेदों के जाननेवाला ऋत्विज ) और मेघ मेरा उद्गाता ( सामवेद का ऋत्विज ) होओ, जल है सो मेरा होत्राच्छंसि ( चारों वेदों को जानने वाला ) होओ, और अग्नि की ज्वाला है सो ही चमसाध्वर्यु होवै, इस प्रकार सब की वरणी मंत्र सहित करके ऊपर कहे हुए देवता और ब्राह्मणों को फिर बरे सो क्रम सुनो ॥ १२ ॥

## दोहा

स्फिगहि वाम करकंजलै, अक्षत कर अपसंव्य ॥  
 ऋत्विज दक्खिन जानु ६, भूप वरन किय भव्य ॥ १३ ॥  
 ब्रह्मा १ कौं पथमहि बस्थो, इम कहि पृथु ५ अभिधान ॥  
 भारद्वाज सगोत्र मै, वरत तुम्हैं विधियान ॥ १४ ॥  
 पुरट १ गज २ रु कौशेय पट ३, संपि ४ समीर जवज्ञ ॥  
 दीजै जिहिं बिच दच्छिनामैं विरचत वह यज्ञ ॥ १५ ॥  
 तत्थ विरंचेन थान तुम, स्रष्टा १ होवहु स्वामि ॥  
 इम मुनि चालुक अर्थना, भारुयो द्विजहु भवामि ॥ १६ ॥

## षट्पदी

उद्गाता २ होता ३ रु तंदनु अध्वर्यु ४ वरे मुनि ॥  
 तदनु ब्राह्मणाच्छंसि ५ तंदनु प्रस्तोता ६ कौ पुनि ॥  
 वरि नृप मैत्रावरुणौ ७ तदनु प्रतिप्रस्थाता ८ करि ॥  
 पोता ९ प्रतिहता १० बहोरि अच्छाबाकस ११ वरि ॥  
 नेष्टा १२ आग्नीध्र १३ हि वरि तदनु सुब्रह्मण्य १४ हु पृथु ५ वरिय ॥  
 वरि प्रागस्तोता १५ मुनि बहुरि उन्नेता १६ वरणी करिय ॥ १७ ॥

१ स्फिग (डांडी का मूल भाग) ही २ कमल ३ दाहिने हाथ से ४ घुटने को छूकर ५ शुभ ६ नाम ( राजा पृथु ने इस प्रकार नाम कह कर पहले सब वेदों को जाननेवाले प्रथम ऋत्विज ब्रह्मा को वरा ) ७ ब्रह्मा की जगह ८ सोना ९ रेशमी वस्त्र १० पवन के वेग को जाननेवाले १० घोड़े १२ यहां ब्रह्मा के स्थान पर हे स्वामी ! तुम १३ ब्रह्मा होओ १४ इस प्रकार चालुक राजा की याचना सुन कर १५ होऊंगा १६ ब्रह्मा को वरे पीछे सामवेद के प्रथम ऋत्विज को १७ ऋग्वेद के दूसरे ऋत्विज को १८ जिस पीछे १९ यजुर्वेद के दूसरे ऋत्विज को २० सब वेदों को जाननेवाले दूसरे ऋत्विज को २१ सामवेद के तीसरे ऋत्विज को २२ ऋग्वेद के चौथे ऋत्विज को २३ यजुर्वेद के चौथे ऋत्विज को २४ सब वेदों को जाननेवाले तीसरे ऋत्विज को २५ सामवेद के दूसरे ऋत्विज को २६ ऋग्वेद के तीसरे ऋत्विज को २७ यजुर्वेद के प्रथम ऋत्विज को २८ सब वेदों को जाननेवाले चौथे ऋत्विज को वर कर जिस पीछे २९ सामवेद के चौथे ऋत्विज को राजा पृथु ने वरा और ३० ऋग्वेद के प्रथम ऋत्विज को वर कर फिर ३१ यजुर्वेद के तीसरे ऋत्विज की



## दोहा

ब्रह्मा १ को जो बरणा विधि, त्यों इन १५ सों कहि व्यस्त ॥

सोलह १६ ही भव कहि बरे, भनै भवामि समस्त ॥ १८ ॥

यों वरि किय मधुपर्क करि, सवनकोहि सनमान ॥

तहँ ऋत्विज १६ पुण्याहमिति, स्वस्ति पढेहि सुजान ॥ १९ ॥

दक्षिणाऽर्थ संकल्प पुनि, कीनों चालुक जत्थ ॥

पृथु ५ कों किय इन ऋत्विज १६ न, सोम समर्पन तत्थ ॥ २० ॥

## सोरठा

दे आसिख सुभवादि, दीक्षितकै किय ऋत्विज १६ न ॥

मंगल सब तिलकादि, तर्दनु भयो जो सुनहु क्रम ॥ २१ ॥

दीक्षित पृथु ५ आचम्य, सुरन १ ऋत्विजन २ नरन ३ सों ॥

प्रार्थन करिय प्रणाम्य, अंमर संत्र आरंभको ॥ २२ ॥

मुचिमुख पूर्व छ ६ देव, बरे भूप तिनसों सविधि ॥

किय मार्गशी कृत सेव, प्रार्थन सुनहु मुँ राम २०२।४ पहु ॥ २३ ॥

मम होता १ जु कृसाँनु १; देवयज्ञ सो देहु मुहि ॥

यों सवसों यजमानु, कहिय उपांशु परोक्षवत ॥ २४ ॥

वरणी करी ॥ १७ ॥ यहां पर ऋत्विजों की वरणी करी जिनका स्पष्ट क्रम आंगे के अंकों से जानो. सब वेदों के जाननेवाले १।२।३।४. सामवेद के १।३।२।४. ऋग्वेद के १।४।३।१. यजुर्वेद के २।४।१।३.

जों ब्रह्मा के वरने की रीति बताई उसीप्रकार इन प्रत्येक ( एकेएक ) को कहा. यजमान ने कहा 'भव' ( होओ ) और सब ऋत्विजों ने कहा 'भवामि' ( होवेंगे ) ॥ १८ ॥ ४ दही, घृत, जल, सहत और खांड इन पांचों वस्तुओं के मिलाने को मधुपर्क कहते हैं. ५ मंगलीक कार्यों में तीन वेर 'पुण्याहम्' यह कह कर फिर स्वस्तिवाचन पढते हैं सो पढा ॥ १९ ॥ ६ सोलंखी राजा ने दक्षिणा के लिये संकल्प करा, तहां पर ऋत्विजों ने पृथु को ७ सोम लता का रस दिया. ८ जिसपीछे ९ आचमन करके १० देव ११ यज्ञ. १२ अग्नि को १३ आदि लेकर पहले कहेहुए छः देवताओं से १४ याचना करी १५ सो १६ दे राजा रामसिंह ॥ २३ ॥ १७ अग्नि, जो मेरा होता है वह मुझको देवयज्ञ देव १८ जपविशेष (समीपवाला भी नहीं मुनै इसप्रकार धीमे जप करनेको

मम होता १ सुचि १ जोहि, देहु यज्ञ इम सबनसौं ॥

बुल्लपो दीक्षित सोहि, पुनि स्वर उच्च समक्षवत ॥ २५ ॥

दोहा

अग्नि आदि सुरें षट्क ६ इम, जचि निजगृह जजमान ॥

सह ऋत्विज पुनि सत्रथल, सोधन किन्न प्रयान ॥ २६ ॥

अपनै अंतिकें देश जे, तिनसौं उच्च प्रमानि ॥

सम अरु पाउस सलिलसौं, क्लेदन पावत जानि ॥ २७ ॥

पूरब वा उत्तर प्रवणा, सबन सिराहयो जाहि ॥

असो मखथल हेरिकैं, बिधि बेदोक्त निबाहि ॥ २८ ॥

जथारीति करि सुद्ध जिहिं, तासौं पश्चिम ओर ॥

दस१० अरु रत्नि द्वादस१२ तथा, कीमो थल चोकोर ॥ २९ ॥

अध्वरुकी विमित्तोऽऽख्य यह, साला यौ रचि सुद्ध ॥

विच पूर्वाऽऽध्वत मध्यबल, धरयो बेगाँ इक १ उर्द्ध ॥ ३० ॥

रोपी थूगाँ लंब जे, ते दिस पूर्व सुधारि ॥

दुव२कर चोरे द्वार लय३, किय उत्तर दिस टारि ॥ ३१ ॥

सोरठा

तासौं उत्तर ओर, सम रु विमित्तसौं वैर्द्ध मित ॥

दीक्षित गृह चोकोर, पूर्वद्वार किय परित्तं सु ॥ ३२ ॥

उपांशु कहते हैं) अग्रत्यक्ष [पीठपिछाड़ी] कहे जिस माफिक ॥ २४ ॥ १ रावरू कहते  
हस माफिक २ छः देवताओं से याचना करके ३ यज्ञ का स्थल सोधने को गये.  
४ समीप के ५ वर्षा के ६ जल से ७ कीचड़ नहीं होवे ऐसा ॥ २७ ॥  
८ लम्बा चौड़ा ९ वेद में कही हुई रीति ॥ २८ ॥ १० मुहुत हाथ (मूठी बन्ध  
किया हुआ खुरी तक हाथ) ॥ २९ ॥ ११ यज्ञ की १२ विमित्त नामवाली शाला  
रची जिसके बीच १३ पूर्व दिशा में १४ मोटा और बीच में बलवाला १५ ऊँचा  
१६ वांस रोपा ॥ ३० ॥ १७ लम्बी थूणी रोपी उसको पूर्वदिशा में रखकर दो दो  
हाथ के चौड़े तीन दरवाजे उत्तरदिशा को छोड़ कर तीनों दिशाओं में ब-  
नाये, अर्थात् उत्तरदिशा में द्वार नहीं रखा ॥ ३१ ॥ १८ ऊपर कही हुई  
विमित्त नाम की शाला से १९ विमित्त से बड़ा दीक्षित के लिये घर किया  
२० चोतरफ से ढका हुआ पूर्व दिशा में दरवाजा बनाया ॥ ३२ ॥

दीक्षित गेह प्रमान, वरुनदिसा पर विमितसौं ॥

पुनि परिवृत अभिधान, सुभ पतनीसाला रचिय ॥ ३३ ॥

दोहा

यौं पतनी १ यजमान २ के, गृह दुव २ परिवृत नाम ।

पश्चिम उत्तर विमितसौं, बिहित बनाय ललाम ॥ ३४ ॥

देवयजनसौं वरुनदिस, दुव २ परिवृत मित दच्छ ।

बिरचिय साला वा विमित, अपर सोधि भुव अच्छ ॥ ३५ ॥

पटपात

यौं अध्वरथल बिरचि गेह चालुक्य आय करि,

यूपाहूति निमित्त अग्नि आहवनीयहि वरि ।

उद्धरि समिदाधान परिस्तरणादि जुक्त जिम,

संय दक्खिन गहि सुकहिं आज्यसंस्कार पूर्व इम ॥

आहूति च्यारि ४ यजमान पृथु ५ या सुक करि मंत्रित उचित,

सुचि आहवनीयक कुंड बिच होमिय जूपाहूति हित ॥ ३६ ॥

सोम्य आज्यकों मध्य थप्पि गुप्तहि तदनंतर,

भूमि पंच संस्कार समारोपण हित विधिवर ।

१ विमितशाला के पश्चिम दिशा में २ परिवृत ३ नामवाली यजमान की स्त्री के लिये शुभ शाला रची ॥ ३३ ॥ इस प्रकार स्त्री और यजमान के लिये परिवृत नाम के दो घर विमित नाम की शाला से पश्चिम और उत्तर दिशा में उचित और सुन्दर बनाये ॥ ३४ ॥ ५ देवपूजन के स्थान से पश्चिम दिशा में परिवृत के देनाप समान अथवा विमित के समान दूसरी सुन्दर भूमि सोध कर ७ चतुर्गुं ने दो घर बनाये ॥ ३५ ॥ १० यज्ञ का स्थल १ सोलंखी वंश के राजा २ यूप की आहूति के निमित्त आहवनीय ( होम के लिये संस्कार करके इकट्ठा किया हुआ अग्नि ) अग्नि को बरा और अग्नि जलाने का काष्ठ आदि ३ इंधन स्थापन किया हुआ था उसको उठाया और ४ आच्छादन युक्त किया अर्थात् मण्डप तना, फिर दाहिने ५ हाथ में ६ सुवा लेकर संस्कार ( शोधन ) किये हुए ७ घृत से यजमान पृथु ने चार आहूति इस सुवे से उचित मंत्रों के साथ आहवनीय ८ अग्नि के कुण्ड में यूप ( यज्ञ खंभ ) के निमित्त होमी ॥ ३६ ॥ सोमलता के रस और घृत को बीच में गुप्त रख कर जिसे पीछे श्रेष्ठ रीति से आरोपण करने के लिये अग्नि के अग्नि को पांच बार गृह की, होम की अग्नि

उद्धरि आहवनीय १ गार्हपत्य २ हिं समंत्र जहँ,  
 अरणी दुव आरोपि तदनु नृप सुनहु कृत्य तहँ ॥  
 अरणी मुख मख उपहारें सब सकटन विच धरि मुदित मति ।  
 सुभ सांतिपाठ मंगल सुनत पहुँचिय संत्र निकेत प्रति ॥३७॥  
 जाय तत्थ जजमान विरचि कर पद प्रक्षालन,  
 सोम १ रु अरणी २ स्वकरं गहे करि उचित आचमन ।  
 पूर्वद्वारसाला प्रवेसि सह सोम अरणि सँरि,  
 पूर्वसाल तरुथंभ परसि दक्षिणा कराय करि ।  
 पठि मंत्र तदनु मखसाल विच उच्चथान सोमहिं धरिय,  
 खँर १ गार्हपत्य १ विच पंचधृति संस्कारहु अँध्वर्यु किय ।  
 गार्हपत्य १ मथि थँपि तदनु तासौ आधानव,  
 प्रक्रमँ अष्ट ८ प्रमान देस तजि अंतराल लव ।  
 खर २ करि आहवनीय २ तीन प्रक्रम पुनि भुव तजि,  
 दक्षिणाग्नि ३ खर ३ करिय भूमिसंस्कार उक्त ५ भजि ।  
 संकल्प विहित हवनीय अरु दक्षिणाग्नि विहरण करिय,

और गार्हपत्य ( गृहप्रतिर्यजमानस्तेन संयुक्तः गार्हपत्यः ) अग्नि विशेष को मंत्रों सहित उठा कर दो अरणी ( दो लकड़ियों को परस्पर रगड़ कर होम के लिये अग्नि पैदा करते हैं उन काष्ठों का नाम अरणी है ) स्थापन करी जिसे पीछे जो कास हुआ सो हे राजा सुनो- अरणी को आदि लेकर यज्ञ की सब सामग्री प्रसन्न मन से गीतों में भर कर मङ्गलदायक शान्तिपाठ सुनत हुए यज्ञघर में गये ॥ ३७ ॥ ६ हाथ पग धोये ? अपने हाथ में ? १ अरणी को ? २ चलाकर ? ३ पूर्व की शाला में वृक्ष का खंभा था जिसको हाथ के अग्रभाग से स्पर्श किया ? ४ जिस पीछे यज्ञशाला में ऊँचे स्थल पर सोम लता को रक्खा और तेज गार्हपत्य अग्नि में अँध्वर्यु ( ऋग्वेद के कात्विज ) ने भूमि को पाँच बार शुद्ध की ॥ ३८ ॥ मथन कीहुई गार्हपत्य अग्नि को रख कर उसीसे अग्नि को स्थापन किया और उसके भीतर थोड़ी सी जगह छोड़ कर आठ प्रदक्षिणा की, फिर आहवनीय अग्नि को तेज करके तीन पैँड भूमि को छोड़ कर ऊपर कहे अनुसार भूमि को शोध कर दक्षिणाग्नि [ होमाग्नि विशेष ] को तेज किया फिर संकल्प करके आहवनीय और दक्षिणाग्नि का विहार कराया जिस पीछे अँध्वर्यु ने सोम के अर्थ पृथु राजा को मांस के बिना

पल बिनु हविष्य अध्वर्यु तहँ पृथुपुकोँ सोम निमित्त दिय ॥३९॥  
दोहा

यह पूर्वान्हिक कर्म करि, अब अपरान्ह विशिष्ट ॥  
दीक्षित दंपति २ किय असन, पायसादि जो इष्ट ॥ ४० ॥  
ही रुचि तो माहेय बिनु, करि पललहु आहार ॥  
मख निमित्त धन काहु कर, दीक्षित दिन्न उदार ॥४१॥  
दीक्षासौँ उत्तर तरफ, परिवृत मंदिर माँहि ॥  
भरि कीलाल करीर इक, अग्गहि थापित आँहि ॥ ४२ ॥

रोला

चंडिल तहँ चालुकहिँ आय बैठाय पूर्वमुख,  
उत्तरमुख रहि अप्प नखरहरनी गहि विधि रुख ।  
दक्खिन सय अंगुष्ट करज पहिलै छेदन करि,  
पुनि प्रदेसिनी प्रमुख चउन ४ के महाराज हरि ॥ ४३ ॥  
तदनु सव्य कर नखर तदनु दाहिन पयके पुनि,  
वाम चरनके विहित लये मुँडक उतारि लुनि ॥  
पुनि सिर दक्खिन देस केस कंकत सँवारि सब,

हविष्य [ होम ने योग्य, अथवा भोजन विशेष ) दिया ॥ ३९ ॥ यह मध्यान्ह  
से पहिले का कर्म करके अब मध्यान्ह से पीछे के काम में युक्त हुए और दी  
क्षा लिये हुए पति पत्नी ने दूध आदि जो इच्छा थी वह भोजन किया ॥४०॥  
और जो रुचि हुई तो भैंसे को छोड़ कर अन्य भक्ष्य पशु के मांस को भी  
भोजन किया और यज्ञ में खर्च करने के निमित्त उस उदार दीक्षित ( यजमा  
न ) ने किसी के हाथ में धन दिया ॥ ४१ ॥ दीक्षा लेने के स्थान से उत्तर त  
रफ परिवृत नामक स्थान में पानी का घड़ा पहिले ही भराहुआ था ॥ ४२ ॥  
वहाँ पर नाई ने सोलंखी राजा को पूर्व की ओर मुख करके बिठाया और  
नाई ने उत्तरमुख रहकर रीति के अनुसार नहरणी लेकर पहिले दाहिने हा  
थ के अंगूठे के नख काटे और फिर अंगूठे के जोड़े की अंगुली आदि चारों अं  
गुलियों के नख काटे ॥ ४३ ॥ इस पीछे बायें हाथ के नख, जिस पीछे दाहि  
ने पग के और फिर बायें पग के नख छेदन करके उतारे फिर माथा के दा  
हिनी ओर के केसों को कंधे (काँधसिये) से सँवार कर

मंत्रसहित तिहिँ कलस तोय करि करिय आर्द्र तब ॥ ४४ ॥

तदनु ईसिकाअग्र जुदे कति तीर्थवाक करि ॥

तिनपर दर्भ समंत्र दै रु छेदे छुराग्र धरि ॥

मस्तक उत्तर देस केस सुविहित भिजोय पुनि ॥

बिरचि रीति पूर्वोक्त चतुर कट्टेहि तेहु चुनि ॥ ४५ ॥

कुंतल तदनु सुरीति सिखावर्जित समस्त हरि ॥

बलि भ्रूषक्ष्मरविहीन कूर्च छेदे छुराग्र करि ॥

कक्खगुज्झरतजि रोम उचित इतरन करि कर्तित ॥

तदनु करिय चालुक्य सुनहु चहुवान हेरि हित ॥ ४६ ॥

॥ सारङ्गा ॥

मसकी तरुसौं जत्थ, रदधावन जाजक विरचि ॥

त्रिदसनतटिनी तत्थ, अचवन करि न्हायो समनु ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

पूर्व वा उत्तर तरफ, रह्यो निकसि तजि बारि ॥

सुद्धशरोमकरअल्प दस३, लौम४अहत५पट धारि ॥ ४८ ॥

यौं परिवृत प्रातीच्य विच, प्रतिप्रस्थाता आय ॥

मंत्रे हुए घड़े के पानी से केसों को गीला किया ॥४४॥ जिस पीछे बाण के फल (भाल) के अग्रभाग से कितनेक केस दूर करके उन पर मंत्रा हुआ डाम देकर पाछणा के अग्रभाग से काटे, फिर मस्तक के बाँई ओर के केसों को भिगो कर पहिले कहीहुई रीति से उनको भी काटे ॥४५॥ इस पीछे चोटी को छोड़ कर सब मस्तक के केस काटे फिर भुँवारे और नेत्रों की पलकों के बिना बाकी के केस पाछणा के अग्रभाग से काटे और कांख और गुह्यस्थान के केसों को छोड़ कर दूसरे केसों को उचित रीति से काटे, जिस पीछे सोलंखी राजा ने किया सो हे चहुवाण रामसिंह हित के साथ सुनो ॥४६॥ वह यज्ञ करनेवाला उदुम्बर (जुमर) वृक्ष का दातन करके गंगानदी में आचमन करके न्हाया ॥४७॥ जल को छोड़ कर पूर्व अथवा उत्तर तरफ खड़ा रहा और शुद्ध बिना केस लगीहुई नवीन पीताम्बर (रेशमी वस्त्र) की छोटी धोवती (अधावस्त्र) धारण की ॥४८॥ इस प्रकार परिवृत और पश्चिमदिशा की शाला के बीच में आकर प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज ने यज्ञमान की स्त्री को

दीक्षा जाजक नारिकों, मंत्र बिहीन लिवाय ॥ ४९ ॥

तदनु तास नख करनके, नापित सातित ठानि ॥

अग्निनके नखरहु हरे, वपन विकल्प प्रमानि ॥ ५० ॥

तानैं मंजन साऽऽचमन, थावर जल बिच कीन ॥

पति पट तुल्लयहि धारि पट, उत्तरीय जुत लीन ॥ ५१ ॥

॥ रोला ॥

तदनु आय अध्वर्यु गह्यो जाजक चालुक कर,

प्रविसि पूर्वके द्वार जाहि जान्यो जातक धर ॥

प्रतिप्रस्थाता आय पकरि पतनी मृदु पानी,

पश्चिम द्वार प्रवोसि तास साला तिहिं आनी ॥ ५२ ॥

दीक्षणीय पुनि इष्टि विरचि निगमोक्त मंत्र नय,

विष्णु चरुव तिहिं वीचि कियउ ग्यारह१२कपालमय ॥

हवि विकल्प करि चरु द्वितीय२पुनि आदित्यन हित,

करत करत चहुं कोद हाक हाहा हुव जित तित ॥ ५३ ॥

दोहा

इम विरचत आदित्य चरु, अरहि अचानक आय ॥

विना मंत्र के दीक्षा लिवाई ॥४९॥ जिस पीछे नाई ने उसके हाथों के नख काटे और चरणों के नख भी लिये, मुण्डन होता भी है और नहीं भी होता इसमें विकल्प है ॥५०॥ यजमान की उस स्त्री ने आचमन के साथ ठहरे हुए जल में स्नान किया, नदी में नहीं; और पति के वस्त्र समान ही वस्त्र धारण किया परन्तु शरीर के ऊपर ओढ़ने का वस्त्र सिवाय धारण किया ॥५१॥ इस पीछे अध्वर्यु बामक ऋत्विज ने यजमान चालुक का हाथ पकड़ा और पूर्व के द्वार में होकर उसे, जिसको शुभाशुभ निर्णय करने का घर जाना और प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज यजमान की स्त्री का कोमल हाथ पकड़कर पश्चिम द्वार में प्रवेश करा कर उस स्त्रीशाला में उसको लाया ॥ ५२ ॥ दीक्षा लीहुई उस स्त्री ने वेद के कहेहुए मंत्रों की नीति से यज्ञ किया और ग्यारह कपालमय विष्णु का चरु ( होमने का अन्न ) करके होमने के पदार्थों को विकल्प करि दूसरा चरु बारह मूयों के लिये करते करते ही जिधर देखे उधर चारों ओर हाहाकार हुआ ॥५३॥ १ शीघ्र

चलहु लरन चहुवानके, दूतन कहिय दवाय ॥ ५४ ॥

बिंदुसारफको वैर अब, रक्खयो जात न रंच ॥

सुपहु सुधन्वादास सुत, जच्चत प्रबल प्रपंच ॥ ५५ ॥

सुनत एह पृथु द्विजन सैन, पुच्छिय कोन उपाय ॥

कहिय सुनि न जुझहि करहु, अब बन्यौ सु विधि आय ॥ ५६ ॥

मख प्रत्यूहज मेटनौ, दुहिता तौ तिहिं देहु ॥

विधि इहिं तव इष्टहु बनै, अरिपन छोरै एहु ॥ ५७ ॥

सुनि यह नय चालुक सुमति, सचिव सुमति सुत बुल्लि ॥

पठयो नृप चहुवान पैंह, खलु उत्तर यह खुल्लि ॥ ५८ ॥

कुंत१थंभ१मण्डप२कंरी२,सर३जैव३विष्टर४बाजि४ ॥

आये व्याहन अप्पतो, आये न करन आजि ॥ ५९ ॥

उचित रूच्य मम आत्मजा, व्याहहु वैर विहाय ॥

प्रतीकार यह धर्मपथ, साख कहत दरसाय ॥ ६० ॥

अरु जो जंगहि इष्ट तो, होन देहु मख पूर्ण ॥

हम लरै न अँवभृथ अवाधि, तुम भल मारहु तूर्ण ॥ ६१ ॥

सुनि मंत्री यह सुमति सुत, आयो अपर अनीक ॥

स्वामिकथित बुल्लयो सुपहु, मन्नहु तजहु सैमीक ॥ ६२ ॥

सद्योधारन तब सचिव, लहि एकांत नरस ॥

१ श्रेष्ठ राजा २ ब्राह्मणों सभ्यज्ञ का धिघ्न मंडना होवे तौ ४ पुत्री ५ नीति ६ श्रेष्ठ बुद्धिवाला ७ सुमति नामक कामदार के पुत्र को बुलाकर ८ निश्चय ९ भाले हैं सोही थंभ हैं, और आप के साथ में १० हाथी है वही मंडप है, याण हैं सो ही ११ जवारे हैं, और घोड़े हैं सोही १२ आसन (वाजोठ) हैं, इस सामग्री से आप विवाह करने को आये हो १३ युद्ध करने नहीं आये हो. मेरी १४ बेटी के उचित आप १४ वर हो सो वैर छोड़ कर विवाह करो; यह धर्ममार्ग का १५ वैर धोना (अपकार करनेवाले का पीछा अपकार करना) है सो शाख दिखा कर कहता है ॥ ६० ॥ १७ अवभृथ [यज्ञ समाप्त करके अंत में स्नान करे उसको अवभृथ स्नान कहते हैं] की अवाधि तक हम नहीं लड़ेंगे तुम भले ही शीघ्र मारो ॥ ६१ ॥ १८ दूसरी १९ सेना में २० अपने स्वामी का कहाहुआ बोला कि हे राजा २१ युद्ध ॥ ६२ ॥ तब सद्योधारण नामक कामदार ने राजा सुधन्वा को एकान्त में



बुल्लयो यह हितकी बनी, देखत काल रु देस ॥ ६३ ॥  
 मेरे अगहि पति जनक, पठये इन परलोक ॥  
 न लरे मथुरा १ नागपुर २, अंग ३ अयोध्या ४ ओक ॥ ६४ ॥  
 औसो चालुक पृथु ५ इहां, रचतो जो पहुँ रारि ॥  
 मरतो आयो चहि मरन, नृप मैं तुमहिँ निवारि ॥ ६५ ॥  
 तुम सन होतो अनृण तब, पै अब समय प्रतीप ॥  
 मंडलेसको मारिबो, हो श्रमसाध्य महीप ॥ ६६ ॥  
 ए अवभृथ लग नहिँ लरै, जो तुम सख बिहीन ॥  
 मारहु तौ पातक महत, यह नहि धर्म अधीन ॥ ६७ ॥  
 बिट्ठी अप्पत वैरमैं, सोहि करहु स्वीकार ॥  
 जिय संदेहाहि एह जो, सजिहै कटक प्रसार ॥ ६८ ॥  
 सद्योधारण सचिवको, मन्थ्यौ नृप यह मंत्र ॥  
 आय सुमति सुतसों कहयो, सुहि हम करहिँ स्वतंत्र ॥ ६९ ॥  
 मुंडित मुख पुब्रहि भयो, तुमरो नृप लाखि तौर ॥  
 करखि मुच्छ मंडै कलह, वहहि जेय नहिँ और ॥ ७० ॥  
 सुनि अंगीकृत पृथु ५ सचिव, इत अखिख्य सब आय ॥  
 उनमन्त्री कहि लरहिँ अब, क्यों वह मुच्छ कटाय ॥ ७१ ॥  
 सोरठा ॥

लेकर कहा कि देश काल देखते यह अपने लाभ की बात हुई है ॥ ६३ ॥ हमारे स्वामी और १ आप के पिता को मथुरा आदि प्रसिद्ध २ घर (घराने) हैं परन्तु कोई नहीं लड़े ॥ ६४ ॥ ३ हे राजा ४ मैं तो मरना चाह कर ही आया था सो तुमको लड़ाई से मना करके मरना ॥ ६५ ॥ तब तुमसे ऊरण होता ५ परन्तु अब समय ६ उलटा है ७ हे राजा मण्डलेश्वर पृथु का मारना परिश्रम से होनेवाला था ॥ ६६ ॥ = यज्ञ के अन्त के स्नान तक ८ बड़ा पाप है ॥ ६७ ॥ १० बेटी ११ देता है ॥ ६८ ॥ १२ सलाह ॥ ६९ ॥ हमारा १४ प्रताप देखकर तुम्हारा राजा पहिले ही १३ डाढ़ी मूँछ कटा कर मुण्डित होगया है और जो मूँछ खींच कर युद्ध करे वही १५ जीतने योग्य है दूसरा नहीं ॥ ७० ॥ पृथु के कामदार ने यह खून कर १६ स्वीकार किया और सब बात इधर पृथु से कही उनसे भी मानली कि अब मूँछ कटा कर क्यों लड़ें ॥ ७१ ॥

पृथुपुत्रीविभाविविवाह ] तृतीयराशि—चतुर्थमयूख (५३६)

पृथुपुत्रीको पट्टप पुत्र, कटु वच सुनि निज रिपु कथित ॥  
 नाथ ६ सुधारि \*तनुत्र, लरन होन संसुह लग्यौ ॥ ७२ ॥  
 जनक कह्यो तव जाहि, उनको वरसत वैर इत ॥  
 अंधर पुनि घर आहि, बच्छ विगारहु यह विधि न ॥ ७३ ॥  
 जय लहतोहि जरूर, चाहुवान चालुक्यसौ ॥  
 को मानत यह कूर, वारिधि चलनक भूमि बिच ॥ ७४ ॥  
 बुल्ले जे कटु बोल, ऊन करत तेहू उनहि ॥  
 न करत को मख नोल, मुंडित मुख चंडासि जिम ॥ ७५ ॥  
 नाथ ६ हिं जनक ५ निहोरि, सुनु विसंधादि ४९ न सहित ॥  
 जई जदपि हित जोरि, नई तदपि कीनों नृपति ॥ ७६ ॥  
 वेग सुधन्वाबुल्लि, विधि नीराजन मुख विरचि ॥  
 खूब नेह हिय खुल्लि, व्याही तिहिं स्वसुता विभा ॥ ७७ ॥  
 दै दायज बहु द्रव्य, विहित प्रेम कीनी विदा ॥  
 भूप परनि इम भव्य, विमु आनी रानी विभा ६ ॥ ७८ ॥  
 अर्थि द्विजनके ओघ, इंद्रप्रस्थपति आर्त्य करि ॥  
 मारि दरिद्रहिं मोघ, सहज सुधन्वाकरत हुव ॥ ७९ ॥

पृथु के कहेंहुए कटुवे वचन सुन कर नाथ नामक पृथु के पुत्र ने \* कवच धारण किया और लड़ने को सम्मुख होने लगा ॥ ७२ ॥ तब १ पिता ने उससे कहा २ फिर अपने घर में यज्ञ ३ है ४ हे वत्स [पुत्र] मत विगारडो यह विधि नहीं है ॥ ७३ ॥ ५ समुद्र ही है लेंहगा जिसके ऐसी भूमि में कौन कुदिल यह मानता कि सोलेंखी से चहुवाण जरूर विजय पाता ॥ ७४ ॥ उन्होंने जो कटुवे वचन कहे वे उनको ही ६ हलका करते हैं, ७ नोलया, रूपी ८ चहुवान के समान यज्ञ में मुंडित मुख कौन नहीं करता है अर्थात् सभी करते हैं ॥ ७५ ॥ १० विसंध को आदि लेकर उनचास ९ पुत्रों सहित नाथ नामक पुत्र यद्यपि ११ विजय पानेवाला था १२ तोभी उस पिता पृथु राजा ने नाथ को समझा कर मिलाप करके यह नई बात की ॥ ७६ ॥ १३ आरती १४ आदि १५ विभा नाम अपनी पुत्री को ॥ ७७ ॥ १६ बहुत बड़प्पनवाली ॥ ७८ ॥ याचना करनेवाले ब्राह्मणों के १७ समुदाय को दिल्लीपति सुधन्वा ने सहज ही १८ धवान कर दिये, और दरिद्र को मारकर १९ दीन कर

किन्त्रै मखं मुख काम, कामं सकल दै जाचकन ॥

इहिं कारन इहिं नाम, हुव उदारहारदहु अपर ॥ ८० ॥

भप सुधन्वाद्गोह, कलहजई प्रकटयो कुमर ॥

अरणि विभाद१सुचि एह, नाम बीरधन्वा७निडर ॥ ८१ ॥

याहि तरुन लखि अप्प, दुर्तहि उचित निज पट्ट दै ॥

बोध अमित लहि बप्प, वपुं रहि बन तियजुत तजिय ॥ ८२ ॥

इतिश्रवणंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यशो तृतीय३राशौ वप्तु-  
वैरोद्धरणार्थमनुसुधन्वप्रस्थाननियतदीक्षाचालुक्यपतिपृथुपुत्रीवि-  
विवाहनप्राप्तस्वपुरप्रवेशमहामखदक्षिणादिदानाऽनुष्ठानकुमारवी-  
धन्वादभवन्विभासहितव्रपूजवितरितविभववैन्दुसारिवपुस्त्यजनं  
तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥ आदितः पंचचत्वारिंशत्तमः ॥ ४५ ॥

मायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम् ॥

भूप बीरधन्वा७हुभयो वर, चालुकपृथु५दोहित धर्मधर ॥

अर्थी करे असोक जैनक जिम, याको नाम असोक७हु हुव इम१

दिया ॥ ७६ ॥ सुधन्वा ने १ यज्ञ २ आदि कार्य किये और याचक लोगों  
की जो ३ कामना थी वह सब दिया, इसकारण इसका ४ दूसरा नाम  
उदारहार हुआ ॥ ८० ॥ ५ युद्ध जीतनेवाला ६ सुधन्वा की विभा नाग-  
क राणी रूपी अरणि ( यज्ञ की अग्नि निकालने का काष्ठ ) से ७ अग्नि  
रूपी बीरधन्वा युद्ध जीतनेवाला निडर पैदा हुआ ॥ ८१ ॥ इस बीरधन्वा  
को युवा देख कर आप ( सुधन्वा ) ने ८ शीघ्र ही अपना पाट देकर अत्यंत  
ज्ञान के साथ ९ पिता ने पनमें रह कर स्त्री के साथ १० शरीर छोड़ा ॥ ८२ ॥

श्रवणंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में पिता के वर का  
उद्धार करने के लिये सुधन्वा का जाना, और यज्ञ की दीक्षा में नियत  
सालंखी वंश के पति पृथु की पुत्री विभा से विवाह करके अपने पुर में प्रवे-  
श करना, और बड़े यज्ञ दक्षिणा और दान का अनुष्ठान करना, कुमार बीर-  
धन्वा का होना, और विभा सहित पुत्र को दिया है वैभव जिसने ऐसे  
नुसार के पुत्र ( सुधन्वा ) के शरीर छोड़ने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ  
॥ ३ ॥ और आदि से पैंतालीस मयूख हुए ॥ ४५ ॥

११ श्रेष्ठ १२ याचना करनेवालों को शोक रहित किया १३ पिता ने किये जिस

१। एकदिन गो मृगया दिस उत्तर, सर आघात हमें मृग रूकर ॥  
 २। तहैं पिपासु खोजत जल उत्तम, अटत लहयो कोउक मुनि आश्रमा ॥  
 ३। आसन १ पाव २ प्रमुख तव आदर, मन्नि उचित याको किय मुनिबरा ॥  
 ४। जहैं सोमा अच्छरि उरजाई, सुता अनघ गंधर्व सुहाई ॥ ३ ॥  
 ५। पुत्री सम पाली मुनि जाकौं, दिय भद्रा ७ १ सु वीरधन्वा ७ कौं ॥  
 ६। परनि असोक ७ मोद अति पायो, इंद्रप्रस्थ भद्रा ७ १ जुत आयो ॥ ४ ॥  
 ७। भयउ वीरधन्वा ७ सुत भूपति, जयधन्वा ७ अभिधान महामति ॥  
 ८। जो पंडित वाचस्पति जैसो, एककाल अपर न हुव ऐसो ॥ ५ ॥  
 ९। भ्रम कटत सबको याको भुव, अपर नाम संकाविदार ८ हुव ॥  
 १०। नृप जदुतनय क्रोष्टु कुल दीपक, कालंजर प्रति नाम प्रतीपक ॥ ६ ॥  
 ११। सुता तास रुचि ८ १ नाम सयांनी, इहि ८ नृप जित्ति स्वयंबर आनी ॥  
 १२। विस्तर करत आयु लघु बित्तै, जु कवि समांस रचै सुहि जित्तै ॥ ७ ॥  
 १३। जयधन्वा ८ नृपसौं रुचि ८ १ मै सुवै, वीरसिंह ९ अभिधान वीर हुवा ॥  
 १४। करि करि विजय सुविजय ९ कहायो, प्रतिरन सुजस अपूरब पायो ॥ ८ ॥  
 १५। पांढलिपुत्र नगर रविकुल बर, धर्मकेतु नृप हुतो धर्मधर ॥  
 १६। तास सुता कमला ९ १ चितवाहयो, विजय ९ हुजित्ति स्वयंबर व्याहयो ९ ॥  
 १७। कमला ९ १ मै हुव वीरसिंह १० सुत, जो वीरसिंह १० नाम निजगुन जुत ॥  
 १८। अरु कन्या गौरी १० १ अभिधाना, निपुन भई सिक्खी गुन नाना ॥ ९ ॥  
 १९। कमलसेन ९ प्रामार राज सुत, प्रेम १० हिं जो व्याही विधान जुत ॥

प्रकार १ गया २ शिकार ३ बाण की चोट से ४ प्यासा ५ फिरते हुए ६ ने ७ अर्ध पाय ८ आदि ९ सोमा नामक अस्त्र के पेद से जन्मी हुई १० पा परहित १० नामवाला ११ बृहस्पति १२ उसके समय में दूसरा ऐसा नहीं हुआ १३ पृथ्वी पर इसका दूसरा नाम संकाविदारण हुआ यहु के पुत्र क्रोष्टु के कुल को प्रकाशित करनेवाला कालंजर नगर का पति, जो कालंजर से १४ उलटा नामवाला (कालंजर का नाम कालिमा सहित है, और यह शंका रूपी कालेपन को मिटानेवाला है) है ॥ १५ ॥ इसका १५ विस्तार से वर्णन करने में मेरी थोड़ी सी उपर है सो इसी में दीव जावे इसके कारण १६ जो कवि १७ संक्षेप से वर्णन करे वही विजय प्राक् १८ पुत्र १९ नामवाला २० पदमा शहर में सूर्य वंशियों में अष्ट २१ नामवाली

प्रेम १० हु मंडलेस हुव सुप्रज, जमदच्छा ११ ५५ दि ३ जास हुव अंगजा ११  
 बाहुवान वरसिंह १० नरेश्वर, हुव अतिजई रिपुन सिर जजि हर ॥  
 उडि उडि दूर दूर रन पायो, जंव करि मारुत १० नाम कहायो ॥ १२ ॥  
 प्रामारी यह पाय रमनिमनि, हुव जामिप जामिप जामि परनि ॥  
 कमला १० १ सुभा १० १ कमलसेन १ सुता, आई यह रानी निखिलनुता  
 सोमा १० १ नाम प्रतिव्रतसागर, मारुत १० मंहिषी अतिगुनआगर ॥  
 वरसिंह १० हु याजुत मख बहु जजि, सुर १ मुनि २ पितर ३ प्रसन्न करे भजि  
 सोमा १० १ जंठर भयो मारुत १० सन, बीरदंड ११ नरनाह महांमन ॥  
 सालिसिरा गंधर्वसुता यह, व्याहचो विरजा ११ १ नाम बडे महां १५  
 नृपवरसिंह १० तनूज विदित भुव, अपर २ अभिरंभा करि सुमेरु १ हुवा  
 विरजा ११ १ विचया ११ तै अभिरामक, भोअरिमंत्र १२ जयंत १२ द्विनामक

### षट्पदी

तच्छसिलापति सुरथ सोम सोमक कुल मंडन,

तैनया वरुनी १२ १ तास परनि अरिमंत्र १२ धरंधन ॥

कल्पविटपि बुंध कविन द्विजन जाजक श्वेत किं हुव,

या १२ कै सुत मानिक्यराज १३ सुहि सूर १३ नाम दुबर ॥

कुंतलनरेश, हृदय तिलक रुक्म कवच तनया जया १३ १,

मानिक्यराज १३ मंहिषी लहि रु प्रति आश्विन परसिय गया १३ ॥

१ श्रेष्ठ संतानवाला २ आदि ३ पुत्र ४ महादेव को पूज कर खेग के कारण ५ स्त्रियों में मणि रूपी पंचारवंश की स्त्री को पाकर और ७ बहिनोई ( बहिन का पति ) की ९ बहिन को परण कर पीछा उसका ८ बहिनोई हुआ. कमला की १० बहिन और कमलसेन की बेटी ११ यह राणी १२ सब से १३ स्तुति की हुई आई ॥ १३ ॥ १४ सेवन करके १५ सोमा के पेट से १६ से १७ बीरदंड नामक बड़ा मनस्वी राजा, सालिशिरा नामक गंधर्व की बेटी विरजा को विवाहा १८ बडे उत्सव के साथ १९ पुत्र २० दूसरे २१ नाम से २२ सुन्दर तक्षशिला का पति २३ चन्द्रवंश के मंडन सोम नामक राजा की २४ पुत्री वरुनी को २५ राजा अरिमंत्र परण लाया वह राजा २७ पंडित और कवियों का २६ कल्पवृक्ष और २९ किंधू श्वेत राजा के समान ब्राह्मणों का २८ यजमान हुआ.

प्रकटयो पुष्कर१४नाम सुनहु मानिक्यराज१३सुव ॥  
 बिथरिय याको बिजयपाल१४अभिधान अपर भुव ॥  
 सो मरुपति प्रतिहार भूप भल्लकरम१३तनया ॥  
 पद्मावति१४१हिं विवाहि निलय आनी हतअनया ॥  
 या१४कैहु भयो बसुधा विदित असमंजस१५अभिधाम सुत  
 गोनर्दराज तनया कला१५१व्याहो रविकुल जानि नुत ॥१८॥  
 असमंजस१५ कै तनय कला१५१बिच प्रेमपूर१६हुव ॥  
 दूरथको दौहित्र धीर भो यहहु बीर धुव ॥  
 निजमातुल नलकेतु सुता ललिता१६१सु विवाहो ॥  
 या१६कै सुत हुव भानुराज१७चतुरन मन चाह्यो ॥  
 सो पै स्वकीय मातुल सुरथ सुता सुमध्या१७गो परनि ॥  
 भो मानसिंह१८ताकै तनय चउ१८भुज कुल चक्रनतरनि ॥ १९ ॥

दोहा

ध्वज महीप प्रतिहारसौं, गयो तबहि मरुदेस ॥  
 बिबस्थल अभिधान पुर, बिरचि रह्यो तहँ एस ॥ २० ॥

षट्पदी

मालवपति परमारवंस२०तनया कल्यानी१८१ ॥  
 मानसिंह१८महिपाल परनि आनी पटरानी ॥  
 हुव ताकै हनुमान१९धर्मपाल१९ हु सु कहायउ ॥  
 सो मातुल धीहर२१सुताहि कमला१९१बरि लायउ ॥  
 हुय चित्रसेन२०ताकै तनय सो सु वीरपाति सलसुता ॥  
 चंद्रिका२०१नाम परन्यौ चतुर ससिकुलभूषण संजुता ॥२१॥

१ दूसरा नाम भूमि पर २ मारवाड़ का पति ३ घर में ४ अनी  
 ति को अथवा आपदा को मिटानेवाली ५ स्तुति योग्य ६ अपने मामा की  
 बेटी ७ वह भी अपने ८ मामा सुरथ की पुत्री मध्या को परण गया ९  
 चहुवाण के कुल के १० गणों का सूर्य बिम्बस्थल है ११ नाम जिसका १२ धीह  
 र नामक अपने मामा की बेटी को ही १३ चंद्रकुल रूपी भूषण के १४ साथ अ  
 र्थात् चंद्रकुल ही है भूषण जिसका

भपति बेणु महीप२१बिंबथलपूरप महाबल ॥  
 प्रातिहार कुलदीप लग्यो जित्तन भुव मंडल ॥  
 तानैं यह नृप चित्रसेन२०चहुवान हन्यौं लरि ॥  
 चित्रसेनकौ तनय संभु२१नृप हुव सुपुण्य करि ॥  
 भीमादि च्यारि४पुत्रन सहित बेणु महीप२१हु जिहिं हन्यौं ॥  
 ताकीहि परनि तैनया प्रभा२१।बिदित संभु२१दुल्लह बन्यौं ॥२२॥  
 स्वर्ण महीपक२४नाम स्वीय सालर्क सतके हित ॥  
 अखिल बिंबथल अप्पि अप्पि आयउ आलैय इत ॥  
 महासेन२२अभिधान संभु२१नृपकौ तनूज हुव ॥  
 जाहि पद्मनिधि अप्पि सखा धनपतिहु भयौ ध्रुव ॥  
 ऋद्धीस२२नाम नृपकौ अप्पर निधि कारन करि वित्थरिय ।  
 जिहिं स्वर्ण महीपक२४की स्वैसा जवा२१।परनि जग जस करिय ॥  
 महासेन सुत सुरथ२३भयो नृप धर्मधुरंधर ॥  
 सो परमार धरा विधार२५तनया तारा२३।श्वर ॥  
 सुरथ सून नृप रुद्रदत्त२४सुहि कर्णपाल२४हुव ॥  
 राष्ट्रसेन मातुलै सुता सु सत्ता२४।व्याहयो ध्रुव ॥  
 तामाहिं तास हुव हेमरथ२५सेनपाल२५सुहि महिपमनि ॥  
 पुष्कर नरस जहव बिघस सुता सांति२५।यह गो परनि ॥२४॥  
 तत्थ हेमरथ तनय भयउ चित्रांगद२६भूपति ॥  
 पाटलिपुत्रपै भीम की सु व्याहयो सुता सुमति२६।१ ॥  
 नाम सुमतिको अप्पर२सुन्यौं भुति२६।१हु कछु ग्रंथन ॥  
 किते नाम कलिकार२६।१हु जैपत तीजो३मगधजन ॥  
 यामाहिं चित्ररथ२७नाम सत चित्रांगद नृपतैं भयो ॥  
 अभिधान याहि समुचित अप्पर२द्विजन चंद्रसेन२७हु दयो ॥२५॥

?पति२पुत्री३अपने४शाले के बेदे के लिये५देकर६आप७घर८नवनिधियों में से  
 पद्म नामक निधि बेकर९कुबेर भी मित्र हुआ१०उस राजा का दूसरा नाम  
 ऋद्धीश ( ऋद्धियों का स्वामी ) निधि के कारण से कैला११बहिन१२सामा की  
 घेटी१३पटना१४दूसरा१५कहते हैं१६भाट लोग १७इसका दूसरा नाम१८उचित.

दोहा

जटु१हैहय२अर्जुन३जनन, द्रविड भूप दुर्योध ॥

ताकी तनया चित्ररथ२७१, व्याही बल्गु२७१सुबोध ॥ २६ ॥

भूप चित्ररथकै भयो, सुत बाल्हीक२८सुजान ॥

वत्सराज२८याको विदित, अवनि अपर२अभिधान ॥ २७ ॥

षट्पदी

कालंजरपति जंदुकुलीन रुचिसेन नरेश्वर ॥

तनया विरजा२८१तास व्याहि बाल्हीक२८लई बर ॥

धृष्टद्युम्न१९तनूज भयो याकेहु महाबल ॥

अपर२तास अभिधान विदित बरुन२६हु वसुधातल ॥

विद्याधरेस वसुमानकी प्रिय दुहितां अलका२९१परनि ॥

वरुन२९हु नरेस सुरतरु बुंधन धैन्वी हुव अनुपम धरनि ॥ २८ ॥

बरुनतनय उत्तम३०नरेस विद्याधर दोहित ॥

विश्वाची३०१जिहिं गेह रही अच्छरि मति मोहित ॥

उत्तम सनु सुनीक३१हीर हुव जिहिं जठराकर ॥

वितल जाय इहिं बीर हनें दानव हल१कूबर२ ॥

दैनवी सुंता हलकी दसा३११सती परनि आनी सुपहु ॥

जिहिं व्रत करंत सब जुंवतिजन विलसन विभव सुहाग बहु ॥ २९ ॥

दोहा

सूनु सुबाहु३२सुनीकसौं, दसा उदर अभिराम ॥

१वंशों में २वल्गु नामक अष्ट ज्ञानवाली भूमि पर ४ दूसरा नाम ५ यादव वंशी ६ अष्ट ७ पुत्र = भूतल पर २ विद्याधरों ( देवयोनि विशेष ) के स्थात्री वसुमान की प्यारी १० पुत्री ११ कल्पवृक्ष १२ पंडितों का १३ धनुषधारी १४ जिसके पेट रूपी खान से हीरा उत्पन्न हुआ १५ भूमि के नीचे के लोक में जाकर १६ हल नाम दानव की १७ बेटी १८ दशा नामवाली पतिव्रता को १९ अष्ट राजा ने २० सब स्त्रियां ( दशा माता के व्रत के नाम से ) विभव और सुहाग भोगने के लिये जिसका व्रत करती हैं ॥ २९ ॥ २१ राजा सुनीक से दशा के उदर में सुबाहु नामक २२ सुंदर पुत्र हुआ, जिसने अत्यंत रूप के



भयो अतुल जिहि रूप लहि, पायो मोहन ३२ नाम ॥ ३० ॥

तिहि छत सब भयन तजिय, जान स्वयम्बर जत्थ ॥

मोहन ३२ तहँ पत्तो कैसन, सोहि लगी इहि सत्थ ॥ ३१ ॥

कन्या इतरहु बरनकी, देखन लग्गी दिष्ट ॥

कहयो क्यौं न बाहुज कर, मिलितो मोहन ३२ इष्ट ॥ ३२ ॥

शुद्ध ब्रजदेशीया प्राकृतभाषा ॥

मनोहरम् ॥

वारह १२ विदर्भनकी बंगनकी बीस २० पांडय,

पति की पचास ५० च्यारि ४ चेदिनकी प्रीति पगि ॥

सत्रह १७ विदेहकी ६ मागधकी सात ७ चोल,

पतिकी चतुर्दश १४ मनोभवकी ज्वाल जगि ॥

कोसल १ कलिंग २ करनाट ३ नकी एक १ एक १ ३,

सोलह १६ सुबीरकी ६ द्रविडकी दोय २ दंगि ॥

दोरि दोरि तोरि लाज लंगर स्वयम्बरतै,

आई राजकन्या इती १४ ५ मोहनकी लार लगि ॥ ३३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा

दोहा

सर कृत भू १४ ५ मित नृप सुता, इम लखतहि अकुलाय ॥

इन्द्रप्रस्थ आई उलटि, नाह सुबाहु बनाय ॥ ३४ ॥

जब मथुरापति जहवन, कुरुवंसिन पुनि कुप्पि ॥

भृंगयारत मोहन हन्यौं, रोस स्वयम्बर रुप्पि ॥ ३५ ॥

कारण मोहन नाम पाया ॥ ३० ॥ जिस स्वयंवर में २ सुंदर ( रूपवान् ) मोहन १ पहुंचा, वही कन्या इसके साथ होलाई ॥ ३१ ॥ क्षत्रियों के सिवाय ३ दूसरों वर्णों की कन्या भी अपने ४ भाग्य को दोष देने लगी कि हमको ५ क्षत्रिय क्यों नहीं किया जो मोहन ६ पति मिलता ॥ ३२ ॥ ७ कामदेव की अग्नि प्रज्वलित होने से अरु ९ कामदेव की ज्वाला से जली हुई ॥ ३३ ॥ अष्ट भुजोंवाले मोहन को १० पति बना कर ॥ ३४ ॥ ११ शिकार में तत्पर १२ स्वयंवर के रोस को आरोपण करके ॥ ३५ ॥

सब १४५ नारिन किय सहगमन, सुनि यह मारक सौं पिय ॥  
 वोस २० अनूढा बाहुजाँ, अग्नि जरी वँपु अपि ॥३६॥  
 कोसलराज सुसंधिकी, सुता मालिनी ३२१ नाम ॥  
 जिहिँ सुबाहु ३३ रानी जन्पौ, सँनु सुरथ ३३ उद्दाम ॥३७॥  
 जननिन जुत अपने जनक, पावत इम परलोक ॥  
 पट्ट सुरथ ३३ लहि पंचसिख, अधिप भयो निज ओक ॥३८॥  
 सतधन्वा सौवीर पैति, राजा रविकुल दीप ॥  
 तनया तास प्रभावती ३३१, परन्यौ सुरथ ३३ महीप ॥३९॥  
 पट्टपदी ॥

भयउ सुरथकै भरत ३४ सोहि मदसेन ३४ कहायउ ॥  
 कांचीपति दिनकर कुलीन संखसुता पायउ ॥  
 रानी तिलका ३४१ नाम भरत सन हुव तिहिँ जाठर ॥  
 कृतसुख राजकुमार नाम सात्विक ३५ वीरनवर ॥

अभिधान या हुवहु २ दिय ईतर सुकविन सत्यक ३५ सत्यकी ३५ ॥  
 व्याहृयो यहै हु तनया विधा ३५ १ पुष्करराज प्रहृत्यकी ॥४०॥  
 केसरिदेव ३६ कुमार वीर सात्विक नृपकै हुव ॥  
 सो लहि पट्ट सजोर भूप जितन लग्गो भुव ॥  
 मोहन ३२ के मारक महीप तिनके सुत नाँती ॥  
 सर कोदंड सहाय हनै रन अखिलै अरौंती ॥  
 याकोहि नाम इहिँ गुन अपैर २ विदित सत्रुजित ३६ बित्थारिय ॥

१ साथ जल गई २ मारनेवाले को ३ आप देकर ४ बिना बिवाही  
 ५ क्षत्रियों की कन्या ६ अग्नि में ७ शरीर देकर ८ पुत्र ९ निरंकुश  
 १० अपने पिता को ११ सिंहासन ( पंचशिख नाम सिंह का है सो पट्ट ज-  
 वद का अन्वय पंचशिख के साथ लगाने से "पंचशिखपट्ट" अर्थात् सिंहासन  
 यह अर्थ होता है; अथवा पांच हैं शिखर (कलश) जिसके ऐसा सिंहासन).  
 १२ अपने घर ( राजधानी ) में १३ सौवीर देश ( शूरसेन से पूर्व और गंडकी  
 नदी से पश्चिम, जिसको अधमाधम मानते हैं ) का पति १४ नृपवंशी १५  
 उदर से १६ नाम १७ दूसरा १८ प्रहृत्य नामक राजा की पुत्री को १९ पाने  
 २० धनुष बाण के सहयोग से २१ सब २२ शत्रु २३ इसी कारण से इसका द-

कांबोजनाथ कपिलाश्वकी सुता जया ३६।१ जिहि नृपवरिय।४१।  
 सुपहु सत्रुजित सनु पथित विक्रम ३७ हुव भूपति ॥  
 सो ससिकुल आनर्त भूप सुंगसुता सम्मति ३७।१ ॥  
 व्याहि भयउ जग विदित कलह निजजनक तुल्य करि ॥  
 कौरवराज प्रतीप कटक बहुबेर हन्यौ लरि ॥  
 सहदेव ३८ भयउ याकै सुवन जहँ संतनु भीष्म जनक ॥  
 याकैहँ निकारि जनपद सहित इंद्रप्रस्थ लिय धारि धक ॥ ४२ ॥

दोहा

नृप सुबाहु ३२ कै हननतै, बढि बढि अतुल विरोध ॥  
 कुरु १ जदु २ कुल १ चंडासिकुल २, बैरी हुव रिस बोध ॥ ४३ ॥  
 इम संतनु दिगजय अनखि, इंद्रप्रस्थ लिय आय ॥  
 भीरु मर्यो नहि जात भुव, सो सहदेव ३८ सिटाय ॥ ४४ ॥  
 लहि सहाय सहदेव ३८ तव, निज मातुल अरिघाट ॥  
 मारि सुनाभ महीपकाँ, लयो देस करनाट ॥ ४५ ॥  
 नृप आनर्त सहाय पुनि, पौडूदेस लिय जिति ॥  
 दोहू २ जनपद दब्बि इम, किय सहदेव ३८ हु किति ॥ ४६ ॥  
 मगधराज बसुकी सुता, चतुर ऊर्मिला ३८ चाहि ॥  
 कुरुकुल वीरिधि रतन यह, लिय सहदेव ३८ विवाहि ॥ ४७ ॥  
 भयो तनय सहदेवके, वीरदेव ३९ अभिधान ॥  
 नाम अपर ताको कहत, भीमसेन ३६ मतिमान ॥ ४८ ॥  
 कामरूप नृप कर्णकी, सुता विजोहा ३९।१ शुद्ध ॥  
 रविकुलजा व्याहयो रसिक, वीरदेव ३९ रनबुद्ध ॥ ४९ ॥  
 याकै सुत पौडूक ४० भयो, सुहि वसुदेव ४० कहाय ॥

सरा नाम १ पुत्र २ प्रसिद्ध ३ चन्द्रवंशी आनर्त देश के राजा सुंग की पुत्री संमति को परण कर. ४ सेना ५ भीष्म का पिता ६ देश सहित ७ क्रोध धारण करके दिल्ली शहर को लेलिया ८ चहुवाण कुल ९ कायर १० अपने मामा की ११ कुरु कुल रूपी समुद्र का रत्न १२ नामवाला १३ दूसरा नाम १४ का गरु देश के राजा कर्ण की १५ सूर्य वंश में उत्पन्न १६ रण में पंडित

[ बहुवाणवंशवर्णन ]

तृतीयराशि—चतुर्थमयूख

(५४२)

वृद्धकर्म कारूसकी, स्वसा विवाहो जाय ॥ ५० ॥

दंतवक्त्रकी पिउंसिया, निपुन गुनवती ४० नाम ॥

श्रुतदेवाकी जो ननंद, कहियत लोक ललाम ॥ ५१ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाश्रयण तृतीयराशौ वीर  
 धन्व७भद्रा७१जयधन्व८रुचि८१बीरसिंह ९कमला ९१२चरित्रव  
 र्णनबीरसिंहसुतागौरी१०कामलसेनिप्रामारराजप्रेम१०परिणय  
 न बीरसिंहात्मजवरसिंह१०सोमा१०१२तद्बीरदण्ड१२विरजा१११२  
 जयंत१२वरुणी१२१२माणिक्यराज१३जया१३१२पुष्कर१४पद्मा  
 व१४१२त्यसमञ्जस१५कला१५१२प्रेमपूर१५ललिता१६१२भानुराज  
 १७सुमध्या१७१२मानसिंह १८ कल्याणी १८१२ हनुम१९कमला  
 १९१२चित्रसेन२०चन्द्रिका२०१२सम्भु२१प्रभा २११२महासेन२२  
 जया२२१२सुरथ२३तारा२३१२रुद्रदत्त२४सत्ता२४१२हेमरथ २५शान्ति  
 २५१२चित्राङ्गद२६सुमति २६१२चित्ररथ२७बल्लु२७१२बाल्हीक२८  
 विरजो२८१२धृष्टद्युम्ना२९५लको२९१२उत्तम३०विश्वाची३०१२मुनी  
 क३१दशा३११२सुबाहु३२मालिनीया३३दिपञ्चचत्वारिंशोत्तरशत १४५  
 सुरथ३३प्रभावती३३१२भरत३४ तिलका३४१२सात्विक ३५विभा  
 ३५१२केसरिदेव३६जया३६१२विक्रम३७सम्मति३७१२कुलकथनवै  
 क्रमिसहदेव ३८न्द्रप्रस्थच्यवनतन्मातुलाऽरिघाटसहायकर्णाट १

१करूप देश के राजा वृद्धकर्म की २ बहिन को ३ भुवा ४ सुन्दर.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वाश्रयण के तीसरे राशि में वीरधन्वा-भद्रा,  
 जयधन्वा-रुचि, वीरसिंह-कमला के चरित्र का वर्णन और वीरसिंह की पु-  
 त्री गौरी को कमलसेन के पुत्र पैवारराज प्रेम को विवाहना, और वीरसिंह  
 का पुत्र वरसिंह-सोमा, उसके पुत्र वीरदण्ड-विरजा, जयंत-वरुणी, माणि-  
 क्यराज-जया, पुष्कर-पद्मावती, असमञ्जस-कला, प्रेमपूर-ललिता, भानुराज-  
 सुमध्या, मानसिंह-कल्याणी, हनुमान-कला, चित्रसेन-चन्द्रिका, सम्भु-प्रभा,  
 महासेन-जया, सुरथ-तारा, रुद्रदत्त-सत्ता, हेमरथ-शान्ति, चित्राङ्गद-सुमति,  
 चित्ररथ-बल्लु, बाल्हीक-विरजा, धृष्टद्युम्न-अलका, उत्तम-विश्वाची, मुनीक-  
 दशा, सुबाहु-मालिनी आदि एक सौ पैंतालीस १४५ सुरथ-प्रभावती, भरत-  
 तिलका, सात्विक-विभा, केसरिदेव-जया, विक्रम-सम्मति के कुल का

पौंड्रदेश प्रापणामागधेशवसुसुतोर्मिलो ३८। १ द्रहनतत्सुतबीरदेव ३९  
विजोहा ३९। १ पुण्ड्रक ४० गुणावती ४०। १ पर्यन्तवंशवर्णनं चतुर्थो ४  
मयूखः ॥ ४ ॥ आदितः षट्चत्वारिंशत्तमः ॥ ४६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

राजन तीजे ३ राशिको, व्यासागम अनुसार ॥

कहियत अब पंचम ५ किंरन, जत्थ कृष्ण अवतार ॥ १ ॥

सर मुनि गज गुन तर्क वसु ८६३८७५, अब्द इते गत अत्थ ॥

द्वापर अष्टाविंश २८ के, सप्तम ७ मनु मिति ६ तत्थ ॥ २ ॥

इन अगै बैच्छुर लग्यो, जो ईश्वर अभिधान ॥

असित भद तस अष्टमी ८, हरि हुव जदुसंतान ॥ ३ ॥

षट्पदी

पक्षव असित भाद्रपद सुभग अष्टमि ८ दिन सैसि सह,

त्रेपन ५३ घटिका तत्थ पलहु अगै पुनि पंद्रह १५ ॥

रोहिनी भै चोवन ५४ घटी रु तेरह १३ पल जानहु,

धुति हरखन छप्पन ५६ घटी रु पल बीस २० प्रमानहु ॥

तिथि अपर अर्द्ध कौलव करन रजनी दल जहँ खिल रहत

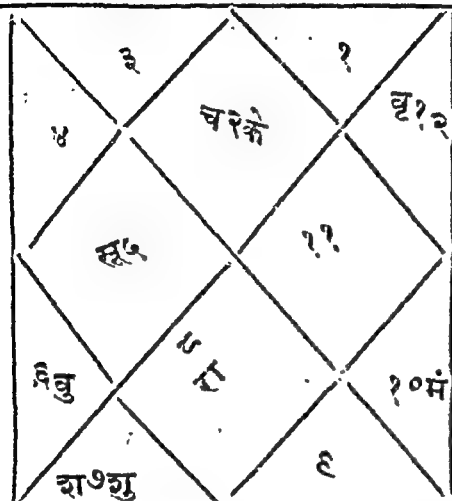
कथन और विक्रम के पुत्र सहदेव का दिल्ली से पतन (उससे दिल्ली का छुटना)  
और उसके मामा अरिवाट के सहाय से कर्णाटक और पौंड्रदेश का मिलना  
और मगध देश के पति वसु की पुत्री ऊर्मिला से विवाह होना उसके पुत्र  
वीरदेव-विजोहा, पुंड्रक-गुणावती पर्यन्त बहुवाण वंश वर्णन का चौथा ४ मयू-  
ख समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और आदि से छियालीस मयूख हुए ॥ ४६ ॥

१ हे राजा रामसिंह इस तीसरे राशि का पांचवां मयूख अब कहते हैं जिसमें  
वेदव्यास के शास्त्र (विष्णुपुराण) के अनुसार कृष्ण के अवतार की कथा  
है ॥ १ ॥ सातवीं गणना के (वर्तमान वैवस्वत) मनु के अठौईसवें द्वापर युग  
के ८९३८७५ वर्ष यहां पर गये ॥ २ ॥ ७ वर्ष ८ उस वर्ष का ईश्वर ९ नाम  
था. १० भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ॥ ३ ॥ भाद्रपद यदि अष्टमी  
११ सोम वार घटी (५३) पल (१५) रोहिणी १२ नक्षत्र घटी (५४) पल (१३) हर्षण  
२३ योग घटी (५३) पल (२०) और तिथि के १४ दूसरे भाग में कौलव करण

सरवेद४५रु गुनकृत४३इष्ट परविजय मुहूर्त वृख२वहत॥४॥

सूर\*सूनु जदुवंस दुंदु\*\*पतनी अट्टारह१८॥

देवकी सु तिनमाँहि मुख्य धरि उदर महामह ॥



उदित लग्न वृख२अंस जास बारह१२बिते जहँ ॥

जो देवी सबजनक त्रिशुनपति जनत भई तहँ ॥

लखि गर्ग विधिंभ४दूजे२चरण वासुदेव अभिधानँ दिय ॥

अवतीर्ण अमुर भूपन उपरि इम मधुपुर हरि अवतारिय ॥५॥

सिखी९ससी२वृख२सीस ब्रध्न१मृगराज५कनी६बुध४॥

( एक तिथि में दो करण होते हैं, सो यहां उत्तरार्ध में कौलव करण है ) आधी रात्रि बाकी रहते पैतालीस घड़ी और तैंतालीस पल के इष्ट में विजय नाम मुहूर्त और वृष लग्न में ॥ ४ ॥ यदु वंश में सूरसेन के पुत्र सूरसेन के अठारह स्त्रियां थीं जिनमें बड़ी देवकी के उदर में बड़े तेजवान् उदित हुए, वृष लग्न के बारह अंश बीते जहां देवी ( देवकी ) ने सब संसार के २ पिता और ३ सत्-रज-तम-तीनों गुणों के पति को जना, गर्ग मुनि ने ४ ब्रह्मा के नक्षत्र ( रोहिणी ) के दूजे चरण में जन्म हुआ जानकर वासुदेव ५ नाम दिया ( रोहिणी के चार चरणों में जन्म लेनेवालों के नाम में आदि अक्षर क्रम से "ओ-वा-वी-वु" आते हैं ) अवकहोडाचक्र के अनुसार यह ( वासुदेव ) नाम दिया, असुरों के अंशों से अवतार लिये हुए राजाओं पर ६ मधुरापुर में विष्णु ने अवतार लिया ॥ ५ ॥ ७ केतु और ८ चन्द्रमा वृष राशि पर, ९ सूर्य १० सिंह राशि पर, बुध ११ कन्या राशि पर

तुलाऽसनिऽरु ऋवितातऽयात तमऽरासि अलांयुधऽ८॥

मकरऽ१० आरऽ३ मुरुऽ५ मीनऽ२ उच्च ससिऽ२ बुधऽ४ सनिऽ७ मंगलऽ३॥

इत्यादिक जगदीश जनम पल खेट महाफल ॥

ससिऽ२ लग्नऽ२ वीच यातै यहहि कुंडलिका ससिकी रहिय ॥

नृप रामसिंह इम मधु नगर हरि अनादि उद्गम लहिय ॥६॥

॥ दोहा ॥

प्रभु तुमरे कुल परपुरुष, बरन्यौ जो वसुदेवऽ४० ॥

तनय तिन दिनन ताहुकै, दुर्मति सुनहु तसु देव ॥ ७ ॥

जननि गुनवतीऽ४०।सी जहाँ, पितु पुंड्रकऽ४० सुप्रसंस ॥

वासुदेवऽ४१ तिनकै भयो, असुर बली नरअंस ॥ ८ ॥

उन दिवसन बहु अवतरे, दैत्य दनुज नरदेह ॥

लिखत तेहु जिन करि लख्यो, अवनो भार अछेह ॥ ९ ॥

॥ पञ्चभटिका ॥

मगधेस जरासंधाख्य १ भूप, हुव विप्रचित्तिऽदानव स्वरूप ॥

सिसुपालऽ२ चेदिप्रति बल अपार, सु हिरण्यकसिपुऽ३ दितिसुतवतारऽ१०

बैलि भूप सत्यऽ३ बाल्हीक वंस, प्रल्हाद दनुज संल्हादऽ३ अंस ॥

नृप वृष्टकेतुऽ४ अनुल्हादऽ४ जानि, दुमऽ५ भूप भयो सिविऽ५ दैत्य आनिऽ१२

शनि और १ शुक्र तुला राशि पर, राहु २ वृश्चिक राशि पर ३ मङ्गल मकर-राशि पर, वृहस्पति मीन राशि पर है और उच्च राशि के चन्द्रमा, बुध शनि और मंगल हैं, इनको आदि लेकर जगत् के ईश [ कृष्ण ] के जन्म समय में पड़े फल के देनेवाले ४ ग्रह हैं, और लग्न में चंद्रमा है, इसकारण से यही कुंडली चंद्रमा की भी रही. (जातक शास्त्र से लग्नकुंडली और चंद्रकुंडली से फल कटाजाता है परंतु यहाँ चंद्रमा लग्न में आगया इससे चंद्रमा की जुदी कुंडली नहीं की) हे राजा रामसिंह ! इस प्रकार मधुरा नगर में अनादि विष्णु ने ५ जन्म लिया ॥ ६ ॥ ६ हे स्वामी रामसिंह ! ७ दुर्मति ( खोटी बुद्धिवाला ) हुआ सो हे देव ( राजा ) उसको सुनो ॥ ७ ॥ गुनवती जैसी जिसकी माता और पुँद्रक ( वसुदेव ) जैसा अष्ट प्रशंसनीय पिता तिनके यलवान् नर नामक असुर के अंश से वासुदेव हुआ ॥ ८ ॥ ८ भूमि में ९ जरासंध नामक १० पुनि

भगदत्त६भूप वाष्कल६अदेव, इम उग्रसेन९स्वर्भानु७एव ॥  
 अमितोजा८नृपहुवकेतुमान८, रु असोक१नृप असुर अश्व९थान१२  
 हार्दिक्य१०अश्वपति१०जो सुरारि, दीर्घप्रज११वृषपर्वा११अनुकारि  
 नृपसाल्व१२सुआसुरअजक१२छीवैनृपचोरमान१३खलअश्वग्रीव१३  
 रु वृहदथ१४नृप सूक्ष्म१४सु नृसंस, नृप सेनाविन्दु १५तुहुंड१५अंस।  
 नृपनग्नजित१६सुइषुपा१६वतारप्रतिविध्य१७एकचक्र१७सुभर्यार१८  
 तैसैहि चित्रवर्मा १८ नरेस, सु विरूपाक्षाऽभिध १८ असुर बेस ॥  
 राजासुबाहु१९दानवहराख्य१९वाल्हीकमहीपति२०सुअहराख्य१५  
 नृपमुंजकेस२१असुर सु निचंद्र, २१देवाधिप२२जुं निकुंभ२२सुअंतद्र॥  
 पौरवनरेस२३हुवसरभ२३आयभूपतिसुपार्थ्व२४खलकुपथ२४भाय२  
 वाल्हीक कुलज प्रल्हाद२५भूप, सु द्वि२तीयररभ२५आसर स्वरूप॥

नृप पार्वतेय २६ क्रथ२६ ऋषिक २७ अर्क२७,

हुमसेन २८ गरिष्ठ २८ सु अघउदक ॥ १७ ॥

कांबोज चंद्रवर्माऽभिधानं २९, सो असुर चंद्र२९अवतारवान ॥  
 पश्चिमअनूपपति२०जोनरेस, विभु सो यँहँमृतपा३०असुरबेसा१८।  
 भूपाल विश्व३१असुरसु मयूर३१, नृप कालकीर्ति३२सु सुपर्णा३२सूर  
 भूपाल सुकन३३हुव चंद्रहंस३३आनकि३४सु चंद्रहंता३४नृसंस ॥ १९।  
 कासीस३५दीर्घजिह्व३५सुसुरारि, नृपक्राथ३६राहु३६विधुतोदकारि।

वसुमित्र ३७ दनायुज विक्षराख्य ३७,

पांड्येस३८विक्षरानुज३८अनाख्य॥ २०॥

लिय माल्लयवान३९वपु वृत्र३९धारि, हुव चंड४०क्रोधहंता४०सुरारि  
 नृपपार्वत४१क्रथन४१रु दंडधार४२, हुव असुर क्रोधवर्द्धन४२वतार२१

१ दैत्य २ राहु ३ देवताओं के शत्रु ( दैत्य ) ४ अनुकरण ( नकल )  
 करनेवाला ५ सदान्मत्त ६ क्रूर ७ अवतार ८ भयंकर ९ विरूपाक्ष  
 नामवाला १० अहर नामवाला ११ जो १२ अनालसी [ आलस्य रहित ]  
 १३ भविष्यत् ( आनेवाले समय में ) पापी १४ नामवाला १५ क्रूर १६ चंद्रमा  
 को पीड़ा करनेवाला १७ विक्षर नामवाला १८ विक्षर का छोटा भाई  
 बिना नामवाला, अर्थात् उसका नाम मालूम नहीं हुआ



सूर्याक्ष४३भूपसु कुनाय४३ताम, बालहीक दरद४४नृप सूर्य४४नाम  
कालेय जाति जे असुर अष्ट८, ते सुनहु भये भुव दैन कष्ट ॥२२॥

पहिलो४५१सुजयत्सेन४५मगधेस, दूजो४६१रहुव अपराजित४६नरेस  
तीजो४७१निषादपति४७जयनिधान,

चोथो४८१रहुवनरपति श्रेणिमान ४८ ॥२३॥

पंचम४९१सुमहौजा४९भूमिपाल, छहो५०१अभीरु५०नृप रनकराल  
सप्तम५११भूपाल समुद्रसेन५१, अष्टम५२१सुवृहन्नामा५२धरैस२४  
पैतीस ३५ क्रोधवस असुर यौहि, उतरे ति सुनहु उद्देससौहि ॥

मदक ५३१ रु कर्णबेष्टक ५४१२ नरेस,

सिद्धार्थ ५५१३ बहुरि कीटक ५६१४ धरेस ॥ २५ ॥

त्यौही सुवीर ५७१५ रु सुबाहु ५८१६ जानि,

बालहीक ५९१७ महावीर हु बखानि ॥

क्रथ ६०१८ पुनि विचित्र ६११९ सुरथ ६२११० हु कुँसील,

श्रीमान त्यौहि नरनाह नील६३१११ ॥२६॥

चीराद्वासा६४१२अरु भूमिपाल६५१३,

तिमि दंतवक्त्र६६१४दुर्जय६७१५कराल ॥

रुक्मी६८१६जनमेजय६९१७बहुरि जानि,

आपाठ७०१८वायुवेग७११९हु प्रमानि ॥२७॥

भूरैतेजा७२१२अरु एकलव्य७३१२१,

रु सुमित्र७४१२२वाटधानारुख्य७५१२३भव्य ॥

गोमुख७६१२४रु बहुत कारूप भूप७७१२५,

त्यौं क्षेनधूर्ति७८१२६उड्डव७९१२७अनूप ॥२८॥

क्षेम८०१२८रु श्रुतायु८११२९कुहल८२१३०हु सुजान ॥

ईश्वर८३१३१रु वृहत्सेन८४१३२मतिमान८५१३३,

त्यौही कलिंग भूपति८६१३४कितेक ॥

? तहां अथवा भयंकर. २ भूपतिक्षे ( वे ) ४अनुसंधान ( कथन क्रम ) ५खोटे  
जीलवाला ६चन्द्रधान नामक ७योग्य.

अरु अग्रतीर्थ ८७।३५इम हुव अनेक ॥ २९ ॥

दोहा

अश्वसिरा ८८।१रु अयस्सिरा ८८।२, अयःसंकु ९०।३अघअंच ॥

बहुरि गगनसूदा ९१।४ तथा, बेगवान ९२।५ए पंच ५ ॥ ३० ॥

भये पंच ५कैकेय ९२नृप, बहुरि बलीनर ९३ताम ॥

पुंड्रक कै सुत हुव असुर, बासुदेव ४१ जिहि नाम ॥ ३१ ॥

पूर्वपुरुष जो रावरो, रामसिंह नरराय ॥

असैं तिन दिवसन असुर, असन उतरे आय ॥ ३२ ॥

इति श्रीविंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाऽयणो तृतीय ३ राशौ श्री-  
कृष्णजन्मपञ्चाङ्गसूचनपूर्वकपौण्ड्रकवासुदेवा ४१ द्यसुरांशाऽवतर-  
णाकथनं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥ आदितः सप्तचत्वारिंशत्तमः ॥ ४७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

इम असुरनके अवतरन, भुम्मि लब्धो अतिभार ॥

अज ईदादिक सुरनसों, किन्नी जाय पुकार ॥ १ ॥

सुरहु मखादिक नासतैं, हे पुब्बहि बेहाल ॥

अवनि सहित संलस्तैं अब, पहुंचे जहँ गोपाल ॥ २ ॥

नारायन सुनि दुख निजन, दिन्नों संदय निदेस ॥

अमरहुँ भूतल अवतरहु, संकट मिटन असेस ॥ ३ ॥

तुमरैं हित धरिहैं नृंतनु, मम कच जदुकुल माँहि ॥

१ पाप ही है शोभा जिसकी २ तहां अथवा भयंकर ३ हे नृपतिरामसिंह !  
वह वासुदेव आप का पूर्वपुरुष ( बड़ेरा ) था ॥ ३२ ॥

श्रीविंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में श्रीकृष्ण के जन्म  
का पंचांग जनाना आदि, पौंड्रक वासुदेव आदि असुर अंशों के जन्म के  
कथन का पांचवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ आदि से सैंतालीस मयूख हुए ॥ ४७ ॥

४ ब्रह्मा और इंद्र आदि देवताओं से भूमि ने पुकार की ५ यज्ञ आदि के  
नाश होने से देवता भी ६ भूमि सहित ७ भयभीत होकर ८ विष्णु भगवान्  
थे, अपने जनों का १० दया पूर्वक ११ देवता भी १२ अनुपय शरीर १३ सरे कंत

असित१रु सित२ए तुम उभय२,लैहु बिलंबहु नाहिं ॥ ४ ॥

अगौं जिम चौईस२४मे,तेतामैं अवतार ॥

मैं लीनों रघुवंसमें,कुल रक्खस खयकार ॥ ५ ॥

तेताके हायन गये,नव सहस्र९०००परिमान ॥

इन अगौंको अब्द जैहँ,सित मधु पख सुभवान ॥ ६ ॥

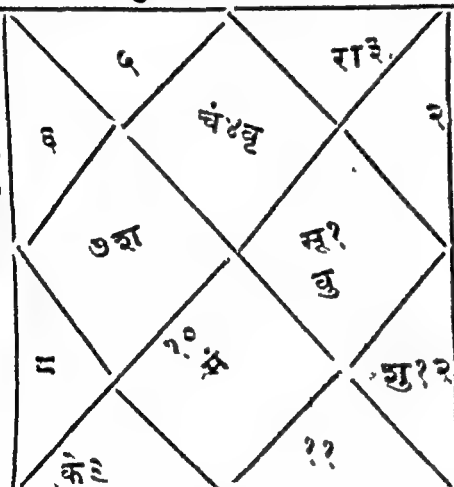
षट्पदी

सित मधु पख सुभवान पुनर्वसु७नवमि९चंद्र२दिन ॥

लगन कर्क४लव पंच५इष्ट दुव२जाम चढत इन ॥

इनकुलपति अवनीअधीस दसरथके आलय ॥

कौसल्याकी कुत्ति जन्म मैं लिन्न करन जय ॥



गुरु५चंद्र२लग्न४सनि७ग्रह बनिज७चाप९केतु९मृग१०भौम३जैहँ ॥

अख१२सुक्र६भानु१बुध४मेस१पर मिथुन३राहु८हुव राम तँहँ ॥ ७ ॥

काला और धोला ( श्वेत ) बाल, ये तुम लो देरी मंत करो ॥ ४ ॥

आगे-जिस प्रकार सातवें ( वैवस्वत ) मनु के चौधीसवें त्रेता युग में राजासों

के कुल का नाश करने के लिये रघुवंश में मैंने अवतार लिया था ॥ ५ ॥ त्रेता

युग के नव हजार वर्ष गये जिनके आगे के वर्ष के चैत्र सुदी शुभ पक्ष में

॥ ६ ॥ चैत्र मास के शुभ शुक्ल पक्ष में पुनर्वसु नक्षत्र नवमी सोमवार कर्क

लग्न के पांच अंश गये इष्ट, दो पहर सूर्य चढे सूर्यवशियों के पति भूपति द-

शरथ के घर में विजय करने को मैंने जन्म लिया था. बृहस्पति और चंद्रमा

तो लग्न स्थान में, शनैश्चर ग्रह तुला राशि पर, केतु धनु राशि पर, मंगल

दोहा

भालु बलीमुखं तब भये, अवनीतल तुम आय ॥  
 अखिल हनै रक्खस असुर, दिय श्रुतिमग्ग चलाय ॥ ८ ॥  
 बालि १ इंद्र १ सुग्रीव २ रवि २, नील ३ अनल ३ अवतार ॥  
 नल ४ सु विश्वकर्मा ४ निपुन, मारुति ५ अनिल ५ उदार ॥ ९ ॥  
 सतबली ६ सु पार्सी ६ सुमति, हुव गवाक्ष ७ जमराज ७ ॥  
 द्विविद ८ १ मैद ९ २ ए दंस २ दुव २, करन भये श्रुतिकाज ॥ १० ॥  
 इत्यादिक सब अवतरे, तुम कपिरिच्छ स्वरूप ॥  
 मै तब नर अवतार लिय, भवन कोसला भूप ॥ ११ ॥  
 तुम जुत कछुक निमित्त तकि, जातुधान खलजात ॥  
 पापनिरत असुरहु प्रबल, हनै अखिल उमहात ॥ १२ ॥  
 त्याही सब अब अवतरहु, अवनीतल तुम आय ॥  
 मै हु कृष्ण व्हे मारिहौं, सब खल होय सहाय ॥ १३ ॥

पञ्चमिका

इम सुनत सेससायी निदेस, वसुमति तल उतरे सुर बिसेस ॥  
 देवक १ नरेस गंधर्वाय, गुरुदोन रघुहस्पति अस आय ॥ १४ ॥  
 सिव १ काम २ क्रोध ३ जम ४ च्यारि ४ अस, इक १ अश्वत्थामा ३ सुप्रसंस  
 वसुअष्ट ८ प्रष्ट ८ संतनु कुमार ११, गोतम कृप १ २ रुद्रगणा १ अवतार ॥  
 कृतवर्मा १ ३ सात्याकि १ ४ पांडु १ ५ भूप, दुपद १ ६ रु विराट १ ७ गनै मरुत रूप  
 सकुनी १ ८ जुग द्वापर नाम अस, धृतराष्ट्र १ ९ मयो गंधर्व हेस ॥ १६ ॥  
 कलिजुग दुर्पोधन २० विदुर २१ काल, हुव धर्म जुधिष्ठिर २२ भूमिपाल ॥

मकर राशि पर, शुक मीन राशि पर, सूर्य और बुध मेष राशि पर, राहु  
 मिथुन राशि पर था, उस समय रामचंद्र हुए ॥ ७ ॥ १ रीछ २ वानर ३ वे-  
 दमार्ग ४ अग्नि का ५ पवन का अवतार हनुमान् हुआ ६ वरुण का ७ अश्विनी  
 कुमारों का ८ राक्षस ९ नियुक्त १० शेष नाग पर शयन करनेवाले ( विष्णु )  
 का ११ भूमितल पर १२ देवता १३ प्रशंसा योग्य १४ भीष्म आठ वसुओं में  
 से आठवें वसु का अवतार हुआ १५ कृपाचार्य रुद्रगण का अवतार हुआ  
 १६ मरुतगण ॥ १६ ॥

पर्वमानभीम२३जय२४इंद्रजानि, हुवदस्त्रनकुल२५सहदेव२६आनि१७  
हुवधृष्टद्युम्न२७सोमककृसांनु, नारायण२८कृष्ण२९रुक्मा३०मानु  
प्रद्युम्न३१कुमारसु सनत्कुमार, त्यों सीरंपानि३२सेसाऽवतार॥१८॥  
अभिमन्यु३३सुवर्चा सोमजात, क्रव्याद सिखंडी३४द्रुपद तार्त ॥

प्रातिविध्य ३५।१ तथा श्रुतसेन ३६।२ जानि,

श्रुतकीर्ति ३७।३ सतानीक ३८।४ हु वखानि ॥ १९ ॥

श्रुतसेन ३९।५ पंच ५ ए द्रौपदेय, हुव विश्वदेव पंचक अजेय ॥  
क्रमसन जुजुच्छु मुखं१००अंधपुत्र, पौलस्त्य भये हे श्रुतितनुत्रा२०।  
दुर्योधन अनुज जुजुच्छु१नाम, दुस्सासन२दुस्सह३दिव्यधाम ॥

दुस्सल४पुनिदुर्मुख५विहितवर्णा, तैसैहिं विविंसति६अरुविकर्ण७।२१

जयसंध ८ सुलोचन ९ बिंदु १० जानि,

अनुविंदु ११ तथा दुर्धर्ष १२ मानि ॥

रु सुबाहु१३दुष्प्रदर्शन१४कुमार, दुर्मर्षण१५दुर्मख१६विजयकार ॥२२॥  
दुष्कर्ष१७कर्ण१८अरुचित्र१९ताम, उपचित्र२०तथाचित्राक्ष२१नाम  
चारु२२रुचित्रांगद२३दुर्मदाख्य२४, त्यों दुष्प्रहर्ष२५रुविवित्सु२६सांख्य

विकट२७सम२८ऊर्णनाभ २९रु सनाभ३०,

नंद ३१रु उपनंद ३२ हु अतुल आभ ॥

सेनापति३३बहुरि सुसेन३४ज्योंहिं, कुंडोदर३५रुमहोदर३६हुत्योंहिं॥  
पुनि चित्रबाहु३७जानहु कुमार, असैहिं चित्रवर्मा ३८ उदार ॥

मुनिये बंसुबर्मा३९नामधेय, असोहिं दुर्बिमोचन४०अजेय ॥ २५ ॥

रु अयोबाहु४१महाबाहु४२जानि, तिहिं अग्गचित्रचाप४३हुबखानि ॥

अभिधानसुं कुंडल४४भीमबेग४५, भीमबल४६बलाकी४७तरैलतेगा॥

२ पवन ३ अनुज ४ अश्विनोकुमार ५ अग्नि ६ बलदेव ७ असुर  
८ द्रुपद का पुत्र ९ द्रौपदी के पुत्र १० जुजुत्सु आदि धृतराष्ट्र के पुत्र ११  
राक्षस १२ हे वेद की रक्षा करनेवाले रामसिंह १३ तहां १४ दुर्मद नामक  
१५ विवित्सु नाम के साथ १६ अत्यन्त १७ कान्तिवाले १८ अथ १९ नामवाला  
२० नाम २१ चपल तरवारवाला

वलबर्द्धन ४८ उग्रायुध ४९ सुधाम, पुनिभीमसर ५० रुक्मकाय ५१ नाम  
तैसैहि दृढायुध ५२ साभिधान, दृढबर्म ५३ दृढक्षत्र ५४ सुजान । २७।  
पुनि सौम्यकीर्ति ५५ अन्नूदरा ५६ रुय, तैसैहि जरासंध ५७ इतिसा ५८ रुय  
दृढसंध ५९ सत्यसंध ६० लबाहु, अरुमद ६१ सुवाक ६२ उग्रश्रवा ६३ ॥  
अरु उग्रसेन ६४ त्र्योक्षे मूर्ति, ६५ अपराजित ६६ पंडितक ६७ रणमूर्ति ॥  
रुबिसालाक्ष ६८ दुराधर ६९ सुतेग, दृढहस्त ७० सुहस्त ७१ रुवातवेग ७२ ॥  
रु सुवर्चा ७३ तिम आदित्यकेतु ७४, ब्रह्माशी ७५ बंधुन बैरहेतु ॥  
पुनि नागदंत ७६ धृतराष्ट्रजात, तस अनुज उग्रयायी ७७ रुयात । ३०  
कवची ७८ निषंगी ७९ नामधेय, पासी ८० दंडधार ८१ अजेय ८२ ॥

रु धनुर्ग्रह ८३ उग्र ८४ अरि ससि राहु ॥

भीमरथ ८५ वीर ८६ अरु बीरबाहु ८७ ॥ ३१ ॥

रु अलोलुप ८८ अभय ८९ रु रौद्रकर्म ९० ॥

दृढरथ ९१ अनाधृष्य ९२ सुवर्म ॥

तैसैहि कुंडभेदी ९३ कुमार, तिहि अग्न विरावी ९४ नाम धार ॥ ३२ ॥

तस अनुज दीर्घलोचन ९५ बखानि, पुनि दीर्घबाहु ९६ तस अग्न जानि  
तैसैहि महाबाहु ९७ मतिमान, व्यूढोरा ९८ कनकत्सर ९९ सुजान । ३३

कुंडल ९९ अरु चित्रक १०० कुमार, इम अखिल जातुंधाना १०१ वतार ॥  
नन्न्यानव १०२ धृतराष्ट्रजात, दुर्योधन नृप के अनुज भ्रात ॥ ३४ ॥

दुहितौ इन अग्न दुस्सला १०३, रु जुजुच्छु १०४ वैश्यासुत सुबाहु ॥

भीष्मकसुता १०५ लच्छी स्वरूप, कृष्णा १०६ सची सुहुव तथ भूप ॥ ३५ ॥

माद्री ३ धृति कुंती ४ सिद्धिकाय, मति हुव गांधारी ५ अवनि आय ॥

१ नाम के साथ २ अष्ट तरवारवाला ३ भाइयों के बैर का कारण ४ धृतराष्ट्र  
से उत्पन्न ५ प्रसिद्ध ६ नामवाले ७ नहीं जीतने में आवे ऐसा ८ शत्रुरूपी  
चन्द्रमा का राहु ॥ ३१ ॥ ९ इसप्रकार सब १० राजसों के अवतार ॥ ३२-३४ ॥

१ दुस्सला नामक पुत्री २ धृतराष्ट्र से बनियानी के पेट से उत्पन्न ३ पुत्री ४  
कृष्णिणी लक्ष्मी का स्वरूप हुई ५ द्रौपदी इन्द्राणी का अवतार हुई ॥ ३५ ॥  
माद्री धृति का, कुंती सिद्धिका और गांधारी बुद्धि का \*भूमि पर आकर हुई।

हरिनारि\*इतर सोलहहजार १६००० अछरिसब जानहुते उदार ३६

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणोत्तरीय ३ राशौ भार-  
भीतभूमिसहितब्रह्मिणादिदेवशेषशायिप्रार्थनकथितरामजन्मकाला-  
दि नारायणसर्वावतारगोपदेशनदेवाद्यंशावतारगकथनषष्ठोऽधमयू-  
खः ॥ ६ ॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशत्तमः ॥ ४८ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पञ्चमटिका ॥

नारायनके सित १ असित २ केसर, जडुवंस आय इम लिय नृवेस ॥  
पहिलै हि कंस यह जानिलिन्न, वसुदेव १ देवकी २ कैद किन्न ॥ १ ॥  
प्रल्हाद दैत्यके छ ६ मित भ्रात, पाताल हु ते जे अवरजात ॥  
क्रमसन ते देवकि उर प्रवेस, किय माया नारायन निदेस ॥ २ ॥  
जे जातमात्र सब कंस जानि, पारहि हने न दया प्रमानि ॥  
उपजे पुनि सप्तम ७ गर्भ सेस, रोहिनि पिचंड तिन किय प्रवेस ॥ ३ ॥  
जान्यौ च्युत देवकि गर्भ एह, अचिरज खल कंस हु किय अछेह ॥  
अखिलेश्वर अष्टम ८ गर्भ आय, सूचित मुहूर्त जनमै सुभाय ॥ ४ ॥  
सुभरूप चतुर्भुज सघनस्याम, श्रीवैच्छ वैच्छ लच्छन ललाम ॥

और कृष्णकी दसरी सोलहहजार राणियोंको हे उदार रामसिंह अप्सरा जना-

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में भार से डरे हुए भू-  
मि सहित ब्रह्मा आदि देवताओं का विष्णु की प्रार्थना करना, और कहे हु-  
ए रामचन्द्र के जन्मसमय आदि नारायण का सब को अवतार लेने का उ-  
पदेश करना, देवताओं को आदि लेकर अशों से अवतार लेने के कथन का  
छठा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ६ ॥ और आदि से अठतालीस मयूख हुए ॥ ४८ ॥  
१ स्वेत २ श्याम केसों ने यडुवंश में आकर मनुष्य वेस लिया ॥ १ ॥ ३ प्रमा-  
ण ४ पीछे से पैदा होनेवाले [दैत्य] ५ विष्णु की आज्ञा से ॥ २ ॥ ६ जन्मते  
हीं ७ शिकारी [क्रूर कर्म करनेवाले] ने ८ पेट में ॥ ३ ॥ ९ यह जाना कि देवकी का  
यह गर्भ गिरगया १० ऊपर कहे हुए मुहूर्त में ॥ ४ ॥ ११ विष्णु भगवान् का सुन्दर  
चिन्ह [द्वीपा ने क्रोध करके भगवान् के लात मारी थी उसकी रेखा अथ-  
वा छाती पर केसों की दक्षिणावर्त भवरी जिसको महापुरुष का लक्षण मा-  
नते हैं] है छाती पर जिनके

पट पीत कंठ कौस्तुभ प्रकास, कर दूर अरि पद्म मदा विलास । ५।  
मनिमय किरीट सिर रोचमान, कांची कटि कुंडल मकर कान ॥  
जननी रु जनक लखि कृष्ण जात, नृत्य करत भये मस्तक नमात । ६।  
जामिक प्रभु हैं यँह जागें रूक, बदि हैं हुँत कंसहिं बाँबूक ॥  
इहिं हेतु छिपावहु रूप एह, सुनि अँह दुष्ट सु विनुसनेह ॥ ७॥  
करि गुप्त दिव्य विग्रह कृपाल, विसराय तिनहु हुव अप्प बाल ॥  
वसुदेव तबहि लै सिसु सनाथ, हुव उठत हत करी रहित हाथाट ॥  
अंग्रिन भरि बेरी अकसमात, जामिक सोवत खुलि अँर जात ॥  
गिनत सु कंस ऽऽहँत पूर्वगर्भ, आनक दुंदुभि लै चलि अँर्भ ॥ ९॥  
हुन तबहि चलयो रहि पिष्टि देस, फन छाया टारत सलिल सेस ॥  
गोकुल इत गोपति नंदगेह, इहिं काल भयो वृत्तांत एह ॥ १०॥  
हरिसासित माया जगहिं ताय, अवतरि जसोदा उदर आय ।  
उतहू तब निद्रा मोहमग्न, गोकुल हुव जानत कहु न लग्न ॥ ११॥  
वसुदेवहिं नदि विच गोपब्रांत, नंदादि मिलै कर दैन आत ॥  
तहँ जानुं दुध नदि उतरि छन्न, वसुदेव सजैव गोकुल प्रपन्न ॥ १२॥  
थित सुप्र जसोदा तत्थ थान, सिसु धर कन्या लै किय प्रयान ॥  
ज्यों पूर्व रहयो त्यों स्वगृह आय, जामिक तब माया दिय जगाय ॥ १३॥  
सिसु रुदन सुनत दोरे ऽति बेग, कंसहिं कहि आन्यों तरल तेग ॥

१ शंख २ चक्र ३ कमल ४ क्रान्तिवाला ५ कटिमेखला [कणगती] ६ मकर की आकृति  
के कानों में कुण्डल ७ पिता ८ स्तुति हे प्रभु यह ९ पहरायत १० जागता हुआ है सो  
११ जलदी ही १२ बहुत बकनेवाले कंस से कहेगा १३ शरीर १४ उन वसुदेव देव  
की को भी भुलावा देकर आप बालक होगये १५ प्रगों से अचानक बेड़ी फड़  
पड़ी १६ किवाड़ खुल गये और पहरायत सो गये १७ कंस को मारनेवाले १८  
वसुदेव १९ बालक को २० वर्षों के जल को शेषनाग अपने फणों से ढालता हुआ  
२१ विष्णु की आज्ञा से माया ने २२ जगत् के हित के लिये यशोदा के उदर में  
अवतार लिया २३ समूह २४ घुटनों तक २५ जल्दी २६ प्राप्त हुए २७ सोती हुई २८ पहिले  
जिस प्रकार हथकड़ी बड़ी थी उसी प्रकार अपने घर में आकर रहे २९ पहरायतों  
को माया ने जगा दिया ३० ने (वे पहरायत) ३१ चपल तरवार सहित

॥ प्रथम देवता पैदा हुए उनके पीछे दैत्य पैदा हुए इससे उनको अवरजात लिखा है ॥



लैकन्यातिहिँ दियसिल पछारि, छुटि, \*नभसु गई भुज अष्टधारि  
बोली खल मारे व्यर्थ वाल, तब मारक हुव हेरहु उताल ॥

इत नंदबधू निद्रा बिहाय, देख्यो स्वयंस सिसुवर सुभाय ॥ १५ ॥

पछिताय कंस दुंदुहु सजाय, कारासन काढ्यो हित मनाय ॥

तब दुंदु गोप नंदादि हेरि, पठये मैधुपुरतैं गृह निवेरि ॥ १६ ॥

घर आय नंद लखि जात बाल, किय जातकर्मविधि उचित काल ॥

इत कंस बुल्लि केसी ? स्वइष्ट, सप्रलम्ब २ बकी ३ धेनुक ४ अरिष्ट ५ ॥ १७ ॥

सुनियत मम मारक बाल जात, इम कहत भयो दर्पहिँ दिखात ॥

जजमान १ तपस्वी २ गर्भ ३ आदि, सब हनहु सुरन अपकार साँदि ॥ १८ ॥

यह सुनत प्रलंबादिक असेस, बिरचे खल जोजन देस देस ॥

गोकुल बैकी हु रजनी अनेहँ, आई नंदालय लखन एह ॥ १९ ॥

जिहिँ सिसुहिँ रतिँ दै यह उरोजँ, सुहि होत भस्म जिम अँनल आज ॥

जिहिँ नंदलाल मुख स्वकुच देत, पित्राँ सु कन्ह प्रानन समेत ॥ २० ॥

पलनाँ सन पुनि दुव २ पय उछारि, हरि सकटँ अधोमुख दियउ डारि ॥

गोपी जब बंधिय उदर दाम, किय इक दामोदर तबहु काम ॥ २१ ॥

निज दाम बद्ध ऊखल डिगाय, अर्जुन तरु जुग २ बिच अटकि जाय ॥

अँच्यो गुँन ऊखल जबहि जोरि, तरु अर्जुन डारे उभय २ तोरि ॥ २२ ॥

प्रत्यूहनेँ तब सब भीति पाय, निवसे वृंदावन गोप जाय ॥

बढि तथ बैच्छ सुरभिन चरात, बयके क्रम सिसु हुव दुव २ हि रँध्यात ॥

\*आकाश में १ वसुदेव को २ कैद से ३ मथुरा से निवेडा करके घर (गोकुल) भेजे ४ जन्माहुआ बालक ५ प्रिय ६ घनड ७ देवताओं के अपकार ८ सहित ९ सब १० बकी नामक राक्षसी ११ रात्रि समय में १२ नन्द के घर में यह दुष्टनी आई १३ रात्रि में १४ स्तन १५ अग्नि अथवा बड़वा अग्नि के प्रताप से जलें जिसप्रकार उस नन्दलाल (कृष्ण) के मुख में स्तन देते ही कृष्ण ने प्राण सहित पीलिया १६ ककट (गाडे) का रूप करके राक्षस आया था जिसको १७ रस्मी से १८ कृष्ण ने अपनी रस्सी से धेनुहुए ऊखल को डिगाकर १९ अर्जुन (ककुभ) नामक दो वृक्षों के बीच में अटक जाने से २० रस्सी को २१ विघ्नों २२ से भय पाकर २३ बद्ध २४ गौओं को, बलदेव और कृष्ण दोनों

बिनु राम कन्ह इक दिन बिहारि, कालिय दह आयै दमनकारि ॥  
 गिनि यह अंगम्य थल नाग दोस, बिनु दोस करन किध कन्ह सोस २४  
 पीवैल पट पणिकर कटि लपेटि, भुजसाँ भुज फोटन काज भेटि ॥  
 सत्वर चढि आयैत साख नीप, लिय मलपि अंप मधुकुल महीप २५  
 इहिँ अंप अतुल दह जल उछारि, जहव बिदूर तरु दिय उजारि ॥  
 जहद बिच आस्फोटन करि बहोरि, दर्पित अहीस बुल्लयो सु दोरि २६  
 सो पै प्रचंड निजकुल समेत आयउ उरंग विक्रम समेत ॥  
 हालाहल बाढव बमनहार, फन फन कराल दग ज्वाल फार ॥ २७ ॥  
 हरि बेठि सु कुल जुत लेलिहान, पुनि डसन लग्यो बपु अतुल प्रान ॥  
 यह सुनि तहँ गोपी गोप आय, बिलपत अनेक अतिदुख बताय २८  
 बैल तब सुमिराई हरिहिँ बात, तुम कोन दुष्ट यह कोन तात ॥  
 बपुनिज तब सँमित हरि बढाय अहिबंध तोरि सब दिय छुराया २९  
 कालिय मध्यम फन चरन चँपि, अट नटन लगे आरोहि अंपि ॥  
 प्रभु चरन कमल पाँतन प्रहार, फटि घाय भोग चलि रुधिर फार ३०  
 सत्वर असत्वं हुव दंदसूकँ, कर जोरे भुजगिन ओडि चूक ॥  
 अब नाथ लखे तुम अखिल ईस, सँध निज छमि आगँस धरहु सीस ३१  
 बिभुँ तुमहि रचे हम कीटवर्ग, सुहि वृत्ति बहत तामस निसर्ग ॥

१ नहीं जाने योग्य २ सर्प के दोष से ३ पीतांबर को युद्ध करने योग्य कमर पर दह लपेट कर ४ ताल ठोक भिड़ने के लिये जलदी ५ वृद्ध की ५ मोटी शाखा पर चढ़े ७ मधुकुल ( यादवों में मधु नामी राजा प्रसिद्ध हुआ था ) के राजा यादव ने ८ बहुत दूर के वृक्षों को \* जला शय ( दह ) के बीच में ९ फिर ताल ठोक कर १० घमण्ड में आया हुआ सर्प राज बोला ॥ २६ ॥ ११ सर्प १२ वज्रवाग्नि रूपी जहर को १३ उगलनेवाला १४ समूह ॥ २७ ॥ कृष्ण को घेर कर, अपने कुल सहित १५ सर्प, अतुल पराक्रमवाला फिर अपने शरीर को डसने लगा ॥ २८ ॥ १६ बलदेव ने १७ अपने सट श ( विष्णु का शरीर होवे ऐसा ) शरीर बढाकर १८ सर्प के ॥ २९ ॥ पण धाकर १९ कूदकर चढके नाचने गले २० पड़ने के प्रहार २१ फा समूह चला ॥ ३० ॥ २२ जलदी २३ प्रारंभ रहित २४ सर्प फ करके २५ आय का हाथ साथे पर धरो ॥ ३१ ॥ २७ हे वृ

इम तियन रचत विन्नति अपार, कालिय हु हैरैं किय नमस्कार ३२  
 हरि कहिय दीन गिनि सदैय होय, तुम सिंधु रहहु यह उचित तोय ॥  
 पिकखैंत तव सिर मम पद प्रकास, न गरुड तव कुलको करहि नास  
 निकस्यो तब सबके लखत नाग, सकुटुंब वस्यो सागर सुभाग ॥  
 करि जल सुचि निकसे कैटभाँरि, लखि बंधु जनन लिय लौनवारि  
 थिर आये वृंदाविपिन थान, निकसे पुनि प्रातहि गो चरान ॥  
 ते फिरत कबहु देखत प्रदेस, तनराज बिपिर्न पहुँचे असेस ॥ ३५ ॥  
 बालेय रूप धेनुक सुंरारि, निवसत जहँ मृग पल अदैनकारि ॥  
 मंगे जहँ मित्रन फल निहोरि, कहि खेलहि अनंदरि देहु तोरि ॥  
 बलभद्रः कृष्णः दुवः सुनि सु बात, प्रभु करन लगे फल ताल पाँत  
 फल गिरत जानि चिर मेहि बेस, आयोहि असुर कंपत असेस ॥  
 दुर्त पच्छिम चरननकी दुलत्त, मारी सिरायुध हृदय मत्त ॥  
 सीरीहुँ पकरि फरेयो सु दुष्ट, जब लियउ प्राण चिरकाल जुष्ट ॥

दोहा

सजातीय आके अवर, आये जे बल धारि ॥

तेहु इहाँ बैल कृष्ण सब, मारे प्रबल पछारि ॥ ३९ ॥

धेनुकके मरतहि भयो, ताल विपिन सब भोग्य ॥

चरत भई नव तन सुरभि, अखिल पाय आरोग्य ॥ ४० ॥

हमको कीड़े बनाये हैं इसी कारण से तामसी वृत्ति के स्वभाव को धारण करते हैं १ काली नाग ने भी धीरे से नमस्कार किया ॥ ३२ ॥ २ दयावान् होकर ३ समुद्र में रहो यह तो उचित (छोड़ने योग्य अथवा नाप में आजाये इतना थोड़ा) ४ पानी है ५ देख कर ६ सर्प ७ कैटभ दैत्य के शत्रु (विष्णु) ८ धन ९ धेनुक नाम राक्षस १० गधे का रूप धर कर मृगों के भोजन को ११ भक्षण करनेवाला १२ इस दुष्ट का १३ अन्याय करके तोड़ दो १४ ताल वृक्ष के फलों को पटकने लगे १५ गर्दभ के वेस को धारण करनेवाला १७ सब को १८ धुजाता हुआ १९ मस्तक ही है आयुध जिसके ऐसे धेनुक नाम असुर ने (धेनु के मस्तक ही आयुध होता है) २० बलदेव ने भी २१ २२ बहुत समय से २३ सेवन किये हुए प्राण लिये २४ बलदेव और कृष्ण ने वह तालवन भोगने योग्य होगया २५ गैया २७ सब आरोग्यता को पाकर

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयराशौ वीति  
होतचाहुवाण पौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यकालसमानाधि  
करणकश्रीकृष्णचरित्रे श्रीराम१कृष्ण२महामाया३जन्माऽऽदि  
कथनश्रीकृष्णपूतना१शंकट२यमलार्जुन३निपातनवृंदाऽटवीनिवस  
नकालीयदमनतालाङ्गतालकान्तारधेनुकसुराऽरिस्मूदनं सप्तमोऽम-  
यूखः॥७॥आदित एकोनपञ्चाशत्तमः ॥४९॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

बोहा ॥

यौं विहरत भांडीर बट, इक्क समय सब पंत ॥

रमनलगे अन्योन्य रचि, आरोहैन अनुरत्त ॥१॥

षट्पात् ॥

तहँ प्रलंब तिनमाँहिँ मिलिग खल गोप बेस करि ॥

श्रीदामाके सिसुन भीर जो हुव अमरख भरि ॥

जित्यो जब सुहि पच्छ कन्ह श्रीदामाकाँ बहि ॥

बल प्रलंब काँ बहि रु चले भांडीर अवधि चहि ॥

बल१कन्ह२पच्छ जित्यो बहुरि तब प्रलंब बहि हलधरहिँ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आधार जिनका अर्थात् वासुदेव चहुवाण और श्रीकृष्ण का एक समय है ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में श्रीराम (बलदेव) कृष्ण महामाया के जन्म आदि का कथन, और श्रीकृष्ण का पूतना, शंकटासुर, यमलार्जुन को पटकना (नाश करना), और वृंदावन में वास करना, कालीनाग का दंड देना, और बलदेव का ताड़ वन में धेनुक असुर को मारने का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से उनचास मयूख हुए ॥ ४९ ॥

१ पहुंच कर २ परस्पर ३ एक दूसरे पर चढ़ने में ४ प्रीतिवाले (यह बालकों का एक खेल है, जिसको राजस्थान प्रांत में 'सीदमसीदी' कहते हैं) ॥ १ ॥ प्रलम्ब नामक असुर गोप का बेस करके श्रीदामा नामक गोप के बालकों की मदत होगया, जब वही पछु जीता, तब श्रीकृष्ण श्रीदामा को और बलदेव प्रलंब को उठाकर भांडीर बट की सीमा तक लेगये; फिर दूसरी बेर में बलदेव और कृष्ण का पछु जीता, तब प्रलम्ब अपना रूप धर कर बलदेव को

लौ जानलंग्यो निजरूप करिं, कहिय राम तब कन्ह रहिर ॥

कृष्ण कृष्ण अच्युत अनादि सब असुर निसूदन ॥

लौ मोकहँ खल जात कहा करिये वं अद्यतन ॥

सुनि यह सिथिल स्वरूप जानि अग्रज को हरि जब,

अकिंखय तुमहिं अनंत कष्ट बिच इम पुच्छत कब ॥

सुहि सुनत तत्व अपनौं सुमिरि मुष्टि मारिदिय असुर सिर,

जिहिं घात गयउ कटि दग जुगल रमरिग प्रलंब नकिन्न चिर ३

दोहा

मटकीतैं नवनीत जिम, बल प्रलंब को गोद ॥

कटि बिसे वृंदाबिनिन, भांधव जुत अति मोद ॥ ४ ॥

षट्पदी

इम बिहरत इक समय भयउ घन मिटि सरदागम,

बाचंयम हुव बरहि सारगाहक योगी सम ॥

ताने घनन बहु गनन तज्यो लहि बोध बिसदपन,

तनु पल्वल मीनादि तपिग ममता जुत जिम मन ॥

गृहरत गृहीव सुक्खि सरनि हुव थिर सागर मुनि हृदय,

सासि उडुबिकासनभ इम लसतजिम सुपुत्र करि कुल सजय ॥ ५ ॥

छठाकर लेचला, तब बलबेव ने कृष्ण से कहा ॥ २ ॥ १ मारनेवाले १ अच ३ इस समय अथवा रात्रि के आदिप्रहर (संध्या सप्रय) में ४ हे शेषावतार ५ दे री ६ मक्खन की भांति ७ बलदेव ने ८ मस्त्रिक (भेजा) ९ प्रवेश किया १० वृंदावन में ११ लक्ष्मीपति (कृष्ण) सहित ॥ ४ ॥ इसप्रकार बिहार करते एक समय में घन (बादल) मिट कर शरद ऋतु का आगम हुआ, तहां सारग्राही योगी के समान मगूर मौनी हुए (बोलना बंध किया) और बहुत समूहवाले मेघों ने विस्तार को छोड़ कर ज्ञान रूपी उज्ज्वलता धारण की, और ममता (यह मेरा है) के साथ जैसे मन तपायमान होता है ऐसे छोटे तलावों में म छली आदि जीव तपने लगे . इसीप्रकार घर के कार्यों में तत्पर हुए गृहस्थी के समान मार्ग सूख गये . और सुनियों के हृदय के समान समुद्र भी चपलता को छोड़ कर स्थिर हुआ . और श्रेष्ठ पुत्र से विजय के साथ कुल शोभा यमान होता है ऐसे ही चंद्रमा और तारों से आकाश शोभित हुआ ॥ ५ ॥

नभश्चारिदश्भुवश्पंकश्सलिलश्कलिमल इमं ह्योरिय,  
 प्रत्याहारहिं अक्षगोचरनतै किं निहोरिय ॥  
 पूरकं छविं जलपूरिं रोकिं रक्ख्यो कुंभकश्छविं,  
 पुनि रेचकश्छविं प्रचुरं रक्खिं कङ्कयोहिं जतीं रवि ॥  
 सरश्सरितश्भीलश्पुष्करश्सुभगं लगे कुमुदं सुखमा धरनं,  
 सुखं सूरं घायं सखनं मनहुं सरनागतं रक्खतं सरनं ॥६॥  
 सकलं गोपं अैसे अनेहं नंदोपनंदं मुखं,  
 इंद्रं इष्टिं उपहारं लगे अर्जनं सुवृष्टिं सुखं ॥  
 कहिय कृष्ण सब करहिं इष्टि गोवर्द्धनकी अब,  
 नहिं कर्षुकं नहिं बनिकं नियति गोपहिं किन्नै तब ॥  
 सुरभीश्अरण्यश्पर्वतश्सुभगं ए परदैवतं अप्पनैं,  
 पुनि सुनतं ऋद्धं गिरिं इहं पिहुलं स्वैरूपं बिहरतं बनै ॥७॥

### दोहा

आकाश में बादलों ने और भूमि पर कमल और जल ने कालेपन को इसप्रकार छोड़ा कि जैसे योगाभ्यास (अपने अपने विषयों से इंद्रियों को खींचने) से आत्मा इंद्रियों के विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) का छोड़ देता है, और योगविद्या के जाननेवाले जती के समान सूर्य ने पूरक (श्वास को खींच कर भीतर भर लेने) की रीति से जल को अपनी किरणों से भर कर कुंभक (भीतर भरे हुए श्वास को निश्चल करके रोकने) की रीति से रोक रक्खा। फिर रेचक (रुके हुए श्वास को बाहिर छोड़ने) की भांति अत्यंत रख कर निकाला और सुंदर तलाव, नदी, भील और काठिनाई से खोद कर किया जावे ऐसे जल में कुमोदिनी (रात्रिविकाशी कमल) परम शोभा को धारण करने लगे, जैसे कि वीरपुरुषों का सुख शस्त्रों के घावों से और शरण आये हुएओं को शरण रखने से शोभायमान होता है ॥ ६ ॥ ऐसे समय में नंद उपनंद आदि सब गोप अच्छी वर्षा के मुख के लिये इंद्र का यज्ञ करने की सामग्री इकट्ठी करने लगे तब कृष्ण ने कहा कि हम लोण नतो करसे हैं और न बनिये हैं भाग्य मे अपने को गोप बनाया है, इसकारण से गोवर्धन पर्वत के निमित्त यज्ञ करना चाहिये; क्योंकि अपने गैयां, वन, पर्वत येही सुंदर देवता हैं। और फिर यह भी सुनते हैं कि इस पर्वत में बहुत समृद्ध है, इसकारण से स्वतंत्रता से विहार करना बने ॥ ७ ॥

गोन रहैं विनु बन गिरिन, इन जुत गो इम इष्ट ॥  
इनहित मखबर याहितैं, देखहिं व्हैहि जु दिष्ट ॥ ८ ॥

षट्पदी

मत अखिलन यह मन्नि अदि हित मख आरंभिय,  
पय<sup>१</sup>दहि<sup>२</sup>पल्ल<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>अपू<sup>४</sup>प<sup>४</sup>बिबिध औदन पकाय लिय ॥

सो सकटन सब सज्जि गये ब्रजजन गोवर्द्धन,  
तिहिं सिर सब उपहार भरे नानाबिध भोजन ॥

करि अन्नकूट अर्चन करिय सिसु गोपिन संजुत सबन,  
इक रूप अपर हरि धरि अतुल मैं गिरि कहि किय सब अंसन

गउन पुज्जि गिरि एह सबन करवाय प्रदक्षिण ॥

सहंसन द्विजन जिमाय बहुरि आये सब स्वबिपिन<sup>३</sup> ॥

यह गिनि दर्प अपु<sup>३</sup>व्व सँक<sup>३</sup> बुल्लिय<sup>३</sup> संवर्तक<sup>३</sup>,

अखिय सठ आँभीर कछुन जे हुव मखकर्तक<sup>३</sup> ॥

किय इष्ट धेनु अर्भानुमत तिन धेनुंन जुत ब्रज सहित,

मैं भीर प्रचुर<sup>३</sup> वरखहु मुदिर<sup>३</sup> अब गोपन बोरन उचित ॥ १० ॥

संवर्तक गन जलेंद मुनत छाये ब्रज उप्पर,

अभुमुप्रिय<sup>३</sup> आँरोहि भीर हुव संग पुरंदर<sup>३</sup> ॥

पवन १ सलिल<sup>३</sup> २ करक<sup>३</sup> ३ पखान ४ संपौ ५ असैनिन<sup>३</sup> ६ सह,

उपडि घोर आसौर लगे डारन अति आग्रह ॥

गैयां वन और पर्वत बिना नहीं रहती, इसकारण से इन (वन और पर्वत) सहित गैयां अपने प्रिय हैं, इसीकारण से पर्वत के अर्थ यज्ञ करना अष्ट है, जो भाग्य होगा सो होगा, करके देखें ॥ ८ ॥ १ पर्वत के लिये २ मांस ३ आटा ४ अन्न ५ लकड़ों में ६ उस पर्वत के ७ सामग्री ८ पूजन ९ कृष्ण अपना बड़ा भारी दूसरा रूप धारण करके 'मैं पर्वत हूँ' यह कह कर सब सामग्री १० भोजन कर गये ११ अपने वन (वृंदावन) में १२ घमंड १३ अपूर्व १४ इंद्र ने १५ मेघों को १६ बुला कर कहा कि मूर्ख १७ अहीर कुछ भी नहीं वे भी यज्ञ को १८ काटनेवाले होगये और १९ घालक को सलाह से गैयाओं को अपना इष्ट कर लिया २० उन गैयाओं से हित २१ अर्धन २२ जल २३ मेघों के समूह २४ यादल २५ एरावत पर २६ चढकर २७ इंद्र २८ जल २९ ओला (गडा) ३० पाषाण (पत्थर) ३१ बिजुली ३२ वज्र ३३ मेघधारा

बहु सुरभि पिक्खिं प्रानहु तजत जानि वइर बासैव करिय  
साँवलै बाल सत्तम ७ वरस इक १ नख वह गिरि उद्धरिय ॥११॥

तरून छलि करकान छुलत साखाभर तुटत,

असनिन पात लदाव गुमट मंडप गृह फुटत ॥

पवन फेट गिरिकूट लगत लुंबत लहरावत,

विज्जुन पात दरारि पुहंवि नैक न जैक पाबत ॥

कहि सुनि न सकैं कहूँ कोउ किहँ कतिन त्राहि मैं न करि करिय,

साँवलै बाल सत्तम ७ वरस तदिनँ अँदि नख उद्धरिय ॥१२॥

बाँसबसे बनि संग प्रबल संवर्तक प्ररेत,

चंदावन पर बैर विरचि बज्जन भट भेरत ॥

ब्रजके सब जन बुल्लिँ अखिलँ धन जुत गिरि अंतर,

रक्खि रु तिहिँ करि अभय छाथ लिय दूर दिगंतँर ॥

नहिँ छुवन नीर नैकहु दयो करि करि घन थके गहर,

साँवलै धरिय सत्तम ७ वरस पब्बय नख छप्पन पहर ॥१३॥

दोहा

यह लखि कछु बिगरयो न गिनि, परयाँ हरि हँ हरिँ पाय

नैति विधाय दिन्नाँ सकल, हेलैन माफ कराय ॥१४॥

कहिय बहुरि गोलोकँके, गोर्गेन अँक्खिय मोहि ॥

जातँ मम गजघंट जल, सिंचो माधव तोहि ॥१५॥

इम कहि सित इम घंटलै, पूरि पुणँयजल ताहि ॥

१ बहुत गैयाओं को प्राण छोड़ते देख कर २ इंद्र ने वैर किया है यह जान कर ३ उठाया ४ वृजों पर ५ ओलों ६ से भार से ७ वज्र के पड़ने से ८ शिखर ९ बिजुलियों के पड़ने से १० श्रुति ११ चैन १२ कितनेक अपने मन में ही रजा करो यह कहने लगे १३ उस दिन १४ पर्वत नख पर उठाया १५ इंद्र के संदेश १६ बुला कर १७ संपूर्ण धन सहित १८ दिशाओं के अंतर तक १९ इंद्र भी २० कृष्ण के २१ स्तुति २२ करके २३ अपराध २४ कृष्ण के लोक में २५ गैयाओं के समूहों ने २६ अभिप्रेक करने को कहा है ऐरावत की दंड को २७ पवित्र जल से भरकर.



करि अभिसेकन कन्ह कै, संक्र कहिय पुनि चाहि ॥ १६ ॥

अर्जुन पांडव अंस मम, कुंती जांठर जात ॥

हरि ताकँहैं रखहु सदा, अपनौं जानहु तात ॥ १७ ॥

तव सहाय व्हैहैं वहहु, भार उतारन माँहि ॥

हरिकी इम सुनि कहिय हरि, यह सब स्वीकृत आँहि ॥ १८ ॥

जैयहिं नकोऊ जितिहै, मैं रहिहौं भुव जाँव ॥

इम कहि संक्रहिं सिक्ख दिय, आपति सदैय स्वभाव ॥ १९ ॥

करि आलिंगन कन्हको अभ्रं द्विरद आरूढ ॥

प्रविश्यो त्रिदिक् पुरंदरहु, गति प्रभुकी लखि गूढ ॥ २० ॥

हरिहु गोप गोपिन सहित, आये ब्रज अखिलेस ॥

इक समय विहरत इमहि, विलसत सरद बिसेस ॥ २१ ॥

कामपाल जुत बैशु कल, ईस राँका बन अंत ॥

बाँडि हरि मैस्मरस्वश्वर मधुर, ललित त्रिभंग लसंत ॥ २२ ॥

### हरिगीतम्

यह बेशु कैल सुनि गोपिका ब्रज छोरि सम्मुह ही चली,

अवरोध बंधुन लंघिकै न रुकी गई स्मरउज्ज्वली ॥

न दर्ई जुँ जान सुँ पुण्य १ अघ १ दुव २ भुम्भिमुक्त हि व्है गई ॥

१ इंद्र ने २ उंदर से ३ पैदाहुआ ४ इंद्र की ५ कृष्ण ने ६ मंजूर ७ है ८ अर्जुन को ९ जब तक १० इंद्र को ११ लक्ष्मी के पति (कृष्ण) ने दयालु स्वभाव से १२ ऐरावत पर चढ़ कर १४ इंद्र १३ स्वर्ग में गया १५ छिपी हुई १६ सब के स्वामी १७ बलदेव सहित १८ वंसी का मधुर शब्द १९ आश्विन की २० पूर्णिमा २१ काम सहित २२ शरीर में सुंदर तीन बल शोभायमान होकर २३ वंसी का मधुर स्वर २४ जनाने से २५ कामदेव से उलझी हुई २६ जिनको न हीं जाने दी २७ वे पुण्य पाप दोनों बराबर होजाने से अर्थात् कृष्ण के पास जाने की उत्कंठा मन में रहने से पुण्य, और नहीं जाने से पाप, ये दोनों बराबर होजाने से भूमि पर ही मोक्ष को प्राप्त होगई (पुण्य अधिक रहने से पुण्यफल, और पाप अधिक रहने से पापफल भोगना पड़ता है, और जब ये दोनों बराबर होजाते हैं तभी मोक्ष होना मानते हैं) और जो कृष्ण के पास गई उनकी शिक्षा पाकर

रु गई सु कन्हहि पास सिक्खतही अहम्मतिमैं भई ॥ २३ ॥

हरि अन्य देस गये तहाँ सब कृष्ण व्है रमनैं लगी,

पदचिन्ह खोजत ओरके पद संग देखि चली ठगी ॥

अवचाय \* पुष्पनको करयो हरि सो लख्यो कहूँ जायकै,

कहूँ संगकी तियको कलार्प गुथ्यो सु ठौरहु पायकै ॥ २४ ॥

पुनि संगकीहु सगर्व जानि टरे जनार्दन ताहुसौं,

इत्यादि सब लखतोभई थल चुंबि चिन्हन बाहुसौं ॥

गहनार्टवी पुनि अगग जानि मुरी सबै बनि बावरी,

रहिकै जमी तट कृष्ण चेष्टित गानकी रचना करी ॥ २५ ॥

तहैं भक्ति कांतर कन्ह आय बिसासि गोपिनको लई,

रवि रास लाँस प्रसन्नता सबकोहि भानसको दई ॥

प्रतिगोपिका बनि कृष्ण हथन हथ बंधन दें नचे,

मानि मंजु भूखन भूरि सिंजित सोर संकुल व्हैं मचे ॥ २६ ॥

फरके अधोपट घेर घुम्नि बनाय डेरन लौं भये,

सिर चीर वेग समीरसौं बिथुरे बिताँनन लौं छये ॥

कटिसूत्र १ नूपुर २ घटिका भननंकि झल्लरि लौं बनीं,

करफूल कंकन कूजना तरु चंपके पिकै व्हैं तनीं ॥ २७ ॥

स्वर मंद १ मध्य २ रु तार ३ मगनहार ग्रामनमैं फिरै,

ब्रह्मस्वरूप (अहंब्रह्म) होगई ॥ २३ ॥ दूसरे स्थल में कृष्ण के चरणों के चिन्ह खोजते स  
मय उनके साथ दूसरे पदचिन्ह देखकर \* पुष्पों का छेदन १ माथा गुंथा ॥ २४ ॥ साथ  
की स्त्री को वमंड सहित जानकर श्रीकृष्ण उससे भी जुदा होजये, इत्यादिक  
स्थलों को देखती और चिन्हों को हाथों से छूमतीहुई आगे २ गहन वन  
जान कर बावली सी वन कर पीछी फिरी, और ३ भूमिचित्र में कृष्ण के  
समान चेष्टा करके गाने लगी ॥ २५ ॥ ४ भक्ति के कायर ५ नृत्य ६ मन को  
प्रसन्नता दी ७ बहुत ८ भूषणों के शब्द का सोर १० वहाँ पर ११ अवकाश र-  
हित होगया १२ लहंगे १३ आँख के चीर पवन से फैलेहुए १४ डेरे (सामि-  
याना) के समान छागेंये १५ कटिमेखला [कणगती] १६ घूँघरों का झनकार  
१७ हथफूल और कड़ों के १८ शब्द ने चंपे के वृक्ष की १९ कोयल के समान  
विस्तार किया ॥ २७ ॥ मंद, मध्य और उच्च तीनों प्रकार के स्वर याचकों के

तउ दुस्य तीन३हिमैं थके न चतुर्थ४सौं कबहु भिरे ॥  
 परिवर्तके श्रम काहु कन्हर कंध बाहु लता दई,  
 अवलंबके हित बल्लरी तनु कल्पपादपपैं गई ॥ २८ ॥  
 कटिनम्र अंग त्रिभंगको करकंज काहुक चुंबयो,  
 कुचभार लंक बिसंक तुटत जानि आश्रयकै लयो ॥  
 इकसार भेद प्रकार बजित रासको फिरनौ लस्यो,  
 आवत अद्भुत जानि यह शृंगार बारिधि मै बस्यो ॥ २९ ॥  
 तार्तीय३सप्तक७मूर्च्छना जमुना प्रतिध्वनि पूर्ण ठहै,  
 बढिबैलगी सु बिथारि बीचिन ज्यों छकी सिर धूर्ण ठहै ॥  
 बत्तोज चंचुकतैं उडैं मनिहार हारन बल्लरी, ॥  
 मनु चक्रवाकन चंचुतैं हुव दूर सैवल मंजरी ॥ ३० ॥  
 बलि भँकु भँकुत भँकु भँकुट धुंकु धुंकुट बित्थरै,  
 धित्था तथुंग तथुंग तत्ता थैइ थैइ धुने परैं ॥  
 विछिया१अनोट२जराय जेवर३पाय पायल४त्याँ बजैं,

समान ग्रामों में (संगीत में सात स्वरों के साथ बड़ज, मध्यम और पंचम ये तीन ग्राम हैं) फिरने लगे तो भी वे याचक तीन ग्रामों में ही थक गये, चौथे से कभी नहीं भिड़े, अर्थात् तीनों ग्रामों को छोड़ कर स्वर बाहिर नहीं गये। फिरने के श्रम से किसीने कृष्ण के कंधे पर अपनी भुजलता दी, सो माने सहारा लेने के लिये छोटी धेलि कल्पवृक्ष पर गई ॥ २८ ॥ नम्र व ली किसी गोपी ने त्रिभंग (कृष्ण) के कमल रूपी हाथ का चुम्बन किया सो मानों कुचों के भार से कमर टूटजाने की विशेष शंका से सहारा लिया है। भेद भाव से रहित होकर अथवा नाच में त्रुटि न होने देकर एकसाँ रास का फिरना शोभायमान हुआ। इसप्रकार का अद्भुत गोलाकार फिरना देख, शृंगार लज्जित होकर मानों समुद्र में घुस गया। भावार्थ यह है कि समुद्र में जो आवर्त अमर पड़ते हैं वे मानों शृंगार का कियाहुआ इसी का अनुकरण (नकल) है ॥ २९ ॥ १ तीसरी और सातवीं २ मूर्च्छना [सात रागों के साथ इक्कीस मूर्च्छना हैं] की प्रतिध्वनि से यमुना नदी पूर्ण होकर ३ लहरों को ४ मस्तक घुमाकर ५ कुचों की चौंटाणियों से मणियों की मनोहर हारलता उडती है सो मानों चक्रवी की चोंच से सैवाल (जलनीली) की मंजरी दूर होगई है ॥ ३० ॥ पुनि भँकु से लेकर थैइ थैइ पर्यंत जितने शब्द हैं वे

करडाल १ अंगद २ नोगरी ३ चटसाल ढपंककी सजें ॥ ३१ ॥

मखतूल मेचक गुंफ पिठि कलाप कुंतल उच्छरै,

नथमोरके भय जोर कातर पन्नगी पलटाकरै ॥

जिनके अलाप बसंतभव परपुष्ट पंचम ५ ठंक्रयो ॥

श्रुति १ जाति २ ताल ३ प्रबंध सम्मलि भास मन्मथको भयो ३२ ।

मम नाथहू पर हाथ वहै जहँ साथ सर्वहिको करयो,

कटपैं छुटयो पट लंबमान किरीट कानन लौं ठरयो ॥

कित कृष्ण लास्रजें १ केकिचंद्रक २ बांसिका ३ रु बिखानें ४ वहै,

वनमाल ५ बेवै ६ बिकीर्ण बिप्लुत कर्णिकार ७ न कान वहै ॥ ३३ ॥

जिम गोप नारिनैं चहयो तिम वहरहयो रु करयो कहयो,

सबनैं गह्यो सबकी सहयो सबठाँ लहयो इस उम्महयो ॥

ठुँदाँऽऽटवी जिहिँ रति संकुल रागके भरसौं भरयो,

लखि ताहि देवन छाकलै निज नाकै नचहु बीसरयो ॥ ३४ ॥

कबलौं करौं नृप राम बर्णन काव्य जो मम छंद वहै,

सब बाद्य के अनुकरण के शब्द हैं १ हाथ की डाल (भूषण विशेष) २ भुज

बंध ३ कामदेव की पाठशाला सभते हैं ॥ ३१ ॥ ४ काल ४ रेशम से ५ गुथा

हुआ ८ केसों का ७ समूह (वेणी, आदी) पीठ पर उछलता है, सो मानों

बेसर (नथ) में मोर बना हुआ है, उसके भय से कायर होकर सर्पिणी पलेटा

करती है (मयूर का सर्प को खजाना प्रसिद्ध है) जिन गोपियों के पंचम स्वर

की आलाप ने वसंत ऋतु में होनेवाले कोयल के (कोयल काक के बच्चों को

अपना समझ कर पाला करती है, इससे इसका नाम परपुष्ट है) शब्द को

ढकड़िया राग में श्रुति जाति और ताल के प्रबंध के शामिल कामदेव काप

आभास हुआ ॥ ३२ ॥ ग्रंथकर्ता [सूर्यमल्ल] कहते हैं, कि मेरे स्वामी कृष्ण

ने पराये हाथ में होकर सब का साथ किया ९ लंबा १० [

] ११ मयूरपंख के चंदवे जो कृष्ण के मुकुट में रहते हैं १२ सींग का धनुष

१३ चेत की लकड़ी, ये सब विवहल होजाने का कारण बिखर गये और कर्णभूषण

कानों में नहीं रहा ॥ ३३ ॥ १४ वृंदावन उस रात्रि में अवकाश रहित राग

के भार से भर गया १५ अपने स्वर्ग का ॥ ३४ ॥ हे राजा रामसिंह! इसका

कहां तक वर्णन करूं यदि काव्य मेरे स्वाधीन होवे और अन्य राजाओं की

अथा अल्प [क्रम] होवे तभी बुद्धि के अनुसार कुछ वर्णन करना बने परन्तु

तवही वनैँ कछु बुद्धिलौँ रु कथा महीप न मंद व्है ॥  
 पर अन्न भुज्जत रावरो सु निदेस व्यर्थ न होन दै,  
 रु वनैँ यहै नय तो न पण्डित और कानहु कोन दै ॥३५॥  
 प्रभु सर्वको प्रभु रावरोहि निदेस पूरन ठानिहै,  
 अरु सुद्ध मो हिय तो यहैहि मदीय है यह मानिहै ॥  
 इसै मासकी निस पूर्णिमा १५इम रास माधवनैँ रच्यो,  
 न तज्यो स्वसुंक्र मनोर्थ पूरि समस्तके मनमैँ मच्यो ॥३६॥  
 इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयशराशौ वीतिहो  
 त्रचतुर्भुजपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाऽधिक-  
 रणाकश्रीकृष्णचरित्रे भाराडीरवटस्थलविहरदेवतीरमणाप्रलम्बा-  
 ऽसुरनिपातनवासुदेववासवेष्टिविध्वंसनप्रकुपितपुरुहूतसंवर्तकाऽऽ  
 सारप्रस्तारणागोपालगोवर्धनगोत्रोद्धरणाशरणाऽऽगतशङ्खिनशक्रस  
 माश्वासनरासविहारवर्णनमष्टमोऽमयूखः ॥ ८ ॥ आदितः पञ्चा  
 शत्तमः ॥ ५० ॥

### प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

आप का अन्न खाताहूँ सो आप की आज्ञा को व्यर्थ नहीं होने देता, अर्थात् आप के वंश का ही विशेष वर्णन करता हूँ और जो केवल आप के वंश का ही वर्णन करने की नीति वनै तो और पंडित कोई कान ही न हीँ देवै कोई सुनै ही नहीं ॥३५॥ हे स्वामी रामसिंह ! जो सपका स्वामी परमेश्वर है वह आप की आज्ञा को ही पूर्ण करावेगा और मैं [ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल] जो शुद्ध हृदय से वर्णन करता हूँ तो आप भी यही मानोगे कि यह [जो औरों का वर्णन कियाजाता है वह] भी मेरा ही है ॥ ? आश्विन मास की २ अपना वीर्थ नहीं छोड़ा अर्थात् व्यभिचार नहीं किया ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में भांडीर वट के स्थल में विहार करते समय बलदेव का प्रलम्बासुर को मारना, श्रीकृष्ण का इंद्र के यज्ञ को विध्वंस करना, क्रुद्ध हुए इंद्र का मेघधारा को फैलाना, कृष्ण का गोवर्धन पर्वत को उठाना, शरण आयेहुए शक्ति इंद्र को आश्वास करना (विश्वास देना) और रासविहार वर्णन का आठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ = ॥ और आदि से पचासमयूख हुए । ५०

## दोहा

अँसैंही हरि इक सभाय, बिहरत अप्पन इष्ट ॥  
 धुतबिखान वृख रूप धर, आयो असुर अरिष्ट ॥ १ ॥  
 स्रावत सुरभिनि गर्भ सठ, नीरँद छवि रवि नैन ॥  
 खुरन बिदारत भुम्भि खल, वाढत अखिल अचैन ॥ २ ॥  
 विटपि घात अंकित बदन, बाधत तापस ब्रात ॥  
 लम्बकंठ ओठन लिहैत, उच्च कँकुद उमहात ॥ ३ ॥  
 देखत गोपी गोप हुँत, किय हैरि कृष्ण पुकार ॥  
 सिंहनाद करि तिहिँ समुख, हुव बसुदेवकुमार ॥ ४ ॥  
 सिंह निनँद अरु प्रतल खँन, वहहु सुनत इत आय ॥  
 उदर सिंग मारन लग्यो, जोहि कह्यो जदुराय ॥ ५ ॥  
 जानु मचक दे तिहिँ जँठर, वहहि बिखान उपारि ॥  
 ताहि हन्यौ हरि ताँहि करि, ब्रजजन अभय बिथारि ॥ ६ ॥

## पदपदी

पूतना१रु धेनुक२प्रलंब मारित अरिष्ट४अब,  
 गोवर्द्धन गिरि धरत दमत भुजगादि दुष्ट सब ॥  
 अंसहिँ नारद कहिय तैत्थ्य जिम हुव उदंतँ जिम,  
 दुँष्ट सुनत बसुदेव कुँप्पि तरज्यो सु रुकँ किम ॥  
 संसँदि विनिदिँ सब जादवन अक्खिय बुल्लि स्वफँलकसुत,  
 अरूर जाय आनहु अँरहि जुँ अरि कृष्ण वँल वंधुजुत॥७॥

१ कंपातेहुए सींगों से २ वृषभासुर ३ गैयाओं के गर्भों को पटकता हुआ ४  
 मेघ की सी छवि और सूर्य सरीखे नेत्र ५ सबको ६ वृक्षों की घात से ७ चि-  
 न्हित (निशान सहित) है सुन्न जिसका ८ तपस्वियों के समूह को ९ पीड़ा  
 देता हुआ १० ओठों को चाटता हुआ ११ ऊँची खूँदड़ (पीठ के ऊपर का मांस पिंड)  
 १२ शीघ्र १३ हे हरि हे कृष्ण १४ गर्जना १५ थाप (ताल ठोकने) का १६ शब्द सुनकर  
 १७ घुटने की १८ पेट में १९ उसीका सींग उपाड़ कर २० उसी सींग से २१ सत्य  
 २२ वृत्तांत २३ कंस २४ क्रोध करके धमकाया २५ सभा में २६ विशेष निंदा  
 करके २७ अक्षर को २८ शीघ्र ही २९ जो मेरा शत्रु ३० भाई बलदेव सहित

विष्णु अंस बलदेवः कृष्णरमम मारकं कहियत,  
 मन यातैं मामकहु चपल तिन मारन चाहियत ॥  
 धनु उच्छव व्हैहैं इहाँहु तिथि कलिह चउदसिः ४,  
 मल्ल नियुद्ध निमित्त बेग आनहु तिन हिय बसि ॥  
 चाणूरः मल्ल मुष्टिकः चतुर तोसलः ३ मम अरि मारिहैं,  
 वाँ नाग कुवलयपीडः ४ यह प्रबल निसंक पछारिहैं ॥ ८ ॥  
 पुनि वसुदेवः १ रु नंदगोपः २ मुख खल हम मारहिं,  
 उग्रसेनः ३ मम जनक मारि भुव आन विथारहिं ॥  
 तोविनु जादव और सत्रु हमरे हनिहैं सब,  
 यातैं नंद निकैत जाय अर्भकः आनहु अब ॥  
 दै सिक्ख दानपतिकों इम रु केसी प्रति पठयो हुकम,  
 सुत गोपबेस वसुदेव के जाय नंद व्रज हनहु जँम २॥९॥  
 स्वामि कथित अनुसार असुर केसी हय आकृति,  
 वृंदावन गय बेग सफँन दारतें भुव संप्रति ॥  
 संटाँ लोम सहात बाँरिवाहन विश्वरावत,  
 लांघित रवि ससि गैल असह कुद्धत उफनावत ॥  
 निखिलनँ डरात हेसाँ निनदं पहुँच्यो व्रज कलकँल करन  
 गोपी रु गोप कातरं गये सब रक्खहु कहि रहि सरना १०।  
 वासुदेव तव बेग कह्यो केसी आवहु इत,  
 तोरों दसनँ त्वदीयँ जथों पूर्णों के स्मरजितें ॥  
 दै इम वचन प्रतोदैं हत्थ हयमुख दिन्नाँ हरि,

१ मेरे मारनेवाले २ मेरा भी ३ मल्लों से बाहुयुद्ध के कारण ४ अथवा ५ हाथी  
 ६ आदि ७ पिता ८ घर ९ बालकों को १० अकूर को ११ दोनों को ॥ ८ ॥  
 मालिक के कहने माफिक केशी नाम राजस घोड़े का स्वरूप करके १२ खुरों  
 से १३ खोदता हुआ १४ अभी [इसी समय] १५ बादल रूपी १६ गरदन के केशों  
 किसवाली को बिखेरता हुआ १७ सय को १८ हींसने के १९ नाद से २० व्रज में  
 कोलाहल करने को २१ कायर २२ दाँत २३ तेरे २४ जिस प्रकार २५ पूर्ण  
 के २६ महादेव ने २७ वचन रूपी चावक

देरी बिच किं दंभोलि<sup>१</sup> भाट रँद तास गये भरि ॥  
जगदीस बाहु बढि तहँ सजैव खंड दोय खलके करे,  
सोनित सफेन बँमिते<sup>२</sup> सकल प्रसँव<sup>३</sup> मल<sup>४</sup> श्मोर्चत परे ॥११॥

दोहा

नुति किन्नी केसी हनत, अखिलन मोद अघाय ।  
अंत रहित नारद इहाँ, अखिय कृष्णहि आय ॥१२॥  
साधु साधु वसुदेव सुत, नर १ हय २ समैर<sup>५</sup> विनोद ॥  
अप्प दिखायो दुलभ यह, मम हिय छायो मोद ॥१३॥  
केसव अप्प कहायहो, केसी बध करि कर्म ॥  
कलिह कंसबध लखनको, बलि<sup>६</sup> अहाँ जगैवर्म ॥१४॥  
रचिहो पुनि रनखेत रन, भुम्मि उतारन भार ॥  
सो लखिहों सब के सरन, अगै<sup>७</sup> जंगम आधार ॥१५॥  
इम कहि इत नारद गये, आये घोसँ अनंत ॥  
आरुहि रथ अक्रूरहू, पहुँच्यो ब्रज परजंत ॥१६॥  
तर्गन<sup>८</sup> बिच निरखे तहाँ, गो दोहत गोपाल ॥  
स्मैर<sup>९</sup> सुभग बलभद्र सह, कंसासुरके काल ॥१७॥  
दियउ जाय तहँ दानपति, माधव चरनन मत्थ ॥  
अक्रूरहिं गिनि भक्त उन, हिय लायो दृढ हत्थ ॥१८॥  
॥ पञ्चाटिका ॥

अक्रूर निजांगम अत्थ आय, सब दियउ कंस आसय सुनाय ॥  
हरि कहिय दानपति<sup>१०</sup> सँहास, निहचै खल पावहिं कलिह नास ॥१९॥  
बैल<sup>११</sup> मैरु इतर सब गोप व्रांत, पहुँचैगे मधुपुर तात प्रात ॥

१ पर्वत की खाद्री में २ किधों श्वज्र मंडे इस प्रकार ३ दांत ४ शीघ्र ५ उगलता हुआ ७ टपकता हुआ ८ छोड़ता हुआ ९ स्तुति १० मृत्यु से रहित [नारद को अमर मानते हैं] ११ मनुष्य और घोड़े के युद्ध का १२ आपने १३ पुनि १४ हे संसार के रक्षक १५ अचर [जड़] १६ अचर [चैतन्य] के आधार १७ अहीसों के धरों में १८ कृष्ण आये १९ बल्लूओं के बीच में २० मंदहास्य २१ अपना आना २२ अक्रूर से २३ हास्य पूर्वक २४ बलदेव २५ दूसरे २६ समूह २७ मथुरा.



रचिस्वागत\*इमकहि रकिस्वरात्ते, स्पंदनजुतप्राप्तिहि किन्नसंति॥२०॥  
 लै गोप सकल नंदादि लार, बिरचिय प्रयान दानव बिदार ॥  
 रोदन भवं गोपिन सुनत राव, छोरि रु चलेहि बसुदेव छावर ॥२१॥  
 अक्रूर सहित इकश्रथ अरोहि, माधवबलरहंकिय सबन मोहि॥  
 कालिंदि पुलिन पहुँचत कृपाल, किय दानपतिहु मध्यान्हकाल॥२२॥  
 जमि सलिल नियज्जत न्हात जत्थ, तक्कयो स्वफलकसुत चित्रं तत्थ॥  
 फन सहँस१०००कुंदअवदातं फीतं, प्रभु सेव्यमान देवनपुनीत ॥२३॥  
 वासुकि मुख नागन बेष्टमान, पट नील श्रवन कुंडल प्रधान ॥  
 अंभोजं नयन पत्राऽवतंस, सब सत्वनं सेवित सुप्रसंस ॥ २४ ॥  
 इहिं दिव्यरूप बलदेव एहि, अक्रूर सलिल अंतरलखेहि ॥  
 बलभद्र अंक श्रीबच्छं वच्छं, अंभोजं नयन घनस्याम अच्छ ॥२५॥  
 पंकजं शगदारु दरैश्चक्रपानि, माधव लये ति<sup>२२</sup> अक्रूर मानि ॥  
 सनकादि महाभुनि सेव्यमान, निरखत भयो सु विस्मय निधान॥२६॥  
 स्पंदनं पर छोरे मै सुहाय, इत कित उभैरहि जलमध्य आय ॥  
 इम जानि निकासि चितये उदार, दीसे तबरथ पर दुव<sup>२३</sup>कुमार॥२७॥  
 व्है जल निमग्नं पुनि लखिय हाल, पहिलैं जिस दीसे तब कृपाल॥  
 बाहिर पुनि आवत रथ विसिष्टं, अक्रूर लखे अखिलेसं इष्ट ॥२८॥  
 कर्तार जानि किय नमसकार, बलि सबन किन्न पुरगमं बिहार ॥

\*आगे का आदर १ घाड़े [घोड़ों का रथ में जोते] २हुआ ३शब्द ४उत्तर ५यमुना के  
 कनारे ६ यमुना के ७ जल में डुब की [गोता] लगा कर स्नान करते समय ८  
 अक्रूर ने ९ आश्चर्य देखा कि १० मोंगेर के समान ११ स्वेत और १२ विक  
 से हुए हजार फणवाले प्रभु का पवित्र देवता सेवन करते हैं १३ वासुकि आ  
 दि सर्पों से घिरे हुए १४ कमलनयन १५ पत्र का है सुकुट जिनके १६ सब प्रा  
 णियों से सेवन किये हुए श्रेष्ठ प्रशंसा युक्त ॥ २४ ॥ इस दिव्य रूप से अक्रूर  
 ने इन्हीं बलदेव को जल में देखा और बलदेव की गोदी में १७विष्णु का चि  
 न्ह है जिनकी १८छाती पर और १९ कमल के समान नेत्र, सुन्दर घनस्याम  
 स्वरूप २० कमल २१ शंख २२ तिन को अक्रूर ने लक्ष्मी का पति मान लिया  
 २३ रथ पर २४ डूबकर २५ युक्त २६ सब के इष्टदेव २७ कर्तार २८ पुनि २९  
 आगे जानेवालों ने.

\*चरमाचल पहुँचत चंडधाम, मधुपुर सबैहि पैंते ललाम ॥ २९ ॥  
 अक्रूर कहिय हरि बल रहिँ तत्थ, स्पंदन तजो रु न चलौँ वसत्थ ॥  
 मैं अगग नगर प्रविसेत उदार, प्रबिसहु तुम पिच्छैं चरनचारैं ॥ ३० ॥  
 वसुदेव गेह जाहु न बहोरि, खल कंस न तो कछु करहिँ खोरि ॥  
 इम कहि स्वफल्क सुत पुर प्रविष्ट, पिच्छैं सन प्रविसे अखिल इष्ट ॥ ३१ ॥  
 बल शृङ्गार लखत मधुपुर विनोद, दुवराजमार्ग पहुँचे समोद ॥  
 तहँ कंस रजक सुहि रंग आर, पिकख्यो सु करत पट संसकार ॥ ३२ ॥  
 जंघे पट हरि बल तराँजि कंस, सुनि रजक कुबँच बुल्ल्यो नृसंस ॥  
 सिर प्रतल तोरित सजवँ समेत, ले बस्त्र गये मालिक निकेत ॥ ३३ ॥  
 हसि तत्थ पुष्प मंगे बहोरि, दिन्नै सुमंजीवी दुतहि दोरि ॥  
 किय दंडपतन रचिनमसकार, इहिँ तुष्टि हरिहु दिय वर उदार ॥ ३४ ॥  
 न तजै श्री मालिक कबहु तोहि, कबहु न वितै बल हानि होहि ॥  
 यहँ भुग्गि भोग बहु आयु अंत, दिवँ लोक साधुँ बसिहँ दिपंत ॥ ३५ ॥  
 मैंति तव नहिँ पावहिँ धर्मभेद, कबहु न वहै संतति कोहु छेद ॥  
 पृथुँ आयु होहु तव कुल सुपोसँ, लहहु न कदाँपि उपसंग दोस ॥ ३६ ॥  
 इम लै प्रसून वर अप्पि ताहि, आवंत राजपथ दुव २ उमाहि ॥  
 कुँजा कंसासुर चेटीकाँ सु, हुव भेट नैक वँकाभिधा सु ॥ ३७ ॥

१ सूर्य के \* अस्ताचल पहुँचते समय २ पहुँचे ३ अब ४ पैदल होकर  
 ५ दोप ६ अक्रूर ७ कंस का घोड़ी और वही ८ रंगरेज भी था जिसको  
 बल ९ सुवारते देखा १० मांगे ११ कंस को धमका कर, कि कौन तेरा कंस  
 है, यह सुन कर घोड़ी १२ खोटा वचन बोला १३ क्रूर १४ थप्पड़  
 से उसका शिर तोड़ कर १५ वेग के साथ १६ माली के १७ घर  
 १८ माली ने १९ शीघ्र २० दंड के समान पड़ कर. कृष्ण ने प्रसन्न होकर इ  
 सको उदार वर दिया ॥ ३४ ॥ हे माली ! तुझको २१ लक्ष्मी कभी नहीं छो  
 डेगी और तेरे २२ धन और बल की हानि कभी नहीं होवेगी २३ स्वर्ग लो  
 क में २४ अष्ट पुरुष २५ शोभायमान होकर २६ बुद्धि २७ संतान की २८ छु  
 टि २९ बड़ी आशुवाला ३० अष्ट पुत्र ३१ कभी ३२ रोग अथवा उत्पात ३३  
 पुष्प ३४ कुवड़ी (कमर से झुकी हुई) कंस असुर की ३५ दासी ३६ वंका (कु  
 वड़ी) है नाम जिसका

अनुलेपन भाजन जास हत्थ, सो पै मुकुंद मंग्यो समत्थ ॥  
 कुब्जा सुनि सादर करि प्रनाम, दिन्नौ अनुलेपनहित सकाम ॥३८॥  
 दुवर्चीरन चरिय अप्प देह, यँहँ कृष्ण करिय इक चित्रँ एहँ ॥  
 कुब्जा दुवर्चरमन चरन थप्पि, अंगुलि दुवर्जाके चिबुँक अप्पि ॥३९॥  
 कछु तमक दई अटतहि उदार, सो सरल भई लहि वपु सुढार ॥  
 पट अँचि कांत चलिये स्वमेह, बुँल्ली इम भावन भर सनेह ॥४०॥  
 हरि कहिय बहुरि अँहौँ सहेत, इम तिहिँ छुराय किय अगग चेत ॥  
 पुनि किन्न धनुखसाला प्रवेस, देख्यो समस्त फिरि रंगदेस ॥४१॥  
 कोदँडँ लियउ कन्हर उठाय, टंकारि तोरि दिय दँल २ गिराय ॥  
 जिहिँ निनँद भोजपति त्रास जग्गि, लँखन खल पँखन कंप लगि ॥  
 धनु जामिकँ जुज्जे सकल धाय, ते मारि दये निजपद पठाय ॥  
 आगँत स्वफँलँकसुत प्रथम जानि, पुनि चापभंग निस्वँन प्रमानि ॥४३॥  
 चागूरँमल्ल मुष्टिकँबुलाय, बुँल्ल्यो हि कंस दग लायँ लाय ॥  
 वसुदेवतनय दुवर्गोपवेस, आये तिन बुल्लहु रंग एस ॥ ४४ ॥  
 अँदई वनि मारहु रचि नियुँदँ, सुनियत मम मारक कृष्ण कुढ ॥  
 देहौँ तुम्हँहु मम उँचित भोग, तुम सहित राज्य करिहौँ निरोग ॥४५॥  
 इम कहि करि मल्लन सावधान, बुल्ल्यो आँधोरन अप्पि दान ॥

१ उचटन ( शरीर पर लेपन करने का गंध द्रव्य ) का २ पात्र, वह भी ३ कृष्ण ने बलवान्पन से मांगा सो कुब्जा ने कामयुक्त होकर लेप करने को दिया ॥ ३८ ॥ ५ यह ४ आश्चर्य की बात करी कि कुब्जा के दोनों पग अपने पगों से दया कर दो अंगुली उमकी ६ ठौड़ी (डाढ़ी) के नीचे देकर ॥ ३९ ॥ चलतेहुए ने ही थोड़ा सा बल (जोर) दे दिया, जिस से उसका कुबड़ापन मिट कर सीधा सुंदर शरीर हो गया तब ६ परमेश्वर ने स्नेह भरके वस्त्र खींच कर ८ बोली कि हे ७ प्रिय (पति) अपने घर चलि ये ॥ ४० ॥ १० धनुष को ११ दो दूकड़े करके १२ उस शब्द से कंस के त्रास जगी और दृष्टके १४ चचाते १५ लायों को कंप (धुजनी) लगी ॥ ४२ ॥ धनुषके १६ पहरायत सब आकर लहे १७ वपुषद को भेज दिया (मुक्तिदेदी) १८ आना १९ अक्षर का २० शब्द २१ बोला २२ ने प्रीति अग्नि लाकर [लाल नेत्र करके] २३ निर्दयी २४ वाशुज २५ जिसा से भोग भोगता हँवता २६ दाही के महायन को २७ दान देकर कहा

अरु कहिय रंगके द्वारभाग, तू रक्खि कुबलयापीड़ नाग\*॥४६॥  
 तिहिँ करि मम मारक गोप बाल, आवहि दुव२मारहु तिन उँताल॥  
 इम कहि समाज बिच कंस आय, बैठो सुमंच परिखदं बनाया॥४७॥  
 जहँ मंच हजारन सज्जमान, बलिँ उच्च नीच बैठन बिधान ॥  
 आसीन भूप सब इक्क ओर, अँतेउर इक दिस सुनत सोर ॥४८॥  
 इक ओर मनुज नागर अपार, इक ओर ग्राम्यजन लखनहार ॥  
 इकदिस पुरनारिन विविध व्यूह, इक ओर बारिनारिन समूह ॥४९॥  
 बसुदेव १ नंद २ अक्षूर ३ जेहु, बेठे टरि मंचन प्रांत तेहु ॥  
 सुत मरत जानि मुख लखन आँहिँ, देवकसुताहु पुर तियनमाँहिँ ॥५०॥  
 सहँसन बादितन बनि निघात, मच्चिग तहँ कैलकल अँकसमात॥  
 इहिँ बिच उमैरहि इच्छा बिहार, दँऊ१हरि२आये रंगद्वार ॥५१॥  
 पिल्लयो सु व्याल तव हस्तिँपाल, कोपित कृतांत आयो कराल॥  
 हनि ताहिदोहु रगहिद्वि२रदहँथ, मृगपति२कि रंगप्रविसे समथ५२  
 क्रिय प्रथम चरित जे जे दुहू२न, ते सुमिरि सबन देखे अँनून ॥  
 बँलगुन लखि मल्लन उभय२बीर, बलगुनँ लगे तिँ २गतिपथ गभीर॥  
 चागूर१कुप्पि लिय कन्ह२खेल, मुष्टिक१लिय दँऊ२दाव मेल ॥  
 छेपनँ१रु रँन्निपातावधूत२, रचि उभय२उभय२मंडे अँभूत ॥५४॥  
 धुज्जिग दरारि भूतल धमँकि, संकर समाधि छुटि असुर संकि ॥  
 डगमगिय अद्रि ब्रह्माण्ड डोल, कसमसि मुजंग१कमठेस२कोलँ३  
 जगबिकल होत कल्पांत जानि, मचित्रासकाल बिकराल मानि॥  
 पँविपात मनहु प्रँतलन प्रहार, आघात मार प्रसरत अपार ॥५६॥

\* अखाड़ा के दरवाजे पर कुबलयापीड़ नामक हाथी को १शीघ्र २ मंचों की सभा३पुनि४रीति५वैदेजनाना७नगरनिवासी ८ग्रामीण लोग९वेश्याओं का १०मंचोंके स्थलसे टलकर११कोलाहल१२अचानक१३बलदेव और कृष्ण १४ हाथी को १५महावतने१६द्यमराजके समान१७दोनों दंत हाथोंमें पकड़कर १८किधों१९बलवान सिंह रंगभूमि में घुसे२०प्रबल२१सुंदर मल्लों को २२वे मल्ल२३वकरे(अज)के समान लगे२४बलदेव को२५मनोयोग से शरीर मिलाकर२६कैकदेना२७पहिले नहीं हुए जिस प्रकार२८वराह२९मानों वज्र पड़े जैसे ३०थप्पड़ों

जिमजिमनियुद्ध\*हुवअतिअमान, तिमतिमलगिमल्लनघटनप्रान\*\*  
 यह जानि कंस मनचित्र धारि, लक्खनवादित्रन दिय निवारि॥५७॥  
 हरि पकरि ससंकल मल्ल पाय, चिरंकाल गगन रक्खयो भ्रमाय ॥  
 पुनि दियउ रजक पट भू पछारि, इम लियउ कन्ह चाणूर मारि॥५८॥  
 सुष्टिक उर दै बल सुष्टि रीसि, दे जानु हन्यौ पुनि पुहवि पीसि ॥  
 मारिय बलिं तोसल कन्ह रज्जि, खिलमल्ल गये यह देखि भज्जि॥५९॥  
 तब कहिय उच्च करि कंस कोप, कहहु समाज अरु उभयगोप॥  
 गहिलेहु नंद जरि निगड पाय, बसुदेव हनहु खल कुटिल भाया॥६०॥  
 लहि कन्ह जोर यह गोप दुष्ट, सरबस्व हरहु तिनको प्रसुष्ट ॥  
 इम कहल कंस ढिग मलपिआय, श्रीपाति सिखाहि पकरी सुभाया॥६१॥  
 डारयो उछारि खल अर्धर देस, ऊपरहि अप्प लै जग असेस ॥  
 आये सु भयो आघात उग्र, उछरे समाधि इहिं पात उग्र ॥६२॥  
 उठि सर्जव कन्ह तजि तासु तुंद, सब रंग फिरे अचत मुकुंद ॥  
 इम मरत कंस तस अनुज आय, रन रचिय सुवामा बल बढाया॥६३॥  
 यह मारि दयो तब भुव अनंत, अंतेउर हाहा हुव अनंत ॥

कंटक जदुकुलको मारि कंस, इम सबन अभय दिय जदुवैतसा॥६४॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयराशौ वीति-  
 होत्रचाहुवाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाधि-

के प्रहार\*बाहुयुद्ध\*\*बल १ सांकल सहित (जो सब को जीतकर दिग्विजयी हो जाता है वह अपने पगमें सांकल रखता है, अर्थात् अपने समान दूसरा नहीं होने का यह चिन्ह है) २ घटुत देर तक ३ घोबी कपड़े को पटके जिस प्रकार ४ बलदेव ने ५ घटना देकर ६ भूमि पर ७ फिर कृष्ण ने तोशल नामक मल्ल को ८ मारने में प्रीति करके मारा यह देख कर याकी के मल्ल भाग गये ९ चेही पगों में जड़ कर १० विशेष क्रोध करके ११ कृष्ण ने १२ श्रेष्ठ रीति से कंस की चोटी ही पकड़ी १३ नीचे के स्थल पर पटका और आप १४ सम्पूर्ण जगत् को लियेहुए ऊपर आये (विष्णु के शरीर में सब जगत् का वास है) १५ बडाभा री शब्द हुआ १६ उसके पड़ने से १७ शिव समाधि से उछल गये १८ शीघ्र १९ पेट को २० कृष्ण ने २१ जनाने में २२ यदुकुल के मुकुट (कृष्ण) ने ॥६४॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

करणाकश्रीकृष्णचरित्रे वासुदेवाऽरिष्टनिपातन-नारदाऽवबोधितकं  
साकूरः केशीरगोकुलप्रेषण-सुकुन्दकेशिमारण-कृष्णानारददृष्टय  
मलशकेशोरमाहात्म्यश्वाफलिकबलः कृष्णमथुराऽऽनयन-वासुदे  
वौग्रसेनिरजकनिषूदन-मालाकारवरदान-कुब्जाकराऽनुलेपनप्रति  
ग्रहण-तत्सरलीकरणा-कोदण्डभञ्जन-कुवल्यापीडः चाणूराऽमु  
वियोजन-बलभद्रमुष्टिकः सुवामश्वंसन-शौरितोशलः कंसरविमर्द  
नं नवमोऽमयूखः ॥९॥ आदित एकपञ्चाशत्तमः ॥५॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

हरिः बलरसानुज कंस हनि, परे जनकके पाय ॥

माताहू हित जुत मिली, दुवः लिय दुहुः न उठाय ॥१॥

करन लगे वसुदेव नुति, सुमिर जन्म खिन बत्त ॥

तहँ सब माया प्रेरि किय, बंधुभाव अनुरत्त ॥२॥

जननिः जनकः गुरु जडुन जुत, पूजे सब हरिः राम ॥

उग्रसेन गह्विय धर्यो, टारि सुबंधन धाम ॥३॥

पाँड़क वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका  
ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण का वृषभासुर को मारना, नारद से सब वा  
त जान कर कंस का अकूर सहित केशी को गोकुल भेजना, कृष्ण का केशी  
को मारना, नारद के देखेहुए कृष्ण और नवीन उम्र का घोड़ा इन दोनों  
के युद्ध का माहात्म्य, अकूर का बलदेव कृष्ण को मथुरा लाना, कृष्ण का कंस  
के घोड़ी को मारना, माली को वरदान देना, कुब्जा के हाथ से उवटन लेक  
र उसके शरीर को सीधा करना, धनुष तोड़ना, कुवल्यापीड हाथी और चा  
णूर के प्राणों का वियोग करना, बलदेव का मुष्टिक और सुवाम को मारना,  
कृष्ण का तोशल मल्ल और कंस को मारने का नवमा मयूख समास हुआ ॥  
और आदि से इक्कावन मयूख हुए ॥ ५१ ॥

कृष्ण और बलदेव छोटे भाइयों सहित कंस को मारकर पिता वसुदेव  
के पगों में पड़े ॥१॥ जन्म समय की बात को याद करके वसुदेव स्तुति कर  
ने लगे, तब माया को प्रेरणा करके कृष्ण ने सबको बंधुभाव में प्रीतिवाले  
करदिये ॥२॥ माता पिता और यादवों के बड़े लोगों ने कृष्ण बलदेव की पू  
जा की और उग्रसेन को कैदी खाने से निकाल कर गंदी पर बिठाया ॥३॥

कुल जजातिके साप यह, राज्य उचित नहि जोहु ॥  
 हरि अक्खिय मोछत हुकम, करहु सुरन सिर तोहु ॥४॥  
 यह सुनाय सुमिरत पयन, आयो आतुर तत्थ ॥  
 हरि कहि लावहु सकसौं, कहि रु सुधर्मा अत्थ ॥५॥  
 उग्रसेन नृपके तपत, यह न सभा तुम योग्य ॥  
 अब मथुरा भेजहु अरहि, भुव पति जदुकुल भोग्य ॥६॥

हरिगीतम् ॥

यह सुनि सुधर्मा इंद्रसौं ब्रत जाय मारुत मंगई,  
 सुनि सकहु हरिको निदेस सभा वहै द्रुतही दई ॥  
 पवमानहू द्रुत आनि जो जदुवंस भोग्य सभा करी,  
 बलशृङ्गारपुनि नरभाव लै मति अस्त्रसिक्खनकोंधरी ॥७॥  
 सादीपिनी द्विजपै स सिक्खन दौहु उज्जइनी गये,  
 धनुवेद चोसठि ६४ द्यौसमैं सरहम्य संग्रह सिक्खये ॥  
 लवणोद माहिं प्रभास तीरथ पुर्व्व पुत्र हन्यौंगयो,  
 निज दक्खिना गुरु सोहि दौउरन देखि दुर्जय मंगयो ॥८॥  
 बलशृङ्गारमंगिय सिंधुसौं तव सिंधु अंजलिकै<sup>१</sup> कह्यो,  
 दैररूप मौरक पंचजन दितिजात मो जलमैं रहयो ॥  
 तव कन्ह पैठि समुद्रमैं खल संखरूप सु मारंगो,

कृष्ण ने कहा कि ययाति के आप से यह (यादव) कुल राज्य योग्य नहीं है तौ भी मैं हूँ तब तक देवताओं पर हुकम करो ॥४॥ यह सबको सुनाकर पवन को याद किया सो जल्दी ही आया, जिसको कृष्ण ने कहा कि इंद्र से कहकर देवताओं की सभा यहां लाओ ॥५॥ १ शीघ्र, वह सभा पृथ्वीपति यादवों के भोगने योग्य है २ शीघ्र ३ पवन ने ४ आज्ञा ५ पवन ने ६ अभि प्राय सहित ७ क्षार समुद्र में प्रभास तीर्थ में कृष्ण के गुरु सान्दीपिनी नामक ब्राह्मण का पुत्र मारागया था सो इन दोनों को दुःख से जीतने में आये ऐसे जान कर वही अपना पुत्र दक्षिणा में मांगा ॥८॥ ८ समुद्र से ९ हाथ जोड़ कर १० कहा कि ११ शंख रूप को धारण करनेवाला १२ संहार का पुत्र जो पांच जनों से पैदा हुआ है वह १३ दैत्य उस ब्राह्मण के पुत्र को १४ मारनेवाला मेरे जल में रहा था.

दर पांचजन्य तदीय अस्थि स्वहृत्थ पंकज धारयो ॥ ९ ॥  
 धमि ताहि बीर अलब्ध द्विजसुत दोरहु संजमिनी गये,  
 जम जिति द्विजसुत यार्तना सन कडि लै गुरुपै ठये ॥  
 तिहिं अपि आत्मज तास आसिख पाय मधुपुर आयकै,  
 दिय उग्रसेन नरेसकी सब राज्यकैद्वि जमायकै ॥ १० ॥  
 खल कंस पूरब द्वै २ सुता मगधेसकी परन्यौहुतो,  
 तिन जाय अखिखय बैपसौं हमरो जु ईस हन्यौ सु तो ॥  
 सुनि बैन अस्ति १ रु प्राप्ति २ के मगधेस कोपित वहै चढयो,  
 अछोहिनी तेईस २३ लै दल संग विस्तरसौं बढयो ॥ ११ ॥  
 बल १ कृष्ण २ हू यह जानि अप्पन दिव्य आयुध चितये,  
 हल १ मुसल २ चक्र ३ गदा ४ सरासन खड्ग ५ ऊपरतैं गये ॥  
 तिन लै लरे बलभद्र १ कन्हर २ भूप मागध जितयो,  
 मधुदंग पुनि पुनि ताहुनै घेरा बडो बल लै दयो ॥ १२ ॥  
 इनहू अठारह १८ बेर मागध जिति जिति विदा करयो,  
 सबभाँति दो २ हु समँथ पै नैरभाव कोतुक अहरयो ॥  
 लखिकै असँतैंति गार्ग्य विप्रहिं सँढै सालैंकनै कहयो,  
 सुनि वाक्य सोहि समस्त जदुकुल अट्टहास घनौं गहयो । १३ ।  
 करि कोप जदुकुल सीस तब तप धोर गार्ग्यहु आचरयो,  
 पाखान चूरन खाय खाय प्रसन्न त्र्यंबक ही करयो ॥  
 सितिकँठ वारह १२ अँब्दमैं द्विजसौं कहयो वर लीजिये,

उस दैत्य की २हड्डियों का १ पांचजन्य शंख अपने ३हस्त कमल में धारण किया  
 उस शंख को ४बजाकर ब्राह्मणका पुत्र ५नहीं मिला तब ६दोनों वीर ७यमराज की  
 पु री में गये ८पीड़ा से ९पुत्र को १०मथुरा पुरी ११समृद्धि १२पहिले १३ पिता से.  
 जरासंध की पुत्रियाँ और कंस की स्त्रियों के नाम १४अस्ति और प्राप्ति था  
 १५अछोहिणी १६विस्तार से १७आकाश (स्वर्ग) से १८मथुरा पुरी के १९सेना २०  
 समर्थ २१परंतु. अब यहाँ पर एक प्राचीन इतिहास कहने है. गार्ग्य नामक ब्राह्मण  
 को २२बिना संतान देख कर उसके २४शाले ने कहा कि तू २३नपुंसक है यह बचन  
 सुन कर सचमुच शिष्यों ने २४उच्च स्वर से बहून हँसी की २५शिव को २७शिव २८वर्ष





नृप तोहि जोहि जगायहै सुहि भस्म वहै मिलिहै मही ॥  
हरि यों गये तैंहिं कंदरा बर संभुदत्त विचारयो,  
वह सुप्र जवनहु आतही हरि जानि पाय प्रहारयो ॥ १९ ॥  
खल भस्म जग्गतही भयो मुचुकंद कन्हरसों कह्यो,  
तुम कोनहो हरिहू कह्यो ससिबंस उद्धव मैं लह्यो ॥  
वसुदेव जादवको तनूज रु कृष्ण मारमक नाम है,  
नृपहू कह्यो तब बिष्णुहो मम बेर बेर प्रनाम है ॥ २० ॥  
हमसों जुगांतरमें पुरां मुनि वृद्धगर्ग यहै कही,  
जदुबंसमें वसुदेव गृह अवतार हरि लहिहै सही ॥  
सुहि अंप्य यों कहि भूपनैं नृति मंजु माधवकी करी,  
निजभक्ति जानि प्रसन्न वहै बर एह ताहि दयो हरी ॥ २१ ॥  
तुम भोग भुग्गहु भूप अर्जित ईष्ट लोकन जायकैं,  
पुनि जातिसुमिरन होहु ओरन होहु सत्कुल आयकैं ॥  
बैलि मुक्ति पावहु भूप लै हरिसों यहै बर निखरयो,  
नर खर्व पिक्खिख रु जानि कलिजुग कालकी गतिकों हस्यो ॥ २२ ॥  
मुचुकुंद पंखय गंधमादन जायकैं तप आचरयो,  
हरि आय मधुपुर मिच्छको सरबस्व द्वारवती धरयो ॥  
बिच्छिन्न नेह बढान पुनि बलभद्र गोकुलमें गये,  
सबसों मिले बनमैंहु सबजुत पुंख ज्यौ रमतेभये ॥ २३ ॥  
बलदेवकी रति जानि अंप्यति बौरुनी पठई जहाँ,

से देवताओं ने यह कह दिया था १ इसकारण से शुक में शगर्ग को जो  
महादेव ने बर दिया था उसको विचार कर सोते हुए उस मुचुकुंद को कृष्ण  
से चंद्र वंश में मैंने जन्म लिया है ७ पुत्र ८ मेरा १५ पहिले १० आपहो ११ स्तुति १२  
मनोहर १३ इकट्ठा किया हुआ १४ जिन लोकों में रहने की इच्छा होवे वहां  
जाकर फिर तुमको अपनी जाति का स्मरण होकर इसी अष्ट कुल में आकर  
पैदा होओ, अन्य जाति में मत होओ १५ पुनि १६ छोटे मनुष्यों को देख कर,  
कलियुग को जान कर १७ गंधमादन नामक पर्वत पर १८ मथुरा में १९ कालय-  
वन का २० तट पर स्नेह को २१ बलदेव २२ पहिले रमे थे इस प्रकार २३ प्रीति २४  
वरुण ने २५ मदिरा भेजी.

ततकाल आय कदंब कोटर बीच वही महकी तहाँ ॥  
 बल गंध मोदित नीपतैं छलि बारूनी गिरती लखी,  
 जुन गोप गोपिन खूब केलिँ प्रसून पत्रन लै चखी ॥ २४ ॥  
 बलभद्र तिहिँ मद घुम्नि बिहरत अंग उज्वल स्वेद भो,  
 जमुनाहि अखिखय अत्थ आवहु न्हायहँ कछु खेद भो ॥  
 गिनि कामपालहिँ मत जो जमुना अनादरि नाँ मुरी,  
 तब राम लै हल कुँप्पि अँचत बेग कंपित बाहुरी ॥ २५ ॥  
 नहि आहु जाहु न आहु यौ बल जे कहे तिँ सहेगये,  
 जुत गोप गोपिन लौंगली हुँत बोरि पानियमैं दये ॥  
 तबलों रही हलमैं विमोचन प्रार्थना पुनि हू करी,  
 तजिहाँ बनाय हजार १००० टक त्वदीयँ यौ बल उच्चरी ॥ २६ ॥  
 बलभद्र पायन मैं परी तब छोरि लौंगलतैं दर्द,  
 छुटि सोहु इक १ अँवतंस कंज १ रु एक १ कुँडल १ लै नई ॥  
 इत्यादि रामहिँ दै उपायन भानुजा दुखतैं टरी,  
 दुव २ मासलों बलभद्र केलि बहोरि गोकुल यौ करी ॥ २७ ॥  
 पुर द्वारका पुनि आय रेवत भूपकी परनैं सुता,  
 सुहु रेवती अभिधान सील सुरूप सदुगा संजुता ॥  
 सुत रेवती उर निसठ १ उल्मुक २ द्वै २ भये हलँधारसौं,  
 अब कृष्णकी सुनिये कथा पुँहबी सुँ पुँगयद प्यारसौं ॥ २८ ॥  
 वेदंभि कुँडिन नैरमैं नृप नाम भीष्मक हो जहाँ,  
 रुक्मी तँदीय तँनूज हो अरु रुक्मिणी तँनया तहाँ ॥

१. तुरत २. कदंब पृष्ठ के ३. कांचरे से ४. बलदेव ने गंध से प्रसन्न होकर ५. पृष्ठ से ६. मदिरा ७. फीड़ा करत ८. फुलों की पखुड़ियाँ और पत्रों में लेकर चाखी ९. बलदेव को मदमत्त जान कर उनका अनादर करके जमुना नदी नहीं मुड़ी १०. कोप कर ॥ २५ ॥ मत जा, मत आ, आ, इस प्रकार बलदेव ने कहा ११. वह सब सहन किया और १२. बलदेव को १३. जलदी १४. छोड़ देने की १५. तेरे १६. हल से १७. कमल का मुकुट १८. नमस्कार किया [भुकी] १९. नजराना २०. यमुना २१. रेवती नाम २२. बलदेव से २३. पृथ्वी पर २४. सो २५. पुण्य की देनेवाली प्यार से सुनो २६. विदर्भ देश में २७. नगर २८. उस्का २९. पुत्र ३०. पुत्री

जिहिं कन्हही मनतैं चहे अरु कन्ह जो मनतैं चही,  
 पर चेदिराजहि दैनकी मंगधेस अग्रजतैं कही ॥ २९ ॥  
 संबंध रुक्मिनिको तवै सिसुपालसौं रुक्मी करयो,  
 सिसुपालहू मंगधेस आदिक लै बरात बडी संख्यो ॥  
 जहँ दंतवक्र १ करूष पौडूक बासुदेव २ महाबली ॥  
 मंगधेस ३ साल्व ४ विदूरथाँव्हय ५ आदि जन्म्यतती चली ॥ ३० ॥  
 कुल स्वीय संजुत राम १ कन्ह २ हु व्याह देखनकोँ गये ॥  
 इक १ रति पूरब लग्नसौं हरि रुक्मिणी हरते भये ॥  
 तबही विदूरथ १ बासुदेव २ करूस ३ जो सुनि नाँ कही ॥  
 हुव कन्ह सम्मुह रारिमैं तरवारिमैं न कुमी रही ॥ ३१ ॥  
 बलभद्र मुख जदुबीर मुरि तब भूप तीनहिं जितये ॥  
 छकि लोह आकुल एँ रहे बहु दो २ हु ओर हनै गये ॥  
 रुक्मी कह्यो तब हारि ग्वालनतैं न कुंडिनमैं धसौं ॥  
 न बिवाहि रुक्मिनि चेदिराजहिं और ठामहिं मैं बसौं ॥ ३२ ॥  
 तिहिं<sup>१३</sup> घाय दै भुव पारि तौस समस्त सेनहिं मारिकैं ॥  
 तिहिं<sup>१३</sup> व्याहि रक्खसव्याहसौं गय कन्ह गेह पधारिकैं ॥  
 सुत रुक्मिणी उर कन्हसौं मदनावतार बली भयो ॥  
 प्रद्युम्न नामक होतही हरि ताहि संबंर लैगयो ॥ ३३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायण तृतीय ३ राशौ वीति-  
 होत्रचाहुवाणपौरडूकबासुदेवजन्मकालसामीप्यसमयसमानाऽधि-

जिसने मन से कृष्ण को ही पति करना चाहा और कृष्ण ने भी  
 जिसको मन से चाही ॥ ३० ॥ १ चन्देरी के राजा ( शिशुपाल )  
 २ जरासन्ध के ३ बड़े भाई को ४ जरासन्ध ५ चला ६ विदूरथ  
 नामक ७ जनेतियों ( बरातियों ) की ८ पंक्ति ॥ ३० ॥ ९ एक रा  
 त्रि पहिले १० आदि ११ रुक्मी आदि पीछा करनेवाले १२ कुशुडनपु  
 र में १३ उस रुक्मी को १४ उस रुक्मी की १५ सब सेना को १६ उस रुक्मि  
 णी को १७ राजसंविवाह से विवाह कर ( मनुस्मृति में आठ प्रकार के वि  
 वाह लिखे हैं, ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राजस और पैशा  
 च ) १८ कामदेव का अवतार १९ सम्यर नाम दैत्य चुराकर लेगया ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणके तीसरे राशि में अरिबंशी चहुवाण

करणाकश्रीकृष्णचरित्रे वासुदेव १ संकर्षणा २ पित्रभिवादननृपो-  
 ग्रसेनगहिकोपवेशनसुधर्मासदःसमाव्हयन-धनुर्वेदोपाध्यायसान्दी-  
 पिनिशिक्षासम्प्रापणाकृतपञ्चजनवध १ यमजय २ तन्मृतपुत्रप्रत्यर्प-  
 णाश्रुतजामातृवधजरासंधमथुरावेष्टनतदष्टादश १८ कृत्वःपराजयन-  
 जलदुर्गद्वारकानिर्माणा माथुरस्कन्धावारतन्व्यसनसूचितजनुरुदन्त-  
 कालयवनविदाहनमुचुकुन्दवरदानयावनवैभवोग्रसेनाऽर्पणा-बलभद-  
 पुनर्द्वि २ मासगोकुलरमणपीतवर्णप्रहितवारुणीयकयमुना-  
 हलाकर्षणागृहीतकुण्डल १ कञ्जा २ ऽऽदितदुपायनपुनर्द्वारवत्पागम-  
 नरेवतीपाणिग्रहणबालभद्रिनिषठो १ लमुको २ द्रवनजितवासुदेव-  
 १ दन्तवक्र २ विदूरथ ३ रुक्मि ४ साग्रजकृष्णरुक्मिणीहरणा-  
 तदौरसकार्ष्णिप्रद्युम्नकुमारोद्भवनं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥

आदितो द्विपञ्चाशत्तमः ॥ ५२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

हरिगीतम् ॥

पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका ऐसे  
 श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण बलदेव का पिता से नमस्कार करना,  
 राजा उग्रसेन को गद्दी पर बिठाना, सुधर्मा (देवताओं की सभा) का बुलाना,  
 धनुर्वेद के अध्यापक सान्दीपिनी से शिक्षा पाना, शंखासुर को मारना, य-  
 मराज को जीत कर उस सान्दीपिनी को पुत्र पीछा देना, जमाई का बध सन  
 कर जरासंध का मथुरा को घेरना, उस जरासंध को अठारह बार पराजित  
 (हरा) कर जलदुर्ग द्वारका बना कर मथुरा की राजधानी से निकलना, का-  
 लयवन के जन्म का वृत्तान्त जानकर उस का जलाना, मुचुकुन्द को बरदान  
 देना, और यवन का वैभव उग्रसेन को देना, बलदेव का फिर दो मास तक  
 गोकुल में रमण करना, वरुण की भेजी हुई मदिरा से यमुना नदी को हल से  
 खींचना, और यमुना से कुण्डल कमल आदि भेट लेकर फिर द्वारका जाना,  
 और रेवती से विवाह करना, बलदेव के पुत्र निषठ और उल्मुक का पैदा हो-  
 ना, कृष्ण का वासुदेव, दन्तवक्र, विदूरथ और रुक्मिणी के बड़े भाई रुक्मी  
 सहित जीत कर रुक्मिणी को हरना और कृष्ण के पुत्र रुक्मिणी के औरस  
 प्रद्युम्न कुमार का जन्म होने का दशवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और  
 आदि से यावन मयूख हुए ॥ ५२ ॥

प्रद्युम्न संबरनै छठेदिन सूतिकागृहतै हरयो,  
 दिप सिंधु डारि गिल्यो सु मच्छ तहाँहु बालक नाँ मरयो॥  
 सुहि मच्छ धीवर मारि भुँज्जन जाय संबरको दयो,  
 तँस गेहिनी भूख फारि छत्र कढयो सुबालक लैल्यो॥१॥  
 मायावती मनमाँहिँ है यह कोनको सिसु यौ चही,  
 तँव कांत कृष्ण तँनूज कामवतार नारद वहाँ कही ॥  
 मायावती तब प्रीतिसौँ प्रद्युम्न पोखि बढायकै,  
 माया जु संबरसँ लई सुँ दई सभस्त पढायकै ॥ २ ॥  
 सिव काम दग्ध कस्यो तबै रँति जाँस उँझव चाहती,  
 मायामई बपुँ कैँ रही गृह संवरासुरकै सती॥  
 मायावती अभिधानँ जो प्रद्युम्नको इम पौरिकै,  
 जब भो जुँवा तबही रही करि हावभाव निहारिकै ॥ ३ ॥  
 प्रद्युम्न अक्खिय माँतृता तजि क्यौँ यहै कुटिलौवती,  
 विधिपुँब्व तव हँरणादि सर्व उँदंत ताहि कह्यो रती ॥  
 सुनतैहि दर्पकँ कुपि जुज्जन काल संबर बुल्लयो,  
 माया बिथारि चमू समेत वहैहु गज्जतही गयो ॥ ४ ॥  
 तब सप्तमाया आसुगी प्रद्युम्न गंजि महाबली,  
 निजँ अष्टमीकरि मारि संबर खूब दुष्ट चमू दली ॥

१ प्रद्युम्न को सम्बर दैत्य ने २ जापा के घर से ३ नाव चलानेवाले [कैवर्तक]  
 ने वही मच्छ निकाल कर ४ भोजन करने को ५ उस सम्बर की ६ धरवाली  
 (स्त्री) ने ७ मच्छ का पेट फाड़ कर भीतर से बालक निकाला सो छाने लेलिया  
 ॥ १ ॥ ८ कामदेव की स्त्री ने. वहाँ पर नारद ने कहा कि ९ तेरा पति और  
 कृष्ण का १० पुत्र ११ कामदेव का अवतार है १२ सो. ॥ २ ॥ महादेव ने  
 कामदेव को जलाया जब से १३ रति (कामदेव की) स्त्री १४ उस कामदेव का १५  
 जन्म होना चाहती थी १६ शरीर १७ करके १८ जिस का मायावती नाम है उ-  
 सने १९ पालन करके २० जवान ॥ ३ ॥ २१ प्रद्युम्न ने कहा कि २२ मातापन  
 को छोड़ कर २३ कुटिलपन करती है २४ विधिपूर्वक २५ सम्बरासुर हर ला-  
 या जिस आदि २६ वृत्तान्त २७ कामदेव (प्रद्युम्न) ने ॥ ४ ॥ २८ अपनी आ-  
 ठवी माया २९ सम्बरासुर को

मायावती जुत कन्हको सुत यों नभोमग\* व्है संरथो,  
 द्वारावती सुंदांत अंतर जाय मोदित उत्तरथो ॥ ५ ॥  
 संहसाहि तिहिँ लखि कृष्ण नारिन लज्जि-धुंघटही लयो,  
 पुनि कृष्ण नारदके कहै प्रद्युम्न आगत जानयो ॥  
 वालि पट्टरानिय सत्तव्याहिय कन्हनैँ तिन्ह जानिये,  
 क्रम तो न है परँ वैष्णवाऽऽख्यपुरान वत प्रमानिये ॥६॥

### अचरणागद्यम्

निधनके पुत्र यादव सत्राजितनैँ अंभोधिकी तीर महास्तवन पू-  
 र्वक त्रैयीतनु तैपनको उपस्थान कीनों ॥ ७ ॥

तासों प्रसन्न होय आदित्य एक रूपसों अवनितल उतरि आये ॥८॥

तब कह्यो जैसेँ उहाँ रहैं स्तुति करतहो असैहीं अब करिहों  
 परंतु इहाँ आयेंकी बिसेस प्रसाद चहतहों यातैं प्रभुके तेजकों  
 सहिकैं दासके नेत्र निजस्वरूपकों देख्यो चाहैं ॥९॥

यह सुनि माँतडनैँ स्यमंतक नाम महामणि अपनैँ कंठसों उ-  
 तारि दूर धर्यो तब आताँम्र दीप्यमान कछुक पिंगलनेत्र नाराय-  
 नके रूपकों सत्राजित नीठि नीठि देखि बहोरि महास्तवसों प्रसन्न  
 करत भयो ॥१०॥

आदित्यसों बरंभ्रंहि सुनि सोही महामणि मंगि उनको ऊर्ध्व  
 गति विसर्जन करि बाँकों धारन किये अक्खँपार अक्खँस अवनी  
 कों उज्ज्वल करत द्वारका आयो ॥११॥

\* आकाश मार्ग १ जला २ जनाना में ३ अचानक ४ आना ५ पुनि ६ विवाह न  
 का क्रम तो नहीं है ७ परंतु ८ विष्णुपुराण से लिखा है सो उसकी बात प्रमाण  
 मानो ॥ ६ ॥ ९ समुद्र की १० स्तुति ११ सूर्य के १२ तप करने को १३ नम  
 स्कार किया ॥ ७ ॥ १४ भूमितल पर ॥ ८ ॥ तब सत्राजित ने कहा कि आप  
 ऊपर थे तब स्तुति करता था वैसे ही अब भी करूंगा परंतु आप यहां नीचे  
 उतर आये जिसकी विशेष १५ प्रसन्नता ॥९॥ १६ सूर्य ने १७ लाल वर्ण से प्र-  
 काशमान १८ पीले नेत्रवाले (सूर्य) १९ स्तुति से ॥ १० ॥ २० वर मांग २१ ऊपर  
 जाने की गति से २२ छोड़ कर २३ स्यमंतक मणि को २४ समुद्र ही है २५  
 लहंगा जिसके ऐसी २६ भूमि को ॥

तहाँके जनन भूमिभारकों नीतावतार वासुदेवसों कह्यो आ-  
ज आपके दर्शनकों आदित्य आवतहै तिनको आतिथ्य करियो ॥१२॥

तब कृष्ण कह्यो सत्राजितकों सूर्यनैं स्यमंतक महामणि दी  
नॉहै ताकों धारन किये वाहीकों आवत जानौं ॥१३॥

असैं सत्राजित मनि पाय आलैय आयो जाके प्रभाव करि वा  
जनपदमैं उपसर्ग१वृष्टि२व्याल३अग्नि४तोय५दुर्भिक्ष आदि काहू  
को भय न होत भयो ॥ १४ ॥

अरु आठ८भार सुवर्णकों प्रतिदिन स्रवित करि करि सत्रा-  
जितकों सत्ताजित करत भयो ॥१५॥

तहाँ भार प्रमान. पंच५गुंजा१एक१भास१सोलह१६मास१६एक  
१कर्ष१ च्यारि४ कर्ष४ एक१ पल१ सत१०० पल१०० एक१तुला१  
बीस२०तुला२०एक१भार१अैसे आठ८भार८अष्टौपद नित्य मणि  
सों निकसत रह्यो ॥१६॥

तहँ सत्राजितसों कन्हनैं कह्यो अपनैं अधिराज उग्रसेनके उ-  
चित यह महारत्नहै यातैं उनहीकों उपहार करिये ॥ १७ ॥

तब सो तो सुनि रह्यो परंतु कबहुक कृष्ण मंगिलहै या लो-  
भ करि अपनैं अनुज प्रसेनको वह महामनि दैदयो ॥ १८ ॥

या रत्नकों जो सुचि धारन करैं तो पूर्वोक्तें सब गुन प्रकट क-  
रैं हँ असुचि धारकको नास करैं ताकों धारन करि अस्वारूढ प्र-  
सेन सिकार गयो ॥ १९ ॥

याकों मारि कोऊ सिंह मुँखासक्त करि महामनि लैजात

१ उतारनेवाले २घर ३देश में ४रोग तथा उपद्रव ५सर्प ६जल ७तोला विशेष  
जिसका प्रमाण आगे मूल में स्पष्ट लिखाहुआ है ८ टपक टपक कर ९यज्ञ में  
जीतने में नहीं आवे ऐसा अर्थात् उस धन से सत्राजित ने इतने यज्ञ किये  
कि इतने दूसरे नहीं कर सके १० यहां भार का प्रमाण बताते हैं ११ चिरमी  
१२ मासा १३ सोना १४ स्वामी १५ भेट १६ छोटा भाई १७ पवित्र होकर  
१८ ऊपर कहे अनुसार १९ अरु २० धारण करनेवाले को २१ घोड़े पर चढ़  
कर २२ मुख में पकड़ कर



देख्यो ताकों मारि रत्नकों महाजरठ भल्लूकराज जाबवान निजबिल लै जाय अपनै सुकुमार नाम बालकको खिलहोनां करत भयो ॥ २० ॥

इतकों सत्ताजित कृष्णाहूकी जाचना सुनि लोभतें प्रसेनहीकों मनि दीनों यातैं अब वाके धरन आय पौरजन जादव के-  
प्रसेचन मारिबेको बासुदेवहीकों अभिसाप देत भये ॥ २१ ॥

ताहि टारिबेकों दामोदर जदुकुल समेत वा पुरासुके निस्सरण सरणिके हर्य खोजन लागि अगौं सिंह हत वह कुंराप भल्लूक हत पञ्चानन देखि जांबवानकी पैदबी लागि एक आँदिके कँटक कँटक खरो राखि ऊपर चढि कृष्ण बिलमैं प्रवेश करत सुकुमारकी धाँत्रीतैं उल्लापनमैं स्यमंतककों सुनि दोरि वाके करतैं मनि लेत धात्रीको त्राहि त्राहि सुनि जांबवान आय त्रिलोकके तपनतैं एक बीस २१ अहोरात्र महानियुद्ध करत भयो ॥ २२ ॥

बाहिर बरूथिनीके आठ अहोनि स आयबेकी राह देखि द्वारवती जाय भल्लूक भंग संखंधरको सुनावत बसुदेव मुसली मुख बंधुजनन प्रेतकर्म करि दयो ॥ २३ ॥

बावीसमैं २२ दिन अपनी उत्तरोत्तर प्रानैहानि जानि जांबवानने सुकुंदैकों रामचंद्रही मानि स्यमंतक सहित कन्या जांबवतीकों कृष्णके अर्थ दीनी ॥ २४ ॥

ताहुकों पट्टरानी करि दामोदर द्वारका आय अपनै अवरोधको

१ बूढा २ रीछों का राजा ३ पुर के लोग ४ झूठा दोष ५ कृष्ण ६ मुरदा. प्रसेन के ७ निकलने के ८ मार्ग में ९ घोड़े के खोजों में लगकर १० सिंह का माराहुआ वह मुरदा और रीछ का माराहुआ ११ सिंह को देख कर १२ पगडंडी [गैली] १३ पर्यंत के १४ घेरे में १५ सेना का ॥ जाम्बवान के पुत्र सुकुमार की १६ धाय के १७ बत्ती अथवा रस्सी में १८ तीनों लोकों के सूर्य से १९ दिन रात २० बाहुयुद्ध ॥ २२ ॥ २१ सेना के लोगों ने २२ द्वारका २३ कृष्ण को २४ रीछ ने मार डाले, यह मुनाया तब २५ बलदेव २६ आदि ॥ २३ ॥ २७ बल (पराक्रम) की २८ कृष्ण को रामचन्द्र ही जाना कि जैसे वे परमेश्वर के अवतार थे वैसे ही ये हैं और जाम्बवान रामचन्द्र का भक्त था इस कारण से ॥ २४ ॥ २९, कृष्ण ने ३० जाम्बवती को अपने जनाने का भूषण बनाया

अलंकार बनाय सत्राजितकों स्यमंतक सौंपि अभिसौप उतारत भये  
सत्राजितनैं हू खिसानों होय कन्याके संबंधकी पहिलैं औरनतैं  
चात करीही तथापि सत्यभामा त्रिभंगललितकों बिवाही ॥ २६ ॥

तब अक्रूर कृतवर्मा दोरहू जादवन सतधन्वासों कह्यो पहिलैं  
अपनी प्रार्थना ही तिनहूकों पेलि कन्या कन्हकों बई यातैं सत्ता  
जितकों मारिये तो हम सहाय हैं सो सुनि सतधन्वानैं प्रसेनके  
अग्रजको मारिबो बिचारयो ॥ २७ ॥

याही बेलाके व्यतीत बासरनमें धृतराष्ट्रके धूर्तनैं पांडवनकों  
जतुं जटित निकेतमें जारे सुनि जीवते जानतहू जनार्दन तो दुर्जो  
धनके जत्ननको जोर जारिबेकों बारणावत पधारे ॥ २८ ॥

पिछारी सतधन्वा सत्राजितकों मारि महामनि लैलयो जाकों  
जानि रोवत रथारूढ सत्यभामानैं बारणावत जाय प्रार्थना करि  
कृष्ण द्वारका आनैं ॥ २९ ॥

तब सतधन्वा अक्रूरकों प्रच्छन्न मनि दैकै सत१००जोजन बाँ-  
हिनी बडवापैं बैठि पलायत भयो ॥ सो जानि बासुदेव१बलभद्र२  
सैव्य१ सुग्रीव२ मेघपुष्प३ बलाहक४या हयचतुष्टय४संजुक्त स्यंदन  
समारूढ होय पहुँचे ॥ तिननैं मिथिलाके महाबनमें मरी बडवाँकों  
तजि पदाँति होय पलावत सतधन्वाकों निहारयो ॥ ३० ॥

तब कृष्ण बडवा मरी देखि बलसों कह्यो यह भूमिभाग हय  
दोसकारक है यातैं अप्प यहाँ रथारूढ रहिये मैं पदाति होय दुष्ट  
कों मारि मनि लावत हों ॥ ३१ ॥

यह कहि कन्ह रथ छोरि बाकी पिडि लागि एक१गैठ्यूति पर  
१ भूटादोष २कृष्ण को ३ मँगनी (मांग) ४ इसी समय क बीने हुए दिनों में  
५ धृतराष्ट्र के पुत्र ठग हुँयाधन ने ७ लाख से ८ जडे हुए ९ घर में १० कृष्ण ११  
रथपर चढ़ कर ॥ २९ ॥ १२ छाने १३ एक दिन में चार सौ कोस चलनेवाली  
१४ घोड़ी पर १५ भागा १६ कृष्ण के घोड़ों के नाम हैं १७ चौकड़ी १८ रथ पर १९  
अच्छी प्रकार बैठ कर २० घोड़ी को २१ पैदल ॥ ३० ॥ २२ बलदेव से २३ घो-  
ड़ों को बीमारी करनेवाली ॥ ३१ ॥ २४ दो कोस

जाय दूरस्थ सलधन्वाको सिर सुदर्शनसौ सातेन करि वाके बस्त्रा  
दि हेरि अलव्यमनि पीछे आय सपथ सहित कामपाँलसौ कह्यो  
रत्नतो यापै निकस्यो नही ॥ ३२ ॥

सो सुनि महामनि चक्रानै चुराय राख्यो जानि कोप करि कां-  
लिदीभेदन कह्यो रे धिक्कार तोहि महालोभी भाई जानि सहोंहों  
जाहु अपनी इच्छातैं न मेरें द्वारकातैं तोसे बंधुनतैं काम है क्यों  
अलीक सपथ करिये ऐसी सुनाय बासुदेवके बरजत हू बलभद्र  
विदेहपुरीमें प्रविष्ट होय बरस तीन श्रहत भये रु जनकनैं आदर  
करि निज पंस्त्य पधराये इन अंबदनमें धातराष्ट्रि दुर्योधन हल्लोसों  
गदायुद्धकी सिद्धा लेत भयो ॥ ३३ ॥

अरु कन्ह द्वारका पधारे तदनंतर हायन त्रयश्वीतैं माधवनैं म-  
नि न लीनों जानि उगसेनादि जादवन जनकपुर जाय सीरी कों  
समुझाय द्वारका आनैं ॥ ३४ ॥

दीक्षितं क्षत्रिय<sup>१</sup> वैश्य<sup>२</sup> कों कोऊ हैं सौ ब्रह्महा होय यह नीति  
आश्रय करि स्पमंतक स्रावित सुवर्णके बलसों अक्रूर हू निरंतर  
सत्रदीक्षाहीमें रहत भयो ॥ ३५ ॥

पीछे अक्रूरके पच्छके भोज जादवननैं सात्वनको नाँती सन्नुघ्न  
मारयो ताके बैरके भयसों स्वकीयनैं सहित स्वफल्कसुत  
को छोरि पलाय गयो तबही या देसमें उपसर्ग<sup>१</sup> व्याल<sup>२</sup> मारी<sup>३</sup> अ-  
नावृष्टि<sup>४</sup> प्रमुख उपद्रव होनलगे जानि सबन सहित बासुदेव<sup>१</sup> बल

१ दूर परठहरा हुआ २ काटकर ३ मणि नहीं मिला ४ सोगन खाकर ५ बलदेव से ३२।  
६ कृष्ण ने ७ बलदेव से ८ सोगन ९ घर में १० वर्षों में ११ घुतराष्ट्र का १२  
१३ बलदेव से ॥ ३३ ॥ १४ जिस पीछे १५ वर्ष १६ बलदेव को ॥ ३४ ॥ १७ यज्ञ की दी  
जा लिये हुए १८ ब्राह्मण को मारनेवाला १९ दण्डका हुआ २० यज्ञ की भावार्थ  
यह है कि मैं भी यज्ञ की दीक्षा लेता रहूँ तो मुझे कोई नहीं मारे ॥ ३५ ॥ २१  
क्षत्राले २२ पोता २३ अपने लोगों २४ अक्रूर २५ भाग गया २६ रोग, भय २७ सर्प  
२८ महामारी (गरी) की बीमारी २९ आदि

भद्र२उग्रसेन मंत्र\*करत भये, तहाँ अंधक नाम एक१जटुवृद्धबुल्लयो या अक्रूरको जनक\*\*स्वफल्क जहाँ रह्यो तहाँ ए उपद्रव नहोतभये पहिलैं स्वदेसमें अनावृष्टि जानि कासिराजनैं स्वफल्क बुलायो ताके जातही उहाँ सुभिक्ष भयो ॥ ३६ ॥

कासिराजकी रानीकै कन्या गर्भ हो सो बारह१स्वरसलौं निकस्यो नहीं तब पिताके पूछैं गर्भ कह्यो द्विजनकाँ दैवकाँ नित्य एक१धेनुभिलैं तो निकसौं सो स्वीकृत करैं कासिराजकै कन्या गांदिनी भई सोहु स्वफल्कहीकाँ विवाही यावजीव\*\*\*प्रतिज्ञा पालन करत भई अैसे प्रभाव के जनक१जननी१सों यह अक्रूर भयो ताके गयें ए उ पद्रव होनलगे यातैं अपराध छमा करि वाकाँ इहाँ आनिये ॥ ३७ ॥

तब केसव१काभपाल२उग्रसेन३सब बंधुन सहित जाय अक्रूर काँ लाये तबही सब उपद्रव नष्ट होतभये तब केसव विचारि स्व फल्क१गांदिनी२के जनिबेसों ही अक्रूर को असो प्रभाव नही निह्ये ही याके पास स्यमंतक है यह सिद्धांत करि कह्यो सबनकाँ अपनैं निकास इकठे करि अक्रूरसे बोले हे दानपति ! सुधन्वानैं तुमको मनि दीनाँ है सो तो तुम ही राखो याको फल तो सब के भोग्य है परंतु बलभद्रनैं मेरी संका करी सो मिटायबेकाँ दिखाय दयो चाहिये ॥ ३८ ॥

तब भीत होय अक्रूर सुवर्णसंपुटतैं स्यमंतक निकासि कृष्ण सों कह्यो याके राखिवेसों मोहि अल्प सुख हू को अनुभव नही पवित्रता ही के प्रयत्नमें पर्यो हों यातैं अब पवित्र होहु सो याकाँ लेहु असो सुनि अग्रजँ अर्पित अभिसाप मिटाय कृष्ण कह्यो ब्रह्मचर्य पूर्वक प्रचुर पवित्रतावारेके धारिवे योग्य यह है ताकाँ प्रभूतपत्नीक मैं तथा वीरुनी व्यासक्त बलभद्र१कैसे धारिहैं

\*सलाह\*\*पिता\*\*\*जीवन पर्यन्त ? पिता २ बलदेव ३ अक्रूर का माता का नाम है ४धर में ५ मोना के डिब्बे से ६ पवित्र रहने के यत्न में ही ७बड़े भाई (बलदेव) के ८ दिये हुए ९ मिथ्या दोष को १० बहुत ११बहुत स्त्रियोंवाला १२ मदिरा के १३वशीभूत.

जदपि सत्याको जैनकधन है तथापि तुमारी सुचितामें सावधानी अपूर्व है यातैं तुमही राखो जैसे कहि मनि अकूर ही कौं दैदयो तबतैं दानपतिहू प्रकटही वाकौं कंठभूखन करि धारतभयो ॥३९॥

यह बासुदेवके अभिसापको क्षालन कोऊ सुनैं ताको अभि साप नष्ट होय॥ ऐसे कृष्णनैं जांबवती२सत्यभामा३विवाहि और हू कालिंदी४मित्रविंदा५नाग्निजिती६माद्री७लक्ष्मणा८रुक्मिणी९ प्रमुख ए आठ८पटरानी विवाही तिनमें रुक्मिणीकै प्रद्युम्न१चारुदेव२सुदेव३चारुदेह४सुसेन५चारुगुप्त६भद्रचारु७चारुविंद८चचारु ९ चारु १० ए दस १० पुत्र चारुमती १ एक १कन्या भई॥४०॥ जांबवतीकै सांब १ प्रमुख१०१२, सत्यभामा कै भानु१प्रमुख १०१२, मित्रविंदाकै संग्रामजित १ प्रमुख१०१२, नाग्निजितीकै भद्रविंद१॥ प्रमुख१०१२, माद्रीकै वृक १ प्रमुख १०१२, लक्ष्मणाकै गात्रवान१ प्रमुख१०१२ जैसे दस दस पुत्र एक एक कन्या सबनकै होत भये और हू एकसतोत्तर सोलह सहस्र१६१०० राजकन्या भौमासुर के बंधनतैं छुराय बासुदेवनैं विवाही तिन हू के संतान याही क्रम तैं जानिये परंतु जैसे विवाही सो हू उदंत कहियत ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौरण्डकवासुदेवजन्मसमयमार्माप्यसमयसमानाऽधिकरणाकश्रीकृष्णचरित्रे कालशम्बरप्रद्युम्नहरणाच्छम्बरमारणमायावतीसहितद्वारकाऽऽगमनतोपितसूर्यसत्राजितस्यमंतकप्रापणाभारप्रमाणाकथनश्रुतोप्रसेनार्थमुकुन्दमार्गणनैघ्रिनदनपराधारितमाणिप्रसेनसिंहमारणातजाम्बवन्निपातहरिनिगुह्यतत्पराभवनसमणिविवोढ-जाम्बवतीकगदाग्रजगेहाऽऽगमनरत्नप्रत्यर्पणासत्यभामोद्वहनपे-

१सत्यभामा का२ पिता३तोभी तुम्हारी पवित्रता में४मिथ्या दोष५मिटना६ आदि७आदि८वृत्तान्त कहते हैं

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौरण्डक वासुदेव के जन्म समय के नजीक है समय का आधार जिन का ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कालशम्बर का प्रद्युम्न को हरना, और प्रद्युम्न

तृष्वस्त्रीयसहायशौरिवारणावतगमनकृतवर्मा १ अक्रूर २ सम्पाठि-  
तमुधन्वःसत्राजित ध्वंसनपरितप्तसत्याकृष्णाऽऽनयनदत्ताऽक्रूरमणि  
मुधन्वपलायनत्यक्तऽकृष्णारथचक्रतन्मारणारुष्टमिथिलागतवलदुर्यो-  
धनगदारणाशिक्षाऽनुष्ठानकृष्णाप्रत्यागमनशरत्रया ३ अन्तररामाऽ-  
पराधसकुलाक्रूरऽपलायनमहोपद्रवोद्विग्नश्रुततत्पितृमहिमसर्वयदुसै-  
न्यश्वाफल्किप्रत्यानयनकृष्णाप्रबोधिततन्मणिप्रकटीकरणवासुदे-  
वपट्टराइयष्टकऽसूचनतत्पुत्रादिसमासोद्देशनमेकादशो मयूखः॥११॥

आदितस्त्रिपञ्चाशत्तमः ॥ ५३ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

समय इक १ ताजि स्वर्ग इंद्र आरुहि ऐरावत ॥

का सम्बर को मारना, मायावती सहित प्रद्युम्न का द्वारका आना, सूर्य को  
प्रसन्न करके सत्राजित का श्वसन्तकमणि लेना, और भार के प्रमाण का कह  
ना, उग्रसेन के अर्थ कृष्ण का मणि मांगना सुनकर नैघ्री (निघ्री के पुत्र स  
त्राजित) का उस मणि को नहीं देना, और मणि धारे हुए प्रसेन को सिंह का-  
मारना, उस सिंह को जाम्बवान् का मारना, कृष्ण और जाम्बवान् के बाहु  
युद्ध में जाम्बवान् का हारना, मणि और विवाही हुई जाम्बवती सहित कृ  
ष्ण का घर आना, रत्न देकर सत्यभामा से विवाह करना, और अपने पि  
ता की पहिन (भुवा) की सहाय के अर्थ कृष्ण को वारणावत जाना, कृतव  
र्मा और अक्रूर के सिखाये हुए सुधन्वा का सत्राजित का मारना, दुखी  
होकर सत्यभामा का कृष्ण को लाना, अक्रूर को मणि देकर सुधन्वा का भा  
गना, रथ को छोड़कर कृष्ण का चक्र से सुधन्वा को मारना, पलदेव का रू  
स कर मिथिला पुरी जाना, और दुर्योधन को गदायुद्ध सिखाना, कृष्ण के पी  
छे आने के तीन वर्ष पीछे रामा स्त्री (सत्यभामा) के अपराध से अर्थात् सत्य  
भामा के पिता सत्राजित को सुधन्वा के हाथ मरवा डाला था जिस अपराध  
से अपने कुल सहित अक्रूर का भागना, और महा उपद्रव से घबराये हुए अ-  
क्रूर के पिता की महिमा सुनके यादवों की सेना का अक्रूर को पीछालाना,  
और कृष्ण के समझाने से अक्रूर का मणि को प्रकट करना, कृष्ण की आठ  
पट्टरानियों की सूचना करना, और उनके पुत्रादि का संक्षेप से कथन करने  
का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से अत्रेपन मयूख हुए ॥५३॥

द्वारवती दुत आय कहिय प्रभुसौ सब संगत ॥

नरक नाम यह असुर करत अनुचित अवेनीसुत ॥

श्रुतिमार्ग सत्रादि हौन नहिं देत जोरजुत ॥

पाताल १ नाक २ नरलोक ३ की बर कन्या १ आनी पकरि ॥

मंदर महीध्र मनिशृंग २ अरु बरुन छत्र ३ लिय प्रबल हरि । १ ।

दोहा

उर्गालक दुव २ अमृतके, लीन छीन सपत्न ॥

कुंडल माता अदितिके, अब मम गज पर जतन ॥ २ ॥

पदपदी ॥

अनीखि उठि सकहित सिक्खदिय त्रिदिव यहै सुनि ॥

सत्यजुत श्रीरमन चिंति गरुडहि आरोहि पुनि ॥

दुष्ट नरकके दंग प्रागज्योतिस पहुँचै तहँ ॥

सत १०० जोजन छुरं अंत पास मोरख पसरे तहँ ॥

करि सुगम कटि तिन्ह चक्रकरि अगै हरि पहुँचत हरखि ॥

मुर नाम असुर आयउ समुख कुपित गज्जि मुच्छन करखि । ३ ।

दोहा

कट्टे कैसव खेल करि, मुर के तीन ३ हिं मत्थ ॥

सत सहस्र ७००० मुर के सुतहु, समर रहे पितु सत्य । ४ ।

इतरहु पंचजनादि खल, हनि पूंते तिहिं भैर ॥

मायावा नरकहु जुग्यो, सजि अनीक अतिवैर ॥

२. द्वारका में ३ शीघ्र ४ मित्रता के साथ ५ पृथ्वी का पुत्र ६ वेदमार्ग ७ यज्ञ  
आदि ८ स्वर्ग ९ अष्ट १० मंदर नामक ११ पर्वत से शिखरों का शिखर और  
वरुण का छत्र जवरी से लेलिये १२ अमृत के ( ) उस शत्रु ने छीन  
लिये १३ क्रोध करके उठे १४ इंद्र को १५ स्वर्ग की सीख दी १६ सत्यभामा  
सहित १७ लक्ष्मी के पति (कृष्ण) १८ प्रागज्योतिष नाम पुर में १९ अर्थात्  
पर चढ़ाये २० बाण (चार सौ कोस तक कल से रचेहुए धनुष पर चढ़ेहुए बाण  
ऐसे रक्खेहुए थे कि उस देश में जानेवाला अनजान मनुष्य उनसे बिधु जावे, अर्थात्  
तब वे बाण आपसे आप खल कर मार लेवें) २१ और भी २२ पंचजन को आदि ले दु-  
ष्टों को मार कर २४ उस नगर में २५ पहुँचे २५ राजसी माया को जाननेवाला २६ सेना

भूमतके\* सहसन सुभट, समर असुर संहारि ॥

सख सकल तस मोघ करि, लीनों नरकहु मारि ॥६॥

पटपदी ॥

भौम जननि जब भूमि अदितिकुंडल लै आई ॥

करि विन्नति कर जोरि दोरि नैति अमित दिखाई ॥

किरि तनु जब हरि अर्प लियउ उँदरि मुहि आनी ॥

तब तुम सपरस तनय नरक मम हुव अभिमानी ॥

तुमरोहि दयो तुमही लयो ए कुंडल प्रभु लेहु अब ॥

खिल कुलहि देहु जटुपति अशय सिर हम धरहि निदेस सब ॥७॥

दोहा ॥

हरिहु तथा कहि भौमके, लिनै रतन समस्त ॥

सत उत्तर सोलह सहस्र १६१००, कन्या १ कर्भन प्रसस्त ॥८॥

पटपदी ॥

बहु बारनर चउ४ दंत तुंग ३ छहजार ६००० खेत भव ॥

अरु तुंग कांबोज ४ लख इकबोस २१००००० महाजैव ॥

मनिमय मंदरकूट ५ बरुन छता ६५५ दि कछुक तैति ॥

नरकहिके किकरन संग पठई द्वावति ॥

कछु अर्प गरुड पर थपिथिर स घनस्याम सत्या सहित ॥

अदितिके देन कुंडल अरहि गये त्रिदिव आहत अहित ॥९॥

दोहा ॥

जाय त्रिदिव देवन जैजित, दर धैमि विजय दिखात ॥

\*भूमि के पुत्र के १ सव २ निष्फल ३ नरकासुर को ४ भौमासुर (नरकासुर) की माता ५ नग्नता ६ बहुत ७ सूवर (चराह) का ८ शरीर ९ आपने १० उठाकर ११ तब आपके स्पर्श से १२ पुत्र १३ बाकी के कुल को १४ आज्ञा ॥७॥ १५ सुन्दर १६ प्रशंसा योग्य ॥८॥ १७ हाथी १८ अच्छे खेत के पैदा हुए १९ कम्बोज देश के घोड़े २० वटे योगवाले २१ मन्दराचल का शिखर २२ पंक्ति २३ आपने २४ घनस्याम स्वरूप [कृष्ण] २५ सत्यभामा सहित २६ शीघ्र २७ युग में २८ शत्रुओं को २९ मारकर ॥९॥ ३० देवताओं से पूजित ३१ शंख ३२ यज्ञाकर



अपे कुंडल अदितिकों, नुत कहि नरक निपात॥१०॥  
 अति नुति जब किन्नी अदिति, अकिखय हरिहु अखर्व ॥  
 करहु जननि अविरत कृपा, संतति तव हम सर्व ॥११॥  
 आसिख तव दिन्नो अदिति, अखिलन होहु अजेय ॥  
 संची सहित सत्याहुकों, पुनि दिन्नो वर प्रेय ॥१२॥  
 बंधू जरा रू विरूपता, कवहु न व्यापै तोहि ॥  
 मम प्रसाद निर्भय रहहु, सुभगापन घन सोहि ॥१३॥  
 इम कहि कहि सकंहि अदिति, क्रम पूजन करवाय ॥  
 रक्खे अति अनुरति हरिहि, दिव सब सहल दिखाय ॥१४॥

षट्पदी ॥

नंदन क्रीडैत निरखि पारिजातहि सत्या कहि ॥  
 लै मम गृह इहि चलहु नाथ जो ओर प्रिया नहि ॥  
 सुनत पारि वह पारिजात थप्पत खंगपाति पर ॥  
 जहँ अकिखय जाँमेकन करहु अनुचित न चक्रंधर ॥  
 माथि सिंधु सुरन कडिय यह सु त्रिदिव उचित नहि भूमितल ॥  
 लैजाहु सोहु सुनि हरि चलिय लै सुरतरु निज बाहुबल ॥१५॥

सचरणागद्यम् ॥

रच्छकनकी यह सुनि सत्या कछो सिंधुके मंथनतै मुरा १ चंद्र २  
 लैच्छी ३ हू निकसे ते जैस सर्व सामान्य भोग्य है ते सैं ही पारि  
 जात ४ को जानौ ॥

१ दियेस्तुति के साथेस्तुति ४ कहा ५ बहुत ६ निरन्तर ७ सन्तान ८ सबसे ९ वही  
 जीतने में आवे ऐसा १० इन्द्राणी ११ सत्यभामा को १२ प्यारा १३ हे बहू १४ बु  
 ढापा १५ और १६ कुरूपता १७ प्रसन्नता से १८ सुहाग १९ इंद्र से २० अदिति  
 ने २१ प्रीति सहित २२ स्वर्ग की २३ इंद्र के नंदन नामक वाग में २४ क्रीड़ा  
 करते सत्यभामा ने कहा २५ कल्पवृक्ष को २६ हे स्वामी ! मेरे जैसी तुम्हारे  
 और प्यारी नहीं होवे तो (सब से विशेष प्यारी) मैं ही हूँ तो) २७ गरुड़ पर  
 रखते हुए २८ कहा २९ पदरेवालों ने ३० हे कृष्ण ! ३१ देवताओं ने ३२ स्वर्ग  
 के उचित है ३३ रक्षा करनेवालों की ३४ लक्ष्मी ३५ सबके बराबर भागने योग्य है.

अरु सचीकै सकसे पतिको गर्ब है तो वाके अधीसकौं इहाँ  
आहवकौं आनौं ॥

शक्रकौं जानतहू मर्त्यलोकबसिनी मैं पारिजातकौं लिवाय  
जातहौं ताको लज्जा करि जो बलिष्ठ होहु सोही निवारन करहु।  
तैसेही रच्छकनकी सुनि सचीनैं सब सुरन सहित सक्र संग्राम  
कौं पठायो ताके हु बर्णनमें श्रवन धरहु ॥१६॥

तहाँ पास १ परिध २ प्रांस ३ कृपाँन ४ पट्टिस ५ दुधन ६ दंड ७ भुँसुंडो ८ भि  
दिपाँल ९ सतधनी १० सूल ११ गदा १२ खड्ग १३ कुंत १४ कोदंड १५ परसु  
१६ प्रमुख सब सस्त्र धारत सुरनके सैन्यनैं बासुदेव बेढि लये ॥

अरु आहवमैं उदैग्र होय अपने आयुधनके आघात दये ॥  
तहाँ बरुनके पासकौं गरुडनैं चंचु करि खंड खंड कीनौं ॥  
अरु गदाधरनैं गदासौं दंडधरके दंडकौं प्रहंत करि पुहँवीपैं गि  
राय दोनौं ॥ १७ ॥

श्रीदेवी सिविकौं चक्रसौं चूर्ण करि सरनसौं सप्त ७ काल  
कौं सतधा करि डारयो ॥

अरु सुदर्शन छिन्न सूल रुद्रगनकौं गिराय बसु १ साध्य २ विश्वदे  
व ३ मरुत ४ गंधर्ब ५ गनकौं सारंग संधैय सरन करि सैवरके तूल तू-  
ल्य आकासमैं उछारयो ॥

तहाँ उरगासनसौं ऐरावत बासुदेवसौं बासैव कराल कलई  
करत भयो ॥

१ उस इंद्राणा के २ पति ३ युद्ध करने को ४ नरलोक में ५  
वास करनेवाली ६ बलवान् ७ देवताओं सहित ८ पास (जाल) ९ लोहांगी  
१० लोहेकी बरछी (सांग) ११ तरवार १२ कटारी १३ सुदृगर १४ अग्निधंत्रा [धंदूक]  
१५ मोक्ष १६ तोप १७ महादेव के रखने का [दंड के शिर पर मनुष्य का मस्त-  
क लगाहुआ] आयुध १८ भाला १९ आदि २० देवताओं की सेना ने कृष्ण को  
२१ घेर लिया २२ शस्त्रों को ऊँचा कियेहुए २३ कृष्ण ने २४ यमराज के दंड को  
२५ तोड़ कर २६ भूमि पर २७ कुबेर की २८ पालखी को २९ अग्नि के द्यौ  
डकड़े कादिये ३० शार्ङ्गधनुष से ३१ सांधेहुए बाणों से ३२ कमल की डंडी के भीत  
र की ३३ रुई की भांति ३४ गरुड से ३५ कृष्ण से ३६ इंद्र भयंकर युद्ध करने लगा

अरु अपने सख अस्त्र सब कटे जानि कुपित करमें कुलिस-  
कों धरत भयो ॥ १८ ॥

तापर चक्रानै चक्र चलायो देखि त्रिलोकमें हाहाकार होयरह्यो।  
अरु वासवनें वज्र चलायो ताहि क्रीडाही करि गर्जित गोविंदनें गह्यो  
यह देखि पुरंदर पलायनपर जानि सत्यानै सुनाई; पौलोमोके  
प्रिय पाकसासनकों कलहमें कातरता उचित नही ॥

अरु सदन आयेंहु संचनै स्वांगतके स्थान मोहि दर्प दिखायो  
यातैं पौरजातकों हराय मैही तोसों विग्रहकी चही ॥ १९ ॥

सो सुनि सक्रहू कह्यो चंडी चगचरके करतातैं हारिवेंसों तो  
लज्जा काहूकों न आवैं ॥

अैसी नम्रता जानि कृष्ण कह्यो हे देवराज मानव जे हम ति-  
नको कियो अपराध छमा करि बज्र पीछो लेहु यह सस्त्रसिरो-  
मनि तो तुमारेही सैंय सोभा पावैं ॥

इंद्र कह्यो मानव बनि मोहि मोहित क्यों करहु सत्यांके नि-  
ष्कुटमें निवास करिवेकों ईसके आदेशसों देवदुम द्वारकाको अ-  
लंकार वहै हैं ॥

अरु पापके परलोक पधारैं स्वच्छंदही यह अमरालय आयजैहैं ॥  
अैसी सुनि वासुदेव बाँसवकों बज्र दे द्वारका आय सत्याकं  
निष्कुटमें निलिपिनंग रोपिदयो ॥

जाकों देखतही जनैके पूर्वजन्मको चिंतन होय ताके गुच्छनके

१ वज्र को २ इंद्र का ३ भागने पर ४ सत्यभामा ने ५ इंद्राणी क  
प्यारे ६ इंद्र का युद्ध में ७ कायर होना ८ घर आये भी ९ इंद्राणी ने १०  
आयेहुए का आदर करने के स्थान में (जहां आदर करना चाहिये  
या वहां पर) ११ घमंड १२ कल्पवृक्ष का हरण कराकर १३ युद्ध १४ हम म-  
नुष्य हैं जिनके किये अपराध को क्षमा करके यह तुम्हारा वज्र पीछा लो १५  
हाथ में १६ सत्यभामा के १७ बगीचे में १८ स्वामी की १९ आज्ञा से २० कल्पवृक्ष  
२१ आभूषण २२ स्वतंत्र [आप से आप] २३ स्वर्ग में २४ कृष्ण ने २५ इंद्र  
को वज्र देकर द्वारका आके सत्यभामा के बगीचे में २६ देवतारु को रोप दिया,  
जिस्के देखने से २७ मनुष्य के पूर्वजन्म की धान याद आती है

गंध करि तीन तीन जोजन बसुधातल वासित भयो ॥

ऐसैं अमरंतरुकोँ आनि नरकके निलयतैं पठई जे सतोत्तर  
सोलहसहस्र १६१०० कन्या तिनकोँ एकही लग्न पर बासुदेव वि  
विधं बपु करि विवाहत भये ॥

अरु प्रत्येक तिनहुकै पूर्वहीके क्रमतैं एक१एक कन्या दस१०द  
स१०पुत्रनके प्रकार ठये ॥ २१ ॥

ऐसैं एक लाख इकसठि हजार अस्सी १६१०८० कृष्ण के पुत्र  
सोलह हजार एकसो आठ १६१०८ कन्या सहित एक लाख सतंतरि  
हजार एक सत अञ्चासो १७७१८८ समस्त जानिये ॥

अरु बासुदेवकै आठ रानी भई तिनमें व्यासावतारनैं वैष्णव  
पुरानमें एक१रोहिणीहू लिखी तहां श्रीधरनैं तो यह जांबतीकोही  
पर्याय ठहरायो परंतु यह आठन८में काहूके स्थानापन्न खटावल  
जानी नही यातैं अबके अवतारके यह नवमीपट्टरानी मानिये ॥

रोहिणीकैहू दीप्तिमान १ प्रमुख दस १० पुत्र एक१ कन्या भई ॥

अरु त्रिलोकसैंके तनयनमें बड़ो प्रद्युम्न भयो ताहूनेँ अपनैं  
मातुल रुक्मीकी सुता स्वयंवरमें बाहुबलसों जित्तिकैं विवाहि  
लई ॥ २२ ॥

तासैं प्रद्युम्नके कुमार अनिरुद्ध भयो ताहूको संबंध मातामह  
रुक्मीके तनुजकी तनयासों कीनों ॥

अरु विवाहके समय कृष्ण १ कामेंपाल २ प्रमुख जादवन  
वैद्यिनीकी वरांत बनाय भोजकट पत्तन जाय बलाकारसों

१ अभितल सुगंधित होगया २ कल्पवृक्ष कोशिरकासुर के ३ घर से ५ नाना प्र-  
कार के शरीर धारण करके ६ उन हर एक के, पहिले कहैहुए क्रम के अनुसार  
७ समूह = दूर ८ वेदव्यास ने १० टीका करनेवाले श्रीधर पंडित ने ११ द-  
सरा नाम १२ एवजी १३ इस कल्प में जो कृष्णावतार हुए जिनके (पुराणों के  
मत से प्रत्येक महायुग में कृष्णावतार होता है) १४ आदि १५ तीन लोक के  
पति (कृष्ण) के १६ पुत्रों में १७ मामा रुक्मी की १८ पुत्री की १९ नाना २० पु-  
त्र की २१ पुत्री से २२ बलदेव आदि २३ सेना की २४ भोजकटपुर २५ बल पूर्वक

\*बैदर्भीकों अनिरुद्ध परिनाय दीनों ॥

विवाहके+अनंतर कलिंगराजनै रुक्मीसों कह्यो बलदेवदुरोदर  
मैं-दच्छ नहीं है यातैं बडो\*\*ग्लह लगाय जित्तिकैं याको मान  
मारैं सोही सिद्धांत रुक्मी हू हृदय धर्यो ॥

अरु बलभद्रकों बुलाय द्यूतमें दोय २ बेर हजार १००० नि-  
ष्क लगाय लगाय जदुबरसों जित्यो तहाँ कलिंगराजहू दंत दि-  
खाय अष्टाष्टहास कर्यो ॥ २३ ॥

तदनंतर अयुत १०००० निष्क ग्लह लगाय बलभद्र जित्ते तथा  
पि रुक्मी १ कलिंगराज २ हमही जीते असैं हसित पूर्वक बदत भये ॥

तबही कुपित कामपाल कोटि १००००००० निष्कको ग्लह  
लगाय बहोरि जई भये तदपि दोहू २ दुष्ट हमही जीते असैं कहि  
अष्टाष्टहासी नर्दत भये ॥

तहाँ उनको अलीकत्व बलको विजयीपैन व्योमवानीनैं कह्यो सो  
सुनि रणारसिक रूष्ट रेवतीरंमणनैं वाही खेलके अष्टापदसों बि-  
दर्भ वसुधेस १ को बध करि कुटिल काँलिंगके दसैं तोरि स-  
भाको एकशंभ उपाति उनके पच्छपाती अनेक राजा मारि डारे ॥

असैं अनिरुद्धकों बैदर्भी विवाहि बरातमें विराजमान बलदेव  
बासुदेव द्वारका पधारे ॥ २४ ॥

क्रोड समय दैत्यराज बाणकी दुहितैं उषा जंगके जनक पर-

\*विदर्भ देश के राजा की पुत्री से + पीछे \* जुआ खेलने  
में + चतुर नहीं है \*\*बडा दाव लगा कर १ मुहर (शास्त्र में लिखे हुए तो-  
ल से सोलह मासा सोना को निष्क कहते हैं) २ जिस पीछे ३ दाव ४ बल-  
देव ५ जीते ६ तोभी उच्च स्वर से ७ हसनेवाले ८ गर्जना करने लगे ॥ कलिं-  
गराज और रुक्मी का ९ झूठापन और १० बलदेव का ११ विजय पाना १२  
आकाशवाणी ने १३ क्रोधित होकर १४ बलदेव ने १५ शार से १६ विदर्भ  
देश के भूपति १७ कलिंग देश के राजा के १८ दांत तोड़ कर १९ विदर्भ  
देश के राजा की बेटी ॥ २४ ॥ २० पुत्री २१ संसार के पिता महादेव और  
पार्वती को

मेश्वर १ पार्वती २ कौं रमत देखि रूच्य सहित रिरसा करत भई जाकौं जानि कात्यायनी कहयो पुत्री तोकौं सोघूही कमनीय कौंत मिलिहै जो बैसाख विसद बारसो १२ के बाँसर स्वप्नमें तेरो अभिभव करिहै सोही तेरो भर्ता जानि ॥

तदनंतर वाहीदिन स्वप्नमें अनिरुद्धनै याकौं अभिभूत कगे ताहीमें मनको लय करि जाग्रतहूमें सखीसौं तू कहाँ गयो असै कहत भई उनमत्तकी अवस्था आनि ॥

तहाँ बाणके मंत्री कुभांडकी कन्या उषाकी सखी चित्रलेखा कहयो कोनसो कहियत जानैं तो वनैं असै पूछैं नीठि नीठि उमा आदेस आदिक विरहको वृत्तांत कहयो ॥

तब कैलाकोविद चित्रलेखा हू देव १ दैत्य २ दानव ३ गंधर्व ४ विद्याधर ५ पन्नग ६ जच्छ ७ गुज्झक ८ सिद्ध ९ चारणा १० किन्नर ११ नर १२ आदि अखिल सैर्गके पुरुषनकी प्रतिमा पट्टमें चित्रित करि दिखाई तिनको देखत उषाके अंबकन त्रिदंसादि तजि चतुर नरपतिहीको चितैवो कहयो ॥ २५ ॥

तिनहूमें जदुबंस विलोकत अंधक वृष्णि वीरचंद बेष्टित बैकुंठ १ बैल २ प्रद्युम्न ३ कौं पिक्खि लज्जाजड होय अनिरुद्धलौं आखि आवतही आली यहै यहै एह असै उच्चर्यो ॥

जब जोगगामिनी चित्रलेखा हू इहाँ अनिरुद्ध आनिबेको पुर पौत्तमपुरीमें प्रवेस कस्यो ॥

अगौ बानासुरहू भक्तिकीतर भवको अपनै पत्तनपाल बनाय

१ वर (इसी प्रकार वर के सहित रमण करने की इच्छा (चाहना) २ पार्वती ने ३ सुन्दर ४ पति ५ शुक्ल पक्ष की द्वादशी के ७ दिन ८ जय [तुम्हको जीतेगा] ९ जिस पीछे १० जीती १ पार्वती की २ आज्ञा ३ कला जानने में परिणत ४ यज्ञ ५ गुह्यक ६ सम्पूर्ण ७ सृष्टि ८ मूर्तियाँ (चित्र) ९ नेत्रों ने १० देवता आदि को छोड़कर १ मनुष्यों की पंक्ति को ही २ देखना ३ अन्धक वंशी और वृष्णि वंशी यादवों के ४ समूह से ५ घिरे हुए ६ श्रीकृष्ण ७ बलदेव ८ देख कर लज्जा में जड हो कर ९ सखी १० कहा १ योगविद्या से चलने वाली २ द्वारका ३ भक्ति के कायर ४ महादेव ५ अपने पुर की रक्षा करनेवाले (कोटवाल)

बाहुबल \*दर्पित \*\*बुल्लयो हे नाथ दासकै हजार १००० हा  
थ क्यों करे इनको फल \*\*\*आहव है ता बिना वृथा है यातै  
एक बहु सफल हु दोय रहिहै ॥

तबहंस्मित गंभीरगिरीसँ कहाँ जब तेरे निकेतनके मयूरकेतनको  
भंग व्है तबही तू महाप्रतिभटकों लहिहै ॥ २६ ॥

सो अब या समय मयुरध्वजको भंग देखि बलिबंसबिभाँकर बा  
नहू महामुदित भयो ॥

इतकों जोगबियाके बलसौं अच्छरी चितलेखा अनिरुद्धकों उपा  
के आवासमैं आनि अन्योऽन्य आलिंगन कराय दयो ॥

तहाँ पृष्ठक १ बिद्धक २ उद्वृष्टक ३ पीडितक ४ लतावेष्टितक ५  
वृक्षाधिभूक ६ तिलतंडुलक ७ क्षीरनीरक ८ प्रमुख प्रकट मि-  
हित आठ ८ ही मुख्य आलिंगनमैं उभय २ अनुरक्त भये ॥

अरु ललाठ १ नयन २ कंठ ३ कपोल ४ ऊरु ५ उरोज ६ आ-  
ठ ७ अंतर्मुख ८ आठ ८ ही अंगनमैं चुंबनके लाह लये ॥ २७ ॥

आच्छुरितक १ अर्द्धचंद्र २ मंडल ३ व्याघ्रनखांक ४ मयूरपदक ५  
शशप्लुतक ६ स्मारणीयक ७ उत्पलपत्रक ८ आठ ८ ही मुख्य  
नखचित्र चतुर चतरेकी तूलिकाकों तिरस्कार करि रचे ॥

अरु गूढक १ उच्छूनक २ प्रवालमणि ३ मणिमाल ४ बिंदु ५  
विंदुमाला ६ खंडाऽन्नक ७ बराहचर्वितक ८ आठ ८ ही रदच्छेद

\*भुजबलके घमंड से \*\*बोला \*\*\*युद्ध है, उस युद्धके बिना इतने हाथ वृथा हैं इ-  
स कारण से एक ही बहुत है और जो एक हाथ भोजनादि व्यवहार के लिये और  
दूसरा शौचादि के लिये सफल समझे जावें तो दो रहने चाहिये ॥ १ ॥ हंसने हुए  
२ महादेव ने कहा कि ३ घर की ४ मयूर के चिन्हवाली ध्वजा आप से आप तूट  
पड़ेगी ५ सामना [मुकाबिला] करनेवाले वीर को पावेगा ६ बलि दैत्य के वं-  
श का सूर्य ७ घर में ८ परस्पर ९ मिलाप [प्रीति पूर्वक दोनों की देह का मिल  
जाना] करा दिया ॥ १० ॥ अब यहां पर आठ प्रकार का आलिङ्गन, आठ प्रकार  
का चुम्बन, आठ प्रकार का नखच्छेद, आठ प्रकार का दन्तच्छेद, आठ प्रकार  
का संध्वेशन, आठ प्रकार का सीत्कार और तेरह प्रकार का पुरुषायित, लि

चित्रनमै मोद मचे ॥

उद्गुनक १ बिजृम्भितक २ पीडितक ३ प्रसारितक ४ वेणुदारितक ५ शूलाचितक ६ कार्काटक ७ परावृत्तक ८ इत्यादि सुवर्णनाभोक्त संवेशन प्रकार अनुष्ठित करे ॥

त्यौही हिंकार १ स्तनित २ कूजित ३ रुदित ४ सीत्कृत ५ सूकृत ६ फूकृत ७ दूकृत ८ आठ ८ ही सीत्कार भेदनमें श्रवण धरे ॥ २८ ॥

उपसृप्तक १ मंथन २ हुल ३ अवमर्दन ४ पीडितक ५ निर्घात ६ वराहघात ७ वृषाघात ८ चटक विलासित ९ संपुटक १० संदंश ११ भ्रमरक १२ प्रेखोलितक १३ इत्यादि पुरुषायित प्रयोगह चहत भये ॥

कोऊ समय सौविदल्ल जन तिनकोँ रमत देखि हुंतही दैत्यराज बानसों जाय कहत भये ॥

यातैं सुनतही जे जे प्रबीर पकरिबेकोँ पठाये ते सब अनिरुद्धनैं मारे सुनि कुपित होय दैत्यराजही गहिबेकोँ गयो ॥

तथापि रणारसिक प्रद्युम्नके पुत्रनैं पच्छे पग दिवाये तबही असुरनके इंद्रनैं माया प्रसार पन्नगास्त्रसों अनिरुद्धकोँ बंधि कारामैं डारि दयो ॥ २९ ॥

बारका अनिरुद्धको सोक करत जादुवनसों नारदनैं निदान पूर्वक अनिरुद्धको निग्रह कहयो ॥

तब बासुदेव १ बल २ प्रद्युम्न ३ प्रमुख जादुवन चतुरंग बानके विजयकोँ सोनितपुरकी सरनि बहयो ॥

पुरीके परिसंरलों पहुँचत पैसुपतिके प्रेरे प्रेमथ आय बासुदेवकी

खे हैं इनका विवरण [व्याख्या, अर्थ का स्पष्ट करना] करना बहुत ही अश्लाल [लज्जा उत्पन्न करनेवाला] है इसकारण से हमने यहां इस प्रकरण की टीका करना छोड़ दिया है सो यदि पाठकों को इनके जानने की रुचि होवे तो वात्स्यायन कृत कामसूत्र के साम्प्रयोगिक अधिकरण के दूसरे अध्याय के प्रारम्भ से देखलें ॥ १ नाजर लोगोंने २ शीघ्र ३ तोभी ४ नागपास से ५ कैद में ॥ २९ ॥ ६ कारण पूर्वक ७ बन्धन ८ आदि ९ हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल गह १० चार प्रकार की सेना शोणितपुर के मार्ग में चली १० पुर के समीप की भासि में ११ शिव के भेजेहुए १२ गण १३ कृष्ण को



बाहिनीसौ लरत भये ॥

तिनकोँ गिराय जदुबीर दैत्यराजके दंगके समीप गये ॥३०॥

तहाँ तीनश्चरन तीनश्मस्तक धरत महेश्वरको महाज्वर आय केसवसौँ कलह करि बलभद्रपैँ अपनो भस्म सख डारत भयो ॥

ताके तापतैँ निमीलितनयन नीलांबरनैँ अच्युतके अंग संग करि नीठि नीठि स्वास्थ्य लयो ॥

तदनंतर माहेश्वरको अपनैँ अंगमें आवेशँ जानि तापैँ वासुदेवनैँ वैष्णव ज्वर चलायो तानैँ अच्युतके अंगतैँ माहेश्वरनिकासिदयो ॥

अरु वैष्णवके बढतही ब्रह्मादि बिबुधन प्रजाके पालनकी प्रार्थना करी सो सुनि अपनो ज्वर अपनैँही अंगमें अच्युतनैँ लीन करि लयो ॥ ३१ ॥

तदनंतर जुँझकोँ जे चिंतन करिहै ते बिज्वर व्हैहै असैँ अच्युतसौँ अरज करि माहेश्वर पँलाय गयो ॥

तब आहवनीय१गार्हपत्य२दक्षिणाग्नि३संभ्य४आवसथ्य५ए पञ्च५ही अग्नि आय लरे तिनकोँ जीति प्रभुनैँ पैलचारनकोँ असुरनको अनीकैँ चूरि दयो ॥

तबही भक्तकी भीर होय सक्तिंधर सहित कँपाली केसवसौँ आय लरे ॥

अरु अनंतके उँत्तमांगतैँ अवनीकोँ डगात दोहू २ रसिक रन-  
१ संना से २ पुर ॥ ३० ॥ ३ महादेव का पैदा किया हुआ ४ बडा ज्वर [ बुखार ] ५ कृष्ण से युद्ध करके ६ मिचे हुए नेत्रों से ७ बलदेव ने ८ कृष्ण के अंग के संग से ९ नैरोग्यपन १० जिस पीछे ११ शिव के ज्वर को १२ घुसा हुआ जानकर १३ विष्णु के उत्पन्न किये हुए ज्वर के बढते ही १४ देवताओं ने १५ इस युद्ध को जो याद करै उनको १६ ज्वर नहीं चढे; कृष्ण से यह अरज करके शिव का ज्वर १७ भाग गया १८ आहवनीय १९ गार्हपत्य २० दक्षिणाग्नि, ये तीन तो होम की अग्नि हैं और २१ संभ्य २२ आवसथ्य ये दोनों अग्नि विशेष हैं २३ मांस खानेवाले पशुपाक्षियों को २४ सेना का चूर्ण कर दिया २५ स्वामिकार्ति क सहित २६ महादेव आकर कृष्ण से लड़े २७ शेष नाग के २८ मस्तक से २९ भूमि को डिगाते हुए ॥ ३२ ॥

सरमैं भुकि परे ॥ ३२ ॥

तहाँ बासुदेवनैं \*जंभण चलायो तासों = जंभाकरि + अभिभूत ईस  
लखिकों समर्थ न भये ॥

अरु कन्हके हुंकार करि साक्तिकों पटाकि गरुडके घायल म-  
यूरकों लै प्रमथन सहित पार्वतीनंदहू पलायगये ॥

जहाँ जटाधरकों जंभित बहिवाहनकों बिद्रुत जानि बड़ी ब-  
रुथिनीसों बानासुर आय तुमुल बिस्तरयो ॥

ताके सैन्यकों सीरीनैं सीरिसों अँचि अयोधिसों अवपोथित करयो ३३  
तदनंतर बाणाबासुदेव अस्त्र अँबुकों उभलाय बरखाके बँलाहक वनैं

अरु कवचनकों काटि काटि उभै २ ही ओरके अजिहंग जा-  
लीमैं मयूरनके माफिक गात्रनकों छेकि छेनीं छनैं ॥

तब कृष्णहू बानके बाननतैं अपनैं आयुध बाँवरीके कलस हो  
ते जानि मारिवेकोही मन करि महासुरपैं चक्र चलायो ॥

तहाँ मंत्रमय असुरनकी कोटवी नाम विद्या कुलदेवी दिगंब-  
र रूपसों बानके आगैं होय अपनों दुर्दर्शन देहदेवोंकों दिखायो ॥ ३४ ॥

ताकों देखतही हरि नैन माँचि असुरके उद्देशैं पूर्वक कुँटिल-  
के करनकों कबौरी करि सुदर्शन तो प्रेरिही दयो ॥

\*जिस से आलस्य होकर जंभाई (उवासी) आने लगे ऐसा अस्त्र चलाया = जंभाई  
(भञ्ज आदि का नशा उतर कर उवासी) आने से + व्याकुल होकर महादेव १ महादे-  
व के गणों सहित २ स्वामिकार्तिक भी ३ भाग गया वहाँ पर ४ शिव को ५ उवासियों  
लेते हुए और ६ मयूरवाहन (स्वामिकार्तिक) को ७ भागा हुआ जानकर ८ सेना से ९  
भयंकर युद्ध फैलाया १० बलदेव ने ११ हल से १२ मूसल से १३ नाश कि-  
या (कूटा) ॥ ३३ ॥ १४ जिस पीछे १५ अस्त्र रूपी जल को उभला कर १६  
मेघ (बादल) १७ वाण १८ भूमि पर १९ बावली स्त्री अपने मस्तक के ध्वजे को  
जहाँ तहाँ डालदेवे इस प्रकार अपने आयुधों को जहाँ तहाँ निष्फल गिरते  
देख कर २० बड़े दैत्य पर २१ नग्न होकर २२ कृष्ण को ॥ ३४ ॥ २३ वाणा-  
सुर के कहने माफिक (वाणासुर ने पहिले महादेव से कहा था कि मेरे हजार हाथ  
व्यर्थ हैं सो दो ही रहने चाहिये उस कथन के अनुसार) २४ उस कुटिल वाणासुर  
के हाथों को २५ कबाड़ा (घर छाने के लिये बाँस आदि) रखनेवाले के समान करके

तानें दैत्यको दुव २ घटि सहस्र ९९८ बाहुनको ब्रात बाँलुकी-  
की विधि बाढि लयो ॥

दुजी २ बेर चक्र चलावत चंडनेत्र चेत पाय मेरे बरनैं जह्यो  
हे असैं कहि बासुदेवको बानके बधतैं निवारि दये ॥

अरु दोऊ २ नके प्रीति पूर्वक परस्पर प्रसंसाके संल्लाप भये ॥ ३५ ॥

दोहा

अंतर आवत गरुड रैय, पन्नग पास पलाय ॥

उषा सहित अनिरुद्धको, लै हरि पत निरकाय ॥ ३६ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ वी-  
तिहोत्रचाहुवाण पौण्ड्रकवासुदेवजन्मवेलासामोप्यकालसमानाऽधि-  
करणाकश्रीकृष्णचरित्रे कृष्णामुर १ नरका २ दिमारणातत्कीलित  
कन्याऽऽदिद्वारकाप्रेषणास्वयंस्वर्गगमनसुरसवित्रीकुण्डलप्रत्यर्पण  
सत्योक्तचिकीर्षुचक्रिपारिजातहरणाशक्रादिसुरपराभवनद्वारकागत-  
दामोदरनरकनिग्रहनिष्कासितशतोत्तरषोडशसहस्र १६१०० कन्या  
परिणयनसर्वसन्ततिसमुच्चयसङ्ख्यासूचनप्राद्युम्निरुक्मिपौत्रीविव-  
हनदुरोदराऽलीककुपितकामपालकालिङ्गदशनलोटनरुक्मिप्रमुख-

१ समुद्र २ बालणकाकही के समान काट लिये ३ महादेव सचेत होकर ४  
चार्नालाप ५ गरुड के वेग से ६ सपौ की पास भाग गई ७ पट्टेचे ८ घर पर  
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु  
वाण पौण्ड्रकवासुदेव के जन्म समय से नजीक है समय का आश्रय जि  
नका गेस श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण का सुर, नरक आदि को मारना, उस  
नरकासुर की कैद की हुई कन्याओं को द्वारका भेजना, खुद कृष्ण का स्वर्ग  
जाना, देवताओं की माता (अदिति) को कुण्डल देना, सत्यभामा का क  
हना करने की इच्छावाले श्रीकृष्ण का कल्पवृक्ष को हरना, इन्द्र आदि  
देवताओं का पराजय, द्वारका जाकर कृष्ण का नरकासुर की कैद से निकाली  
हुई १६१०० कन्याओं से विवाह करना, इन सबकी सन्तान की इकट्ठी गिन  
ती का कहना, प्रद्युम्न के पुत्र का रुक्मी की पोती से विवाह करना, शून में  
भूतेपन से क्रोधित होकर बलदेव का कलिंग देश के राजा के दांत तोड़ना  
और रुक्मी आदि राजाओं को मारना, विवाह कियेहुए अनिरुद्ध को घर

पृथ्वीशपोथनपरिणीताऽनिरुद्धनिकायानयनबाणापुत्रीप्राद्युम्निहर-  
णाबाणातन्निग्रहणाबल १ वासुदेव २ विजयनबाणाबाहुविच्छेदनपर-  
मेश्वरप्रार्थनात्यक्तबाणाप्राणापरमेश्वरसोषाऽनिरुद्धप्रत्यानयनं द्वादशो  
१२ मयूखः ॥ १२ ॥ आदितश्चतुःपञ्चाशत्तमः ॥ ५४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा

दोहा

हेरि१बल२हुव बसुदेवकै, सुहि लहि समय समीप ॥  
पांडुतनय पांडव भये, पंच५भ्रात कुलदीप ॥ १ ॥  
अभिजित नाम मुहूर्तमैं, ज्येष्ठा१८उडुमैं जात ॥  
प्रथम जुधिष्ठिर१धर्मसों, कुंती औरस रूपात ॥ २ ॥  
रहत वृहस्पति५सिंह५पर, मघा१०त्रयोदसि१३पाय ॥  
कुंती औरस भीम२हुव, अनिल अंस अतिकाय ॥ ३ ॥  
इंद्र अंस अर्जुन३भयो, फालगुनी१११२उडु एव ॥  
दस२न संन माद्री जने, सुत नकुल४रु सहदेव५ ॥ ४ ॥  
वासुदेव जयसों बडे, मास तीन३परिमान ॥  
या३ही मितैं हरिसों अधिक, सीरी समरैं सयान ॥ ५ ॥  
भीमसेन बलसों बडो, या३ही क्रम अति जोर ॥  
असैं छेत्रज पांडुकै, पञ्च५भये रनघोर ॥ ६ ॥  
सोलह१६पन्द्रह१५सकरी१४, बरस त्रयोदस१३वेस ॥

लाना, बाणासुर की पुत्री उषा को प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का हरना, उस  
अनिरुद्ध को बाणासुर का कैद करना, बलदेव कृष्ण का विजय और बाणा-  
सुर के हाथों को काटना, महादेव की प्रार्थना से बाणासुर के प्राणों को छो-  
टना, कृष्ण का उषा सहित अनिरुद्ध को पीछा लाने का बारहवां १२मयूख,  
समाप्त हुआ ॥१२॥ और आदि से चौवन ५४ मयूख हुए ॥

१कृष्ण बलदेव २ ज्येष्ठा नक्षत्र में ३ पैदाहुआ ४ कुन्ती के उर से ५ प्रसिद्ध  
६ पवन के अंस से ७ बडा पराक्रमी अथवा बडे शरीरवाला ८ अश्विनीकुमा-  
रों ९ से १० कृष्ण ११ अर्जुन से १२ इसीप्रमाण १३ बलदेव १४ युद्ध में चतु-  
र १५ बलदेव से १६ ये पुत्र पाण्डु के क्षेत्रज (पाण्डु के क्षेत्र में धारों के बीच)

क्रमतै पांडव पञ्चकैपहि, आयो गैजपुर एस ॥ ७ ॥

इनके चरित असेस धरि, बरन्यौ भारत व्यास ॥

नृप सत्रुघ्न४३चरित्र बिच, कहिहैं सोहु संमास ॥ ८ ॥

पुंन जुधिष्ठिर जन्मतै, हाँयन तीस३०प्रमान ॥

भयो मघा१०के प्रथम१पय, वासुदेव४१चहुवान ॥ ९ ॥

पौरण्डूदेस पुंड्रक४०जैनक, यातै पौरण्डूक४१नाम ॥

वासुदेव४१वसुदेव४०सुत, यातै हुव उँदाम ॥ १० ॥

वृद्धसम्म भानेज यह, गुनवति४०।१जाँठर जात ॥

मघा१०प्रथम१पय करि भयो, मच्छक४१हू भुव ख्यात।११।

दैत्य बली नर अंस जो, मोहन३२बैर सम्हारि ॥

जुबन लहि कुरु१जदु२नतै, रचत भयो अति रारि ॥१२ ॥

संसिकुलभूखन नृप सुबल, जो जैनपद गाधार ॥

लघुतनयाँ ताकी लही, मच्छक४१ज्या रति मार ॥ १३ ॥

माउसियाँ दुजोधकी, छोटी नलिनी४१।१नाम ॥

सकुनीकी अनुजा स्वसा, व्याही नृप अभिराम ॥ १४ ॥

वासुदेवकै सुत भयो, नलिनी बिच रनधीर४२ ॥

बीतिहोतै अरि तन बनहिँ, बीतिहोतै कुल बीर ॥ १५ ॥

से पैदा हुए) हैं ॥ युधिष्ठिर वर्ष का, भीमसेन, वर्ष का, अर्जुन वर्ष का और नकुल सहदेव १३ तेरा वर्ष के थे? इस क्रम से २ पांच पाण्डवों का समुदाय ३ हस्तिनापुर में [हस्ती नामक राजा का बसायाहुआ होने के कारण उस नगर का नाम हस्तिनापुर था] आया ॥ ७ ॥ ४ सम्पूर्ण ५ संक्षेप से ॥ ८ ॥ ६ पहिले ७ वर्ष ॥ ६ ॥ ८ इसके पिता का नाम पुराह और देश का नाम पौरण्डू होने से इसका नाम पौरण्डूक हुआ. और इसके पिता का नाम वसुदेव भी था इसकारण से इसका नाम वासुदेव हुआ ९ निरङ्कुश १० पेट से पैदा. मघा नक्षत्र के प्रथम पाये में जन्म होने के कारण भूमि पर ११ मच्छक नाम भी १२ प्रसिद्ध हुआ १३ चन्द्रकुल १४ देश १५ छोटी पुत्री १६ काम देखो को रति मिली जैसी १७ जो दुर्योधन की मासी थी १८ छोटी १९ यहिन शत्रुओं की तृणाँ पर २० अग्नि रूपी २१ अग्निकुल में अविद्या करके जो .

वासुदेव चहुवानकों, मनुज अबिद्या भूढ ॥

कहनलगे हरि अँपहो, लै अवतार अगूढ ॥ १६ ॥

सोहि मन्नि हरि चिन्ह सब, किय मच्छक४१निज काय ॥

दूत पठायो द्वारका, हरि पहुँ एह कहाय ॥ १७ ॥

### मुक्तादाम

दई नृप मच्छक४१एह कहाय, अँह हुव विष्णु इहाँ नर आय ॥

सुन्यो हरि चिन्हहि धारत तोहि, न जोग्य यहै तजिसो भजि मोहि ॥ १८ ॥

गदा१दंर२आदिक लच्छन टारि, तथा निज नामहु देहु निवारि ॥

कहयो सुनि दूतहिँ केसंव एह, रावै तजिहों ढिग आयसनेहा ॥ १९ ॥

न होय जथा तुमसों भय मोहि, तथा करिहों कहिहो सब सोहि ॥

यहै कहिकैं दिन होत द्वितीय२, चढे उरगौसन कन्हगौरीय ॥ २० ॥

चले इनकों सुनि कासिय राय, सज्यो उत पौडूक४१मित्र सहाय ॥

भये मदघुम्मत सँज मंतंगे, तरारन लेत विनीतें तुरंग ॥ २१ ॥

रथी१रथ घोरन साँदि२समूह, जुरे गजपिठिनि साँदि३न जूँह ॥

घनी मचि पक्खर घंटन घोर, अरे पल्लचार भरे चहुँ ओर ॥ २२ ॥

उमाँ१सिव२आनि खरे लहि आस, त्वँरा करि तक्कन चक्क तमास ॥

१मूर्ख लोग थे वे वासुदेव चहुवान को कहने लगे कि २ आप विष्णु हो और प्रसिद्ध अवतार लिया है. विष्णु के सब चिन्ह अपने शरीर पर धारण करके ३ कृष्ण के पास द्वारका में दूत भेजा ४ मैंने ५ विष्णु के चिन्ह तुमको धारते सुना है सो छोड़कर ६ मेरा सेवन करो ७ शंख ८ फिर ९ अपना नाम हरि आदि है सो भी छोड़ दो १० कृष्ण से यह सब कहा तब कृष्ण ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पास आके ही सब स्नेह पूर्वक छोड़ूंगा ११ जिस प्रकार १२ गरुड पर १३ सब से बड़े हैं वे ॥ २० ॥ काशी का राजा भी अपने मित्र पौण्ड्रक की सहाय पर तैयार हुआ, मद में घूमते हुए १५ हाथी १४ तैयार हुए १६ शिखा पाये हुए १७ घोड़े छलाँगें लेते हुए निकले ॥ २१ ॥ रथों पर रथी और घोड़ों पर १८ घोड़ों के चढ़नेवालों का समूह और हाथियों पर १९ हाथियों के चढ़नेवालों का २० समूह २१ मांस खानेवाले ॥ २२ ॥ २२ पार्वती और शिव मुण्डमाला की आशा से आ खड़े हुए २३ शीघ्रता करके २४ सेना की

ठमंकिय ढोल नगारन नद, चमंकिय आयुध ओज विहद ॥२३॥  
 धमंकिय भुम्भि सबै हयधार, ठमंकिय अच्छरि घुग्घर मार ॥  
 पलट्टिय फट्टिय आकुल भोग, उलट्टिय सिंधु प्रलै जनु जोग ॥२४॥  
 करक्किय कंटक बंधन सत्थ, खरक्किय खप्पर जुगिनि हत्थ ॥  
 छरक्किय अब्धघटा बर्मथून, भरक्किय बीरन नैन जनून ॥२५॥  
 थरक्किय पब्बय थाल थरक्क, फरक्किय भंडनपै बहरक्क ॥  
 भरक्किय कातर प्रानन चाहि, अरक्किय पिकखन देव उमाहि ॥२६॥  
 मुरक्किय कच्छप ज्यौं ठरि ढाल, बरक्किय दंतुलि कोलै बिहाल ॥  
 ढरक्किय दिग्गज जानुनै जैकि, लरक्किय अंडकटाह उचकि ॥२७॥  
 बढ्यो रज चक्किय चक्र बिछोहि, चढ्यो नभ एह दिवाकरं रोहि ॥  
 बरागांसिराज १० पौंडक २बीर, हलै इम सज्जि चमू हमगीर ॥२८॥  
 विरौज चढे इततै हरि आय, लये दल दोउशन द्वैरगरदाय ॥  
 जुरे हरि १मचैक २दारुन जुद्ध, उभैरनिज आयुध छावत उद्ध ॥२९॥  
 उभैरमकरांकृत कुंडल कान, उभैरअरि १कजैरगदा ३दर ४वान ॥  
 उभैरश्रियै बच्छ विराजित बच्छ, उभैरगलकौस्तुभ रंजित अच्छ ३०  
 उभैरकसि पीत निचोलनै तंग, उभैरघनस्याम रहे रुपि रंग ॥  
 उभैरलहि गोहिरलौं बनमाल, उभैरदल नीरैज नैन विसाल ॥३१॥

१ प्रताप २ बिना हृद (अत्यन्त) ३ घोड़ों की दौड़ से ४ शेष नाग  
 के फण ५ मानों प्रलय होने का योग आगया होवे ऐसा ६ कवच ७  
 आकाश को = हाथियों की सुंड के जलकणों की घटा से ८ क्रोध १० धा  
 ल में भराहुआ पानी थरके इस प्रकार पर्वत थरकने लगे ११ ध्वजा १२ का  
 यरों के प्राण भड़के (चौंके) १३ अड़े (इकट्टे हुए) १४ वराह की १५ घुटनों (गो  
 डों) के बल १६ गिरे १७ ब्रह्मांड १८ चक्रवी चक्रवा के वियोग कराकर १९ वही  
 रज २० सूर्य को २१ रोक कर २२ काशी का राजा २३ चले २४ सेना २५ पालियों  
 के राजा (गरुड़) पर २६ कृष्ण २७ वासुदेव चहुवान २८ ऊपर की २९ दोनों  
 के कानों में मकर की आकृति के ३० चक्र ३१ कमल ३२ शंखवाले ३३ दोनों  
 की छाती पर ३४ विष्णु का (भृगुलता) चिन्ह ३५ दोनों के गलों में कौस्तुभ  
 मणि ३६ शोभायमान ३७ पछेवड़ा (प्रच्छदपट) को काठा कस कर दोनों के  
 ३८ पगों के टखने [गिरियों] तक बनमाला ३९ दोनों कमल नेत्र

उभैरु रंगासन केतन अंक, उभैरुचि रम्य किरीट निसंक ॥  
 उभैरधनु तद्धित भृंगविकार, उभैरभुज च्यारि ४स्यमंतकवारा ॥३२॥  
 उभैरवसुदेव तनूज समान, उभैरपल्लचारन पोखन प्रान ॥  
 उभैरविरदावलिरावनमार, उभैरमधुकैटभ बच्छ बिदार ॥३३॥  
 उभैररथ फेरत मंडलमान, उभैरकुल जहव ओ चहुवान ॥  
 उभैरसिव दारिद्र मुंडन जानि, उभैरकलिकार हसावत आनि ॥३४॥  
 उभैरनवीर मिले इम आय, उभैरकरलौघव दाव दिखाय ॥  
 लगे दुवरगैन गुरावन जत्थ, मिलावन छावन मत्थन मत्थ ॥३५॥  
 चलै सर १ तोमर २ संगि ३ त्रिसूल ४, त्रैसे हुव कांतर सैंबर तूल ॥  
 छिकै दुवरघौ पटपीत सरीर, भई हलमल्ल भई भट भीर ॥३६॥  
 नचै उठि रुंड तथुंग तथेइ, करै भरि बत्थ विपोथैन केइ ॥  
 कटै रथ १ कूबर २ चक्र ३ वरूथ ४, फटै प्रधि ५ नाभि ६ जुगंधर ७ जूथा ३७।  
 उडै ध्वज ८ अंबर रोपैन रीस, करै जनु देवनको बखसीस ॥

१ ध्वजा में १ गरुड के ३ चिन्ह ४ मनोहर ५ दोनों के हितके लिये सांग के धनुष ६ दोनों चार हाथवाले, और हाथ में स्यमंतक मणिवाले ७ पुत्र ८ मांस खानेवालों के प्राणों को पाषण करनेवाले दोनों ९ रावण को मारनेवाले [विष्णु के अवतार] हैं ऐसी स्तुति करानेवाले १० छाती को फाड़ने वाले ॥ ३३ ॥ ११ गोलाकार १२ महादेव के मस्तकों का दरिद्र जाननेवाले अर्थात् इस दरिद्र को हम मेटेंगे इम बात को जाननेवाले १३ दोनों नारद (युद्ध करानेवाले नारद को युद्ध बहुत प्रिय था, इसकारण से इधर की वार्ता उधर, और उधर की इधर कह कर युद्ध करा देते थे, इस से नारद को कलिकार कहते हैं) को हसाते [प्रसन्न करते] हैं ॥ ३४ ॥ १४ शीघ्रता से १५ आकाश गुड़ाने लगे (अन्युक्ति में आकाश का गिराना बहुधा कहा जाता है) और माथों से माथे मिला कर आकाश को छाने के लिये १६ भाले १७ डर कर १८ कायर १९ कमल नाल की रुई के समान हुए २० दोनों और पीताम्बर सहित शरीर छिके २१ ये नाचके अनुकरण के शब्द हैं २२ गिराना (कितने ही बाध भरके गिराते हैं) २३ रथ के ओदण २४ पहिये २५ रथ के ऊपर का लोहे का कवच (खोली) २६ पूठी २७ जुआ (जूड़ा) रहने की जगह २८ बाणों से (ध्वजा का वस्त्र क्रोध पूर्वक बाणों से उडता है सां मांनों वह वस्त्र देवताओं को बखसीस किया जाता है



गिरैँभुव खाय कुलद्वन सूत९, मनौँ नट पट क्रिया मजबूत ॥ ३८ ॥

हबैकत घायनमैँ लागि घाय, छुलकत रत्त उबकत आय ॥

चटकत चापन चंड विराँव, सुँ ज्यौँ चटकारि खिलावन साँव । ३९ ।

करैँ सर सोदरहू अर एह, हजारन बंट परैँ इक१देह ॥

सिखावत पच्छ बिमूढ बहोरि,

न पै बिसवास करो हित कोरि १००००००० ॥ ४० ॥

कहैँ सठ तून प्रँसू सनतून, लहैँ इक१भागहु क्यौँ हम ऊँन ॥

अरे करिहो इक१भाग सिवाय, सुही मुहिँ देहु कहैँ इममाय । ४१ ।

सु पै नहि मन्नि वैँदैँ फट बैँन, कटैँ निज ज्यौँ तजि ज्यौँ पर लैन ॥

कटैँ उर१जालिक२जत्रु३कपाल४, बनैँ बढि चापल अंननव्यालैँ । ४२ ।

रमैँ चँउसठि६४चढावतैँ रत्त, वैँदैँ दुँवपंच५२मलंगत बत्त ॥

डकारत डाकिनि अँस्र अघाय, हकारत साकिनि पारत हाय । ४३ ।

१ सारथी २ फटेहुए घाव के धोलने का अनुकरण है ३ रक्त४जोर से खींचे हुए धनुष के शब्द का अनुकरण है ५ भयंकर शब्द ६ सो, जैसे चुटकी बजाकर ७ बालक को रमाते हैं ॥ ३९ ॥ अब यहां रूपक अलंकार से वर्णन करते हैं कि सगे भाइयों की भाँति बाण ( तीर ) भी शीघ्र अथवा ( अड़ हठ से ) ही एक शरीर के हजारों बंट पाड़ते हैं जिनको अपनी पक्ष के मूर्ख लोगों के समान तीर के पंख सिखाते हैं कि छोड़ बातों से भी इन [ भाइयों ] का विश्वास मत करो ॥ ४० ॥ एक बाण दूसरे बाण से कहता है कि हे मूर्ख तू भाया रूपी माँता से निकला हुआ नहीं है इससे तुम्हारे कारण से हम एक हिस्सा कम क्यों लैवें ? इसको उत्तर में वह कहता है कि अरे ? मैं एक भाग अधिक करूँगा, यह सुनके माता ( भाया, और उधर काली देवी ) कहती है कि वह अधिक भाग मुझे देना ॥ ४१ ॥ इस बात को नहीं मानकर धिक्कार का अथवा फाटा ( निर्लज्जता का ) वचन बोलता है, बाण जब प्रत्यंचा से छूटता है तब “ फट ” ऐसा शब्द होता है और अपनी माँता की छोड़ कर पराई भूमि लेने को जाता है ( यहां पर ज्याशब्द माता और भूमि दोनों का वाचक है और ज्या का अर्थ प्रत्यंचा भी है कि अपनी प्रत्यंचा को छोड़ कर शत्रु के धनुष की प्रत्यंचा काटता है ) १५ जाली १६ गला और धड़की सन्धि ( गले की हसली का स्थान ) १७ चपल १८ आंतों के सर्प ॥ ४२ ॥ १६ चौसठ जो-गनियाँ १० रक्त २१ धोलते हैं २२ वाचन वीर [ भैरव ] २३ रक्त से वृत्त होकर

सिराहत संभु उठावत सीस, कटावत यों जिम रक्खस १ कीस २ ॥  
 सिराहत बुल्लि उभा रन सूरि, भैरै तिन्ह लोहित खप्पर भूरि ॥४४॥  
 चटचट पाँत गदा चउ४कोद, मच्यो हिय गिह सिचानन मोद ॥  
 पटकत रत्त गुरै गजराज, भैरै जनु पव्वय वज्जन बाँज ॥४५॥  
 नचै कहूँ भूत बिनाँ बिधि तत्त, फिरै किँ बजारनमै उनमत्त ॥  
 सिँ लै घट तोमर होय दुसँार, करै कितुला कर्यै १ विक्रय २ कार ॥४६॥  
 भ्रमै ध्वजदंडन सुंठिन भाग, नमै जनु चंदन चुंबन नाग ॥  
 खरे लाखि रीभत नारद खेत, परेहु कहाँ भट पारत प्रेत ॥४७॥  
 बली दुव २ चंद्र १ धनंजय २ वंस, अरे इम बिष्णु १ बलीनर २ अंस ॥  
 कह्यो तहँ पौंड्रकसौं जडुनाथ, कहे तुमते १ वै तजौं सब साथ ॥४८॥  
 दये कहि यों हरि सख चलाय, कटे तिन पौंड्रकके सब जाय ॥  
 निरायुध व्है विनु स्पंदन बाजि, अरयो पुनि सम्मुह मच्छक १ २ अंजि  
 हनै बहु जहव सुंठिन मारि, दये अवनो गज डुंगर डारि ॥  
 हनी अनिरुद्ध हिये दस १ ० मुठ्ठि, प्रहारिय काम २ कै फोगिन रुठ्ठि ॥५०॥  
 रु उल्मुक ३ साम्बर २ हनै तलघाँत, गिरायउ दारुक ५ दै उर लात ॥  
 बलाहक १ सैव्य २ तुरंग जैकाय, गहयो हरिको कैटिबंधहि जाय ॥५१॥  
 भयेतहँ लोक चउदह १ ४ भीत, बढ्यो सुँच काल गिन्यौं विपरीत ॥  
 कह्यो नैम देवन कंपि पुकारि, रचो यह कोतुँक ना १ वै मुरारि ॥५२॥

राम और रावण के युद्ध में १ राजस और २ बन्दर कटते थे ऐसे ३ देवी ४  
 युद्ध में परिणत ५ उनके लोही से ६ बहुत गदा के ७ पड़ने का चटचट श-  
 ब्द चारों ८ दिशा में होता है ९ रक्त; मानों वज्र से पर्वतों के १० पंख झ-  
 डते हैं ११ तहाँ पर १२ मानों बजार में बावला फिरे जिस माफिक, शरीर  
 भालों से १३ छिंदते हैं १४ पार फूट कर १५ मानों मोल लेने और बेचनेवाले  
 ने ताकड़ी (तराजू) कर रक्खी है. चन्द्रवंशी और १६ अग्निवंशी १७ नर ना-  
 मक दैत्य के अशवाला वासुदेव चहुवाण १८ अच १९ बिना धोड़े थर और मच्छक  
 चहुवाण २० युद्ध में ॥ ४६ ॥ २१ गृहमे पर हाथियों रूपी पर्वत पटककर २२  
 प्रभुम्न के कोहणी, गूणी (गुजसध्पग्रन्थी) ॥५०॥ २३ श्वपड की चोट से २४  
 कृष्ण के सारथि के २५ बलाहक और सैव्य नाम कृष्ण के घोड़ों को गिरादि-  
 या २६ कमरबन्धा ॥५१॥ २७ शोक २८ आकाश में २९ खेल ३० अच ॥५२॥

सबै विधि'सर्ग जमालय जात, हनौ प्रभु पौंड्रककों तंसमात ॥  
 यहै सुनि कन्ह गदा घन घाय, हन्यौ पुनि पौंड्रक ४१ चक्रचलाया ॥५३॥  
 वराणसिराजहिं मारि बहोरि, पंठायउ तास पुरी सिर तोरि ॥  
 गँदाधर यौ अरिगंज गिराय, बिजै करि द्वारवतीपुर आय ॥५४॥  
 परयो उत कासियमैं नृप सोस, रची तस पुत्रहु सो लखि रीस ॥  
 त्वरा करि छेत्र गयो अविमुक्त, प्रसन्न करे हर लै बर युक्त ॥५५॥

दोहा

कासिराज सुत संभुसौं, यह बर लिय उत्तलै ॥  
 ईस उठावहु घोर इक १, कृत्या केसव काल ॥ ५६ ॥  
 ताके हँवन निकेतमैं, सिव सासन लहि एह ॥  
 उट्टी दक्षिण अंगितैं, कृत्या दीपित देह ॥ ५७ ॥  
 ज्वाला करि जारत जगत, अकुलावत अब ओकैं ॥  
 द्वारवती उप्पर गई, भीत भये लखि लोक ॥५८॥  
 तापर पठयो चक्र हरि, कहि यह बिघ्न मिटाय ॥  
 याहि चलावनहार पुनि, पुर जुत जारहु जाय ॥ ५९ ॥

षट्पदी

जबहि सुदर्शन जाय दये आघात दुरांसद,  
 भजि कृत्या तब भीत मुरी निज मग पैरिहरि मद ॥  
 पिठि चक्र चलि प्रबल विघ्न कासियपुर बारयो,  
 तब तस नृपको सैन सहित प्रमथैन संहारयो ॥

१ ब्रह्मा की सृष्टि २ जम के घर ३ इस कारण से ॥ ५३ ॥ ४ काशी के राजा को ५ कृष्ण ने ॥ ५४ ॥ ६ जल्दी करके ७ काशी क्षेत्र (नहीं छोड़ा जावे ऐसा क्षेत्र) ८ महादेव को ॥ ५५ ॥ ९ शीघ्र १० यज्ञ देवता विशेष, अथवा अग्नि विशेष जो कृष्ण का काल होवे ॥ ५६ ॥ उस राजा के ११ यज्ञघर से महादेव की आज्ञा लेकर १२ दक्षिणाग्नि से क्रान्तिमान् शरीर वाली कृत्या उट्टी ॥ ५७ ॥ १३ घर ॥ ५८ ॥ १४ दुर्जय आघात दिया अथवा दुष्टों पर आघात दिया १५ घमण्ड छोड़कर १६ महादेव के गणों सहित

चंडी रिझाते मिले बिंदु चोहान २, दंडी मनौ फगगके चञ्चरी दान ॥  
 ताली खुली ईसकी रीसकी रारि, नैबेलगी सेसके सीसकी बारि  
 खैबेलगी जुगिनी टूक के टारि, गैबेलगी डाकिनी प्रेतकों गारि ॥  
 कट्टै कलावा खुलै के करीकंध, तुट्टै उडै राति के बीति के बंध १५  
 भेजाकट्टै खुप्परी उच्छट्टै भिन्न, खुल्लै दहीसांरज्याँ गगरी खिन्न  
 बज्जै मनौ प्रातकी झल्लरी तेग, गज्जै घनै बैरकों बाहुरै बेग १६  
 पीवै भैर साकिनी अंससौं टोप, जीवै भजै भीरु के अंजुनी ओप ॥  
 झूलै करी अंत्रके हिंडुलौ प्रेत, खिल्लै भरी हेतसौं खेचरी खेत १७  
 जैपाल वहाँ बिंदु भूपालको पुत्त, आयो रिसायो महानंदके हुत्त ॥  
 तापै भयो भूपके हथको वार, जैपालको व्है परयो मत्थ चोषफार  
 चढांसिको बंस जुज्जे महाकाल, मारयो महानंदयाँ बिंदु भूलपा ॥  
 फेरी तहाँ संगही जिति चोहान, साकंभरी देसमै अप्पनी आन १८

( दोहा )

नरबाहन १ मारयो नृपति, सुत जयपाल २ समेत ॥

साकंभरि जनपद सकल, पायो विजय उपेत ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

साकंभरि मंदिर १ अति सुंदर, बनवायो नूतन धरनीबैर ॥

देवी को १ प्रसन्न करते हुए, फाल्गुन मास में गेहर (पुरुषों का  
 नृत्य विशेष) खेलनेवाले २ डंडिये देवें जैसे तरवारों के प्रहार करते हुए वि-  
 नंद और चहुवाण मिले जिससे शिव की ३ समाधि खुल गई और शेषना-  
 ग के मस्तकों की ४ बाढ़ ४ नमने लगी ॥ १४ ॥ ५ गाने लगी ७ गाली  
 ८ हाथियों के कन्धे, बंध (तंग आदि) तूटकर रीते होकर कितने ही ९ घो-  
 डे उड़ते हैं ॥ १५ ॥ गागर फूटकर १० मक्खन निकले ऐसे ॥ १६ ॥ टोप में  
 ११ कपिर भरकर, कितने ही १२ कायर १३ गौवों के समान भागकर जाते  
 हैं १४ हाथियों की आँतों के १५ हिंडोले बनाकर प्रेत झूलते हैं १६  
 प्रसन्न होती हैं ॥ १७ ॥ १७ पुत्र कोष करके महानन्द को १८ होम करने आया  
 ॥ १८ ॥ १९ चहुवाण वशी ॥ १९ ॥ २०  
 ॥ २० ॥ २१ साकंभरि का २१

विजय २ सहित पाया

भयो नृपति रनधीरकै, तमय सत्रुघन ४३ सूर ॥

करन विदित चंडासिकुल, पन १ बितरन २ रन ३ पूर १४ ।

षट्पदी ॥

इत दुरजोधन नृपति सुता हित किन्न स्वयंवर ॥

तहँ सांवहु हरि तनय गयउ दैर्पित रनदुद्धर ॥

वलकर रथ बैठाय लग्यो कन्या लैजावन ॥

भीष्म १ द्रोण २ कृप ३ कर्ण ४ जुरे सुनतहि रनरावन ॥

पुनि जिति दयो कारा पटाकि सु सुनि लगे जदुभट सजन ॥

बैल कहिय तथै क्यों सब चलहु मै जावत यह मग्नि मन १५ ।

सचरणागयम् ॥

वलभद्र बंधुनसौं अैसें अँखि हँलहेति हस्त हस्तिनापुर गये ॥

अरु बाहिरके उपवनमैं रहि कौरवनतैं अपनौं आगम कहावत भये

सो सुनि सबन सहित सुजोधननैं अँवनके उपहार आय अँन-  
तकै अर्पन करे ॥

तिनको ग्रहन करि तौलांकहू सांव संवंधी उपौलंभनतैं सब-  
नके श्रवन भरे ॥ ६ ॥

दोहा

कहिय राम तुम सिर करत, उग्रसेन अँदेस ॥

सांव तजहु कन्या सहित, अँसु चहि मन्नहु एँसे ॥ ७ ॥

यह सुनि जँनु बारूद बिच, दिन्नौं खँदिर दमंगै ॥

सह परिकर धृतराष्ट्रसुत, भो जनु कुँपित भुजंगै ॥ ८ ॥

१ चहुवाण कुल को २ दान में और युद्ध में पूरे पणवाला ३ पुत्री के लिये ४ कृष्ण का पुत्र साम्ब ५ घमण्ड में भरा हुआ ६ रण में हुस्तर ७ रावण के समान रण में लड़नेवाले ८ कैद में ९ सो, सुनकर १० बलदेव ने कहा ११ तहां १२ कहकर १३ हल शस्त्र को हाथ में लेकर १४ वाग में १५ पूजा की १६ सामग्री १७ शेषावतार (बलदेव) के १८ बलदेव ने भी १९ ओलंभा ॥ ६ ॥ २० आज्ञा २१ प्राणों को २२ इस वार्ता को मानो २३ मानों २४ खैर की लकड़ी का २५ तिणगारा [अग्निफल] २६ परगह २७ क्रोधित २८ सर्प ॥ ८ ॥

पटपदी ॥

द्रोन १ सुजोधन २ करन ३ कृप ४ बाल्हीक ५ महाव्रत ६ ॥

बुल्ले सब सन विदित बली जहव कबतैं बंत ॥

दरितैं बापुरो उग्रसेन यँहँ अरज लिखावत ॥

पुनि जजातिके साप पट्ट नृपता किम पावत ॥

कुरुकुल सदाहि सब सिरतपत सुहि सासन अप्पन सहजा ॥

तुम गिने असन १ आसन २ उचित ताको यह फल ब्रजहु ब्रजा ९।

कुरु दार्षित इम कहि रु गये निजपुर बढाय बल ॥

नीलांबर इत अनखि हनिय लांगल निज भूतल ॥

फटि दरार मचि नाद करे पूरन दिस अंतर ॥

पुनि चितिय बलदेव हनौ कुरुकुल सब संगैर ॥

जान्हवी बोरि हत्थीनैयर घन प्रांतीपन घायहौ ॥

लछमनाँ सहित सांबहि सजैव बंधुन विदित दिखायहौ १०।

यह दृढकरि धाँकि अनख लंबभुज सुख गहि लांगल ॥

कौरवपुर प्राकार बैप्र अग्रक अँच्यो बल ॥

ऊरध कुँटिम अधर पँटल नर पात्र अधोमुख ॥

उठ्यो नगर अरशाय गिरन गंगा अँचन रुख ॥

गांगेय १ द्रोण २ गोतम ३ प्रमुख माफ करायउ नृति महित ॥

१ भीष्म २ बोलै ३ यह वार्ता कब से है कि यादव बलवान हैं ४ डरा हुआ विचारा उग्रसेन ५ यहाँ सदैव अरजी लिखता है किंर उसको यथा ति का आप है इसलिये राजापन का पाठ किस प्रकार पासक्ता है हे वलदेव तुमको ६ भोजन और आसन के उचित समझे उसका यह फल है सो ७ मार्ग में चल्यो अर्थात् विदा होओ ८ कौरव घमण्ड में भरेहुए ९ वलदेव इधर ११ क्रोध करके १२ अपना हल धूमि से मारा १३ युद्ध में १४ हस्तिनापुर को १५ गंगा में डुबो कर घने १६ शत्रुओं को सारुंगा और १७ युजोधन की पुत्री लछमना सहित सास्व को १८ शीघ्र १९ क्रोध में तप्त होकर २० हाथ के अग्र भाग में लंबे हल को लेकर कौरवों के २१ कोट (शहरपनाह) और २२ धूलकोट के आगे से वलदेव ने खींचा जिससे २३ ऊपर नीचे और नीचे २४ छत और मनुष्य; चरतन सब नीचे मुख होगये २५ भीष्म २६ कृपाचार्य २७ आदि २८ स्तुति के साथ.

शृंगारि सांव पठयो सबन दै दायज दुलहनि सहित ॥ ११ ॥

दोहा

\*बलि पूजन बलभद्रको, करि अतिनम्र\*\*असेस ॥

जोरि करने जामात जुत, पहुँचाये निज देस ॥ १२ ॥

॥ षट्पदी ॥

नरक असुरको मित्र जैरठ इक द्विविद बलीमुख ॥

सखा कन्हहत सुनत दैन लग्गो देवन दुख ॥

मख बिगारि जैन मारि श्रौत बिप्रन सातन रत ॥

साधु सरनि सब रुकि लयो मनुजन मारन व्रत ॥

सब जारि दये पुर देस वन गिरिन डारि जग चूर्ण किय ॥

पाँथोधि मज्झ रहि मारि पर्यंजल बिथारि सब बेरि दिया ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

कामरूप अति दर्प कपि, अन्नादिक उँपहार ॥

भंजि तोरि सब भूमे भव, किन्नेँ प्रहृत करार ॥ १४ ॥

वषट्कार<sup>१</sup>अरु अध्ययन<sup>२</sup>, रोके बानर सर्व ॥

भुव आयो आयो भयो, खल बल गर्ब अखर्ब ॥ १५ ॥

इकक<sup>१</sup>समय रेवाँति प्रमुखँ, लै बनिताँ बहु व्रत ॥

रैवत गिरि पर बैल सुरा, लग्गे पीवन ख्यात ॥ १६ ॥

॥ षट्पदी ॥

वह बानर तहँ आय चंडै बपु करि बिरोध चाहि ॥

\*फिर\*\*सम्पूर्ण? दोनों हाथ जोड़ कर<sup>२</sup>जमाई के सहित ॥ १॥ ३॥ ब्रूहा<sup>४</sup>वन्दर  
५ अपने सखा को कृष्ण का माराहुआ सुनकर<sup>६</sup>मनुष्यों को<sup>७</sup>वेद कर्म करनेवा  
ले ब्राह्मणों को ८ मारने में तत्पर ९ श्रेष्ठ १० मार्ग सब रोक कर ११ मनु  
ष्यों के मारने का १२ नियम १३ समुद्र में १४ पग पीटकर ॥ १३ ॥ १४ इच्छा  
नुसार रूप कर लेनेवाले ने १५ सामग्री १७ नाश ॥ १४ ॥ १८ होम १९ वेदों  
का पढ़ना, भूमि पर भय के मारे वह आया वह आया, ऐसा होगया ॥ १५ ॥  
बलदेव की राणी २० रेवती २१ आदि २२ स्त्रियों का बहुत २३ समूह २४ ब  
लदेव प्रसिद्ध मद्य पीने लगे ॥ २६ ॥ २५ भयंकर शरीर

बलदेवद्विविदमारण ] तृतीयराशि—चतुर्दशमयूख ( ६२५ )

मदिरा भाजन फोरि हस्यो बल ढिग सम्मुह रहि ॥  
 दासुन दंत दिखाय जदपि तरज्यो हल प्रहरन ॥  
 बहुर तदपि बिध्वंस करि रु किन्नै सब कनकन ॥  
 जब राम मुसल लिन्नोँ स्वकर कपि मुक्किय सिल दिग्घ तव ॥  
 ताकहँ अयोग्र करि चूर्ण करि हुव जहव अति उग्र अब ॥७॥  
 बहुरि मुसल अतिबेग छुट्यो बलको बानर पर ॥  
 लंघि ताहि खल मलपि थाप डारिय हिय हलधर ॥  
 बलहु कुपि तस बेग मुठि मारिय मस्तक पर ॥  
 बलिमुख लोहित बमत धुजि वनि कुणाँ पस्यो धर ॥  
 जिहि परत अडि चूरन भये बहुरि तास सत १०० टूक करि ॥  
 सुँर सुँमन बुडि बिलसत सहज हलिय चलिय भुव भार हरि ॥८॥

दोहा

इम हरि १ बल २ लित्रोँ अखिल, अँवनी भार उतारि ॥  
 अँच्छोहिनि धृति १८ धृति १८ अँहन, माधव पुनि लिय मारि ॥९॥  
 अब आगम अँवसानके, देवन पठयाँ दूत ॥  
 चउ ४ भुज निज आलय बलहु, प्रभु जच्चतँ पुरहूत ॥२०॥  
 जगदीसहु दे सिक्ख जिहिँ, आवत हम इम अक्खि ॥  
 करत भये कुलवध जतन, रँचैक मेसँ न रक्खि ॥२१॥  
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयशराशौ वीतिहो

१ मय के पात्र रहल शस्त्र से २ डराया तोभी ४ बहुतों को मार कर बिखेर दिया अपने हाथ में ६ बडी शिला छोडी ७ मुसल से ॥ १७ ॥ ८ कूद कर ९ बलदेव ने भी क्रोध करके १० चन्द्र ११ लोही उगलता हुआ १२ मुरदा होकर १३ देवताओं की १४ फूलों की वर्षा को बिलसते हुए बलदेव भूमि के भार को हट कर चले ॥ १८ ॥ १९ सम्पूर्ण १६ भूमि का १७ अजोहिनी १८ अठारह दिन में १९ कृष्ण ने ॥ १९ ॥ २० अन्त समय का आगम होने पर २१ हँचा र हाथवाले अपने घर (स्वर्ग) चलो आप को २२ इन्द्र २३ मांगता है ॥ २० ॥ २४ कुछ भी २५ बाकी नहीं रख कर ॥ २१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण



त्र चाहुवाणधीरजीवितकालसमानाऽधिकरणाकश्रीकृष्णचरित्रे  
 मत्स्यकराजीनलिनीसहगमन-रणधीरपितृगृहिकोपविशन-ग्रामा-  
 रीसुविन्दो ४२।१ ब्रह्म-तदोरसराणाधीरिशानुघ्न ४३ प्रसवन-कौरव  
 राजसाम्बनिग्रहण-सङ्कर्षणसीरसामजपुरसमाकर्षण-सुरोधनस-  
 पत्नीकसाम्बसम्प्रेषण-नीलाम्बरद्विविदवानरनिपातन-देवदूतद्वार-  
 काऽऽगमन-प्रेषिततद्वासुदेवस्वकुलोत्सादनयत्नाऽऽरम्भणं चतुर्द-  
 शो १४ मयूखः ॥ १४ ॥ आदितः षट्पञ्चाशत्तमः ॥ ५६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पदी

इक १ समय द्विज अखिल गये तीरथ पिंडारक ॥

विश्वामित्र १ वसिष्ठ २ अत्रि ३ नारद ४ अर्धहारक ॥

दुर्वासा ५ भृगु ६ कण्व ७ अंगिरा ८ वामदेव ९ पुनि ॥

त्रित १० कश्यप ११ इत्यादि मिले चिद्वोध महामुनि ॥

जादवकुमार तहँ साम्बकों गर्भ समेत बनाय तिय ॥

पूछे मुनीस व्हेंहँ कहा साके यह सुनि उँन कहिय ॥ १ ॥

धीर के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् स-  
 मकालीन श्रीकृष्ण के चरित्र में मच्छक [वासुदेव बह्मवान] की राणी नलि-  
 नी का सती होना, रणधीर का पिता की गद्दी पर बैठना, ग्रामारी सुविन्दा  
 से विवाह करना, उस सुविन्दा के उर में रणधीर के पुत्र शत्रुघ्न का जन्म हो-  
 ना, कौरवों के राजा दुर्योधन का साम्ब को कैद करना, बलदेव का हल में  
 हस्तिनापुर को खींचना, दुर्योधन का स्त्री सहित साम्ब को भोजना, बलदे-  
 व का द्विविद वानर को मारना, देवताओं के दून का द्वारका में आना, उ-  
 स दूत को पीछा भेज कर कृष्ण का अपने कुल को नाश करने का उपाय  
 आरम्भ करने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १४ ॥ और आदि से क-  
 ष्पन मयूख हुए ॥ ५६ ॥

१ समय २ ठाँका में पिण्डारक नामा तीर्थ है वहाँ पर ३ पाप को मिटानेवा-  
 ले ४ मुनि विशेष ५ आत्मजानी यादवों के कुमारों में कृष्ण के पुत्र साम्ब को  
 गर्भवती स्त्री का ग्रांथ कराने मुनियों से पूछा कि इसके क्या होवेगा ६  
 उन मुनियों ने कहा.

## दोहा

याकै इक १ व्है हैं मुसल, जासौं जडुकुलनास ॥  
 इम कहि मुनि कोपित गये, परयो द्वारका त्रास ॥ २ ॥  
 सांब उदर सैन हुव मुसल, चूरन तास करास ॥  
 उग्रसेन जो कहि अखिल, दयो उदैधि पटकाय ॥ ३ ॥  
 रहयो खंड कहु भल्ल मित्तै, जव चूरन हुव नाहिं ॥  
 सोहु गिरायो सिंधु बिच, परयो सफर मुख माहिं ॥ ४ ॥  
 चूरनको एरक भयो, व्याध जरा वह मच्छ ॥  
 मारयो भल्ल कढ्यो सु निज, बान बनायो अच्छ ॥ ५ ॥  
 तंदनु बनै उतपात बहु, नगर द्वारका आय ॥  
 पठयो हरि बदरी बिपिन, उद्वको ससुभाय ॥ ६ ॥

## षट्पदी

सबन हितुं हरि कहिय होत उतपात महाभय ॥  
 निहचै जडुकुल नास रच्यो आगीमि काल रय ॥  
 पहुँचै सबहि प्रभास करै दानादि बिहित क्रम ॥  
 मुनि यह हरि १ बलै २ सहित गये तथैहि जहुँउत्तम ॥  
 करि न्हान १ दान २ केसव हुकम रचि आपान विनोदरस ॥  
 आसव असेस पीवनलगे वंस विद्यांतक कालबस ॥ ७ ॥

## दोहा

१ से २ समुद्र में उस मूसल का थोड़ा सा ३ टुकड़ा ४ तीर की  
 भाल के माफिक रह गया ५ वह टुकड़ा मच्छ के मुख में पड़ा ६  
 लोहे का चूर्ण जो समुद्र में डाला था उसका एरा (चिना गांठ का तृण वि-  
 शेष) हुआ और जो लोहे का टुकड़ा मच्छ के मुख में पड़ा था उसी मच्छ  
 को जरा नामक ७ व्याध (शिकारी) ने मारा उसके पेट से वह भाल ८  
 निकला सो अपने बाण के लगाया ९ जिस पीछे १० बड़िकाश्रम नामक वन  
 में ११ सब से १२ आनेवाले समय ने वेग से १३ द्वारका के समीप ही प्रभास ज-  
 ञ है वहाँ पर १४ उचित १५ बलदेव १६ वही (प्रभास क्षेत्र में) १७ यादवों में अ-  
 ष्ट पुरुष थे सो १८ मद्य पीने की सभा (मतवाल) १९ वंश का नाश करनेवाला.

पीवत पीवत परसपर, बढयो सबन अति बाद ॥

लगे उट्टि सखन लरन, मच्च्यो कलह प्रमाद ॥ ८ ॥

तुट्टे प्रहरन सकल तब, एरक बेहि उपारि ॥

कुलतैं कुल लगगे कटन, तेहु भये तरवारि ॥ ९ ॥

षट्पदी

कृतबर्मा १ सैनेय २ सांव ३ प्रद्युम्न ४ दानिसुत ५ ॥

अनिरुद्ध ६ रु पृथु ७ विपृथु ८ चारुधर्मा ९ चारुक १० जुत ॥

चारुदेष्णा ११ वृक १२ भानु १३ निसठ १४ उल्मुक १५ इत्यादिक ॥

एरक अंसनि चलाय कटे सब प्रचुर प्रमादिक ॥

गोविंद बहुत बरजे तदपि करत पच्छ यह बुद्धि करि ॥

संख्या अतीत जदव सकल मदवस गये प्रभास मरि ॥ १० ॥

दोहा

नहि मानत कन्हहु कुपित, तोरी एरक मुट्टि ॥

मुसल सोहु हुव लोहमय इम मारे वह उट्टि ॥ ११ ॥

तरु इक तर तालांक तब, करि उज्झित नरकार्य ॥

सेसरूप निकसे सितगुं, जलनिधि प्रविसे जाय ॥ १२ ॥

अंबुधि आयो लै अरघ, संमुह बंदन सत्य ॥

पाँके जलमग सेस इम, स्वनिलय पंत समत्य ॥ १३ ॥

षट्पदी

१ युद्ध २ उन्मत्तपन से ३ शस्त्र ५ वेही ४ एरे जो लोहे के चूर्ण से ऊ  
गे थे ६ वे ही एरे तरवार रूप होगये ७ एरा रूपा वज्र को चलाकर ८  
बहुत ९ मदिरा के मद से उन्मत्त १० कृष्ण ने ११ तोभी यह जाना कि ये  
१२ पक्षपात करते हैं १३ संख्या से बाहर (गिनती में नहीं आवैं जितने) स  
ब यादव नशा के वश होकर १४ प्रभास क्षेत्र में मर गये कृष्ण का कहना  
नहीं माना तब कृष्ण ने भी क्रोध करके एरा की सुट्टी तोड़ी वह लोहे का  
सूसल होगया जिसमे उठ कर बहुतों को मारा १५ एक वृक्ष के नीचे १६ ब  
लदेव ने मनुष्य के १७ जरीर को १८ छोड़ कर १९ स्वेत किरणोंवाले २० स  
मुद्र में जाकर २१ प्रवेग करगये २२ समुद्र २३ नमस्कार के साथ २४ इस स  
मुद्र के मार्ग से वह समर्थ २५ अपने घर को २६ पहुंचे

हलधर गमन निहारि कन्ह अक्खियँ दारूक कँह ॥

कुल १ बल २ निपतन कहहु पुरी जावहु पितरन पँह ॥

काय मैहु जोग करि अबहि तजिहौं अरु अर्जुन ॥

अहँ यँहँ तँस संग सबहि निकसहु खिल रहहु न ॥

द्वारकापुरहिँ बिनु मम निलय अंबुधि बोरहिँ फैलि इम ॥

जयँसौहु कहहु खिल मम जनन पालहु कौरव जनक जिम ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

दारूक पठयो द्वारका, श्रीहरि इम समुभाय ॥

अचच्युत किन्न बिचार अब, करन त्याग नर कार्य ॥ १५ ॥

माधवको जैत्राम रथ, हय सैव्यादि४समेत ॥

पाँथोनिधि बिच गो प्रबिसि, पहुँच्यो निजहि निकेत ॥ १६ ॥

गदा१चक्र२सौरंग३पुनि, नंदक४संख५निखंग६ ॥

हरिहिँ प्रदक्खिन करि गये, व्हँ रँवि मग सब संग ॥ १७ ॥

रँनतँ इक१दारूक बच्यो, पुर गो छोरि प्रभास ॥

उग्रसेन वसुदेवसौं, सब अँकख्यो कुलनास ॥ १८ ॥

करि पँय पर पय कन्हहू, बैठे ब्रह्म विलीन ॥

जहँ लुब्धकँ आयो जैरा, मृगमुख गिनि पँय पीन ॥ १९ ॥

१ बलदेव का जाना देख कर कृष्ण ने अपने सारथी ३ दारूक से २ कहा कि द्वारका पुरी में जाकर ६ माता पिता से ४ बलदेव और सब कुल का ५ नाश कहो मैं भी योगविद्या से शरीर को ७ उस अर्जुन के साथ ८ बाकी मत रहना ९ मेरे मकान के बिना १० समुद्र डुबो देगा ११ अर्जुन से कहना कि १२ बाकी के मेरे १३ श्लोको को १४ कौरवों के पिता (धृतराष्ट्र) का पालन किया इस प्रकार पालना १५ कृष्ण ने १६ नरदेह का त्याग करने का कृष्ण का १७ जैत्राम नाम का रथ १८ सैव्य आदि चारों घोड़ों सहित १९ समुद्र में प्रवेश कर गया २० अपने घर (स्वर्ग) में पहुँचा २१ शार्ङ्ग धनुष २२ नन्दक नाम खड्ग २३ भाथा २४ आकाश मार्ग से २५ उस युद्ध से २६ प्रभास क्षेत्र को छोड़ कर पुर में गया २७ कहा २८ कृष्ण भी पग पर पग रख कर २९ ब्रह्म में लीन होकर बैठे जहाँ पर ३० जरा नामी ३१ शिकारी आया जिसने कृष्ण के पुष्ट ३२ पग को मृग का मुख जाना।

कढ्यो सँफर सन भल्ल जो, सोहि चलायो व्याध ॥  
 पंयतल बिच प्रभुको लग्यो, ईहिँ मन्न्यौ अपराध ॥ २० ॥  
 जँरा न सोचहु हरि कह्यो, हुव जानै विनु एह ॥  
 जावहु चौर विमान चढि, भुग्गहु स्वर्ग सनेह ॥ २१ ॥  
 आयो तबहि विमान तहँ, लिन्नौ व्याध चढाय ॥  
 बुद्धत सुमँ दुंदुभि बजत, पहुँच्यो दिवँ मुद पाय ॥ २२ ॥  
 हरिहु होय निज रूप मय, छोर्यो मानव देह ॥  
 द्वारवती इत अर्जुनहु, आय सुन्यौ सब एह ॥ २३ ॥

॥ षट्पदी ॥

सवनकोहि सिर बज आय दारुक पटकिय जब ॥  
 उग्रसेन बसुदेव आदि जदुवृद्ध जरे तब ॥  
 रोहिनी १ रु देवक सुता २ हु हुव भस्म हुतासन ॥  
 पारथ सहित प्रभास गये जदुवंस जुवँति जन ॥  
 रुकमिनी प्रमुख पटरांगिनी जरी आठ ८ हरिदेहँ जुत ॥  
 रेवती राम विग्रह सहित अनल प्रवेशिय निखिलँ नुत ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

सोचि विजय दाहे सकल, प्रेत करम विधि ठानि ॥  
 जान्यौ अब सूनौ जगत, अति बिराग मन आनि ॥ २५ ॥  
 पारिजात पहुँच्यो त्रिदिवँ, सभा सुधर्मा २ जुष्ट ॥

१ मच्छ के पेट में से भाल ( तीर का फल ) निकला था २ कृष्ण की पगतली में लगा इसको ३ उस जरा नामक व्याध ने अपमा अपराध माना ४ हे जरा ५ सुन्दर ६ पुष्प वर्षते हुए नगारे बजते हुए आनन्द पाकर ७ स्वर्ग में पहुँचा ८ द्वारका में ९ बलदेव की माता १० देवकी ( कृष्ण की माता ) ११ अग्नि में १२ अर्जुन के साथ प्रभास क्षेत्र में यादवों की १३ शिवों १४ आदि १५ पटराणियों १६ कृष्ण के देह के साथ आठों जल गई १७ बलदेव की राणी रेवती बलदेव के १८ शरीर के साथ १९ अग्नि में प्रवेश कर गई २० सब से २१ स्तुतियोग्य २२ कल्पवृक्ष २३ स्वर्ग में २४ प्रीति के साथ सुधर्मा नामक देवसभा भी गई

[ अर्जुन हास्तिनापुर प्रयाण ] तृतीय राशि—चन्द्रदशमयुग ( ६३१ )

तकत भुव कोसव तजत, दब्बी कलिजुग दुष्ट ॥ २६ ॥

एकतनय अनिरुद्धको, बच्यो बज्र अभिधान ॥

ताजुत सब सुद्धांत लै, पत्थ कियउ प्रस्थान ॥ २७ ॥

सत उत्तर सोलह सहस्र १६१००, हरि ललना लहि संग ॥

निकस्यो अर्जुन बज्र जुत, कसि असिचापनिखंग ॥ २८ ॥

इतरहु पुरजन कहुँ सब, रँह्यो पंचनद आय ॥

प्रभु गृह बिनु सागर पुरी, दिन्नी अखिल हुवाय ॥ २९ ॥

तसकर तहँ सुंदर तियन, जयँ लै जावत जानि ॥

नारिन वसनन २ भूखनन ३, लग्यो लुटन आनि ॥ ३० ॥

जीव लहहु बुल्लयो बिजय, मरहु न जावहु मूढ ॥

सुँ सुनि तर्रजि बुल्ले हासित, अतुल दर्प आरुढ ॥ ३१ ॥

॥ षट्पदी ॥

कलह जयद्रथ १ करन २ बिंद ३ भगदत्त ४ महाव्रत ५ ॥

मारि बच्यो अभिमान मुँधा अर्जुन तावँक मत ॥

ग्राम्य जननको जोर कवहु न लख्यो कुंतीसुत ॥

टारि जावहु नहि टारि अर्धचंद्रकँ दैहँ हुँत ॥

किय सज्ज्य पत्थ गांडिव धनुख निठि निठि सो पै चढ्यो ॥

पुनि सिथिल भयो अरु अखँहू न कछु फुर्यो विस्मय बच्यो ॥ ३२ ॥

१ कृष्ण के इस प्रहम को छोड़ते ही दुष्ट कलियुग, ताक रहा था जिसने दया ली २ वज्र नामवाला अनिरुद्ध का एक पुत्र बचा ३ उस वज्र सहित ४ जनाने को लेकर ५ अर्जुन ने दे गमन किया ७ कृष्ण की स्त्रियों को = भाया ८ और भी १० निका ल कर ११ अर्जुन पंचनद में आकर रहा १२ सब १३ चोरों ने १४ अर्जुन को ले जाता हुआ जानकर १५ वस्त्रों को १६ अर्जुन ने कहा कि १७ सो सुनकर १८ धमका कर १९ हसते हुए बोले २० बहु २१ घमंड पर २२ चढ़े हुए ॥ हे अर्जुन २४ तेरे विचार में यह २५ वृथा (भूठ) अभिमान बढ़ गया है, हे कुंतीपुत्र ग्रामीण लोगों का बल तुमने कभी नहीं देखा है इस कारण से टल जाओ २५ नहीं तो २७ गलदूपा (अंगुष्ठ और तर्जनी अंगुली को फैलाने से अर्धचन्द्राकार हो जाता है वह गले में देकर २८ शीघ्र २९ दाल देवोंगे २९ अर्जुन ने गांडीव धनुष को ज्वा (प्रत्यंचा) सहित किया ३० परन्तु वह धनुष ३१ अस्त्र स्मरण नहीं

दोहा

नैकहु\*जयके सरनतैं, भिदे न उनके अंग ॥  
 गोपिन तिय गोविंदकी, भुंगी करि व्रतभंग ॥ ३३ ॥  
 बज्रहिं लैं रु बिगारि मुख, अर्जुन मथुरा आय ॥  
 ताँकी गहिय ताहिं धरि, गो गजदंग सिटाय ॥ ३४ ॥  
 व्यास मिले मग बिजयकाँ, बुल्ले क्यों गत रोचि ॥  
 पथैं कह्यो जदुनास पुनि, स्त्रीजन लुटन सोचि ॥ ३५ ॥  
 कालपुरुषको यहहि क्रम, विजयहिं अखिबैं व्यास ॥  
 लुट्टे मिच्छैं जुवातिजन, इक तहैं कारन आसैं ॥ ३६ ॥  
 सुवरनगिरि पर इक समय, करि असुरन बधकाज ॥  
 सुन महा उच्छव सज्यो, संजुरि विविध समाज ॥ ३७ ॥  
 मग विच अष्टावक्र मुनि, जहैं अच्छरिगन जात ॥  
 लखे सँलिल थित कंठ लग, ब्रह्मसमाधि बनात ॥ ३८ ॥  
 अतिआदर मुनिकी प्रैनति, करी सबन कर जोरि ॥  
 व्है प्रसन्न मंगहु कह्यो, वर कछु बिप्र बँहोरि ॥ ३९ ॥  
 तिलोत्तमा १ रंभा २ प्रमुख, कह्यो भयो जु प्रसाद ॥  
 सब वर लैबो सोहि है, लैबो इतर प्रसाद ॥ ४० ॥  
 अपर किते अच्छरिगनन, मंगे हरि भतारैं ॥

\*अर्जुन के १ चारों के ३ कृष्ण की स्त्रियों को ३ भोगी ४ पातिव्रत्य व्रत भंग करे ५ वज्र की गद्दी पर ६ वज्र को ७ हस्तिनापुर गया ८ अर्जुन को मार्ग में वेदव्यास मिले ९ गई हुई क्रान्ति से १० अर्जुन ने ११ यादवों का नाश अर्जुन को व्यास ने १२ कहा कि कालपुरुष (यमसहार्द) का यही क्रम है कि जो जन्म लेता है वह मरता है और जो १३ म्लेच्छों (नीच लोगों) ने स्त्रीजनों को लूटा इसमें एक कारण १४ है १५ सुमेरु पर्वत पर १६ देवताओं ने १७ एकत्रित होकर मार्ग में अष्टावक्र मुनि १८ जल में ब्रह्मसमाधि धनारहेधे वहाँ अप्सराओं का गण गया जिन्होंने बड़े आदर से मुनि से विशेष १९ नम्रता करी २० फिर ब्राह्मण ने कहा कि कोई वर मांगो २१ आदि ने कहा कि आप की २२ प्रसन्नता हुई सो ही सब वर लेना है इस प्रसन्नता को छोड़कर २३ और ले १ है सो २४ भूल है २५ भतारै

अप्सराओंको अष्टावक्रका शाप ] तृतीयराशि—पञ्चदशमयूख ( ६३३ )

सो दै निकसे नीरसों, अष्टावक्र उदार ॥ ४१ ॥

तबहि अष्टधा बँक तनु, निरखि हसी दिवनाँरि ॥

दयो साप मुनि कुपिँ द्विज, निज अपमान निहारि ॥ ४२ ॥

पाय तुमहु गोविंद पति, भोग भुग्नि हरि सत्थ ॥

वहैहो मिच्छन भोग्य पुनि, परि चोरनके हत्थ ॥ ४३ ॥

बज्र परत यह नम्प्र बनि, परी सकल मुनि पाय ॥

अखिखय तब नर्वनीत हिय, बलि बसिहो दिवँ आय ॥ ४४ ॥

इम द्विजवरके सापतै, जित्ति तोहि आँभीर ॥

लै हरि नारिन लूट करि, गये विचारहु वीर ॥ ४५ ॥

अर्जुन यह सुनि इम नगर, जँवी विकलमन जाय ॥

रोवत जदुकुल नास मुखँ, दिन्नी सकल सुनाय ॥ ४६ ॥

अपि परिच्छितकों अखिल, पांडव राज्य प्रवीन ॥

गये विपिनँ हरिभक्ति गाहि, भये छोरि भँव लीन ॥ ४७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयराशौ वीति  
होत्रचहुवागरागधीरजीवितसमयसमानाऽधिकरणाकश्रीकृष्णच-  
रित्रे यदुकुमारदुर्वासःप्रमुखमुनिवञ्चनतयदुकुलोत्सादशापक्षेपणा  
साम्बोदरमुसलपतनसिन्धुक्षिप्ततच्चूणैरकोद्वनशल्लयजराविशि  
खन्यसनप्रभासाऽऽपानस्थितयदुकुलक्षयनशेषरूपवलभद्रस्वलोक

३आठ जगह से देवाँका शरीर ४स्वर्ग की स्त्रियाँ ५क्रोध करके अष्टावक्रने कहा  
कि तुम देविष्णु को पति पाकर ७फिर भील आदि नीच लोगों के भोग्य होओ  
गी वचन स्वीय यह वज्र पड़ते ही ८सकल के समान कोमल हृदयवाले मुनि  
ने कहा कि ९फिर १०स्वर्ग में इस कारण से ११ब्राह्मण के १२भील लोग १३वेग  
सहित १४यादवों के कुल के नाश आदि (आदि पद से स्त्रियों का लूटना  
जानो) परीक्षित को १५ सम्पूर्ण १५ देकर १७ वन में १८ संसार को छोड़कर  
विष्णु में लीन होगये ॥ ४७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा  
रागधीर के जीवित समय के समान समय वाले श्रीकृष्ण के चरित्र में या  
दवों के कुमारों का दुर्वास आदि मुनियों को ठगना, उन मुनियों का यदुकु  
ल के नाश का आप देना, साम्ब के उर से मुसल का पड़ना, समुद्र में डाले



गमन-दारुकद्वारकाप्रविशनजरावाणबिद्धचरणतत्प्रेषितशस्त्रादिश्री-  
कृष्णस्वपस्त्यप्रस्थानकलियुगभूतलस्पर्शनश्रुतकुलनाशोग्रसेन १ व  
सुदेवश्वेदकी १ रोहिणी २ प्रमुखयदुवृद्धपावकप्रविशनरुक्मिणी १ रेव  
ती २ प्रमुखस्त्रीजनसहगमनकृतसर्वसंस्कारधनञ्जयसवज्ज १ शुद्धांत २  
पौरजननिष्कासनसिन्धुद्वारकाप्लावनचौराभीरप्रभुपरिग्रहलुण्टन-  
मथुराराज्यसमभिषिक्तवज्रव्यासबोधिवृत्तान्तबीभत्सुगजसाव्हयनग  
रगमन-परीक्षिताऽर्पितराज्यपाण्डवपरिव्रजनं पञ्चदशो १५ मयूखः ॥  
॥ १५ ॥ आदितः सप्तपञ्चाशत्तमः ॥ ५७ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भार हरयो सब भुम्भिको, इम हरि लै अवतार ॥

वासुदेव ४१ मारयो विदित, कलह कन्है जयकार ॥ १ ॥

वासुदेव नैलिनी ४१।१ तनय, भयो नृपति रनधीर ॥

बज्र भयो अनिरुद्ध सुत, मथुरा पालक बीर ॥ २ ॥

भूप परिच्छित राज्य इत, करत हस्तिपुर धाम ॥

हुए उनके कृष्ण से एरा का होना, बाकी रहे हुए शस्त्र का जरा नामी व्या  
ध के बाण में ठहरना (लगना) प्रभास तीर्थ में मद्य पीने की गोष्ठी में बैठे  
हुए यादवों के कुल का नाश होना, शेष नाग के रूप से बलदेव का अपने  
लोक में जाना, दारुक सारथी का द्वारका में जाना, जरा नामक व्याध के  
याण से चरण का विधना, कृष्ण के भेजे हुए शस्त्र आदि और श्रीकृष्ण का  
अपने घर (गोलोक) जाना, कलियुग का भूमि को स्पर्श करना, कुल के ना  
श को सुनकर उग्रसेन चसुदेव देवकी रोहिणी आदि यदुवृद्धों का अग्नि में  
प्रवेश करना, रुक्मिणी रेवती आदि स्त्रियों का सती होना, सब का अग्नि  
संस्कार करके अर्जुन का वज्र सहित जनाना और पुर के लोगों को निकाल  
ना, समुद्र का द्वारका को डुबोना, चौर भीलों का कृष्ण के निज के लोगों  
को लूटना, मथुरा के राज्य पर वज्र का अभिप्रेक होना, व्यास के समभाये  
हुए वृत्तान्त से अर्जुन का हस्तिनापुर जाना, परीक्षित को राज्य देकर पाण्डवों के  
जाने का पन्द्रहवाँ मयूख समाप्त हुआ १५ और आदि से सत्तावन मयूख हुए १५७।  
१-वासुदेव चहुवाण को २ युद्ध में जय करने वाले कृष्ण ने ३ नलिनी  
नामक स्त्री में वासुदेव चहुवाण से ४ हरितनापुर में

नगर अयोध्या इत नृपति, वृहतखत्र\* ३ जिहि नाम ॥३॥  
 मगधराज सोमावि ४ इत, देवगिरीस अभंग ॥  
 इंद्रकेतु ५ ग्रामार इत, तपत अवंतिय दंग ॥ ४ ॥  
 धृष्टकेतु ६ सोमक नृपति, इत पंचाल अधीस ॥  
 एक काल इत्यादि छत, हुव रनधीर महीप ॥ ५ ॥  
 इक समय अभिमन्यु सुत, गो अभिमंत आखेट ॥  
 तांडित गौ जुग २ उग्र तैंह, भयो सूद इक भेट ॥ ६ ॥  
 बरज्यो नृप तब तिहि बंद्यो, आयो मै कालि अंत्य ॥  
 कट्टि धर्मपय करत हूँ, सतैंत अधर्म समंत्य ॥ ७ ॥  
 हैं हम जोलग नृप कह्यो, तोलग आवहु नाहिं ॥  
 कछुतो मोहिहु कलि कह्यो, बखसहु पकरहु बाहिं ॥ ८ ॥  
 तबहि द्यूत १ सूना २ सुंरा ३, स्त्री ४ कनक ५ ए पंच ५ ॥  
 कलिकौ दिन्नै रहनकौ, गीति काल गिन रंच ॥ ९ ॥

### षट्पदी

यह मुनि नृपकै छत्र कनकमय तैंह कलियुग रहि,  
 करतभयो निज अमल सदा नृप संग रहन चहि ॥  
 इक १ दिन नृप जलकाम फिरत बन लहि मुनि आश्रम ॥  
 मंग्यो जल तब द्विज समाधिथित कछु न कह्यो क्रम ॥  
 मृत इक १ भुजंग नृप कुंप्पि तब मुनि गल डारि प्रयान किया ॥  
 तस बालै नृपहि सत्तम ७ दिवस तच्छैक दंसैन साप दिया ॥१०॥

\*वृहतखत्र? अवंतीपुर में एक समय में इतनों के होते हुए शरणधीर चहुवाण रा  
 जा हुआ ४ अपनी ही सम्मति से अथवा इच्छा से ५ शिकार ६ दो गौवां को  
 ७ पीटा हुआ क्रूर कर्म करनेवाला ८ उसने कहा ९ कलियुग १० यहाँ पर  
 धर्म के पगों को काटकर अधर्म को ?? निरन्तर १२ समर्थ करताहूँ १३ जू-  
 या १४ हिंसा १५ मद्य १६ और १७ सोना (स्वर्ण) १८ राजा के सोने का छ-  
 त्र था जिस में १९ जल की कामना से २० उत्तर देने का जो क्रम था वह  
 कुछ नहीं कहा २१ राजा ने क्रोध करके एक मरा हुआ सर्प २२ उस २३ उस  
 मुनि के बालक ने राजा को सातवें दिन २४ तच्छैक नासी सर्प २५ उसंगा

## दोहा

नृप यह सुनि सोच्यो \*निपट, +पै सु अवाधि दिन पाय ॥  
 तच्छंक दैव निदेस डमि, कियउ भस्म \*तस काय ॥११॥  
 भये परिच्छितके \*\*तनय, जनमेजय १ श्रुतसेन २ ॥  
 उग्रसेन३ अभिधान पुनि, भीमसेन४ चउ४मेंन ॥ १२ ॥  
 भयो तनय रनधीरकै, सो सत्रुघ्न४३सनाम ॥  
 इंद्रकेतु भानेज यह, अतिबल रन उद्दाम ॥ १३ ॥  
 सुता मगध सोमाविकी, कलना४३१नाम अनूप ॥  
 जिति स्वयंवर जो लई, परनि सत्रुघन४३ भप ॥ १४ ॥  
 जनमेजय इत जनकको, सुनि तच्छकसौ नास ॥  
 रच्यो कुपित अहिसत्र तँहँ, बरन्यो भारत व्यास ॥ १५ ॥  
 सु सुनि सूत नैमिष गयो, जानत भारत जानि ॥  
 पूछ्यो मुनि सौनक प्रमुख, लग्गो कहन प्रतानि ॥ १६ ॥

॥ पटपदी ॥

छेत नैमिसारण्य विप्र सौनक कुलपति तँहँ ॥  
 भृगुकुलभँव मख रचत सैमा द्वादस १२ व्रत लै तँहँ ॥  
 बडे ब्रह्मरूपि तृंद सकल राजत जिहि अवसर ॥  
 उग्रश्रवा अभिधान सूत उन ढिग आयो वर ॥  
 सब मुनिन तास आदर रचिय दिय आसन सनमान जुत ॥  
 कल्ल्यान पुच्छि पुच्छिय बहुरि किततँ आयउ सूतसुत ॥१७॥  
 सुनत सूत उच्चरिय नाग होमिय जनमेजय ॥  
 व्यास रचित सुनि तत्थ पुण्य भारत कथान चैय ॥

यह आप दिया \* बहुत + परन्तु ÷ दैव की आज्ञा से \* उस राजा प-  
 रीक्षित के शरीर को \*\* पुत्र १ चारों मदन अर्थात् कामदेव रूप  
 २ पुत्र ३ युद्ध में निरंकुश ४ अपने पिता परीक्षित का ५ तक्षक सर्प से ६ स-  
 र्पयज्ञ ७ उस महाभारत को सुनकर सुत पौराणिक नैमिषारण्य क्षेत्र में ग-  
 या ८ शौनक आदि ९ विस्तार करके १० भृगुकुल में जन्म लेकर ११ चारह  
 वर्ष का १२ शोभायमान १३ उग्रश्रवा नामक अष्ट सूत १४ कथाओं का १५ समूह

अरु तीरथ आयतन बहुत परसत न्हावत इत ॥

लखि समंतपंचक सनाम छेत्रहु सुरसेवित ॥

जिहि ठाम घोर अगै भयउ कौरव पांडव रन अमित ॥

तिहि तीर्थ होय आयो इहाँ ब्रह्मऋषिनके दरस हित ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्थ होहु सब आसनन, सावधान द्विजराज ॥

अब तुम पुछहु सो कहौ, सुंदर कथन समाज ॥ १९ ॥

तब मुनि बोले सूत जो, भाख्यो व्यास पुरान ॥

सुरन मुनिन पूज्यो सु सुनि, कहि विचित्र आख्यान ॥ २० ॥

जाके सुंदर पर्वपद, अर्थन्याय उद्दाम ॥

वेदतत्त्व भूखन रुचिर, अघहर भारत नाम ॥ २१ ॥

जनमेजय नृपसौं कही, बैसंपायन विप्र ॥

सोहि व्यासकी संहिता, सुनी चहत हम छिप्र ॥ २२ ॥

इति श्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ बी-  
तिहोतचहुवाणारणधीरजीवितसमयसमानाऽधिकरणकवज्रपरी-  
क्षितारऽऽदिनृपोद्देशनकलिकुमतिपरीक्षितदनुचितकरणबालद्विजशा-  
पतक्षकतद्वशनजनमेजयकौरवप्रभूभवनरणधीराऽनन्तरशत्रुघ्नपौण्ड्र-  
दिराज्यसमासादनमगधेशसुताकलनोद्बहनसमारब्धसर्पसत्रमहाभा

१ तीर्थों का घर २ समन्तपञ्चक नाम क्षेत्र ३ देवताओं से से-  
वन किया हुआ ४ अत्यन्त ५ कथाओं का समूह ६ सूत पौराणिक से ७  
कथा जिस भारत के अठारह पर्व और पद तो सुन्दर और अर्थ का रखना  
८ गंभीर है, वेद का सार है सो ही उसका सुन्दर भूषण है और पाप को  
हरनेवाला भारत नाम है ९ शीघ्र

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण रणधीर के जीवित समय के बराबर है समय जिनका ऐसे वज्र और  
परीक्षित आदि राजाओं का कथन, कलियुग की खोटी बुद्धि से परीक्षित  
का अनुचित करना, बाल ब्राह्मण का आप देना, तक्षक नाग का प-  
रीक्षित को डसना, जनमेजय का कौरवों का पति होना, रणधीर के पीछे श-  
त्रुघ्न को पौण्ड्र आदि देशों का प्राप्त होना, मगध के राजा की पुत्री कलना

रतश्रवणश्रुततल्लोमहर्षणि नैमिषाऽरण्यदीक्षितशौनकादिभारतश्रु-  
श्रूषणां षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ आदितोऽष्टपञ्चाशत्तमः ॥ ५८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

### हरिगीतम्

तव सूत अचरि मंगलादि कहंत भारतकी कथा,  
जब लोक अप्रभ तामसाऽऽवृत हो तहाँ सुनिये जथा ॥  
गुरु अंड हुव ब्रह्मंड नामक बीज अव्यय सर्गको,  
जुग आदि दिव्य निमित्त जानहु मूल प्राकृत बर्गको ॥ १ ॥  
ताँ माँहिँ सुनियत ब्रह्मः सत्य सनातनाऽभिध ज्योति जो,  
अव्यक्त अद्भुत ओ अचिंत्य समारूप सुच्छम हेतु सो ॥  
तसमाँत जो प्रकटयो प्रजेसँ हिरण्यगर्भः सु जानिये,  
ब्रह्मा१ रु मुरगुर२ रुद्र३ ए तसमाँत उद्गत मानिये ॥ २ ॥  
परमेष्टि१ मनु२ तिमही प्रचेतस३ दक्ष४ ए प्रकटी भये,  
हुव सत्त७ दक्ष तनूँज नाम तँदीय हे नृप ए ठये ॥  
तम१ अंगिरा२ विक्रीत३ कर्दम४ अश्व५ दम६ अरु क्रोध७ये,

से विवाह करना, सर्पयज्ञ का आरंभ होना, महाभारत का सुनना, उस म-  
हाभारत को सुनकर लोमहर्षण नामक सूत के पुत्र उग्रश्रवा का नैमिषारण्य  
में यज्ञ की दीक्षा लिये हुए शौनक आदि से भारत की प्रशंसा करने का सो-  
लहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥ और आदि से अठावन मयूख हुए ॥ ५८ ॥

तब सूत पौराणिक १ मंगलाचरण आदि करके भारत की कथा कहने  
लगा कि जिस समय लोक २ विना क्रान्ति ३ तमो गुण से घिरा हुआ था  
सो सुनो । ब्रह्माण्ड नामक एक षड् अंडा पैदा हुआ जो ५ परमेश्वर की  
६ सृष्टि का ७ कारण और दिव्य युग आदि का भी कारण और ८ प्रकृति  
(जगत् का कारण) का मूल है उसी ब्रह्माण्ड में सत्य, सनातन ९ नामवाले ब्र-  
ह्म को ज्योति स्वरूप सुनते हैं, वह ब्रह्म १० दीखने में नहीं आवे ऐसा अद्भुत  
११ त्रिचार में नहीं आवे ऐसा १२ इन नामोंवाला सब का सूक्ष्म कारण है १३  
उस ब्रह्म से जो १४ प्रजा का पति प्रकट हुआ उसका नाम हिरण्यगर्भ जानो  
उसीसे ब्रह्मा, बृहस्पति और इन्द्र १५ पैदा हुए जिनो फिर कमल से पैदा  
होनेवाला १६ ब्रह्मा १७ दक्ष १८ दक्ष के सात पुत्र हुए १९ उनके नाम ये हुए

पुनि मनु१ मरीचक१ आदि११७ सृष्टिप एकबीस२ सुबोधये । ३ ।  
 परमाख्य पुरुष१ जु अप्रमेय अनादि आत्मक सोधिये,  
 आदित्य१२ विश्वेदेव१३ पुनि वसु८ दस२ जन्म प्रबोधिये ॥  
 बलि साध्य१२ पितर१ पिशाच२ गुह्यक३ दच्छ४ त्योंहु वशिष्ठ जे,  
 बुध ब्रह्मरूपि१ अरु राजऋषि२ गुनगंज पूर्ण प्रविष्ट जे ॥ १४ ॥  
 नमै१ वातै२ तेजै३ रु नीर४ भूप हुव अंतरिच्छ१ दिसा२ जथा,  
 हायनै१ अयन२ ऋतु३ मास४ पैच्छ५ रु द्यौंस६ रत्ति७ भये तथा ॥  
 इम ओरहु खिल सर्व सम्यक लोकसाक्षिक होत भो,  
 दीसै जु थावर१ जंगमा२ऽऽदिक सो असेस उदोत भो ॥ ५ ॥  
 बहुर्यो जुगच्छयमै यहै जग पक्षि पावत नासकों,  
 मधै अंत ज्यों जव ऊँजमै पुनि तेहि लेत प्रकासकों ॥  
 निजकालमै ऋतुचिन्ह ज्यों पुनि होत जग यह जानिये,  
 अरघट्ट घट्ट जिम सर्वभाव१ अभाव२ संतत मानिये ॥ ६ ॥  
 यह यों अनादि अनंतभूत विनासचक्र१ भ्रम्यो रहै,  
 यापै चढे सब जौनि जे चउरासि लख ८४००००० तिन्हें गहैं ॥

१ प्रजापति २ अष्ट ज्ञानवाले ३ परम पुरुष नामवाला ४ जिसका प्र-  
 भाव जानने में नहीं आता ऐसे अनादि (परमेश्वर) के ५ आत्मा से पारह  
 आदित्य, तेरह विश्वेदेव, आठ वसु, दो अश्विनीकुमारों का जन्म जा-  
 नो, फिर पारह साध्यदेव ७ आत्मज्ञानी ८ गुणों के समूह में ९ प्रवेश  
 करनेवाले इसीप्रकार १० आकाश ११ पवन १२ अग्नि, जल और भूमि हुए  
 १३ नक्षत्र मंडल स्थल १४ वर्ष १५ पक्ष १६ बाकी के १७ अष्ट प्रकार से १८ सूर्य से अथवा  
 लोक ही है साक्षी जिसका ऐसे परमेश्वर से १९ स्थावर और जड़म आदि  
 समूह प्रकाशित हुए फिर २० प्रलय में २१ चैत्र मास में जब (धान्यविशेष)  
 का अन्न होकर २२ कार्तिक में फिर प्रकाश होता है और अपने अपने २३ स-  
 मय में अनुओं के २४ चिन्ह फिर पीछे होजाते हैं इसीप्रकार प्रलय हुए पीछे  
 यह संसार पीछा उत्पन्न होता है जिसप्रकार २५ रहैठ (कूप से पानी निका-  
 श के का पंथ) का २६ घट (पात्रविशेष) पारंपार बाहर आकर भीतर जाता  
 है ऐसे ही इस संसार का २७ अनिरन्तर होना और मिटना मानो २८ संसार के  
 शक्तियों का विनाश करने का शक्त किरता रहता है इस शक्त पर जो च-  
 रजाया है वह औरसी लाव २९ योनियों को पाता है ये नरलोक की योनियां  
 नहीं, अब हमीस हजार तीनसौ तीस प्रकार की

तंतीस संख्यसहस्र३३०००सततेतीस३३००अरुतेतीस३३ए ३६३३३  
 संछेप लच्छन सुरनकी इम सैर्ग सम्मिति दीसये ॥ ७ ॥  
 दिवंपुत्र जानहु वृहदभानु१ रु चच्छु२ आत्मा३ नामतै,  
 बॅलि विभावसु४ सविता५ ऋचीक६रु अर्क७ पूरनधर्मतै ॥  
 रवि८ भानु९ आसावह१० इतेक विवस्वदात्मज धारिये,  
 इनमौहिं वरं मनु१ तास आत्मज देवभ्राट२ विचारिये ॥ ८ ॥  
 सुभ्राट३ तास तनूज तास तनूजहू अबैचीन ए,  
 दसज्योति४१अरु सतज्योति४२नाम सहस्रज्योति४३हु तीन३ए ॥  
 दसज्योतिकेर हजार दस१००००सतज्योतिकेर हजार सो १०००००  
 रु सहस्रज्योतिके तनूय दसलख१००००००संचय फौर सो १९  
 तिनसौहि जदु१ कुरु२ भरत३ अन्वय लोक अंतर ख्यांत है,  
 इक्ष्वाकु४ के रु जजाति५ के तिनसौहि ए कुलजात है ॥  
 कुल यों सु विस्तर भूत सैर्ग अनेक ओरहु जानिये,  
 रवि मूल एह त्रिलोक यों रविमें चराऽचैर मानिये ॥ १० ॥  
 तिनही रहस्य त्रि३धा रु ए सब ओहि भूतन धाम जे,  
 विज्ञान१ जुत बॅलि वेद२ जोग३ रु धर्म४ अर्थ५ रु काम६ जे ॥  
 त्रैवर्गसास्त्र१ रु लौकिकजत्रिकै२ सर्व व्यास विचारिकै,  
 दिय व्याससों रु समौससों यह भरतकुल बिसतरिकै ॥ ११ ॥  
 इतिहास१श्रुति२व्याख्या३समेत सु ग्रंथ भारत नामही ॥

२देवताओं की सृष्टि का ४ प्रमाण है जिनका स्वरूप संछेप से जानो ५स्वर्ग के पुत्रों (देवताओं) के नाम बताते हैं ६ चक्षु ७ पुनि ८ लोक को पूर्ण करनेवाले ९ ये सूर्य के पुत्र जानो १० श्रेष्ठ ११ पुत्र १२ पुत्र १३ देखो १४ पुत्र १५ समूह १६ वंश १७ लोक में प्रसिद्ध है १८ पैदा हुए हैं १९ फैल कर २० प्राणियों की सृष्टि २१ इस त्रिलोकी का मूल सूर्य है २२ जड़म और स्थावर (जड़, चेतन) इसी सूर्य में मानो इन की ही २४ तीन प्रकार की [ब्रह्मा, विष्णु, महेश. अथवा मनसा, वाचा, कर्मणा] २३ उपासना है और ये [सूर्य] प्राणीमात्र के धाम २५ हैं वेदव्यास ने विचार के साथ २६ब्रह्मज्ञान साहित्य २७पुनि २८अर्थ, धर्म, काम २९लौकिक यात्रा [लोकव्यवहारमें चटना] और ३० विस्तार से और ३१ संछेप से इस भरतकुल को फैला दिया ३२ अर्थ

विरच्यो महाफल बादरायन सर्वगुणगनधामही ॥

जानैँ पढैँ जुँ सुँ सर्वकोविद पंडिताधिपती बनैँ ॥

कितनैँ पढैँ मनुआदि १ आस्तिक आदि २ भारतके मनैँ ॥१२॥

कितनैँ उपरिचरसौँ ३ कहैँ इम व्यास भारत बिस्तरचो ॥

पर मिस्यपाठन कोन रीति बनैँ विचार यहै धरचो ॥

सु बिचार जानि मरालग्रामन व्यास आश्रमपैँ गये ॥

अरजो तिन्हैँ कर जोरि पूजि रु व्यास यौँ करते भये ॥ १३ ॥

प्रभु काव्यभारतमैँ रच्यो न परंतु लेखक तास को ॥

बिनु लेख जो बिथरैँ न लेखहि एक हेतु प्रकासको ॥

जामाहिँ सांगैँ १ रहस्य २ श्रुति १ इतिहास २ और पुरान ३ है ॥

अरु भूत १ भव्य २ भविष्य ३ विस्तृत तीन ३ कालन ज्ञान है ॥ १४ ॥

मगनौँ १ जरा २ भय ३ व्याधि ४ भावैँ १ अभावैँ २ निश्चय जुक्तही ॥

रु पुरान अर्थ १ रु वर्ण १ आश्रम २ धर्म ३ लच्छनैँ ता कही ॥

तप १ ब्रह्मचर्य २ मही ३ रु रवि ४ ससि ५ तारका ६ जुग ७ मानसौँ ॥

ऋक १ साम २ यजु ३ अथर्व ४ हू वरनैँ समस्त विधानसौँ ॥ १५ ॥

दान १ रु चिकिच्छा २ पासुपत ३ बलि न्याय सिच्छौँ ४ हू जया,

कहि लक्ष्य १ लच्छन २ जुत ए सब पुण्यतीर्थ १ कहे तथा ॥

१ बादरायण नामक वेदव्यास ने २ जो ३ सो ४ सब विषयों में पण्डित ५ पंडितों का भी पति ६ एक महाभारत के पढ़ने से मनु स्मृति आदि धर्मशास्त्र और वेदानुयायी आस्तिक ग्रन्थों का पढ़ना माना जाता है ७ विमान में बैठ कर ऊपर भ्रमण करते हुआं ने भारत को फैलाया ८ परंतु ९ शिष्यों का पढ़ाना कैसे बनै अर्थात् पुस्तकाकार हुए बिना पढ़ना नहीं होसकै १० ब्रह्मा ११ परंतु इसको लिखनेवाला नहीं मिलता १२ प्रकाश करने का मुख्य कारण १३ लिखना ही है अज्ञों सहित और अभिप्राय सहित १४ वेद है १५ वर्तमान १६ विस्तार सहित १७ तीनों काल [समय] का ज्ञान है १८ बुद्धापा १९ रोग २० होना २१ मिटना २२ लक्षण [स्वरूप] २३ चन्द्र २४ तारा न है २५ वृद्धापा २६ रोग २७ होना २८ मिटना २९ लक्षण [स्वरूप] ३० तारा और युग ३१ प्रमाण से कहेगये हैं ३२ ऋग्वेद ३३ सामवेद ३४ यजुर्वेद ३५ आत्मतत्त्व ३६ रीति पूर्व ३७ रोग निवारण उपाय [इलाज] ३८ पाशुपत [शैव] धर्म ३९ पुनि ३९ न्याय शिक्षा ४० ये सब लक्ष्य [वस्तु] का स्वरूप बताकर उसको बताना ४१ लक्षण स्वरूप



बहुधा नदी२ वन३ सैल<sup>४</sup> सागर<sup>५</sup> देस<sup>६</sup> पत्तन<sup>७</sup> बरणीये,  
 कहि कल्पनिर्णय<sup>१</sup> जुद्धपाटवर<sup>२</sup> बाक्यजाति<sup>३</sup> सबै दये ॥१६॥  
 सह लौक्यातिक<sup>१</sup> वस्तुसवर्ग<sup>२</sup> जो सु अखिखय खुलिकै,  
 पर तास लेखक नाँ मिल्यो सु कहो जथातथ तुलिकै ॥  
 बोले पितामह व्याससौं तपवृद्ध मुनिचर्य श्रेष्ठ मैं,  
 विज्ञानगूढहिँ जानिबे सन तोहि जानत ज्येष्ठ मैं ॥ १७ ॥  
 तैं सत्यवादिक व्यास मोसन काव्य मैं किय यौ कही,  
 तसमातैं काव्यहि होहु यह विख्यात विस्तरसौं मही ॥  
 याकों बिसेसन देनमैं कवि कोउ नाँहि समर्थ हैं,  
 ज्यों द्वितीयाऽऽश्रमके बिसेसन आश्रमत्वर्थ<sup>३</sup> व्यर्थ हैं ॥१८॥  
 इहिँ काव्यकों लिखनार्थ चिंतहु विघ्नपति हित धारिकै,  
 सुनि व्यास चिंतिग एकदंत गये बिरं<sup>१</sup> चि पधारिकै ॥  
 स्मृतमात्र भक्तमनोर्थपूरक वारणाँनन आयकै,  
 उपरिष्टे अर्चिते व्है दई सुनि हार्द एह सुनायकै ॥ १९ ॥  
 खिन लेखिनी थिर जो रहै न ततो लिखै हम ग्रंथकाँ,  
 सुनि वादरायेंन हू कहयो संकेत इक यहँ पंथैकाँ ॥  
 विनु अर्थबोधैं लिखो न यौ सुनिकै बिनायक व्यासकी,

१ अक्षर २ पर्वत ३ पुर ४ प्रलय का ५ युद्ध की चातुरी ६ जाति के वाक्य (जिसमें अनेक विभक्तियें होवे उसको वाक्य कहते हैं) ७ लोकयात्रा के साथ वस्तुओं के वर्ग अर्थात् कौन वस्तु किस वर्ग की है [अपनी जाति के समूह को वर्ग कहते हैं अथवा समान धर्मवाले को वर्ग कहते हैं] ८ सब खोल करके कहे हैं १० परंतु ११ ब्रह्मा बोला कि तप वृद्ध श्रेष्ठ मुनियों के समूह में १२ छिपाहुआ ब्रह्मज्ञान जानने से मैं तुमको बड़ा मानता हूं १३ इसकारण से १४ भूमि में विस्तार पूर्वक प्रसिद्ध होओ १५ गृहस्थाश्रम के विशेषण बिना १६ ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास व्यर्थ हैं इसप्रकार १७ गणेश को १८ गणेश को १९ ब्रह्मा २० याद करने मात्र से ही २१ गणेश २२ ऊपर ठहरे हुए ही २३ पूजित होकर २४ अभिप्राय सुन कर मेरी कलम कुछ भी बन्ध नहीं रहै तौ २५ वेदव्यास २६ इस मांग का एक संकेत है कि २७ बिना अर्थ समझे लिखो मत. २८ गणेश ने व्यास की बात सुन कर

महाभारतचतुर्लोकविन्यसन ] तृतीयराशि—सप्तदशमयूख (६४३)

स्वीकार करि लिखिवे लगे दृढ धारि अर्थ प्रकासकी ॥२०॥

दोहा

ग्रंथमौहिं अति गूढ तब, रचि रचि ग्रंथ समाज ॥

लौ संधा पुनि यौ कही, वासवेय मुनिराज ॥ २१ ॥

अष्टसहस्र८०००० अष्टसत८००, भारत वृत्त प्रमान ॥

मैं जानत जानत सुकहु, संजय जानत वाँ न ॥ २२ ॥

गनपति जोलों खिनकि ढँबि, जानै कूटन अर्थ ॥

व्यासहु तोलों बहु रचै, सत्वरै वृत्त समर्थ ॥ २३ ॥

करि इम यह भारत कियउ, लछि लकख६,०००,०००समुपेत ॥

लकख तीस३००००००सुरलोक जो, पंद्रह१५०००००पितर निकेत २४

लकख चउदह१४०००००ग्रंथ यह, धख्यो लोक गंधर्व ॥

लकख इक१००००००नरलोकमैं, किझौं प्रकट सुपर्व ॥ २५ ॥

देवनसौं नारद कहत, सुक गंधर्वन सत्य ॥

पितरनसौं देवल आसित, वैसंपायन अर्थ ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयशराशो वीति-  
होत्रचहुवाणशशुधन४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकजनमेजयस

२ गुये हुए समूह अथवा ग्रन्थ का समूह ३ प्रतिज्ञा ४ वासवी के पुत्र [वेदव्यास] ५ भारत में आठ हजार आठ सौ छन्दों का अर्थ मैं जानता हूँ और शुकदेव [वेदव्यास का पुत्र] जानता है ६ संजय जानता है अथवा नहीं जानता ७ गणेश जब तक ८ क्षण मात्र ९ ठहर कर १० शीघ्रता से, छन्द रचना में समर्थ ११ संप्राप्त १२ पित्रीश्वरों के घर में १३ श्रेष्ठ पर्वों वाला १४ उपरोक्त महाभारत की कथा देवताओं को तो नारद मुनि कहते हैं गन्धर्वों को व्यास के पुत्र शुकदेव कहते हैं, पित्रीश्वरों को व्यासदेव के शिष्य देवल मुनि और असित मुनि कहते हैं और इस लोक में व्यास के शिष्य वैसंपायन मुनि कहते हैं [नारदादि मुनियों को पुराणों के मत से अमर मानते हैं इस कारण से यहां वर्तमान किया है] ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान शशुधन के जीवित समय के समान (बराबर) है समय का आधार जिनका अर्थात् समकालीन (एक समय में होनेवाले) जनमेजय के सर्पयज्ञ में महा

पंसत्रश्रुतमहाभारतलोमहर्षाणिशौनकाऽऽदिश्रवणाऽऽरम्भणासमा-  
 ऽऽचरणामङ्गलपूर्वकसर्ववर्णानचेतोनिर्मितभारतब्रह्मोक्तव्यासः गणा-  
 पतिरसमयस्थापनग्रन्थगूढग्रन्थिसङ्ख्यासूचनविभजितप्रबन्धचतु-  
 ल्लोकविन्यसनतद्वक्त्रुद्देशनसप्तदशोऽमयूखः ॥ १७ ॥ आदितएको  
 नषष्टितमः ॥ ५९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मुक्तादाम

भयो नृप पांडु सु भारत वंस, जयो बहु देस स्वविक्रम अस ॥  
 रह्यो वन बीच सदार नरेस, रम्यो मृगयारस मत्त विसेस । १ ।  
 तहाँ मुनि दंपति २ व्है मृगरूप, व्यवाय प्रसक्त लखे इहिँ भूप ॥  
 दयो मृगकै जब वान धरार्प, लग्यो तब सो इहिँ कुर्पि ससाप । २ ।  
 जबै करिहै नृप तूहु व्यवाय, तबै इमही मरिहै अकुलाय ॥  
 लह्यो यह पांडु प्रदुस्सह साप, तज्यो तियसंग गहयो दुख आप । ३ ।  
 कह्यो पुनि कुंतियसौं नृप एह, तज्यो रत मै अनुं पुत्र न गेह ॥  
 कहैं पतिकै जु रमैं पर पास, न व्है खलु भंग पतिव्रत तास । ४ ॥

भारत सुन कर लोमहर्षण के पुत्र (उग्रश्रवा श्रुत पौराणिक) का शौनक आ-  
 दि मुनियों को सुनाने का आरंभ करने के समाचार, भंगलाचरण पूर्वक स-  
 म्पूर्ण भारत का चित्त में बनाना, ब्रह्माके कहने से वेदव्यास का गणेश के सम-  
 य का स्थापन करना, महाभारत ग्रन्थ की छिपी हुई गांठों (गूढार्थ) की गिन-  
 ती की सूचना करना, विभाग किये हुए ग्रन्थ का चार लोकों में क्रम से स्था-  
 पन करना और उनके वक्ताओं (कहनेवालों) के कथन का सत्रहवां समूख स-  
 माप्त हुआ ॥ १७ ॥ और आदि से उनसठऽमयूख हुए ॥

१ जीता (विजय किया) २ अपने पराक्रम के अंश से ३ स्त्रियों सहित ४ शि-  
 कार ५ स्त्री पुरुष दोनों मृग का रूप करके ६ मँधुन करने में ७ आसक्त ८  
 अपति पांडु ने ९ क्रोध से १० आप दिया, मुनि ने कहा कि हे राजा तुम्हीं जब मै-  
 शुर करोगे तब प्रचराकर इसी (हमारी) तरह मरेगा ११ बहुत दुस्तह १२ मै-  
 ने तो स्त्रीसंग झोंड दिया और पीछे घर में पुत्र नहीं है और जो स्त्री पति  
 के कहने से पर पुरुष के पास रमै तो १३ निश्चय ही उसका पतिव्रत भंग नहीं  
 होता

जनों सुत छेत्रंजही तसमाँत, मिटै क्रन पैतृक तो मम सात ॥  
 दयो मुनि जो सुजप्यो तब मंत्र, बुलायउ कुंति य १ धर्म स्वतंत्र ॥ ५ ॥  
 जुधिष्ठिर १ गर्भ लहयो तसमाँत, कहै नृपकै पुनि बुलिय बात २ ॥  
 भयो तिहि भीम २ प्रभंजन अंस, भयो जय ३ बासवं ३ तै सुप्रसंस ॥ ६ ॥  
 ३ माद्रियके हित दैस २ बुलाय, कह्यो तिहि कुंति तुहू उपजाय ॥  
 लहे तब माद्रिय हू दुव २ बाल, तहाँ रहत बितये कति काल ॥ ७ ॥  
 भयो पुनि पांडुहिँ कामँज ताप, रम्यो गहि माद्रिय बीसरि साप ॥  
 मख्यो ततकाल महीप मृगारि, गई सह माद्रिय कुंति निवारि ॥ ८ ॥  
 पृथा तब पोखि बडे किय बाल, रही मुनि आश्रम कोउक काल ॥  
 तिन्है मुनि लै गजपत्तन आय, दये सिसु स्वीर्य कुटुंब मिलाया ९ ॥  
 किते तिनकोँ लखि बुलिय मूढ, न ए सिसु पांडुजँ एम अगूढ ॥  
 बँदे कति पांडुजही इम बत्ति, बदे कतिही तिहिँ साँप बिपत्ति १० ॥  
 वसे इम पांडुव गैपूर थान, भई सुमँबुद्धि सहुँदुभि ध्वान ॥  
 पढे श्रुति ४ सांगै ६ रु साँख ६ अनेक, रहे अकुँलोभय आत बिबेक ॥ ११ ॥

१ इस कारण से ? क्षेत्रज (अपने क्षेत्र में औरों के वीर्य से पैदा हो  
 वे उसको क्षेत्रज कहते हैं) पुत्र जनों तो सुख पूर्वक मेरा ३ पितृकृण मिट  
 जावे ४ कुन्ती को कुमारपन की अवस्था में मुनि ने एक मंत्र दिया था कि  
 इसका जप करके जिस देवता को तू अपने पास बुलावेगी वही आवेगा उ  
 सी मंत्र को जपा ५ उस धर्म से और राजा (पांडु) के कहने से फिर ७ प  
 वन को ६ बुलाया ८ उस पवन के अंश से भीमसेन हुआ और ९ इन्द्र  
 के अंश से १० प्रशंसा करने योग्य ११ अर्जुन हुआ १२ और पांडु की छोटी राणी  
 माद्री के लिये १३ अश्विनीकुमारों को बुला कर कुन्ती ने १४ उसको कहा कि इ  
 नसे तू भी पुत्र पैदा कर १५ कामदेव से पैदा हुआ ताप १६ मृग रूपी मुनि का  
 शत्रु राजा पाण्डु मरा तब कुन्ती को रोक कर माद्री सती हुई १७ हस्तिनापु  
 र १८ अपने कुटुंब से १९ पाण्डु से पैदा हुए नहीं हैं २० इस प्रकार प्रसिद्ध कह  
 ने लगे २१ कितनोंकने कहा २२ कितनोंकने पाण्डु की आप की आपदा कही  
 (आपद्धर्म जुदा ही है उसके अनुसार पांडु ने अनुचित नहीं किया) २३ हस्ति  
 नापुर में २४ पुष्पा की वर्षा २५ नगरों के शब्द के साथ ॥ ये पाँचों पांडव  
 २७ अंगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) के साथ २८ वेद  
 पढ़े २९ और अनेक शास्त्र भी पढ़े पांडवों को जब तक ३० ज्ञान नहीं आया  
 तब तक अपने हिस्से की ३१ भूमि का अलोभ रहा दुर्योधन से अपनी भूमि

लही पुनि अर्जुन द्रौपदि जाय, धनुर्धर दुष्कर कर्म विधाय ॥  
 भयो तबतैं वह पूजित लोक, ज्यो बहुजुद्ध हनैं अरि थोक ॥२॥  
 धनंजय जिति लई दिस च्यारि४, लयो सबसौं कर धर्म बिथारि ॥  
 रच्यो नृपसूर्य समाभिध सत्र, जुधिष्ठिर दीक्षित भो नृप तत्र ॥३॥  
 भई हरिके नयंसौं इक ओर, धनंजय१भीम२पराक्रम जोर ॥  
 हनैं नृप मार्गध१ओ सिसुपाल२, रच्यो इम अर्ध्वर धर्म बिसाल ॥४॥  
 जहाँ मनि१हाटैकरन३अपार, रू गो४गज५बाजि६बिचित्र प्रकार ॥  
 बनैं बहुधा पटैकुंतल७व्यूह, जथाक्रम रांकेंव आसन९जूहा ॥५॥  
 निमंत्रितैं तत्थ सुजोधन आय, लखी सब दिव्य समृद्धि सुभाय ॥  
 सभा मयनिर्मितैं जो मैतिहीन, सुजोधन भो लाखि मैसर लीन ॥६॥  
 हस्यो हरिके लखतैं जब भीम, सुजोधन रूठि तजी श्रुति सीम ॥  
 कह्यो धृतराष्ट्रहिं यों तव जाय, तिन्हें हम जीतत द्यूत हराय ॥७॥  
 भन्यो सुत लोभित अस्तुहि भूप, रच्यो तव द्यूत महाछल रूप ॥  
 जुधिष्ठिरको सरवस्वहि जीति, सभा बिच द्रौपदि किन्न सभाति ॥८॥  
 विपत्ति घनी लहि पांडव५एम, भये पुनि सज्ज लयो रन नेम ॥  
 अठारह१८द्यौसैं भई तव रारि, लयो इनैं राज्य सुजोधन मारि ॥९॥  
 कियो धृतराष्ट्र तदुत्तर ताप, गवलंगगापुत्रहिं अक्खिय आप ॥

लेने का लोभ नहीं किया) १ कठिनाई से किया जावे ऐसा कर्म २ करके  
 ३ विजय पायगा ४ खिराज ५ राजसूय ६ नामक ७ यज्ञ ८ उस यज्ञ  
 की दीक्षा युधिष्ठिर ने ली ९ कृष्ण की १० नीति से एक और बात भी हुई  
 ११ अर्जुन १२ जरासन्ध १३ यज्ञ १४ युधिष्ठिर ने १५ स्वर्ण १६ अरु १७ अने  
 क प्रकार के १८ वस्त्र १९ केसों का समूह (नाना प्रकार के केस भी भेट आ  
 ये थे) २० नृगों के रोमों के बने हुए वस्त्र २१ समूह २२ न्योता हुआ २३ तहां  
 पर २४ मय दानव की बनाई हुई २५ निर्वुद्धि (दुर्योधन) २६ वैर (दूसरे की सम्प  
 त्ति का असह होना) में कृष्ण के देखते हुए जब भीमसेन हसा तो दुर्योधन  
 ने २७ क्रोध करके २८ वेद की मर्यादा को छोड़ी २९ पांडवों को ३० ऐसा ही होवे ३१  
 अठारह दिन तक ३२ पांडवों ने ३३ जिस पीछे धृतराष्ट्र ने बहुत शोक कि  
 या और ३४ संजय को ३५ कहने लगा कि

वरी जब संजय द्रौपदि पत्थ १, तजी तबही जय आस अनर्थ ॥ १२० ॥  
 सुन्यौ जब खांडव दाह २ गभीर, निवारिय अर्जुन बानन नीर ३ ॥  
 सुन्यौ जतुंभौन विरोचन दाह ४, गये बचि पांडव कानन राह ५ ॥ १२१ ॥  
 सुन्यौ जब संकरसौं जय जुद्ध ६, दिये सिव पत्थहिँ अस्त्र ७ विसुद्ध ॥  
 सुन्यौ दिव्यलोक गयो ८ जब पत्थ, पुरंदरसौं लिय उत्तम अर्थ ९ ॥ १२२ ॥  
 सुनी जब मैं इम अंबक हीन, कुबेर समागम पांडव कीन १० ॥  
 सुनी पुर मच्छ जबै रन रीति, लये मम पुत्र धनंजय जीति ११ ॥ १२३ ॥  
 सुनी हरिहू हुव पांडव सत्थ १२, सुनी पुनि एक १३ हि माधव १४ पत्थ २ ॥ १३ ॥  
 सुनी जब मोसुत १५ कर्ण १६ समेत, कियो हरि बंधन मंत्र १७ कुचेत १८ ॥  
 सुनी जब भीष्महिँ अकिंय कर्ण, लरौ नहिँ तोछैत मैं १९ इम वरौ ॥  
 सुनी हरि २० पत्थ २१ गांडिव चाप ३, मिले त्रय ३ ॥ १६ विक्रम उग्र अमाप ॥  
 सुनी जब मोहै रह्यो जय पाय, दये हरि लोक १४ स्वबक्र दिखाय १७ ॥  
 सुनी जब पांडवकाँ रन बीच, बतायउ भीष्ममहू निज मीचै १८ ॥ १२६ ॥  
 सुनी जब पत्थ सिखंडिय ओट, हनै रन भीष्म सायक चोट १९ ॥

१ हे संजय २ अर्जुन ने जब द्रौपदी को वरी तभी हमने इम ३ अनर्थ वाली जय की आशा को छोड़ दी और खांडव वन का गंभीर दाह सुना जिस में अर्जुन ने बाणों से मेघ के पानी को रोक दिया तभी से हमने जयकी आश छोड़ दी "तभी से हमने जय (जीतने) की आश छोड़ दी" इस पद को आगे प्रत्येक कार्य के अन्त में लगा लेना चाहिये. ४ ला जाग्रह में ५ वन के मार्ग से महादेव से ६ अर्जुन का युद्ध सुना ७ विशेष शुद्ध (निर्मल) ८ स्वर्ग में अर्जुन गया तब ९ इन्द्र से उत्तम १० फल पाये सुभ ११ नेत्रहीन ने सुना कि पांडव कुबेर से मिले और जब मच्छ के पुर (वैराट) में युद्ध की रीति सुनी कि मेरे पुत्र को १२ अर्जुन ने जीत लिया तब ही विजय की आश छोड़ दी १३ फिर सुना कि कृष्ण और अर्जुन एक ही हैं तभी से विजय की आश छोड़ दी. खोटी बुद्धिवाले मेरे पुत्र ने कर्ण के साथ १४ कृष्ण को कैद करने की सलाह की सो सुनी. जब सुना कि भीष्म से कर्ण ने इस प्रकार १७ अच्छर १५ कहे कि १६ तुम जीवित रहोगे तब तक मैं युद्ध नहीं करूंगा तभी दैने विजय की आश छोड़ दी १८ वनपुत्र २० अर्जुन को १९ मोह प्राप्त होगा था तब कृष्ण ने अपन २१ मुख में चौदह लोक दिखा कर अर्जुन का मोह मिटाया २२ भीष्म ने अपनी मृत्यु बता दी कि इस उपाय से मैं मरूंगा अर्जुन ने अपनी ओट

सुनी जब दोनहु जुद्ध विचित्र, न मारत पाण्डवकों २० जिम मित्रा २७।  
 सुनी जब पत्थ सुसंध प्रवीर, जयद्रथ मारि लयो २१ तकि तीर ॥  
 सुनी हुव भीमहु मोह विवर्ण, छुई धनुकोटि हन्यो नहि २० कर्ण ॥ २८।  
 सुनी वृष वासंवसक्ति सुभाय, घटोत्कच उप्पर मुक्किय २३ आय ॥  
 सुनी जब द्रौपद दुष्ट चलाय, हनै गुरु दोन निरायुध २४ हाय । २९।  
 सुनी जब जुद्ध वृकोदर सक्त, पियो हंठि कंठ दुसासन रक्त २५ ॥  
 सुनी पुनि कर्ण महारथ वीर, हन्यो २६ जय दे रन तिच्छन तीर । ३०।  
 सुना नृप सत्य हन्यो २७ जब धर्म, हन्यो सकुनी २८ सहदेव सुवर्म ॥  
 सुनी हरि सम्मत भीम बकारि, लयो ममपुत्र गर्द रन मारि २९ । ३१।  
 सुनी जब द्रौणि गयो निस गुप्त, हन्यो परसैन्य ३० अश्वोहिनि सुप्त ॥  
 सुनी सर ब्रह्महु भो रन मोघ ३१, लयो जय भेलि स्वयस्त्रन ओघ ३२।  
 सुनी गुरुके सुतहू भयभिन्न, निकासि स्वमस्तक को मनि दिन्न ३२ ॥  
 भई सुबलससुता बिनु पुत्र, न को पितु बंधु २ कुटुंब ३ तनुत्र ॥ ३३।  
 कियो इम पांडु तनूजन जत्र, गयो पुनि राज्य लयो असपत्न ॥

१ प्रतिज्ञा के साथ वीरता से जयद्रथ को मार दिया जब  
 सुना कि भीमसेन मूर्छा पाकर २ मलिन होगया था उसके धनुष का ३  
 अग्रभाग तो लगाया परन्तु कर्ण ने उसको नहीं मारा तब ही मैंने विजय की  
 आज्ञा छोड़ दी ४ कर्ण ने ५ इन्द्र की दी हुई शक्ति (यह अमोघ शक्ति क  
 र्ण ने अर्जुन को मारने के लिये इन्द्र से ली थी) को घटोत्कच पर छोड़ दी ६  
 द्रुपद के पुत्र (धृष्टद्युम्न) ने ७ बिना आयुध ८ भीमसेन ने युद्ध में ९ आसक्त  
 होकर १० दृष्ट पूर्वक दुश्शासन का ११ लोहू पिया १२ अर्जुन ने महारथी क  
 र्ण को तीखे बाणों से मारा १३ युधिष्ठिर ने राजा शल्य को मारा १४ अष्ट  
 कवचवाले सहदेव ने १५ कृष्ण की सलाह से भीमसेन ने मेरे पुत्र (दुर्योधन)  
 को १६ गदायुद्ध में मारलिया १७ अश्वत्थामा १८ छिप कर १९ शत्रु की एक  
 अश्वोहिणी २० सुती हुई सेना को मारी २१ अश्वत्थामा का ब्रह्मास्त्र भी २२ व्य  
 र्थ होगया उसको २३ अर्जुन ने अपने अस्त्रों के २४ समूह से भेल लिया अश्वत्था  
 मा ने भय से अपने मस्तक का माणि काटकर दे दिया और २५ सुबल राजा की  
 पुत्री (गान्धारी) बिना पुत्रवाली होगई इस गान्धारी के कोई २६ रक्षा करने  
 वाला नहीं रहा पांडु के २७ पुत्रों ने इस प्रकार का उपाय किया कि अपना  
 गया हुआ राज्य बिना शत्रुओं के ले लिया अर्थात् अब कोई शत्रु नहीं रहा

रहे दस १० जीवित भारत भीर, उतैं खिल सत्त ७ इतैं तय श्वीर ३४।  
 भयो मम संजय विव्हल चेत, बढयो अतिमोह स्वपुत्रन हेत ॥  
 सुन्यो इम संजय अंध विलाप, लग्यो बिसवासि निवारन तापा ३५।  
 इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ वीतिहो  
 त्रचहुवाणाशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावित-  
 महाभारतसमासे पाण्डवोद्भवनमृगमुनिशप्तपाण्डुमरणा-सपुत्रपृथा  
 हस्तिनापुराऽऽगमन-सङ्क्षिप्तपाण्डवचर्यासूचन-चिन्तितभूतवृत्तधृ-  
 तराष्ट्रपरिदेवनमष्टादशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥ आदितः षष्ठितमः ॥ ६० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

सुनि संजय इम कहिय नृपहिं विस्वासि जोरि कर ॥  
 भये पुँव्व नृप बहुत गये मरि सबहि काल सर ॥  
 सैव्य १ महारथ बीर बहुरि संजय २ धरनीपति ॥  
 कक्षीवान ३ सुहोत्र ४ रंतिदेव ५ हु विसौलमति ॥  
 बाल्हीक ६ दमन ७ इक्ष्वाकु ८ गय ९ अजिन १० चैव्य ११ सग्याति १२ नल १३  
 नाभाग अंवरीस १४ हु नृपति विश्वामित्र १५ प्रगल्भ बल ॥ १ ॥  
 मनु १६ मसुत्त १७ पुनि भरत १८ राम १९ दसरथनंदन अथ ॥

भारत में इतनी भीड़ थी जिस में दस जीवित रहे ? बाकी रहे. तीन वीर  
 इधर रहे २ हे संजय मेरा चित्त विव्हल होगया है ३ धृतराष्ट्र का विलाप  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा  
 न शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐसे सू  
 त पुत्र का महाभारत सुनाना, संक्षेप में पाण्डवों का जन्म, मृगरूप को धार  
 ण किये हुए सुनि के आप से राजा पाण्डु का मरना, पुत्रों सहित कुन्ती का  
 हस्तिनापुर आना, संक्षेप से पाण्डवों के आचरण का जनाना, गये हुए वृत्ता  
 न्त को याद करके धृतराष्ट्र के विलाप करने का अठारहवां मयूख समा  
 प्त हुआ ॥ १८ ॥ और आदि से साठ मयूख हुए ॥ ६० ॥

धृतराष्ट्र का इस प्रकार का विलाप सुन कर संजय ने हाथ जोड़ कर कहा  
 कि हे राजा ४ पहिले बहुत राजा हुए वे भी काल के बस होकर सभी मरगये  
 ५ यही दुखियाल ६ बड़ यत्नवान् ७ अथ



महाभाग कृतवीर्य २० भूप ससविंदु २१ भगीरथ २२ ॥

तिम ययाति २३ मंखसील महाविक्रम जनमेजय २४ ॥

अरु रघु २५ कुरु २६ जदु २७ पूरु २८ बिश्वगश्व २९ हु पड्डुचे छय ॥

अन्वह ६० कुत्स्थ ७ युवनाश्व ८ बलि बीतिहोत ९ अरु अंग १० भव ११ ॥

विजयाख्य १२ वृहद्गुरु १३ कंक १४ त्योंश्वेत १५ उसीनर १६ धरनिधव १७

दंभोद्भव १८ पर १९ वेन २० सगर २१ सतरथ २२ दुलिदुह २३ हुम २४ ॥

संकृति २५ निमि २६ रु अजेय २७ परसु २८ पुनि पुंड्र २९ सुनहु तुम ॥

देवावृध २९ नृप संभु ३० वृहदथ ३१ बलि देवावृहय ३२ ॥

सप्रतीक ३३ सुप्रतिम ३४ अनघ ३५ सब काल करे छय ॥

प्रभु ३६ दीप्तकेतु ३७ सुक्रतु ३८ बहुरि महोत्साह ३९ निषधेसनल ४० ॥

अर्क ४१ रुसुमित्र ४२ तिमसांतभय ४३ सत्यव्रत ४४ चपल ४५ रुसुबल ४६ ॥

जानुजंघ ४७ अनरण्य ४८ धूर्त ४९ प्रियभृत्य ५० सुचिव्रत ५१ ॥

निरामर्ह ५२ बलबंधु ५३ वृहद्वल ५४ केतुशृंग ५५ गत ॥

वृहत्केतु ५६ पुनि धृष्टकेतु ५७ कृतबंधु ५८ निरामय ५९ ॥

दृढेषुधि ६० रु संभाव्य ६१ भयउ इत्यादि सबन खय ॥

तव पुत्र दुष्ट चाहिजे मरे तिनहि न सोचहु भूपवर ॥

जिन बुद्धि होत सास्त्रांनुगत ते नहि पावत मोह नर ॥ ४ ॥

दोहा

यौ सुतसोकसमुद्रमैं, मग्न अंध रौ भाखि ॥

स्वस्थ कियउ संजय सुमति, दै पूरव नृप साखि ॥ ५ ॥

जो भारतके वृत्तको, चरनहु पढत सुचेत ॥

सर्व दुरितं सन सुक्त सो, होत मुक्तिके हेत ॥ ६ ॥

१ यज्ञ करने में ही है शील जिस का २ मूर्धति ३ पुनि ४ सब काल ने नाश कर दिया इनको आदि लेकर सब का नाश होगया और तुम्हारे दुष्ट लोभकरके मरे जिनकी चिन्ता मत करो जिनकी बुद्धि शास्त्रों के पीछे चलनेवाली होती है वे मोह नहीं पाते ५ पुत्र के शोक रूपी समुद्र में डूबे हुए धृतराष्ट्र से कह कर ७ स्वभाव को स्थिर किया ८ पहिले राजाओं की साखी देकर महाभारत के ९ छन्द का एक चरण भी जो श्रेष्ठ चित्त से पढ़ता मुक्तिके अर्थ सब १० पापों से छूट जाता है

महाभारतसंक्षिप्तकथा ] तृतीयराशि—ऊनविंशमयूख (६५१)

देव१ देवक्रपि२ ब्रह्मक्रपि३, सिद्ध४महोरग५ जच्छे६ ॥

भारतको कीर्तन करत, कृष्ण चरित जहँ अच्छ ॥ ७ ॥

द्विजें सुनावे आद बिच, एक१हु चरन प्रसन्न ॥

भारतको तो तस पितर, पावैं अच्छय अन्न ॥ ८ ॥

च्यारि४हु बेद रहस्य जुत, तोलत इक१ आधार ॥

इक१धौ राख्यो एक१हु, भारत धारत भार ॥ ९ ॥

बहुरि लोमहरखन सुतहि, अक्खिय मुनिगन एह ॥

तैं समंतपंचक कहिय, सु किम हनहु संदेह ॥ १० ॥

सूत कह्यो करिये श्रवन, उत्तर तास उदार ॥

त्रेता१ द्वापर२ संधि हुव, परशुराम अवतार ॥ ११ ॥

पदपदी

जनक बैर द्विज राम कुपि इकवीस२१ बैर करि ॥

सब छत्रिय संहार गये तिन रुधिर ताल भरि ॥

तहँ तिहिँ तर्पन करत पितर आये ऋचीक मुख,

तिन अक्खिय यह कर्म तजहु बर लेहु ईष्ट रुख ॥

द्विजराम कहिय ए अश्रुके ताल पञ्च५तीरथ बनहु ॥

सुहि दै मुनीस वे सब गये रामहु छोरिय बैर बहु ॥ १२ ॥

१ यत्न. जो प्रसन्न होकर महाभारत के छन्द का एक चरण भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (इन तीनों की १ द्विज संज्ञा है) को आद में सुनावे तो उसके पित्रीश्वर अक्षय अन्न पाते हैं चारों वेद अभिप्राय सहित तराजू के एक पलड़े में रख कर एक ३ तरफ महाभारत को रखवा तो भारत में भार विशेष है. फिर४लोमहर्षण नामक सूत पौराणिक के पुत्र (उग्रस्रवा) को मुनियों ने ५ कहा कि तुमने समंतपंचक तीर्थ से आना कहा सो वह तीर्थ कैसा है यह सन्देह मिटाओ ६ पिता के बैर से क्रोध करके परशुराम ने इक्षी स बेर क्षत्रियों का नाश किया जिनके रुधिर से ७ तलाव भर गये. ८ ऋचीक को आदि लेकर ९ उन्होंने कहा कि १० जैसी तुम्हारी इच्छा होवे ऐसा घर लो तब परशुराम ने कहा कि ११ रुधिर के ये पाँचों तलाव हैं सो तीर्थ होजावे सो यही घर देकर वे मुनि तो सय गये और परशुराम ने भी क्षत्रियों से बैर छाँड़ दिया

दोहा

यौ समंतपञ्चक भयो, थल नामहु तदधीन ॥

अच्छोहिनि अङ्गारही १८, छत्रिय जहँ हुव छीन ॥ १३ ॥

बहुरि मुनिन पुच्छिय कहहु, अच्छोहिनि परमान ॥

सु सुनि सूत अक्खिय सुनहु, संख्या प्रश्न सयान ॥ १४ ॥

षट्पदी

द्विरद १ इक्क १ रथ १ इक्क १ पंच ५ पदचार ५ तीन ३ हय ३ ॥

पत्ति १ नाम तस गिनहु गिनहु सेनामुख ३ ३ १ २ ५ १ तत्रय ३ ॥

सेनामुख त्रय ३ गुल्म ९ ९ १ ४ ५ २ ७

गुल्मत्रय ३ गन २ ७ २ ७ १ ३ ५ ८ १ पहिचानहु ॥

बाहिनी ८ १ ८ १ ४ ० ५ २ ४ ३ सु गन तीन ३,

तीन ३ पृतना २ ४ ३ २ ४ ३ १ २ १ ५ ७ २ एते जानहु ॥

पृतना सु तीन ३ कहियत चमू ७ २ ९ ७ २ ९ ३ ६ ४ ५ २ १ ८ ७,

तीन ३ चमू सु अनीकिनिय २ १ ८ ७ २ १ ८ ७ १ ० ९ ३ ५ ६ ५ ६ १ ॥

एकत्र होय इनको दसक १ ० तबहि एक १ अच्छोहिनिया १ ५

दोहा

प्रकृति १ सहस्र रु अष्ट ८ सत, सत्तरि २ १ ८ ७ ० बहुरि प्रमानि ॥

एते रथ एते २ १ ८ ७ ० हि गज, अच्छोहिनि बिच जानि ॥ १६ ॥

१ उन तलावों के कारण से उस स्थल का नाम समन्तपञ्चक होगा या है जहाँ पर छत्रियों की अठारह २ अक्षौहिणी का नाश हुआ है फिर मुनियों ने अक्षौहिणी का प्रमाण पूछा सो भूत पौराणिक ने कहा एक रेहाधी, एक रथ, पाँच पैदल और तीन घोड़े इनके समूह का नाम पत्ति है । ४ इनको तिगुना करने से सेनामुख कहलाता है । सेनामुख को तीन गुना करने से गुल्म कहलाता है । गुल्म को तिगुना करने से गण कहलाता है । गण को तिगुना करने से बाहिनी; और बाहिनी को तिगुना करने से पृतना कहलाती है । इस पृतना को तीन गुना करने से चमू कहलाती है और तीन चमू इकट्ठा करने को अनीकिनी कहते हैं और इस अनीकिनी को ५ दश गुना करने से अक्षौहिणी होती है एक अक्षौहिणी में इक्कीस हजार आठ सौ सत्तर हाथी, इतने ही रथ, एक लाख नौ हजार तीन सौ प-

एक१लक्ष अरु नव१सहस्र, तीन३संत रु पंचास१०९३५०  
ए नर हय पैसठि६५सहस्र, खट६सत अरु दस६५६१०तास ॥ १७ ॥  
यह अच्छोहिनि एक१जे, अष्टादस१८परिमान,  
३९३६६०।३९३३६०।१९६८३००।११८६८० ॥  
रन कौरव पांडव रचत, निर्धन गये तैंहिं थान ॥ १८ ॥  
दस१०बासर भीम१लरे, पंच५दोन२गुरु बेसैं ॥  
दिवस दोय२रन कर्ण३किय, दिवस अर्द्ध३मदेसैं ४ ॥ १९ ॥  
अर्द्ध३दिवस कुरुराज१अरु, भीम२गदारन किन्न ॥  
इम अट्टारह१८अहनमैं, भयो छत्रकुल भिन्न ॥ २० ॥  
याही दिनके अंतमैं, द्रोणि१संगोतम२भोजं ३ ॥  
हन्यौं सुंप्त विस्वस्तं दल, पांडवको अति ओज ॥ २१ ॥

### पटपदी

यह भारत इतिहास पर्व अष्टादस१८संजुत,  
आदि१सभाश्वन३अरु विराट४उद्योग५भीष्म६नुतं ॥  
द्रोणा७कर्ण८कहि सत्य९पर्व सौप्तिक१०पुनि जानहु ॥  
स्त्री११पर्व रु तिम सांति१२पर्व अबुसासन१३मानहु ॥  
हयमेध१४रु आश्रमवास१५सह मुसल१६महाप्रस्थान१७जिम ॥  
स्वर्गादिरोह१८अवसान विच अष्टादस१८अभिधान इमा२१

### दोहा

चास पैदल और पैसठ हजार छःसौ दश घोड़े होते हैं यह एक अच्छोहिणी  
का प्रमाण है ऐसी अठारह अच्छोहिणी कौरवों पांडवों के युद्ध रचने से उस  
स्थान (समन्तपुरुष) में १ नाश को प्राप्त हुई हैं २ दश दिन भीष्म लड़े, पां-  
च दिन ३ अष्ट गुरु द्रोणाचार्य लड़े, दो दिन कर्ण ने युद्ध किया और आधा  
दिन मारवाड़ ४ का राजा सत्य लड़ा आधे दिन में ५ दुर्योधन लड़ा और  
भीमसेन से गदायुद्ध भी हुआ ६ दिनों में ७ चत्रियों के कुल कटे ८ रात्रि  
में, अश्वत्थामा ९ कृपाचार्य १० कृतवर्मा ने ११ विश्वास युक्त (निःशङ्क) १२  
सूची हुई पांडवों की प्रतापवाली सेना को मारी १३ स्तुति योग्य १४ अश्व-  
मेध १५ अन्त में १६ अठारह पर्वों के इस प्रकार नाम हैं

पर्व नाम संग्रह कह्यो, यौ \*प्रत्येक गिनाय ॥

अथ पर्वन मैं जे कथा, ते भाखत हित लाय ॥ २३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायण तृतीयराशौ वीतिहो  
त्रचहुवानशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावि-  
तमहाभारतसमासेसञ्जयधृतराष्ट्रसमाऽऽश्वासनमहेतिहासमाहात्म्य  
समन्तपञ्चकोद्भवसूचनाऽक्षौहिण्याऽऽदिपरिसङ्ख्यानयुद्धादिनयोधा  
ऽऽदिविवेचनपर्वनामसंग्रहणमेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥ आदित  
एकषष्ठितमः ॥ ६१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पञ्चदिका

उत्तंक चरित<sup>१</sup>पहिलैं उदार, भृगुवंस<sup>२</sup>बहुरि विस्तैर प्रकार ॥

आस्तीक चरित<sup>३</sup>आख्यान जुक्त, जहँ गरुड<sup>१</sup>नाग<sup>२</sup>उतपत्ति<sup>४</sup>उक्ते

सुर<sup>१</sup>असुर<sup>२</sup>छीर<sup>३</sup>सागर मथान<sup>५</sup>, उच्चैःश्रवा<sup>३</sup>उच्चैःश्रवा<sup>६</sup>बिधान ॥

पुनि दंदसूक्त<sup>१</sup>मखहोनबात<sup>७</sup>, भारतकथा<sup>१</sup>निका चलन<sup>८</sup>ख्यात ॥२॥

बलि विविध नृपनके जन्मवंस<sup>९</sup>, श्रीव्यासजन्म<sup>१०</sup>अवतार अंस ॥

पुनिदेव<sup>१</sup>दैत्य<sup>२</sup>दानव<sup>३</sup>रुजच्छ<sup>४</sup>, रक्खंस<sup>५</sup>रुनाग<sup>६</sup>अहि<sup>७</sup>वंस<sup>८</sup>अच्छ

इस प्रकार \*हर एक पर्व के जुदे जुदे नाम गिना कर सब पर्व हकछे कहिये  
हैं और इन पर्वों में जो कथा है वह अथ स्नेह करके कहते हैं ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अ-  
र्थात् समकालीन सूत पुत्र (उग्रस्रवा) का महाभारत सुनाना, संक्षेप से  
संजय का धृतराष्ट्र को आश्वासन करना, महाभारत का माहात्म्य, समन्त  
पञ्चक तीर्थ के पैदा होने की सूचना, अक्षौहिणी की गिनती, युद्ध के दिन में  
योद्धा आदि का विवेचन, पर्वों के नामों के संग्रह का उशीसवां मयूख समाप्त  
हुआ ॥ १९ ॥ और आदि से हकसठ मयूख हुए ॥ ६१ ॥

१ विस्तार से २ कहीं ३ क्षीरसमुद्र का मथना ४ उच्चैःश्रवा नामक घोड़े के  
५ जन्म का ६ सर्प यज्ञ होने की वार्ता ७ कथा का ८ पुनि ९ यज्ञ १० राक्षस  
११ सर्प (वासुकि को आदि लेकर बहुत फणोंवाले अथवा मनुष्य के आका-  
रवाले फल और पूँछवाले सर्प) १२ सामान्य सर्प

गंधर्व१विहग१भवभूत भाय, अंसावतार हुव सर्व आय१२ ॥  
 पुनि विपिन कण्वमुनि राज धाम, चलि आय भूप दुर्खंत नाम१३।४।  
 तहँ इक१सकुंतला नारि पाय१४, सुत भरतनाम ताविच विधाय१५॥  
 जिहि भरतहि तु यह भुम्मि रूपात, भारतकुल प्रकटयो गिनहु ताना५।  
 संतनुके पुनि वसु सप्त७७७१६, गंगा विचवहँ पहुँचे अमुत्र१७ ॥  
 ताकैहि महाव्रत हुव१८वहोरि, लै ब्रह्मचर्य दिय राज्य छोरि१९॥६॥  
 व्रत निज करि पालन भीष्म वीर, चित्रांगद रच्छा कियउ२०धीर॥  
 गंधर्व हन्यौ चित्रांग देस२१, तब किय विचित्र विजहि नरेस२२।७।  
 लहि पुनि मुनि अशि मांडव्य साप, अंतकवतार हुव विदुर२३आप ॥  
 द्वैपायनसौ हुव तदनु रूपात, धृतराष्ट्र पांडु२४ उभय२५भात२४।८।  
 पुनि धर्मसुजोधन२आदि सर्व, लै जन्म बढे२५जित देवगर्व ॥  
 जतुनिलय वारणावत पठाय, किय कपट सुजोधन२६दहनकाया६।  
 जहँ विदुर मिच्छ भाखा समर्थ, उपदेश कियउ नृप धर्म अर्थ२७॥  
 तिहि खोजि सुरंगाद्वार धर्म, सकुटुंब विपिन विहरिय२८सुकर्म॥१०॥  
 सुत पंचपसहित भिल्ली१समेत, हुव भस्म विरोचन२९कुटिलचेत ।

१ पक्षी२ संसार के प्राणियों की रीति से सब अंशावतार हुए ३ वन में कण्वमुनि के स्थान पर ४ दुष्यन्त नामक राजा गया जिसने सकुन्तला नामक स्त्री को पाकर उसमें भरत नामक पुत्र पैदा ५ किया उसी भरत ६ से यह भूमि भरत खण्ड नाम से प्रसिद्ध हुई और उसी भरत से भारतकुल प्रकट हुआ राजा शन्तनु के गंगा में सात पुत्र वसु नामक देवता हुए सो ७ परलोक पहुँचे जिस पीछे उसी शन्तनु के गंगा में ८ भीष्म हुए जिन्होंने ब्रह्मचर्य लेकर राज्य छोड़ दिया भीष्म ने अपना व्रत पालन करके छोटे भाई चित्रांगद की रक्षा की ९ इसी चित्रांगद को गन्धर्व ने मार डाला तब १० विचित्रवीर्य को राजा बनाया अशिमांडव्य नामक मुनि का आप लेकर ११ यमराज का अवतार विदुर पैदा हुआ १२ जिस पीछे १३ वेदव्यास से १४ प्रसिद्ध धृतराष्ट्र और पांडु दोनों भाई हुए १५ लाक्षाग्रह में वारणावतपुर भेज कर जहाँ पर विदुर ने १६ स्लेच्छ भाषा में १७ युधिष्ठिर को उपदेश किया कि दुर्योधन तुमको मारने के लिये वारणावत भेजते हैं सो सावधान रहना इत्यादि, तहाँ युधिष्ठिर ने १८ सुरंग का दरवाजा खोज कर कुटुम्ब सहित श्रेष्ठ कर्म करनेवाले १९ वन में विहार कर गये उस लाक्षाग्रह में पाँच पुत्रों सहित एक २० भीलखी

वनविच हिडंब लिय भीम मारि ३०, परनी सुहिडंबा ३१ समय पारि ११॥  
 हैडंब जनम अत्रैव आस ३२, अत्रैव आय दिय दरस व्यास ३३ ॥  
 तिन बचन एकचक्रानिवेस ३४, द्विजगेह रहिय सब गुप्त बेस ३५॥  
 पुनि भीम हनिय बर्क ३६ रन प्रचार, नागर जन विस्मित हुव ३७ अपार ॥  
 अरु धृष्टद्युम्न उद्धव ३८ अनूप, सहजाहि तास कृष्णा ९३ सुरूप ॥ १३॥  
 तदनंतर अर्जुन गंगतीर, अंगारपर्णा जीत्यो ४० प्रवीर ॥  
 सुनै उदंत ४१ करि सुद्ध ताहि, तापत्य १ और्व वासिष्ठ ३ चाहि ॥ १४॥  
 पुनि जाय पत्य सब नृप निषेधि, कृष्णालिय ४२ भुजबल लक्ष्य बेधि ॥  
 अरु सल्य १ कर्ण २ मुखजितिसर्व, जय १ भीम किय उषिक्रम ४३ अखर्व ॥  
 सुहि देखि रामै कृष्णा २हु उदार, पांडुवन होय इम किय बिचार ४४ ॥  
 मिलि पंच भ्रात किय एक १ नारि ४५, यह जानि द्रुपद लिय कोप धारि ४६  
 हुव पंच ५ इंद्र आख्यान तत्र ४७, करि दैव व्याहंसु लहिय कलैल ४८ ॥  
 विदुरागम हुव ४९ पांडवन पास, बैल १ कृष्णा २ मिले ५० रचि हिय हुलास ॥  
 किय बहुरि जाचना रहन काज, पावहिं स्वकीय हम अर्द्धराज ५१ ॥  
 तदनंतर नारद हुकम अप्पि, दिय द्रुपद सुता संकेत ५२ थप्पि ॥ १८॥

और खोटा चित्तवाला त्रिरोचन भस्म हांगय भीमसेन के पुत्र हैडंब का जन्म १ वहीं पर २ हुआ और वहीं पर वेदव्यास मिले जिनके कहने से ३ एक चक्रा नामक पुर में वास करके ब्राह्मण के घर में छिप कर रहे ४ यकासुर को ५ नगर निवासी लोग ६ आश्चर्य युक्त हुए फिर धृष्टद्युम्न का अनुपम ७ जन्म होना और उसके ८ साथ ही ९ द्रौपदी का होना १० जिस पीछे अर्जुन ने गंगा की तीर पर अंगारपर्ण को जीता ११ और १२ अर्जुन ने १३ उर्व सुनि के पुत्र और्व को और वशिष्ठ को १४ मित्र बनाकर १५ वृत्तांत सुने फिर १६ अर्जुन ने द्रुपद के पुर में जाकर सब राजाओं को हटा कर अपने भुज बल से लक्ष्य बेध करके १७ द्रौपदी प्राप्त की १८ आदि १९ अर्जुन और भीमसेन ने २० बड़ा पराक्रम किया २१ यलदेव ने यहां पांच इन्द्र की कथा कह कर द्रुपद को समझाया और दैव (आठ विवाह जो ऊपर लिख आये हैं उनमें से दैव नामक) विवाह करके पांच भाइयों ने एक २२ स्त्री ली २३ विदुर का आना २४ यलदेव २५ अपना आधा राज्य पाने की याचना की फिर नारद ने आज्ञा देकर द्रौपदी के पास एक एक वर्ष तक एक एक भाई रहे यह संकेत पांडवों में स्थापन कर दिया

सुन्दोऽपसुन्दश्चाख्यानऽसंखि, परनारि संग अवरोधऽसंखि ॥  
 इक समय जुधिष्ठिर निज निकेतं, एकांत लसत कृष्णा समेत ॥१९॥  
 श्रुतं द्विजपुकार जय तत्थ जाय, निज सख लैरुक्थि द्विज सहाय ५५॥  
 बलि व्है व्रतस्थं लिय विपिन वास ५६, इहिं तत्थ उल्लूपी संग आसं ५७२०  
 जयपुण्यतीर्थ अभिगमन ५८ जानि, बलि बभ्रुवाह उद्धव ५९ बखानि ॥  
 पुनिविप्र साप धृत नक्रकाय, अच्छरिनि मुक्ति बर्णन ६० सुभाय ॥२१॥  
 हरि १ पत्थ २ मिले तीरथ प्रभास ६१, हरि हुकम सुभद्रा प्राप्ति ६२ तांसा  
 हरिआत्तहरन मिलिहुवसहाय ६३, अभिमन्यु जनम ६४ पुनिअवधिपाय  
 हुवद्रौपदेय पंच ६५ हि ६५ उदार, बलि हरि १ जय जमुना तट बिहार ६६ ॥  
 तहँ आश्रयास द्विजरूप आय ६७, तिहिं पांडव दिय खांडव चराय ६८ ॥  
 मय १ असुर दियउ दवत उबारि ६९, सारंग १ भुजंग १ हु दियउ टारि ७० ॥  
 इत्यादि कथा बिच आदिपर्व १, अध्याय वृत्त संख्या ५ वें सर्व ॥२४॥

॥ दोहा ॥

सत दुव सत्तावीस २३७ है, यहँ अध्याय अमंद ॥

अष्टसहस्र रु अष्टसत, चउरासी ८८८४ सब छंद ॥ २५ ॥

१ सुन्द और अपसुन्द नामक दो भाई एक स्त्री पर लड़कर सारंग पंथ उनकी कथा  
 सिखा कर कहा कि ऊपर के नियम के विरुद्ध जनाना में जाना है वह परस्त्री के  
 साथ गमन करना है ऐसा जानो, इस पीछे एक समय युधिष्ठिर अपने घर में द्रौ-  
 पदी के साथ एकान्त में श्राभायमान था सो एक ब्राह्मण की पुकार १ सुन  
 कर उसकी सहाय के लिये अपने शस्त्र लेने को वहां अर्जुन चला गया इस  
 कारण से ब्राह्मण की सहाय क्रिये पीछे ६ फिर ७ नियम में स्थित होकर  
 ८ वनवास लिया तहां पर अर्जुन से ९ उल्लूपी नामक नागकन्या का सं-  
 ग १० हुआ. अर्जुन का पुण्यतीर्थों में ११ जाना और अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन का  
 १२ जन्म कहा गया है. एक ब्राह्मण के शाप से पांच १४ अप्सरायें १५ भगर रूप  
 होकर पंचतीर्थों में रहती थीं जिनका अर्जुन से उधार होने का वर्णन १६ अ-  
 र्जुन को कृष्ण के हुकम से सुभद्रा की प्राप्ति हुई और उस हरण १७ करने में  
 सुभद्रा को पकड़ते ही कृष्ण अर्जुन के सहाई होगये १७ द्रौपदी के पुत्र १८ फिर  
 १९ कृष्ण और २० अर्जुन का २१ अग्नि ब्राह्मण का रूप करके आया जिसको  
 अर्जुन ने खाण्डव वन चरा दिया २२ सारंग पक्षि २३ सर्प को भी बचा दिया  
 २४ छन्दों की गणना २५ अब सब कहने हैं २६ मन्दता करके रहित



अब दूजो २ आरंभियत, सभापर्व २ अभिधान ॥

बहुत रुचिर वृत्तांत जुत, बंधुन बैर निदान ॥ २६ ॥

॥ पञ्चाटिका ॥

गिनि प्रथम क्रिया परिखंदविधान१, पुनितहँकिंकरंदरसनकथान२  
लोकेसँ सभा आख्यान३तत्र, पुनि राजसूय आरंभ सँत ४ ॥२७॥

मगधेसँ नास बलि भीम किन्न५, अरु रुद्धं नृपन हरिसुक्त दिन्न६ ॥

पांडवन चउ ४ नदिगाविजय कर्म ७, सब नृपन सत्र आरंभ ८ससँर्म॥

तहँ अर्घबाद बिच गिनि कुभाँस, हरिकिय निसंक सिसुपाल नास९

कुरुराज सुजोधन तत्थ आय१०, लखि पर समृद्धि अमरख नमाय११

दिगमूढ भयो१२परिखंद विलास, क्रिय सुँ लखि भीम अद्वाद्वाहास१३

तिहिँ अनख सुजोधन रचिय द्यूत१४, सरबस्वहि जीत्यो सुबलपूत१५

कृष्णाँहिँ दुखित तहँ देखि अंध, कीनों पुनि पांडव सुक्तबंध१६ ॥

यह जानि सुजोधन हुय उदास१७, पुनि द्यूत जीतिदिय बिपिन बास१८

इत्यादि कथा आख्यान सब, संजुक्त सभा२ अभिधान पर्व ॥

यायँहु दृत्त अध्याय माँन, संख्या समस्त सुनिष सुजान ॥ ३२ ॥

अध्याय अष्टा१३मिते अमंद, दुवर सहँस पंच५ सत रुद२५१छंद

१ सभापर्व २ सुन्दर ३ भाइयों के बैर का कारण ४ पहला काम स-  
भा रचने का है और फिर उस सभा को अपने ५ सबको का दिखाने की  
६ कथा है वही पर ७ ब्रह्मा की सभा की कथा है और फिर राजसूय ८  
यज्ञ का आरंभ है ९ जरासन्ध को भीम ने मारा और जरासन्ध के १०  
कैदी राजाओं को कृष्ण ने छोड़े और सब राजाओं का यज्ञ में ११ सुख पूर्व  
क ११ आना प्रथम १३ पूजा किसकी की जावे इस वाद में १४ छोटे वचन-  
बोलने से कृष्ण ने शिशुपाल को मारा ॥ १६ सभा को देखने में १५ दिशाभूल  
होगया १७ उसको देख कर भीमसेन उच्च स्वर से हसा उस  
१८ क्रोध से १९ शकुनि वहाँ पर २० द्रौपदी को दुखी देख  
कर २१ धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को उस दून में हार जाने के २२ वन्धन से छोड़ दि-  
या अर्थात् उनके सर्वस्व पीछा उनकी दे दिया २३ फिर दून में जीत कर पांड-  
वों को वनवास दिया २४ इनको आदि लेकर कथा और आख्यानों सहित स-  
भा २५ नामक पर्व है जिस में २६ छन्दों का २७ प्रमाण २८ प्रमाण

इम पर्वसभा२ नामक बखानि, अब विपिन३पर्व आरंभ जानि । ३३।  
इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयराशौ वीति-  
होत्रचहुवाणशत्रुघ्न४जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावि-  
तमहाभारतसमासे प्रथम१सभा२पर्वकथासमसनं विंशतितमो मयू-  
खः ॥ २० ॥ आदितो द्विषष्टितमः ॥ ६२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पञ्चाटिका ॥

पौरानुगमन नृप धर्म संग१, रवि आराधन२ व्रत होत भंग ॥  
धौम्योपदेश३ अरु रवि प्रसाद४, हुव अन्न ऋद्धि५मेढन बिखादी१।  
धृतराष्ट्र बहुरि सुत लोभ धारि, छत्ता हित भाखत दिय निकारि६  
वह गयउ पांडुपुत्रन समीप७, पुनि लियउ बुद्धि८अनयन महीपा२।  
पांडव बंनस्थ हनिये स्वतंत्र, इम कियउ सुजोधन१ करन२ मंत्र ९॥  
यह दुष्टभाव लखिव्यास आय१०, किय रोधे सुरभि आख्यान गाय११  
मैत्रेय मुनिहु कोपित अमाप, दिय भिदन सुजोधन सक्थि साप ॥  
रन भीम हनन किर्मीर१२घाय, पांचाल १३वृष्णि२पुनि मिलन आय१३

श्रीविंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा-  
न शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् एक  
समय में होनेवाले नूतपुत्र (उग्रश्रवा) के संक्षेप से महाभारत खनाने में आ-  
दिपर्व और सभापर्व की कथा के संक्षेप का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २०॥  
और आदि से वासठ मयूख हुए ॥ ६२ ॥

अब आगे वनपर्व की कथा कहते हैं कि १ पुर के लोगों का २ युधिष्ठिर के  
साथ जाना और सदैव ब्राह्मण भोजन कराते थे उस ३ व्रत का भंग होते  
देख कर धौम्य ४ मुनि के उपदेश से सूर्य की आराधना करना जिस से सूर्य  
ने प्रसन्न होकर एक पात्र दिया उस पात्र में दुग्ध को मेटनेवाली अश्व-  
त्थि की समृद्धि होना, हित की बात कहते हुए ७ विदुर को निकाल दि-  
या वह विदुर पाण्डवों के पास चला गया जिसको ९ अंधे राजा (धृतराष्ट्र)  
ने पीछा बुलाया १० वन में ठहरे हुए ११ सलाह १२ रोक, कामधेनु और इ-  
न्द्र का आख्यान कह कर (इस आख्यान से यह सिद्ध किया है कि संसार  
में पुत्र से प्यारी कोई वस्तु नहीं है) मैत्रेय मुनि ने दुर्योधन की १४ जंघा १५  
तूटने का आश दिया, भीमसेन ने किर्मीर को मारा १६ और धृष्टद्युम्न आदि

सकुनी ठगि जीते सुनि समस्त, हरि कोप किय सुं किय पँथ ध्वस्त १४  
 कृष्णो परिदेवन सुनि कृपाल, हरि दिय विसास १५ सुनिये नृपाल ॥  
 लै संग सुभद्रा सुत समेत, पहुँचे मुँकुंद अपने निकेत १६ ॥  
 भानेज पंच ५ लै अप्प संग, बेदी जँह पहुँच्यो द्रुपद द्रंग १७ ॥ ६ ॥  
 पुनि द्वैत बिपिन पांडव प्रवेस १८, संवाद १९ द्रौपदी सह नरेस २० ॥  
 इम धर्म श्रीम २ संवाद २० आस, इरसन दिय तत्त्यहि आय व्यास २१  
 उपदेशेन विद्या २२ दुलभ दान, जिम पांडव काम्यक बिपिन जान २३  
 अरु अस्त्र अर्थ अर्जुन विवाँस २४, सबराँ कृति शिवसँह जुद्ध २५ ताँसा ॥  
 पुनि लोकपाल दरसन २६ प्रसंग, इम अस्त्र मिलन २७ पत्थहिँ अभंग  
 जयँ गयउ अस्त्र हित इंद्रलोक २८, पुनि हुव नृप अंधहिँ अधिक सोक  
 वृहदश्व दरस ३० नृप व्यसन बत्त ३१,  
 दमयंती २ नल १ आख्यान ३२ तत्त ॥

पुनि दत्तहृदय पांडव प्रवेस ३३, तँहँ आय त्रिदिवँ सन लोमसेसँ ३४  
 तिनतँ सुनि जय दिविँ विद्यमान ३५, अजमीढ करि तीरथ प्रयान ३६ ॥  
 दिनेँ कर सुत कुंडल २ कवच १ त्याग ३७, गय नृप को कीर्तन विभव जाँग ३८

पंजाबवाले और कृष्ण आदि वृष्णि वंशी यादवों का पांडवों से मिलने को जाना १ कृष्ण ने क्रोध किया २ सो ३ अर्जुन ने ४ मिटाया और ५ द्रौपदी का ६ विलाप सुन कर कृष्ण ने विश्वास दिया ७ कृष्ण अपनी बहिन सुभद्रा को अभिमन्यु सहित ८ द्वारका ले गये और अपने भानजों (द्रौपदी के पुत्रों) को १० धृष्टद्युम्न ९ अपने भंग ११ द्रुपद पुर ले गया १२ द्वैत वन में १३ युधिष्ठिर के साथ द्रौपदी का सम्वाद और इसी प्रकार युधिष्ठिर और भीमसेन का संवाद १४ हुआ दुर्जय विद्या का १५ उपदेश देना १६ अस्त्रों के लिये अर्जुन का विदेश जाना (दूरवास करना) १७ आल की आकृतिवाले १८ महादेव से १९ अर्जुन का युद्ध होना फिर अर्जुन से लोकपालों का मिलना और अभंग अस्त्रों का मिलना २० अर्जुन का इंद्रलोक जाना और धृतराष्ट्र को अधिक शोक होना वृहदश्व नामक ऋषि का दर्शन होना और युधिष्ठिर की आपदा का कथन और नल दमयंती का आख्यान २१ स्वर्ग से २२ लोमस नामक सुनि से २३ अर्जुन २४ स्वर्ग से २५ वर्तमान है यह सुन कर अजमीढ नामक तीर्थ को गये २६ कर्ण का कुण्डल और कवच २७ देना और २८ यज्ञ ही है विभक्त जिम्मा ऐसे नव देव को दिया।

पुनि पुनि अगस्ति आख्यान ३९ जानि, बातापि असुर मारन ४० बखानि  
 तत्थहि अगस्ति सुत लोभलीन, लोपासुद्रा अभिगमन कीन ४१ ॥ २१ ॥  
 वलि कण्वशृंग मुनि चरित बात ४२, द्विजैराम कुपित है हय निपात ४३  
 पुनि मिलन वृष्णि १ पांडव प्रभास ४४, आख्यान तत्थ सौकन्य ४५ आस  
 दसन दिवाय जहँ सोम भाग, हुब तरुन च्यवन ४६ सर्याति जाँग ॥  
 मांधातृ भूप आख्यान ४७ ज्योहिँ, तहँ रुचिर जंतु आख्यान ४८ ज्योहिँ ॥ २४ ॥  
 सेन १ रुक्पोत २ आख्यान ४९ सार, अरु कथन भूपसि वि ५० अति उदार ॥  
 मिलि जनक सब धिच अपमाद, बंदी १ अरु अष्टावक्र बाद ५१ ॥ २५ ॥  
 दकराज तनय जहँ न्याय देख्य, बंदी वह जितिय बाद ५२ अछ ॥  
 जवकीत १ रैभ्य २ आख्यान ५३ गान, अरु अदि गंधमादन प्रयान ५४  
 नारायन आश्रम तिम निवास ५५, पुनि आजनेय दरसन ५६ प्रकास ॥  
 जुझन कव्यादिन भोम जोध ५७, मणिमान आदि जच्छन विरोध ५८

फिर बारंवार अगस्ति ऋषि का आख्यान है. जिसमें अगस्ति का बातापि असुर  
 को मारना और पुत्र उत्पन्न करने के लोभ से १ लोपासुद्रा नामक अपनी  
 स्त्री से भोग करना २ परशुराम ने क्रोध करके ४ हैहय को मारा फिर ७ प्र  
 भास तीर्थ में ६ कृष्ण और पांडवों का मिलना और राजा शर्याति की पु  
 त्री सुकन्या का च्यवन ऋषि को मिलने का आख्यान ८ हुआ. च्यवन ऋ  
 पि का वृक्षावस्था से तरुण होना और राजा शर्याति के ११ यज्ञ में ६ अश्वि  
 नीकुमारों को १० असुर का भाग दिलाना, फिर मांधाता का आख्यान औ  
 र राजा सोमक के जन्तु नामक पुत्र हुआ उसको काट कर यज्ञ में होम देने  
 से सोमक के सौ पुत्र होने की सुन्दर कथा है. राजा उसीनर के धर्म की परी  
 जा के लिये इन्द्र ने श्येन पक्षी का और अग्नि ने कपोत का रूप धारण कि  
 या जिसकी कथा का सारांश और राजा शिवि की उदारता की कथा है,  
 फिर जनक के १२ यज्ञ में सावधान अष्टावक्र मुनि और बन्दी के शास्त्रार्थ  
 में १३ वरुण के पुत्र उस बन्दी को जो न्याय में १४ चतुर था अष्टावक्र ने जी  
 त कर समुद्र में डुबो दिया जिसकी कथा है और यवकीत का रैभ्य ऋषि  
 की पुत्री बधू से भोग करना और रैभ्य ऋषि का क्रोध करके यवकीत के मारने  
 को एक स्त्री और एक राजस को उत्पन्न करके यवकीत को मारना और पा  
 ण्डवों का गन्धमादन पर्वत पर जाना ॥ १५ ॥ १६ ॥ १५ हनुमान का भीमसेन  
 को दर्शन होता १६ राजसों से भीमसेन का युद्ध १७ यक्षों से विरोध होना

रन भीम जटासुर मारि लिन्न ५९, कैलास अद्रि आरोहं किन्न ६० ॥  
 मृडं मित्र सहित पांडव भिलाप ६१, बंधुन तहं दिविगंत पथं प्राप ६२  
 पौलोमं कालकेयादि जंग, जयं सब निवातकं वच किय भंग ६३ ॥  
 पुनि धर्मराजको सबहि पथ, आनै सु दिखाये अर्थ अर्थ ६४ ॥ १९ ॥  
 निर्गन्धो पारिंद्रहु भीम ६५ चाहि, कहि प्रश्न छुरायउ धर्म ताहि ६६ ॥  
 पांडवसुनिकाम्यकविपिन आय ६७, श्रीकृष्णसमागमतहं ६८ सुभाय ॥  
 अगै मृकंडसुत सुनि उदंत ६९, श्रीपृथु आख्यान ७० हु सुखद संत ॥  
 संवाद ७१ सरस्वति १ गरुड २ सुद्ध, पुनि मत्सक आख्यान ७२ हु प्रबुद्ध २१  
 जिम इंद्रद्युम्न आख्यान ७३ जानि, नृप धुंधुमार आख्यान ७४ मानि ॥  
 निकटहि पतिव्रता ७५ आख्यान ७५ नाम, आख्यान आंगिरस ७६ पुनि लंलाम  
 सत्यो १ कृष्णो २ संवाद ७७ श्रेय, वन द्वैत गये पांडव ७८ अजेय ॥  
 पुनि सुनहु घोषयात्रा ७९ प्रभूत, पकखो गंधर्वन अंधूपूत ८० ॥ २३ ॥  
 तब बद्ध सुजोधन लज्जमान, जयनैहि छुरायो ८१ वह अजान ॥  
 मृगस्वप्ननिर्देसन ८२ नृपहि तथ, अरु काम्यकवन प्रबिसन ८३ समथा ॥

१ कैलास पर्वत पर २ चढे ३ महादेव के मित्र (कुबेर) से पांडवों का मिलना  
 और वहीं पर ४ स्वर्ग में गये हुए ५ अर्जुन का भाइयों से ६ मिलना ७ पौ  
 लोम और कालकेय आदि दानवों से युद्ध होना और ८ अर्जुन का १० निवातक  
 वचों को नष्ट करना फिर अर्जुन जो ११ अस्त्र लाया उसको १२ यहाँ पर  
 युधिष्ठिर को दिखाना ॥ १६ ॥ भीमसेन को १४ अजगर सर्प ने १३ अस  
 (गिट) लिया जिससे प्रश्न करके १५ युधिष्ठिर ने भीमसेन को छुड़ाया १६  
 वन में ॥ २० ॥ मार्कंडेय ऋषि का युधिष्ठिर से अनेक १७ वृत्तान्त कहना १८  
 प्रंडिताई का ॥ २१ ॥ १९ पतिव्रता का आख्यान २० सुन्दर ॥ २२ ॥ २१ स  
 त्यभामा और २२ द्रौपदी का सम्वाद अपने पति को वश में करने के विषय  
 में हुआ फिर घोष यात्रा (गायों की संभाल करने के मिस से पांडवों को  
 अपना वैभव बताने के अभिप्राय से) में २३ बहूतों के साथ [विभव सहित]  
 २४ दुर्योधन गया जिसको गन्धर्वों ने पकड़ लिया उस लज्जा पाये  
 हुए बंधुए दुर्योधन को अर्जुन ने ही छुड़ाया २५ द्वैतवन के मृगों  
 की राजा युधिष्ठिर से प्रार्थना करना और उसी उदाहरण से पां  
 डवों का द्वैतवन छोड़ कर काम्यकवन में जाना

जँहँ ब्रीहिद्रौणिकाऽऽख्यान ८४ जानि, दुर्वासस आख्यान ८५ हुप्रमानि  
 कृष्णाको सिंधुपँ सूढ चौरि, लैजात टुकोदर पिष्टि दोरि ॥ २५ ॥  
 गहि लियउ जयद्रथ भीम जाय, छोरयो सुपँश्रपसिख करि ८६ कुभायँ  
 पुनि रामायन आख्यान ८७ नाम, रावन जँहँ मारिय भूप राम ८८ ॥ २६ ॥  
 सावित्री आख्यान ८९ हु अभंग, पुनि अति उदार रबिसुत प्रसंग ९० ॥  
 वृष दान तुष्ट सुँरराज चाहि, दिय एक श्रधातिनो सक्ति ताहि ९१ ॥ २७ ॥  
 निम आरण्य आख्यान ९२ जानि, पश्चिमदिस पांडव गमन ९३ मानि  
 त्यादि कथा आरण्य ३ पर्व, अध्याय तँत संख्याऽबँ सर्व ॥ २८ ॥

दोहा

दुवरसत गुनहंतरि २६ एगिनहु, आरण्यक ३ अध्याय ॥

छंद सहँस ग्यारह ११ छंद सत, सचउ सठि ११ ६६४ समुदाया २९ ॥

नराचः

लग्यो विराट पर्व पांडवेयँ बेस लुप्त व्है १ ॥

सँमो मसान तिष्ठँमँ छिपाय सख २ गुप्त व्है ॥

प्रछन्न नैरँमँ प्रबेसँ मत्सपँ रहे ३ सबै,

कुमार्ग सील कीचकाऽऽख्य भीमनँ हन्यौ ४ तबै ॥ ३० ॥

एक १ द्रोण [धान्य का तोल विशेष, सौलह सेर, मतांतर से बत्तीस सेर को द्रोण कहते हैं] २ धान्य का दान किया था उसकी कथा और दुर्वासा पांडवों को आप देने गये वह आख्यान और ३ द्रौपदी को ४ जयद्रथ हर कर लेगया जिसके पीछे दौड़ कर ५ भीमसेन ने पकड़ लिया और ७ बुरी तरह से ६ मुँडन करके छोड़ा राजा अश्वपति की कन्या सावित्री के प्रताप से उस के मरे पति का जीवित होना आदि कथा ८ कर्ण के पास से इन्द्र का कच, कुंडल मांगना ९ कर्ण के दान से प्रसन्न होकर १० इन्द्र का कर्ण को एक वीर को ११ मारनेवाली बरछी देना ॥ २७ ॥ द्वैतवन में एक मृग के सींग में ब्राह्मणों के अरणी का काष्ठ उलझ गया उसे लेकर जो मृग चला गया उस को पांडवों ने मारा जिसका आख्यान और पांडवों का पश्चिमदिशा में जाना, इनको आदि लेकर वनपर्व में कथा है १२ छन्दों की संख्या १३ अब ॥ २८ ॥ १४ पांडु के पुत्र बेस छिपा कर श्मशान भूमि में १५ खड़े हुए १६ खेज-फि के वृक्ष पर १७ नगर में १८ छोटे मार्ग में है शील जिसका ऐसे कीचक

रु पांडवेय सोधकों दुजोध चार थप्पये५ ,  
 महाबली तँथापि काल जानि ख्यात नाँ भये७ ॥  
 बहोरि व्है त्रिगर्त सज्ज धेनु मत्सकी हरी६,  
 तहाँहु भीम गो छुराय जीत मत्सकी करी८ ॥ ३१ ॥  
 हरी बहोरि धेनु भीष्म द्रोण आदि आयकै९,  
 तहाँ समस्त पत्थनैँ जैये कलंब घायकै१० ॥  
 विगट भप पँथकों सुता जु उत्तरा दई११,  
 सुधर्म धीर पत्थनैँ स्वकीय पुत्रकों लई१२ ॥ ३२ ॥

दोहा

यँहँ चतुर्थ४वैराट४विच, सडसठि६७मित अघ्याय ॥

दुव२सहस्रपंचास२०५०मित, सुंदर छँत्त सुभाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय३राशो वाति  
 होत्रचहुवाणशत्रुघ्न५३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसोतिश्री-  
 वितमहाभारतसमासे वन३विराट४पर्व२कथासमसनमेकविंशो  
 २१मयूखः ॥ २१ ॥ आदितस्त्रिषष्टि६३तमः ॥ ६३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

नामक को मारा ॥ ३० ॥ १ अरु पांडवों को सोधने के लिये २ दुर्योधन ने  
 ३ हलकारे (दूत) ४ तो भी ५ समय को जान कर ६ प्रसिद्ध नहीं हुए  
 ७ सुशर्मा ने (यहाँ पर उपादान लक्षणा से त्रिगर्त देश के कथन से त्रिगर्त  
 देश का पति जाना) विराट के पति मत्स नामक राजा की गायें ८ हरी वहाँ  
 भी भीमसेन ने ९ गौवाँ को छुड़ा कर १० मत्स नामक राजा की विजय करी  
 ॥ ३१ ॥ ११ अर्जुन ने जीत लिये १२ वाण छाकर १३ विराट के राजा ने उत्तरा  
 नामक अपनी पुत्री अर्जुन को दी १४ सो १५ अपने पुत्र (अभिमन्यु) के लिये  
 ली ॥ ३२ ॥ १६ प्रमाण १७ छन्द ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा-  
 ण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका पस-  
 चत के पुत्र का महाभारत सुनाने के संक्षेप में वन और विराट पुर की क-  
 था के संक्षेप का इकसिवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ २१ ॥ और आदि से तिर-  
 सठ मयूख हुए ॥ ६३ ॥



## पञ्चाटिका

अब सुनहु पर्व उद्योगधनाम, संग्राममूल कुरुकुल विराम ॥  
 तहँ प्रथम सुजोधन२विजय१दोय२, हरि वरन द्वारका प्राप्त होया१॥  
 पुनि दुहुन२कहिय रन करहु भीरँ, पहिचानि कह्यो हरि भक्ति पीरा॥  
 मैं सचिव निरायुध एक१ओर, इक१धौँ अछोहिनि कंटक घोरा२॥  
 इनमाँहिँ कोन किहिँ द्यौँ१अबार, सेना लिय नृप२तब जानि सार॥  
 लिय कृष्ण निरायुध सचिव पत्थ३, पुनि अवर नृपन आगम४समत्य३॥  
 कुरुराज हँच्यो नृप सत्य आत५, दै गुप्तभोग छल हित दिखात॥  
 पुनि सल्लय आय नृप धर्म पास६, तहँ कहिय इंद्र जय७वृत्र नास८॥  
 दिय दुपद पुरोहित उँत पठाय९, कहि सुनि गँजपुरतँ सोहु आय१०॥  
 पठयो पुनि संजय भूप अंध११, मिलि सोहु गयो लखि ईन प्रबंध१२॥  
 अच्युतँ अरु पांडव२सुनि अभिन्न, धृतराष्ट्र प्रजागरँ रोग लिन्न१३॥  
 दिन्नौँ तहँ अंधहिँ बिदुर ज्ञान१४, पुनि सनतसुजातहु दिय१५सुजाना॥  
 प्रभुँवहुरिहस्तिनापुरपधारि, हितकहियतदैपिउन न लियधारि१६॥

अब उद्योग नामक पर्व को सुनो जो संग्राम का मूल और कुरुकुल का ?  
 नाश रूप है उसमें प्रथम दुर्योधन और २ अर्जुन कृष्ण को ३ वरने (स्वीकार  
 करने) को द्वारका गये ॥ १ ॥ १ सहाय करो, तब कृष्ण ने पांडवों की अ-  
 पने में भक्ति और उनकी पीड़ा देख कर कहा कि एक ओर तो मैं अकेला  
 ६ बिना आयुध ५ मन्त्री (सलाहकार) होकर रहूंगा ७ और एक ओर  
 मेरी एक ८ अर्जुनहिणी भयंकर ९ सेना रहेगी ॥ २ ॥ इस समय इनमें से  
 किसको क्या दूँ इस पर १० दुर्योधन ने ॥ ३ ॥ ११ मारवाड़ का राजा शल्य  
 पांडवों की मदद पर जाता था जिसको गुप्त रीति से खानपान पहुंचा कर  
 दुर्योधन ने अपनी ओर हरण कर लिया, फिर शल्य ने युधिष्ठिर के पास जा-  
 कर इन्द्र ने १२ वृत्रासुर को मारा सो कथा कही ॥ ४ ॥ १३ कौरवों को सम-  
 भाने के लिये दुपद ने अपने पुरोहित को १४ हस्तिनापुर भेजा सो कह सुन  
 कर पीछा आया फिर १५ धृतराष्ट्र ने संजय को भेजा सो १६ पांडवों का प्र-  
 बन्ध देख कर इनसे मिल गया ॥ ५ ॥ १७ कृष्ण और पांडवों को १८ एक सुन  
 कर १९ निद्रा नहीं आने का ॥ ६ ॥ २० कृष्ण हस्तिनापुर गये २१ तो भी कौर-  
 वों ने नहीं माना



तहँ दंभोजव आख्यान १७ जानि, मातलि वर खोजन १८ पुनि प्रमानि  
 तदनंतर गालव मुनि चरित्र १९, विदुलासुत अनुसासन २० पवित ॥  
 हरि दुष्ट कर्ण १ नृप २ मंत्र पाय, दिय सबन जोग प्रभुता दिखाय ॥ ८ ॥  
 कर्णहि बैलि निज रथ कन्ह अपि, कृष्णा विभाग हित हुकम अपि  
 राज्यादि लोभ दीने अनेक २१, मानी न एक १ वृख २२ वीर टेक १९।  
 हरि बहुरि पांडवन पास आय, सब हित उदंत अखिय २३ सुभाय।  
 सुनि पांडवेय हुव सँमर सज्ज २४, प्रस्थान रचिय २५ करि सिंह गज ॥  
 चतुरंग उभय २६ किय २६ अचूक, पठयो कुरुनृप दूतहु उलूक २७ ॥  
 पुनि रथ अतिरथ संख्या २८ प्रमानि, अबोपाख्यान २९ हु तथ जानि।

॥ दोहा ॥

सत रु छियासी १८६ कहिय मुनि, उद्यममै अध्याय ॥

खट ६ सहस्र खट ६ सत नवति, अष्ट ६६ ९८ वृत्त समुदाय ॥ १२ ॥

इम उद्योग समाप्त हुव, विग्रह १ संधि २ निधान ॥

वहाँ परशुराम ने राजा ? दंभोजव और नर के युद्ध का  
 आख्यान कहा और फिर वरुण की कन्या के लिये वर खोजने को २ मात-  
 लि गया जिसकी कथा है ॥ ७ ॥ ३ जिस पीछे विश्वामित्र के शिष्य गा-  
 लव की कथा है, और फिर विदला नामक क्षत्रियजाति की स्त्री ने उपदेश दे-  
 कर अपने पुत्र को वीर बनाया जिसका आख्यान है ४ कृष्ण ने ५ दुष्ट  
 कर्ण और दुर्योधन की कृष्ण को कैद करने की सलाह का भेद पाकर उनका  
 अपनी ६ योगप्रभुता (वैराटरूप) दिखाया ७ फिर कृष्ण ने कर्ण को अपने र-  
 थ पर बिठा कर दुर्योधन को छोड़ कर पांडवों से मिल जाने के अर्थ राज्या-  
 दि अनेक लोभ दिये जिस में यह भी कहा कि ८ द्रौपदी एक एक वर्ष एक  
 एक पति के पास रहती है उनकी जब पाँचों यारी (आसरा) पूरी होजाये  
 गी तब छठे वर्ष तुम्हारे पास भी रहेगी परन्तु धीरपन की टेक से ९ कर्ण  
 ने एक नहीं मानी ॥ ६ ॥ १० वृत्तान्त ११ कहा १२ अष्ट रीति से १३ पांड-  
 व १४ युद्ध के लिये नैवार हुए १५ गमन ॥ १० ॥ युद्ध में नहीं चूकनेवाली  
 दोनों सेना १६ चली उस समय दुर्योधन ने १७ उलूक नामी पुरुष को दूत  
 करके पांडवों के पास भेजा १८ अर्थात् पर काशिराज की कन्या अम्बा को भीष्म  
 बलराज्ये में जिसकी कथा है १९ ॥ २० उद्योगपर्वमें २० अंशोंका मसूदा है ॥ १२ ॥ इसप्र-  
 कार उद्योगपर्व समाप्त हुआ जो २१ विग्रह (युद्ध) २२ संधि [मिलाप] का २३ घर है

भीष्म पर्व ६ आरंभ अब, अर्थ विचित्र विधान ॥ १३ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

तँहँ प्रथमखंड जंबू प्रमान १, पुनि होन धर्म दल सीदमान २ ॥  
कलकलरनमस्त्रिगतुमुल ३ कोह, फालगुनहुवतत्थहिमग्गमोह ४ ॥ १४ ॥  
हरि मोहहन्यो ५ दै ज्ञानगूढ, पुनि भीष्म लख्यो अति बल प्ररूढ ६ ॥  
तजि रथ मलंगि जटुवंससक्र, भीसम पर दोरे पकरि चक्र ७ ॥ १५ ॥  
पुनि पत्थ सिखंडी ओट पाय, दै बान मँहाव्रत दिय गिराय ८ ॥  
सरसज्जा संतनु सुत सयान ९, उपैबहँ दयो जयँ मारि बान ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

एक १ सत रु अत्यष्टि ११७ मित, अत्थ कहिय अध्याय ॥

छंद सहँस सरप अष्टसत, चउरासी ५८८४ जुत लाय ॥ १७ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

अब द्रोणपर्व ७ वर्णन विवेक, तँहँ गुरुहि सैन्यपति आभिषेक १ ॥  
संधाहु जुधिष्ठिर गहन लैन २, जय पुनि संसप्तक जुद्ध दैन ३ ॥ १८ ॥  
अरु सुप्रतीकँ सामँज अरोहि ४, भगदत्त मर्यो ५ जय संग मोहि ॥  
कुरुसेन महारथ सँमिति सर्व, अभिमन्यु हन्यो ६ विक्रम अखँव ॥ १९ ॥  
लै पत्थ नियम तब हनिय साथ, अक्खोहिनि सप्त ७ ८ सिंधुनाथ ८

अथवा विग्रह और संधि ही हैं धन जिसका ॥ १३ ॥

भीष्मपर्व में प्रथम जम्बूद्वीप प्रमाण है फिर १ युधिष्ठिर की सेना का २ कंपायमान होना और युद्ध का ३ कोलाहल ४ मध्य कर ५ भयंकर ६ हाका होना और ७ अर्जुन का मोह में डूबना ॥ १४ ॥ ८ अत्यन्त बल पर आरूढ (सवार) ९ यदुवंशियों के इन्द्र (कुण्ड) ॥ १५ ॥ फिर अर्जुन ने सिखंडी की आड़ में आकर १० भीष्म को गिरा दिया ११ भीष्म शरशय्या में सोये वहाँ १२ अर्जुन ने बाण आर कर १३ तकिया लगा दिया ॥ १६ ॥ १४ द्रोण ने युधिष्ठिर को एकद्वे की प्रतिज्ञा ली और अर्जुन ने संसप्तकों को युद्ध दिया (उनसे युद्ध करना स्वीकार किया) १५ सुन्दर अङ्गोवाले अथवा ईशान दिशा के दिग्गज के समान १६ हार्थी पर चढ़ कर अर्जुन के साथ युद्ध करने में भगदत्त मरा और कैरवों की सेना के अतिरथियों ने १७ इकट्ठे होकर १८ बड़े पराक्रमवाले अभिमन्यु को मारा ॥ १९ ॥ और अर्जुन ने नियम लेकर १९ सात अक्षौहिणी सेना और २० जयद्रथ को मारा

\* जुजुधान १ भीम २ पुनिफोज फारि, करि पंथ लये हरि १ जय २ निहारि  
 संसप्तक संगर मारि तीर, नव कोटि ९००००००० हैं ९ पारथ प्रवीर ॥  
 जलसंध १ अलंबुस २ जातुधान, बीरहु श्रुतायु ३ बलि वीर्यवान ॥ २१ ॥  
 भट सौमदत्ति ४ दुपदे ५ रु विराट ६, धृतराष्ट्र पुत्र बहु बीर बाट ॥  
 नारायण गन १ गोपाल ज्योहिं, पाखान सख २ हैडंब ३ त्योंहिं ॥ २२ ॥  
 इत्यादि बहुत या पर्वबीच, तजि देह गये १० करि रुधिर कीच ॥  
 पुनि दुपद पुत्र बिनु सस्त्र दोन, मारे ११ कुबुद्धि किय उचित सौ ना १३  
 गुरुपुत्र कुपित तब बल बिथारि, नारायण १४ सस्त्रमाविडैचकार १२ ॥  
 आग्नेय १ ३ रुद्र १४ माहात्म्य जानि, द्वैपायन आगम १५ पुनि प्रमानि ॥ २४ ॥  
 हरि १ अर्जुन २ महिमा कथन १६ आप्त, इम दोन पर्व ७ सप्तम ७ समाप्त ७ ॥  
 नभतुरग चंद्र १ ७० अध्याय अत्थ, नवगगन अंकवसु ८ ९० ९ वृत्त सत्थ २५  
 अब कर्ण पर्व ८ अष्टम ८ अभूत, तहँ मद्राज हुव कर्ण मूत १ ॥  
 पुनि त्रिपुर हैं नन आख्यान २ नाम, मदेस १ कर्ण २ संवाद ३ ताम ॥ २६ ॥  
 आख्यान हंसका कीये ४ जत्थ, गुरुपुत्र समर ५ अतिघोर तत्थ ॥  
 नृप पांडव १ दंड २ अरु दंडसेन ३, मारे द्विज ६ कै बैहु खंड सेन ॥ २७ ॥

\* सात्यकि और भीमसेन ने १ कृष्ण २ अर्जुन को ३ युद्ध  
 में ४ राक्षस ॥ २१ ॥ ५ वीरों के मार्ग में ६ पथरों ही है शस्त्र जिसको ऐसा  
 ७ हिडंबा का पुत्र (घटोत्कच) ॥ २२ ॥ ८ रुधिर का कीचड़ करके ९ धृष्टद्युम्न ने  
 ॥ २३ ॥ १० अश्वत्थामा ने पराक्रम फैला कर ११ नारायण अस्त्र को १२ च-  
 लाया फिर अश्वत्थामा ने अग्नि अस्त्र चलाया जिसको अर्जुन ने रुद्र (पाशु-  
 पत) अस्त्र से व्यर्थ कर दिया इसका अश्वत्थामा ने बहुत शोक किया इस  
 कारण से १३ वेदव्यास वहाँ पर आये और कृष्ण अर्जुन को तत्त्वज्ञान १४  
 के जाननेवाले कह कर महिमा की १५ छन्दों के साथ ॥ २४ ॥ २५ ॥ अब  
 आठवां कर्णपर्व २६ हुआ जिसमें मद्र देश का राजा शल्य कर्ण का १७ सा-  
 रथि हुआ वहाँ कर्ण और १९ शल्य का संवाद हुआ २० तहाँ त्रिपुरासुर के  
 २१ मारने का आख्यान है ॥ २६ ॥ वहीं पर हंस और काक २१ का आख्या-  
 न है और वहीं पर अश्वत्थामा का घोर युद्ध है २२ सेना के बहुत दुकंदे कर  
 के ॥ २७ ॥

\* बलिकर्ण १ जुधिष्ठिर रचत रारि ७, वृख धर्म दबायउ त्रास डारि ८॥  
 अरुधर्म १ पत्थग्रन्योन्यक्रोध ९, बिजयहिंदियके सवउचितबोध १० ॥  
 राधेय लखत वृखसेन तास, सुत बिजय हन्यो ११ रन रचत रास ॥  
 पर पूर्व भीम रन तुंमुल पारि, दुस्सासनको उर जिघत फारि ॥ १२ ॥  
 अंजलि भरि करि तस रक्तपान, बुल्लयो सुधान याके समान १२  
 बल्लिजुरिग १३ करन १ अर्जुन खकारि, मदेस १ कन्ह २ जुत विसिखमारि  
 तैंह पुंहवि कर्ण रथचक्र ग्रास १४, पुनि कर्ण बुलायउ नाग १५ पास ॥  
 रविमुत सु नाग निज रक्खि रोप, अर्जुन पर मुक्किय १६ अंनल ओप  
 जिहि आतजानि हरि मचक मारि, रथ अंवनि प्रसायो १७ डर निहारि  
 गंजकेतु उतरि तब बल गरीय, ईसा गहि अंच्यो रथ १८ स्वकीय १३२ ॥  
 भूअखिलतजिय नागेस भोग १९, जुनचक्रतदपिनिकस्यो २० कुजोग ॥  
 तिहि अंतर अर्जुन मारि तीर, हरि हुकम हन्यो राधेय वीर ॥ ३३ ॥

दोहा

अंक तर्क ६६ संख्या प्रमित, कर्णपर्व ८ अध्याय ॥

\* फिर १ कर्ण ने १ युधिष्ठिर को भय डाल कर दबा लिया और  
 युधिष्ठिर ३ अर्जुन के ४ परस्पर क्रोध हुआ उसमें अर्जुन ने दुर्वचन कहे इस  
 कारण ५ अर्जुन आत्मघात करके मरने लगा तब ६ कृष्ण ने उचितज्ञान ७  
 दिया ॥ २८ ॥ ८ कर्ण के देखते ९ उस (कर्ण) के पुत्र वृखसेन को युद्ध रूपी रा  
 स रचकर अर्जुन ने मारा और १० शत्रु (दुर्योधन) के ११ आगे भीमसेन ने  
 १२ भयंकर युद्ध करके जीते हुए दुःशासन की छाती फाड़ कर ॥ १६ ॥ अंजली  
 (धोषा) भर कर लोहू पिया और बोला कि १३ अमृत भी इसके बराबर न  
 ही है १४ फिर ललकार कर कर्ण अर्जुन लड़े १५ शल्य और कृष्ण के भी १६ बा  
 ण मार कर ॥ ३० ॥ तहां १७ भूमि ने कर्ण के रथ के १८ पहिये को ग्रस लि  
 या जहां कर्ण ने नागपाश को बुलाया और १९ कर्ण ने सर्प को अपने २० बा  
 ण में रख कर २१ अग्नि के समान अर्जुन पर छोड़ा ॥ ३१ ॥ उस बाण को  
 आताहुआ देख कर अर्जुन के मरने का भय देख कर कृष्ण ने मचक लगा  
 कर अर्जुन के रथ को २२ भूमि में घुसा दिया जिससे वह बाण ऊपर होकर व्य  
 र्थ चला गया फिर २३ कर्ण ने उतर कर २४ बड़े बल से अपने रथ के २५ ओढ़ण  
 पकड़ कर खींचा ॥ ३२ ॥ २७ सम्पूर्ण भूमि ने २८ शेष नाग के २९ फणों को छोड़  
 दिया ३० परन्तु खोटे योग से वह पहिया नहीं निकसा उस अवकाश में  
 कृष्ण की आज्ञा से अर्जुन ने कर्ण को मार लिया ॥ ३३ ॥ ३१ प्रमाण

वेद तर्क नव वेद ४९६४ बलि, सकल \*वृत्त\* \*समुदाय ॥ ३४ ॥  
 इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ बीति  
 होत्रचहुवाणशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणाकसौतिश्चा  
 वितवहाभारतसमासयुगो ५ भीष्म ६ द्रोण ७ कर्ण ८ पर्व ४ कथासम  
 सनाध्यायवृत्तसंख्यानं द्वाविंशो मयूखः ॥ २२ ॥ आदितश्चतुः  
 षष्टितमः ॥ ६४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पञ्चभटिका

अब सल्यपर्व ९ बर्णन नवीन, कुरुपति निज दलपति सल्य कीन १ ॥  
 अभिषेक कर्म याकैरहु अर्थ, कौमार नाम आख्यान शत ॥ १ ॥  
 बटि बीर बहुरि रथ जुद्ध वृत्त ४, कुरुमुख्य गिरन बहु ५ बिसिख कृत ॥  
 लरि धर्मराज लिय सल्य ६ प्राण, सहदेव सुबल पुत्रहि जघान ७ ॥ २ ॥  
 जलथंभन रचि विद्या विसेस ८, किय जाय सुजोधन न्हद निवेस ॥  
 यहखवरिलुब्धकंन भीमजानि, बुल्लयोसुजाय जलतट कुबानि ९ ॥ ३ ॥  
 कटुबैन सुनत कुरुपति कराल, इह छोरि कढयो जिम कुपित व्याल  
 नृप १ भीम २ गदारन रचिग १० जत्थ, लीरीहुं तत्थ आये ११ समत्था ४ ॥

\*लब्ध\* छन्दों का समूह ॥ ४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा  
 ण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐमे-सु  
 तपुत्र के संक्षेप से महाभारत सुनाने में उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण पर्व की  
 संक्षेप कथा, अध्याय और छन्दों की संख्या का बाईसवां मयूख समाप्त हुआ  
 ॥ २२ ॥ और आदि से चौसठ मयूख हुए ॥ ६४ ॥

१ दुर्योधन ने शल्य को अपना सेनापति किया और २ यहाँ पर शल्य का अ  
 भिषेक किया तहांऽस्वामिकार्तिक ने देवताओं का सेनापतिपन किया सो  
 आख्यान हुआ ॥ १ ॥ बहुत वीर परस्पर बंट कर युद्ध का ४ वृत्तान्त और  
 ५ बाखों से ६ कट कर कौरवों के मुख्य वीरों का गिरना फिर ७ युधिष्ठिर ने  
 लड़ कर शल्य के प्राण लिये और सहदेव ने ८ शकुनि को ९ मारा ॥ २ ॥ १०  
 शिकारियों से ॥ ३ ॥ ११ क्रोध किया हुआ सर्प दिपारे में से कढ़े ऐसे १२  
 बलदेव भी वहाँ आगये ॥ ४ ॥

सारस्वत तीर्थेन पुण्यं वात१२, परिवो गदानं दुवश्चंडपातं १३ ॥  
कुरुपतिहिं भीम धनघातं धाय, करि सक्थिभंगं दिन्नौ गिराय ॥५॥

आसुहि मर्या न खिल कछुक आयु१४,

बलि बढिय१५ बायुसुत अपर बायु ॥

एकोनसष्टि५९ अध्याय अथ, नभं पक्ष नेत्र गुण ३२२० वृत्त सत्थ ॥६॥

मुक्तादास ॥

सुनों अब सौप्तिकपर्व१० सुमोज, जहाँ गुरुपुत्र१२ गोतम२ भोज३  
परयो हत ऊँरु सुजोधन पाय, कह्यो हम मारत पांडव जाय ॥ ७॥  
चले कहि तीन३हि यों छलकाम, लयो मगमैं बँटठां बिसराम २॥  
लखे तहँ पेचैंक पातितैं काक३, भयो गुरुपुत्रहु तच्छलै भाकैं ४॥८॥  
धसे दलमैं भट तीन३हि गुप्त, अनीक हन्यो सिविरस्थित सुप्त ५॥  
कियो द्विजसौ तहँ रक्खसैं जंग६, सुविप्र कर्यो सिवके बलभंग ७॥९॥  
हनैं सब सोवत द्रौपदि पुतैं ८, हन्यो द्रुपदात्मज वंधुन जुत ६ ॥

सारस्वत नामक तीर्थों की १ पवित्र कथा हुई और भीमसेन  
और दुर्योधन के युद्ध में दोनों की गदाओं का २ भयंकर  
पतन हुआ वहाँ भीमसेन ने दुर्योधन को घने घावों से घायल करके ३ जं  
घा तोड़ कर गिरा दिया ॥ ५ ॥ कुछ आयु ५ बाकी होने के कारण ४ शी  
घ्र नहीं मरा ६ पुनि ७ भीमसेन और ८ ऊर्ध्वरवास बड़े अर्थात् विजय पाने  
से भीमसेन बड़ा और दुर्योधन के अन्तिम रवास बड़े ९ ऊँदों के साथ ॥६॥  
१० अश्वत्थामा ११ कृपाचार्य १२ कृतवर्मा इन तीनों ने १३ तूटी हुई जंघा से पड़े  
हुए दुर्योधन को पाकर कहा कि हम जाकर पांडवों को मारते हैं ॥ ७ ॥ य  
ह कह कर छल की कामना से तीनों चले और मार्ग में एक १४ वृद्ध के वृद्ध नी  
चे विश्राम लिया वहाँ १५ उलूक (घूँघू) के १६ मारे हुए काकों (कागलों) को दे  
खे १७ वही अश्वत्थामा को १८ छल सिखानेवाला हो गया अर्थात् इन मरे हुए  
काकपक्षियों को देख कर अश्वत्थामा ने यह उपदेश ग्रहण किया कि जिस  
प्रकार सोते हुए काकों को उलूक ने मारा है इसी प्रकार हम भी अपने श  
त्रुओं को सोते हुए को मारें ॥ ८ ॥ १९ डेरों में २० सोती हुई सेना को मा  
री वहाँ एक २१ राक्षस ने अश्वत्थामा से युद्ध किया जिसको उस ब्राह्मण  
ने महादेव के वरदान के बल से मारा ॥ ९ ॥ २२ पुत्र २३ घृष्टघ्न को भाई  
यों सहित मारा, इन (अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा) तीनों धीरों से

रहेतिनसोंखिलपंचपहिभात, तथाहरि१ सात्यकि२ एसवसात७।१०॥  
 बंच्यो द्रुपदात्मजको इक१ सुत११, कह्यो तिहिं पांडुनसों यह भूत१२  
 सुन्यो जब द्रौपदिपुत्र बिनास१३, तज्यो तब अन्न लहयो अतित्रास१४  
 चलयो धँकि बिप्रहिं मारन भीम१५, भयो द्विजको डर१६ संगर सीम  
 अपांडव होहु मही यह जंपि, तज्यो द्विज अस्त्र सु ब्राह्मर्ष१७ प्रकंपि  
 न होहु कह्यो हरिहूतिहिं पेलि१८, लयो सुहि अस्त्रहिसों जय भेलि१९  
 कृपीसुतकों लाखि यों प्रति पाप, भये द्विज१ व्यास२ परस्पर साप२०  
 सिरोमनि वहाँ द्विजको जय काढि, दयो सुहि द्रौपदिकों२१ हित बाढि  
 इहाँ धृति१८ मान कहै अधिआय, खघोट कवारन ८७० वृत्तगिनाय१४  
 अबै स्त्रियपर्व१ महादुख ओकें, भयो नृप अंधहिं पुत्रन सोक १ ॥  
 मिलावहु भीमहिं अकिखय अंध२, रच्यो हरि रक्खन ताहि प्रबंध३  
 अयामय लै प्रतिमा तिहिं दिन्न४, सुहीमतिलोचन चूरन किन्न५ ॥  
 दयो अनुजातहुं अंधहिं ज्ञान६ गये सबही पुनि जुझन थान७।१६।  
 भये तहैं बीरबंधून बिलाप८, तँच्यो मैहिखीजुत अंधहु ताप ९ ॥

पांचों भाई पांडव, कृष्ण और सात्यकि ये सातों १ बाकी बचे ॥ १० ॥ २ धृ  
 ष्ठद्युम्न का एक सारथि ३ यह धीताहुआ वृत्तान्त ॥ ११ ॥ ४ क्रोध में जल  
 कर ५ युद्ध की सीमा में अश्वत्थामा को भय हुआ इसकारण से धूज कर  
 बिना पांडवों के भूमि होजाओ यह६ कह कर ब्रह्मास्त्र छोडा ॥ १२ ॥ कृ  
 ण्ण ने कहा कि अपांडवी भूमिमत्त होओ, इस पीछे उस अस्त्र को अर्जुन ने अप  
 ने अस्त्र से भेल लिया १ अश्वत्थामा को इस प्रकार अत्यन्त पापी देखकर वेदव्यास  
 ने उसको तीन हजार दिव्यवर्षों तक निर्जन वन में घूमते रहने का आप दि  
 या और उस अश्वत्थामा ने भी वेदव्यास को पीछा आप दिया कि हम तु  
 म साथ ही घूमेंगे ॥ १३ ॥ वहाँ पर अर्जुन ने अश्वत्थामा के १० मस्तक का मणि  
 निकाल कर हित को बढा कर द्रौपदी को दिया ११ प्रमाण १२ अध्याय १३  
 छन्द ॥ १४ ॥ १४ घर १५ धृतराष्ट्र को १६ धृतराष्ट्र ने कहा कि भीमसेन को मु  
 ऋसे मिलाओ सो कृष्ण ने भीमसेन को बचाने का पहिले ही प्रबन्ध रच  
 रक्खा था ॥ १५ ॥ १७ लोहमयी १८ मूर्ति धृतराष्ट्र को जिसको १६ धृतराष्ट्र ने  
 चूर्ण कर दी वहाँ पर २० विदुर ने धृतराष्ट्र को ज्ञान दिया फिर २१ जहाँ पर  
 युद्ध हुआ था वहाँ गये ॥ १६ ॥ २२ वीरों की स्त्रियों का विलाप हुआ वहाँ  
 २३ राणी सहित धृतराष्ट्र ताप से २३ तबका (सुकुह) गया.

लखे सुत१ भ्रातर२ पिता३ कुल नष्ट१०, दयो हरिबोध११ निवारन कष्ट॥  
तथा सबको सुचिदाहं सुधारि१२, लग्यो तिन्ह दैन जुधिष्ठिर बारि ।  
पृथा तँहँ अक्खिय धर्महिँ एहु, ममात्मजं कर्णहुकों जल देहु१४ ॥  
कियो मुनि तीव्र जुधिष्ठिर ताप१५, तदाँ निज मातरमेव शशाप१६  
अहो अबसौं मम साप प्रपात, रहो मत नारिनके हिय बात १७ ॥

॥ दोहा ॥

सप्तवीस २७ अध्याय यँहँ, वृत्त सप्त ७ सत ज्यौँहि ॥  
पचहत्तरि ७७५ संजुत कहे, सांति पर्व १२ अब त्योंहि ॥ २० ॥  
मारि पिता १ भ्राता २ स्वसुर ३, सुत ४ मातुर्ल ५ सुहृदादि ६ ॥  
भो बिरक्त पुनि धर्मनृप १ गिनि अनित्य देहंदि ॥  
बान कसिपु थित देवव्रत, कहे धर्म आख्यान २ ॥  
भूपनकै श्रोतव्य जे, जे सु भुंमुक्षु सुज्ञान ॥ २२ ॥  
कहिय राज १ आपद २ धरम, मुक्ति धरम ३ नादेयँ ४ ॥  
दानधर्म ५ आदिक कहे, सांतिपर्व १२ यह श्रेय ॥ २३ ॥  
व्यास कहे अध्याय यँहँ, अंकें अग्नि गुन ३३९ मान ॥  
सप्त गगन मुनि वेद ससि १४७०७, वृत्त विचित्र विधान ॥ २४ ॥  
अब अनुसासन १३ अक्खियत, विविध कहे जँहँ दान २ ॥  
तिनके फल २ अरु जोग ३ पुनि, पात्र विसेस ४ प्रमान ॥

१ कृष्ण ने ज्ञान दिया ॥ १७ ॥ २ अग्निमें ३ जल देने लगा वहाँ कुन्ती ने कहा कि  
कर्ण भी मेरा ४ पुत्र था जिसको भी जलाज्जलि दो ॥ १८ ॥ ५ उसी समय  
अपनी ६ माता को ही आप दिया कि ७ धिक्कार है तुझको जो इस स-  
मय तक मुझको यह बात नहीं कही कि कर्ण तेरा भाई है इस कारण मेरे  
आप के पड़ने से अब से स्त्रियों के हृदय में पात मत रहो ॥ १९ ॥ ८ मा-  
मा ९ मित्र आदि १० शरीर आदि को अनित्य जान कर युधिष्ठिर विर-  
क्त हुआ ॥ २० ॥ ११ वे आख्यान राजाओं के सुनने योग्य और १२ मुमुक्षु  
(संसार रूपी गाँठ को भेदने का प्रयत्न करनेवाले) को अष्ट ज्ञान देनेवाले  
हैं ॥ २२ ॥ १३ राजधर्म १४ भीष्म ने ॥ २३ ॥ १५ अग्नि १६ प्रमाण १७  
छन्द विविध रचना के ॥ २४ ॥ १८ अब अनुशासन पर्व कहते हैं,  
जिसमें अनेक प्रकार के दान, उनके फल, योग और पात्र विशेष हैं ॥ २५ ॥



जोग ५ हु पुनि आचार ६ जिम, सत्य परांगति ७ जुक्त ॥  
 महाभाग गो द्विजनके, धर्म रहस्य ८ हु उक्त ॥ २६ ॥  
 भीसमस्वर्गप्रयान ९ यँहँ, तर्क इंद १४६ अध्याय ॥  
 वृत्त गगन नभ गगन बसु ८०००, अनुसासन १३ बिच आय ॥ २७ ॥  
 अश्वमेध १४ आरंभ अब, सुनहु कथा मतिमान ॥  
 सुभ मरुत्त १ संवर्त २ को, जहँ बिचित्र आख्यान १ ॥ २८ ॥  
 कनक कोस पावन २ कथन, जनम परिच्छित ३ काल ॥  
 अस्त्रदग्ध यह गर्भगत, एख्यो ४ कृष्ण कृपाल ॥ २९ ॥  
 पुनि हय फेरन सत्र हित, भाल बंधि जयपत्त ५ ॥  
 जतथं लयो यह बंधि हय, तुमल भयो रन तत्त ६ ॥ ३० ॥  
 वधुबाहके समर बिच, भयो विजय असुभंग ७ ॥  
 सिर खोजन ८ जितन उरंग ९, आनन अमृत १० प्रसंग ॥ ३१ ॥  
 नकुलादिक आख्यान ११ पुनि, इम हयमेध १२ अमंद ॥  
 गुन नभ भू १०३ अध्याय यँहँ, ख नयन गुनगन ३३२० छंद ॥ ३२ ॥  
 आश्रमवास १५ उदंत अब, सुबलसुता १ अरु अर्थ २ ॥

योग्य, आचार और १ परमेश्वर में गति होना, २ अत्यन्त धन्य गौ और ब्राह्मणों का अभिप्राय सहित धर्म ३ कहा है ॥ २६ ॥ अश्वमेध के आरंभ में यज्ञ कराने के विषय में राजा मरुत्त और संवर्त पुनि के अष्ट संवाद का विचित्र आख्यान है ॥ २७ ॥ २८ ॥ और महादेव की पूजा करके युधिष्ठिर ने वहुत सोना ४ (स्वर्ण) पाकर अपने ५ भंडार को पवित्र किया जिसकी कथा है फिर ६ गर्भ में गये हुए अस्त्र से जले हुए परीक्षित का जन्म हुआ जिसको कृपाल श्रीकृष्ण ने जीवित करके रक्खा ॥ २९ ॥ फिर ८ ललाड़ पर ९ विजयपत्र बांध कर ७ यज्ञ के घोड़े को फेरा सो १० जहाँ पर इस घोड़े को बांध लिया वहीं पर घोर ११ संग्राम हुआ ॥ ३० ॥ माणिकपुर के राजा अर्जुन के पुत्र वधुबाहन के युद्ध में १२ अर्जुन का १३ सृत्तक होना और अर्जुन की स्त्री नागकन्या उलूपी का अर्जुन को जीवित करना १४ सुपों को जीतना ॥ ३१ ॥ राजा युधिष्ठिर का यज्ञ समाप्त होने पर एक १५ नौलया (जंतुविशेष) ने राजा के यज्ञ की निन्दा और एक ब्राह्मण के प्रस्थ (पस्ती) भर अन्नदान की महिमा की उसका आख्यान आदिकी कथा है ॥ ३२ ॥ अब आश्रमवास पर्व का १६ वृत्तान्त है जिस में १७ गान्धारी १८ धृतराष्ट्र विदुर और

मौसलमहाप्रस्थानपर्वसूची ] तृतीयराशि—त्रयोविंशमयूख ( ६७५ )

विदुर३रु कुंती४ वन गये१, तजि सबसों संबंध ॥ ३३ ॥  
ग्रंथ लखे पुनि मृतकसुत, जीवत२ व्यास प्रसाद ॥  
गयो बंधूजुत परमगति, बलि वह३ छोरि विखाद ॥ ३४ ॥  
संजय१ विदुर२ हु बपु तजिय४, नारद१ धर्म२ मिलाप५ ॥  
सुरमुनिसों भूपति सुन्यो, जदुकुल कर्दन६ दुराप ॥ ३५ ॥  
नयन बेद४२ अध्याय यँहँ, पद्य सु इक१ हजार ॥  
पंच५ सत रुखट१५०६ मिते प्रकट, अब मौसल१६ उच्चार ॥ ३६ ॥  
तँहँ जादव आपाने रचि, लवणोदधिकी तीर ॥  
एकें संबनसों सकल, कटे परस्पर१ बीर ॥ ३७ ॥  
रामें१ कृष्ण२ अँवसेस रहि, निज कुटुंबकों मारि ॥  
छोरि देह संस्कार हित, गये स्वलोकें पधारि२ ॥ ३८ ॥  
विजय आय संस्कार बिधि, देहन किय सुँचि दाह३ ॥  
सु सुनि जुधिष्ठिर सोक सह, रच्यो विरक्तन राह४ ॥ ३९ ॥  
वसु८ अध्याय रु यँहँ बिदित, कृति गुन३२० पद्य प्रमान ॥  
निलय तजिय जँहँ पांडवन, सु अब महाप्रस्थान१७ ॥ ४० ॥  
भ्रात पंच५ कृष्णा१ सहित, लगे हिमालय राह१ ॥  
पावकें बिच मिलि पथसों, चाँप लयो२ निज चाह ॥ ४१ ॥

कुंती सब से सम्बन्ध छोड कर वन में गई ॥ ३३ ॥ वेदव्यास की १ प्रसन्नता से धृतराष्ट्र ने अपने २ भरे हुए पुत्रों को देख ४ फिर विषाद ५ को छोड कर ३ स्त्री सहित मुक्त होगया ॥ ३४ ॥ ६ शरीर छोडे ७ नारद मुनि युधिष्ठिर से मिले ८ नारद से युधिष्ठिर ने १० काठिनाई से होनेवाला ९ नाश सुना ॥ ३५ ॥ ११ छन्द १२ प्रमाण १३ मौसल पर्व कहते हैं ॥ ३६ ॥ १४ पानगोष्ठि (मतवाल) १५ एरा (विना ग्रन्थि तृणविशेष) रूपी १६ वज्रों से ॥ ३७ ॥ १७ बलदेव १८ बाकी रहे १९ अग्नि संस्कार (जलाने) के लिये अपने शरीर को छोड कर २० अपने लोक में पधार गये ॥ ३८ ॥ २१ अर्जुन ने आकर मृतक संस्कार करके २२ अग्नि में दाह किया ॥ ३९ ॥ २३ पांडवों ने अपने घर को छोड कर वन गमन किया उसका नाम २४ महाप्रस्थान पर्व है ॥ ४० ॥ पाँचों भाइयों ने द्रौपदी सहित हिमालय पर्वत का मार्ग लिया वहाँ २५ अग्नि ने बीच में मिल कर अर्जुन से अपना दिया हुआ गाँडीय देवधनुष पीछा

अनुज च्यारि४ अगु अंगना\*१, गिरे ति\*\* देखे नाहिं३ ॥

गयो जुधिष्ठिर हेह जुत, महादुलभ भग माहिं ॥ ४२ ॥

गुन३ अध्याय रु छंद गिनि, विदित तीन सत बीस३२० ॥

स्वर्गपर्व१=अब देवरथ, आय१लैन अवनौस ॥ ४३ ॥

कुकुरं विन भूपति कह्यो, मैहु चढों न बिमान२ ॥

लखि धीरज स्नानहु स्ववपु, तजि किय संग प्रयान३ ॥ ४४ ॥

देवदूत दिय व्याजसौं, धर्महिं नरक दिखाय४ ॥

सुनै जुधिष्ठिर भ्रात निज, क्रंदंत पीडन पाय५ ॥ ४५ ॥

नभगंगा विच न्हाय पुनि, परिहरि मानव देह ॥

वसे जुधिष्ठिर धर्मवल, गुन नुत निर्जर गेह६ ॥ ४६ ॥

यह जानहु अछारहों, स्वर्गारोहन१८ नाम ॥

सर५ अध्याय रु दौय सत, अंक२०९वृत्त अभिराम ॥ ४७ ॥

ए धृति१८ समिमत पर्व इम, जो इनसों कछु सैस ॥

है सुहि खिल हरिवंस१९मै, उचित रीति उपदेस ॥ ४८ ॥

इक१ सहस१००० अध्याय तहैं, ख नभ गगन रवि१२००० छंद ॥

यहै पर्व संग्रह कह्यो, भारतको सानंद ॥ ४९ ॥

लिया ॥ ४१ ॥ चारों छोटे भाई और अपनी \* स्त्री ( द्रौपदी ) हिम से गल कर मार्ग में गिर गई \*\* तिनको युधिष्ठिर ने पीछे फिर कर नहीं देखा और इसी शरीर सहित दुर्लभ मार्ग में गया ॥ ४२ ॥ अब स्वर्गारोहण पर्व कहते हैं, जिसमें १ राजा युधिष्ठिर को लेने देवरथ आया ॥ ४३ ॥ युधिष्ठिर ने कहा कि मेरे साथ कुत्ता है इसका भी स्वर्ग में ले चलो तो हम चले नहीं तो इकले विमान पर नहीं चढ़ें, राजा की यह धीरज देख कर ३ कुत्ते ने भी ४ अपना शरीर छोड़ कर साथ गमन किया ॥ ४४ ॥ देवदूत ने ५ युधिष्ठिर को ६ भिक्षु से नरक दिखा दिये वहां युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को पीड़ा पाकर ७ रोते हुए सुने ॥ ४५ ॥ ८ आकाश गंगा में स्नान करके ९ मनुष्य देह को १० छोड़ कर युधिष्ठिर अपने धर्म के बल से ११ स्तुति करण योग्य गुणावाले १२ स्वर्ग में बसा ॥ ४६ ॥ १३ छन्द १४ मनोहर ॥ ४७ ॥ १५ गिनती का प्रमाण १६ वाकी १७ वह वाकी का उपदेश हरिवंश में है ॥ ४८ ॥ १८ उस हरिवंश के एक हजार अध्याय ॥ ४९ ॥

## पदपदी ॥

पढहु सांगद श्रुति च्यारि४ पढहु उपनिषद अर्थ जुत ॥  
 भारत बोधं बिहीनं नाहिं वह होय चतुर नुत ॥  
 संजन पुष्कर नीर करहु क्यों भारत बोधित ॥  
 धेनु सतक १०० क्यों देहु शृंग हाटक जरि सोधित ॥  
 दिनभूत सकल प्रजरत दुरितं पश्चिम संध्या जापतैं ॥  
 निसंभूत पूर्व संध्या पढत भारत पुण्य प्रतापतैं ॥ ५० ॥  
 इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ वीति  
 होलचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्चा  
 वितमहाभारतसमासे शल्या९ऽऽदिहरिवंशान्तैकादश११पर्वकथा  
 समसनाध्यायवृत्तसङ्ख्यानग्रन्थमाहात्म्यसूचनंत्रयोविंशति२३तमो  
 मयूखः ॥ २३ ॥ आदितः पञ्चषष्टितमः ६५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सूत काहेय इम मुनिन सन, भारत प्रथम समास ॥

अब माहात्म्य कहते हैं कि छःहों अंगों सहित चारों वेद और अर्थ सहित उप  
 निषद् पदों परन्तु भारत के ज्ञान बिना स्तुति करने योग्य चतुर नहीं हो सका  
 और जिसको भारत का ज्ञान है वह पुष्कर में क्यों स्नान करे और  
 शुद्ध क्यों हुए १० सोने (कुन्दन) से जड़े हुए ६ सींगों की ८ सौ गायें क्यों  
 दैयें क्योंकि १ दिन में पैदा हुए सम्पूर्ण १ पाप सायंकाल में महाभारत के जप कर  
 न से, और रात्रि के १ पैदा हुए पाप १ प्रभात के जप के पुण्य के प्रताप से  
 जल जाते हैं ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी बहु-  
 याण शत्रुघ्न के जीवित समय के एक समय में होनेवाले सूतपुत्र के संक्षेप  
 से महाभारत सुनाने में शल्य पर्व की आदि लेकर हरिवंश के अन्त तक  
 ग्यारह पर्वों की कथा का संक्षेप और अध्याय छन्दों की संख्या और ग्रन्थ  
 माहात्म्य के कहने का तेईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और आदि से  
 पैंसठ मयूख हुए ॥ ६५ ॥

सूत ने शौनकादि मुनियों १५ से इस प्रकार, महाभारत का १ संक्षेप कहा

तिमहि लोमहर्ष्यन तनये, वरनन लग्गो व्यास ॥ १ ॥

### पञ्चमटिका

जनमेजय विरचिय दीर्घ संत्र, कुरुछेत्रमाँहिँ सह बंधु तत्र ॥  
 श्रुतसेन१भीम२अरु उग्रसेन३, त्रय३बंधु सत्र रच्छक बलेन ॥ २ ॥  
 अध्वर निकेत इक आय स्वान, तिन्ह ताडित हुव रौरुयमाँन ॥  
 गो पुनि भजि जननी निकट ताहि, सरमाँहु कस्यो क्योँरुदन आहि ॥ ३ ॥  
 बुल्लियँ तव मंडैल बारबार, पारिच्छितँ बंधुन किय प्रहार ॥  
 यह सुनत सुनी मखथान आय, रचिँ अनख नृपहिँ बुल्ली रिसाय ॥ ४ ॥  
 मखँधृतहु लख्यो नहिँ मम अपत्य, अपकार कछु न किय साधु सत्य ॥  
 बंधुन मम ताडित तदपि बाल, तँसमात साप भेलहु नृपाल ॥ ५ ॥  
 अहँ अहँभय तव कुकामँ, इम सँप्प दये सँरमा जँगाम ॥  
 तब अतिविखादँ कुरुराज पाय, मख करि समाप्त इभनगँरआय ॥ ६ ॥  
 दुतँ सापत्रास मेटन उदार, मम है न पुरोहित किय बिचार ॥  
 कहँ समय तँदनु भँगया पधारि, बन इक मुनि आश्रम लिय निहारि ॥ ७ ॥  
 जँहँ द्विज श्रुतश्रवा१नामधेय, सोमश्रवा२सु तँसँ तनय श्रेयँ ॥  
 तँहँ जाय विरचि विन्नति बिसेस, कर जोरि कहिय मुनिप्रैति नरेस ॥ ८ ॥

इसीप्रकार वहीं लोमहर्ष्य नामक सूत का १ पुत्र (उग्रश्रवा) २ विस्तार करके कहने लगा ॥ १ ॥ ३ बड़ा यज्ञ ४ बलवान् अथवा तीनों भाई बल करके यज्ञ के रक्षक हुए ॥ २ ॥ उस ५ यज्ञ के ६ स्थान में एक कुत्ता आया सो राजा जनमेजय के तीनों भाइयों से पीट खाकर ७ रोया और अपनी माता के पास गया वहाँ ८ कुत्ता ने कहा कि क्यों रोता ९ है ॥ ३ ॥ तब ११ कुत्ता पारिवार १० बोला कि ११ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) के भाइयों ने मुझे मारा १३ कुत्ता १४ क्रोध करके राजा से बोली ॥ ४ ॥ १५ यज्ञ में धरी हुई वस्तु को मेरे १६ पुत्र ने देखी ही नहीं और इस सत्यवादी श्रेष्ठ कुत्ते ने कोई बिगाड़ भी नहीं किया तो भी मेरे १७ बालक को तुमारे बंधुओं ने मारा है १८ इस कारण से मैं राजा आप भेल ॥ ५ ॥ तुम्हारे छोटे काम करनेवाले को १९ बिना जाना हुआ भय आवेगा, इसप्रकार ११ आप देकर २१ कुत्ता २३ चली गई, तब जनमेजय बहुत २४ खेद पाकर यज्ञ समाप्त करके २५ हस्तिनापुर आया ॥ ६ ॥ २६ जलदी आप का भय मेटनेवाला २७ जिस पीछे २८ शिकार ॥ ७ ॥ २९ श्रुतश्रवा नामवाला ब्राह्मण ३१ श्रेष्ठ ३० उसका पुत्र सोमश्रवा ३२ मुनि

भवदीयं पुत्र यह हे सुनीस, मम होहु पुरोहितपन अधीस ॥  
 सुनि बिप्र कहिय नृप श्रवन धारि, ममरेतं पियउ इक सर्पनारि ॥१॥  
 तामाहिं भयो यह सुत उदार, विद्याशतपदसंजुत दृढ विचार ॥  
 याकै नृप है पन गूँड एक, मंगै सु देत बिप्रन सटेक ॥ १० ॥  
 जो सकत नियम याको निबाहि, लैजाहु पुरोहित थप्पि याहि ॥  
 सुहि करि अंगीकृत द्विजहि संग, आयो लै भूपति द्विरदंग ॥११॥  
 बंधुन प्रति तहैं नृप कहिय बात, यह बिप्र कहैं सुनि करहु तात ॥  
 पुनि तच्छसिला जित्तमजगाम, लिय जित्ति वहैं जनपद ललामा ॥१२॥  
 कछु काल पुंभव आपोदधौम्य, हुव बिप्र महाबुध सील सौम्य ॥  
 हुव छात्र तीन३ताकै सुधाम, आरुणि१उपमन्व्यु२रु वेद३नामा ॥१३॥  
 आरुणि प्रति इक दिन दिय सुनाय, केदार धसत जल रोकि जाय ॥  
 इहिं सुनत जतन किन्न अपार, दकै तदपि रुक्यो नहिं बेगदार ॥१४॥  
 वह सोय भयो केदार ओटै, रुकि तोय गयो जिम लहत कोट ॥  
 कतिदिन विहाय गुरु तत्थ जाय, देहेलो आरुणि लिय बुलाय ॥१५॥  
 सुनि बचन उठयो आरुणि द्विजेस, गुरु पयन परयो अतिनम्र बेस ॥  
 सो देखि छात्र सेवा प्रसस्त, बर दियउ फलहु विद्या समस्त ॥१६॥

से राजा ने कहा ॥ ८ ॥ हे सुनि ? आप का यह पुत्र मेरा पुरोहित हो-  
 चै २ हे राजा सुनो, मेरा ३ वीर्य एक सर्पिणी ने पीलिया था ॥ ९ ॥ इसके  
 एक ४ छिपाहुआ प्रण (नियम) है कि जो ब्राह्मण इससे मांगता है वह उ-  
 सको हठपूर्वक देदेता है ॥ १० ॥ ५ वही बात स्वीकार करके ६ हस्तिना-  
 पुर आया ॥ ११ ॥ जनमेजय ने अपने भाइयों से कहा कि यह ब्राह्मण कहै  
 सो ही करना, यह कहकर जनमेजय तक्षशिला को जीतने गया और वह  
 सुन्दर ७ देश जीत लिया ॥ १२ ॥ कुछ समय ८ पहिले आपोदधौम्य ना-  
 मक ब्राह्मण बडा ९ पंडित शीतल स्वभाववाला सौम्यमूर्ति हुआ जिसके  
 ११ श्रेष्ठ धामवाले १० तीन शिष्य हुए. उनमें आरुणि नामक शिष्य से गुरु  
 ने कहा कि अपने १२ खेत में पानी घुसता है जिसको जाकर रोको, इसने य-  
 ह सुन कर अनेक उपाय किये १४ परन्तु १५ वेग से वहनेवाला १३ पानी नहीं  
 रुका ॥ १४ ॥ तब वह आरुणि पानी के आडा सोकर खेत की १६ आड़ बन-  
 गया १७ पानी रुक गया ॥ १७ ॥ १८ शिष्य की १९ उत्तम सेवा देख कर १६ ।

तू उठिय वस्ये केदार दैरि, वैंहें उहालक नाम धारि ॥  
 तिहिं सिक्खदई आसिख सुनाय, आपोदधौम्य पुनि गेह आय ॥१७॥  
 उपमन्यु प्रतिहु गुरु कहिय एह, गो चारन जावहु वन सनेह ॥  
 उपमन्यु सु सुनि गुरुवचन तुष्ट, वनधेनु चरावत देह पुष्ट ॥१८॥  
 पुनि कहिय ताहि इक दिन स्वभोन, तव देह पुष्ट आधार कोन ॥  
 भिच्छा लहि जीवत कहिय छात्र, गुरु कहिय देहु हमहिं सु सुपात्र ॥१९॥  
 त्यों करत कह्यो गुरु बहुरि ताहि, अब कोन छैति वैपु पुष्टि आहि ॥  
 सु वैप्यो भिच्छा दुवस्वेद लाय, इक देत तुमहिं इक रहत खाय ॥२०॥  
 बुल्लयो गुरु दूजै नहिं विधान, इक वेरहि आनहु धर्मवान ॥  
 तदनंतर इक दिन देखि पीनै, गुरु कहिय अबहु वपु क्यौ न खौना ॥२१॥  
 उपमन्यु कहिय गोदुग्ध पान, करि मै वपु धारत हे सुजान ॥  
 गुरु तवहु कहिय विनु मम निदेसै, वच्छन विगार नन करहु एस ॥२२॥  
 ताको अति पीवै तदैपि जानि, बुल्लयो डैं कहा भोजन बखानि ॥  
 उपमन्यु कह्यो मै रहत अथ, तर्को मुख फेनन चटितथ ॥२३॥

है ? पुत्र तू संत की आठ को २ तोड़ कर उठा है इससे तेरा नाम उहालक  
 होवेगा ॥ १७ ॥ अपने दूसरे शिष्य उपमन्यु से कहा कि वन में स्नेह पूर्वक  
 ३ गौ चराने को जाओ ४ प्रसन्न होकर गाय को चराने गया सो वन में च-  
 राने चराने आप ५ ताजा हाँगया ॥ १८ ॥ गुरु ने एक दिन अपने ६ घर  
 में आयेहुए को कहा कि क्या ७ पाने से तेरा शरीर मोटा होरहा है तब  
 शिष्य ने कहा कि भिक्षा ८ लाकर अपना जीवन करता हूँ जब गुरु ने क-  
 हा कि हे सुपात्र यह भिक्षा हमको देदिया कर ॥ १९ ॥ उसने भिक्षा देदने  
 पर भी उसको मोटा ताजा देख कर कहा कि अब किस ९ जीविका में  
 १० शरीर ताजा ११ है जब वह शिष्य १२ बोला कि दोचार भिक्षा लाता  
 हूँ जिसमें एक घेर की तुमको देता हूँ और एक घेर की मैं खाता हूँ तब गुरु  
 ने कहा कि दुर्जा घेर भिक्षा लाना १३ विधि नहीं है १४ जिस पीछे भी एक  
 दिन १५ पुष्ट देखकर गुरु ने कहा कि अब भी तेरा १६ शरीर १७ दुर्बल क्यों नहीं  
 है ॥ २१ ॥ १८ गौ का दूध पीकर १९ मेरी बिना आज्ञा गड्यों का दूध पीकर  
 यकड़ों का यह पियाहु मत करो ॥ २२ ॥ २० तब भी उसको २० ताजा जान  
 कर गुरु ने कहा कि २१ अब क्या खाता है सो कह जब उपमन्यु ने कहा कि  
 २२ यकड़ों के मुख पर दूध के २३ कण आने हैं यह चाट कर रहता हूँ ॥ २३ ॥

ताकोहु कियो गुरुनै निवार उपमन्यु छुधातुर अब अपार ॥  
 गो धेनु चरावन बिपिन तत्र, जाठर दुख खाये अर्कपत्र ॥ २४ ॥  
 शिवमल्ली खावत होय अंध, ले धेनु चलयो गुरुगृह सुसंध ॥  
 विनु नेत्र रह्यो दिगबोध नाहि, मग भुल्लि पर्यो इक अधुमाहि ॥ २५ ॥  
 तांविनु घर आवत धेनु तामै, आपोदधौम्य खोजन जगाम ॥  
 टेरयो वन जाय रुउच्चनाद, उपमन्यु कूप संगत जगदि ॥ २६ ॥  
 भो नाथ छुधातुर अधिक तत्त, विनु बोध भखे मै अकपत्त ॥  
 तिनसौं मम लोचन आहि नष्ट, मग भुल्लि कूपपरि लहत कष्ट ॥ २७ ॥  
 बुल्लिय प्रसन्न गुरु सुनहु बिप, नयनन हित सुमरहु दस्र छिप्र ॥  
 सुमरे तब छात्र हु बैद्यराज, तिन इक अपूप दिय असन काज ॥ २८ ॥  
 उपमन्यु कह्यो खैहाँ न याहि, विनु गुरु निदेस ओदैन अचाहि ॥  
 आश्विनैन कहिय पहिले अनेहैं, किन्नौ तव गुरुहु असन एह ॥ २९ ॥  
 उपमन्यु तदैपि मन्नी न एक, वर दस्रैन दिन्नौ जुत विवेक ॥  
 व्हैहैं तव गुरुके कृष्ण दंत, व्हैहैं तव रंद कनकाभ संत ॥ ३० ॥  
 तू नेत्र लहहु उपमन्यु तात, इम दस्र गये करि उचित बात ॥

इसके लिये भी गुरु ने ? मना किया तब उपमन्यु २ भूख से पीड़ित हुआ और ३ गौ चराने को ४ वन में गया तहां ५ जठराग्नि के दुःख से ६ आक वृत्त के पत्ते खाये ॥ २४ ॥ ७ आक ८ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाला ९ दिशा का ज्ञान नहीं रहा १० कुए में पड़ गया ॥ २५ ॥ ११ उस उपमन्यु बिना गौ घर पर आई १२ वहां १३ गया १४ कुए की संगति करनेवाला १५ बोला ॥ २६ ॥ हे स्वामी भूख से अधिक पीड़ित होगया तब बिना समझे मैंने आक के पत्ते खालिये उनसे मेरे नेत्र नष्ट होगये १६ हैं ॥ २७ ॥ जब गुरु बोले कि हे ब्राह्मण नेत्रों के लिये १७ अश्विनीकुमारों (स्वयँवों) का १८ शीघ्र स्मरण करो तब उस शिष्य ने १९ उन बैद्यराज (अश्विनीकुमारों) को याद किया उन्होंने एक २० चूर्ण २१ खाने के लिये दिया ॥ २८ ॥ उपमन्यु ने कहा कि गुरु की आज्ञा के बिना मेरे २२ अन्न की चाहना नहीं है इस कारण से इस चूर्ण को नहीं खाऊंगा इस पर २३ अश्विनीकुमारों ने कहा कि तुम्हारे गुरु ने भी पहिले २४ समय में इसको खाया है ॥ २९ ॥ २५ तो भी उपमन्यु ने एक बात नहीं मानी उस समय २६ अश्विनीकुमारों ने २७ विचार पूर्वक वर दिया कि हे पुत्र उपमन्यु तू नेत्र ले और तेरे २८ दन्त २९ साने की कान्ति जैसे और



उपमन्यु पाय जुग<sup>२</sup>नेत्र तत्त, कठि कूप<sup>१</sup>हिंतु गुरुगेह पत्ता॥३१॥  
 व्है गुरु प्रसन्न दिन्नी असीस, लै सिक्ख गयो निजगृह मुनीस॥  
 गुरुगेहरह्यो अब वेद एक<sup>१</sup>, सब विधि करि सेवन अह<sup>१</sup> अनेका॥३२॥  
 ताकाँहि रीभि आपोदधौम्य, विद्या पढाय दिय सिक्ख सौम्य ॥  
 किन्नाँ विवाह गृह वेद आय, ताकैहु छात्र त्रय<sup>३</sup>हुव सुभाय॥३३॥  
 गुरुगेह लहे दुख चिंति ताम<sup>१</sup>, सिस्यन प्रति कछुहु न कहिय काम॥  
 इम रहत वेद आश्रम अनूप, आये जनमेजय १ पौष्य<sup>२</sup>भूप॥३४॥  
 वेदहिं करि विन्रति तँहँ विसेस, बरि ताहि गये लै दुव २ नरेस॥  
 तब वेद अग्नि पूजन सनेह, उत्तंक छात्र रक्ख्यो स्वगेह ॥३५॥  
 इम होत भये कति दिन अतीतँ, उत्तंक रहत गुरुगृह अभीत ॥  
 इकदिन गुरुपत्नी दिय कहाय, उत्तंक मोहि ऋतुकाल आय॥३६॥  
 तव गुरु न गेह अरु मै सकाम, तसँमात देहु रति हे ललाम ॥  
 उत्तंक दयो उत्तर बलिष्ठ, तिय बचन करै नहिं धर्मनिष्ठ ॥ ३७ ॥  
 तदनंतर वेदहु आय गेह, उत्तंक लक्ख्यो निज धर्म नेह ॥  
 गृह जाहु कह्यो मुनि दै असीस, उत्तंक कह्यो इक सुनहु ईसँ ॥

॥ दोहा ॥

तेरे गुरु के दन्तकाले होजाबेंगे, यह कह कर अडिबनीकुमार तो गये और  
 उपमन्यु दोनों नेत्र पाकर १ कुए से निकल कर गुरु के घर २ पहुँचा ॥३०॥३१॥  
 गुरु के घर में अब वेद नामक एक शिष्य रहा जिसने भी अनेक ३ दिन सेवा  
 की ॥३२॥ ४ अनुग्रह करके सीख दी ५ शिष्य ॥३३॥ वेद मुनि ने अपने गुरु के घर  
 पर दुःख पाया था उसको याद करके ६ तहाँ (अपने घर पर) शिष्यों को  
 कुछ काम नहीं कहा ॥ ३४ ॥ वेद मुनि से विनय करके अपने गुरु के अर्थ ७  
 वरणी (स्वीकार) कर गये तब वेद मुनि ८ अपने घर में होम ९ करने के  
 लिये उत्तङ्क नामी शिष्य को रख गये ॥ ३५ ॥ १० व्यतीत ११ गुरु की स्त्री  
 ने कहलाया कि हे उत्तंक! मेरे ऋतुकाल आया है ॥ ३६ ॥ तेरा गुरु तो घर  
 नहीं है और मैं कामदेव सहित हूँ १२ इस कारण से हे १३ सुन्दर ! मुझे रति  
 दान दे। इस पर उत्तंक ने बलवान् उत्तर दिया कि जिनकी १४ धर्म में निष्ठा  
 है वे स्त्रियों का ऐसा १४ कहना नहीं करते ॥ ३७ ॥ १५ इस पीछे उत्तंक ने  
 कहा कि १७ हे स्वामी मुनो।

मैं तुमसों सिक्खयो सकल, विद्या विविध विनोद ॥

यातैं गुरु कछु दक्खिना, पावहु प्रकट प्रमोद ॥ ३९ ॥

तब गुरु अक्खियँ यह तिमहि, लहि गुरुनारि निदेसैं ॥

पावन कुंडल पुण्यपुर, जाय जंचेहि द्विजेस ॥ ४० ॥

लैं कुंडल उत्तंक मग, आवत तच्छक चोरि ॥

गो बडवामुखँ तब यहहु, लायो निखिन दोरि ॥ ४१ ॥

तच्छकको उत्तंक तब, करन महा अपकार ॥

जनमेजय नृपपँहँ गयो, बाढन सत्तैं बिचार ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ वी  
तिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणाकसौति-  
श्रावितमहाभारते पारीक्षितदेवसरमाशपनतद्गीतसोमश्रवःपुरोधो  
करणातक्षशिलाजयनाऽऽपोदधौम्यछात्रत्रय ३ चर्याकथनबेदमुनि  
शिष्योत्तङ्गतत्त्वकनागवैरसमसनं चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥

आदितः षट्षष्टितमः ॥ ६६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ दोहा ॥

बहुरि कहौं विस्तार करि, यहहि कथा उत्तंक ॥

१ गुरु ने कहा कि तुम्हारी गुराणी मांगे सो दो तब उत्तंक  
ने गुरु स्त्री को २ आज्ञा लेकर पुण्यपुर जाकर कुंडल ३ मांगे ॥ ३९ ॥  
॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४ पाताल में, कठिनाई से दौड़ कर लाया ॥ ४१ ॥ इस कार  
ण से तत्त्वक नाग का अपकार करने के लिये सर्पयज्ञ का विचार बढाने को  
उत्तंक मुनि राजा जनमेजय के पास गया ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है सनय का आधार जिसका ऐ-  
से सूतपुत्र (उग्रश्रवा) के महाभारत सुनाने में परीक्षित के पुत्र (जनमेजय)  
को कुन्ती का श्राप देना, उसके डर से सोमश्रवा को पुरोहित करना, तक्ष-  
शिला को विजय करना आपोदधौम्य के तीन शिष्यों की चर्या कहना, बेद  
मुनि के शिष्य उत्तंक से तत्त्वक नाग के वैर का संक्षेपकथन का चौबीसवाँ  
मयूख समाप्त हुआ ॥ २४ ॥ और आदि से छःसठ मयूख हुए ॥ ६६ ॥

जिम आनैं कुंडल जंचि रु, निजगुरु भक्त निसंक ॥ १ ॥

तच्छक जिम कद्वतनय, बीचहि करि छल बेस ॥

कुंडल हरि पातालकों, गो वंचक भुजगेस ॥ २ ॥

अगैं जिम उत्तंक हुव अर्बुद जन्म निदान ॥

असैं यह सुनिये अपर, चोरदमन चहुवान ॥ ३ ॥

### पञ्चाटिका

जो वेद भयो मुनि ब्रह्मवंस, श्रुति सांग निपुन अघतिमिर हंस ॥

उत्तंक नाम हुव छात्र तास, वेदादि पढ्यो बानी विलास ॥ ४ ॥

अवसर घर जावन जबहि आय, जंपिउं तव गुरु ढिग शिष्य जाय ॥

कछु लेहु दखिना प्रभु पुनीत, अव मोहिं फुरैं जिम सब अधीत ॥ ५ ॥

तव वेद कह्यो सुनि बँछ एहु, गुरुनारि कहैं तव सोहि देहु ॥

सुनि गो गुरुपतनी निकट विप्र, कछु लेहु दखिना कहिय छिप्रा ॥ ६ ॥

गुरुनारि कह्यो जो ध्रुवहि देयैं, तो अम्हकर वांछित विधेय ॥

नृप पुण्य बँहकी श्रुतिनैं माहिं, कुंडल अनर्घ दुवरदिव्य आहि ॥ ७ ॥

उत्तंक मोहि ते देहु आनि, जंपतिके अवर न इष्ट जानि ॥

चौथेदिन कुंडल देहु लाय, हमरै द्विज भोजन है हिताय ॥ ८ ॥

१ उत्तंक ने जिसप्रकार कुंडल मांग कर आने ॥ १ ॥ २ ठग, सपों का पाति

॥ २ ॥ हे चौरों को ६ दंड देनेवाले चहुवाण रामसिंह आगे जैसे उत्तंक मुनि

३ आयू पर्वत के जन्म का ४ कारण हुआ तैसे ही यह ५ दूसरा सुनो अर्थात्

त आयू पर्वत के होने की जो कथा पहिले लिखीगई थी वह विष्णुपुराण

के मत से लिखीगई थी अब वही कथा महाभारत के मत से फिर लिखते

हैं ॥ ३ ॥ ७ ब्रह्मा के वंश में जो वेद नामक मुनि हुआ वह अंगों सहित ८

वेदों में निपुण और ९ पाप रूपी अन्धरे का १० सूर्य था उसके ११ शिष्य ॥ ४ ॥

जब घर जाने का समय आया तब शिष्य ने गुरु के पास जाकर १२ कहा

कि हे १३ पवित्र स्वामी अब कुछ दक्षिणा लो जिससे मुझे १४ पढाहुआ

१५ स्मरण (याद) होवे ॥ ५ ॥ १६ हे चतुर् (पुत्र) मेरे गुरु की स्त्री कहें मेरा

उसको दो १७ जीव ॥ ६ ॥ १८ निश्चय ही १९ देना है तो २० मेरी चाहना के

गौरव २१ कर्तव्य यह है कि राजा पुण्य की २२ स्त्री के २३ कानों में २४ अ-  
नन्य दो दिव्यकुण्डल २५ हैं ॥ ७ ॥ तो हे उत्तंक वे मुझे ला दें हम २६ स्त्री  
पुनर के उन कुण्डलों से और कोई प्रिय नहीं है २७ हिन के अर्थ ॥ ८ ॥

तिन पहिरि परूषा पंति पंति, करिहौं गहि व्यंजन भंति भंति ॥  
 दिन चोथे जो यहँ लाय दैं न, बलि तोहि ततो संपिहौं कुबैं ॥९॥  
 सुनि बचन लग्यो मग द्विज सुभाय, बिच बैल मिल्यो इक शदीर्घकाय  
 तिहिं पिठि चढ्यो इक शपिहुँ देह, निरख्यो सु पुरुख बुल्ल्यो अनेह ॥  
 गोमय या वृषको खाय लेहु, उत्तंक कह्यो नहिं उचित एहु ॥  
 तिहिं कहिय भरयो तव गुरु सुजान, तत्त्वमपि विप्र तस्मादसान ॥११॥  
 गोमय समूत्र सुनि भखिय विप्र, ठाँढैहि चल्यो आचम्य छिप्र ॥  
 पहुँच्यो तदनंतर पौष्यपास, आसिख दै बुल्ल्यो ईष्ट आंस ॥ १२ ॥  
 अर्थी मैं तव ढिग आय भूप, गुरु हेत जंचत कुंडल अनूप ॥  
 बैर जे श्रुति धारत तुझ बैल, ते मे प्रदातुमहसि नृपाल ॥ १३ ॥  
 सुनि पौष्य कह्यो हे द्विज सुभाय, जाया मम अंदर जचहु जाय ॥  
 सुंदांत गयो तव द्विजहु संत, रानी न लखी सबठां फिरंत ॥ १४ ॥  
 उत्तंक भयो बिस्मित अपार, आयो नृप अंतिक गिनि लंबार ॥  
 बुल्ल्यो न उचित तव अनृत बैन, महिखी न लखी अवरोध अनै ॥१५॥

भांति भांति की भोजन की तैयारियां लेकर दन कुण्डलों को पहिन कर पं-  
 क्ति पंक्ति में पुरुषावली (पुरुषगारी) करुंगा और जो चौथे दिन नहीं ला दे-  
 गा तो ? फिर तुम्हको २ खोटे वचनों से आप दूंगी ॥ ९ ॥ यह वचन सु-  
 नकर वह ब्राह्मण मार्ग लगा जिसको बीच में एक ४ बड़े शरीरवाला ३  
 बैल मिला जिसकी पीठ पर एक बड़े ५ शरीरवाला पुरुष चढ़ा जिसने उ-  
 त्तंक से ६ कहा कि ७ इस समय इस ९ बैल का ८ गोबर खा ले, जब  
 उत्तंक ने कहा कि यह उचित नहीं है तब उस पुरुष ने कहा कि तेरे अष्ट  
 गुरु ने भी खाया है ? २ इस कारण से ? हे ब्राह्मण इसको १० तू भी खा ले  
 ॥ ११ ॥ यह सुनके उस ब्राह्मण ने ११ मूत्र के साथ १२ गोबर को खालिया  
 और १५ खड़े खड़े ही १६ आचमन करके १७ शीघ्र चला १८ जिस पीछे पौष्य राजा  
 के पास जाकर बोला कि आप का १९ कल्याण २० होओ ॥ १२ ॥ हे राजा  
 मैं २१ धन की इच्छा करनेवाला तुम्हारे पास आया हूँ और गुरु के लिये २३  
 उपमा रहित कुण्डल १२ मांगता हूँ २४ जो अष्ट कुंडल २६ तैरी स्त्री २५  
 कानों में धारण करती है वे हे राजा मुझे २७ दै २८ तैरी स्त्री भीतर है जिससे जाकर  
 मांग २९ जनाने में ३० राजा को झूठा जानकर ३१ पास आया और कहा कि तुम्ह  
 को ३२ झूठ बोलना उचित नहीं मैंने ३३ हाणी को ३४ जनाने ३५ सहल मैं नहीं देखी

यह सुनत पौष्य कुछ लवं विचारि, धरं नीप कहयो तिहिं सत्य धारि॥  
 मम रानी खलु अवरोधमाहिं, न पवित्र वहै सु तिहिं लखत नाहिं॥१६॥  
 देखयो विचारि तव भूमिदेव, जान्यौ स्वदेह अपवित्र एव ॥  
 बुल्लयो नृप जानिय मैहु अद्य, आचमन होत ठड्डुं अवद्य ॥ १७ ॥  
 तसमात देह मम असुचि आहिं, सुचि वहै बं जात अवरोधमाहिं ॥  
 यह भाखि पूर्वअभिमुख बिधाय, बैठो पखारि मुख पौनि पाय ॥१८॥  
 बिनु सब्द अफेनै रु नंदज सीत, लै तोय आचमन तीन३पीत ॥  
 किय दोयरे मारज न द्विजेस, करि अल्ल छिद्र करनन असेस ॥१९॥  
 वहै सुचि इम अंतै उर जगामै, देखी तव महिखी दिब्बधाम ॥  
 बुली सु विप्र प्रति हे प्रवीन, तुम अत्य भलै आगमन कीन॥२०॥  
 सेवा जु उचित भाखहु द्विजेस, सो करहिं मन्नि हम अंतिनिदेसैं ॥  
 उत्तंक कहयो सुनि नृपति नारि, वर कुंडल ए तव श्रैव विहारि॥२१॥  
 मुहिं देहु जचत गुरु रमनि हेत, इत दिय सुनि रानी हित उपेतैं ॥  
 भूसुरै समुभायो विविध भाखि, पहुँचावहु कुंडल जतन राखि॥२२॥  
 परिहै जो रच्छांमंजु चूक, हरिहै तो तच्छक दंदसूकैं ॥

१. जगमात्र विचार कर नृपति ने कहा ३. निश्चय ही जनाने में है परन्तु जो अपवित्र होता है वह उसको नहीं देख सकता॥१६॥ तब उस ब्राह्मण ने विचार कर देखा जब अपने शरीर को अपवित्र ही जाना और बोला कि हे राजा मैंने भी इसी समय जाना कि खड़े होकर आचमन करै वह अशुभ होता है॥१७॥ इस कारण से मेरा शरीर अपवित्र १० है क्योंकि मैंने बैल का गोबर खाकर खड़े हुए ने ही आचमन किया था ११ अपवित्र होकर जनाने में जाता हूँ १२ पूर्वदिशा के सामने मुख १३ करके १४ हाथ पग धोकर बैठा ॥ १८ ॥ जिस पानी में शब्द नहीं होता ऐसा बिना १५ भाग और १६ नदी का ठंढा १७ पानी लेकर तीन आचमन किये और उस ब्राह्मण ने दो बार १८ मार्जन किया और २० कानों के छिद्रों को १९ आले (आर्द्र) किये ॥ १९ ॥ इस प्रकार पवित्र होकर २१ जनाने में २२ गया २३ वेद की २४ आज्ञा को मान कर २५ अष्ट कुण्डल २६ तेरे कानों में विहार करनेवाले ॥ २० ॥ २१ ॥ २७ गुरु की स्त्री के अर्थ मांगता हूँ २८ हित के सहित २९ उस ब्राह्मण को नाना प्रकार से कह कर समझाया कि यत्न रख कर इनको गुरु स्त्री के पास पहुँचाना जो ३० रक्षा में शूक पड़ गई है तो ३१ तत्तक नामक ३२ सर्प इनको घोर लेगा ॥ २१ ॥

उत्तंक कह्यो राखहु अनंद, मोसों जु नाहिँ लैसकत मंद ॥२३॥  
 इम कहि द्विज निकसत अप्रमोद, जिंगमिषु मवनीपतिरंपि जगाद ॥  
 मम श्राद्ध करन मन अजँ आहिँ, द्विज पात्र मिलत चिरकाल माँहिँ ॥२४॥  
 तसमांत करहु भोजन कृपाल, द्विज कहिय सँद्य आनहु नृपाल ॥  
 यह सुनत भूप ओदेन गँगाय, उत्तंक अर्थ दिय मोद पाय ॥२५॥  
 वह देखि अन्न सीत रु सकेसँ, भूपहिँ ससापँ प्रकुपित द्विजेस ॥  
 दिय असनँ असुँचि तुमकिय कुचाल, तसमात अंध होवहु नृपाल ॥२६॥  
 सुनि साप नृपति बुल्लयो सछोहँ, मैं सुद्ध अन्न दिय टारिमोह ॥  
 कहि असुचि ताहि मुहिँ देत साप, तसमात होहु अनपत्य आप ॥२७॥  
 उत्तंक कह्यो नृप लखहु अन्न, नहि असुचि होयतो मैं प्रसन्न ॥  
 यह सुनत अन्न देखयो नरेस, जान्यो वह सीतल अरु सकेस ॥२८॥  
 तब कहिय छमाँ करिये निहारि, काहीँ आयाहि कचमुक्त नारि ॥  
 होऊ न अंध तिम कहहु बैन, द्विज कहिय व्है रँ व्है है सनैँ ॥२९॥  
 मम साप हरहु नृप तुमहु व्यर्थ, नृप कहिय मैं न अँचन समर्थ ॥  
 नवनीत हृदय विप्रन वखानि, छुरधौर तीव्रँ छत्रियन जानि ॥३०॥  
 द्विज कहिय अन्न तुम लखिय राव, निकर्यो सकैस सीतल सुभाय

१ सावधान होकर २ जाने की इच्छावाले ब्राह्मण (उत्तंक) से ३ भूपति (पुण्य)  
 ने ४ निश्चय करके ५ कहा कि ६ आज मेरी इच्छा आँद करने की ७ है  
 और पात्र ब्राह्मण = बहुत समय में मिलता है ॥ २४ ॥ ८ इसकारण से  
 हे कृपाल भोजन कर जाओ ? ९ ब्राह्मण ने कहा कि हे राजा ? १० जल्दी लाओ  
 ११ अन्न ॥ २५ ॥ उस अन्न को ठंढा और १२ केस सहित देख कर ब्राह्मण  
 ने क्रोध में होकर राजा को १३ आप दिया कि हे राजा तुमने मुझको १४  
 अपवित्र १५ अन्न देकर कुचाल की है इस कारण से अन्धा होजा ॥ २६ ॥  
 आप को सुनकर राजा ने भी १६ क्रोध के साथ कहा कि मैंने १७ सावधानी  
 से शुद्ध अन्न दिया जिसको अपवित्र कह कर मुझे आप देते हो इससे तुम  
 भी १८ बिना सन्तानवाले होओ १९ कोई स्त्री २० खुले केशों से चली आई  
 इसकारण से अन्ध मत होओ ऐसा वचन कहा. ब्राह्मण ने कहा कि पहिल  
 अन्धा होकर २१ फिर २२ नेत्रों सहित होजावेगा ॥ २९ ॥ २३ मक्खन के समान  
 कोमल हृदयवाले २४ पाछणा की धार के समान २५ तीखा हृदय क्षत्रियों का  
 जानो ॥ ३० ॥

मेरेहु व्हे न तसमांत साप, इम कहि लै कुंडल चलिय आप ॥ ३१ ॥  
 मगमाहिं लख्यो उत्तंक बिप्र, छपनैक इक १ आवत नग्न छिप्र ॥  
 वह तच्छक करि अहिबेस लुप्त, छिन परत दिट्ठि छिन होत गुप्त २२  
 भो द्विजहिं सौचें संकाज धर्म, कुंडल धरि गो तव करन कर्म ॥  
 सुं जती यह अवसर इष्ट पाय, कुंडलन चलयो लै दुर्त पलाय ॥ ३३ ॥  
 उत्तंक लख्यो भजि चोर जात, करि तोयकाजें किय पूत गात ॥  
 कीनों गुरु देवन नमसकार, दोरघो तदेनंतर द्विज उदार ॥ ३४ ॥  
 गाहैं गहि लीनों पहुँचि चोर, वह बेस छोरि अहि भो जु घोर ॥  
 ततकाल विवरै हुव भमिदेस, तेनाहिरधो भुवनं विवेस ॥ ३५ ॥  
 उत्तंक भयो अंतर अचैन, सुमिरे सब रानी कथित बैन ॥  
 पुनि चितिय मै नरदेहवान, बिल तुच्छ यहै किम व्हे प्रयान ॥ ३६ ॥  
 लै दंड खनन लागि भूमि लोक ज्यों भू खुदी नैं त्यो हुव ससोक ॥  
 उत्तंक चित अति कष्ट मानि, वह बतै लई पुरहुत जानि ॥ ३७ ॥  
 कुलिसहिं तव अखिय निर्जेसैं, उत्तंक दंड विच करि प्रवेस ॥

ब्राह्मणने कहा कि हे राजा तुमने अब्र को देख लिया वह ठंढा और केस सहित निकला ? इस कारण से मेरे भी आप नहीं लगैगा ॥ ३१ ॥ उस उत्तंक ब्राह्मणने देखा कि मार्ग में एक नंगा २ छपणक (संन्यासी) ३ शीघ्र आता है वह तच्छक ४ सर्प अपने बेस को छिपा कर क्षण में दीखता और क्षण में छिपजाता है ॥ ३२ ॥ उस समय उत्तंक को ५ दिशा (पाखाने) जाने की आवश्यकता हुई तब कुंडलों को रख कर दिशा गया जब ६ वह संन्यासी अपने ७ अनुकूल समय पाकर कुंडलों को लेकर ८ शीघ्र ९ भागा ॥ ३३ ॥ १० उज लाई करके (आबदस्त लेकर) ११ शरीर को पदित्र करके १२ जिस पीछे १३ संन्यासी का बेस छोड़ कर भयंकर १४ सर्प होगया और भूमि में १५ तुरन्त १६ बिल (छिद्र) हुआ १७ उसमें होकर वह सर्प १८ पाताल में १९ प्रवेश करगया ॥ ३४ ॥ उत्तंक के चित्त में दुःख हुआ और राणी के १९ कहे हुए वचन याद आये, फिर सोचा कि मैं तो २० मनुष्य देह को धारण करनेवाला हूँ और यह छिद्र २१ छोटा सा है जिसमें २२ जाना कैसे होसके ॥ ३५ ॥ इसकारण से दंडा लेकर भूमि को २३ खोदने लगा परन्तु ज्यों भूमि २४ नहीं खुदी त्यो उत्तंक ओक सहित हुआ उसंक ने अपने चित्त में जब बहुत कष्ट मारा वह २५ वार्ता २६ इंद्र ने जानली ॥ ३७ ॥ तब २६ इंद्र ने २७ वज्र से २८ कहा कि

सुनि संव संघ करि दंड वास, भू भेदि कियो बिल सावकास ॥ ३८ ॥  
 तिहि पैठि बिप्र गो नागलोक, बर विविध जत्थ बलभीन थोक ॥  
 प्रासाद हर्म्य निर्यूह केक, इत्यादि लखे आलय अनेक ॥ ३९ ॥  
 उच्चावच क्रीड़ाथल अपार, तत्रोत्तक स्तवन चकार ॥  
 जिनमें ऐरावत करत राज, मैं नमत तिन्हें निजसिद्धि काज ॥ ४० ॥  
 पवनेरित संपाजुत छरंत, जीमूत जेम जे अति लसंत ॥  
 जिनके सुरूप बहु रूप जानि, कलमासक कुंडल जे बखानि ॥ ४१ ॥  
 सबितों जिम ऐरावत प्रभूत, सब नाकपृष्ठ सोभित अभूत ॥  
 अरु नागनके आलय विसैस, गंगातट उत्तर हैं सुबैस ॥ ४२ ॥  
 तत्थहु रहंत पन्नग महान, तिनकीहु करों नुति नम्रमान ॥  
 ऐरावत बिनु रविकरन माँहि, को जायसकत यह रूखात आँहि ॥ ४३ ॥  
 सत असिय अठविं सति हजार २८०००, इतनै अहिरविहय गुंन उदार ॥  
 धृतराष्ट्र करत जिन्ह दीप्यमान, प्रणमामि तिनहु मैं पन्नगान ॥ ४४ ॥  
 जे चलत निकट याके भुजंग, अरु दूर रहत केते अभंग ॥

उत्तंक जिस दण्ड से भूमि खोद रहा है उसमें प्रवेश कर यह सुनते ही वज्र ने २  
 शीघ्र दंड में वाम करके भूमि को फोड़ कर बिल को अवकाश सहित (चौड़ा) कर  
 दिया उसमें घुसकर उत्तंक ब्राह्मण पाताल में गया जहाँ अष्ट और नाना प्रकार  
 के बळीलों से छाये हुए झोंपड़े अमूल्य लपके मकान कई द्वार (दरवाजे) अ  
 थवा चल्ती आदि सब गृह विशेष जानो. इनको आदि लेकर अनेक १० म-  
 कान देखे ॥ ३६ ॥ १ ऊँचे नीचे क्रीड़ा करने के अनेक स्थल हैं तहाँ जाकर १२  
 उत्तंक १ स्तुति १४ की १ ऐरावत जाति के सर्प ॥ ४० ॥ १ पवन से घेरे हुए १७  
 बिजुली सहित १८ टपकते हुए १ मेघ के समान शोभायमान हैं जिनके अने  
 क प्रकार के स्वरूप. और २० चित्र विचित्र छिड़के (धब्बे) जिनके शरीरों पर  
 हैं वे ॥ ४१ ॥ ऐरावत से १ पैदा हुए २ सूर्य के समान तेजवाले जो स्वर्ग में  
 शोभायमान २३ हुए और गंगा के उत्तर किनारे जिनके विशेष घर हैं ॥ ४२ ॥  
 वहाँ भी बड़े सर्प रहते हैं उनकी भी नम्रता पूर्वक १ स्तुति करना है, ऐराव  
 त सर्पों के बिना २ सूर्य की किरणों में कौन जासक्ता है यह २ प्रसिद्ध २ है ॥ ४३ ॥  
 अठईस हजार आठ सौ २८ सर्प सूर्य के घोड़ों का २९ रस्सी बने हुए हैं जिन  
 को ३० धृतराष्ट्र नामक सर्प प्रकाशमान करता है उन ३२ सर्पों को मैं ३१  
 नमस्कार करता हूँ ॥ ४४ ॥ ॥ जो सर्प धृतराष्ट्र के पास चलते हैं और कितने



ऐरावतके जे ज्येष्ठभ्रात, तिन सबन नमत मम करहु भ्रात ॥ ४५ ॥  
 कुरुखेत्रमाहिं जाको निवास, भो खांडवहूमैं प्रथम वास ॥  
 वह नागराज तच्छक सुनाम, मैं ताहि नमत कुंडल सकाम ॥ ४६ ॥  
 काकोदर तच्छक अश्वसेन २, ए दुवर्हि नित्य सहचर सुखेन ॥  
 कुरुखेत भिच्छुमति सरित तीर, जे करत भये सहवास बीर ॥ ४७ ॥  
 तच्छक जघन्य भव नागराज, श्रुतसेन नाम मम करहु काज ॥  
 इत्यादि बहुत दर्बीकरेस, बंदत मैं तिनको नत बिसेस ॥ ४८ ॥  
 उत्तंक करी इम भुति अर्द्ध, कुंडल तथापि ल्याये न सर्प ॥  
 उत्तंक लख्यो इक चरित तत्र, द्वैरनारि बुनत पट वहै इकत्रा ॥ ४९ ॥  
 सित असित तंतु ताना सु कीन, हुव चकित लखि सु कौतुक नवीन ॥  
 इक चक्र लख्यो पुनि द्वादसा १२, देखे तिहिं फेरत खटकुमारा ५० ॥  
 लखि एक पुरुष अरु बीति एक १, सबको किय बंदन जुत बिबेक ॥  
 बुल्लयो सु पुरुष द्विज प्रनर्त जानि, उत्तंक प्रयोजन कहहु जानि ॥ ५१ ॥  
 आकर्ण्य सङ्गति तं पुरुषमाह, सब सर्प होहु मम बस सदाह ॥

ही दूर चलते हैं तिनको और ऐरावत के बड़े भाई इन सब को नमस्कार करता हूं सो मेरी १ रक्षा करो ॥ ४५ ॥ कुरुक्षेत्र में जिसका निवास है और खांडव वन में जिसका पहिले वास हुआ था उस सर्पों के राजा तच्छक को कुंडल लेने की कामना से नमस्कार करता हूं ॥ ४६ ॥ तच्छक ३ सर्प और अश्वसेन सर्प ये दोनों सदा सुख पूर्वक साथ रहनेवाले हैं और जिन्होंने कुरुक्षेत्र में ६ भिच्छुमति नदी के तीर पर साथ होकर वास किया था ॥ ४७ ॥ तच्छक से ८ अन्त में होनेवाला श्रुतसेन नामक सर्पराज मेरा कार्य करो, इनको आदि लेकर बहुत ९ सर्पों को विशेष नम्रता के साथ नमस्कार करता हूं ॥ ४८ ॥ उत्तंक ने इसप्रकार ११ घमंड रहित होकर १० स्तुति करी १२ तो भी सर्प कुंडल नहीं लाये वहाँ पर उत्तंक ने एक चरित्र देखा कि दो स्त्रियाँ इकट्ठी होकर एक वस्त्र बुनती हैं ॥ ४९ ॥ जिनमें १३ स्वेत और १४ काले रंग के तन्तुओं से ताना किया है, इस नवीन तमाशे को देख कर उत्तंक चकित हुआ, फिर एक चक्र (पहिया) देखा जिसके १५ बारह अरे लगे हुए हैं तिसको छः बालक फेर रहे हैं ॥ ५० ॥ फिर एक पुरुष और एक १६ घोड़ा देखा जि न सबको उत्तंक ने नमस्कार किया १७ वह पुरुष उत्तंक को विशेष १८ नम्रतावाला जान कर बोला कि हे उत्तंक तेरा प्रयोजन होवे सो कह ॥ ५१ ॥ १९ यह सुन कर २० वह ब्राह्मण २१ उस पुरुष से बोला कि सब सर्प मेरे

तव पुरुष कह्यो यह आहि अस्व, तदपानमार्गमांशुहि धमस्व ॥५२॥  
 सुनि बिप्र धमिय घोटक अपान, तसमांत कह्यो सुचि धूमवान ॥  
 तिहि सन प्रंतप्र हुव नागलोक, संघांत भयो तच्छक संसोका ॥५३॥  
 लै कुंडल दिय उत्तंक हेत, उत्तंक विचारिय गमन चेत ॥  
 यह अवधिदिन रु गुरुगेह दूर, किम होय अज्ज जावन जरूर ॥५४॥  
 तव पुरुष कह्यो द्विजप्रति सुबैन, इहि हय चढि जैहैं अबहि अैन ॥  
 उत्तंक सुनत चढि हय ललाम, जवनो गुरुदवासित जगाम ॥५५॥  
 कुंडल दये ति गुरुनारि अर्थ, तासों सुभ आसिख लै समर्थ ॥  
 गुरु ढिगहु आय किय नमसकार, गुरु कहिय चिरांगत क्यों उदारा ॥५६॥  
 उत्तंक कह्यो हुव विघ्न जाल, कुंडल हरि तच्छक गो पयाल ॥  
 हरि छात्र गयो तव नागभोन, मै तथ लखे ते कहहु कोन ॥५७॥  
 दुव नारि वुनत देखी निचोलै, तनि तंतु तंत्र परि असितधोलै ॥  
 इक चक्र लख्यो मै द्वादसौर, परिवर्तक ताके खटकुमार ॥५८॥  
 इक पुरुष लख्यो इक बीति तथ, हे कोन सबन कहिये समथ ॥  
 जावतहु लख्यो मै हे अयेह, इक पुरुष कह्यो वृष दीर्घदेह ॥५९॥  
 बुल्लयो वह मोप्रति हे सुजान, वृष जात मूत्रगोमयमशान ॥  
 खाये जे तव गुरु पूर्वकाल, यह सुनत मैहु खाये कृपाल ॥६०॥

वश में होजावे तब उस पुरुष ने कहा कि यह घोड़ा ? है जिसकी २ गुदा में ३ शीघ्र ४ फूंक मार ॥५२॥ यह सुनकर ब्राह्मण ने ५ घोड़े ६ की गुदा में फूंक मारी ७ जिसमें से धूम सहित ८ अग्नि निकला ९ जिसमें नागलोक १० तप गया इससे ? १ उद्विग्न तत्त्वक ? २ शोक सहित होगया ? ३ जाने की अबाधि का चही दिन है ? ४ आज ही तब उस ? ५ पुरुष ने ब्राह्मण से अष्ट वचन कहा कि इस घोड़े पर चढ़ कर अभी ६ घर जावेगा ? ७ सुन्दर ? ८ वेग से गुरु के ? ९ घर में ? १० गया हे उदार तू ? १ देरी से क्यों आया ? २ आपका शिष्य हठ करके नागलोक में गया वहां पर मैंने देखे वे कौन थे सो कहो २३ वस्त्र २४ काला २५ स्वेत २६ बारह अरौंवाला २७ उसके फेरनेवाले छः बालक तहां पर एक पुरुष और एक २८ घोड़ा देखा सो वे कौन थे और हे २९ अष्ट बुद्धिवाले एक पुरुष बड़े शरीरवाले ३० बैल पर चढ़ा था उसने मुझसे कहा कि हे सुजान इस ३१ बैल से पैदाहुआ मूत्र और गोबर ३२ खा, तेरे गुरु ने भी पहिले समय में खाया था.

को कोन वहै कहिये महंत, तब बेद कह्यो सुनि सकल संत ॥  
 पाताल लखी तैं दोय रनारि, धाता १ रुविधाता २ ते बिचारि ॥६१॥  
 अरु तंतु लखे असिता ३ वदात, रजनी १ रुदिवस २ ते गिनहु ख्यात ॥  
 अरु चक्र कह्यो तैं द्वादसार, वह अब्दचक्र जानहु उदार ॥६२॥  
 प्रेरित तिहिं देखे खट ६ कुमार, खट ६ ऋतु तिन्ह जानहु धर्म धार ॥  
 जे पुरुष लख्यो तैं सर्पथान, पर्जन्य गिनहु वह गुननिधान ॥६३॥  
 वह तुरग वन्हिं जानहु प्रसस्त, अपरहुं उदंत अब सुनि समस्त ॥  
 जो वृषभ मिल्यो मग विच द्विजेस, ऐरावत वह दंतावलेस ॥६४॥  
 जो पुरुष लख्यो आरूढ ताहि, उत्तंक जानि पुरहूत वाहि ॥  
 लीनों तैं गोमय तास खाय, पीयूष जानि वह सोदपाय ॥ ६५ ॥  
 तासोंहि बच्यो अहिलोक मांहि, मधवा वह मेरो मिल आंहि ॥  
 कीनों अति सेवन तैं सुभाय अब जाहु बच्छ अपनै निकाय ॥६६॥  
 इस कहि असीस गुरु बेद देत, उत्तंक चलयो कुरुपति निकेत ॥  
 छर्म नाग तच्छ कहिं करन छार, अति कोप गह्यो द्विज हें उदार ॥६७॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ

वे कौन कौन थे सो हे कृपाल कहिये, तब वेद नामक सुनि ने कहा कि हे संत सब सुनो, पाताल में तुमने दो स्त्रियें देखीं उनको धाता और विधाता जानो और काले और स्येत तंतु देखे तिनको रात्रि और दिन मानो और चारह अरोंवाला जो पहिया तुमने देखा वह १ वर्ष का चक्र जानो और उस चक्र को चलाते बालक देखे उनको हे धर्म को धारण करनेवाले उत्तंक छहों ऋतु जानो और जो नागलोक में तुमने पुरुष देखा उसको गुणों का घर २ इन्द्र जानो और जो घोड़ा तुमने देखा उसको ४ प्रशंसायोग्य ३ अग्नि जानो ५ और १ वृत्तांत भी अथ सब सुनो मार्ग में जो ७ बैल मिला था वह ८ हाथियों का पति ऐरावत था और उस पर ९ चढाहुआ पुरुष देखा उसको हे उत्तंक १० इन्द्र जानो और उस बैल का तैंने ११ गोधर खाया उसको १२ अमृत जानो उसी अमृत से तू नागलोक में बचगया, वह १३ इन्द्र मेरा मित्र १४ है १५ हे पुत्र अब अपने १६ घर को जा इसप्रकार कह कर वेद सुनि के आशीर्वाद देते ही उत्तंक कौरवों के पति (जनमेजय) के १७ स्थान पर चला, तत्त्व के १८ अपराध से सर्पों को भस्म करने के लिये हे उदार रामसिंह उस ब्राह्मण (उत्तंक) ने अत्यंत कोप ग्रहण किया

वोतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणाकसौति  
 श्रावितमहाभरते वेदमुनिछात्रोत्तङ्कपौष्यनृपपत्नीकुण्डलमार्गगातत्त  
 क्षकहरणाजितनागलोकनीतकुण्डलोत्तङ्कगुरुपत्नीप्रसन्नीकरणा-वि-  
 चारिततत्तकदाहजनमेजयपुरगमनं पञ्चविंशो२५मयूखः॥२५॥

आदितः सप्तषष्ठितमः ॥ ६७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पञ्कटिका ॥

रचि तच्छक सिर उत्तंक रीस, आयो जहँ जनमेजय अधीस ॥  
 उत तच्छसिला नृपजित्ति आय, सँसचिव जय उच्छव किय सुमाय  
 यह अवसर लहि उत्तंक विप्र, पारिच्छित पँरिखद प्रविसि छिप्र॥  
 दै नृपहिँ उचित आसिख द्विजेस, बुल्ल्योसु बचन रचना बिसेसा२।  
 नहिँ करत भूप करतव्य काज, बालक जिम ओरहि करत आज॥  
 यह सुनत पुजि बिप्रहिँ नृपाल, बुल्यो मुनि मै किम बुद्धिबाला३।  
 जुतधर्म प्रजापालन तजौ न, करतव्य कौन मै करत हौं न ॥  
 काहिये जु होय भवदीय काज, करिहौं तथापि दुँकर दँराज ४।  
 उत्तंक सु मुनि अक्खिय धँराप, अपनौहि निवेरहु काज आप ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा  
 ण शत्रुघ्न के जीवित समय के समकालीन (एक समय में होनेवाले) सूतपु  
 त्र उग्रश्रवा के महाभारत सुनाने में वेद मुनि के शिष्य उत्तंक का पौष्य रा  
 जा की स्त्री से कुण्डल मांगना, उन कुण्डलों को तत्तक का हरना, नागलो  
 क को जीत कर कुण्डल प्राप्त करके उत्तंक का गुरु स्त्री को प्रसन्न करना, तत्त  
 क को भस्म करना विचार कर उत्तंक का जनमेजय के पुर में जाने का पच्ची  
 सवां मयूख समाप्त हुआ ॥२५॥ और आदि से सहस्रठ मयूख हुए ॥६७॥

तत्तक सर्प पर कोध करके उत्तंक राजा जनमेजय के पास आया उधर राजा भी?  
 तत्तशिला नामक देश को जीत कर आया और इस विजय का अपने कामदारों  
 सहित उत्सव किया ॥१॥ १ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय की ४ सभामें) शी-  
 घ प्रवेश किया हे राजा राजाओं के करने योग्य कार्य तो नहीं करता और  
 बालक के समान और ही कार्य करता है ७ हे मुनि मैं बालक बुद्धिवाला  
 कैसे हूँ = आपका कार्य होवे सो कहो १० बडा ११ दुँकर (कठिनाई से  
 करने योग्य) होवेगा १ तोभी करूँगा १२ हे भूपति आप अपना ही कार्य

तव जनक हन्यौ तच्छक अहीसै, मख रचहु ताहि होमन महीस  
 मोख्यो द्विज कास्यप मगहि बीच, नृप आय डस्यो जिहि नाग नीच ॥  
 भो डसत परिच्छित भस्म भूप, रँय बज्रपांत हत बिटपिरूप ॥६॥  
 जाकै अति दर्प सु ज्वलित जाग, निहचैहि दुष्ट हवनीय नाग ॥  
 मेरोहु कियो अपराध मंद, कुंडल हरि लैगो कँलुख कंद ॥ ७ ॥  
 कुरुराज सुनि सु तच्छक कुचाल, कुप्यो जनु भैरव प्रलयकाल ॥  
 मंत्री निज पुच्छिय छिप्र छोहि, मम जनक नास किम कहहु मोहि  
 दोहा

सौनक बीचहि प्रश्न किय, बदि भृगुकुल विस्तार ॥

सुनत सुत सानंद व्है, आरंभिय उच्चार ॥ ९ ॥

वरुन जग्यके बँन्हिमै, ब्रह्मासौ भृगु जात ॥

च्यवनभयो ताके तनय, प्रमतिश्तास सुत रँयात ॥१०॥

भयो घृताची उदरतै, प्रमति पुत्र रुरुनाम ॥

सुनकभयो रुरुकै तनय, जिहि कुल सौनक जाँम ॥११॥

इक द्विजकै पुत्री भई, नाम पुलोमा जास ॥

निवेदो, तुम्हारे ? पिता को ? सपौ के राजा तच्छक ने मारा है उसके हो-  
 मने को हे राजा यज्ञ रचो जिस नीच सर्प ने ? काश्यप नामी ब्राह्मण को  
 जो परीक्षित को अंत्रबल से जिलाने को आता था धन देकर बीच से ही  
 पीछा मोड़ दिया और राजा को आकर डसा उसके डसते ही राजा परी-  
 क्षित भस्म होगया जैसे बज्र के ५ पड़ने के ४ वेग से ६ वृक्ष भस्म हो-  
 जाता है ॥ २ ॥ जिसके बहुत ७ घमंड है वह सर्प निश्चै ही होम की अ-  
 ग्नि में ८ होमने योग्य है, उस ९ मूर्ख ने मेरा भी अपराध किया है कि  
 वह १० पापों का ?? समूह कुंडल हरकर ले गया ॥ ७ ॥ १२ क्रोध करके  
 इस कथा के बीच में ही सौनक मुनि ने स्वतः पौराणिक से प्रश्न किया कि  
 भृगुवंश का विस्तार से वर्णन करो ? १३ सुत पौराणिक ने प्रसन्न होकर कहना  
 प्रारम्भ किया ॥१॥ वरुण यज्ञ की १४ अग्नि से १५ पैदा हुए १६ पुत्र च्यवन के  
 प्रमति नामक ? १७ प्रसिद्ध पुत्र हुआ घृताची नामक अप्सरा के पेट से प्रम-  
 ति का पुत्र रुरु हुआ, रुरु के शूनक नामी पुत्र हुआ उस शूनक के कुल में  
 सौनक ? १८ जनमे ॥ ११ ॥ एक ब्राह्मण के पुत्री हुई जिसका नाम पुलोमा रक्खा

जाहि बालपनमें जनक, दयो हसी करि त्रास ॥१७॥

अरे पुलोमा तू असुर, मम तनया लैजाहु ॥

तदनु बढत बय ताहिकौ, बिरच्यो भृगुसौ व्याहु ॥१३॥

पञ्चमटिका॥

भृगु सदैव एकदा चौर भाँय, सुहि असुर पुलोमा नाम आय ॥  
आतिथ्य कियउ भृगुनारि तत्त, दियपुजिअसन फल मूल पत्त ॥१४॥  
तिहिँ लखत चित्त कंदर्प छाँय, आसुर सुहि चोरन किय उपाय ॥  
पूछ्यो कृसानु वह नय उचारि, भृगुकी वा मेरी कहहु नारि ॥१५॥  
पहिलै सुहिँ दीनी जनक जाहि, बलि सठ दई सुभृगुकोँ विबाहि  
देवनको आनन तू कहात, बुल्लहु कृसानु अत उचितवात ॥१६॥  
सुनि वचन अग्नि सोच्यो दुःखोर, इक होत अनृत इत साध धोर ॥  
इम चिरँ विचार सुँचि ओजअन, बुल्ल्यो करि निश्चित पुव्व बैन ॥  
तँ प्रथम बरी विधिमंत्रहीन, पीछै भृगु विधिजुत परनलीन ॥  
यह सुनत गयो हरि असुर ताहि, वहै त्रस्त करयो तिय पाँहि पाहि ॥

उमको उसके पिता ने बालपन में हसी से डराया कि ॥ १२ ॥ अरे पुलोमा  
राजस तू मेरी पुत्री को लेजा, यह बात पुलोमा नामी राजस सुनता था  
२ जिस पीछे ऊमर बढ़ने पर उस पुलोमा नामक कन्या का भृगु से विवाह  
किया ॥ १३ ॥ ४ एक समय भृगु के ३ घर में चौर की ५ भाँति वही पु-  
लोमा नामक असुर आया जिसका भृगु की स्त्री ने आतिथ्य किया और पू-  
जन करके भोजन के लिये फल मूल और पत्ते दिये ॥ १४ ॥ उस स्त्री को दे-  
खते ही ६ कामदेव हागया और असुर ने उस स्त्री को चोरने का उपाय कि-  
या और ७ अग्नि से पूछा कि नीति से कहो कि यह स्त्री भृगु की है या मेरी  
॥ १५ ॥ इस के पिता ने पहिले मुझे दी थी ६ फिर उस मुखने भृगु को वि-  
वाह दी, हे अग्नि तू देवताओं का १० मुख कहलाता है सो ११ सत्यवार्ता  
होवे वह कहो ॥ १६ ॥ यह वचन सुन कर अग्नि ने सोचा कि उधर तो १२  
झूठ बोलने का पाप और इधर आप का भय है इस प्रकार १३ बहुत देर  
तक सोच कर प्रताप के घर १४ अग्नि ने पहिले का वचन  
निश्चय करके कहा ॥ १७ ॥ तैने विना नीति और विना संतों के पहि-  
ले बरी है और पीछे भृगु ने विधि सहित परखी है, यह सुनते ही उस स्त्री  
को असुर हर कर लेगया तब स्त्री ने डर कर १५ रजा करो रजा करो यह

हो गर्भ तास सो तहँ सुधाम, च्युत होय पस्थो तिहिँ च्यवनरनाम ॥  
 भो भस्म पुलोमा तेज तास, लै बाल चली वह निज निवास ॥९॥  
 संत्रस्त जानि इम स्वसुत नारि, विस्वस्त करी ब्रह्मा पधारि ॥  
 जो परिय पुलोमा नेत्र तोय, ँहदिनी बाहे निकसिय तास होय ॥१०॥  
 विधिँ तिहिँ बधूसरा नाम दीन, इम च्यवनरजन्म जानहु प्रवीन ॥  
 निजगेह गई जब भृगु कलत्र, कोपित मुनि पूछी तमाँकि तत्र ॥२१॥  
 रक्खैसकी कोनै कहिय तोहि, मोतै न डरत को कहहु मोहि ॥  
 सुनि भीतै पुलोमा कहिय हेतु, मै तोहि बताई धूमकेतु ॥ २२ ॥  
 सुनि भृगु प्रकुपि तिहिँ साप दीन, सबभखहुँ होहु पावक मलीन ॥  
 सुँचिकहिय भृगुहि सुनि घोर साप, अपराधबिनाँ किय प्रसभ आप ॥  
 जे संतत धर्म संगत रहंत, ते सँखिख नाँहि मिथ्या कहंत ॥  
 भाखत अँलीक जे सखिख काल, ते रहत पापपीडित बिहाल ॥२४॥  
 भौवी पुनि सात७रु भूत सात७, इतनैँ कुलपुरुखन करत घात ॥  
 तुहिँ दैन साप मैहू समर्थ, पै पूज्य बिप्र यह बेद अर्थ ॥२५॥  
 मैँ बिरचि जोगबल बहुत देह, सबमाँहिँ रहत भृगु जानि एह ॥

कहा ॥ १८ ॥ उसके गर्भ था सो उसी स्थान पर १ गलित होकर पड़ गया  
 इसी से उसका नाम च्यवन हुआ उसके तेज से पुलोमा नामक असुर भस्म  
 होगया, वह स्त्री उस बालक को लेकर अपने १ घर गई ॥ १९ ॥ ४ अपने पुं  
 त्र की स्त्री को डरी हुई जान कर ब्रह्मा ने आकर विश्वासी, उस पुलोमा  
 स्त्री के नेत्रों से ९ पानी पड़ा उसकी ७ नदी वह निकली ॥२०॥ उस नदी  
 का ब्रह्मा ने बधूसरा नाम दिया, इस प्रकार हे प्रवीण (शौनक) च्यवन का  
 जन्म जानो, भृगु की ६ स्त्री जब अपने घर में गई तब क्रोध किये हुए मुनि  
 ने १० ताण कर (विशेष क्रोध से) पूछा ॥ २१ ॥ ११ राजस की १२ डर से  
 १३ कारण १४ अग्नि ने सुभको राजस की पहिले वरी हुई बताई ॥ २२ ॥  
 १५ विशेष कोप करके अग्नि को आप दिया कि हे १७ अग्नि तुम १६ सर्वभक्ष  
 होकर मलीन होओ १८ अग्नि ने घोर आप सुन कर भृगु से कहा कि आप  
 ने धिना ही अपराध १९, हठ किया है ॥ २३ ॥ जो २० निरंतर धर्म के सा  
 थी रहते हैं वे २१ साची में झूठ नहीं कहते जो साची के समय २२ झूठ  
 बोलते हैं वे पाप से पीडित होकर बिहाल रहते हैं ॥ २४ ॥ और सात पी  
 ढी २४ पहिले और सात २३ पीढी पिछले कुल पुरुषों की घात करते हैं ॥२५॥

समन जिवावहु सुंदरी, दल आयुख रुरु देत ॥ ४ ॥

श्राद्धदेव अक्खिय सु मुनि, उचित न्याय जो एह ॥

प्रमदबरा तो पाय पिय, नवहित बंधहु नेह ॥ ५ ॥

वैयस्वत इम बुल्लतहि, प्रमदबरा असुपाय ॥

उठी मनहु सोवत जगी, अब व्याही रुरु आय ॥ ६ ॥

रुरु तवतै पकरी अदय, व्याल बिनासन टेक ॥

वन बिच देख्यो चरम वय, ऊँघत डुंडुभ एक ॥ ७ ॥

देखतही रुरु दंड लै, विरचन लग्गो बाध ॥

डरि डुंडुभ रुरुसौ रढ्यो, रंचक कहि अपराध ॥ ८ ॥

पट्टपात् ॥

प्रमति पुत्र तव कहिय डसिय मम नारि भुंजगन ॥

जिहिं कारन अहिजात सत्र तजिहौं न दंड इम ॥

डसत न डुंडुभ जाति कह्यो रुरुसौं डुंडुभ जब ॥

रुरु अक्खिय किम कहहु सोहु तव जन्म हेतु सब ॥

डुंडुभहु कह्यो मै पूर्वभव हो मुनि नाम सहस्रपद ॥

द्विज दरित साप डुंडुभ भयो बलि रुरु अक्खिय सोहु वदा ॥

डुंडुभ अक्खिय खगम नाम मम मित्र अगग हुव ॥

मै सिसुपन वस मंद धूर्त तन सर्प विरचि धुव ॥

रुरु अपना आधा आयु देता है ॥ ४ ॥ १ धर्मराज ने कहा ॥ ५ ॥ २ धर्मराज के इस प्रकार बोलते ही श्रावण पाकर ॥ ६ ॥ ४ निर्दयता. सर्पों के नाश करने की टेक पकड़ी, वन में कभी बुढ़ापे में ऊँघता हुआ एक डुंडुभ जाति का (जलसर्प) सर्प देखा ॥ ७ ॥ ५ वध. कुछ तो अपराध बता मुझे क्यों मारता है ॥ ८ ॥ रुरु ने कहा कि मेरी स्त्री को सर्पों ने डसा है इस कारण से ठग सर्प जाति को दंड से दण्ड देने से नहीं छोड़ूंगा जब डुंडुभ ने कहा कि डुंडुभ जाति के सर्प नहीं डसते हैं तब रुरु ने कहा कि यह कैसे कहता है तुम्हारे जन्म का कारण सब कहो, डुंडुभ ने कहा कि पूर्वजन्म में मैं सहस्रपाद नामक मुनि था ब्राह्मण के आप से डरा हुआ डुंडुभ सर्प हुआ, फिर रुरु ने कहा कि वह भी कह ॥ ९ ॥ मूर्खता के वश होकर धूर्तता से तृणों का सर्प बनाकर अग्निहोत्र में बैठे हुए खगम नामक के पास डाल कर उसको ड-



अग्निहोत्र यित आय डारि वह खगम डरायउ ॥

अहि डारि तिहिं निश्चेष्ट होय पुनि चेतन पायउ ॥

करि कोप खगम मोसौं कह्यो जिते जोर यह सर्प किय ॥  
तैसोहि पराक्रम पाय तू सर्प होहु इम साप दिय ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मैं तब अक्खिय खगमसौं, हसीमाँहिं यह साप ॥

आगसँ अल्प रु दंड अति, उचित छमोकै आप ॥ ११ ॥

कह्यो खगम मेरो कथन, नैक अलीक न होय ॥

सापहु छुटहिं अवधि सिर, धीर होहु अर्घ धोय ॥ १२ ॥

प्रमतिपुत्र रुरु नाम इक, व्हैहै मुनि भृगुवंस ॥

ताहि लखत अहिरूप तजि, पैहै निजसुप्रसंस ॥ १३ ॥

सो रुरु तू अरु मैहु सो, बदत ताहि इम बैन ॥

तजि हुंभपन विप्र तनु, इहिं पायो गुन अैन ॥ १४ ॥

बयो प्रमतिसुतसौं बहुरि, सो द्विजवर सिख ठानि ॥

धर्म अहिंसा परम धन, जो रुरु निश्चित जानि ॥ १५ ॥

बिनय सहित सूतहिं बहुरि, सौनक अक्खिय रार ॥

कुरुभूपाति अहिसत्र किय, बदि सुहि करि बिस्तार ॥ १६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत सूत उच्चरिय भयउ इक जरतकारु द्विज ॥

राया सो सर्प से डरकर खगम मूर्छित होकर फिर चेतन और मुक्तसे कहा कि जितने जोर (पराक्रम) का यह सर्प बनाया है वैसा ही पराक्रम पाकर तू सर्प हो ॥ १० ॥ १ अपराध न्यून २ आप क्षमा करने योग्य हो ॥ ११ ॥ ३ मिथ्या ४ पापों को धोकर ॥ १२ ॥ ५ श्रेष्ठ प्रशंसा योग्य अपना रूप पावेगा । १३ । ॥ १४ ॥ उस श्रेष्ठ ब्राह्मण ने शिक्षा के अर्थ रुरु से कहा कि हे रुरु अहिंसा धर्म ही परम धन है सो यह निश्चय जाना अर्थात् सर्पों को मारने की हिंसा मत करो ॥ १५ ॥ इस पीछे नव्रता पूर्वक शौनक ऋषि ने सूत पौराणिक से कहा कि राजा जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया उसीको विस्तार करके कहा ॥ १६ ॥ सूत बोले कि जरत्कारु नामक एक ब्राह्मण हुआ जो स्त्रियों में

नारिन विच निष्प्रेम भजत व्रत ब्रह्मचर्य निज ॥  
 मर्त माँहिं जिहिं पितर लखे अपनैँ अवलंबित ॥  
 उद्धचरन अधवदन गहैं इक तंतु विकल चित ॥  
 तिनप्रति उवाच तुम कोन यह सहत दुख विपरीत क्रम ॥  
 यह सुनत विकल बुल्ले अखिल जरतकारुके पितर हम ॥ १७ ॥  
 ॥ दोहा ॥

न करत वह पानिग्रहन, नष्ट होत संतान ॥  
 ताके पाप अधोवदन, झूलत हम इहिं थान ॥ १८ ॥  
 जरतकारु जो तुम कह्यो, सो मैं अखिख्य बिप्र ॥  
 अब जो तुमहित अप्पनो, कहो करौं सुहि छिप्र ॥ १९ ॥  
 सुनि पितरन तासौं कह्यो, विरचि प्रजा करि व्याह ॥  
 यातैं हम व्हैहैं अनर्थ, जैहैं ससुतन राह ॥ २० ॥

॥ पटपड़ी ॥

जरतकारु तब कहिय नाम मेरै मिलिहै तिय ॥  
 तो करिहौं उपयाम कथित तुमरो विचारि हिय ॥  
 तिम तिन प्रति दृढ अखिख चलयो तिय हेत चित्त धरि ॥  
 वन विच कन्या देहु कहिय इम तीन ३ बेर करि ॥

कुछ स्नेह नहीं रखता था और ब्रह्मचर्य सेवन करता था उसने अपने पितरों को एक खड्डे में लटकते हुए देखे जो एक तन्तु को पकड़े हुए ऊपर चरण और नीचे मुख किये हुए विकल चित्त से थे, उनसे जरत्कारु बोला कि तुम उलटे क्रम से दुख सहनेवाले कौन हो, यह सुनकर सब बोले कि हम जरत्कारु के पितर हैं ॥ १७ ॥ वह विवाह नहीं करता इससे हमारी सन्तान नष्ट होती है उसके पाप से हम ऊँधे मुख झूलते हैं ॥ १८ ॥ जरत्कारु बोला कि जिसको तुम जरत्कारु कहते हो वह मैं ही हूँ अब जो तुम अपनी भलाई चाहो सो कहो मैं उसको शाघ करूँगा ॥ १९ ॥ सन्तान पैदा कर पाप रहित सन्तानवाले पितर जिस मार्ग जाते हैं उसी मार्ग हम भी जावेंगे ॥ २० ॥ मेरा नाम (जरत्कारु) है इसी नाम की स्त्री मिलजावेगी तो हृदय में तुम्हारा कहना विचार कर ३ विवाह करूँगा वन में जाकर तीन बेर यह कहा कि मुझे कन्या दो, इस बात को वासुकि नाग ने सुनकर जलदी से

सुहि सुनत नाग वासुकि सजव लै निज भगिनी संग वह ॥  
 करि विनय जरतकारुहिँ कहिय अप्प नाम तिय लेहु यह ॥ २१ ॥  
 कुल निज रक्खन काज जामि वासुकि दिन्नी जब ॥  
 जरतकारु निज नाम जानि तिय लिय विवाहि तब ॥  
 जरतकारु सन जरतकारु आस्तीक अनिय सुत ॥  
 पठित वेद वंदांग बिसद विद्याविनोद जुत ॥  
 जनमेजय अहिमख जत्थ किय तत्थ जाय आस्तीक द्विज ॥  
 भूपहिँ निवारि बर मांगि सब रक्खिय मातुल बंस निजा ॥ २२ ॥  
 सौनक अक्खिय बहुरि कहहु बिस्तारि कथा यह ॥  
 इम सुनि सूत उवाच सुनहु मुनिराज महामह ॥  
 प्रथम देवजुग माँहिँ दच्छतनया प्रकटी दुवर ॥  
 कद्रू विनता २ नाम लई कश्यप विवाहि धुव ॥  
 बर लेहु कह्यो कद्रू सु सुनि नाग सहँस १००० सुत मांगि लिय ॥  
 तिनसौं वलिष्ठ विनता तनय दुवर मांगिय मुनि तेहु दिय ॥ २३ ॥  
 दोहद लच्छन दुहुँन २ बढे लहि काल महाबल ॥  
 कद्रू अंड हजार जनेँ विनता निज जामल ॥  
 सोपञ्चवेदक भांडमाँहिँ कद्रू रक्खिय जव ॥

अपनी बहिन को साथ लेकर नम्रता के साथ जरत्कारु से कहा कि आपके नामवाली यह स्त्री लो ॥ २१ ॥ जनमेजय के यज्ञ में होम होनेवाले अपने कुल की रक्षा के अर्थ वासुकि नाग ने अपनी बहिन दी जब जरत्कारु ने अपने नामवाली स्त्री जानकर ली और जरत्कारु नामक स्त्री ने आस्तीक नामक पुत्र जना. वेद वेदांग सहित निर्मल विद्या चमत्कार सहित पढ़े हुए आस्तीक ब्राह्मण ने जहाँ जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया वहाँ जाकर बर मांग कर राजा को यज्ञ करने से मना करके अपने मामा (सपौ) के वंश की रक्षा की ॥ २२ ॥ चोला बड़े उत्सव के साथ ॥ सत्ययुग में दक्ष प्रजापति के कद्रू और विनता नामक दो कन्या हुईं जिनको कश्यप ने व्याही, इनको कश्यप ने कहा कि बर मांगो सो सुनकर कद्रू ने हजार पुत्र सर्प मांगे और विनता ने उन सपौ से बलवान् दो पुत्र मांगे सो कश्यप ने दिये ॥ २३ ॥ समय पाकर दोनों के गर्भ बढे. कद्रू ने हजार और विनता ने दो

अब्द पंच सत ५०० अंड नाग तिनमें जनमें सब ॥

तिन देखि दुखित विनताहु इक अंड अपक्व बिदीर्ण किय ॥

पूर्वार्धकाय तिहिं वहे अरुन दासी होवहु साप दिय ॥ २४ ॥

पुनि हायन सत पंच ५०० गयै यह अंड द्वितीयकर ॥

पक्कि जनहिं जो पुत्र मात तब साप विमोचक ॥

( एक १ चकर अन्त्यानुप्रासः १ )

इम विनता प्रति अक्खि आप स्वच्छंद अरुन गय ॥

कद्रू विनता २ कवहु लख्यो उच्चैश्रवा सु हय ॥

जो कढ्यो अमृत मंथानतैं तुरगरत्न उरुतेज ध्रुव ॥

यह सुनत बहुरि सौनक कहिय किम समुद्र मंथानहुव ॥ २५ ॥

सूत कहिय इक समय अमर सब रत्नसानु पर ॥

अमृत हेत किय मंत्र होन पीवर अरु निर्जर ॥

श्रीनारायन कहिय मथहु सुर अमुर पयोनिधि ॥

औषध १ रत्न २ असेस डारि तिहिं बिध विसेस विधि ॥

तसमात अमृत वहेहैं प्रकट सो लहि होहु बलिष्ठ सब ॥

अमुरन मिलाय किन्नां सुरन मथन सिंधु आरंभ तब ॥ २६ ॥

अंडे जने. १ वर्ष विन। पक्के एक अंडे को फोड़ा जिसमें से ऊपर के आधे अंग सहित अरुण उत्पन्न हुआ जिसने आप दिया कि कच्चे अंडे को फोड़ कर तुम्हको अंगहीन किया इस कारण से तू दासी हो ॥ २४ ॥ और हे माता फिर पांच सौ वर्ष गये पीछे यह दूसरा अंडा पककर पुत्र जनेगी वह तुम्हको आप से छुड़ानेवाला होवेगा इस प्रकार विनता को कहकर अरुण स्वतंत्र होकर गया जिस पीछे कभी कद्रू और विनता ने उच्चैश्रवा नामक सूर्य के घोड़े को देखा जो समुद्र से (जल के मथने से) बड़ा तेजस्वी रत्नरूप घोड़ा निकला था, यह सुनकर शौनक बोले कि समुद्र का मथन कैसे हुआ ॥ २५ ॥ सूत पौराणिक ने कहा कि एक समय देवताओं ने सुमेरु पर्वत पर पुष्ट और जरा (बुढ़ापा) रहित होने के लिये अमृत के अर्थ सलाह की जय विष्णु ने कहा कि देवता और असुर मिल कर विधिपूर्वक औषधि और रत्न सब डालकर समुद्र को मथो, उससे अमृत प्रकट होवेगा उसको लेकर बलवान् होओ, तब देवताओं ने असुरों को सामिल करके समुद्र मथने का आरंभ

अन्न शिखर आकार शृंग सोभित गिरि मंदर ॥

लता जाल संकुलित विविध पतंगन कूजित वर ॥

विविध दंष्ट्रि संपन्न सहित किन्नर अच्छरिगन ॥

अंतर १ बाहिर २ तुल्य सहस्र एकादस १२००० जोजन ॥

वह अदिराज मंथान थपि उत्पाटन किये जोर अति ॥

तदपि न उठाय कोऊ सकत कहिय विष्णु तँहँ सेस प्रति ॥ १७

तुम अनंत उद्धरहु अदि मंदर अतुल्य भर ॥

सुनि उठाय लिय सेस गये सब अविध कूल पर ॥

जहँ वासुकि किय नेत्र कहिय सागर तहँ असहन ॥

धरहु अंस मोमाँहिँ सहौ मंदर अवघटन ॥

तदनंतर कच्छपराजसौँ सुर असुरन करि नति कहिया ॥

आधार अप्प अगके बनहु सु सुनि कमठ तस तल रहिय ॥ १८

सुरन पुच्छ संग्रहिय फटा असुरन अँचिय जब ॥

लगत मथन छीरोद भयउ उत्कट विराव तब ॥

नागराज मुख पवन कढे ज्वालाजुत धूमित ॥

किया ॥ २६ ॥ मेघशिखर के समान शोभायमान है शिखर जिसका ऐसा मंदर नामक पर्वत लताजाल से सघन (अन्नकाश रहित) नानाप्रकार के पक्षिगणों से शब्दायमान, नानाप्रकार के डाढ़वाले पशुओं से युक्त, किन्नर और अप्सराओं के गण सहित, भीतर और बाहर से समान ग्यारह हजार योजन के उस पर्वतराज को मथने का दंड (रई) बनाकर उसको उखाड़ने में बहुत जोर किया तो भी उसको कोई नहीं डठासका तब विष्णु ने शेषनाग से कहा ॥ २७ ॥ मंदर नामक पर्वत अतोल भार सहित है इसको हे शेषनाग तुम उठाओ, यह सुनकर शेष ने उठालिया और समुद्र के किनारे पर ले गया जहाँ वासुकि सर्प का नेता किया तहाँ समुद्र ने कहा कि यह मुझसे सहन नहीं होसका मुझसे सबका अंश रखो तब मंदराचल की टकर सह सकूँ जिस पीछे कमठराज से सुर असुरों ने नम्रता करके कहा कि आप पर्वत के आधार बनो यह सुनकर कमठ उस पर्वत के नीचे रहे ॥ २८ ॥ जब देवताओं ने पुँछ को पकड़ी और दैत्य फण को खींच कर छीरसागर को मथने लगे तब तीव्र शब्द हुआ, नागराज के मुख से ज्वाला और धुँएँ

मुदिर होय तिन महत बुद्धि बिरचिय प्रसांति हित ॥

गिरि हलन पिष्ट जल जीव हुव बरुनराज वैभव बिगरि ॥

शृंगस्थ विटपिपतगन सहित भ्राम्यमान च्युत गयउ भरि २९

अवघटन भव अग्नि छुट्टि पब्बय किय छादित ॥

सिंह गजादिक सत्व भये सब तत्थ भस्म मित ॥

अन्न सलिल करि इंद्र सोहु दवदाह समायउ ॥

स्रवित तरुन निर्यास उदधि अंतर भरि आयउ ॥

मिश्रित समस्त औषध रसन छोर भयउ सागर सकल ॥

एकांत मथन आकूल इम भयउ आज्य नीरोधि जल ३०

तदनंतर सब सुरन कहिय हुव हीनसक्ति हम ॥

औंवि नेत्र नहिं सकत करहु बल होय जथाक्रम ॥

हरि सन लहि बल बृद्धि करिय अंबुधि आकुल घन ॥

पाय अवाधि परिनाम भ्रमत प्रकटिय रतनन गन ॥

कुमुदेस १ आज्य सन तहँ कढिय श्री २ पुनि पांडुर बासिनिय ॥

देवी सुरा ३हु प्रकटिय बहुरि सुभ्र सप्ति ४सुरराज प्रिया ३१॥

कौस्तुभ मनि ५ पुनि कढिय हुव सु हरिवच्छ विभूषन ॥

सहित पवन निकला उसकी शान्ति के अर्थ मेघ ने उन (देवता और दैत्यों) के पूजनीय होकर वृष्टि करी, पर्वत के हिलने से जल के जीव पिस कर वरुण राज का वैभव बिगड़ गया और शिखर पर ठहरे हुए वृक्ष और पत्नी चकर (भँवल) खाकर छूट कर गिरगये ॥ २९ ॥ टक्कर (परस्पर की रगड़) से पैदा हुई अग्नि ने छूट कर पर्वत को छालिया जिससे सिंह हाथी आदि जीव जहाँ पर भस्म होगये तहाँ इन्द्र ने मेघ के पानी से इस अग्नि की दाह को भी मिटाया, वृक्षों से बह कर गूद समुद्र में झड़ गया और सब औषधि और रसों के मिल जाने से सम्पूर्ण समुद्र दूध का होगया और अत्यन्त मथने से किनारों पर्यन्त समुद्र का पानी घृत होगया ॥ ३० ॥ जिस पीछे देवताओं ने कहा ३समुद्र को ३अन्त में ४उस घृत से चन्द्रमा निकला और फिर स्वेत बस्त्रवाली लक्ष्मी, फिर देवी मदिरा प्रकट हुई और स्वेत रंग का घोड़ा निकला जो इन्द्र को प्यारा है ॥ ३१ ॥ ५त्रिष्णु की छाती का भूषण हुआ

पारिजात ६ पुनि कढिय कामसुरभी ७ अच्छरिगिन ८ ॥  
 द्विदराज चउ४दंत ९ कल्पपादप१० कपिला११ जिम ॥  
 कर निज अमृत करीर १२ कढे धन्वंतरी १३ हु तिम ॥  
 अति मथन होत प्रलयानुचर उफनि धूमजुत जनु अनल ॥  
 निजगंधमूढ त्रिभुवन करत कालकूट१४प्रकटिय प्रबला३२।

॥ दोहा ॥

मंत्रमूर्ति सिव कंठ निज, धरयो गरल करि पान ॥  
 भाल तिलक हित किन्न भव, निज सासि अमृत निधाना३३।  
 श्री१कौस्तुभ२हरि उर बसे, हंय१गज२गो३तरु४हत्य ॥  
 वासवकै लगतहि बढे, सुधा असुर लाहि तत्थ ॥ ३४ ॥  
 महादर्प रचि रन तुमुल, लग्गे लुट्टन रल ॥  
 माधव व्है तब मोहिनी, जोरयो मोहन जत्न ॥ ३५ ॥  
 माया मृढन मिलतही, दयो सुधाघट ताहि ॥  
 पीवहिं हम बिच सो प्रथम, जिहिं तुम पावहु चाहि ॥ ३६ ॥  
 पायो सब कहि पंति करि, असुर सुरन दुहुँ२ओर ॥

फिर देवतरु, कामधेनु और अप्सराओं का गण प्रकटा, चार दांतवा-  
 ला ऐरावत हाथी कल्पवृक्ष (वांछित फलदायक देवतरु) कपिला नामक (पी-  
 ले रंग की) गौ और हाथ में अमृत का घड़ा लिये हुए धन्वन्तरि निकले. अ-  
 त्यन्त मथने से प्रलय के साथ चलनेवाला मानों धूम के साथ अग्नि होबे  
 इसप्रकार उदण कर अपनी गन्ध से तीनों लोकों को सूँछित करता हुआ  
 प्रबल विष (जहर) प्रकट हुआ ॥ ३२ ॥ उस विष को शिव ने पीकर मंत्र से  
 प्रतिमा के समान अपने कंठ में धरा और अमृत ही है धम जिसके ऐसे च-  
 न्द्रमा को महादेव ने अपने ललाट का तिलक किया अर्थात् चन्द्रमा को ल-  
 लाट पर रक्खा ॥ ३३ ॥ लक्ष्मी और कौस्तुभ मणि विष्णु के उर में बसे, और  
 घोड़ा, हाथी, गौ और कल्पवृक्ष इन्द्र के हाथ लगते ही अमृत लेकर दैत्यों  
 का साथ बड़ा ॥ ३४ ॥ बड़ा घमंड रचके भयंकर युद्ध करके रत्न लूटने लां-  
 तव विष्णु ने मोहिनी रूप होकर असुरों को मोहने का उपाय जोड़ा ॥ ३५  
 १अमृत का घड़ा ॥ ३६ ॥ दैत्य और देवताओं की दोनों ओर पंक्ति करके स-  
 को पाया जिसमें राहु ने समझा कि अमृत तो देवताओं को पिलाते ।

समुक्ति राहु पावत सुरन, चोरयो सुर वषु चोर ॥ ३७ ॥  
 सूर १ सीतकर २ सैन सन, हरि सो अरि अरि मारि ॥  
 दिन्नो ग्रहपन करि दलित, अमृत न भोग्य उचारि ॥ ३८ ॥  
 ॥ पटपदी ॥

सुधा कलस तब सजव भूपटि असुरन हरि सन लिय ॥  
 प्रहरन सुरन प्रहारि कलह अवमर्द प्रचुर किय ॥  
 नारायण १ निजचक्र चाप २ नर १ अतुल चलावत ॥  
 सो घट पायउ सुरन विजय सम्मद छक छावत ॥  
 दस दिसन कंपि आसुर दुरिय सुर प्रसन्न दिव संचरिय ॥  
 हरि १ बल भजाय असुरन हुलसि सुरन सुधा इम उद्धरिय ॥  
 दोहा

तब जो निकस्यो सित तुरग, तिंहि निमित्त पण बाद ॥

विनता कद्रूकै बन्यो, सु कद्रौ सुनहु प्रमाद ॥ ४० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायण तृतीयऋषौ वीति  
 होत्रचहुवाणशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्री

इसकारण से उस चोर ने देवताओं का शरीर चुराया अर्थात् देवताओं का स्वरूप करके उसकी पंक्ति में जा बैठा ॥ ३७ ॥ जब सूर्य चन्द्रमा ने सैन से कहा कि यह असुर है तब विष्णु ने अमृत तुमारे भोग लायक नहीं यह कह कर चक्र से उस शत्रु को मार कर टुकड़े करके ग्रहपन दिया (मस्तक का केतु और धड़ का राहु इन नामों से दोनों ग्रह बने) ॥ ३८ ॥ तब असुरों ने विष्णु से जलदी भूपट कर अमृत का घड़ा ले लिया जब देवताओं ने शस्त्र चला कर युद्ध में बहुत पीड़ित किये और नारायण ने अपना चक्र और नर ने अपना धनुष चलाया इस से देवताओं ने विजय के हर्ष के उत्साह में छाकर वह घड़ा पाया, असुर धूज कर दशों दिशा में छिपे और देवता प्रसन्न हो कर स्वर्ग में गये, इसप्रकार विष्णु के बल से असुरों को भगाकर देवताओं ने अमृत को निकाला ॥ ३९ ॥ उस समय जो स्वेत रंग का घोड़ा निकला उसके निमित्त भूल से कद्रू और विनता के पण (सर्त, होड) का विवाद हुआ वह कहता हूँ सो सुनो ॥ ४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
 ण शत्रुघ्न के जीवित समय के समकालीन मृतपुत्र के महाभारत सुनाने



वितमहाभारते प्रमद्वराप्रत्युज्जीवनरुविबहनडुगडुभशापमोक्षरा  
जरत्कारुदंपत्युपयमनाऽऽस्तीकजनननागाऽरुगागरुडोद्भवनसुराऽ  
सुरसमुद्रमन्थनसुधा१सप्ति२मुख्यमहारत्ननिष्कसनगिरीशगरत्न  
प्रसनप्रभुपूर्वदेवपराजयनसप्तिमुधामुरभीसिन्धुराऽऽदिसुरेशाऽर्ष-  
णां सप्तविंशति २७ तमो मधूखः ॥ २७ ॥ आदित एकोनसप्त-  
तितमः ॥ ६९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

विनतासौ कहू कहिय, उच्चश्रवा किह रंग ॥

विनता तब अखिय विसद, यानै मेचक अंग ॥ १ ॥

कहैं अनृत सो किकरी, होय परस्पर हाल ॥

किय दोउनसंकेत इम, कहू कुहक कुचाल ॥ २ ॥

पदपदी

तब कहू निज तनय अखिल बुल्लि रु बुल्लिय इम ॥

होय असित कच रहहु जु हय मेचक दिखाय जिम ॥

नटे सुनत सब नाग होय हमतैं अधर्म नन ॥

मैं प्रमद्वरा का पीछा जीना और रुरु का विवाह होना, डुंहुभ सर्प का आप  
छूटना, जरत्कारु नामक स्त्री पुरुष का विवाह, आस्तीक का जन्म, सर्प अरु-  
ण और गरुड़ का पैदा होना, देवता और दैत्यों का समुद्र मथना, अमृत और  
घोड़ा है मुख्य जिनमें ऐसे महारत्नों का निकलना, शिव का विषपान कर-  
ना, प्रतापी दैत्यों का पराजय होना, घोड़ा अमृत कामधेनु ऐरावत आदि  
इन्द्र के अर्पण होने का सत्ताईसवां मधूख समाप्त हुआ ॥ २७ ॥ और  
आदि से उनहत्तर मधूख हुए ॥ ६९ ॥

उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा किस रंग का है. विनता ने कहा कि स्वेत रंग का  
है. कहू ने कहा कि श्याम रंग का है ॥ १ ॥ इनमें जिसका यचन झूठा निक  
ले वह अभी एक दूसरी की दासी होवै, इसप्रकार जालसाज कहू ने  
अपनी खोटी चाल से दोनों में संकेत किया ॥ २ ॥ तब कहू अपने सभ  
पुत्रों को बुला कर बोली कि तुम श्याम रंग के केश होकर घोड़े के लगजा-  
ओ जिससे वह घोड़ा श्याम रंग का दीखै. हम से यह अधर्म नहीं होता

सुनि कद्रू दिय साप करन संहार स्वपुत्रन ॥

जनमेजय नृपके जागं बिच तुमहिं ज्वलित खै हैं अनल ॥

सुनि असह कहिय सर्पन करहिं कछुक स्याम हय बुद्धिवल ३

तब भुजंग कच स्याम होय यह लूम मध्य रहि ॥

आये दोउन रदिट्टि जीत मेरी कद्रू कहि ॥

विनता किय किंकरिय गरुड पुनि अवधि पाय हुव ॥

जातमात्र उडि गगन त्रस्त किन्नै निर्जर भुव ॥

सब कंपि गये पावक सरन इन्ह नुति सुनि बुल्ल्यो अनल ॥

जिन डरहु गरुडमम तेजसन सुर हितकर यह हुव प्रबल १४।

गरुतमान यह सुनत सुरन संतत विरुदायउ ॥

सुनि नुति कश्यप सूनु दिव्य निज तेज समायउ ॥

अग्रजात निज अरुन रह्यो रवि संग अटन रति ॥

गृह पुनि आवत गरुड कहिय कद्रू विनता प्रति ॥

बहि हमहिं सहल हित लैचलहु सिंधुकोन अहिलोक जहैं ॥

बहि ताहि सुनत विनता चलिय गरुड अहिन बहि गयउ तहैं १५।

१ यज्ञ में तुमको जलता हुआ अग्नि खावेगा यह असह आप सुन कर सर्पों ने कहा कि हम बुद्धिवल से घोड़े को थोड़ा सा स्याम करेंगे ॥ १३ ॥ तब सर्प स्याम रंग के बाल होकर घोड़े की पूँछ में लग गये, वही पूँछ का भाग दोनों की दृष्टि आया जब कद्रू ने कहा कि मेरी जीत हुई, यह कह कर विनता को दासी बना ली। जिस पीछे अवधि पाकर विनता का दूसरा पुत्र गरुड उत्पन्न हुआ जन्मते ही आकाश में उड़कर देवताओं को निश्चै ही भयभीत किया तब सब धूज कर अग्नि के शरण गये जब इन (देवताओं) की स्तुति सुनकर अग्नि बोला कि मत डरो यह गरुड मेरे तेज से देवताओं का हित करनेवाला प्रबल हुआ है ॥ १४ ॥ यह सुनकर देवताओं ने गरुड की निरन्तर स्तुति की, वह स्तुति सुनकर कश्यप के पुत्र (गरुड) ने वह दिव्यतेज अपने आप में शान्त कर लिया, गरुड का बड़ा भाई अरुण फिरने में प्रीति करके सूर्य के साथ रहा और जब गरुड पीछा घर पर आया तब कद्रू ने विनता से कहा कि हमको उठाकर सहल कराने को समुद्र के कोने में सर्पलोक है वहाँ लेचलो, तब विनता कद्रू को और गरुड सर्पों को उठाकर लेगये ॥ १५ ॥ फिर

पुनि गरुडहिँ तिन कहिय लोक यातैं इक अद्भुत ॥  
 तहाँ हमहिँ बहि चलहु दुखख गरुड सु बिचारि द्रुत ॥  
 विनता पुच्छिय जाय मात इनकैं क्यों किकर ॥  
 जिहिँ अकिखय इन कोल जिति अप्पुन किय अनुचर ॥  
 तब गरुड अहिन प्रति उच्चरिय चेटकपन भोचन करहु ॥  
 जो लेहु मांगि दैहौ सजव इष्ट सोहि हित अनुसरहु ॥६॥  
 अहिन गरुड प्रति कहिय देहु पीयूख आनि जब ॥  
 दासभाव सन छुटहु तखख तामहिँ बुल्लयो तब ॥  
 अमृत लैन मैं जात छुधा आतुर परंतु अति ॥  
 असन बतावहु अंब कहिय विनता तब सुत प्रति ॥  
 है सिंधुकुक्षि विच लोक इक बसत तत्थ सहँसन सबर ॥  
 बिनु विप्र खाय तू तिन सबन आनहु अमृत अपत्यवर ॥७॥

दोहा

किम जानौं खगपति कह्यो, छत्र चिन्ह द्विज छिप्र ॥  
 करत असन विनता कह्यो, बन्धि बनेँ सुहि विप्र ॥८॥

पञ्चटिका

सुनि गरुड गयो उडि सबरलोक, खाये निषाद सँकुटुंब थोक ॥

सपौं ने गरुड से कहा कि इससे भी एक दूसरा लोक अद्भुत है वहाँ हम को  
 लेचलो यह सुनकर गरुड ने यह दुःख विचार कर शीघ्र ही माता से पूछा  
 कि हम इनके दास क्यों हैं जब विनता ने कहा कि कहु ने मुझको एक को-  
 ल में जीत कर अपने को दास बनाया है तब गरुड ने सपौं से कहा कि हम-  
 मको दासपन से छोड़ो. जो तुमको प्रिय होवे वह मांगो सो जल्दी देऊँगा  
 यह हमारा हित करो ॥६॥ सपौं ने गरुड से कहा कि अमृत ला दो तब दो  
 सपन से छूटोगे. जब गरुड बोला कि अमृत लेने को तो मैं जाता हूँ परन्तु  
 भूख से बहुत पीड़ित हूँ सो हे माता भोजन बता. समुद्र के बीच में हजारों  
 भील बसते हैं उनमें ब्राह्मण को छोड़ के सब को खाना और हे श्रेष्ठ पुत्र  
 अमृत लाओ ॥ ७ ॥ गरुड ने कहा कि भीलों के सामिल रहनेवाले छिपे हुए  
 चिन्हों के ब्राह्मण को जल्दी कैसे पहिचानूँ तब विनता ने कहा कि जब  
 समय गले में अग्नि लगजावे उसीको ब्राह्मण जानो ॥ ८ ॥ १ स्त्री सहि

संवरीपति हो द्विज एक तब, खग सोहु गिल्यो संजुत कलत्रा॥  
 जब जरन लग्यो गल पन्नगारि, तब वह अलात उगिल्यो सनारि ॥  
 खगराज जदपि खाये निखाद, नहिं तदपि छुंथा मिटिभो प्रसाद ॥ १० ॥  
 कश्यप समीप तब गरुड जाय, बलि कहिय देहु भोजन बताय ॥  
 यह खगहु सरोवर कहिय तात, दुवर अथ द्विरद कच्छप दिखात ॥ ११ ॥  
 जिनके जनमातरसौं विरोध, सुनि सोहु दुवरहि खावहु सुबोध ॥  
 हुव विप्र विभावसु नामधेय, अनुजात प्रतीकरहु भो अजेय ॥ १२ ॥  
 द्विज अनुज कहिय वसु बंदि देहु, विश्वावसु बुल्लयो अनृत एहु ॥  
 धनभाग करैं नहिं साधु भ्रात, तू कहत एकता छोरि बात ॥ १३ ॥  
 तसमात अनुज मातंग होहु, सुनि देत भयो जिहिं साप सोहु ॥  
 वनि कच्छप तुम जल करहु वास, तिन लाहिय परस्परसाप त्रास ॥  
 तबतैं दुवरवारन कमठरकाय, यह सुनि सुपर्णा सर निकट आय ॥  
 दुवश्नखनवीच गहि दुहुनर आप, उडि इत सुमेरु शृंगहिं अपाप ॥  
 निज गरुत बात लखि दुमन भीत, पुनि अगग चलिय खगपति पुनीत ॥  
 इम उडत लख्यो न्यग्रोध एक, हाटकमनिसाखा फल अनेक ॥ १६ ॥

१ गरुड का गला जलने लगा २ उस अग्नि के अंगारे (खीरे) को ३ भूख मिट कर प्रसन्न नहीं हुआ ॥ १० ॥ फिर गरुड को पिता ने कहा कि यह तालाब है तहां हाथी और कछुआ दोनों दीखते हैं ॥ ११ ॥ जिनके कई जन्मों से वैर है. विभावसु नाम का ब्राह्मण आगे हुआ था उसका छोटा भाई प्रतीक भी किसीसे जीतने में नहीं आये ऐसा था ॥ १२ ॥ छोटे भाई ने कहा कि धन बांट दो विश्वावसु ने कहा कि तूने यह मिथ्याभाषण किया है. श्रेष्ठ भाई धन के बंट नहीं करते ॥ १३ ॥ इसकारण से ही छोटे भाई तू हाथी हो. यह सुनकर प्रतीक ने भी कहा कि तू कच्छप होकर जल में घाम कर, इसप्रकार उन्होंने परस्पर आप का भय लिया ॥ १४ ॥ जब से दोनों हाथी और कच्छप का शरीर धारण करते हैं, यह सुनकर गरुड तालाब के निकट आकर दोनों नलों में दोनों को पकड़ कर सुमेरु पर्वत के शिखर पर प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥ अपने पांखों के पवन से वृक्षों को भय होता देख कर वह पवित्र गरुड आगे चला, इसप्रकार उडते हुए ने एक बट (बद) का वृक्ष पा लिया जिसके शाखों की शाखा और मणियों के अनेक फल थे ॥ १६ ॥ जिस

जोजन सत१०० अवयव प्रतत जास, पायोधि छुवत छाया प्रकास ॥  
 सतकारि गरुड बुल्लयो दु सोहि, इभ१ कूर्म२ भखहु मम सिर अरोहि ॥  
 जब गरुड चरन कछु परस जात, साखा सु चली तुटि अकसमांत ॥  
 लागे जँहँ अधमुख लंबमान, मुनि बालखिल्य तपदमनिधान ॥ १८ ॥  
 लखि तिन्ह खगेस भयसो कलीन, लिय भेलि न साखा गिरन दीन ॥  
 उडि ताहि चंचु गहि चलिय आप, मुनिजनन कह्यो विक्रम अमाप ॥  
 उड्डीन एह गहि भर गरिष्ठ, तसभात गरुड नामा वरिष्ठ ॥  
 उडि आय गंधमादन अगेस, तहँ तात लखे कश्यप खगेस ॥ २० ॥  
 बुल्ले मुनि यों लखि बैन तेध, साहस यह छोरहु न कछु श्रेय ॥  
 सुन कहिय तजत साखा स्वभाय, निज बालखिल्य व्है पिष्ट जाय २१  
 प्रभु कश्यप तब मुनि किय प्रसन्न, तिहिँ छोरि भये हिमगिरि प्रपन्न ॥  
 बलि गरुड कश्यपहिँ कहिय बैन, साखा यह डारौं कोन अैन ॥ २२ ॥  
 इक गिरि तब कश्यप दिय वताय, डारी तहँ साखा गरुड जाय ॥  
 इभ१ कमठ २ भखे तिहिँ शंग बैठि, पव्वय दरारि भुव गयउ पैठि ॥ २३ ॥

के अंग सा योजन तक फैले हुए और जिसकी छाया समुद्र को स्पर्श करती थी वह बट वृक्ष गरुड का सत्कार करके बोला कि मेरे ऊपर बैठ कर हाथी और कच्छप को भोजन करो ॥ १७ ॥ जब गरुड ने अपना चरण लगाया तब उसकी शाखा अचानक तूट कर चली. जिसमें इन्द्रियों को रोकना और तप ही है धन जिनका ऐसे बालखिल्य नामक ऋषि नीचे मुख किये लकट रहे थे ॥ १८ ॥ उनको देख कर गरुड शोकलीन हुआ और उस शाखा को भी अपनी चाँच में झेल कर गिरने नहीं दी जिसको देख कर मुनियों के गण ने कहा कि इसका अमाप विक्रम है ॥ १९ ॥ इस शाखा को पकड़ कर थडा ड डाला भरा इसकारण से सब से अेष्ठ गरुड नाम हुआ, गंधमादन नामक पर्वत राज पर उड़ कर आया तहां पिता कश्यप ने गरुड को देखा ॥ २० ॥ इसकारण गरुड को देख कर कश्यप मुनि बोले कि यह हठ छोड दो इसमें कुछ लाभ नहीं यह सुनकर पुत्र (गरुड) ने कहा कि शाखा को छोडते ही अपने बालखिल्य ऋषि चुन होजावेंगे ॥ २१ ॥ जब कश्यप ने बालखिल्य मुनियों को प्रसन्न किया. तब वे उस शाखा को छोड कर हिमालय पर्वत के शरण में गये फिर गरुड ने कश्यप से कहा कि किस स्थान में डालूं ॥ २२ ॥ १ हाथी २ गंधमादन पर्वत के शिखर पर बैठकर ॥ २३ ॥ देवताओं के

उडि चलिय गरुड तब अमृत हेत, उतपात मचे अमरन निकेत ॥  
 सुरगुरु बुलाय पुच्छिय सुरेस, उतपात ब्रात किम होत एस ॥२४॥  
 इंद्रहिं गुरु अक्खिय तव प्रमाद, पुनि पाय बालखिल्यन प्रसाद ॥  
 कश्यप तनूज यह गरुड नाम, अमरालय आवत अमृतकाम ॥२५॥  
 अमरन प्रति अक्खिय सक्र एहु, दढ रत्न सुधा नहिं जान देहु ॥  
 हुव ससुर सज्ज इम कहि सुरेस, सुनतहि यह पुच्छिय सौनकेस ॥२६॥  
 किम किय प्रमाद सुरराज सूत, किम बालखिल्य तप गरुड भूत ॥  
 किम हुव सकुंत कश्यप अपत्य, सब हेतु सावयव कहहु सत्य ॥२७॥  
 सुनि कहिय पुब्ब कश्यप समर्थ, मख रचत भये वर पुत्र अर्थ ॥  
 दीनै सुर इंधन हित पठाय, ऋषि बालखिल्य जुत देवराय ॥२८॥  
 तहँ सक्र सहज अतिबल निधान, आयो लै इंधन अग प्रमान ॥  
 गन बालखिल्य अति अल्पगात्र, सब एक शिर्ष अंगुष्ठमात्र ॥२९॥  
 पालास बिट इक शलिय उठाय, सब तदपि रहे भर खेद पाय ॥  
 मगमै कहुं गोपद पूर्ण नीर, तामाहिं गिरे सब अणु सरीरा ॥३०॥

(स्वर्ग) में बृहस्पति को बुलाकर इन्द्र ने पूछा यह उत्पातों का समूह क्यों होता है ॥२४॥ बृहस्पति ने इन्द्र से कहा कि तुम्हारी भूल और बालखिल्य मुनियों के वर से कश्यप का पुत्र यह गरुड नामक हुआ जो अमृत लेने को स्वर्ग में आता है ॥२५॥ देवताओं से इन्द्र ने कहा कि अमृत अपना दढ-रत्न है जिसको मत जाने दो, यह कहकर देवताओं के सहित इन्द्र सज्जी-भूत हुआ, यह सुनकर शौनक मुनि ने सूत पौराणिक से पूछा कि ॥२६॥ हे सूत इन्द्र ने कैसे भूल की और बालखिल्य मुनियों के तप से गरुड कैसे पैदा हुआ और पत्नी कश्यप का पुत्र कैसे हुआ, सबका कारण अंग उपांग सहित सत्य कहो ॥२७॥ यह सुनकर सूत ने कहा कि पूर्वकाल में समर्थ कश्यप ने श्रेष्ठ पुत्र के लिये यज्ञ रचा जिसमें इंधन लाने को देवताओं को भेजा और बालखिल्य ऋषियों सहित इन्द्र भी गया. बड़ा बलवान् इन्द्र सहज से ही पर्वत के समान इंधन उठालाया और बालखिल्यों का समूह बहुत छोटे शरीरवाला सब अंगूठे के एक पेरामात्र थे ॥२९॥ ढाक के पत्ते का एक बीट सब ने मिलकर उठाया तो भी भार से खेद युक्त होगये और मार्ग में कहीं गौ के खुर में पानी भरा था उसमें अणु के समान शरीर गले गिर गये ॥३०॥

हसि लंघि तिनहिँ बासव जगाम, हुव मुनिहु ताहि जित्तन सकाम ॥  
 किय सबन अग्निविच होम आय, कहि बचन इन्द्र असहन सुभाय ॥  
 सतः१०० गुनित इंद्रतैं बल बिसेस, रन जो प्रचारि जितैं सुरेस ॥  
 इक १ इंद्र होहु असो बलिष्ठ, यह सुनत सक्र हुव सो कनिष्ठ ॥ ३२ ॥  
 कश्यप प्रति अक्खिय विनु बिसास, मुनि बालखिल्य मम करत नास  
 कश्यप सुनितिन प्रतिकहिय जाय, कसमात हवन करियत श्रमाय ॥  
 यह इंद्र रच्यो लोकेस आप, जग अखिल तान कारन प्रजाप ॥  
 तुम अपर इंद्र हित जत्नवान, विधि बचन व्यर्थ न करहु सुजान ॥ ३४ ॥  
 संकल्प स्त्रीय नहिँ अनृत आज, तिहिँ होहु होमफल बिहगराज  
 कश्यप प्रति अक्खिय तब मुनीन, मख रचत तुमहु सुत लोभ लीन  
 संकल्प सत्य तो होहु सत्य, वह बिहगराज तावक अपत्य ॥

इम सूत गरुड भव हेतु गीत, अब कहत गरुड जिम अमृत नीत ॥  
 लिय सजव सुधाँ सुरलोक जाय, सक्रादि सुरन सन विजय पाय  
 पुनि सक्र गरुड मित्रत्वं आसैं, बलि किय खगेसँ हरिकेर्तु वास ॥ ३७ ॥

जिनको उल्लंघन करके हस कर इन्द्र चला गया इससे मुनियों ने क्रोध करके इन्द्र को जीतने की कामना की ॥ ३१ ॥ युद्ध में ललकार कर इन्द्र को जीतैं ऐसा बलवान् एक दूसरा इन्द्र होवे, यह सुनकर इन्द्र शोक में अच्छा रखनेवाला (शोक सहित) हुआ ॥ ३२ ॥ अपने बल में विश्वास रहित होकर कश्यप से कहा कि बालखिल्य मुनि मेरा नाश करते हैं, कश्यप ने बालखिल्य ऋषियों से जाकर कहा कि किसकारण परिश्रम करके होम करते हो ॥ ३३ ॥ इस इन्द्रको स्वयं ब्रह्मा ने रचा है और सब जगत् की रक्षा करने को प्रजापति किया है, तुम दूसरे इन्द्र का यत्न (उपाय) करते हो सो हे सुजान ब्रह्मा के वचन को व्यर्थ मत करो ॥ ३४ ॥ आपका संकल्प भी आज झूठा नहीं होता इसकारण से आप के होम का फल पत्तिराज होओ। यह सुनकर मुनियों ने कश्यप से कहा कि तुम भी पुत्र के लोभ में लीन होकर यज्ञ करते हो ॥ ३५ ॥ सो हमारा संकल्प सत्य है तो वह पत्तिराज सत्य ही तुम्हारा पुत्र होवे, इसप्रकार सूत ने गरुड के जन्म की कथा कहकर अब जिसप्रकार गरुड ने अमृत प्राप्त किया सो कहते हैं ॥ ३६ ॥ १ शीघ्र २ अमृत ३ इन्द्र को आदि लेकर देवताओं को जीतकर ४ मित्रपन ५ हुआ, ६ फिर ७ गरुड ने ८ विष्णु की ध्वजा में वास किया ॥ ३७ ॥

नागन समीप पुनि अमृत लाय, दिय जननि दासभावहु छुराय ॥  
सौनक पुनि पुच्छिय सूत श्रेय, नागनके अक्खहु नामधेय ॥३८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयअराशौ वीति  
होत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितरामयसमानाऽधिकरणकसौतिश्री  
वितमहाभारते कद्रू१विनता२पणवदनसवित्रीनागशपनकौह्वय  
कद्रूपणजयनविनताकिङ्करीकरणगरुडोद्भवतन्निषादाऽदनविभा  
वसु१सुप्रतीका २ऽऽख्यानगरुडनामप्रकटनकरि१कमठ२भक्षण  
बालखिल्यप्रसादनताक्ष्यजन्महेतुकथनसुपर्णासुधानयनसुरेशतत्सौ  
दार्दविरचनगरुत्महदाधरध्वजनिवसनसमानीतसुधास्वसवित्रीदास  
त्वमोचनशौनकनागाऽभिधानप्रश्नकरणमष्टाविंशतितमो२८ मयू  
खः ॥ २८ ॥ आदितः सप्ततितमः ॥ ७० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पञ्चभटिका

सुनिमूत कहिय हुव बहुत नाग, कछु नाम कहत सनिये सुभागा॥

सर्पों के नाम कहो ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी च-  
हुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के बराबर है समय का आधार जिसका ऐ-  
से सूतपुत्र के महाभारत सुनाने में कद्रू और विनता का होड़ (सर्त) लगा-  
ना, माता का सर्पों को आप देना, इन्द्रजाली कद्रू का पण में जीतना,  
विनता को दासी बनाना, गरुड का पैदा होकर भीलों को खाना, विभा-  
वसु और सुप्रतीक नामक ब्राह्मणों का आख्यान, गरुड नाम का प्रकट हो-  
ना, गरुड का हाथी और कछुए को खाना, बालखिल्य ऋषियों की प्रसन्न-  
ता से गरुड के जन्म के कारण को कहना, गरुड का अमृत लाना, इंद्र  
का गरुड के साथ मित्र होना, गरुड का विष्णु की ध्वजा में वास करना,  
लायेहुए अमृत से अपनी माता का दासीपन छुड़ाना, शौनक का सर्पों के  
नाम का प्रश्न करने का अट्टाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २८ ॥ और आदि  
से सत्तर मयूख हुए ॥ ७० ॥

१ हे श्रेष्ठ भाग्यवाले



कद्र तैनुज हुव प्रथम सेस१, वासुकि२पुनि ऐरावत३वलेस ॥१॥  
तत्तक४ककोटक५नाग नाम, गिनिये ५व धनंजय६गैरलग्राम ॥  
कालीय७वहुरिमणिनाग८जानि, प्रकटितवल आपूरण९प्रमानि१०।

पिंजरक १० रू एलापत्र ११ जात,  
वामन १२ अनील १३ अरु नील १४ ख्यात ॥

कल्माष१५शवल१६आर्यक१७भुजंग,  
उग्रक१८रु कलसपोतक१९अभंग ॥ ३ ॥

रु शुनामुख२०अधिमुख२१विमल२२व्याल,  
पिंडक२३रु सप्त२४कोपन कराल ॥

पुनि सुनहु कोटरक२५संख२६नाम,  
बलि सिख२७रु निष्ठानक२८हु ताम ॥ ४ ॥

हेमगुह२९नहुप३०पिंगल३१वखानि,  
जिम बाह्यकर्ण३२हस्तिपद३३जानि ॥

बलि मुद्गरपिंडक३४नाम व्याल,  
कंवल३५रु अश्वतर३६पर कृपाल ॥ ५ ॥

जे२सिक्ख सरस्वति उक्तगान,  
शिवकै हुव कुण्डल बुद्धिमान ॥

कालीयक३७वृत्त३८रु पद्म४०दोयर,  
संवर्तक४१अरु संखमुख४२होय ॥ ६ ॥

कूष्मांडक४३क्षेमक४४काद्रवेय,  
पिंडारक४५ विल्वक ४६ नामधेय ॥

करवीर ४७ पुष्पदंष्ट्र ४८ हु अहीसै,  
पुनि विल्वपाशदुर ४९रु संखसीस ५० ॥ ७ ॥

आदिकर्णभद्र ५१ वलि मूपकाद ५२,



२ पुत्र ३ अश्व ४ विष का समूह ५ अरु ६ प्रसिद्ध ७ सर्प ८ तहां ९ पुनि १०  
सरस्वती का कहा हुआ गाना सीख कर वे बुद्धिमान् सर्प महादेव के कामों  
के कुण्डल हुय ११ नामवाले १२ सर्पों के पति

रु हरिद्रक ५३ अपराजित ५४ विषाद ५५ ॥  
 ज्योतिक ५६ तथाहि श्रीबह ५७ भुजंग,  
 सहसंखापिंड ५८ कौरव्य ५९ संग ॥ ८ ॥  
 विरजाश्व ६० बहुरि धृतराष्ट्र ६१ व्याल,  
 रु सुबाहु ६२ सालिपिंड ६३ हु विसाल ॥  
 जिम हस्तिपिंड ६४ पिठरक ६५ हु जानि,  
 बलि सुमुख ६६ कौणपासन ६७ बखानि ॥ ९ ॥  
 कुंजर ६८ रु प्रभाकर ६९ कुठर ७० सर्प,  
 कुमुदाक्ष ७१ कुमुद ७२ तित्तिरि ७३ सदर्प ॥  
 कर्दम ७४ बहुमूलक ७५ हल्लिकाख्य ७६,  
 कर्कर ७७ रु अकर्कर ७८ इति समाख्य ॥ १० ॥

समहोदर ७९ कुंडोदर ८० सुराग, सूचीमुख ८१ इति मुख बहुत नाग ॥  
 तिनमाँहिं मुग्ध ॥ शेषनाम, तप तपिय पाय विषयन विराम ॥ ११ ॥  
 बरलेहु कहिय धै होय दुष्ट, अखिय अनंत मम भ्रात दुष्ट ॥  
 तिनमाँहिं रहाँ नाहैं मैं कृपाल, विधि कहिय धरहु छितिरहि पताल ॥ १२ ॥  
 यह भूमि धरत तबतैं अनंत, वासुकि मुख नागन अब उदंत ॥  
 सब दुखित होय कहु प्रसन्न, विधिलोक गये अतिसोक तप्त ॥ १३ ॥  
 अखिय प्रसाद अज करहु आप, जिम टरहि नाथ हम नास पाप ॥  
 लखि अहि न दीन अज कहिय बैन, जे धर्मनिष्ठ ते तहैं जरै न ॥ १४ ॥  
 जो पापनिष्ठ बलि दुष्ट जेहि, तँचिहै जनमेजय संत्र तेहि ॥  
 पुनि सुनहु एक अपरहु उपाय, बाचिहो कितेक वह विधि विधाय ॥ १५ ॥

१ सर्प २ अरु ३ घमंड सहित ४ हल्लिक नामवाले ५ इन नामवाले ६ इनको आदि  
 लेकर ७ विषय भोग से निवृत्त होकर ॥ ११ ॥ ८ ब्रह्मा ने ९ प्रसन्न होकर १०  
 शेषनाग ने कहा कि मेरे भाई दुष्ट हैं ११ भूमि को धारण करो ॥ १२ ॥ जब  
 से इस भूमि को शेष धारण करते हैं, अब वासुकि १२ आदि सर्पों का १३  
 वृत्तान्त है १४ कहु के आप से ॥ १३ ॥ हे ब्रह्मा आप १५ कृपा करो १६ स  
 र्पों को दीन देख कर ब्रह्मा ने वचन कहे १७ जो धर्म में निश्चय करके स्थित हैं  
 वे वहाँ नहीं जलेंगे ॥ १४ ॥ जो पाप में स्थित हैं १८ और दुष्ट हैं जनमेजय  
 २० यज्ञ में १९ जलेंगे २१ दूसरा २२ वह रीति करके ॥ १५ ॥

यायावर कुलविच चित्त चारु, व्हैहैं द्विजपुंगव जरतकारु ॥  
 खोजहिं सुबिप्रनिज नाम नारि, वासुकि स्वसाहु सुहि नाम धारि १६  
 वह ताहि देहु यह मत मदीय, आस्तीक पुत्र व्हैहैं तदीय ॥  
 सो जाय निवारहिं सर्प जाग, आये अज सासन सु सुनि नाग १७  
 जब जरतकारु हुव वह प्रवीन, वासुकि विबाहिं जिहिं जांमि दीन ॥  
 आस्तीक पुत्र ताविच विधाय, बन जरतकारु गय विरति पाय १८  
 इत विष्णुरात सुत कुपित अंग, उत्तंक बचन प्रेरित अभंग ॥  
 मंलिन प्रतिपुच्छिय जनक नास, अक्खिय उन तच्छक अनय आस ॥  
 इक समय गयो मृगया नृपाल, मुनि गल तहैं डारयो मृतक ड्याल १९  
 तस छात्र नाम शृंगी सताप, सो देत भयो नृप हेत साप ॥ २० ॥  
 चक्री जिहिं गुरुगल धरिय चाहि, तच्छक दिन सत्तम षडसहु जाहि ॥  
 जब भूप सुनिय यह वज्र वात, इक शंभमहल किय विष्णुरात २१  
 नहिं पवन जान कहू छिद्र तास, किय तत्थ परिच्छित सतत बास ॥  
 आयउ जब सप्तम षडिवस छिप्र, तच्छकहु चलयो व्है बृद्ध विप्र २२

यायावरों (कहीं घर बांध कर नहीं रहते और अमावास्या व पूर्णिमा सी को होम किया करते हैं उन ब्राह्मण विशेषों को यायावर कहते हैं) के कुल में श्रेष्ठ चित्त वाला ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जरतकारु नामक होवेगा वह अपने नाम की स्त्री को खोजेगा, (उसी नाम (जरतकारु) को धारण करने वाली वासुकि नाग की बहिन ॥ १६ ॥ वह उस जरतकारु को देना यह २ मेरा मत है ३ उसके ४ सर्प यज्ञ को रोकेगा ५ ब्रह्मा की यह आज्ञा सुन कर ॥ १७ ॥ ६ बहिन को ७ विरक्तपन पाकर ॥ १८ ॥ ८ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) ९ अपने पिता के नाश का कारण मंत्रियों से पूछा उन्होंने कहा कि तत्त्वक सर्प की ही १० अनीति हुई ॥ १९ ॥ शिकार गया वहाँ एक मुनि के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया उस मुनि के शृंगी नामक शिष्य ने क्रोध सहित राजा को आप दिया ॥ २० ॥ कि जिसने जानकर गुरु के गले में सर्प डाला है उसको सातवें दिन तत्त्वक नाग डसो. जब यह वज्र पड़ने के समान वार्ता सुनी तब राजा परीक्षित ने एक शंभे का महल बनाया ॥ २१ ॥ जिसमें पवन जाने को छिद्र भी नहीं था उसमें परीक्षित ने निरंतर वास किया, जब सातवां दिन आया तब तत्त्वक भी बृद्ध ब्राह्मण होकर शीघ्र चला ॥ २२ ॥

दोहा

तच्छकसों मगमैं मिल्यो, काश्यप नाम द्विजेस ॥  
 कोन अण्प जावत कहाँ, भाख्यो तिहिं भुजगेस ॥ २३ ॥  
 डसिहैं तच्छक कौरवहिं, तँहें द्विज अखिखय जात ॥  
 लैहों ताहि जिवाय मै, बलि लैहों वसु ब्रात ॥ २४ ॥  
 वटतरु डसि तच्छक कह्यो, भस्म भयो यह जानि ॥  
 याहि जिवावहु हम नृपहिं, लैहैं जीवत मानि ॥ २५ ॥  
 तोयहि काश्यप मंत्रि तब, छिरकिय भस्म असेस ॥  
 ततखिन बढि न्यग्रोध तरु, वन्यौ जथातथ बेस ॥ २६ ॥  
 जान्यौ तच्छक विप्र यह, लैहैं धुवहि जिवाय ॥  
 कह्यो बित्त हित जात तुम, प्रचुर काज कछु पाय ॥ २७ ॥  
 द्रव्य सुहमतैं लैहु द्विज, अखिखय तच्छक एह ॥  
 तासों लै बसु विप्र तब, गो बाहुरिनिज गेह ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

तब तच्छक बहु नाग बेस तजि विप्र बनाये ॥  
 फलबिच कृमि हुव अण्प लै सु नृप पैंहें जुरि आये ॥  
 दै आसिख फल ताहि दंभ द्विजगेह गये सब ॥  
 इत नृप फलहिं बिदारि मध्य कृमि देखि कह्यो अब ॥  
 सप्तमहु आज बित्यो दिवस वैह कृत जो द्विजबैन ननु ॥

१ आप कौन हो और कहाँ जाते हो यह २ तच्छक ने उस काश्यप नामी ब्राह्मण से कहा ॥ २३ ॥ ब्राह्मण ने कहा कि राजा परीक्षित को तच्छक डसैगा उसका मैं जिवा लूंगा और फिर धन का समूह लूंगा ॥ २४ ॥ तच्छक ने वड़ के वृक्ष को डस कर कहा कि यह भस्म होगया है जिसको जिवा लो तो हम राजा को जिवा दूँगा आप मान लेंगे. काश्यप ब्राह्मण ने पानी को मंत्र कर सब भस्मी पर छिड़का सो तुरंत बड़ कर वड़ का वृक्ष जैसा था वैसा उत्तम बन गया ॥ २५ ॥ कार्य पाकर ३ बहुत धन के लिये तुम जाते हो ॥ २६ ॥ देवह, ब्राह्मण तच्छक से ५ धन लेकर अपने घर को पीछा फिर गया ॥ २७ ॥ तब तच्छक ने बहुत सपों को अपना बेस छोड़ कर ब्राह्मण बनाया और फल के भीतर आप की डाँडाँ होकर रहा. कपटी ब्राह्मण अपने घर गये. जो निश्चय ही आप देनेवाले

ता डसहु होय अहि यह कहि रु कृमि सु छुवायउ स्वीय तनु ॥२९॥

॥ दोहा ॥

छुवतहि तच्छक होय कृमि, डस्यो परीच्छित अंग ॥

भस्म भयो प्रासाद जुत, गो निज गेह भुजंग ॥ ३० ॥

यहै सुनत मानहुँ भयो, ज्वलन आज्य संजोग ॥

जनमेजय अहि जागही, मन्यौ भूपन भोग ॥ ३१ ॥

द्विज बुध करि इकत द्रुतहि, अरु अमेय उपहार ॥

भूपति तव दिच्छित भयउ, करन कादवन छार ॥ ३२ ॥

॥ षटपात् ॥

च्यवन वंस अवतंस चंड १ भार्गव होता १ हुव ॥

मुनि जैमिनि २ सांगरव २ भये ब्रह्मा २ विदग्ध ध्रुव ॥

ऋषि पिंगल ३ अध्वर्यु ३ कौत्स ४ द्विजवर उद्गाता ४ ॥

व्यास ५ छात्रगन सहित सभ्य ५ हुव संविददाता ॥

उद्दालक १ नारद २ कालघट ३ स्वेतकेतु ४ पर्वत ५ जठर ६ ॥

आत्रेय ७ कुंड ८ देवल ९ असित १० बलि ११ ऋत्विज दत्त्यादि वर ॥ ३३ ॥

श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा स्वाहादि-सब्द रचि ॥

अनल कुंड आहूति हवन सर्पन समंत्र मचि ॥

ब्राह्मण का वचन सत्य होवे तो यह कीड़ा है वह सर्प होकर डसो यह कहकर उस कीड़े को अपने शरीर से छुआया ॥ २९ ॥ १ महल सहित ॥ ३० ॥ यह सुनते ही मानों अग्नि से घृत का संयोग हुआ इसप्रकार तेज होकर जनमेजय ने सर्प यज्ञ करना ही राजाओं के करने योग्य विषय माना ॥ ३१ ॥ पंडित ब्राह्मणों को शीघ्र इकट्ठे करके उपमा रहित (अत्यन्त) सामग्री इकट्ठी करके फिर राजा ने यज्ञ की दीक्षा ली. सर्पों को भस्म करने कालियो ३२। च्यवन वंश के सुकुट चंड मुनि होता (ऋग्वेद के जाननेवाले) हुए. सांगरव के वंश के जैमिनि मुनि ब्रह्मा (सब वेदों के जाननेवाले) हुए. पिंगल ऋषि अध्वर्यु (यजुर्वेद के ऋत्विज) और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कौत्स मुनि उद्गाता (सामवेद के ऋत्विज) हुए. और वेदव्यास अपने शिष्यों सहित ज्ञान के देनेवाले सभ्य (सभासद) हुए. २. पुनि, इनको आदिलेकर और भी श्रेष्ठ ऋत्विज हुए ॥ ३३ ॥ श्रौषट् से लेकर स्वाहा पर्यन्त के शब्द आहूति देने के समय बोलने के हैं

तच्छक बासव सरन जाय किन्नो अभिबंदन ॥

स्वागत भाख्यो सक्र डरहु जिन कस्यपनंदन ॥

इत सहँभन अयुतन अर्बुदन भुजग मंत्र अँचित जरिय ॥

तिन्हकहतवर्ण कुल नाम जे बासवेय कछु कछु करिया ३४॥

कोटिस १ मानस २ पूर्णा ३ चक्र ४ सल ५ पाल ६ हलीमक ७॥

पिच्छल ८ कौणप ९ शरणा १० कालदंतक ११ पुनि तक्षक १२ ॥

कालवेग १३ रुं हिरण्यबाहु १४ पुनि नाग प्रकालन १५ ॥

एते वासुकिपुत्र जरिय कुंडोदर ज्वालन ॥

पारावत १ पांडुर २ हरिण ३ कृश ४ पारियात्र ५ मोद ६ रु सरभ ७ ॥

रु विहंग ८ हंसतापन ९ बहुरि भयो प्रमोद १० हु भस्मप्रभ ११ ३५॥

ए ऐरावततनय बहुरि तक्षकसुत जानहु ॥

पुच्छांडक १ मंडलक २ पिंडसेक्ता ३ हु प्रमानहु ॥

सरभ ४ रभेणक ५ भंग ६ विल्वतेजा ७ रुं विरोहन ८ ॥

उच्छिक ९ सलकर १० मूक ११ शिली १२ सुकुमार १३ प्रवेपन १४

मुद्गर १५ सिसुरोमा १६ महाहनु १७ बहुरि सुरोमा १८ बन्दिहृत ॥

तच्छकतनूज इतनै जरिय अब पृदाकु कौरव्यसुत ॥ ३६॥

एरक १ कुंडल २ शृंगवेग ३ वेणी ४ रु कुमारक ५ ॥

बाहुक ६ वेणीस्कंध ७ प्रांतक ८ रु अंतक ९ धूर्तक १० ॥

( रक १ तक २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १॥ )

धार्तराष्ट्र अब गिनहु संकुकर्ण १ रु अहि पिठरक २ ॥

पूर्णांगद ३ पूर्णमुख ४ कुठारानन ५ पुनि सेचक ६ ॥

हरि ७ सकुनि ८ अमाहठ ९ कामठक १० बलि सुपेण ११ भैरव १२ वलियं

जिसको रचके सर्पों को होमने की मंत्रों सहित अग्निकुंड में आहुति मर्ची

उस समय तक्षक ने इन्द्र के शरण जाकर नमस्कार किया जिसका आदर

करके इन्द्र ने कहा कि हे कश्यप के पुत्र डर मत मंत्रों से खाँचे हुए सर्प जले

उनके वर्ण, कुल और नाम कुछ कुछ वेदव्यास ने वर्णन किये हैं सो कहते हैं

॥ ३४ ॥ १ अरु २ अग्नि कुंड के भीतर अग्नि में जले ३ भस्म की कांति है

से ॥ ३५ ॥ ४ पुत्र ५ अरु ६ अग्नि में होमे हुए ७ पुत्र ८ सर्प ९ पुनि १० जले

अय्यय १३ प्रहास १४ मानस १५ ऋषक १६ पिंडारक १७ पुनि कुंडलिय ॥  
 बहुरि सुंड वेदांग १८ उदपारक १९ पिसंग २० ननु ॥  
 बेगवान २१ रक्तांग २२ सर्वसारंग २३ महाहनु २४ ॥  
 पुनि बराह २५ वीरगाक २६ चित्रबेगिक २७ पठ २८ वासक २९ ॥  
 अरुगा ३० समृद्ध ३१ सुचित्र ३२ मणिस्कंध ३३ रुतिम तरुगाक ३४ ॥  
 पुनि नाग परासर ३५ अहि इते धार्तराष्ट्र सुचि भस्म हुव ॥  
 इत्यादि नाग अचित अमित धुज्जि गये जमलोक धुवा ३८  
 त्रिशिर सप्त ७ सिरनाग किते दस १० सिर हुत जानत ॥  
 सत्रसालिका द्वार गयो आस्तीक बखानत ॥  
 होत्रादिक सब बिप्र ज्योंहिं जजमान भूप जैंह ॥  
 व्है प्रसन्न मुनि विरुद ताहि लिन्नौ बुलाय तैंह ॥  
 नृप कहिय लेहु आस्तीक वर सु मुनि चंड बुल्लिय सुमति  
 जोलों जरै न तच्छक उरग न वर देय तोलों नृपति ॥ ३९ ॥  
 सक्र सरन तिहिं जानि कहिय चंडहिं महीपमानि ॥  
 बुल्लहु तिहिं सेंदाय तत्तकाय स्वाहा भनि ॥  
 तवाहि चंड तच्छक ससक्र बल मंत्र बुलायउ ॥  
 इंददान भय आनि ताहि तजि स्वर्ग सिधायउ ॥  
 कहि तिष्ठ तिष्ठ आस्तीक तैंह तीन श्वेर करि उच्च कर ॥

१ सर्प २ निश्चै ही ३ सर्प ४ अग्नि में ५ गणना में नहीं आवें इतने ६  
 तीन शस्तकवाले ७ होम हुए जानो ८ यज्ञशाला के द्वार पर आस्तीक  
 नामा ब्राह्मण राजा की स्तुति वर्णन करता हुआ गया. होता को आदि  
 लेकर सब ब्राह्मण और यजमान राजा ( जनमेजय ) ने स्तुति से प्रसन्न  
 होकर उसको भीतर बुला लिया और राजा ने कहा कि हे आस्तीक वर  
 मांग, यह सुन कर श्रेष्ठ बुद्धिवाले चंड मुनि बोले कि हे राजा जब तक तच्छक सर्प  
 नहीं जलै तब तक वर मत दो ॥ ३६ ॥ उस तच्छक को इन्द्र की शरणा में  
 जान कर राजा जनमेजय ने चंड मुनि से कहा कि इन्द्र सहित तच्छक भस्म  
 होओ, यह कह कर उसको बुलाओ. तब चंड मुनि ने मंत्रों के बल से इन्द्र  
 सहित तच्छक को बुलाया सो इन्द्र तो अपने जलने के भय से तच्छक को छा  
 ड कर स्वर्ग में चला गया और आस्तीक ने ऊंचा हाथ करके तच्छक से

इमं नागं तंभि नृपसौं कहिय मख नहाय यह देहु वर ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

तव वह सत्र समाप्त करि, दयो द्विजहिं वर भूप ॥

वैपालन हू दिन्नौ सु वर, अब सुनिये अभिरूप ॥ ४१ ॥

यह आस्तीक उदंत सुभ, पढहिं सुनहिं मन लाय ॥

हमरो भय तस होय नहिं, कह्यो अहिन मुद पाय ॥ ४२ ॥

याबिच मंत्रहु जे लिखे, व्यासदेव ऋषिराज ॥

वे समस्त मूलहि लिखे, सर्प अभयके काज ॥ ४३ ॥

असितं चार्तिमन्तं च, सुनीथं चापि यः स्मरेत् ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ, नास्य सर्पभयं भवेत् ॥ १ ॥

यो जरत्कारुणा जातो, जरत्कारो महायशः ॥

आस्तीकः सर्पसत्रे वः, पन्नगान्योऽभयरक्षत ॥ २ ॥

तं स्मरन्तं महाभागा, न मां हिंसितुमर्हथ ॥

सर्पापसर्प भद्रं ते, गच्छ सर्प महाविष ॥ ३ ॥

जनमेजयस्य यज्ञान्ते, आस्तीकवचनं स्मर ॥

आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा, यः सर्पो न निवर्तते ॥ ४ ॥

“ठहर ठहर” ऐसा तीन बेर कह कर उसको आकाश में ठहराकर राजा से कहा कि यज्ञ नहीं होवे यह वर दो ॥ ४० ॥ १ यज्ञ २ सर्पों ने भी आस्तीक को श्रेष्ठ वर दिया सो वह ३ मनोहर वर अब सुनो ॥ ४१ ॥ इस आस्तीक के वृत्तांत को मन लगाकर जो पढ़ेगा या सुनेगा उसको हमारा (सर्पों का) भय नहीं होवेगा, यह सर्पों ने आनन्द पाकर कहा ॥ ४२ ॥ ऋषिराज वेद-व्यास ने महाभारत में जो मंत्र लिखे हैं वे सब सर्पों से अभय होने के कारण यहां पर मूल ही लिखे दिये हैं ॥ मंत्र के श्लोकों का अर्थ—असित, अर्तिमन्त और सुनीथ इनका जो दिन में वा रात्रि में स्मरण करे उसको सर्प का भय नहीं होता ॥ १ ॥ जरत्कारु माता में जरत्कारु नामक पिता से पैदा हुए बड़े यशवाले जिस आस्तीक ऋषि ने तुम सर्पों की रक्षा की है ॥ २ ॥ उसका स्मरण करनेवाले मुझको हे महाभागा! तुम मारनेको योग्य नहीं हो, हे महाविषवाले सर्प! तेरा कल्याण हो तु पीछा जा ॥ ३ ॥ जनमेजय के यज्ञ में जो आस्तीक को सर्पों ने कहे उन वचनों का स्मरण कर आस्तीक के वचन सुन करके



शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा ॥ ५ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयशराशौ वीति-  
होत्रचहुवाणबंशवर्णने शत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणक  
सौतिश्रावितमहाभारतेऽनन्तादिमुख्यकाद्वेयोद्देशनशेषधरणीधा-  
रणानागजामेयाऽऽस्तीकजननश्रुतजनकमरणतत्त्वकुकृत्यजनमे-  
जयसर्पसत्राऽऽरम्भणाहुतनागसन्तानोद्देशनजारत्कारवाऽऽगमनतक्ष  
काऽऽदिनागदाहनिवारणामेकोनविंशो२९ मयूखः ॥ २९ ॥ आदि  
एकसप्ततितमः ॥ ७१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

नृप सत्रुघ्न४३ अनेहमैं, यहै भयउ अहिसत्र ॥

जनमेजय भूपहु तप्यो, जित्ति सवन इकछत्र ॥ १ ॥

सूत सुतहु भारत सुन्यो, यहहि होत अहिजाग ॥

मुनिन सुनायो जाय इम, वन नैमिष वडभाग ॥ २ ॥

नगर अयोध्याको नृपति, नाम उरुक्षय जांस ॥

ताके अरु सत्रुघ्नकै, अतिहि मित्रपन आस ॥ ३ ॥

जो सर्प मारने से नहीं रुकता उसके मस्तक के शिंशवृक्ष के फल के समान  
सौ टुकड़े होजाते हैं.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण शत्रुघ्न के जीवित समय के एक समय में होनेवाले मृतपुत्र (उग्रश्रवा)  
के महाभारत सुनाने में शेष को आदि लेकर मुख्य सर्पों का कथन, शेष  
का पृथ्वी को धारण करना, सर्पों के भाणेज आस्तीक का जन्म, तत्त्व के  
खोटे कृत्य से पिता का मरण सुनकर जनमेजय का सर्प यज्ञ आरंभ करना,  
होमहुण नागों की संतान का कथन, जरत्कारक पुत्र (आस्तीक) का आना,  
तत्त्व आदि सर्पों को जलने से बचाने का उन्तीसवां मयूख समाप्त हुआ  
॥ २९ ॥ और आदि से इकहत्तर मयूख हुए ॥ ७१ ॥

चहुवाण राजा शत्रुघ्न के १ समय में यह २मर्षयज्ञ हुआ ॥ १ ॥ सूत पौरा-  
णिक लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा ने इसी सर्पयज्ञ होने के समय में महाभा-  
रत सुना और उस वडभागी ने नैमिष नामी वन में जाकर शौनक आदि  
मुनियों को सुनाया ॥ २ ॥ ३ हुआ ॥ ३ ॥ जनमेजय राजा ने हस्तिनापुर में

षट्पदी ॥

जनमेजय गजनैर सत्र हयमेध विचारिय ॥

विजयपट्ट हयभाल बंधि भुव फिरन निकाारिय ॥

उग्रसेन निज अनुज संग पठयो हय रक्खन ॥

पहुँचे जित जित प्रबल लंचे तित तित नृप लक्खन ॥

उत अटत उरुच्छय धरनिधव कौसलेस हय रुक्कयो ॥

मित्रकी भीर तहँ सत्रुघन४३ देहनिज सु सस्तन दयो ॥४॥

दोहा

तनय सत्रुघनकै भयउ, कलना आकररत्न ॥

नाम शालिवाहन४४ निडर, संगर दलन सपत्न ॥ ५ ॥

मगधराज सुभवानको, भागिनेय यह भूप ॥

जनकमित्र तनया ज्वला४४१, इहिँ परनी अभिरूप ॥ ६ ॥

अर्थिजनन दिनों अनिस, इहिँ नृप कनक अमान ॥

तिहिँ कारन याको अपर२, हुव सुमेरु४४अभिधान ॥ ७ ॥

कौरवपतिके देसकौं, बंधि चमू बलवान ॥

लुट्टन रन जितन लग्यो, थिर उज्जर करि थान ॥ ८ ॥

निडर धीर गंभीर नृप, जनमेजय यह जानि ॥

उग्रसेन सोदर सुता, ताहि दर्ई हित तानि ॥ ९ ॥

अबमेध यज्ञ करमा विचार और घोड़े के ललाड़ पर विजयपत्र बांध कर निकाला. १ नमे ॥ २ अयोध्या की ओर फिरते समय उरुक्षय नामक अयोध्या के राजा ने उस घोड़े को बांध लिया वहां मित्र की सहाय होकर चहुवाण शत्रुघ्न ने अपना शरीर शस्त्रों को दिया अर्थात् युद्ध में मारा गया ॥ ४ ॥ ३ कलना नामक स्त्री रूपी खान में रत्न रूपशत्रुघ्न में शत्रुओं को दलनेवाला ॥ ५ ॥ यह राजा शालिवाहन मगधदेश के राजा शुभवान का भांगेज था जिसने अपने पिता के मित्र की ज्वला नामक सुन्दर पुत्री को व्याही ॥ ६ ॥ इस राजा ने याचक लोगों को निरन्तर बिना प्रमाण सोना दिया इसकारण से इसका दूसरा नाम सुमेरु हुआ ॥ ७ ॥ वह शालिवाहन बलवान सेना बनाकर जनमेजय के देश को लूट करके मजबूत स्थानों को ऊजड़ (निर्जन) करके जीतने लगा ॥ ८ ॥ जनमेजय ने अपने सगे भाई उग्र-

कलाकुशल अभिधान करि गोदा४४१सुंदरगंत ॥

व्याहि सालिबाहन४४वन्यौ, अब कुरुकुल अनुरत्त ॥ १० ॥

जनमेजयको पट्ट लिय, सतानीक तस पुत्र ॥

भयो यहहु विरूपात भुव, नय१ जय२ सुकृत३ तनुत्र ॥ ११ ॥

नृप सुमेरु४४सुहि जामिपति, सतानीक सुहि साल ॥

इन दोउश्नकै सुहृदपन, प्रतिदिन बढिग विसाल ॥ १२ ॥

( हिसाल१ विसाल२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥ )

पट्टपात् ॥

सतानीक नरनाह सालिबाहन जामिप जुत,

जोगेश्वर सन जाय दुवरहि वेदन सिद्धये हुत ॥

गोतम कृपसन अस्त्रतत्व बोध सु सौनकसन,

सहित अंग उप अंग पढि रु आये धरनीधन ॥

बय वृद्धि होय लहि समय बलि निज निज पुत्रन राज्य दिय,

रानिन समेत वासि बसि विपिन वीतराग विधि वपु तजिय ॥ १३ ॥

दोहा

वैदेही विकला जरी, सतानीक नृप संग ॥

जिम सुमेरु४४जुत हुव ज्वला४४१, अरु गोदा४४१हुत अंग ॥ १४ ॥

अश्वमेध दत्तक लह्यो, सतानीक नृप पट्ट ॥

सन की बेटी शालिबाहन को दी ॥ ९ ॥ सुन्दर शरीरवाली गोदा नामक कन्या का कलाकुशल नाम रखकर शालिबाहन ने विवाही और अब कुरुकुल से प्रीति रखनेवाला बना ॥ १० ॥ १ नीति, विजय और २ धर्म का ३ कवच (रक्षा करनेवाला) हुआ ॥ ११ ॥ राजा सुमेरु तो ४ बहिनोई (बहिनका पति) और शतानीक ५ शाला ६ मित्रपन ॥ १२ ॥ राजा शतानीक अपने बहिनोई शालिबाहन सहित याज्ञवल्क्य मुनि से जाकर वेदों को सीखा ही सीखा और गोतम वंशी कृपाचार्य से अस्त्र, शौनक से वेदान्त, इमप्रकार सांगोपांग पढ़कर दोनों भूपति आये. ७ पुनि ८ वन में विरक्तों की भांति दोनों ने शरीर छोड़े ॥ १३ ॥ विदेह की पुत्री विकला अपने पति शतानीक के साथ जली और सुमेरु (शालिबाहन) के सहित ज्वला और गोदा दोनों स्त्रियों ने शरीर होसे ॥ १४ ॥ शतानीक के पाट पर अश्वमेध

यहहु भयो अतिवल अजित, वीर अतुल रनवट्टे ॥ १५ ॥

नृपति सालवाहन तनुज, सतानीक भानेज ॥

भयउ पुंडू कर्णाटि नृप, कृतवर्मा ४५ रवितेज ॥ १६ ॥

ससिकुल सन आनैत नृप, सुता राधिका ४५ नाम ॥

कृतवर्मा ४५ सु विवाह करि, आनी गृह अभिराम ॥ १७ ॥

तामै कृतवर्मा तनय, भयउ सुवर्मा ४६ सूर ॥

मगधराज निरमित्रसों, पढ्यो अस्त्र गुनपूर ॥ १८ ॥

॥ पटपदी ॥

अग्ग नृपति सहदेव ३८ पुंडूजनपद जब जित्तिय ॥

ताके नृप तव भजि द्रविड अधिराज सरन लिय ॥

ताकी संतति माहिं भयउ इक वीर जयदल ॥

कृतवर्मा सन आनि सु अब जुझयो दुदर दल ॥

हनि समर सालिवाहन सुतहिं जिहिं स्वकीय जनपद लयो ॥

कर्णाट अधिप अभिपेक लहि भूप सुवर्मा ४६ तव भयो ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

पुंडूदेस छुटि इम गयो, रहयो मुलक करनाट ॥

कियउ सुवर्मा ४६ राज्य तैंहें, अरिन करन उच्चाट ॥ २० ॥

॥ पटपदी ॥

नृपति सुवर्मा ४६ जाय विदित विंद्यो सु जयदल ॥

को गोद रक्खा १ रण के मार्ग में ॥ १५ ॥ राजा सालिवाहन का पुत्र और सतानीक का भागेज पांडू और कर्णाट नामक दोनों देशों का राजा सूर्य के समान तेजवाला कृतवर्मा नामक हुआ ॥ १६ ॥ ३ आनैत देश के राजा २ चन्द्रवंशी से ४ सुन्दर ॥ १७ ॥ १८ ॥ आगे राजा सहदेव ने जब पुंडू देश को विजय किया तब पुंडू देश के राजा ने द्रविड देश के स्वामी का शरण लिया था उसीके सन्तान में जयदल नामक वीर हुआ वह दृष्टर सेना लेकर कृतवर्मा से लड़ा. अपना देश पुंडूक ने पीछा लेलिया तब कर्णाट देश के स्वामीपन का अभिषेक लेकर सुवर्मा राजा हुआ ॥ १९ ॥ ५ उद्देश ॥ २० ॥ जयदल को घेर लिया जब उस कुशल जयदल ने सुवर्मा की सेना में दूत

कहि पठई जिहिँ कुसल दत मुक्कलि याके दल ॥

हमरी भुव तुम हत्थ करी अनुचित सुहि किन्नी ॥

सोहि बहुरि लहि समण लरि रु तुमसन हम लिन्नी ॥

छोरै न अवनि जीवत छिनक मंडहु पग दढकरिमतो ।

बप्पको बैर जो तुम चहहु बनया मम व्याहहु ततो ॥२१॥

॥ दाहा ॥

सुनत सुवर्मा४६लखि समय, किय सुहि अंगीकार ॥

सुना जयद्वलकी समी४६।१, आनी परनि उदार ॥२२॥

नृप जजाति सुत अनु जनन, नृप हुव सुतपा नाम ॥

असुरराज बलि अवतरयो, व्है सुत ताके धाम ॥२३॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

वा बलीकी रानी सुदेष्णामैं दीर्घतमा मुनिसौं अंग१वंग२

कलिंग३पुंड्र४सुहृ५ए पंच५पुत्र भये ॥

तिनके नामन करि अंग१वंग२कलिंग३पुंड्र४सुहृ५ए पंच५

देस विदित ठये ॥

तिनमैं चतुर्थ४जो पुंड्र ताके कुलमैं या जयद्वलनैं जन्म लीनौं ॥

तानैं कृतवर्माके बैरमैं कर्णारज सुवर्माको समी नाम अ-

पनी आत्मजा विवाहि विदा कीनौं ॥२४॥

सुवर्मासौं समीमैं राजाधिराज दिव्यवर्मा४७भयो ॥

ज कर कहला भेजा कि हमारी भूमि तुमने अनुचित करके लेली थी वही  
मि फिर समय पाकर तुम से लड़ कर हम ने पीछी ली है सो जीवित र  
ग जय तक क्षण भर भी उस भूमि को नहीं छोड़ेंगे, लड़ना है तो दृढ वि  
चार करके पग मांडों (खड़े रहो) और जो तुम अपने पिता का बैर चाहते  
हो तो मेरी पुत्री बैर में देता हूं सो व्याह लो ॥ २१ ॥ सुवर्मा ने इस बात  
को स्वीकार करके समय देख कर जयद्वल की पुत्री समी को विवाह ली। २२।  
यह जयद्वल कौन था सो आगे कहते हैं कि राजा ययाति के अनु नामक पु  
त्र के वंश में सुतपा नामक राजा हुआ उसके घर में पुत्र होकर दैत्यों के रा  
जा बलि ने अवतार लिया ॥ २३ ॥ उस बलि नामक चन्द्रवंशी राजा की  
राणी सुदेष्णा में दीर्घतमा नामक मुनि से ॥ १ पुत्री।

तानें कुरुराज अधिसीम कृष्णकी दुहिता दयावती४७११विवाह  
सूरिनके समाजसौ सुजस लयो ॥

दिव्यवर्मासौ दयावतीमें राजकुमार यौवनाश्व४८कन्या रंज  
नी४८ए दोय२संतान भये ॥

या कन्याकोँ दिव्यवर्मानें अर्कअन्वय अवतंस अयोध्या न  
गरके अधिराज सहदेवकोँ विवाहि दायजमें अनेकही द्रव्य दयो२५।

जामें सहदेवसौ दिव्यवर्माके दौहित्र रघुकुलरवि वृहदश्व-  
नैं जन्म पायो ॥

अरु चहुवाण चक्रचंडभानु राजकुमार यौवनाश्व४८देवगिरी  
श मंगधराज स्वत्तकी सुता सुकला४८।१कोँ राक्षस विवाह करि  
स्वयंवरतें जिति लायो ॥

याही समयमें कुरूकुलराजा विवत्तुनैं गजपुरकोँ गंगामें  
गिरत जानि कौसांबी पुरीमें जाय राज्य सुख अनुभूत कस्यो ॥

अरु सुकलामें यौवनाश्वसौ कुमार हर्यश्व४९तथा प्रीतिम  
ती४९चारुमती४९मतिमती४९यह कन्याको त्रय३भयो तिननैं स्व  
यंवरमें एक१अवंती अधीस प्रामारराज भीमको कुमार रामसेन  
५०ही बरयो ॥ २६ ॥

अरु हर्यश्व कुमार४९नैं सूकरराज चालुक्य हरवाय५२की  
कन्या करेणुमती४९।१विवाहि आनी ॥

तामैं हर्यश्वसौ राजकुमार अजपाल५०तथा तनैया तरणि  
का५०ए दोय२अपत्य भये तिनमें तरणिका५०तो जनकनैं मगध  
राज श्रुतंजयकोँ विवाही सो देवगिरी जाय भई पट्टरानी ॥

राजा हर्यश्वके अनंतर राजकुमार अजपालनैं किसोरही  
अवस्थामें राज्य सम्हारयो ॥

१पुत्री२पंडितों के समाज से३सूर्यवंशी के४मुकुंद स्वामी॥२४॥२५॥६दोहिता,  
रघुवंशी यों का सूर्य ७ हस्तिनापुर को ८ अनुभव किया. ९उज्जैन के स्वामी  
१०सूकर नामक क्षेत्र के राजा११पुत्री१२सन्तान१३कन्या के पिता ने१४पीछे

चहुवाण अजपाल ५० ] तृतीयराशि—एकत्रिंशमखूख ( ७३१ )

अरु चेदिराज सिसुपालवंस अवतंस राजा द्युमत्सेनकी दु  
हिता दुर्मिला ५०।१कों बिबाह दिग्विजयपै प्रस्थान विचार्यो ॥२७॥

॥ दोहा ॥

लोचन गज पावक ३८२ प्रमित, कलिजुग हायन जात ॥

पटलहिय अजपाल प्रभु, खल खंडन भुव ख्यात ॥२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयराशौ वी

तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने शालिवाहन ४४ ज्वला ४३। गोदा ४४। कृ

तवर्म ४५। राधिका ४५। सुवर्म ४६। शमी ४६। दिव्यवर्म ४७। दयावती ४७

। यौवनाश्व ४८। सुकला ४८। हर्यश्व ४९। करेणुमती ४९। समासच-

र्यावर्णन हर्यश्वानन्तर प्राप्त पट्टविबोढ चेदिराज द्युमत्सेन दुहितृकाऽज-

पाल ५० दिग्विजयविचारणं त्रिंशो ३० मखूखः ॥३०॥ आदितो द्विस-

प्ततितमः ॥ ७२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ षट्पात् ॥

चाहुवान अजपाल ५० चढिगं दिग्विजय विथारन ॥

बीस लख २०००००० दैल विपुल सहस्रबिसति २०००० बडवारन

तीन लख ३०००००० तुंखार सहस्र नासठि ६२००० सजि स्यंदन ॥

प्रवल सेसं १६१००० पाइक करन और नरन निकंदन ॥

कुंतल १ बिदर्भ २ केरल ३ दविड ४ चोल ५ अधिप नमि संग हुव ॥

१ चंदेरी के राजा शिशुपाल के वंश के मुकुट २ पुत्री ३ कलियुग के वर्ष जाते समय  
राजा अजपाल ने पाट लिया जो दुष्टों को मारने में पृथ्वी में प्रसिद्ध है ॥२८॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा  
ण के वंशवर्णन में शालिवाहन और उनकी स्त्रियें ज्वला और गोदा, कृतव  
र्म-राधिका, सुवर्म-समी, दिव्यवर्म-दयावती, यौवनाश्व-सुकला, हर्यश्व-करे-  
णुमती के आचरण का संक्षेप वर्णन और हर्यश्व के पीछे पाट बैठ कर चंदेरी  
के राजा द्युमत्सेन की पुत्री को व्याह कर अजपाल के दिग्विजय विचारने  
का तीसवां मखूख समाप्त हुआ ॥३०॥ और आदि से बहत्तर मखूख हुए ॥७२॥  
४ चढा ६ बडो ५ सेना ७ बीस हजार बडे हाथी ८ घोड़े ९ रथ १० बाकी के  
सौलह लाख अठारह हजार पैदल ११ शत्रुओं के मनुष्यों को नाश करनेवाले

मरहठ्ठजित्ति पूरबस्तरफ किय प्रयान हरिअश्वसुव ॥ १ ॥

गंजि मुलक गोनेर्द०अंग८बंग९हु द्रुत दब्बिय ॥

वर्मा१०उत्कल११अंध१२कामरूप१३हु अप्पन किय ॥

ताम्रलिप्त१४करि जेर मगध१५कोसल१६मैथिल१७जुत ॥

कौसंबी कुरुदेस१८दंडि उत्तर३हंकिय द्रुत ॥

बाल्हीक१९चीन२०तंगणा२१अरब२२मूलिक२३तूर्णा२४तुखारबालि

लंपाक२६दार्व२७प्रस्थल२८सहित करि नृप जित्तिय तुमुल कलि

निखिल देस नैपाल२९जित्ति जंगल३०सदसेरक३१ ॥

सह सतद्रु३२कसमीर३३अटक३४जित्तिय धमचक धक ॥

अरु कंधार३५इरान३६बल्क३७फ्रांस३८रु फिरंग३९जिम ॥

रूस४०मिसर४१सह रूम४२अखिल पच्छिम४जित्तिय इम ॥

सोरठ४३सुमील४४आनर्त४५इत अर्बुद४६लग लाये चरन ॥

सुनि जग पुकार सत्वर सुपहु पुष्कर वन आयउ लरन ॥

॥ दोहा ॥

(अजैपाल) पूर्वदिशा को चला ॥ १ ॥ पूर्वदिशा में गोनेर्द, अंग, बंग, को भी शीघ्र दबाया और वर्म, उत्कल, अन्ध, कामरूप को भी अपना करके ताम्रलिप्त, मगध, कोशल, मैथिल, कौशांबी नगरी के साथ कुरुदेश को दंड देकर उत्तर की तरफ चला उत्तर में बाल्हीक, चीन, तंगण, अरब, मूलिक, तूर्ण, तुखार, लंपाक, द्वार्य प्रस्थल देशों के साथ भयंकर युद्ध किया ॥ २ ॥ सम्पूर्ण नैपाल देश को जीत कर दशेरक सहित जंगल देश को जीता और शतद्रु नदी के किनारे के देश सहित कश्मीर को और अटक नदी के किनारे के देश को युद्ध करके जीता (यहां पर जिन देशों के प्राचीन नाम आये हैं येही नाम अनेक स्थलों पर आते हैं सो बार बार इनका अर्थ करके पूरा पता देने से टीका के विस्तार का भय है इसकारण से ग्रन्थ प्रारंभ से पहिले सब देशों के पते और जहां तक मिल सकेगा वहां तक उनके पर्याय नाम एक ही स्थान पर लिख देंगे इसी कारण से यहां देशों के नामों की टीका नहीं की गई है सो पाठक लोग इस दृष्टि को लमाकरें) सम्पूर्ण पश्चिम के देश इस प्रकार विजय किये और फिर इधर (भारत वर्ष में) के देशों में सोरठ, सुमील, आनर्त और अर्बुद के राजाओं का अपने चरणों में लगाये फिर संसार के लोगों की पुकार सुनकर वह श्रेष्ठ राजा शीघ्र पुष्कर वन में लड़ने को आया ॥ ३ ॥



पहिलैंजहँ चंडासिशकिय, बानसुतन सन जंग ॥  
 हो तहँ सो रावन असुर, भो न आयु बल भंग ॥ ४ ॥  
 श्री कन्हरके समयमैं, दुरयो रह्यो डरि दुष्ट ॥  
 सब जगकों तिहिं इहिं समय, रुवन लगायो रुष्ट ॥ ५ ॥  
 बसैं जु पुष्कर गहन विच, करि गिरिनाग निकाय ॥  
 जट नामक निज पुत्र जुत, हनत सबन खल आय ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

जहँ जहव ध्रुवसेन हुव सु सकुटुंब मारि लिय ॥  
 पुष्कर तीरथप्रात कोस चउसष्टि६४विजेन किय ॥  
 रावन तत्थ सु रहत सूनू जट सहित महाऽसुर ॥  
 जिहिं दिने सब जारि खेटेश्वरवटनिवसथपुर ४ ॥  
 संगी तदीय रक्खसअसुर२वक्र१विडालश्वकाल३वक ४ ॥  
 बिकट५रु विडंब६इत्यादि जुरि नरन जित्ति खावत अछका७।  
 अग्निहोत्र१मख२अखिल निलय किन्नै तर उप्पर ॥  
 विष्टा१प्रस्रव२वरासि समल किन्नै सरिता१सर२ ॥  
 सब तीरथ३मग रुंधि श्राद्ध१तप२विहित विगारत ॥

ऐसी सेना से दक्षिण दिशा के कुन्तल, विदर्भ, केरल, द्रविड़ आल देशों के राजा नम कर साथ हुए और महाराष्ट्र देश को जीत कर हर्यश्व के पुत्र चहुवाण ने पाणासुर के पुत्रों से युद्ध किया वहां रावण नामक असुर था सो आयु के बल से नहीं मरा ॥ ४ ॥ और यही जट श्रीकृष्ण के समय में छिपा रहा वही रावण कोथ करके इस समय संसार को रूताने लगा ॥ ५ ॥ वह रावण नाग पहाड़ (अजमेर और पुष्कर के बीच में पर्वत है उसका नाम नाग पहाड़ है) को अपना घर बना कर पुष्कर वन में रहने लगा और अपने जट नामक पुत्र सहित आकर सब को मारने लगा ॥ ६ ॥ १ निर्जन २ पुत्र ३ वडा असुर रहता था जिसने खेड़े (छोटे ग्राम) पर्वत तथा नदी तट के ग्राम सामान्य ग्राम और पुरों ( जिसमें बाजार होवे और आसपास के ग्रामों का जहां व्यापार होता होवे उसको पुर कहते हैं ) को जला दिये ॥ उसमें ४ सार्थी ५ राजस और ७ दैत्य , ॥ ७ ॥ यज्ञ के सब घर नीचे ऊपर कर दिष्ट मूत्रकी वर्षा करके नदी और तालाबों को मल सहित करदिये

इत उत खावत अटत श्रौत बिप्रन संहारत ॥

प्रति बेसति सिला पब्बयं पटकि कुटिल लोक चूरन करत ॥

हा हंतकार सब ठाम हुव ज्वालमाल व्याकुल जरत ॥८॥

दोहा

बरुनदिसाके विजयमैं, यह दुख पाय अपार ॥

प्रनमि करी अजपालसों, प्रचुरन जाय पुकार ॥ ९ ॥

षट्पात

अनुचित सुनि अजपाल प्रबल हंक्रिय रावन पर ॥

अरु पुक्खरवन आय बिंटिलिय नागधराधर ॥

सूनु सुभट सब सज्जि खलहु आयो अनखावत ॥

सकति १ भुसुंडी २ मूल ३ वान ४ तोमर ५ वरसावत ॥

रचि रन बजाय भुज उच्चरिय थिर पय मंडहु लरन थपि ॥

चंडासि दाव बहु करि थक्यो पै अतिबल न मर्योतदपि ॥ १० ॥

सौराष्ट्री दोहा

प्रभु अजपाल प्रवीन, सुनि अक्खिय चंडासि नृप ॥

सोसे खल गिनि दीन, न हनै सो अनुचित निपट ॥ ११ ॥

मलिन जानि तुहिं मंद, नृपति छुवाये सस्त्र नहिं ॥

अव रक्खहु आनंद, मित्र होहु मम संरनको ॥ १२ ॥

षट्पात

वेद कर्म करनेवाजे ब्राह्मणों को, प्रत्येक १ घर पर शिला और २ पर्व  
त पटक कर ॥ ८ ॥ ३ पश्चिम दिशा के विजय करते समय में ४ बहुत लो-  
गोंने ॥ ९ ॥ ५ पुष्कर तीर्थ के वन में आकर ६ घेर लिया ७ नाग पहाड़ को  
८ पुष्प और अपने सुभटों सहित क्रोध करता हुआ दुष्ट ( रावण ) भी आ-  
या और शक्ति आदि शस्त्र अस्त्रों को बरसा कर भुज ठोक कर चहुवाण अ-  
नेक दाव करके थक गया तो भी बड़ा बलवान् रावण उससे नहीं मरा ॥ १० ॥  
प्रवीण राजा अजपाल बोला कि चहुवाण ( चहुवाणों के आदि पुरुष ) ने दुष्टों  
का पोषण किया और तुझको दीन जान कर नहीं मारा सो बहुत अनुचि-  
त किया ॥ ११ ॥ १२ ॥ हे मूर्ख तुझको नीच जान कर उस राजा ने शस्त्र नहीं  
छुवाये १० मेरे वाणों का मित्र हो अर्थात् वाणों से मिल ॥ १२ ॥

इस अकलत खल अनखि इक्क डारिय गिरि उप्पर ॥  
 आवत लखि अजपाल सु किय बहु ठूक मारि सर ॥  
 सैय धरि तदनु त्रिसूल भूप मुक्किय रावन रुख ॥  
 धरि खल सम्मुह पैड गह्यो दंतन उबाय मुख ॥  
 सर तिकख बहुरिमुक्कयो सुपहु कट्टयो तिहिं खल बाम कर ॥  
 नहिं संकि तदपि सम्मुह निडर गयउ गज्जि मंडत गुमर ॥ १३ ॥  
 तव रावन इक तोत्र पंच भल्लक खिजि प्रेरिय ॥  
 सायक दै नृप सोहु खंमग रज रज करि खेरिय ॥  
 जटके आधुध कट्टि विकट वक्रहिं करि बिट्ठल ॥  
 तिम बिडाल सिर तोरि निकट लिन्नो रावन खल ॥  
 असुरहु कृपान झारिय उछटि हय रु सूत नृपके हने ॥  
 तानैहु उतरि रथतै त्वरित घायउ सठ दै असि धने ॥ १४ ॥  
 इहिं अंतर जट आय बिहसि अजपाल बकारिय ॥  
 नृपके मंत्रिय नील पकरि असि ताहि प्रहारिय ॥  
 सोमचूड सामंत सरन मारयो बिडंब सठ ॥  
 मंडलग्ग नृप मारि हन्यो रावन रावन हठ ॥  
 जट १ बक २ प्रमुख्ये भजिय जवाहि भूप बिजय जगजस भरिय ॥  
 सानंद सुरन वरखे सुमन कहिय अतुल उपकार किय ॥ १५ ॥

### दोहा

१ उस पर्वत को २ हाथ में ३ जिस पीछे त्रिशूल धारण करके रावण की ४ ओर छोड़ा ५ चौड़ा करके देतीखा बाण ६ छोड़ा तो भी ७ घमण्ड ॥ १३ ॥ रावण ने पांच फलवाला ९ भाला चलाया १० आकाश मार्ग में ११ बहुत बार खड्ग चला कर राजा ने रावण को घायल किया ॥ १४ ॥ इस बीच में जटायु ने आकर हस कर अजपाल को ललकारा उस समय राजा के नील नामक मंत्री ने खड्ग लेकर जट पर प्रहार किया और सोमचूड़ नामक अजपाल के उमराव ने बिडंब नामक असुर को मारा और राजा ने खड्ग मार कर रावण के न मान है हठ जिसका ऐसे रावण को मारा १२ आदि देवताओं ने प्रसन्न हो कर पुष्पां की वर्षा की और कहा कि बड़ा उपकार किया ॥ १५ ॥

हनि रावन अजपाल इम, रचि तीरथगुरु न्हान ॥  
 नागअद्रि तल आय नृप, चितिय यह चहुवान ॥ १६ ॥  
 मही कोस चउसहि ६४मित, किय असुरन बन घोर ॥  
 भयउ तिरोहित तीर्थगुरु, इंग रचहिं इहिं दोर ॥ १७ ॥  
 यह बिचारि गिरि नागके, कटक अधर अभिराम ॥  
 प्राची दिस अजमेर पुर, बिरचिय आयत वाम ॥ १८ ॥  
 सुपहु राम तवतैं बस्यो, यहै नगर अजमेर ॥  
 पांडव सक मुनि गज अनल ३८७, मधु सित बारसि १२वेर ॥  
 किते कहत रविकुलकलस, भो अजपाल जु भव्य ॥  
 यह पुर तिहिं विरच्यो रु इहिं, नृप ५०१ जारन किय नव्य २०

### षट्पात्

इम बसाय अजमेर मध्यदेसहु किन्नै बस ॥  
 अरु अमोघ आदेश जगत विसतारि लियउ जस ॥  
 सुनतहि जाको नाम रहत जिमतिम चित्राकृति ॥  
 तप्यो नृपति इहिं तोर सबन उप्पर धारत धृति ॥  
 पुहवी प्रसिद्ध याको अपर २ जय करि नाम जिगीसु ५० हुव ॥  
 जिन नगर आय मिहिकावतिय किय सोभितकरनाट भुव ॥ २१ ॥

### दोहा

नागपहाड़ के नीचे आकर यह विचार किया कि ॥ १९ ॥ चौसठ कोस प्रमाण-  
 वाली भूमि को असुरों ने घोर बन कर दिया जिससे पुष्कर तीर्थ छिप ग-  
 या इसकारण इस फैलाव में नगर बसावे ॥ १७ ॥ नाग पर्वत के शिखर के  
 नीचे पूर्वदिशा में पुण्यकर्मों के भोग से अजमेर नामक चौड़ा शहर बसाया  
 ॥ १८ ॥ हे श्रेष्ठ राजा रामसिंह ! युधिष्ठिर के ३८७ के संवत् में चैत्र सुदि बारस  
 को यह अजमेर पुर बसा है ॥ १९ ॥ कितनेक कहते हैं कि सूर्यवंशियों के  
 कुल का कलश अजपाल नामक राजा योग्य हुआ था उसने अजमेर नगर  
 बसाया है और इस अजपाल जुहाणों ने जीर्ण को नया किया है ॥ २० ॥  
 पीछा नहीं किरे ऐसा हुकुमरचित्राम की आकृति के समान ईश्वर को धारण  
 करके भूमि में विजय करने के कारण इसका दूसरा नाम जिगीषु (जीतने

चन्द्रवाणवंशप्रतिहारलुहर ] तृतीयराशि—एकत्रिंशमयूख ( ७३७ )

दिव्यवर्म४७नरनाहसौ, बढती संतति जानि ॥

व्याह च्यारि४किन्नैँ बहुरि, प्रनति उक्तं पहिचानि ॥ २२ ॥

पट्टपात

प्रथम दुर्भिला५०।१परनि जिति पुनि सकल दिगंतरै ॥

अब मातुल पुरसानु५३सुता सुगुणा५०।२व्याहिय वर ॥

मधु महीप५२प्रतिहार सुता लावण्यवती५०।३जिम ॥

रविकुल रैवतराज तुंग दुहिता वृंदा५०।४तिम ॥

पंचमी५उमा५०।५मयुरा नृपति सेनपाल तनया परनि ॥

अजपाल५०नगर मिहिकावतिय धन्य अखिल भुगिय धरनि॥२३॥

दोहा

याहि समय अजपालको, सालकँ लुहर५३नाम ॥

कोसलेस नृप अश्वरथ, हन्यौँ असुत रनधाम ॥ २४ ॥

पितर जाहि मतिहास कुल, निखिल गिनत नृप राम ॥

तास पट्ट लिय अनुज तस, विनय महीपस५४नाम ॥२५॥

रोला

नृप अजपाल तैनुज भये तेरह१३प्रसिद्ध भुव ॥

प्रथम नाम भट्टदत्त५१।१महासेन५१।२सु द्वितीयशुभ ॥

महाबाहु५१।३पुनि भीमसेन५१।४धृढधन्वा५१।५जानहु ॥

अश्वपति५१।६रु तिम नृपति५१।७जगतपति५१।८प्रथितप्रमानहु ॥

सुकर्मा५१।९रु भगदत्त५१।१०ईंद्रदत्ताख्य५१।११धनेश्वर५१।१२ ॥

विष्णुदत्त५१।१३सब अनुज एहि प्रतिजगति१३वीरवर ॥

की इच्छावाला) हुआ ॥ २१ ॥ दिव्यवर्म नामक राजा से चन्द्रवाणों की सन्तान बढने लगी इस बात को जान कर कि हम अधिक विवाह करेंगे तो हमारी सन्तान भी अधिक बढेगी?कही हुई ॥ २२ ॥ २ दिशाओं के अंत तक ॥ २३ ॥ ३ शाला को४हे राजा रामसिंह उस लुहर को सब प्रतिहार कुल पितर (विवाह करने से पहिले जो युद्ध में मारा जाता है अथवा बिना सन्तान हुए माराजाता है उसको उसके कुलवाले पितर मान कर पूजते हैं) लुहर के छोटे भाई विनय ने॥२५॥६पुत्र७प्रसिद्ध१६।८इन्द्रदत्त नामक९सब

प्रथमश्चतुर्थश्च नवमश्चेदि अधिराज सुता सुत ॥  
 जदु जायेय द्वितीयश्चषष्ठसप्तमश्चष्टमश्चतुत ॥ २७ ॥  
 तीजोश्चपंचमश्चदसमश्चजन्धौ चालुक तनयात्रयश्च ॥  
 प्रतिहारन भानेज इन्द्रदत्त५११२सु अतीतभय ॥  
 भ्रात धनेश्वर५११२विष्णुदत्त५११२चंदा५११४जाठरजनि ॥  
 इन दोउनश्चअनुजात सुता रुचि५१तियन सिरोमनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

कुरुपाति सुचिरथको कुमर, बुल्लि परिम्लुच नाम ॥  
 परिनाई अजपाल इहिँ, रुचि५१तनया अभिराम ॥ २९ ॥  
 भटदलनहिँ दै राज्यभर, कानन रहि लहि काल ॥  
 विग्रह छोरयो जोगवल, पुहबीपति अजपाल ५० ॥ ३० ॥  
 पांडव सक नभ छ चउ४६०मित, जँहँ कलिहायन जात ॥  
 भूप भयो तँहँ भटदलन५१, बसुधातल विख्यात ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयश्चाशौ बी  
 तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनेऽजपाल ५० दिग्विजयन-रावण १ वि-  
 डाल २ विडम्बा ३ बसुररत्नोर्ध्वसनाऽजमेरनगरनिर्माणमहिषो-  
 दुर्मिला ५०१ सुगुणा ५०२ लावणयवती ५०३ रुन्दो ५०४  
 मा ५०५ सन्ततिभटदलनाऽऽदिसुतत्रयोदश १३ कन्यारुचि १  
 समुद्रवनकोसलेशाऽश्वरथप्रतिहारलुहर ५३ निपातनतदनुजसु-

से छोटा १ चन्देरी के राजा की बेटी के बेटे २ चहुवंश के  
 भाणोज ॥ २७ ॥ सोलंखी की ३ पुत्री ने ४ निर्भय ५ उदर से ६ छोड़े ॥ २८ ॥  
 ॥ २९ ॥ राज्य का भार अपने पुत्र भटदलन को देकर वन में रहकर समय  
 पाकर राजा अजपाल ने योगवल से शरीर छोड़ा ॥ ३० ॥ युधिष्ठिर के स-  
 म्रत के अनुसार कलि युग के ४६० वर्ष जाते समय भूमितल पर प्रसिद्ध भटद-  
 लन नामक राजा हुआ ॥ ३१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु  
 वाण वंशवर्णन में अजपाल का दिग्विजय, रावण-विडाल-विडम्बा आदि दै  
 त्य और राजाओं को मारना, अजमेर नगर का बसाना, राखी दुर्मिला-सु-  
 गुणा-लावणयवती-रुन्दा-उमा की संगतान भटदलन आदि तेरह पुत्र और रुचि

तविनयमहीप ५४ विंस्थलाऽधिपत्यप्रापणवैखानसाऽजपालत  
नुत्यजनभटदलनराज्यसमासादनमेकत्रिंशो ३१ मयूखः ॥ ३१ ॥

आदितस्त्रिसप्ततितमः ॥ ७३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम पत्तन मिहिकावती, भटदलन ५१ सु हुव भूप ॥

करन किति बितरन करन, रन कपिकेतन रूप ॥ १ ॥

जनक बैर रावन तनुज, तक्कत अवसर पाय ॥

निस सोवत नृपके अनुज, अखिल १२ हनै जट आय ॥ २ ॥

आसापूरनि स्वप्न दै, सावधान नृप कीन ॥

नतो जनन चंडासिको, खल सु करै सब खीन ॥ ३ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

कर्णाटराज चहुवान भटदलन ५१ नै कार्तवीर्य कुलाऽवतं  
स कुंतलाऽधिराज कमलसेनकी कन्या कांति ५११ नाम वि  
वाहि आनी ॥

तामैं चहुवानचक्रबूडामनिसौ लोहराज ५२१ निम्मराज ५३१  
अनंगराज ५२१३ तीन ३ ही भये महादानी ॥

नामक कन्या का पैदा होना, अयोध्या के राजा अश्वरथ का प्रतिहार लुट्टर  
को मारना उसके छोटे भाई राजा विनयका विंस्थल के स्वामिपुन को प्राप्त  
होना, वानप्रस्थ होकर अजपाल का शरीर छोड़ना, भटदलन का राज्य प्रा-  
प्त होने का इकतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३१ ॥ और आदि से तिहत्तर  
मयूख हुए ॥ ७३ ॥

इसप्रकार मिहिकावती नामक पुर में भटदलन राजा कीर्ति करने के अर्थ  
दान देने में कर्ण के समान और युद्ध में अर्जुन के समान हुआ ॥ १ ॥ राव  
ण के पुत्र ने पिता के बैर को देख कर समय पाके रात्रि में सोतेहुए भटदल-  
न के सब छोटे भाइयों को जटासुर ने मार डाले ॥ २ ॥ आशापूरण नामक  
कुलदेवी ने राजा भटदलन को स्वप्न में सावधान कर दिया जहाँ तो वह  
दुष्ट चहुवाण के सप्त वंश को ही नाश कर देता ॥ ३ ॥ १ कार्तवीर्य के कुल  
के मुकुट १ कुन्तल देश के स्वामी ३ चहुवाण गण के शिरोमणि  
भटदलन से

जिनमें बड़े दोहू २ तो अप्रजही किसोर अवस्थामें मातुल के निकट जावत असुरननै मारिलिये ॥

अरु उभय २ ही धारा तीर्थमें देह डारि बसुधेवर के बंसके पूजनीय पितर भये ॥ ४॥

( पटपदी )

लोहराज ५२। १ अरु निम्मराज ५२। २ सोदर भ्राता दुव २ ॥

जनपद कुंतल जात मगग असुरन आहव हुव ॥

रावन सुत जट १ असुर बहुरि बक २ असुर महाबल ॥

लैन बैर हठ लगि खिजि पहुँचे दकाल खल ॥

बरखे तिसूल १ तोमर २ विसिख ३ गदा ४ सकति ५ घन ६ प्रोस ७ गन ॥

अभिमन्यु तरह कट्टत इनहि रूपे उभय २ चहुवान रन ॥ ५ ॥

तीन ३ पहर रन तुमुल १३ जुरत बालक न हटे जव ॥

असुरन माया अतुल तमकि उप्पर प्रेरी तब ॥

न पढि सके सिसु अस्त्र खलन बीचहि रन रोहे ॥

माया करि इम बिबस लगे घुम्मन दुव २ मोहे ॥

बक १ जट २ सुपिखि अनुक्रम असिन दुव २ बालन सिर कटिलिय ॥

भटदलन सुतन विनु सिर बहुरि कलह पंचघटिका करिय ॥ ६ ॥

पादाकुलकम् ॥

लोहराज ५२। १ अरु निम्मराज २ दुव २, रन तीर्थ इम पूज्य पितर हुवा ॥

बहु भटदलन ५२ नरेस तज्यो जव, लही अनंगराज ५२। ३ गदिय नवा ७।

१ विना सन्तान २ पन्द्रह वर्ष की अवस्था से पहिल ही (दशवर्ष से ऊपर और पन्द्रह वर्ष से नीचे की अवस्था को किशोर कहते हैं) ३ मामा के घर जाते समय दैत्यों ने मार डाला ५ चहुवाणवंश के ॥ ४ ॥ ६ एक उदर से पैदा हुए साई ७ कुन्तल देश में जाते हुए दैत्यों से युद्ध हुआ ९ ललकार (प्रचार) के १० शक्ति विशेष (भाग) ११ बाण १२ आला ॥ ९ ॥ १३ भयंकर १४ युद्ध में रोक लिये १५ मूर्च्छित होगये तब बकासुर ने लोहराज का और जटासुर ने निम्मराज का इस अनुक्रम से १६ तरवारों से शिर काट लिये फिर भटदलन के पुत्रों ने पांच १७ घड़ी तक विना अस्तक युद्ध किया ॥ ६ ॥ जब राजा भटदलन ने १८ शरीर छोड़ा तब अनंगराज ने गद्दी ली ॥ ७ ॥



अर्धुदपति सोमार्क नरेश्वर, ससि जडु क्रोष्टु वंस दीपक वर ॥  
 सुता तासु ससिभानु५२।१ सयानी, परनि अनंगराज५२नृप आनी।८।  
 रंवि अन्वय नेपाल धराधन, कीर्तिसेन अभिधान महामन ॥  
 सुता तास गुन नाम सिराही, कीर्तिमती५२।२दूजे२नृप ब्याही।९।  
 चोलदेस हैहय कुल भुखन, बसुधापति अभिधान बिदूखन ॥  
 तास सुता आव्हय करि भामा५२।३,  
 यह व्याहिय तीजी३ अभिरामा ॥ १० ॥  
 हुवइकवीस२१ अनंगराजसुत, भीम५३।१रुधर्मपाल५३।२ पाटवजुत  
 बहुरि धर्मरत५३।३ रत्नपाल५३।४ हुव,  
 रुक्मरथ ५३।५ रु रुक्मसेस ५३।६ धीर ध्रुव ॥ ११ ॥  
 रुक्मकोस५३।७ पृथ्वीपाल ५३।८ रु पुनि,  
 रुक्मसेजु ५३।९ हरिभानु ५३।१० लेहु सुनि ॥  
 चंद्रभानु ५३।११ अरु भानु५३।१२ कित्तिकर,  
 जगद्भानु ५३।१३ बलि सोमदत्त५३।१४ वर ॥ १२ ॥  
 जयचंद्र ५३।१५ रु अन्वय चंद्र५३।१६ हु जिम,  
 देवीचंद्र ५३।१७ त्रिलोकचंद्र५३।१८ तिम ॥  
 अमर ५३।१९ रु दीपचंद्र५३।२० मन उज्वल,  
 ब्रह्मदत्त ५३।२१ सब अनुज महाबल ॥ १३ ॥  
 कीर्तिमती५२।२ औरस पहिले दस१०,  
 जिम ससिभानु५२।१ तनय खट्ठ अतिजस ॥

देवीचंद्र५३।१७आदिपंचकपुजनि, हुवभामा५२।३हुतनूजरत्नखनि१४

१चन्द्रवंशी यादवों में राजा क्रोष्टु के वंश को प्रकाश करनेवाला ॥८॥ २सूर्य  
 वंशी नेपाल के राजा कीर्तिसेन नामक बड़े मनस्वी की बेटी दूसरे  
 विवाह में परणी ॥ ९ ॥ ३ विदूखन नामक ४ भामा नामवाली ५ मनोहर  
 ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पहिले गिनाये हुए दश पुत्र कीर्तिमती के उदर  
 से पैदा हुए इसीप्रकार बड़े यशवाले छः पुत्र शशिभानु के पेट से उपजे, दे  
 वीचन्द्र आदि पांच पुत्रों को जन कर भामा नामक राणी भी पुत्रों रूपी र  
 तनों की खान हुई ॥ १४ ॥

## दोहा

वडे भीम५३१ जुब्बन लहिय, बीस२० अनुज तस वाल ॥  
 रावनसुत खल जट बहुरि, किय तँहँ कर्म कराल ॥ १५ ॥  
 परिंसर बिच खेलत पकारि, बीसन२० हरि वहिकाय ॥  
 असुरनकी कुलदेवता, अगँ मारिय जाय ॥ १६ ॥  
 नृप अनंगराज५२ हु तजिय, कानन रहि निज काय ॥  
 तीन३हि रानिन सहगमन, कियउ पतिब्जत पाय ॥ १७ ॥  
 तब जनपद करनाट पति, भयउ भीम५३ नरनाह ॥  
 रिपुगन भंजन मानरन, दान१ कृपान२ दुबाह ॥ १८ ॥  
 रुक्मी जनन विदर्भपति, नगर भोजकट नाम ॥  
 हुव२ कन्या नृपदेवकै, हुव गुन गनन ललाम ॥ १९ ॥  
 ( षट्पात् )

जेठीमति५३१ अभिधान भीम५३ चहुवान विबाहिय ॥  
 अनुजा नीति सु गोडभूप भवदेव परनि लिय ॥  
 जट खल रावन तनुज तीन३ पोढिन लग छल बस ॥  
 करिय बंस उच्छेद धरिय चहुवान सोक तस ॥  
 इक दिन सिकार अदिन अटत कंदर बिच किय मुनि दरस ॥  
 आस्तीक बंस उत्तान द्विज सेवन नृप सखिय सरस ॥ २० ॥  
 हुव प्रसन्न उत्तान कहिय कहु लेहु महीपति ॥

बडा भीम था सो तो युवा होगया और उसके बीस छोटे भाई  
 थे जिनके लिये जटासुर ने भयंकर कर्म किया ॥ १५ ॥ १ ग्राम  
 के समीप (गोरवें में) की भूमि में खेलते हुआँ को बहका कर ॥ १६ ॥ २ वन  
 में रह कर अपने शरीर को छोडा ३ साथ जल गई ॥ १७ ॥ कर्णाट देश का  
 पति भीम हुआ जो युद्ध में शत्रुओं का मान मारनेवाला और दान में और  
 युद्ध में दोनों हाथों से बाह (वार) करनेवाला था, यहां दान में दुबाह अर्थात्  
 दोनों हाथों से दान देनेवाला ॥ १८ ॥ रुक्मी के ४ वंश में ५ सुन्दर १६।  
 मति नामक बड़ी कन्या को भीम चहुवान ने विवाही और नीति नामक  
 छोटी को भवदेव नामक गोड़ राजा ने व्याही ६ वंश का नारा किया ७ प  
 र्वतों में फिरते समय ॥ २० ॥ राजा ने कहा कि जटासुर हमारी सन्तान को

अक्खिय नृप जट असुर बढन देत न सठ संतति ॥

तातैं एकश्हु तनय होय दुष्टन संहारक ॥

दया उदधि यह देहु अप्प जगहित उपकारक ॥

हैं नागराज भानेज हम करहुँ अरज प्रभुसेससौं ॥

कछु दिन विताय पावहु तनय इम द्विज कहिय नरेससौं ॥ २१ ॥

दोहा

कहि इम भूपहिं सिक्खदै द्विज बडवासुख जाय ॥

किन्नी अरज अनंतसौं, असुरन हनन उपाय ॥ २२ ॥

भुवन आय नृप भीमपूहु, चहि अनसन ब्रत चंड ॥

आराधन श्रीसेसको यह निस कियउ अखंड ॥ २३ ॥

पटपात

उत अक्खिय उत्तान पानि दुवश्जोरि सेस प्रति ॥

प्रभुको भक्त नरेस भीमपूहुत तस संतति ॥

इकश् तंतु अवसेस रहिय कछु अप्प अनुग्रह ॥

अद्यावधि सिसु इतर असुर जट भखत खोजि वह ॥

जिहिं त्रास होत व्याकुल जगत रुकि वेदन पढति रहिय ॥

रावरो सरन पंजर विरुद सोहि सरन भीमपूहु गहिया ॥ २४ ॥

दोहा

नहीं बढने देता इसकारण से हे दया के समुद्र आप जगत् के लिये उपकार करनेवाले हो सो एक ही पुत्र जटसुर आदि दुष्टों को मारनेवाला होवे यह घर दीजिये, हम नागराज के भाणेज हैं सो आप शेषनाग से अर्ज करो, मुनि ने राजा से कहा कि कुछ दिन बिता कर ऐसा पुत्र पावोगे ॥ २१ ॥ २१ ॥ पाताल में जाकर १ शेष नाग से ॥ २२ ॥ राजा भीम ने भी अपने घर आ कर अनशन (निराहार) भयंकर व्रत करके शेषनाग की दिन रात अखंड आराधना करी ॥ २३ ॥ उत्तान नामक मुनि ने दोनों हाथ जोडकर शेषनाग से कहा कि राजा भीम आप का भक्त है उसकी सन्तान डूबती है, आपकी कृपा से एकतन्तु बाकी रहा है आजतक दूसरे बालकों को हेर कर जटसुर खाजाता है जिसके भय से जगत् व्याकुल होरहा है और वेदों के मार्ग रुक रहे हैं, शरण आयेहुओं की रक्षा करने का आपका विरुद है वही शरण

करिय सु सुनि कर्कोटकहु, अरज सेस प्रति एह ॥

जनन वहहु जामेय है, नाथ धरहु तँहँ नेह ॥ २५ ॥

अनुजकी रु उत्तानकी, इम सुनि अरज अनंत ॥

अति आराधन भीमको, सो पुनि जानि सुमंत ॥ २६ ॥

कादवेय एकल करि, अक्खिय सब सन सेस ॥

इक१जाय तँहँ अवतरहु, असुरहु हनहु असेस ॥ २७ ॥

( नसेस१असेस२अन्त्यानुप्रास )

सबन कहिय श्रीसेस सन, समुझि करहु अघ साथ ॥

अब कलिजुग बरतत उहाँ, नरक न डारहु नाथ ॥ २८ ॥

( सचरणागद्यम् )

उत्तानमुनि के समागमके पूर्व चंडासिराज भीमसौं बैदभीं  
मैं कनकावती५४नाम एक१कन्या भई ॥

जो चन्द्रवंस भूखन आनर्तराज हरिसेनकौं बड़े विधानसौं  
बिवाहि दई ॥

जाके उदर अरणीतैं बैरिनके बनकें बन्धि भागिनेय बाल  
नैं जन्म लीनौं ॥

याही समयमैं मगधराज सुव्रतनैं देवगिरिको रहनौं तजि  
ताहीके समीप पाटलिपुत्र पत्तनमैं आय निवास कीनौं ॥ २९ ॥

( दोहा )

आराधे इक१मासलौं, इत नृप सेस उदार ॥

श्रद्धामय निश्चय सहित, अनसन व्रत आधार ॥ ३० ॥

भीम ने गहा है ॥ २४ ॥ यह सुनकर कर्कोटक नाम सर्प ने अर्ज की कि वह  
वंश अपना भाण्ड है सो हे नाथ उस पर स्नेह धरो ॥ २५ ॥ शेषनाग ने  
अपने छोटे भाई की और उत्तान मुनि की अर्ज सुनकर और राजा भीम का  
आराधन करना जान कर ॥ २६ ॥ १ सर्पों को इकट्ठे करके २ अवतार लो ॥ २७ ॥  
३ पाप के साथ ॥ २८ ॥ उत्तान मुनि से राजा भीम भिला जिस पहिले विद्वत् देश के  
राजा की पुत्री के उदर से उसके उदर रूपी अरणी (होम की अग्नि प्रकट करने का  
काष्ठ) से शत्रुओं रूपी वन के अग्नि बाल नामक भाण्ड ने जन्म लिया ॥ २९ ॥

( पट्टपात् )

इत सब नागन नटत कहिय पुनि सेस धराधर ॥  
जावहु इका लिपि है न दुरित मामक निदेस डर ॥  
भानेजन उपकार होय कृतघन जिन भुल्लहु ॥  
जरतकारु कुल जिमहि तिमहि सुमना१कुल तुल्लहु ॥  
उत्तान कहत अरु वह करत आराधन अपनौ सतत ॥  
जगमाँहिँ बहुरि मारत जटहिँ मचिहै किंति रुधर्म मता३१।  
ऐरावत यह सुनत कहिय कर जोरि सेस प्रति ॥  
करहु अल्प संकेत ततो जावन मामक मति ॥  
सुनि बुल्लिय श्रीसेस दुवहि तँहँ जान प्रयोजन ॥  
इक१संतति विस्तरन१अपर२असुरादि हनन२रन ॥  
सिर धरि निदेस हमरो सजव काम अनुज उभय२हि करहु ॥  
अरु अश्वसेन तच्छक तनय यह तव वाहन अवतरहु ॥ ३२ ॥

दोहा

ऐरावत अक्खिय असुर, मारन सुगमहिँ आहिँ ॥

नामक नगर में ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ पृथ्वी को धारण करनेवाले  
शेष ने सर्पों से कहा कि तुम में से कोई एक जाओ उसको मेरी  
आज्ञा के भय से पाप नहीं लगेगा कृतघन (किये हुए उपकार को नहीं मान  
नेवाले) होकर भाणेज का किया हुआ उपकार (आस्तीक ने जनमेंजय के य  
ज्ञ में सर्पों को जलने से बचाया था सो) मत भूलो. अपने समीप जैसा जर-  
त्कारु का कुल है इसीप्रकार सुमना (सुमना नामक नागकन्या जो चहुवाण  
की राणी थी) के कुल को जानो. इधर तो उत्तान सुनि कहता है और उधर  
राजा भील अपना निरंतर आराधन करता है ? जटासुर को मारने से २  
कोर्ति ॥ ३१ ॥ यह सुनकर ऐरावत नामक सर्प ने हाथ जोड़ कर शेष से क  
हा कि वहाँ पर थोड़े समय तक रहने का जो आप संकेत करें तो मेरा वि  
चार जाने का है ३ सन्तान का फैलाना ४ दूसरा दैत्य आदि को मारने का  
है सो हमारा हुक्म शिर पर धर कर हे भाई दोनों कार्य शीघ्र करो और  
तच्छक का मित्र अश्वसेन नामक सर्प है यह घोड़े का अवतार होकर तेरा या  
हन यन्त्रो ॥ ३२ ॥ ऐरावत ने कहा कि असुरों का मारना तो सहज ही है परन्तु

बरस तीस३०लग पै प्रजा, न व्है रहै तो नाहि ॥३३॥

पटपात

ऐरावत१अरु अश्वसेन२इम सेस हुकम लाहि ॥

आये भुव अवतरन चंडे असुरन मारन चाहि ॥

प्रथम१नाग भीम५३सन रहिय मति ५३१गर्भ महाबल ॥

अपर२सु बडवा उदर बढे उभय३हि पुनि पल पल ॥

सरअष्टविषय५८५कलिजुगबरस धर्मतनय सक जात ध्रुव॥

अभिधान गोग५४नृप भीम५३सुत ऐरावत अवतार हुवा॥३४॥

दोहा

नवमी९तिथि आधी निसा, मेचक भइव मास ॥

मति५३१जाठर श्रीगोग५४सुत, प्रकटिय प्रसव प्रकास॥३५॥

अश्वसेनके अंस हुव, बडवाकै हु किसोर ॥

लियउ गोग अवतार इम, चाहुवान कुल मोर ॥३६॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायण तृतीय३राशौ वी-  
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने रावणिजटासुरसुप्रभटदलनाऽनुजमहा-  
सेनाऽऽदिद्वादश१२मारणाभटदलन५१लोहराज५२१निम्मराजा-  
५२१ऽनङ्गराजो५२१३द्रवनकिशोराऽवस्थाऽग्रजद्वय२वक१जट२-

तीस वर्ष में सन्तान नहीं होवे तो इस से आगे मैं वहां पर नहीं रहूं ॥३३॥  
१ अवतार लेने को २ भयंकर असुरों को ३ पहिला सर्प (ऐरावत) राजा भी-  
म से मति नामक राणी के गर्भ में रहा और दूसरे सर्प (अश्वसेन) ने घोड़ी  
के गर्भ में जन्म लिया और दोनों क्षण क्षण में बड़े युधिष्ठिर का सम्बन्ध जा-  
ते समय गोग नामक राजा भीम का पुत्र ऐरावत सर्प का अवतार हुआ  
॥ ३४ ॥ ४ कृष्णपक्ष भादवा महीने का ५ मति के उदर से जन्म लेकर प्रक-  
ट हुआ ॥ ३५ ॥ अश्वसेन सर्प के अंश से घोड़ी के बछेरा हुआ ५ चहुवाण कु-  
ल का मुकुट ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण वंश के वर्णन में रावण के पुत्र जटासुर का भटदलन के महासेन आ-  
दि सोते हुए बारह छोटे भाइयों को मारना, भटदलन के लोहराज-निम्म-  
राज-अनङ्गराज का पैदा होना, किशोर अवस्था में दोनों बड़े भाइयों को

राणशय्याशायनभटदलनाऽनन्तरप्राप्तराज्याऽनङ्गराजपुत्रशशिभानु-  
 पुत्रकीर्तिमतीपुत्रभामापुत्रराज्ञीत्रयोपयमनभीमाद्येकविंश-  
 तिपुत्रजननजटासुरभीमविहीनतर्दिशति २० निघातकर्णाटराड-  
 नङ्गराजपुत्रतनुत्यजनराज्ञीत्रयोपयसहगमनभीमपुत्रगङ्गीकोपविशनवै-  
 दर्भीमतिपुत्रविबहनपूर्वकन्याकनकावतीपुत्रप्रकटनतदानर्तराज  
 हरिसेनविवाहनदौहित्रबालोद्गमननृपोत्तानमुनिमिलनश्रीशेषाऽऽरा-  
 धनतदाज्ञप्तैरावतनागाऽवतारभौमिगोगदेवोपुत्रद्ववनवडवाश्वसेना-  
 शप्रसवनं द्वात्रिंशोपुत्रमयूखः ॥३२॥ आदितश्चतुस्सप्ततितमः ॥७४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

( दोहा )

होत तनयं नृप भीमनै, लखन द्रुम्म-लुटाय ॥

जातकरम किय रीति जुत, प्रचुर मोद भर पाय ॥ १ ॥

आय तवहि उत्तान मुनि, नृपसन किन्न निदेस ॥

ऐरावत अवतार यह, सुत तव पठयो सेस ॥ २ ॥

अश्वसेनको अस यह, है वर तुरग असोक ॥

हनि असुरन रहि हैं चिरन, जैं हैं दुवर्निज लोक ॥ ३ ॥

जटासुर का रणशय्यामें सुलाना, भटदलन के पीछे राज्य को प्राप्त होकर  
 अनङ्गराज का शशिभानु-कीर्तिमती-भामा-नामक तीन राणियों से विवाह  
 करना, भीम को आदि लेकर इक्कीस पुत्रों का जन्म होना, उन में भीम के  
 बिना पीसों को जटासुर का मारना, कर्णाटक के राजा अनङ्गराज का शरीर  
 छोड़ना, तीनों राणियों का साथ जलना, भीम का गङ्गी घेड़ना, विदर्भ दे-  
 श के राजा की पुत्री मति से विवाह करना, प्रथम कनकावती नामक कन्या  
 का प्रकट होना, जिस को आनर्त देश के राजा हरिसेन को व्याहना, बाल  
 नामक दौहित्र का पैदा होना, राजा भीम का उत्तानमुनि से मिलना, श्री-  
 शेष नाग का आराधन करना, नेप की आशा लेकर ऐरावत नाग का अव-  
 तार लेकर नागलोक से गोगदेव का जन्म होना, घोड़ी के पेट से अश्वसेन  
 नाग के अंश से अश्व के पैदा होने का वत्सीसर्प मयूख समाप्त हुआ ॥३२॥  
 और आदि से चौदसर मयूख हुए ॥ ७४ ॥

पुत्ररूपयेत्युक्त ॥१॥ अशोक नामक अष्ट घोड़ा अश्वसेन नामक सर्प के

( षट्पात् )

पूजन तँहँ मुनि पाय गये इम कहि निज आश्रम ॥

नृप कुमार इत गोगप४वडिग सितै पक्ख कला क्रम ॥

बय लहि सोलह१६वरस रमत मृगैया वन अंतर ॥

हय असोक आरूढ हनत मृगपति बराह बर ॥

जट१वक१वहोरि खल आय जहँ कहिय तजहु आयुध कुमति ॥

जो यह करो न तो जायहो गोगप४पितृव्यक बीस२०गति ॥ ४ ॥

मुनि यह गोगप४कुमार कहिय सबही न छुरावहु ॥

तजिहौं आयुध उभय२लेहु उभय२हि इत आवहु ॥

वक तब मुक्किय बान कुमार सहजहि वह कट्टिय ॥

अस्व असोक उडाय प्रदर मारिय कनपट्टिय ॥

वक लियउ मोह सोनित बमत जट अपुब्ब घमसान किय ॥

दिय पंच५कुमार छत्तिय प्रदर हनिय पंच५हयराज हिय ॥ ५ ॥

लगत बान चहुवान जेठ दिनकर हुव जुज्झन ॥

सय दक्खिन तस सतत बन्यौ निज श्रुति ढिग बुज्झन ॥

सिर पंचक५हुव२संख अट्ठ८गोधि रु चउ४आनन ॥

त्रय३लागि छत्तिय तीस३०बेधि जट वपु इम बानन ॥

अंश से पैदा हुआ है बहुत नहीं रहेंगे ॥ ३ ॥ १ शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की कला यह इस प्रकार बढ़ा २ शिकार ३ सिंह श्रेष्ठ सूत्रों को मारता था तहाँ जटासुर और कलासुर असुरों ने आकर कहा कि हे छोटी बुद्धिवाले (गोग) आयुध छोड़ दे और जो नहीं छोड़े (डाले) गा तो हे गोग तुम्हारे बीस का-के (चचे) गये उसी गति तू भी जावेगा ॥ ४ ॥ गोग ने कहा कि मेरे सभी शस्त्र तो मत छोड़ाओ दो शस्त्र छोड़ूंगा सो तुम दोनों इधर आकर लेलो जय वक ने बाण छोड़ा उसको कुमार ने सहज से ही काट डाला और असोक नामक अपने घोड़े को उड़ाकर वक की कनपट्टी (आँख और कान के बीच की जगह) में बाण मारा सो रक्त उगलते हुए वकासुर ने सूँघा लेली तब जटासुर ने अपूर्व युद्ध किया ॥ ५ ॥ युद्ध करने को लिये उद्वेष्ट आस के सूर्य के समान तेजस्वी हुआ उस समय गोग का दहिना हाथ निरंतर अपने कान के समीप यह पूछने को हुआ कि शत्रु के अङ्ग में कहां पर बाण लगावें



खिजि कहिय हेति छोरन लखहु पुहवि खलहु मूर्छित पस्थो ॥

वक चेति तवहि माया बहुल करि प्रसार तंडन करयो ॥६॥

तहँ वक माया तनत अभ्र छादित हुव अंबर ॥

अतुल फैलि अंधार १ ओघ उलका २ आडंबर ॥

बिकटभूत १ बेताल २ निकट डाकिनि ३ डरान लागि ॥

मार मार ख मचिग काल बिकराल ज्वाल ४ जगि ॥

विच्छिन्न १ भुजंग २ गज ३ सिंह ४ बहुफेरव ५ टुक ६ चित्रक ७ फिरता ॥

विज्जुलि १ अलात २ आयुध ३ बिटापि ४ घाव ५ असनि ६ करका ७ गिरता ७ ॥

कुमर गोग ५४ तव कलह मारि वानन घन मंडिय ॥

माया अस्त्रन मेटि खूब सस्त्रन खल खंडिय ॥

जटहु मोहँ तजि ज्वलित अंखि तोमर गहि आयउ ॥

इहि असोक भपटाय कंठ करवाल चलायउ ॥

गिरिकूट प्रमित जटसिर गिरिय रुंडहु जुञ्जिय घोर रन ॥

खुंदाय खुरन जट नाम खल डारिय कुमर प्रवीरपन ॥ ८ ॥

टापन मारि असोक करिय जट देह टूक सत १०० ॥

फिर पांच बाण मस्तक में दो बाण कनपट्टी (कान के समीप की हड्डी) में आठ ललाट में चार मुख में तीन बाण छाती में और तीस बाण जटामुर के बाकी के शरीर में लगाकर इस प्रकार वेधन किया और क्रोध करके कहा कि शस्त्रों का छोड़ना देखो वह दुष्ट भी मूर्छित होकर भूमि पर गिर गया, उसी समय चेत कर वक ने बहुत माया फैलाकर वृत्त्य किया ॥६॥ आकाश वादलों से छाजया और अग्नि के अंगारों के समूह का आडंबर होकर शब्द मचकर काल के समान बिकराल ज्वाला जर्गा, बीछू सर्प रयाल (गीदड़) भेड़िये चीते फिरने लगे. अग्नि के अंगारे वृक्ष पत्थर वज्र ओले (गड़े) गिरने लगे ॥ ७ ॥ अस्त्रों से माया को भेदकर शस्त्रों से दुष्टों के टुकड़े किये मूर्छा को छोड़कर लाल नेत्र करके भाला लेकर आया, गोग ने अशोक नामक घोड़े को उड़ाकर जटामुर के कंठ पर खड्ग चलाया सो पर्वत के शिखर के समान जट का मस्तक गिरा. उसके घड़ ने भी अयंकर रण किया जिसको घोड़े के खुरों से खुंदाकर कुमर ने विशेष वीरपन से जट को गिराया ॥ ८ ॥ घोड़े के अगले पैरों की चोट से अशोक नामक घोड़े ने जटामुर के देह के

कुमर मुक्ति सर साष्टि० वकहु वेधिय अति उद्धत ॥

जिम छिद्रित घट जाव लसत घावन इम लोहित ॥

असुर परिय अरराय मरम फटत बक मोहित ॥

सिर तसहु कट्टि दुवर्गैद सम उछटावत हँय पयन करि ॥

इम रन भजाय आयउ कुमर छतविग्रहछतीस ३६ धरि ॥९॥

( दोहा )

बहुल वधाई भीम नृप, कुमर विजय हित किन्न ॥

वारन १ हय २ भूखन ३ वसन ४, द्रव्य ५ सुरभि ६ भुव ७ दिन्न ॥१०॥

ससिकुल श्रीधर बंग नृप, तनया गुनन निधान ॥

प्रमा ५ ४ १ नाम निजपुत्रकौ, परिनाई चहुवान ॥११॥

( षटपात् )

इम गोगहि परिनाय भीम ५ ३ नरनाह विरति गहि ॥

करि कुमार अभिसेक अप्पि निर्ज पट्ट समय लहि ॥

वैदभी ५ ३ १ जुत विपिन जाय अभ्यस्त जोग किष ॥

ब्रह्मरंध पथ प्रान तजि रु प्रकृतिहि विषोग दिय ॥

चहुवान गोग ५ ४ भूपति भयउ वीर अढारह १ ८ वरस वय ॥

सुभकर्ण ५ ५ भयउ ताकै सुघर तातै तुल्य विक्रम तनया १ २ ॥

( दोहा )

गौतम कृप गोगहि मिले, तीरथराज प्रयाग ॥

तिनपँहँ सख १ रु साख २ सव, सुतहि सिखाय सुभाग ॥१३॥

सौ दुकड़ करदिये और कुमर गोग ने साठ पाण छ़ाडकर अत्यन्त उद्धत घ-

कासुर को वेधा, जिसके घाव छिद्र कियेहुए घड़े के समान रक्त से शोभित

हुए और मर्माँ के फटने से मूर्छित होकर वह असुर अरराट (गिरने के शब्द

का अनुकरण है) शब्द करके पड़ा? घाड़े के पगों से उडाता हुआ शरीर में छ

तीस वाव धारण करके ॥९॥ अत्यन्त ४ हाथी ३ गायाँ ॥१०॥ चन्द्रवंशी १ १ ॥

७ वररक्त रत्न अपना पाट देकर १ वन में योग का अभ्यास किया और १० कपाल

मार्ग से मार्गों को छोड़ कर जगत के कारण (जन्म मरण) को विषोग दि-

या अर्थात् मुक्त होगया १ १ पिता के समान विक्रमवाला सुन्दर पुत्र हुआ

१ २ गौतमवंशी कृपाचार्य प्रयाग में गोग चहुवाण से मिले जिनसे ॥१३॥

आयउ पुर मिहिकावतिय, राज्य कियउ रिपु तोद ॥

सिसु बेसहि सुभकर्ण ५५ह, दिय जनकहिँ गुन मोद ॥१४॥

मायामह चहुवानके, अप्पहिँ अतनय जानि ॥

दियउ भोजकट राज्य सब, गोगहिँ हित पहिचानि ॥१५॥

दै गोगहिँ भुव देव नृप, जाया जुत बन जाय ॥

तीजो३आश्रम सद्धि तँहँ, किय प्रानन विनु काय ॥१६॥

गोड नृपति भवदेव इत, अगग भीम नृप सत्थ ॥

माउसिया नृप गोगकी, परन्यो नीति समत्थ ॥१७॥

ताकै दुवरजनमे तनय, सुर्जन१अर्जुन२नाम ॥

देव मरन तिनहू सुनिय, गोग लहन तस धाम ॥१८॥

( षट्पात् )

सुर्जन१अर्जुन२उभय२मरत सुनतहि मातामह ॥

नगर भोजकट आय कहिय, गोगहिँ अति आग्रह ॥

दब्बी भुव अजपाल सुपे तुमसौँ सब छुटिय ॥

मातामहको मुलक लुब्ध तक्कत इत लुटिय ॥

दायाद छत न इक्कहिँ मिलत सकल बंदि बिरचहु सकल ॥

हम तुम समान अधिकार यँहँ गोड कुलहु कबतै निबल ॥१९॥

शत्रुओं को पीड़ा देनेवाला ॥१४॥ चहुवान के नाना ने अपने को बिना सन्तान जान कर भोजकट का सब राज्य गोग को दे दिया ॥ १५ ॥ देव नाम का राजा ने गोग को भूमि देकर स्त्री सहित वन में जाकर तीसरा आश्रम (वानप्रस्थ) का साधन करके शरीर को बिना प्राण किया ॥ १६ ॥ गोडवंश का भवदेव नामक राजा राजा भीम के साथ आगे गोग चहुवाण की माँसी (माता की वहिन) को परगना था ॥ १७॥ जिसके सुर्जन, अर्जुन नाम के दो पुत्र हुए उन्होंने भी भवदेव का सरना और उसका राज्य गोग को मिलना सुना ॥ १८ ॥ अपने नाना को मरा हुआ सुन कर भोजकट नामक नगर में आकर गोग से दृढपूर्वक कहा कि अजपाल ने जो भूमि ददाई थी वह तो तुमसे सब छुट गई और इधर आकर लोभ से नाना के मुलक को लूट लो सपिंड (सात पीढ़ी पिता के कुल की और पाँच पीढ़ी माता के कुल की को सपिंड कहते हैं) के होते हुए एक को नहीं मिल सकता इस कारण से सब राज्य को

( दोहा )

हम अधीस कंबोजक, तुम करनाट नरेस ॥  
 मातामह बैभव अमित, दुवरमिलि भुगहि देस ॥२०॥  
 गोग कहिय तव आवते, देते तुमहि कछूक ॥  
 वा न बुलाये याहितैं, तुमहि न देते टूक ॥२१॥  
 देव गये भुव मोहि दै, भाग चहत तुम आज ॥  
 दान लेहु दैहौं अखिल, कछु बलसौं नहि काज ॥२२॥  
 यह सुनि गोडन रन रचिय, सहज जिति नृप सोहु ॥  
 सोदर वे भवदेव सुत, दिय विडारि तब दोहु ॥२३॥  
 सब पुहवीके नृपन सन, करि करि कुक्कि पुकार ॥  
 भ्रमत थके कोउ न भयो, इन सहाय हुसियार ॥२४॥  
 उत्तरि तब सरिता अटक, पहुँचे दुवर प्रत्यंत ॥  
 जिन दिवसन ईरानपति, राजैं कटक अनंत ॥ २५ ॥  
 पेस भैरैं जिहिं रूम लग, नाम अबूफर जास ॥  
 तासौं किन्न पुकार तब, गोडन बंटन ग्रास ॥ २६ ॥  
 कहिय हमारे मुलकमैं, आवहु अमल जमाय ॥

बांट कर टुकड़े करलो. नाना के राज्य पर हमारा तुम्हारा बराबर अधिकार  
 हैं और गौड़वंश निर्बल भी नहीं है ॥ १९ ॥ २० ॥ गोग ने कहा कि अपना  
 गाना जीता था तब आते तो कुछ तुम को भी देते परन्तु उस (नाना) ने तु-  
 म को अपने मरते समय नहीं बुलाया इस में जानते हैं कि तुम को एक टु-  
 कड़ा भी नहीं देते ॥ २१ ॥ राजा देव सुभको भूमि दे गये हैं उस को आज  
 तुम बंधवाना चाहते हो सो बल करने से तो कार्य नहीं हो सकता और दा-  
 न लो तो सभी देदू ॥ २२ ॥ गौड़ वंश के क्षत्रियों ने युद्ध रचा जिन को रा-  
 जा गोग ने सहज में ही जीत कर भवदेव के पुत्र दोनों सगे भाइयों को ता-  
 ड दिया ॥ २३ ॥ सब भूमि के राजाओं से कूक कूक कर पुकार करके भ्रमण  
 कर थक गये परन्तु कोई इन का सहाई होने को तैयार नहीं हुआ ॥ २४ ॥  
 तब अटक नदी उतर कर सुर्जन और अर्जुन गौड़ दोनों म्लेच्छ देश में गये  
 उन दिनों में ईरान देश का पति अबूफर नामक शोभायमान था जिस के  
 पास अनन्त सेना और जिस को रूम देश तक खिराज देने थे उससे जाकर  
 जीविका बटाने के लिये गौड़ ने पुकार करी ॥ २५ ॥ २६ ॥



इसुर्जनाऽऽर्जुनप्रसन्नयवैर्भविभागमार्गणमैभिः ४ तदनुररीकरण-  
पराजितसर्वतिरस्कृतलांघितकरतोयसोदरगौडप्रत्यन्तेन्द्राऽबूफरप्रार्थ-  
नतत्सज्जीभवनं त्रयस्त्रिंशत्तमोऽयमयूखः ॥ ३३ ॥ आदितः पञ्चस-  
प्ततितमः ॥ ७५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

( महाचर्चरी ॥ महागीतिकेत्येके ॥ )

सज्ज साह इरानको दल लौ अबूफर उप्परचो इम ॥

संग सोदर गोड नक्क कटायक अपसौन दैजिम ॥

मत्त फीलन पिठिके बहरक मेचक रंग खुल्लिय ॥

खेह संकुलि अंधकार अपार चक्किय चक्क डुल्लिय ॥ १ ॥

निकखसे हय लौ तरारन अक्कके हिय लोभ आनत ॥

जे बिनीत तुखार १ ताजिक २ अर्बके ३ थकिवो न जानत ॥

वावरी घट मिच्छव्हे कमनैतके हुसियार हंकि य ॥

पंच ५ जोजन भुम्मि फोजन फेरके घन घेर ठंकि य ॥ २ ॥

महित देव का जाना, भवदेव गौड के पुत्र सुर्जन और अर्जुन का हठ पूर्वक  
वैदर्भ देश का बंट मांगना, भीम के पुत्र (गोग) का उसके अर्ध इतकार क  
रना, पराजित होकर सब से तिरस्कार पाकर अटक नदी को लांघ कर दो  
नों सगे भाई गोडों का ईरान के इन्द्र अचूफर से प्रार्थना करना और उस के  
सज्जीभूत होने का तृतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥३३॥ और आदि से  
पचहत्तर मयूख हुए ॥ ७५ ॥

दोनों सगे भाई गोड अपना नाक कटा कर दूसरों को  
अपशकुन देव इस माफिक साथ हुए, मस्त हाथियों की पीठ पर काले रंग  
की ध्वजायें खुली (ईरानवाले काले वस्त्र रखते हैं इसी कारण से उनका ना  
म कजलवास मशहूर है) खेह से अचकाश रहित होकर अपार अन्धकार  
हागया जिस से चकवी चकवा डुल गये (रात्रि में चकवी चकवे का वियोग  
होजाना प्रसिद्ध है) ॥ १ ॥ सूर्य के हृदय में लोभ उत्पन्न करते हुए (ऐसे घोड़े हम  
को भी मिलें तो अच्छे) घोड़े तरारें लेते निकले; जो शिक्षा पाये हुए, तुखार,  
ताजिक और अरब देशों के पैदा हुए, थकना जानते ही नहीं, कितने ही या  
त्र विद्या के जाननेवाले म्लेच्छ सावधान होकर वावली स्त्री के घड़े के समा  
न होकर चले अर्थात् वावली (पागल) स्त्री जहाँ चाहे वहाँ अपने घट को  
डाल कर नाश करदेती है ऐसे ही वे धीर भी अपने घट (शरीर) का नाश

चिल्ह गिद्ध सिचान संगहि जुगिनीन जमाति लग्गिय ॥  
 दीपमाल समान है खुरताल ग्रावन ज्वाल जग्गिय ॥  
 वहै धरातल धुंधि लोकन रुंधिकै चकचुंधि मंडिय ॥  
 चायसौं चहकाय चंडिय त्यों महानट आय तंडिय ॥ ३ ॥  
 लंधि सिंधु सनाम यों सरिता श्रवण साह आयउ ॥  
 और औरन लुट्टि तोर सजोर सोर मही मचायउ ॥  
 गोगपृष्ठ स्मित पुब्ब सो सुनि मिच्छको तन मानं मन्निय ॥  
 छोहि मुच्छन उबभरे कच रारि रीति रहैं न छन्निय ॥ ४ ॥  
 गोगको तव भागिनेय जु बालसो हरिसेनको सुत ॥  
 होय मातुल भीर देस विदर्भ गो दल लक्ष्म १००००० संजुत ॥  
 बंगराज तनूजहू पहुँच्यो प्रतर्दनगोग सालक ॥  
 भीर पाटलिपुत्रको हु नरेस सुव्रतगो उतालक ॥ ५ ॥  
 वंस राघव कोसलेस कुमार किन्नरगो सहायक ॥  
 वंस पाडव दीप त्यों पहुँच्यो नृपंजयसत्रुघायक ॥  
 सालिवाहन पारमार कुमार गो जयसेनदगजित ॥  
 प्रातिहार प्रदीप सल्ल महीपगो नृप भीर सजित ॥ ६ ॥

करते देरी नहीं करते. चार कोस का एक जोजन होता है ऐसे पांच जोजन (बीस कोस) के फेर की जमीन मेघ के घर के समान फौज से ढंक गई ॥२॥ पर्वत पर धौड़े की खुरताल की रगड़ लगने से दीपमाला के समान अग्नि उठने लगी और धरातल धुंधला होकर लोकों को रोक कर चकचुंध होने लगी, रक्त पीने की चाहना से प्रसन्नता का शब्द करके देवी और इसीप्रकार महादेव आकर नाचने लगे ॥ ३ ॥ सिंधु नामक नदी उल्लंघन कर श्रवण साह आया और चारों ओर लूट करके अपने प्रताप के जोर का शोर भूमि में मचा दिया. इसी पूर्वक उस म्लच्छ को तृण के माफिक माना. क्रोध से मूढ़ों के केश ऊँचे उठे जिनसे युद्ध रीति छिपी नहीं रहती ॥ ४ ॥ बाल नामक हरिसेन का पुत्र जो गोग का भाणज था वह विदर्भ देश से लाख से ना लेकर मामा की सहाय को आया. गोग का शाला चङ्गदेश के राजा का पुत्र प्रतर्दन नामक आया, पटना का राजा सुव्रत भी शीघ्रता से सहाय को गया ॥५॥ रघुवंशी, अयोध्या के राजा का कुमार किन्नर गया, शत्रुओं को

चोलराज विदूखनाभिधको हु विक्रमनाम नत्तिय ॥  
 सूर९अर्बुदराज गो ससिबांसी मुच्छन हाथ घत्तिय ॥  
 वीरराज १०कलिंगभूप कुबेर ११केरलको महीपति ॥  
 अङ्गको नृप चित्रसेन १२जयंत १३सारठको महामति ॥ १॥  
 साल्वको ससिविंदु १४डाहलको सुबाहु १५त्रिगर्तको जय १६  
 कुंतलेश्वर कर्मसेन १७प्रसेन १८मैथिल भूप निर्भय ॥  
 दुर्ग १९तर्जिकको प्रतान २०सुबीरको नृप भीम आयउ ॥  
 केसरी २१टकराज अर्जुन २२मच्छदेस पती चलायउ ॥  
 चालुकान्वय सूकरेश्वरको कुमार रणातिथी ३३जिम ॥  
 मदराज सुवर्म २४धन्वधरेस दुर्दम २५सज्जही तिम ॥  
 मिच्छा आवत जानिके इन्ह आदि भूप बिना निमंत्रन ॥  
 धर्मके अनुसार नीति सम्हारि सर्व जुरे महामन ॥ ९ ॥  
 मिच्छासों इक १को बनै सु बनै समस्तनको पराजय ॥  
 इक १ कारन एह आ भुव जाय दुष्टनकै सुपै भय ॥  
 यों विचारि महीप सज्जित व्है भये सब आनि इकत ॥  
 गोग अक्खिय क्यों लरो तुम मै घनों सबही गिनौ मत १० ॥  
 मोहि जो खल मारिकै इतकौ बढे तब सर्व जुझहु ॥  
 हाथ पिक्खहु गोगके जबलौ यहै रन टेक उज्झहु ॥  
 सौह दै सबकौ तहाँ इम रक्खि भो चहुवान सज्जित ॥  
 सूर नूर बढे भये मुख नीर उत्तरि भीरु लज्जित ॥ ११ ॥

मारनेवाला ॥ ६ ॥ १ विदूखन नामक चोलदेश के राजा का विक्रम नामक पा  
 ता सूछों पर हाथ घाल कर ॥ ७ ॥ ८ ॥ २ चालुक्य वंशी सूकरक्षेत्र के राजा  
 का कुमारमारवाड़ का ४ बिना बुलाये ॥ ६ ॥ इस म्लेच्छ से एक का पराजय  
 हुआ तो सभी का पराजय (हार) है एक तो यह कारण और यह भूमि दुष्टों  
 के हाथ में चली जावे यह भी भय है इन दोनों कारणों को विचारकर राजा  
 सज्जीभूत होकर इकट्ठे हुए ॥ १० ॥ १॥ ५ लड़ना, देजब तक गोग के हाथ देखो (यु  
 द्ध में कैसे चलते हैं) तब तक युद्ध करने की टेक को छोड़ दो इसप्रकार सब  
 को सोगन दिलाकर सब को वहीं पर रखकर चहुवाण तैयार हुआ उस स  
 भय सूरवीरों का रूप बढा और कायरों के मुख का पानी उतर कर लज्जित



यों अबूकर हू कियो दुवर्दोहको इकश्दीह मग्गहु ॥  
 धेनु घेरन मुक्कले असवार तीस हजार ३०००० अग्गहु ॥  
 जायकैं तिन घेरि गाय बिदर्भकी गन ग्वाल मारिय ॥  
 ब्राहि ब्राहि उचारि कोउक जाय भूपतिपै पुकारिय ॥ १२ ॥  
 गोगराज असोक आरुहि सेन सज्जि स्वकीय हंकिय ॥  
 ज्यों बितान बितान अंबर अच्छरीन बिमान ठंकिय ॥  
 कोस पंचक ५ जातही चहुवान मिच्छन पिठि दब्विय ॥  
 मित्र हूरनके मुरे तहँ सत्रु हूरनके मुरब्विय ॥ १३ ॥  
 भल्लरी भननंकि कोचनंकी करी रननंकि तुट्टिय ॥  
 निक्खसे सननंकि बान सिचान ज्यों भननंकि छुट्टिय ॥  
 वीरं हत्तनकों तजैं लागि वीर पत्तनकों बसावन ॥  
 वेधि गत्तनकों चलैं ति निषेधि छत्तनकों नसावन ॥ १४ ॥  
 गोगके हु कलंव मिच्छन भोगकेहु निदान फुट्टिय ॥  
 रोगकेहु निदान जे लागि छोगकेहु निदान छुट्टिय ॥  
 कोटिभाग कटट्टि चाप चटट्टि चंडं चलात वानन ॥

हुए ॥ ११ ॥ उधर अबूकर ने भी मार्ग में दो दिन का एक दिन ही किया, अर्थात् दो दिन के मार्ग को एक दिन में ही समाप्त (डबल कूँच) किया। गौबें घेरने को ॥ १२ ॥ अशोक नामक घोड़े पर चढ़कर अपनी सेना सभ्र कर चला। डेरों के समान अप्सराओं के विमान तण कर आकाश ढक गया। पांच कोश पर जाते ही जहां चहुवाण ने म्लेच्छों की पीठ दवाई तहां हूरों के मित्र (म्लेच्छ) पीछे मुड़े जो शत्रु थे, परन्तु युद्ध के मुरब्बी (चडे) थे ॥ १३ ॥ २ कवचां की कड़िय शशिकरा (वाज नामक पत्नी) वाण हैं सो ४ वीरों के हाथों को छोड़ कर वीरों के शहर बसाने लगे (अप्सराओं के साथ वीर लोग जुदे शहर बसाते हैं) ५ जो शरीरों को वेध कर निकलते हैं ६ वे मुहाल के छाते का तिरस्कार करते हैं अर्थात् मधुमत्तिका के छाते में छेद हैं उनसे भी अधिक छेद शरीर में करके नाश करते हैं ॥ १४ ॥ गोग चहुवाण के भी ७ तीर म्लेच्छों का भोजन करने के ८ कारण होकर फैले और वे ही वाण रोग (पीड़ा) का कारण हुए, जिनके लगने से म्लेच्छों के विजय के उत्साह का कारण होता है गया, धनुष के चट्टाट (धनुष को खींचने में जो शब्द होता है) त को जा करण है करते हुए कोखों [गोशों] को खींच कर भयंकर तलाप को छोड़ने

तत्वकों रू प्रधानकों लखि ज्यों अहम्माति देत आनन ॥ १५ ॥  
 अर्क अंड कटाहमें जिम रंगमें चहुवान राजत ॥  
 जंगमें बरजोर सत्रुन संगमें गति घोर साजत ॥  
 घाय अल्पहु पाय कातर हाय हकत माय हारद ॥  
 ठौरतैं न डिगाय काय सु जानि उंदुरु पीत पारद ॥ १६ ॥  
 दक्खि हत्थिन हेठके अकुलात घायल गात मानव ॥  
 जानि सिंधु मथान मंदर अदिके तल देव दानव ॥  
 भागिनेय नरेसको वह बाल नामहु संग आयउ ॥  
 मिच्छवीस हजार २०००० दोउ रन मारि गोधनकों छुरायउ ॥ १७ ॥  
 सेस भजत सेसको अनुजात उदत पिड्डि लगिय ॥  
 बाहिनी जवनेसकी इततैं मिली रन प्रीति पगिय ॥  
 किन्न मंदर गोगके हय मिच्छ सागरको विलोडन ॥  
 जानिकैं जमफेट सम्मुह व्है सके दुवर भ्रात गोड न ॥ १८ ॥  
 बालके करहु चले जिम बालके कर खान मांदक ॥  
 आजिमैं चहुवानकी विथरी दिसा विदिसान ओदक ॥

मानों परमेश्वर का और प्रकृति को देख कर अज्ञान नहीं आने देता अर्थात् पुरुष और प्रकृति की सांस्यावस्था होने से मोह होता है सो अज्ञान नहीं होने देता इसीप्रकार धनुष के दोनों कोणा को साभिल नहीं होने देकर धाण लूट जाता है ॥ १५ ॥ ब्रह्मांड में सूर्य है इसीप्रकार युद्ध में चहुवाण शोभायमान है और युद्ध में श्रेष्ठ बलवाला शत्रुओं के साथ संघर्ष कर कर्म को साधता है, छोट घाव लगने पर भी कायर लोग हाय-माय ऐसे शब्द करके हार (अजय) देनेवाला होकर निकलते हैं परन्तु भय के मारे उनके शरीर पारा पियेहुण चूहे के समान ठौर से नहीं डिगते ॥ १६ ॥ कितने ही हाथियों के नीचे घायल मनुष्यों के शरीर अकुलाते हैं सो मानों समुद्र के मथने के दंड रई रूपी मंदर नामक पर्वत के नीचे देवता और दानव अकुलाते हैं, गोग चहुवाण का भणज बाल भी साथ आया १ श्लेच्छों को ॥ १७ ॥ प्राची की सेना भगत ही शेष नाग का छोटा भाई [गोग] पीठ लगा २ सेना ३ गोग चहुवाण के घोड़े रूपी सुन्दराचल ने श्लेच्छों की सेना रूपी समुद्र को मथन किया सुर्जन और अर्जुन नामक दोनों भाई गोड सामने नहीं हो सक ॥ १८ ॥ बालक के हाथ लड्डू खाने पर चले जिस माफिक गोग के

भीर जे हुव भूप इकत ते यहै सुनि पिठितैं चढि ॥  
 जंगमैं पहुँचे सबै न रुके रजोगुन बेगमैं बढि ॥१९॥  
 भो बडो घमसान प्रानन खान ज्यों कुरुखेत भारत ॥  
 अष्टमी ८ सुचि स्यामसौं मचिगो प्रलै जनु ज्वाल जारत ॥  
 उच्छटैं काटि गाल भाल कपाल बुल्लत टूक टोपन ॥  
 विष्णु आरति काल बादन तालमैं हु इतीक ओपन ॥२०॥  
 फार धार प्रसार सोनित उब्बकै गज गात अंदर ॥  
 जंबुके रसकी नदी जनु मेरु मंदरकेर कंदर ॥  
 बात ज्यों खतमाल यों करवाल कोचनकों बिदारत ॥  
 राधमास पलास पुष्पित भास अंग तुरंग धारत ॥ २१ ॥  
 प्रासै १ कुंतै २ कटार ३ खग ४ चलै गंदा ५ बरछी ६ विपाट ७ ॥  
 तुंडमुंड कटैं नचैं उठि रुंड भुंड सु नव्य नाटक ॥  
 फुटि वीरनके सरीरन भुम्भि पैठत तीरकी तति ॥  
 कूट सक्खिहिं जो भैरै तस पूर्व पूरुख ज्यों अधोगति ॥२२॥  
 मित्र मस्तक १ कंधरा १ दुवर मेल छोरत पिक्ख संगर ॥  
 वाजि नालन कीलमैं उरभैं कहौ गज लंबलंवर ॥  
 अर्द्धचंद्र कलंबमैं चिपि अंत यों निकसंत अछिय ॥

भाणज बाल के हाथ म्लेच्छों पर चले (आजि) युद्धमें (आदक) भया १९ प्राणों का खःनेवाला बडा युद्ध हुआ १ शुक्ल पक्ष की अष्टमी की संध्या से २ विष्णु भगवान् की आरती के समय के वाजों में भी इतनी शोभा नहीं अथवा इ ननी उपमा नहीं ॥ २० ॥ धारों के समूह फैल कर हाथियों के शरीरों से र क्त उपकता है सो मानों सुमेरु पर्वत की कन्दरा से जांबू के रस की नदी बहती है, जैसे पवन मेघ को बिदारण करता है तैसे खड्ग कवचों को काटते हैं और वैशाख मास में ढाक का वृक्ष लाल रङ्ग का होजाता है उस क्रान्ति को गोग के घोड़े के अंग ने धारण की ॥ २१ ॥ ३ सांग (शस्त्र विशेष) ४ भाला ५ बाण ६ मुख और मस्तक कटते हैं और रुंडों के भुंड उठकर नवीन नाच नचते हैं और वीरों के शरीर फूटकर धाणों की पंक्ति भूमि में पैठती है सो मानों झूठी साक्षी भरनेवाले के पूर्व पुरुष (बडाउवे) अधोगति को जात हैं ॥ २२ ॥ मस्तक और कन्धा दोनों मित्र हैं वे भी मिलाप को छोड़ने

सर्प अंकुस संगकै बनसी प्रसी जनु वाम मच्छिय ॥ २३ ॥

कुंभ ज्यों गजकुंभ उत्तरि जात तेगनकी तराकन ॥

दंत कंडन कुट्ट से बिखरत अंवरमैं बराकन ॥

कालखंडन खंड होत अदोख ज्यों अहिफेन बहिय ॥

फटिजात किंवार छत्तियके मनौ पयलौन खटिय ॥ २४ ॥

सारथी १ रथ २ चक्र ३ केतन ४ पत्ति ५ बारन ६ बाजि ७ कटत ॥

जूह सादिन के निसादिन के ९ उडैं नटलौ उलटत ॥

खेत्रपाल खुसाल खेलत मोदसौं भरि गोद गल्लन ॥

आसनोट विहीन घोट लगैं परस्पर चोट घल्लन ॥ २५ ॥

जालकौं जिम कीर अंत्रन मालकौं खुरताल अँचत ॥

सुंडिकी मुरली बनाय बजात बावन ५ २ नैन मैंचत ॥

पत्तमैं भरि रक्त पीवन तत्त जुगिनि मत्त डोलत ॥

टोप खेटक छत्र लोहित नीर कच्छपलौं किलोलत ॥ २६ ॥

कंधरा हयकी कटी गहि प्रेत बल्लकिका बनावत ॥

कील जहाँ नलकीलके करि तंत अंत्रनके तनावत ॥

हैं अर्धचन्द्राकार बाण में चिप कर अंत इसप्रकार निकलती है जैसे अंकुश के संग में सर्प, अथवा वंसी (कांटा) में चिप कर वामजाति की मच्छी निकसे ॥ २३ तरवारों की तड़ाकों से धड़ों के समान हाथियों के कुंभ [कपोल] उतरते हैं और हाथियों के दांत ऊँखल में कूटे हुए से होकर आकाश और युद्ध में बिखरते हैं, बिना तूटी हुई अफीम की बटी के समान कलेजों के टुकड़े होते हैं और जैसे निमक के पड़ने से दूध फट जाता है तैसे छाती के किवाड़ फटते हैं ॥ २४ ॥ सारथी रथ पहिये ध्वजा पैदल हाथी घोड़े कटते हैं और उड़ते हुए नट के समान घोड़े के सवारों और हाथियों के सवारों के समूह उलटते हैं प्रसन्न होकर गालों में गोद भरकर बिना पलानों [जीणों] के घोड़े परस्पर चोटें मारते फिरते हैं ॥ २५ ॥ हाथी की सुंड की वंसी बना कर बावन और व नेत्र बंध करके बजाते हैं [पूर्ण आनन्द आने के समय नेत्र मिल जाते हैं] पत्र में ताता [गर्म] रक्त भरकर जोगनियां (देवी की दासियां) मस्त होकर फिरती हैं रक्त रूपी जल में टोप डाल और छत्र कच्छप के समान किलोल करते हैं ॥ २६ ॥ कटी हुई घोड़े की गर्दन को लेकर प्रेत चीणा बनाते हैं, उस चीणा के मनुष्यों की नली की हड्डी की खूंटियों बनाकर अंतों के तार

भद्रवारन मत्थ फट्टि गिरंत मुत्तिय ज्यौं पयोधन ॥

यौं गदा सिरपै बजै जिम लोहकारनके अयोधन ॥ २७ ॥

गोगको असि चक्खि मिच्छन किन्न गड्डनकी तयारिय ॥

लुत्थिपै लागि लुत्थि ज्यौं बैनिजार लोकन टंड डारिय ॥

भद्रके भरकी प्रभा चहुवानके सरकी भई जब ॥

चाह लै घरकी अबूफरकी अनी लरकी घनी तब ॥ २८ ॥

नर्मदा तट पारलौं अतिघोर मिच्छनहू कियो रन ॥

वार आवत निट्टि निट्टि लगे सबै मुख अग्ग भज्जन ॥

स्रोतके भ्रममै परे ति कितेक नाव समेत बुडिय ॥

वारहू लखि भूपकौं खल तंतितैं जनु तूल उडिय ॥ २९ ॥

चम्मली रु बनास आदिक आपगा सब यौंहि उत्तरि ॥

होय सखनके हमाल लजेहि मिच्छ भजे त्वरा करि ॥

निट्ट निट्ट गये ति वग्गड़ पिट्टि हिंदुन सख खावत ॥

घोर जंग बहोरि भो हरियान देस मभारि जावत ॥ ३० ॥

मिच्छ एडिनपै अंगठन देत उत्तर ओर चलिय ॥

आतही हरियानलौं सब मारि भूपन घेर घलिय ॥

तनते हैं। लुहारों के लोहे के घणार २७। खड्ग चक्कर ३०। जारों ने टांडा ढाला ही-  
 ये इस माफिक, चहुवाण के पाणों की क्रान्ति जब भादवा महीने के भद्र के समा-  
 न हुई तब अबूफर की सेना घर की चाहना करके बहुत नमी (पीछी हटी)। २८। न-  
 र्मदा नदी के बरे आने पर, कितने ही नदी के प्रवाह के अमर में पड़े वे ना-  
 व सहित ही डूब गये और नदी के बरले तरफ भी राजा गोग को देख कर  
 तांत के आगे रुई उडै इस माफिक दुष्ट उडै ॥ २९ ॥ चामल नदी और ब-  
 नास नदी सब इसी प्रकार उतरे और शस्त्रों के हमाल (बोझा उठानेवाले)  
 होकर लज्जा पाये हुए श्लेच्छ शीघ्रता करके भागे और पीठ पर हिन्दुओं के  
 शस्त्र खाते हुए नीठ नीठ (बड़ी कठिनाई से) बागड़ देश में गये, (मालवे के  
 एक प्रान्त का नाम बागड़ है जो इस समय डूंगरपुर और प्रतापगढ़ के अ-  
 धिकार में है इस प्रदेश को लांघे पीछे चामल और बनास नदी आती है  
 इस कारण से सुदाफर के भागने में भी बागड़ में होकर चामल और बनास  
 नदी उतरने का क्रम जानना चाहिये) हरियाणा में जाते फिर भयंकर युद्ध  
 हुआ ॥ ३० ॥ गोग ने घोड़े को भूषणकर अबूफर की छाती में भाला लगाया

गोग है ऋपटाय कुंत दयो अबूफर साह छत्तिय ॥  
 बग्गुली तरुकै जथा सु रकाब लंबत भूप पत्तिय ॥ ३१ ॥  
 गोड अर्जुन सीस कट्टिय कोसलेस कुमार किन्नर ॥  
 मारिकै जवनेस पुत्रहिं बाल जामिज हू परयो धर ॥  
 वीरराज कलिंग भूप वजीरकाँ हनि गो सुरालय ॥  
 फोजदारहिं मारि पांडव बंसदीप परयो नृपंजय ॥ ३२ ॥  
 गोगहू निज देह द्वै सत२००घाय पाय हन्यौ अबूफर ॥  
 गोड सुर्जन भजि गो जय हिंदु भूपनको बढ्यो वर ॥  
 मिच्छ यौ हरियानलौं भजि आत आत हनैगये सब ॥  
 बंब आनकै क्रोसताल चुहानके जयके बजे अब ॥ ३३ ॥

( दोहा )

उभय२मास आहव भयउ, परे खेत नव लक्ख९००००० ॥  
 लरत भजत नहिं निज निलय, पहुँचि सके परपक्ख ॥ ३४ ॥  
 प्रतिदिन खल पच्छे डिगत, आयुध अतुल प्रहारि ॥  
 पहुँचि देस हरियान लग, लयो अबूफर मारि ॥ ३५ ॥

॥ सोरठा ॥

तीन लक्ख३०००००खट लक्ख६०००००, इत उतके क्रमतैं परे ॥  
 नृपहु मरे नृप पक्ख, नृप तिनके नामहु सुनहु ॥ ३६ ॥  
 भागिनेय वह बाल१, सुत आनर्त नरेसको ॥  
 देस कलिंग नृपाल, वीरराज२रनमैं रहिय ॥ ३७ ॥

जिससे, वृत्त के षागल (चमगीदड़) लटके जिस माफिक घोड़े की रकाब से लटकने लगा. उस समय राजा गोग जापहुंचा ॥ ३१ ॥ अर्जुन गोड का मस्तक अयोध्या के राजा के पुत्र किन्नर ने काट लिया और अबूफर के पुत्र को मारकर बाल नामक गोग का भाणज भूमि पर गिरा, कलिंगदेश का राजा वीरराज अबूफर के वजीर को मारकर स्वर्ग गया ॥ ३२ ॥ १ नकारे २ नोयत ३ ढोल ॥ ३३ ॥ ४ युद्ध हुआ ५ अपने घर पर ६ शत्रु ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७ गोग चहुवाण के पक्ष के ८ हे राजा रामसिंह उनके नाम भी सुनो ॥ ३६ ॥ ९ भाणज,

कोसंबी नरनाथ, पांडव बंसि नृपंजय३हु ॥

सूर४पखो तिम साथ, सैसिकुल रवि अर्बुद अधिप ॥३८॥

षट्पात

केरलराज कुबेर५कर्मसेन६सु कुंतलपति ॥

सल्ल महीप७सनाम भूप प्रतिहार महामति ॥

मैथिलराज प्रसेन८दुर्ग९तर्जिक भुवनायक ॥

मगधराज सुव्रत१०सुवर्म११मदेस सुभायक ॥

अर्जुन१२विराट बंसिय परयो मरुमहीप दुर्दम१३सहित ॥

क्रमतै त्रिगर्त१४हाहल२नृपति जय१४सुबाहु१५संहारि अहित ॥३९॥

( दोहा )

हंयो अबूफर जवनपति, सुर्जन गोड भजाय ॥

अल्प जवन पहुँचे धरन, रन जितिय रनराय ॥४०॥

बचे नृपति एकत्त करि, गोग५४कहिय तब एह ॥

अब हमरी जानहु अवधि, न यँहँ रहन सन नेहँ ॥४१॥

सूरि भयो सुभकर्ण५५हू, वय दस१०हायन बीर ॥

पुनि पंद्रह१५मम काज पर, मेरे धरनि पैति धीर ॥४२॥

कोल समय आयउ निकट, रहो सेस कछु सेस ॥

भनि इम हंय जुत पैठि भुव, गो पाताल नरेस ॥४३॥

अतिजगती खट६१३मित बरस, कलिजुग जावन काल ॥

दिन जिहिँ जनम्यो ताहि दिन, पहुँच्यो नृप पाताल ॥४४॥

( अत्र शेषोपालंभः पुनः प्रेषणं वाच्यम् )

निलय गोग चहुवानके, रचि जनपद हरियान ॥

१ चन्द्रवंशी ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ २ शत्रुओं का ३ संहार करके ॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥ ४ यहाँ रहने से अब प्रीति नहीं ॥ ४१ ॥ मेरा पुत्र सुभकर्ण भी ५

पंडित होगया ६ दश वर्ष की उमर में वीर है ७ भूपति ॥ ४२ ॥ ८ हे शेष-

नाग मेरे यहाँ रहने के कोल का समय नजीक आगया कुछ ही ९ बाकी रह

है इसकारण से अब मैं यहाँ रहना नहीं चाहता यह कहकर राजा गोग घो-

ड़े सहित पाताल में पैठ गया ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ हे चहुवाण राजा रामसिंह

ताकों सब पूजत जगत, अब लग नृप चहुवान ॥४५॥

सुभकर्णहिं कर्णाटपति, करि अभिसेक विधाय ॥

बसुधापति रनतैं बचे, निज निज पत्तं निकाय ॥४६॥

सुनत प्रमा५५।१किय सहगमन, रक्खि पतिव्रत राह ॥

अनला५४।१हू याको अपर, नाम विदित नरनाह ॥४७॥

गोगहिं भूप प्रविष्ट गिनि, नतिजुत राम नरेस ॥

पूजित जाहिर पीर कहि, कतिपय जवन बिसेस ॥४८॥

ताहि सर्व भय होत नहि, बरनत जो यह बात ॥

सर्पहु गोग प्रभाव सुनि, जवीं निलय तजि जात ॥४९॥

रथन जुद्ध तिन दिननतैं, लगे मिटन नृप राम ॥

बडे अनृत१छल जुद्ध२बलि, क्रोध३लोभ४मद५काम६।५०।

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ वीति-  
होत्रचंगडासिवंशवर्णने प्रत्यन्तेन्दावृफराऽऽगमनज्ञातम्लेच्छाऽऽगम  
सर्वनृपगोगमहायकराणामहारणाऽनुष्ठाननिपातितयवनेन्द्रभैमिवि-  
जयनभागिनेयबालाऽऽदिपञ्चदश१५नृपशूरशय्याशयनसवाजिविग्र

हरियाणा देश में उस गोग चहुवाण का मकान बनाया जिस गोग को अ-  
ब तक सब जगत पूजता है ॥ ४५ ॥ १ राजा अपने अपने ३ घर २ पहुँचे । ४६ ।

गोग का जाना सुनकर राणी प्रमा ने भी पतिव्रत की राह रखकर सहग-  
मन किया जिसका दूसरा नाम है राजा रामसिंह अनला भी प्रसिद्ध है

॥ ४७ ॥ हे राजा रामसिंह गोग राजा को पाताल में घुसा जान कर कितने ही  
यवन भी नव्रता पूर्वक पीर कहकर उसको पूजते हैं ॥ ४८ ॥ ४ शीघ्रता से ५

घर छोड़जाता है ॥ ४९ ॥ हे राजा रामसिंह उन दिनों से ही रथों में बैठ कर  
युद्ध करना मिटने लगा और बड़े झूठ से पुनि क्रोध लोभ मद और काम से

छलयुद्ध होने लगे ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
वंशवर्णन में ईरान देश के इन्द्र अवृफर का आना जानकर उस म्लेच्छ के आने

पर सब राजाओं का गोग की सहायता करना, बड़े रण के अनुष्ठान में यव-  
नेद्र को मार कर भीम के पुत्र (गोग) का विजय होना, बाल नामक भाण्ड  
को अदि लेकर पन्द्रह राजाओं का शूरशय्या में सोना, अपने घोड़े और



हगोग५४ पृथ्वीप्रविशनप्रमा५४।१ सहगमनशुभकर्णा५५ वैदर्भ १ कर्णा  
ट२राज्यसमासादनं चतुस्त्रिंशत्तमो३४ मयूखः ॥ ३४ ॥ आदितः ष-  
ट्सप्ततितमः ॥ ७६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

गोग५४ नृपति पाताल गय, इम हनि दुष्ट असेस ॥  
भोजकट१रु मिहिकावतिय२, हुव सुभकर्णा५५ नरेस ॥ १ ॥  
मरु महीप दुर्दम सुता, कनकलता५५।१ अभिधान ॥  
सो व्याहिय सुभकर्णा५५ नृप, सुघर सुसील सुजान ॥ २ ॥  
सूनु भयो सुभकर्णाकै, उदयकर्णा५६ अति वीर ॥  
कोसलेस किन्नर सुता, धन्या५६।१ परन्यौ धीर ॥ ३ ॥  
उदयकर्णाकै हुव तनय, सो जसकर्णा५७ सनाम ॥  
चेदिराज लछमन सुता, व्याहो सुमना५७।१ बाम ॥ ४ ॥

( षट्पात् )

नृप जसकर्णा तनूज भयउ हरिकर्णा५८ नरेस्वर ॥  
मगधराज हठरसन सुता विसरा५८।१ परन्यौ वर ॥  
ताकै सुत कीर्तिस५९ समर सागर अवर्गाही ॥  
मागध सुमति सुता सती५९।१ सु जिहि वीर बिबाही ॥  
हुव बालकृष्ण६० ताकै तनय कोसलेस धर्मी सुता ॥  
रेनुका६० नाम परन्यौ यहहु सील रूप गुन संजुता ॥ ५ ॥  
बालकृष्णाकै तनय भयउ हरिकृष्ण६१ महीपति ॥

अपने शरीर के साथ गोग का भूमि में घुसना, प्रमा नामकराणी का सती हो-  
ना, शुभकर्ण को वैदर्भ और कर्णाट देश का राज्य प्राप्त होने का चौतीसवां  
मयूख समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से छहत्तर मयूख हुए ॥ ७६ ॥

१ सम्पूर्ण २ कनकलता नामक ॥ १ ॥ २ ॥ ३ पुत्र ॥ ३ ॥ ४ पुत्र ५ सुमना नामक  
स्त्री को ॥ ४ ॥ ६ पुत्र ७ युद्ध रूपी समुद्र का ८ याहू लेनेवाला ९ मगध देश के  
राजा सुमति की सती नामक पुत्री को ॥ ५ ॥

ससिकुल टकपतिसिंह सुता परन्यौ सुमनारति ६१ ॥

रामकृष्ण ६२ हुव तास धर्म नयदानधुरंधर ॥

मगधराज सत्यजित सुता स्यामा ६२ १ परन्यौ बर ॥

बलदेव ६३ भयो ताकै तनय सो रघुकुल कसमीरपति ॥

प्रद्योत सुता जमुना ६३ १ परनि भयो विदित भुव मंजुमति ॥

( पादाकुलकम् )

नृप बलदेव तनूज महामन, हुव हरदेव ६४ नाम धरनीधन ॥

मामधराज रिपुंजय दुहिता, ससिप्रभा ६४ १ परन्यौ यह सुहिता ॥ ७॥

लग्न समय ससधर कुल उत्तम, कहिय पुरोहित नाम जथाक्रम ।

( अथ चन्द्रवंशोद्देशनम् )

नारायणके नाभिकमलसन, निखिल जनक प्रकटिय चतुरानन ॥

ताकै अत्रि २ रु चंद्र ३ तास सुव, ताकै जीवबंधू बिच बुध ४ हुव ॥

लास इला बिच पुरुरवा ५ सुत, ताकै हुव खट ६ पुत्र धर्म जुत ॥ ९ ॥

आयु ६ १ तथा धर्मायु ६ २ अमावसु ६ ३,

विस्वावसु ६ ४ रु सतायु ६ ५ अनुज तसु ॥

पुनि श्रुतायु ६ ६ यँहँ जो तृतीय ३ सुत, ताकै भीम ७ तास कांचन ८ जुता

तास सहोत्र ९ जन्हु १० ताकै सुनि, गंगा सोसि सुता जिहिं किय पुनि

तास सुजंगु ११ अजक १२ तस जानहु,

तस बलाक १३ कुस १४ तास प्रमानहु ॥ ११ ॥

१ चन्द्रवंशी टकपतिसिंह की पुत्री सुमना को प्रीति सहित परना २ नीति धर्म और दान के धुर को धारण करनेवाला ३ अष्टबुद्धिवाला ॥ ११ राजा ॥ ७ लग्न के समय उत्तम चन्द्रवंश के नाम पुरोहित ने यथाक्रम से कहे. यहाँ चन्द्रवंश का कथन है कि नारायण के नाभिकमल से सव का पिता चार मुखवाला (ब्रह्मा प्रकट हुआ ॥ ८ ॥ ब्रह्मा के अत्रि, उसके चन्द्र, और चन्द्रमा के बृहस्पति की (बृहस्पति की तारा नामक स्त्री को चन्द्रमा ने घर में डाल ली थी जिस) स्त्री में बुध नामक पुत्र हुआ, उसके इला नामक स्त्री में पुरुरवा नामक पुत्र हुआ, उसके धर्मात्मा रुः पुत्र हुए ॥ ९ ॥ ५ स्तुति योग्य ॥ १० ॥ सहोत्र के जन्हु हुआ जिसने गंगा को शोषण करके फिर उसको पुत्री बनाई.

सुत कुसांब१५।१कुसनाभ१५।२मूर्तरय१५।३,

वसु१५।४सुत चउ४कुसकै हुव दुर्जय ॥

बडो कुसांब१५गाधि१६ताकै सुव, अतितप लखि इंद्राऽवतार हुव१२

ताकै विश्वामित्र१७महामुनि, सुनस्सेफ१८।१अंकस्थ तास पुनि ॥

मधुच्छंद१८।२आदिक औरैस सुत, बहु द्विज भयेगोत्र कौसिक जुत

पुरूरवा सुत ज्येष्ठ आयु६जो, परन्यौ सुता राहुकी नृप सो ॥

हुवसुतपंच५तासनहु७।१जथा, क्षत्रवृद्ध२अरुरंभ३रजि४तथा ॥१४॥

अनेनाहु७।५इनमैं पंचम५जिम, या पंचम५कै हुव सुहोत्र८तिम ॥

त्रय३तस कास्य५९।१आस६।२वृसेमद९।३,

सकुन१०तृतीय३ज वर्णा च्यारि४हृद ॥१५॥

कास्य५कै कौसेय१०विजित अरि, दीर्घतमा११तस तस धन्वंतरि१२

वैद्यराज जिहिं वर हरितैं लहि, आयुर्वेद अष्टधा८किय महि ॥१६॥

षट्पात

केतुमान१३हुव तास भीमरथ१४तास महामन ॥

दिवोदास१५हुव तास तास हुव तनय प्रतर्दन१६॥

सोहि सश्रुजित१६नाम बच्छ१७धर्मिष्ठ तास सुत ॥

सोहि क्रतुध्वज१७कुसलयाश्व१७अभिधान तीन३जुत ॥

ताकै मदालसा नारि बिच उपजे आत्मज च्यारि४जहैं ॥

चोथो४अलर्क१८ताकै भयो संतति१९तास सुनीथ२०तहैं ॥१७॥

दोहा

भयो सुकेतु१सुनीथकै, वैतहोत्र२२तस आस ॥

भार्ग२३नाम ताकै तनय, भार्गभूमि हुव तास ॥१८॥

षट्पात

क्षत्रवृद्ध७।१जो भयउ प्रतिक्षत्र८सु ताकै हुव ॥

१ इंद्र का अवतार १ गोद रक्खा हुआ ३ स्वर्णा विवाहिता स्त्री में पैदा हुए ५ का-  
श्यप चारों बरों की हृद (सीमा) हुआ ५ शश्रुओं को जीतनेवाला दधिष्णु से वर  
लेकर भूमि पर आयुर्वेद के आठ भाग किये ७ तीन नामों सहित ८ पुत्र हुआ

तस संजयतस जय१०रु तास विजय११रु तस कृत१२रु  
तास हर्षवर्द्धन१३रु तास सहदेव१४तास सुत ॥

जयसेन१५रु संकृति१६तदीयै तस खलवर्म१७नुत ॥

अरु रंभ७३सु हुव सु अप्रज मरिय सुर सहाय किय अनुज रजि७  
तस तनय स्वर्गपति व्है सकल मरे इंद्र सन पाप भजि ॥१६

पादाकुलकम्

बडो आयु सुत नहुप७१लोहु सुनि, सो व्है इंद्र भयो अजगर पुनि

याति८१याति८२संयाति८३ललामक,

आयाति८४वियाति८५तथाकृति८६नामक ॥ २० ॥

ए खट६पुत्र नहुपकै जानहु, तिनमैं जती८१जंती हुव मानहु ॥

नृपयाति८२भोतासपंच५सुव, यदु९११तुर्वसु२दुह्य३अनु४पुरु५

पहिले उभय२इंद्रसुतके जे, दंड दोहिती उर उपजे जे ॥

तीन३अपर जे विक्रम नयै जुत, सरमिष्टा दानवी जने सुत ॥२१॥

सचरणगद्यम्

यातिनैं सुक्रके सापसौं जरीं पाय बडे पुत्र जदुसौं कह्यो  
तेरे बँयतैं मैं कछु काल विषयानंद अनुभूतैं करौं यातैं सुपुत्र जुव्वन  
मोहि देकैं जरीं लेहु ॥

सो सुनतही वानैं अंगीकार न कीनो तब तेरे अन्ववाँय आ

धिर्पत्यके उचित कबहु मति होहु दयो सराप एहु ॥

अनंतरै तुर्वसु दुह्य अनु इनहूकौं नटे जानि साप देकैं छोटे

पुत्र पुरूसौं जुव्वन पाय भोग भोगत भयो ॥

अरु तृप्ति न जानौं तब हारिकैं पुरूकौं पँच्छो जुव्वन दे

१ पुत्र २ उसके ४ स्तुतियोग्य ५ बिना सन्तान मरा उसके राजि  
नामक छोटे भाई ने ६ देवताओं की सहाय की ७ सब पाप का भवन करके  
इंद्र ८ से मारे गये ९ सुन्दर १० इन्द्रियों को रोकनेवाला हुआ माना ११  
दुसरे १२ नीति सहित १३ बुझाया १४ तेरी युवा अवस्था से १५ परिचय (अनुभव)  
करके इसकारण से हे सुपुत्र तेरा जीवन सुके देकर मेरा १६ बुझाया तु ले १७ वंश  
१८ स्वामिपन के उचित १९ इस पीछे २० पीछा यौवन देकर ॥२३॥

समय पर स्वर्गको लाह लयो ॥ २३ ॥

जजातिके बड़े पुत्र जदुकै सहस्रजित १०११ क्रोष्टु १०१२ न-

ल १०१३ रघु १०१४ यह पुत्रनको चतुष्के ४ जान्यौं ॥

तिनमें बड़े पुत्र सहस्रजितके सतजित ११ ताकै हैहय १२१

महाहय १२१२ वेणुहय १२१३ यहै तनूजनको त्रितय ३ मान्यौं ॥

बड़े हैहयके धर्म १३ ताकै धर्मनेत्र १४ ताकै कुंति १५ ताकै सो  
हंजि १६ तासौं माहिष्मान १७ पराक्रमी जो माहिष्मती पुरी बसाय  
तत्थ रहयो ॥

ताकै भद्रश्रेण्य १८ ताकै दुर्दम १९ ताकै बनक २० तासौं कृ-  
तवीर्य २१ १ कृताग्नि २१२ कृतवर्मा २१३ कृतौजा २१४ यह पुत्रनको  
चतुष्टय ४ कह्यो ॥ २४ ॥

इनमें कृतवीर्यके सहस्रार्जुन २२ सप्तश्रीपवतीनरेस लंकेस्व  
र रावणको सरासैनकी सिंजनीमें बांधि लायो ॥

जानै दस हजार १०००० सत्र करि दत्तावतारके बरसौं बाहु  
सहस्र १ अधर्मरत विज्ञान २ धर्मसौं पृथ्वीजय ३ धर्मसौं पालन ४ सत्रुन-  
सौं विजय ५ परमेश्वरसौं मृत्युदपायो ॥

पच्छयासी हजार ८५००० हायन माहिष्मतीमें राज्य करि अधर्म  
के संकल्पहुको जरूर जानि जानि द्वीपनमें जाय जाय दंड देत भयो ॥  
अरु जाके चिंतनतैं नष्ट वस्तु की प्राप्ति होय असो प्रभाव लयो ॥ २५ ॥  
अर्जुनके सूरसेन २३११ मधु २३१२ जयध्वज २३१३ प्रमुखसंत १००

१ चारों का समुदाय २ तीनोंका समुदाय ३ चारों का समु-  
दाय ४ धनुष की ५ प्रत्यब्बा में ६ धज कर दत्तात्रेय के वरसे ७  
सहस्रार्जुन ने अधर्म में प्रीति करनेवाले मनुष्यों से तो ८ ज्ञान लि-  
या, धर्म से पृथ्वी का विजय किया, धर्म से ही पालन किया, शत्रुओं से  
विजय पाया और परमेश्वर से मृत्यु पाई ९ वर्ष माहिष्मती नगरी में राज्य  
करके अन्य द्वीपों में अधर्म में मनुष्यों के मन का व्यापार जान कर वहाँ  
जा जा कर उनको दंड दिया, जिस सहस्रबाहु को याद करने से नाश पाई  
हुई वस्तु की फिर प्राप्ति होजावे ऐसा प्रभाव उसने लिया ॥ २५ ॥ १० आदि

पुत्र भये ॥

तिनमें जयध्वजकै तालजंघ २४ तालजंघहूकै तालजंघ २५ नामक सत १०० पुत्र ठये ॥

तिनमें मुख्य तो बीतिहोत्र २५११ तासौं अर्जुनको वंस विसेसहू बीतिहोत्र कहिये ॥

अरु याको अनुज २५१२ ताकै वृष २६ ताकै मधु २७ ताकै हू वृष्णि २८ प्रमुख सत १०० पुत्र श्रवनपथमें गहिये ॥ २६ ॥

जटुके दूजे २ पुत्र क्रोष्टुकै वृजिनीवान् ११ ताकै स्वाहित १२ ताकै ऋष्यंगु १३ ताकै चित्ररथ १४ ताकै चतुर्दस १४ महारत्नपति चक्रवर्ती महाकुटुंब राजा सप्तविंदु १५ नैं जन्म लीनों ॥

जाकै लक्ष १००००० रानी दसलक्ष १००००००० तनय भये तिनमें बडे पृथुजसा १६१ पृथुकर्मा १६२ पृथुजय १६३ पृथुकीर्ति १६४ पृथुदांता १६५ पृथुश्रवा १६६ छ ६ पुत्र अपने जसको प्रसार कीनों ॥

इनमें छोटे पृथुश्रवाकै पुत्र तम १७ ताकै असना १८ जानैं एक सत १०० अश्वमेध करे ॥

अरु असनाकै सतेषु १९ ताकै रुक्मकवच २० ताकै परावृत २१ ताकै रुक्मेपु २२ १ पृथुरुक्म २२ २ ज्यामघ २२ ३ पलित २२ ४ हरि २२ ५ पंच ५ पुत्र भये धर्म भरे ॥ २७ ॥

तिनमें तीजो ३ ज्यामघ २२ ३ महास्त्रीजित कोऊ राजकन्याकाँ विवाहके अर्थ जीति लायो तथापि सैव्यारानीके भयतैं अपनौं सलप वृथा करि तेरे पुत्र होयगो ताकाँ विवाहिवेकाँ यह आनी सैं कहत भयो ॥

पीछैं ज्यामघसौं सैव्यामैं विदर्भदेशको प्रवर्तक पुत्र विदर्भ २३ प्रकटयो ताकाँ वह कन्या विवाही तामैं विदर्भसौं कथ २४ १ काँ कर २४ २ लोमपाद २४ ३ यह तनयको त्रिक ३ उद्गम लहत भयो ॥

२ कानों में ग्रहण करो [सुनो ३ पुत्र ४ स्त्री का जीताहुआ [स्त्री डरनेवाला] ५ विदर्भ देश, इस नाम की प्रवृत्ति करानेवाला ६ जन्म लिय

तिनमें कोसिक२४२कै वधुर२५ताकै धृति२६ताकै कौसिक२७ताकै पुत्र चेदि२८तासौं चेदिवंस विख्यात जान्यौं ॥

अरु विदर्भके बड़े पुत्र क्रयकै कुंति२५ताकै वृष्णि२६ताकै निरृति२७ताकै दासाई२८ताकै व्योम२९ताकै जीमूत३०ताकै विकृति३१ताकै भीमरथ३२ताकै नवरथ३३ताकै दसरथ३४ताकै सकुनि३५ताकै करंभि३६ताकै देवरात३७ताकै देवक्षत्र३८ताकै मधु३९ताकै तनय कुरुवंस४०ताकै अनुरथ४१ताकै पुरुहोत्र४२ताकै अंसु४३ताकै पुत्र सात्वत४४मान्यौं ॥ २८ ॥

सात्वतकै भजन४५। भजमान ४५।२ दिव्यांतक४५।३ देवावृध ४५।४ महाभोज४५।५ ग्रंधक४५।६ वृष्णि४५।७ सप्त७ पुत्र भये ॥

तिनमें वृजे२ भजमानकै निमि४६। कृकण४६।२ वृष्णि ४६।३ तथा इनहीके सापत्न भ्राता सतजित् ४६।४ सहस्रजित् ४६।५ अजिता यु४६।६ खटवतनुज ठये ॥

अरु चोथे४ देवावृधकै वधु४६ तथा सात्वतके पंचम५ पुत्र धर्मधुरीण महाभोजके कुलमें भोज१ मार्तिक२ अवदात३ प्रमुख महाविख्यात राजा जानिये ॥

अरु सात्वतकै पुत्र वृष्णिकै सुमित्रो नामक पुत्र युधाजित् ४६ताकै अनुमित्रसित७७ताकै अनुमित्रनिघ्न४८ताकै सत्राजित् ४९।१ प्रसेन४९।२ दोय२ पुत्र भये तिनमें सत्राजितहूको सूर्यके दये स्वमंतक मनिके प्रभावतैं महाश्रील मानिये ॥ २९ ॥

अरु वाही वृष्णिके पौत्र अनुमित्रसितकै सिनि४८ताकै सत्यक ४९ताकै जुजुधान५०ताकै असंगत५१ताकै कुणि५२ताकै युगंधर ५३यहै सेनेय वंस कह्यो ॥

अरु वाही अनुमित्रसितकै वृष्णि४८भयो ताकै स्वफलक ४९।१ चित्रक४९।२ यह तनूजनको युग्म लह्यो ॥

१माता की सौत [सोक] से पैदा हुए आईरुहएआदि४वृद्धा अनवान् जोड़ा

स्वफलककै अक्रूर५०१२उपसंग५०१२मृदुरवस ५०१३ अरिमेजय  
५०१४गिरि५०१५रत्न५०१६उपेक्ष५०१७सत्रुघ्न५०१८अरिमर्दन५०१९व  
र्मधृक५०११०वृषधर्म५०१११ गंध५०११२ मौजबाह ५०११३ प्रतिबाह  
५०११४प्रमुख पुत्र तथा सुतारा५०११कन्या भई ॥

अरु चित्रककै पृथु५०११विपृथु५०१२प्रमुख त्योंही अक्रूरकै देव-  
५११२अनुपदेव५११२यहै ही दायादेनकी द्वैर ॥ ३० ॥

अरु सात्वतके छठे पुत्र अंधककै कुकुर४६१२भजमान४६१२सु-  
चि४६१३कंबलवर्द्धिष४६१४ए च्यारि४पुत्र सुनैगये ॥

तिनमैं बडे कुकुरके वृष्णि४७ताकै कपोतरोमा४८ताकै विलोमा  
४९ताकै तुंबुरुसखा भवसंज्ञ चंदनोदक दुंदुभि५०ताकै अभिजि-  
त पुनर्वसु ५१ताकै पुत्र आहुक५२१२कन्या बाहुकी५२१२ए दोय  
२संतान भये ॥

आहुककै उग्रसेन५३१२देवक५३१२द्वैरही तनय तिनमैं बडे उ-  
ग्रसेनकै कंस५४१२न्यग्रोध५४१२सुनामा५४१३कंक५४१४संकु५४१५  
सभूमि५४१६राष्ट्रपाल५४१७युद्धसृष्टि५४१८तुष्टिमान५४१९ए नव१पु-  
त्र तथा कंसा५४१२कंसवती५४१२सुतनु५४१३राष्ट्रपालिका५४१४कं  
का५४१४ए पंच५पुत्री भई ॥

अरु देवककै देववान५४१२उपदेव५४१२वसुदेव ५४१३ देवरक्षित  
५४१४ए च्यारि४सूनु तैसैं ही वृषदेवा५४१२उपदेवा५४१२देवरक्षिता  
५४१३श्रीदेवा५४१४सांतिदेवा५४१५सहदेवा५४१६देवकी५४१७सप्त ७  
कन्या भई ॥ ३१ ॥

पहिलैं सात्वतको दूजो२पुत्र भजमानक कह्यो ताहीकै एक  
पुत्र विदूरथ भयो४६ताकै सूर४७नाकै सनि ४८ सनिकै प्रतिलत्र  
४९ताकै स्वयंभोज५०ताकै हृदीक५१ताकै कृतवर्मा५२१२सतधन्वा  
५२१२देवामीढ५२१३ताहीकों सूर५२१३हू कहै असैं यह तनूजनकी

१ आदि २ भाइयों का ३ जोड़ा ४ तुंबुरु [द्विगोत्रि विशेष] का मित्र ५ पुत्र



त्रैर्दशमानौ ॥

तिनमें देवामीहसौं मागिषा पत्नीमें वसुदेव ५३१ देवभाग ५३२ देवश्रिय ५३३ अनावृष्टि ५३४ कथक ५३५ वत्स ५३६ आनंद ५३७ सृजय ५३८ समीक ५३९ गंडूष ५४० ए दस १० पुत्र अरु पृथा ५३१ श्रुतदेवा ५३२ श्रुतकीर्ति ५३३ श्रुतश्रवा ५३४ राजाधिदेवी ५३५ पंच पुत्रिका भई जानी ॥

इनमें बड़ी पुत्री पृथा ५३१ तो पितानें असंतति अपनैं मित्र राजा कुंतिकों संतानभूत दई ॥

जाकै कन्याभावमें दिवांकरसों कर्ण १ भयै पीछैं यह कुरुराज पांडुनैं बिबाहि लई ॥३२॥

अरु श्रुतदेवा ५३१ कारूपराज वृद्धशर्माकों बिबाही जामैं दामोदरको द्रोही दंतवक्र भयो ॥

अरु श्रुतकीर्ति ५३१ कैकेयराजकों दई तामैं संतर्दनादिक पुत्र नके पंचक ५ नैं जन्म लयो ॥

श्रुतश्रवा ५३४ चेदिराज दमघोषकों बिबाही तामैं सिसुपालनैं उद्गम पायो ॥

अरु राजाधिदेवी ५३५ अवन्तिराज जयसेनकों परिनाई तामैं बिंद १ अनुबिंद २ पुत्र मितबिंदा पुत्रिका यह संतति त्रिक ३ उद्भव लहि भयो ठायो ॥३३॥

वसुदेवसों रोहिणीमें बलभद्र ५४१ सारणा ५४२ सठ ५४३ दुर्मद ५४४ प्रमुख मदिरामैं नंद ५४१ उपनंद ५४२ कृतक ५४३ प्रमुख भद्रामैं उपनिधि ५४१ गय ५४२ प्रमुख ॥

१ तीनों का समूह २ सन्तान रहित अपने मित्र कुन्ति नाम के राजा ३ सन्तान के उचित समझ कर [इसीको अपना सन्तान मानो] देदी उसके कुमारपन में ४ सूर्य से ५ कृष्ण से द्रोह करनेवाला ६ पांचों के समुदाय ने जन्म लिया यहां यह नहीं जानना चाहिये कि पांचों ने एक साथ जन्म लिया था किन्तु कैकेय राजा के पांच पुत्र हुए इसकारण पांचों का समूह कहा गया है ७ जन्म लिया जन्म लेकर प्रसिद्ध हुआ ९ आदि

वैशालीमें कौशिक ५४१ देवकीमें कीर्तिमान ५४१ सुसेन ५४२  
भद्रसेन ५४३ इंगुद ५४४ सुभद्र ५४५ विदेव ५४६ बसुदेव ५४७  
गद ५४८ प्रमुख पुत्र सुभद्रा ५४१ पुत्रिका इत्यादिक अनेकनमें  
अनेक संतान भये ॥

अरु बलभद्रकै निषठ ५५१ उल्मुक ५५२ सारणाकै नार्षिमान  
५५३ इसच्छिसु ५५२ सत्यधृति ५५३ प्रमुख श्रीवासुदेवकै रुक्मि-  
णीमें प्रद्युम्न ५५१ चारुदेव ५५२ प्रमुख प्रद्युम्नकै ककुद्भर्तृमें अ-  
निरुद्ध ५६ तासाँ भद्रामें बज्र ५७ ताकै प्रतिबाहु ५८ ताकै सुचारु ५९  
असैं अनेक संततिके प्रयुतन प्रस्तार गये ॥

या जदुकुलके कुलनकी हू संख्याको गनिबो गणाकराजनकै  
सिंहके बृहस्पतिको विवाह भयो जात ॥

अरु तीन खर्व अष्ट सहस्र अष्ट सत ३०००००००८८०० प्रमित  
जिनके अध्यापक भये रूपात ॥ ३४ ॥

असैं मगधराजके पुरोहितनै चंद्रवंसमें जदुवंस कहि जजातिके  
दूजे पुत्र तुर्वसुको बंस कह्यो ॥

तुर्वसुकै पुत्र बन्धि १० ताकै भग ११ ताकै भानु १२ तासाँ चित्रभा-  
नु १३ ताकै करंधम १४ ताकै मरुत १५ भयो जानै संततिकै अभाव  
करि पुरुके ही कुलमें अंतर्भाव लहयो ॥

तो जे ३ पुत्र दुत्युकै दधु १० ताकै सेतु ११ तासाँ आरब्ध १२ ताकै गा  
धार १३ तासाँ धर्म १४ ताकै घृत १५ तासाँ दुर्मद १६ ताकै प्रचेता १७ जा  
की संततिनै अधर्मकै आचरनतैं उदीचीको आधिपत्य लहि म्ले-  
च्छभाव पायो ॥

१ श्रीकृष्ण के २ दश लाख को प्रयुत कहते हैं ऐसे अनेक प्रयुत ३ फैल गये  
४ ज्योतिषियों के सिंह राशि पर स्थित बृहस्पति के विवाह के समान हो  
गया अर्थात् सिंहस्थ में विवाह होते ही नहीं इसीमाफिक यदुवंश की गण-  
ना भी नहीं हो सकी ५ प्रमाण से ६ पढ़ानेवाले ७ प्रसिद्ध हुए ८ सन्तान न  
हीं होने के कारण पुरु के कुल में ही ९ मिल गया १० उत्तर दिशा का ११  
स्वामी होकर म्लेच्छ (नीच जाति) होगया

अरु चोथे ४ पुत्र अनुकै सभानर १०।१ चक्षु १०।२ परमेक्षु १०।३  
तीन ३ तनय तिनमैं बडे सभानरकै कालनर ११ तासौं सृजय १२  
ताकै पुरंजय १३ ताकै जनमेजय १४ तासौं महासाल १५ ताकै म-  
हामना १६ तासौं उसीनर १७।१ तितिक्षु १७।२ यह अंगजनको उ-  
भय २ मांगधननैं गायो ॥ ३५ ॥

उसीनरकै सिवि १८।१ नृग १८।२ नष्ट १८।३ कृमि १८।४ बर्च-  
स्वी १८।५ पंच ५ पुत्र भये ॥

तिनमैं बडे महाउदार सिविकै वृषदर्भ १९।१ सुवीर १९।२ कैके-  
य १९।३ मदज १९।४ च्यारि ४ ही आत्मज ठये ॥

उसीनरके अनुज तितिक्षुकै उपद्रव्य २० ताकै हेम २१ तासौं  
सुतपा २० ताकै बलि २१ जाके क्षेत्रमें दीर्घतमासौं अंग २२।१  
वंग २२।२ कलिंग २२।३ पुंड्र २२।४ सुम्भह २२।५ यह पुत्रनको पं-  
चक ५ जानिये ॥

तिनमैं अंगके अयोन्य २३ ताकै दिविरथ २४ तासौं धर्मरथ २५  
ताकै चित्ररथ रोमपाद २६ ताकै चतुरंग २७ तासौं पृथुलक्ष २८ ता-  
कै चंपापुरीको निर्माता चंप २९ मानिये ॥ ३६ ॥

चंपकै उर्यंग ३० ताकै भद्ररथ ३१ ताकै वृहद्रथ ३२।१ वृहत्कर्मा ३२।२  
दोय २ पुत्र जन्म लह्यो ॥

वृहत्कर्माकै वृहद्भानु ३३ ताकै वृहन्मना ३४ तासौं जयद्रथ ३५ ता-  
कै द्विज ३६ राजन्य ३७ ताकै अंतराल सूतोपनामक विजय ३६ ताकै धृ-  
ति ३७ तासौं धृतव्रत ३८ ताकै सत्यकर्मा ३९ तासौं अधिरथ ४० जानैं  
देवनदीतैं मंजुपानिकारिकर्ण ४१ सो पुत्र पायो कर्णकै वृखसेन ४२

१ पुत्रों के इस जोड़े का होना २ आठ लोगों ने कहा है ३  
पुत्र हुए, बलि नामक राजा की ४ राणी में दीर्घतमा नामक सुनि से ५ रच-  
जावाला ६ ब्राह्मण और क्षत्रिय ७ वर्ण के ८ बीच में ९ स्मृत (ब्राह्मणी स्त्री  
में क्षत्रिय के वीर्य से पैदा होवे उसको स्मृत कहते हैं) उपनामक १० गंगानदी  
ने ११ मंजुल [सन्तुल] निकाल कर

प्रमुख पुत्र जैसे अनुकोहु अन्ववाय कह्यो ॥

जजातिके पंचमपुत्र पुरूकै जनमेजय १० ताकै प्रचिन्वान ११ तासौ प्रवीर १२ ताकै मनस्यु १३ तासौ अभयद १४ ताक सुयुम्न १५ तासौ बहुगव १६ ताकै संयाति १७ तासौ अहंयाति १८ ताकै रौद्राश्व १९ तासौ ऋतेयु २० १ अनिलेयु २० २ कृतेयु २० ३ कक्षेयु २० ४ स्थंडिलेयु २० ५ धृतेयु २० ६ स्थलेयु २० ७ धर्मेयु २० ८ संप्रतेयु २० ९ वनेयु २० १० इन दस १० राजकुमारन माताको सपुत्रा कीनी ॥

तिनमैं बडे ऋतेयु कै रंतिनार २१ ताकै पुत्र अप्रतिरथ २२ १ ध्रुव २२ २ या अंगैज उभय २ मैं अप्रतिरथ कै कण्व २३ तासौ विधातिथि २४ जहाँसौ काण्वायन विप्रहोय प्रतिग्रह १ जाजन २ अध्यापन ३ सहित छ ६ कर्म वृत्ति लीनी ॥ ३७ ॥

अरु अनिलेयु आकर्षसौ दुर्खंत २१ आदि च्यारि ४ रत्न प्रकट तिनमैं दुर्खंतसौ सकुंतला अधरं अरणीमें अहित हव्यंको आहो रक चक्रवर्ती नरेस भरत २२ दीप्यमान भयो ॥

ताकै नव ९ पुत्र भये तिनको अपनै अनुरूप न देखि जनकनै कुपुत्र कहे तब उनकी जननिनै सबनहीको मारि पोतनको पाप लयो ॥

तदनंतर भरतनै पुत्रकामना करि मरुसोमसंत्र कीनौ तहाँ पहिलैं वृहस्पतिसौ अग्रज उतत्थकी अंगना ममतामैं आग्रह करि उपज्यो ज्यो भारद्वाज ताको मरुदेवनै भरतको संतानभूत करि

१ आदि २ वंश ३ इन दोनों पुत्रोंमें १ दान लेना ५ यज्ञ कराना ६ वेद पढ़ाना ७ छः कर्म [ यज्ञ करना, यज्ञ कराना, वेद पढ़ाना, दान देना और दान लेना ] अनिलेयु रूपी ८ खान से ९ दुष्यन्त आदि चार रत्न प्रकट तिनमें दुष्यन्त से शकुन्तला की १० योनि रूपी अरणी में ११ होम के पदार्थ रूपी १२ शत्रुओं को १३ खानेवाला (अग्नि) चक्रवर्ती राजा भरत प्रकाशित हुआ १४ अपने सदृश नहीं देख कर १५ पिता ने १६ बालकों का पाप लिया १७ जिस पीछे भरत ने पुत्र होने की कामना से १८ मरुदेवों के अर्थ १९ सोमयज्ञ किया तब वृहस्पति के बड़े भाई उतत्थ की ममता नाजक २० स्त्री से पैदा हुए भरद्वाज को मरुदेवों ने २१ संतान

अप्यो तानै वितथश्शनाम पायो॥

वितथकै भवमन्यु२४ताकै वृहत्क्षेत्र२५१ महावीर्य२५२ आन-  
र२५३ गर्ग२५४ यह पुत्र चतुष्क४प्रादुर्भाव लायो ॥ ३८ ॥

इन चारि४नमें आनरकै तो स्वयंगुरुधी २६१ रंतिदेव२६२ द्वै२  
ही सुनै रु छोटे गर्गकै सिनि२६ पुत्र भयो जहाँ तै गर्गकेहू कुलके  
सबननै बिप्र हांय गार्ग्यसैन्य असो उपटंकै धास्यो ॥

अरु वितथकै दूजै२पुत्र महावीर्यकै उरुक्षय२५ताकै लष्कार-  
ण२६१ पुष्करिण२६२ कपि२६३ ए तीन३तनय भये तिनहू बिप्र  
होय राजन्यधर्म बिसास्यो ॥

बड़े वृहत्क्षेत्रकै सहोत्र२६ताकै हस्तिनामपुरको निर्माता हस्ती२७  
नाम पुत्र जान्यो ॥

अरु ताकै अजमीढ २८१ द्वयमीढ २८२ उरमीढ२८३ यह तन-  
यनको त्रितय ३बखान्यो ॥ ३९ ॥

इनमें बड़े अजमीढके कंठ २९१ बृहदिषु २९२ नील २९३  
ऋक्ष २९४ प्रमुख पुत्रनमें जैठे कंठके तो कांठायन द्विज भये रु  
बृहदिषुकै बृहद्वनु ३० तासों वृहत्कर्मा ३१ ताकै जयदथ ३२ ता-  
सों विश्वजित ३३ ताकै श्वेतजिह्व ३४ तासों श्येनजित३५१ चि-  
रांसुक ३५२ अंकस्पद ३५३ दृढधनु ३५४ वत्स ३५५ तिनमें श्ये-  
नजितके रुचिरांचक ३६१ पृथुसेन ३६२ इनमें अनुजनकै पार  
३७ तासों नीर ३८ ताकै सत १०० पुत्र तिनमें कांपिल्यराज ३९  
समरप्रधान ॥

अरु समरकै पार ४०१ सुपार ४०२ सद्भव४०३ तीन ही त-  
नय नयनिधानै ॥

इनमें पारसों पृथु ४१ ताकै सुकृति४२ तासों बिभ्राज४३ताकै  
अणुह ४४ तासों व्यासावतारके तनय शुक मुनिकी तनया की

रूप दिया १ जन्म लिया २ पदवी (खिताब) ३ चत्रियों के धर्म को छोड़  
दिया ४ रचनेवाला ५ आदिबड़े७नीति ही है धन जिनके देवेदव्यास के पुत्र

जो रानी तामैं तनूज ब्रह्मदत्त ४५ भयो ॥

तासों भलवाट ४६ ताकै द्विद्व ४७ तासों यवीनर ४८ ताकै धृतिमान  
४९ तासों सत्यधृति ५० ताकै दृढनेमि ५१ तासों सुपार्श्व ५२ तासों सुमति  
५३ तासों सन्नतिमान ५४ ताकै पुत्र कृत ५५ जानैं हिरण्यगर्भसों जोगलयो

या कृतकै उग्रायुध ५६ ताकै क्षेम ५७ तासों सुवीर ५८ ताकै रिपुंज  
य ५९ तासों बहुरथ ६० नाम तनय जातै ॥

अरु हस्तीके पुत्र अजमीढकै नीलिनी नाम रानीमैं भयो जो नी  
ल २९।३ ताकै पुत्र सुसांति ३० तासों पुरुजानु ३१ ताकै चक्षणा ३२ तासों  
हर्यश्व ३३ ताकै मुद्गल ३४।१ शृंजय ३४।२ वृहदिषु ३४।३ यवीनर ३४।४ कं  
पिल्य ३४।५ पंचपुत्र भये तिनहीं पांचालदेस जानों ख्यात ॥

इनमें मुद्गलकै कोउक संतानके तो पांचाल मौद्गल्य उपनामक  
विप्र भये ॥

त्यौंही मुद्गलकै अपरं पुत्र दृढाश्व ३५ ताकै पुत्र दिवोदास ३६ क  
न्या अहल्या ३६ ए दोयशठये ॥ ४१ ॥

या अहल्यामैं तो सुरथसों सूनू सतानंद ३७ तासों धनुर्वेदको पारं  
गत सतधृति ३८ भयो जाको सुकं उर्वसीको देखतही स्कन्न होय  
तेजनके तंबनमें द्विधाभूत पखो ॥

तासों कृपाचार्य ३९ तथा कृपी ३९ यह युग्म ३९ भयो जाकों सिकार  
के समय राजा संतनु देखि अपनैं पुर लाय पोखित करयो ॥

अरु दृढाश्वको पुत्र जो दिवोदास ३६ ताकै मित्रायु तासों च्यव  
न ३७ ताकै सुदास ३८ तासों सहदेव ३९ ताकै सोमक ४० तासों जंतु ४१  
प्रमुखें सत १०० पुत्र भये तिनमें छोटी वृषभ ४१ ताकै द्रुपद ४२ ताकै  
धृष्टद्युम्न ४३ तासों धृतकेतु ४४ असैं नीलको वंस कहयो ॥

शुकदेव की पत्नी १ ब्रह्मा से २ जन्मे ३ पञ्जाब देश प्रसिद्ध  
हुआ ४ दूसरा पुत्र ५ पुत्र ६ धनुर्वेद के पार जानेवाला अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान-  
नेवाला ७ वीर्य में गलित (भर कर) होकर ८ बांस के १० वृक्षा (बड़े) में ११  
दो हुकड़े होकर गिरा १२ आदि

अरु अजमीढको चौथो ४ पुत्र जो ऋक्ष ताकै संबरणा ३० ताकै रा  
नी तपनकी तनया जो तपती तामैं कुरुक्षेत्रके प्रवर्तक कुरु ३१ नाम  
पुत्रनैं जन्म लहयो ॥ ४२ ॥

राजा कुरुकै सुधनु ३२ १ जन्हु ३२ २ परीक्षित ३२ ३ प्रमुख पुत्रनमें  
सुधनुकै सुहोत्र ३३ ताकै च्यवन ३४ तासों कृत ३५ ताकै परिवसु ३६ ता  
सों वृहदथ ३७ १ प्रत्यग्र ३७ २ संचल ३७ ३ कुस ३७ ४ ऋषभ ३७ ५ बेल्य-  
३७ ६ मत्स्य ३७ ७ प्रमुख पुत्र जानिये ॥

तिनमें बडे वृहदथकै कुसाग्र ३८ १ जरासंध ३८ २ उभय २ अंगंजन  
में कुसाग्रकै वृषभ ३९ ताकै पुष्पवान ४० तासों सत्यहित ४१ ताकै सु-  
धन्वा ४२ तासों जतु ४३ असैंही जरासंधकै सहदेव ३९ ताकै सोमावि ४०  
तासों श्रुतश्रवा ४१ सोही सुभवान ४१ ताकै अयुतायु ४२ तासों निरमि-  
त्र ४३ ताकै स्वक्ष ४४ तासों वृहत्कर्मा ४५ तासों सेनाजित् ४६ तासों शु-  
तंजय ४७ ताकै बिप्र ४८ ताकै सुचि ४९ ताकै क्षैम्य ५० ता-  
कै मनौ आपहीकों भावी जामांता जानि प्रीतिपरायन चातुर्भुज  
गोगंके सहाय समर्थ सुव्रत ५१ तासों धर्म ५२ ताकै सुश्रम ५३  
तासों वृढासन ५४ ताकै सुमति ५५ तासों सबल ५६ तासों सुनीत  
५७ ताकै सत्यजित् ५८ तासों विश्वजित् ५९ ताकै रावरो स्वसुर  
यह राजा रिपुंजय ६० मानिये ॥

अरु कुरुके तीजे ३ पुत्र परीक्षितके जनमेजय ३३ १ श्रुतसेन ३३ २  
भीमसेन ३३ ३ उग्रसेन ३३ ४ च्यारही पुत्रनके जुदे बंस भये ॥

अरु कुरु सुत जन्हुकै सुरथ ३३ ताकै विदूरथ ३४ तासों सार्वभौम  
३५ ताकै जयसेन ३६ तासों अर्वाचीन ३७ ताकै आयु ३८ आयुसों अ-  
क्रोधन ३९ तासों देवातिथि ४० ताकै ऋक्ष ४१ तासों भीमसेन ४२ ताकै  
दिलीप ४३ तासों प्रतीप ४४ ताकै देवापि ४५ १ संतनु ४५ २ बाल्हीक

१ सूर्य की २ पुत्री ३ आदि पुत्रों में ४ होनेवाला ५ जमाई ६ चहुबाण ७  
दहरदेव नामक चहुबाण से विश्वजित् का पुरोहित कहता है कि सत्यजित्  
के यह आपका सुसर विश्वजित् है.

४५।३ नामक तीन३ही तनुज ठये ॥ ४३ ॥

इनमें बड़े देवापिनैं तो अल्पही अवस्थामैं जोगको अभ्यास धारि कलाप ग्राममें जाय निवास कीनों

अरु जा जा वृद्धकों स्पर्श करै सौ सौ ही जुब्बन लहै असौ जो मध्यम पुत्र संतनुनैं हस्तिनापुरको राज्य लीनों ॥

छोटे बाल्हीकके सूनु सोमदत्त४६ताकै भूरिश्रवा ४७।१ भूरिश्रव ४७।२सल ४७।३तो न३हा तनुजन ख्याति पाई ॥

अरु संतनुकै गंगामैं बसुदेवनके अवतार अष्ट८पुत्र भये तिनमें बड़ेसात७ सोदरन बालही अवस्थामैं तनू बिहाई ॥ ४४ ॥

अरु अष्टम८पुत्र महापराक्रमी देवव्रत४६रह्यो जानैं गंगाके प्रस्थानके अनंतर पिताके अर्थ राज्यकों बिहाय ब्रह्मचर्य लैकै भीष्म नाम कहाय धीवरनैं पोखी असी उपरिचरकी कन्या व्यासकी माता सत्यवती आनी ॥

तामैं संतनुसौ चित्रांगद४६।१विचित्रवीर्य४६।२दोहू२पुत्र भये समर मानी ॥

बड़ा चित्रांगद तो निज नाम गंधर्वसौ मर्यो तब अर्जुन अवनीस भयो ताकों देवव्रतनैं कासिराजकी कन्या अंबिका१अंबालिका२आनि विबाही ॥

तिनमें अति आसक्त होय यानैं अंग तज्यो तब सत्यवतीके

१ पुत्र हुए २ छांदी अवस्थामें ३ जिस जिस वृद्ध को स्पर्श करै वह वह ४ जोयन लेवै (युवा) होजावै ऐसा जो शन्तनु उसने हस्तिनापुर का राज्य लिया ५ प्रतिष्ठ हुए ६ एक उदर से पैदा होनेवाले भाइयों ने बालक अवस्था में ही ७ शरीर छोड़े और आठवां बड़ा पराक्रमी पुत्र देवव्रत रहा जिसने शन्तनु के घर से गंगा के ८ चले गये ९ पीछे पिता के लिये राज्य को १० छोड़ कर ब्रह्मचर्य लेकर भीष्म नाम कहला कर ११ बसु (देवयोनि विशेष) जो विमानों में बैठ कर ऊपर ही ऊपर अमण किया करते हैं उसकी कन्या जिस को १२ धीवर (नाय चलानेवाले) ने पाली जिसके कन्यापन में वेदव्यास पैदा हुए थे उसकन्या को शन्तनु के लिये आनी १३ अपने नाम (चित्रांगद) नाम वाले गन्धर्व से मारा गया और १४ छोटा भाई राजा हुआ जिसको १५ भीष्म,



निदेससों द्वैपायननै विचित्रवीर्यके छेत्रनमैं धृतराष्ट्र ४७।१ पांडु ४७।२  
जुग२पुत्र जनै तिनकी संतति सुनिये जो सूरिनन सिराही ॥ ४५ ॥

धृतराष्ट्रसों सुबलसुतामैं दुर्योधन ४८ प्रमुख सत १०० पुत्र तथा दु-  
स्सला १ कन्या भई ॥

दुर्योधनसों भानुमतीमैं लक्ष्मण ४९ प्रमुख पुत्र लक्ष्मणा १ कन्या  
इते भये तिनमैं भगिनी जो दुस्सला ताकाँ सिंधुराज वृहदथ कुमा-  
र जयदथकाँ विवाहि पुत्री लक्ष्मणाकाँ गदाधरके पुत्र सांबकाँ वि-  
वाहि दई ॥

पांडुके छेत्रनमैं धर्मशर्वांत २ बासव ३ द्रुपद २।५ नतैं जुधिष्ठिर ४८।१  
भीम ४८।२ अर्जुन ४८।३ नकुल ४८।४ सहदेव ४८।५ पंच ५ पुत्र भये ॥

तिनमैं जुधिष्ठिरसों द्रौपदीमैं प्रतिविंध्य ४९।१ यौधेयामैं देवक ४९।  
२ इत्यादि पुत्र ठये ॥ ४६ ॥

भीमसों द्रौपदीमैं श्रुतसोम ४९।१ हिडंबामैं घटोत्कच ४९।२  
किरीटीसों कृष्णामैं श्रुतकीर्ति ४९।१ उलूपीमैं इरावान ४९।२ चि-  
त्रांगदामैं बभ्रुवाहन ४९।३ सुभद्रामैं अभिमन्यु ४९।४ पुत्र जानिये ॥

अरु नकुलसों नित्ययौवनामैं सतानीक ४९।१ करेणुमतीमैं नि-  
रामित्र ४९।२ सहदेवसों सैर १६ धीमैं श्रुतकर्मा ४९।१ जयामैं सुहोत्र  
४९।२ इत्यादि पांडवनके पुत्र मानिये ॥

अभिमन्युकै उत्तरामैं पुत्र विष्णुराज ५० ताकै जनमेजय ५१।१  
श्रुतसेन ५१।२ भीमसेन ५१।३ उग्रसेन ५१।४ यह पुत्रनको चतुष्क  
४ कहयो ॥

अरु जनमेजयकै सतानीक ५२ ताकै अश्वमेधदत्त ५३ तासों  
१ सत्यवती को आज्ञा से २ वेदव्यास से विचित्रवीर्य की राणियों ने धृ-  
तराष्ट्र और पांडु दो पुत्र जने जिनकी ३ मन्तान सुनो जिनकी ४ पांडितों ने  
प्रशंसा की है ॥ ४ ॥ ५ सुबल नामक राजा की पुत्री (गान्धारी) में ६ आदि  
७ बहिन ८ मिन्धु देश के राजा ९ आकृष्ण के पुत्र पांडु की राणियों में  
धर्मराज १० पवन ११ इन्द्र १२ अश्विनीकुमारों से पुत्र १३ अर्जुन से १४ द्रौ-  
पदी में १५ द्रौपदी में १६ द्रौपदी में १७ परीक्षित

अधिसीमकृष्ण ५४ताकै विवक्षु ५५ जानै कौसांबीमें जाय निवास ल  
हयो ॥४७॥

बबलुके ऊष्ण ५६ताकै चितूरथ ५७ताकै सुचिरथ ५८तासौं परि  
म्लुच ५९तासौं सुनय ६०तासौं मेधावि ६१ताकै नृपंजय ६२जो चंडो-  
सिराज गोगके सहाय यवनेंद्र अब्दुफरके चमूपतिकों मारि सूरधर्म  
को प्राप्त भयो तासौं ऊर्ब ६३ताकै तिग्म ६४तासौं वृहद्रथ ६५तासौं  
वसुदान ६६ताकै सतानीक ६७ताकै उदयन ६८तासौं अहीनर ६९  
ताकै दंडपाणि ७०ताकै पुत्र निरमित ७१जो क्षेमक ७२ कुमारसहित  
कौसांबीमें विद्यमान कहिये ॥

अैसे घाड़दुके अन्ववाय आकरमें रत्नभूत जो मगधराज रिपुंजयकी  
सुतादुलहीसिसुप्रभासहितचंडासिराजदुल्लहहरदेव ६४चिरजीवीरहिये

अैसे सप्त ७५दीके पूर्व ससिकुलके सगोत्र सुनाय मगधेसनै नरे  
स हरदेवको ससिप्रभा ६४।१विवाहि सीख दई ॥

अैसे रावराजेंद्र चंडासिराज हरदेवलों अनलके अन्ववायकी  
कला ६४प्रमित पीढि भई ॥ ४८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायण तृतीय ३राशौ वीति-  
होतचण्डासिवंशवर्णने शुभकर्ण ५५कनकलता ५५।१दयकर्ण ५६  
धन्या ५६।१यशःकर्ण ५७सुमनो ५७।१हरिकर्ण ५८विसरा ५८।१कीर्ति  
श ५९सती ५९।१बालकृष्ण ६०रेणुका ६०।१हरिकृष्ण ६१रति ६१।१  
रामकृष्ण ६२श्यामा ६२।१वलदेव ६३यमुना ६३।१हरदेव ६४शशिप्रभा  
६४।१देशनवरमदम्पतिरपरिगायनसमयचन्द्रवंशसमासमूचनं पञ्चात्रि

१चहुवाणराजा २मौजूद ३चन्द्रवंश रूपी खानमें फेरा (विवाह के समय अग्नि  
की प्रदक्षिणा) फिरने से पहिले ५चन्द्रवंशके ४सगोत्र सुना कर ६अग्नि ७वंश की  
चौसठ पीढी हुई ॥

अीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में चहुवाणवंशवर्णन  
में शुभकरण-कनकलता, उदयकर्ण-धन्या, यशःकर्ण-सुमना, हरिकर्ण-विसरा,  
कीर्तिश-सती, बालकृष्ण-रेणुका, हरिकृष्ण-रति, रामकृष्ण-श्यामा, वलदेव-य  
मुना, हरदेव-शशिप्रभा के कथन में अन्तिम स्त्री पुरुष के विवाह समय में

शतमो३५मयूखः ॥ ३५ ॥ आदितः सप्तसप्ततितमः ॥ ७७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पञ्चश्रुटिका

मगधेस रिपुंजय नाम भूप, हरदेव६४स्वसुर जो यँहँ अनूप ॥  
 आभिधा मुनिक्य हुव सचिव तास, तिहिँ करि नरेस मागध विनास  
 प्रद्योतन नाम जु अप्पपुत्त, धरि सो दयोहि तस तखत धुत्त ॥  
 पटनां१रु देवगिरि२दुर्ग पाय, सब नृपन भयो जेता स्वभाय ॥ २ ॥  
 रघुकुल प्रसेनजित प्रमुख राज, सब हारि थके लरि लरि समाज ॥  
 हरदेव६४इत सु चहुवान नाह, बन तजिय देह रहि जोग राह ॥ ३ ॥  
 हुवभीम६५तनय ताके उदार, कविकुमुदचंद्र दुख दलनहार ॥  
 गांधारराज वसुमित्र गेह, तिहिँ काल सुता निधि ललित लेहँ ॥४॥  
 वसु६५१नाम जुवतिजनभाललाल, दग कंज कलित पम्हलअराल  
 परनी सु भीम६५चहुवान नाथ, सखिय स्वधर्म सुभ जुगल२साथ ॥५॥  
 प्रद्योतन मागध समय पाय, लिन्नौ विदर्भ नृपतै छुराय ॥  
 तिहिँ जंग मरिय करनाटराज, व्है हेतिपूत लिय सुर समाज ॥ ६ ॥

संक्षेप से चन्द्रवंश की सूचना करने का पैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३५॥

और आदि से सतत्तर मयूख हुए ॥ ७७ ॥

हरदेव चहुवाण का स्वशुर मगधदेश का राजा रिपुंजय उपमा रहित था  
 उसके मुनिक्य नामक कामदार (मन्त्री) ने उस राजा को मार डाला उस  
 धूर्त कामदार ने अपने पुत्र प्रद्योतन को उस राजा के तखत पर बिठा दिया  
 जो सब राजाओं को जीतनेवाला हुआ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ आदि ॥ ३ ॥ २ कवि  
 रूपी कुमोदनी (रावि विताशी कमलों) का दुःख भेटनेवाला चन्द्रमा २ सुन्दर  
 लेख से निधि रूपी पुवी हुई ॥ ४ ॥ उसका नाम वसु था वह अन्य स्त्रियों  
 के ललाट का लाल (टीका अथवा लाल नामक रत्न) था जिसने कमल के  
 समान नेत्र पाये और पद्मल (कटाच) टेढ़े पाये अर्थात् टेढ़े कटाचवाली अ-  
 थवा टेढ़े भौंहवाली, उसको भीम चहुवाण ने परनी ४ जोड़ा सहित ॥ ५ ॥  
 प्रद्योतन नामक मगधदेश के राजा ने समय पाकर विदर्भ के राजा से विद-  
 र्भ देश छुड़ा लिया उस युद्ध में शत्रुओं से पवित्र होकर भीम ने देवताओं  
 का समाज लिया [मार गया] ॥ ६ ॥

सहदेव६६भीमसुत हुव सुपुत्र, नय१धर्म२वेद३गो४द्विज५तनुत्र ॥  
 नृप चेदिराज दृढरथ सनाम, तनया पृथा६६१सु परन्याँ ललाम ॥ ७ ॥  
 सहदेव तनय हुव रामदेव६७, कर्मनैत कर्मन छबि कामदेव ॥  
 नेपालराज सुव्रत निकेत, तुंगा६७१सुता सु परन्याँ सुचेत ॥ ८ ॥  
 सहजा६७१२हु अपरँ अभिधान तास, बसुदेव६८भूप हुव जठर जास ॥  
 विद्याविनोद१रन२सूरि१सूर२, पानिप रजपूती उदधि पूर ॥ ९ ॥  
 कुंडक नृप रघुकुल कोसलेस, बेला६८१तदीय तनया सुबेस  
 बसुदेव६८बिवाहन ताहि तत्त, साकेत नगर वर बिहित पत्त ॥ १० ॥  
 वंदन नीराजन विधि बनाय, प्रबिसायउ मंडप लग्न पाय ॥  
 नृप स्वपुर पुरोहित उचित बाल, तँहँ तपन बंस बरनिय बिसाल ॥  
 ( अथ सूर्यवंशोद्देशनम् ॥ )

हुव विष्णुनाभि सन वारिजात, तासौ हुव धाता१सर्ग तात ॥  
 विधिकै मरीचि२कश्यप३तदीय, रवि४अदिनि जन्यौ तिनसौ गरीय  
 वैवस्वत५मनु रबिसुत प्रवीर, नव९तनय तास हुव धर्मधार ॥  
 इक्ष्वाकु६१तथामगधिष्ठ२जानि, सर्याति३नरिष्यंत६१४हु बखानि ॥  
 नाभाग६५बहुरि वृषकेतु६नाम, दिष्ट७रु करूष८रु प्रषध६१९ताम ॥  
 सुत काम रचिय मनु बहुरि सत्र, होता मिलाय नृपनारि तत्त ॥ १४ ॥

१कवच२वाणविद्याका जाननेवाला३सुन्दर४सुव्रत के घर में ॥ ८ ॥ दूसरा नाम  
 उदर से ७विद्या विनोद में पंडित और रण में शूर ८रजपूती के पराक्रम में पूर्ण  
 समुद्र ॥ ९ ॥ कुंडक नामक रघुवंशी अयोध्या का राजा जिसकी बेला नामक  
 सुन्दर पुत्री को व्याहने के लिये बसुदेव चहुँबान उचित वर होकर अयोध्या  
 में पहुँचा ॥ १० ॥ नम्रता पूर्वक आरती करके लग्न के समय मंडप में प्रवेश  
 कराया और कुंडक राजा के पुर के पुरोहित ने उचित समय पाकर वहाँ पर  
 सूर्य वंश का वर्णन किया ॥ ११ ॥ अब सूर्यवंश का कथन है ॥ विष्णु की ना  
 भि से कमल हुआ। उस कमल से सृष्टि के पिता ब्रह्मा हुए, ब्रह्मा के मरी-  
 चि और उनके कश्यप हुए उन कश्यप से अदिती ने कश्यप से भी पूज्य  
 सूर्य जना ॥ १ ॥ सूर्य का पुत्र वैवस्वतमनु हुआ जिसके धर्म को धारण कर-  
 नेवाले नव पुत्र हुए ॥ १२ ॥ तहाँ मनु ने पुत्र कामना से यज्ञ रचा जहाँ होता  
 को मिला कर राजा [मनु] की राखी ने ॥ १४ ॥ कहा कि हे ब्राह्मण

इम कहिय चाह मम चित्त एहु, द्विजराज अप्प दुहिता हु देहु ॥  
 तव हुव सुताहि होता प्रभाव, अभिधान इलाहा ॥ १० ॥ सविनय स्वभाव  
 पुनि मितावरुन कृपानुसार, सुद्युम्नदा ॥ १० ॥ नाम सुहि हुव कुमार ॥  
 गो कबहु इलावृत भर्ग गेह, भो नारि अपर्णा साप एह ॥ १६ ॥  
 पहिलैं सनकादिक सुनन ज्ञान, आये गिरीस पैहैं मोदमान ॥  
 तहैं संभु १ सिवार विरचित व्यवाय, यह लखि मुररे मुनि द्दग दुराय  
 अंधाहु भई लज्जित अमाप, सामान्य भयो इम तबहि साप ॥  
 आवैं जु इलावृत माहिं कोउ, अबसौं तजि पोरुख नारि होहु ॥  
 इहिं साप भई वह भुव अगम्य, सुज्जुगगा ॥ १० ॥ गयो तहैं रमत रम्य ॥  
 तिय अप्प भो रु बडवा तुरंग, ससिसुत लखि लैगो ताहि संग ॥ १९ ॥  
 तामाहिं रुचिर बुधसौं तनूज, प्रकट्यो पुरुरवा प्राप्तपूज ॥  
 मनुपजानि यहै मुनि मत मिलाय, करि सत्र किय सु पुनि पुरुख काय  
 पुर ताहि प्रतिष्ठानाभिधान, थिर दिय वैवस्वत रहन थान ॥

आप सुभे एक पुत्री भी दो तब उस होता [होम करनेवाले] के प्रभाव से  
 इला नामक नन्न स्वभाववाली कन्या हुई ॥ १५ ॥ फिर मित्रावरुण  
 की कृपा से सुद्युम्न नामक कुमार हुआ. वह कभी इलावृत खंड में म-  
 हादेव के स्थान पर गया सो पार्वती के आप से स्त्री होगया ॥ १६ ॥ अब  
 उस आप का कारण बताते हैं कि पहिले कभी ज्ञान सुनने के लिये सन-  
 कादिक मुनि हर्ष मानकर महादेव के पास आये जहां महादेव और पार्व-  
 ती मैथुन कर रहे थे जिनको देख कर वे मुनि नेत्र बंध करके पीछे फिर गये  
 ॥ १७ ॥ पार्वती भी बहुत लज्जित हुई तब सब के लिये आपहुआ कि अब  
 से जो कोई इलावृत खंड में आवेगा वह पुरुषपन को छोड़ कर स्त्री होवे  
 गा ॥ १८ ॥ इस आप के कारण वह भूमि नहीं जाने योग्य होगई, उस सु-  
 न्दर स्थल में रमता हुआ सुद्युम्न भी चला गया सो आप तो स्त्री हो गया  
 और सवारी का घोड़ा था सो घोड़ी होगई. उस स्त्री को चन्द्रमा का पुत्र  
 ( बुध ) ले गया ॥ -६ ॥ उस स्त्री में बुध से सुन्दर पुत्र पुरुरवा पूजा के यो-  
 ग्य प्रकट हुआ, सुद्युम्न के स्त्री होने की वार्ता जानकर मनु ने सुनियों की  
 भलाह लेकर यज्ञ करके उसको पीछा पुरुष कर लिया ॥ २० ॥ उसको प्रति-  
 ष्ठान नामक पुत्र वैवस्वत ने दिया, सुद्युम्न के तीन पुत्र प्रवीर हुए तो भी हे

ताके उत्कल ७।१ गय २ बिनत ७।३ तीन ३, वसुदेव सुनहु सुतहु वप्रवीन  
 यानै तथापि वह पुर अधीन, निज औरस बुधसुतकोहि दीन ॥  
 मनुसुत पृषध ६।९ हुव जो कनिष्ठ, गो पालन पठयो गुरु वसिष्ठ ॥२३॥  
 गोवाट माँहिँ निस कहूँ मृगारि, आयो लखि भारिय सु तरवारि ॥  
 अति कुहर नखायुध दिय चुकाय, गुरुकीहि हनी लहि नियति गाय ॥  
 मारी न जदापि मति चाहि कुमार, भो तदपि सूद्र गुरु साप भार ॥  
 मनुसुत करुषके अन्ववाय, कारुष सकल रविकुल कहाय ॥२४॥  
 मनुपुत्र दिष्टकै हुव कुमार, नाभाग ७ नाम अतिबल उदार ॥  
 लखि चैत्र बनिक तनया ललाम, भो कामबिवस तिहिँ करन भाम ॥  
 जञ्जी सु जनक पँहँ कुमर जाय, कर जोरि चैत्र अक्खिय उपाय ॥  
 हम बनिक तुमहिँ कर दैनहार, संबंध तुल्य व्है सोहि सार ॥२५॥  
 नृपकोँ हम पुच्छत जो निदेसँ, करिहै सु करहिँ नयँ उचित एस ॥  
 अक्खिय नृप दिष्टहिँ बनिक बत्त, नाभाग सुता मम चहत रत्त ॥२७॥  
 नृप तव ऋचीक मुख मुनि बुलाय, बुलिय समुझावहु सुतहि न्याय ॥  
 तव मुनिन कहिय श्रुतिरीति ताहि, अभिसिक्त सुता पहिलै बिबाहि ॥  
 पुनि चैत्र सुता व्याहहु प्रबुद्ध, इम करहु धर्म व्है नहिँ असुद्ध ॥

वसुदेव चहुवान आप सुनो कि ॥२१॥ तोभी सुबुद्ध ने अपने उदर से जो बुध  
 का पुत्र हुआ उसीको प्रतिष्ठान पुर दिया. छोटा हुआ उसको वसिष्ठ मुनि  
 ने आपनी गौ की पालना करने को भेजा ॥२२॥ किसी समय रात्रि में  
 गडवों के बाड़े में सिंह आया जिसको देख कर पृषध ने तलवार मारी सो  
 अत्यन्त अन्धेरे में सिंह ने चुका दी और दैवयोग से वसिष्ठ की गाय को  
 ही मारी ॥ २३ ॥ कुमार ने अपनी बुद्धि से उसको नहीं मारी तोभी गुरु  
 के भारी आप से वह शूद्र होगया १ वंश ॥ २४ ॥ २ चैत्र नामक बनिये की  
 पुत्री को सुन्दर देख कर अपनी स्त्री करने के लिये ॥ २५ ॥ कुमार ने उस  
 कन्या के पिता के पास जाकर उसको मांगी ३ आपको हासिल देनेवाले हैं  
 परावरवालों में संबंध होवे सो ही अच्छा है ॥ २६ ॥ ४ आज्ञा ५ यही उचि  
 त नीति है, बनिये ने दिष्ट नामक राजा से जाकर कहा कि आपका पुत्र  
 नाभाग मेरी पुत्री को प्रति पूर्वक चाहता है ॥२७॥ ६ आदि ७ वेद की रीति से  
 कहा कि पहिले राजा की कन्या को व्याह कर ॥ २८ ॥ हे बुद्धिमान पीछे

नाभाग सु सुनि मुनि वचं निवारि, लै ताहि सज्जहुव रचन रारि॥२६॥  
 किय बनि कै दिष्टपैहैं तब पुकार, गो भूप लरन पकरन कुमार ॥  
 नाभाग कलह किय तुमुल तत्थ, सब जर्न ककटक मारिय समत्थ॥३०॥  
 दिष्टहिं हुव संसय विजय माँहि, पुनि कहिय नृपहिं रन बिहित नाँहि॥  
 हुव वनिक कुमर दर्पक अधीन, तासौं न लरहु समता विहीन॥३१॥  
 असवर्ण सुता पहिलैं बिवाहि, ताकोहि वर्ण बर लहत आहि ॥  
 नृप सु सुनि गयो रन तजि निकैत, परनी सु कुमारहु हित उपेत ॥  
 अखिख्य पुनि दिष्टहिं नगर आय, मम वृत्ति जनक देहु ब बताय ॥  
 तब मुनिन बनिज १ कृपि २ पसुन त्रान ३, तिहिं वृत्ति दई श्रुति पथ प्रमान ॥  
 हुव तनय भलंदन ८ नाम तास, पटु वीर विहित बिक्रम प्रकास ॥  
 अंबा तिहिं इक दिन कहिय एह, जावहु गोपालहु सुत सनेह ॥३४॥  
 तँहैं अर्थ भलंदन गहिय एस, गो भूमि ताहि पालन निदेस ॥  
 इम चिंति गयो वह तुहिन पत्थ, किय तुष्ट राज ऋषि नीप तत्थ ॥३५॥  
 गोपालन तासन अस्त्र ग्राम, सब सिखिख बहुरि आयो स्वधाम ॥  
 बसुरात ७ प्रमुख जे दिष्ट पुत्र, तिन प्रति यह अखिख्य बलतनुत्रा ॥३६॥

चैत्र वैश्य की पुत्री को व्याहा १ वचन ॥ २९ ॥ २ वनिया ने दिष्ट राजा से जाकर पुकार की ३ भयंकर ४ पिता की सब सेना को ॥ ३० ॥ ५ उचित नहीं ६ घमंड के अधीन ॥ ३१ ॥ जो वर्ण उस असवर्ण स्त्री का होवे वही वर्ण उससे विवाह करनेवाले का होता है ७ अपने घर ८ हित सहित ॥ ३२ ॥ फिर नाभाग ने नगर में आकर राजा दिष्ट से कहा कि हे पिता अब मेरी जीविका बताओ तब मुनियों ने वेदमार्ग के प्रमाण से व्यापार, खेती और पशुओं की रक्षा करना बताया ॥ ३३ ॥ ९ चतुर वीर और उचित बिक्रम को प्रकाश करनेवाला हुआ. उसको एक दिन माता ने कहा कि हे पुत्र जाओ गो का पालन करो ॥ ३४ ॥ इसका अर्थ भलंदन ने यह समझा कि गो नाम भूमि का है जिसकी पालना करने की माता ने आज्ञा दी है. यह विचार कर वह हिमालय के मार्ग को गया. तहां नीप नामक राज ऋषि को प्रसन्न किया ॥३५॥ पृथ्वी को पालने के लिये उनसे अस्त्रों का समूह सीख कर अपने घर आया और बसुरात आदि राजा दिष्ट के पुत्र थे उनसे उस बल रूपी कवच धारण करनेवाले ने कहा कि ॥ ३६ ॥ हे चचा (काका) ओ मेरा

अब देहु पितृव्यक बंदि अंस, उन कहिय बनिक क्यों देत दंस ॥  
 सब जिति भलंदन तब समर्थ, अर्पन किय लौ भुव जनक अर्थ ॥  
 नाभाग कहिय मैं पितु निदेस, लैहौं न बनिक बनि पुहवि लेसा  
 करि तूहि राज्य तवजित कुमार, यह सुनि तस पतनी किय उचार  
 बनिक न तुम हो नृप हे प्रबुद्ध, त्यों मैहु राजतनया हि सुद्ध ॥  
 पहिलै सुदेव हुव नृप पबित, धूम्रास्व तनय नल तास मित्र ॥३६॥  
 इक समय मास बैसाख तत्त, नारिन जुत क्रीडन बिपिन पत ॥  
 तहँ करत नदीतट मद्यपान, मुनि प्रमति नारि निरखी सुजान ॥  
 नल दोरि गही वह बाहुपास, मुनि नारि पुकारिय त्राहि त्रास ॥  
 मुनि प्रमति सुदेवहि कहिय आय, तू भूप देहु मम तिय छुराय ॥४१॥  
 नृप कहिय बनिक मुहिं गिनहु बिप्र, छत्रिय पैंहँ जावहु कहहु छिप्र ॥  
 द्विज तब छत्राधम बनिक होहु, यह साप दै रु किय भस्म सोहु  
 नल भस्म पिक्खि अक्खिय सुदेव, मुनि छमहु करिय हम अनय एव ॥  
 मुनि सदय कहिय तब साप धोय, व्है है पुनि छत्रिय बनिक होय ।  
 छत्रिय तव तनया गहहिं जत्थ, तू छत्र बनिकपन छोरितत्थ ॥  
 यौं नृप सुदेव है मोर तात, मेरी हु सुनहु वरती सु बाता ॥४४॥  
 हुव पुब्ब सुरथ नामक नरेस, तप तपत गंधमादन नगेस ॥

अंश बांढ दो, उन्होंने कहा कि तू बनिया होकर क्यों दन्त देता है (खाना चाहता है) तब उन सबको समर्थ भलंदन ने जीतलिया और भूमि लेकर पिता के अर्पण करी ॥ ३७ ॥ नाभाग ने कहा कि मैं पिता की आज्ञा से बनिया होगया हूँ सो भूमि का लेश भी नहीं लूंगा. यह राज्य तेरा विजय किया हुआ है सो तू ही कर. यह सुन कर नाभाग की स्त्री बोली ॥२८॥  
 हे विद्वान् ॥३६॥ रवन में गया ॥४०॥ भुजों में पकड़ ली ४ रक्षा करो ५ प्रमति मुनि ने राजा देव से कहा ॥ ४१ ॥ मुझको बनिया जानो. शीघ्र ब्राह्मण ने कहा कि हे अधम क्षत्री तू बनिया होजा. यह आप देव को देकर उस नल को भी भस्म कर दिया ॥४२॥ मैंने यह अनीति करी सो क्षमा करो ७ दया सहित पहिले बनिया होकर फिर क्षत्री होवेगा ॥ ४३ ॥ जहाँ कोई क्षत्रिय तेरी पुत्री को ग्रहण करेगा तहाँ तू वैश्यपन को छोड कर क्षत्रिय होवेगा, इसप्रकार राजा देव मेरा पिता है अब मेरी वार्ता भी सुनो जो मुझसे



इक समय सेनमुख सन प्रपात, सारी तँहँ कंपत अकसमात ॥ ४५ ॥  
 मूर्छित हुव सो लखि सदय भूप, उपजी तँहँ तासों मैं अनूप ॥  
 इक दिन अगस्त्य भ्राता अगस्ति, मम सखिन कह्यो यह बँनिक अस्ति  
 सुनि कुपित बिप्र दिय साप मोहि, जो मोहि कहत तब होहु सोहि ॥  
 तब पायपरि यकरि प्रनति रूपाति, उन कहिय बहुरि लहि है स्वजाति ॥ ४७ ॥  
 यों मैं सुदेवत नया अनूप, भूपाल दिष्ट सुत तुमहु भूप ॥

तसमात करहु सुत विजित राज्य, नाभाग कहिय है नमँ भाज्य ॥  
 पितु हुकम तज्यो न गहौ बहोरि, जित राज्य करहु सुत धर्म जोरि ॥  
 तब कुमार भल दन ८ भो नरेस, बत्सप्री ९ तस सुत हुव सुबेस ॥ ४९ ॥  
 जिहि हनि कुजंभ पाता लजाय, सौनंद मुसल आन्यों सुभाय ॥  
 सुमति १ रु सुनीति २ सोदर समेत, आनी मुदावती १ र्जय उपेत ॥  
 तब भूप विदूरथ सो सु ताहु, याकोंहिँ दई रचि विहित व्याहु ॥  
 बत्सप्री के हुव प्रांसु १० नाम, सुत ज्येष्ठ मुदावति मैं ललाम ॥ ५१ ॥  
 हुव पुत्र प्रजापति ११ प्रांसु गेह, नव ९ नवति ८१० हनत हुव असुर एह ॥  
 खनिमित्र १२ प्रमुख ताकै कुमार, खनिमित्र तनय क्षुप १३ हुव उदार  
 तस बिस १४ बिबिस १५ सु तस मुजान, हुव तास खनीनेत्रा १६ मिधान  
 सडसठि सत ६७०० अरु सडसठि हजार ६७०००,  
 सडसठि ६७ जुत किय मख जिहिँ उदार ॥ ५३ ॥

हुव तास करंधम १७ नाम पुतै, जाकै अबिविहित १८ धर्म जुत ॥  
 जिहिँ नृपन स्वयंवर जीति जीति, आनी अनेक कन्या अभीति

वरती है ॥ ४४ ॥ गंधमादन नाम पर्वत में तप तपने थे वहाँ शिकरा (बाज)  
 के मुख से अचानक कांपती हुई मैना (पक्षि विशेष) पड़ी ॥ ४५ ॥ १ यनि  
 या है ॥ ४६ ॥ २ मुझे जिसने बनिया कहा वही बनिया होओ ३ प्रणाम  
 (विशेष नम्रता) ॥ ४७ ॥ ४ इस कारण से पुत्र का विजय किया हुआ राज्य  
 करो ५ मेरे अग्रण करने योग्य भाग नहीं ॥ ४८ ॥ ६ तेरा विजय किया हुआ  
 राज्य धर्म के साथ हे पुत्र तू ही कर ॥ ४९ ॥ ७ सौनन्द नामक (बलदेव के  
 रखने का) मूल = विजय सहित ॥ ५० ॥ ८ आदि १० पुत्र ११ खनीनेत्र नामक  
 राजा हुआ जिसने ६७६७७ यज्ञ किये ॥ ५३ ॥ १२ पुत्र

इम नृप विसाल कन्या कुमार, सब नृपन जिति आनी उदार ॥  
 इक<sup>१</sup> होय सबन लरि करि अधर्म, मूर्छित यह पकरयो बेधि मर्म  
 जब सुतहिं करंधम कैद जानि, आहव करि जीते अहित आनि  
 निजसुत छुराय अखिय नरेस, अब चलहु कन्यका परनि एस ॥ ५६ ॥  
 तब कुमार कहिय तिय लखत मोहि, सत्रुन गहि बंध्यो सकुच सोहि  
 जो नारि १ नारि २परिनयन न्याय, तो मैहु चलों दुलही बनाय ॥ ५७ ॥  
 अविविच्छित यौ कहि तिय प्रसंग, सब छोरि दयो रहि प्रसभ रंग ॥  
 कन्याहु अनूढा बिपन पत्त, परन्यों न और रति तत्त तत्त ॥ ५८ ॥  
 तनु तजन लगी तब यह कहाय, दिय देवदूत देवन पठाय ॥  
 न बिसालसुता तनु तजन जुत्त, व्है है तुव सब भुव भूपपुता ॥ ५९ ॥  
 तिहिं कहियजियतपरनौनअन्य, धवममअविविच्छितकुमरधन्य ॥  
 सो मुहिं बरै न किम तनय जम्म, इहिं कहिय परनिहै सुहि सुकम्म  
 बीरा अविविच्छित जननि नाम, कुल नसत जानि चिंत्यो बिराम ॥  
 व्रत धारि कमिच्छक नाम नेम, पतिकौ लै सम्मत जनन प्रेम ॥ ६१ ॥

१ करंधम जब अपने पुत्र को कैद जाना तब शत्रुओं को जीतकर अपने पुत्र को छु-  
 डा कर कहा कि अब इस कन्या को परण कर चलो ॥ ५६ ॥ कुमार ने कहा कि स्त्री के  
 देखते हुए मुझे शत्रुओं ने पकड़ कर बांध लिया इसका मुझे संकोच है जो  
 यदि स्त्री का स्त्री के साथ विवाह होना उचित होवे तो मैं भी इस कन्या  
 को दुलही बनाकर चलूँ ॥ ५७ ॥ यह कहकर अविविच्छित ने अपने हठके रंग  
 में रहकर स्त्री का सब प्रसंग छोड़ दिया और वह कन्या भी बिना विवाही  
 वन में पहुंची, उस वैश्य की कन्या में प्रीति होने के कारण तहां अविविच्छि-  
 त ने भी अन्य विवाह नहीं किया ॥ ५८ ॥ वह कन्या शरीर छोड़ने लगी वहां  
 देवताओं ने कालपुरुष को भेज कर कहलाया कि हे वैश्य की पुत्री तेरे सर्व  
 भूमि का पति ऐसा पुत्र होवेगा इसकारण से तेरा शरीर छोड़ना युक्त (योग्य)  
 नहीं है ॥ ५९ ॥ और को नहीं परखूंगी मेरा पति अविविच्छित है सो मुझे  
 परणे नहीं फिर पुत्र का जन्म कैसे होसका है? उस देवदूत ने कहा कि वही  
 सुकर्मा तुझे परणगा ॥ ६० ॥ उस अविविच्छित की माता का नाम बीरा था  
 उसने अपने कुल का नाश होता जानकर कुछ विश्राम (सहारा) चिन्तन  
 किया और अपने वंश में प्रीति करके पनि की सलाह लेकर किमिच्छक  
 (मार्कंडेय पुराण में कहा हुआ व्रत विशेष) नामा व्रत का नेम लगा ॥ ६१ ॥

अविविच्छितसौ अखिय उदंत, मैं लियउ किमिच्छक व्रत महंत ॥  
 मंगै सुदेहु अर्थिन कुमार, होहु न सुपुत्र व्रतभंगकार ॥ ६२ ॥  
 स्वीकारि अविविच्छित भयउ सज्ज, सब दैन लगो भिच्छुन सुलज्ज ॥  
 तहँ जनक कहिय कछु दिन बिताय, अर्थी सुत तव ढिग मैंहु आया ॥ ६३ ॥  
 कौ देहु मोहि इच्छित उदार, कौ होहु जर्ननि व्रतभंगकार ॥  
 सुत कहिय मैंहु तुमरे अधीन, पितु लेहु इष्ट जो हिय प्रबीन ॥ ६४ ॥  
 नृप कहिय देहु नत्तिय दिखाय, मम बंस बच्छ नहि नष्ट जाय ॥  
 तब कुमार कहिय मम बँहचेर, तुमरै न इतर सुत बिफल बेर ॥  
 नृप अखिय तव व्रत छोरि देहु, सुत करहु कथित मम सफल एहु ॥  
 सुत कहिय निर्लज नक्कहि कटाय, रचिहौ इक सुत जो बहत राय ॥  
 तदनंतरँ गय मृगया कुमार, तँहँ ब्राहि ब्राहि सुनि तिय पुकार ॥  
 ढिग जाय लख्यो दृढकेस नाम, इक दनुज रह्यो गहि विकल बाम ॥  
 सौ कहत करंधम पुत्र नारि, मैं दुष्ट गही मम पति विसारि ॥  
 है कोउ बचावन करन भीर, बुल्ल्यो अविविच्छित सुलखि वीर ॥  
 नृप मुकुट करंधम तपत आज, को दुष्ट हरत तिय करि कुकाज ॥  
 यह सुनत समुख हुव दनुज दुष्ट, गिरि सख अख डोर प्ररुष्ट ॥ ६९ ॥  
 सब कहि कुमार दृढकेस मारि, बुल्ल्यो सु कोन तू विजैन नारि ॥  
 इहि अंतर हुव आकासबानि, अविविच्छित यह तव नारि जानि ॥ ७० ॥

१ वृत्तान्त २ वडा ३ याचना करनेवालों को ४ हे पुत्र मेरे व्रत को भंग करनेवाला मत होना ॥ ६२ ॥ ५ स्वीकार ६ भिक्षा करनेवालों को अविविच्छित के पिता ने कुछ दिन बिताकर कहा कि हे पुत्र मैं भी याचना करनेवाला होकर तेरे पास आया हूँ ॥ ६३ ॥ ७ जा मैं चाहूँ वह माता के व्रत का भंग करनेवाला ८ जो आप की इच्छा होवे वह ॥ ६४ ॥ राजा ने कहा कि मुझे १० पोता (पौत्र) दिखा दे ११ हे पुत्र १२ ब्रह्मचर्य है और तुम्हारे दूसरा पुत्र नहीं इससे मेरा शरीर निष्फल है कि मैं आपकी याचना को पूर्ण नहीं कर सका ॥ ६५ ॥ १३ हे पुत्र मेरा कहना कर १४ निर्लज होकर नाक कटा करके एक पुत्र रचूंगा जो हे राजा आप चाहते हो ॥ ६६ ॥ १५ जिस पीछे कुमार शिकार गया १६ दैत्य १७ स्त्री को ॥ ६७ ॥ १८ मुझको १९ सहाय करनेवाला बोला २० बहुत कोपित होकर २१ इस निर्जन स्थान में हे स्त्री तू कौन है

यामाँहिँ चक्रवर्ती कुमार, व्हैहै तव दुर्जय अरि बिदार ॥  
 कन्या प्रति अखिख्य कुमर एह, किम भीरु अत्त आवन अनेह ॥  
 तिहिँ कहिय तजैन तनु अत्थ आय, मैँ देवदूत बरजी मनाय ॥  
 तवतैँ हि रावरी लखत राह, इक ओर भई सुनिये सुनाह ॥७२॥  
 परसौँ गंगाबिच न्हाँन काल, इक नाग गयो मुहिँ लै पताल ॥  
 पूजी तहँ नागन सवन मोहि, अक्खी सुत जनिहै दमन दोहि ॥७३॥  
 तस आगस करिहै नाग बाल, इन्ह मारन कुप्पहिँ सो कराल ॥  
 तहँ सुतहिँ निवारहु अभय देहु, अंगीकृत कीनी मैँहु एहु ॥७४॥  
 तब दिव्य बसन भूखन बनाय, नागन यँह आनी हित तनाय ॥  
 वृढकेस गही मैँ आज दुष्ट, तुम नाथ बचाई होहु तुष्ट ॥ ७५ ॥  
 यह होत कहिय गंधर्व तत्थ, यह ममहु सुता जानहु समत्थ ॥  
 घटभवँ मुनि कोलहिसाप एह, दुहिता हुव जाय विसाल गेह ॥७६॥  
 अब गहहु पानि पाको उदार, मम लोक चलहु पुनि धर्म धार ॥  
 तिहिँ व्याहि कुमर तब निपुन नेह, गंधर्व लोक गो स्वसुर गेह ॥७७॥  
 तहँ तनय भयो पाकैँ प्रसस्त, किय जातकर्म तुंबुरु समस्त ॥  
 आकासवानि तब कहिय पुत्त, यह होय विदित नामक मरुत्त ॥७८॥  
 आयो अबिबिच्छित गृह समोद, वह बाल धर्यो निज जनक गोद ॥  
 पुनि कहिय राज्य १ अरु नारि संग २,  
 अबतैँ न करौँ जिति हतउमंग ॥ ७९ ॥

दै राज मरुत्तहिँ तव नृपाल, बीराजुत गो वन चर्य काल ॥

१ कठिनाई से जीतने में आवे ऐसा २ अष्ट स्त्री नेरे यहाँ आने का यह क्या समय है ३ शरीर छोड़ने को यहाँ आई थी परन्तु कालपुरुष ने सुझे मना कर दी ४ हे पति ५ शत्रुओं को दंड देने वाला ॥७३॥ उस तेरे पुत्र का सूर्य सर्प अपराध करेंगे जिनको मारने का वह भयंकर क्रोध करेगा जिसको मने दारके सर्पों को बचाना यह वार्ता मैंने स्वीकार की ॥७४॥ अथ सुभ्र पर प्रसन्न होयो ॥७५॥ अग्रस्थ मुनि के आप से वैश्य के घर में जाकर ॥७६॥ हाथ ॥७७॥ बहुत अष्ट ॥७८॥ १० अपन पिना की गोद में धर कर फिर कहा कि शत्रुओं ने सुझे जीत लिया इस कारण उत्साह भंग होकर अब से राज्य का और स्त्री का संग नहीं करूंगा ॥ ७९ ॥ राजा करवम मरुत्त को राज्य देकर बीरा नामक राणी के साथ

किय राज्य मरुत्त १९६ धर्मधाम, भार्गव सन सिक्खयो अस्त्र ग्राम ।  
अवनी यह पुक्खर दीप अंत, सब एकछत्र भुक्ती सुमंत ॥

पाताल स्वर्ग गति सक्ति पाय, सब सिर मरुत्त प्रतप्यो सुभाय ॥८१॥  
करि अब्द सहस्र १००० तप जोग जोरि, गो नाक करंधम देह छोरि ॥  
बीरा तब सखिय ब्रह्मचर, बारयो न सती दुख दैन बेर ॥ ८२ ॥

मख अतुल करे इतने मरुत्त, जग सकल भयो मखनियम जुत्त ॥

इकदिन इक तापस कहिय आय,

नृप सुनि मरुत्त तब छत न न्याय ॥ ८३ ॥

मुनि और्व उटज बीरामिधान, है तब पितामही व्रतनिधान ॥

मिधान निधान अन्त्यानुप्रासः ॥

तानै कहि पठयो पौत्र तोहि, सब सीस तपत यह कष्ट मोहि ॥८४॥

बहु नाग आय डसि गरल तप्त, मारे यह मुनिजन बिप्र सप्त ॥

निज ठीवन शृंगथर मूत्र डडारि, बिपूनके दीनै हँवि विगारि ॥८५॥

किय दुष्ट खलन जल थल समस्त, तूरवि दिवसहि किमरोस अस्त

जबलौ न परै अभिषेक वारि, नृपसुत न भोग तबलौ निहारि ॥८६॥

अब पौत्र पट लहि बिखय मोहि, चारांधभाव नहिँ उचित तोहि ॥

अन्न समय में वन में गया परशुराम से अस्त्रों का समूह सीखा ॥ ८० ॥

इस पुष्करदीप के अंत तक की भूमि अष्ट बुद्धिवाले मरुत्त ने एकछत्र भोगी और पाताल स्वर्ग में जाने की शक्ति पाकर सब के शिर तपा ॥ ८१ ॥

वर्षरतपस्या और योग करके कांधम स्वर्ग को गया तब बीरा ने अपने शरीर को दुःख देने के लिये ब्रह्मचर्य माधा और जली नही ॥ ८२ ॥

और्व मुनि की पर्णशाला ( तृण और पत्तों से छाई हुई कुटी ) में व्रत ही है धन जिसके ऐसी बीरा नामक तेरी दादी ( पिता की माता ) है उसने कहा

हलाया है कि तू सबके शिर पर तपता है और मुझे यह दुःख है ॥ ८४ ॥

पेहुप बिप्र से अपना धूक (सुख का मल) विष्टा होमने के पदार्थ विगाड़ दिये ॥ ८५ ॥

अशुद्ध (खराब) शत्रु ने सूर्य हांकर इन बातों को सहन करके दिन में ही कैसे क्रोध को मिटा रक्खा है, जब तक यज्ञ समाप्त होकर अभिषेक का पानी नहीं गिरे तब तक हे राजपुत्र तू अपना सुख मत देख ॥ ८६ ॥

हे पौत्र अब तैने तो सिंहासन पाया है और मुझे बिछा [विपत्ति] है, हलकारों द्वारा सुधि [खबर] नहीं मंगवाने से तुझको अन्धापन नहीं रखना चा-

यह सुनत निंदि अप्पहिं मरुत, जीवा चढाय कोदण्ड जुत्त ॥८७॥  
 टंकारि और्व आश्रम जेगाम, प्रेरयो संवर्तक अस्त्र ताम ॥  
 लग्गो तव प्रजरन नागलोक, सब काद्रवेय डारि मग्ग सोक ॥८८॥  
 कंपत अविविच्छत गेह आय, भामिनिकौं दीनी सब सुनाय ॥  
 धवसौं तव भानिनि कहिय सर्व, इन्ह पूर्व अभय दिय ज्यौं अखर्व ॥  
 अविविच्छत आयो तव अरण्य, बरज्यो निजपुत्रहिं कहि अगणय ॥  
 पितु चरन वंदि तदपि न मरुत, निज टेक तजी कहि धर्म जुत्त ॥९०॥  
 अविविच्छतहू तव अनख पाय, टंकारि चाप आयो रिसाय ॥  
 सुत जनक लरत ब्रह्मंड सांकि, धर मचक डिगी दुंधर धमंकि ॥९१॥  
 दिग्गजन दये मल मूत्र डारि, सब सृष्टि लगी विनसन पुकारि ॥  
 यौहू तव नागन मरन जानि, भार्गव प्रति अकिखय विनय वानि ॥  
 हम दष्ट मुनिन देहैं जिवाय, यह कलह निवारहु बीच आय ॥  
 तव और्व निंदि बरजे नरेस, नागन जिवाय दिय मृत असेस ॥९३॥  
 सुत जनक तवहि आये सुधाम, किय इस मरुत बहु अतुल काम ॥  
 परन्यौं यहै हु रानी अनेक, अष्टादस १८ तस सुत वर विवेक ॥९४॥  
 तहैं ज्येष्ठ नरिष्यन्ता २० ऽभिधान, सुंडीर १ विनंय २ वितरन ३ सुजान ॥  
 सत्तरि हजार ७०००० दसपंच १५ जुत्त, हायेंन प्रमान प्रतप्यो मरुत २५

हिये मरुत ने अपनी ही निन्दा करके प्रत्यंचा चढ़ाकर धनुष को युक्त किया  
 ॥ ८७ ॥ गया तहाँ पर अग्नि अस्त्र चालाया जिससे नागलोक जलने लगा  
 सब सर्प डर कर शोक में बूढ़ गये ॥ ८८ ॥ वे सर्प घूँजते हुए अविविच्छित  
 के घर पर आये और उसकी स्त्री से सब कथा कही तब भामिनी ने सर्पों  
 को पहिले बड़ा अभय दिया था सो पति से कहा ॥ ८९ ॥ वन में गगना में  
 नहीं आवे इतनी बेर कहकर मना किया तो भी पिता के चरणों में नमस्कार  
 करके अपनी टेक नहीं छाँड़ी और कहा कि यह टेक धर्मयुक्त है ॥ ९० ॥ नहीं  
 सुनने योग्य धक्कों से ॥ ९१ ॥ ३ पृथ्वी के हिलने की चोटों से सर्पों ने अपना म-  
 रना जान कर भृगुवंश के मुनि से नम्रता के वचन कहे कि ॥ ९२ ॥ ४ हम डसेरूप  
 मुनियों को पीछे जिवादेवगे १ और्व मुनि ने कठिनाई से राजा को मना किया  
 वसथ मरेहुओं को ॥ ९३ ॥ ७ ज्येष्ठ ज्ञानवाले ॥ ९४ ॥ बड़ा नरिष्यन्त ८ नामक  
 ९ शूरता १० नम्रता ११ दान में सुजान १२ वर्ष ॥ ९५ ॥

सासित करि निजबल सत्त७दीप, परलोक गयो पुनि यह सहीप॥  
 भो अतुल नरिष्यंत२०हु नरस, वंसहुसौं कीनैं मख विसेस ॥९६॥  
 जाकौं जजायँ द्विज द्रव्य पाय, मख करन लगे भूतल नमाय ॥  
 नृप खोजत जाजक अब मिले न, सबकाल मचे मख आखिल अैन ॥  
 दिस पुव्व१अठारह कोटि१८००००००००तल,  
 सुभ सप्तकोटि७००००००००प्रातीच्य२संत्र ॥  
 आचार्य ३ चउदह कोटि१४००००००००थान,  
 पंचासकोटि५०००००००००उत्तर४प्रमान ॥९८॥  
 खोजत द्विज दूतन बहु बिबेक, इक काल गिनै भुव मख इतेक ॥  
 असो मरुत्त सुत भो उदार, भुवमैं न रह्यो दालिद्र भार ॥९९॥  
 रानी तस ब्राह्मव वंस जांत, सुभ नाम इंद्रसेना सुहात ॥  
 वैच्छर नव९करि तस जंठर बास, दम२१नामपुत्र हुव भव्य बास१००  
 वृषपर्वा दानवसौं कुमार, सिक्ख्यो सुबुद्धि धनुवेद१सार ॥  
 रु तपस्वी दुंदुभि दैत्यराज, किन्नौं गुरु सिक्ख्यो अस्त्र काज ॥१०१॥  
 जुत अंगै६सुक सन वेद ३ पाय, लिय आर्षिसेन सन जोग४जाय ॥  
 दम २१ कुमर मयो असो उदार, पाये बहु जंगन जय प्रकार१०२  
 सुदसार्णराज तनया विवाहि, सब नृपन जित्ति आयो उमाहि ॥  
 दुव राज कुमारन यह सही न, दमसौं मंग रुंधि रु कलह कीन१०३  
 इक१मदराज सुत बल अमान, ज्यो ख्यात महानंद१अभिधान१॥  
 दूजो२विदर्भपतिको कुमार, धानुष्क वपुष्मत२नाम धार ॥१०४॥

१आज्ञायर्त्ता१यज्ञजित्तको यज्ञ कराक ४ राजा ने फिर यज्ञ करानेवालों का खोज कराया सो नहीं मिले क्योंकि सब ९ घरों में सब समय यज्ञ होने लगे ॥ ९७ ॥ १ पश्चिम दिशा में ७ यज्ञ हो रहे थे ८ दक्षिण दिशा में १८ १ भूमि पर एक समय में इतने यज्ञ होते हुए दुर्तों ने गिने, मरुत्त का पुत्र ऐसा उदार हुआ ॥ ९९ ॥ १० उपजीर्ह ११ उसके पेट में १२ नव वर्ष बास करके १३ शुभ वाम करनेवाला ॥ १०० ॥ शुक्याचार्य से १४ लहो अंगों सहित वेद सीखे १५ आर्षिसेन नामक मुनि से योग सीखा ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १३ मार्ग रोक कर ॥ १०३ ॥ १२ महानंद नामक १८ धानुष्क और वपुष्मन् दो नामों को

मदेस सुत १ सु दम लियउ मारि, दूजो २ अचेत करि दियउ डारि ॥  
 दै राज्य दमहिं गुनअग्रगण्य, गो भूप नरिष्यंत २० हु अरण्य ॥ १०५ ॥  
 बन कवहु वपुष्मत गो सिकार, दम २१ जनक लख्यो तहँ सहित दार  
 दम २१ की जननी सन पुच्छि नाम, खलहनिय नरिष्यंत २० हिं बिकाम  
 यह घोर खबरि दम २१ भूप पाय, बैदर्भ हन्यौ तस देस जाय ॥  
 दम तनय राजवर्द्धन २२ उदार, हुव तासु सुवृति २३ नामा कुमार २०७  
 ताकै नर २४ कंबल २५ तस सुजान, तस बंधुमान २६ तस वेगवान २७ ॥  
 तस बुद्ध २८ तास तृणाविंदु २९ आस, अच्छरि अलंबुसा माहिं तास ॥  
 सुत हुव बिसाल ३० जो अजितजंग, जिहिं रचिय बिसाला नाम द्रंग ॥

तस हेमचंद्र ३१ धूम्रास्व ३२ तास,

तस सृजय ३३ तस सहदेव ३४ भांस ॥ १०९ ॥

ताकै कृसास्व ३५ तस मोददत्त ३६, किन्नै जिहिं दस १० हं यमेध सैत ॥

जनमेजय ३७ तस तस सुमति मूर ३८,

पौनिप १ जस २ उद्यम ३ धर्म ४ पूर ॥ ११० ॥

वैवस्वत आत्मज चउ ४ चरित्र, पहिलैं इम वरन्यौ तहँ पवित्र ॥

द्विज नड्डल कुंडक भूपकरे, वरनत पुनि इतरन व्याह बेर ॥ १११ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ बी

तिहोत्रचण्डासिवंशर्णने भीम ६५ वसु ६५ १ सहदेव ६६ पृथा ६६ १

रामदेव ६७ तुंगा ६७ १ वसुदेव ६८ वेला ६८ १ द्वेशनचर्म ६८ दम्प

तिपरिणयनसमयविवस्वद्वंशव्याख्यानाऽनन्तरगतमनुतनुजसुद्युम्न १

धारण करनेवाला ॥ १०४ ॥ १ गुणों में सब से आगे गिनती में आनेवाला

२ वन में ३ दम के पिता को ४ स्त्री सहित देखा ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ५ हुआ

६ अप्सरा ॥ १०८ ॥ ७ युद्ध में नहीं जीतने में आवे ऐसा ८ पुर ९ कान्ति-

माना १०९ १० अश्वमेध ११ यज्ञ १२ पराक्रम. इस प्रकार वैवस्वत मनु के चार पुत्रों

का पवित्र चरित्र प्रथम वर्णन किया गया और कुंडक राजा का नड्डल नामक

पुरोहित विवाह समय में मनु के दूसरे पुत्रों का वंश अब वर्णन करता है १११

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा-

ण वंशवर्णन में भीम-वसु, सहदेव-पृथा, रामदेव-तुंगा, वसुदेव-वेला के कथन

में अन्तिम स्त्रीपुरुष के विवाह समय में सूर्य वंश की कथा के भीतर मनु के



पृषध २ करूप ३ दिष्ट ४ चतुष्टय ४ चर्या १ वंश २ वर्णनं षट्त्रिंश  
तमोमयूखः ॥ ३६ ॥ आदितोष्टसप्ततितमः ॥ ७८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

( पञ्चमिका )

वैवस्वत सुत सर्याति ६३ नाम, नृप सो हु भयो गुनगन ललाम ॥  
आनर्त ७ नाम तस सूनु श्रेय, तनया हु सुकन्या १ नामधेयः ॥ १ ॥  
परनी जु च्यवन भृगुवंस दीप, आनर्त ७ हु भो अतिबल महीप ॥  
आनर्तदेश जिहिं करि कहात २ ताकै सुत रेवत ८ खर्ग ख्यात ॥  
तस पुल ककुधी हुव नरेस, रेवत ९ हु कहत जिहिं बुध बिसेस ॥  
रेवतिका १ कन्या हुव तदीय, सुभरूप १ सील २ गुनगन ३ गरीय ॥ ३ ॥  
तदुचित वर पुच्छन जनक ताहि, लौगो बिरंचिकै लोक चाहि ॥  
हाहा १ हूहू २ तहँ करत गान, अतितान नाम स्वर दिव्यवान ॥ ४ ॥  
तहँ इक भूहूर्त सुनि दिव्य गेथँ, पूछ्यो पुनि बिधिसन हँद प्रेय ॥  
विधि कहिय लयेतँ वर निहारि, तिनके न वंस अब भुव बिचारि ॥  
जदुवंस माँहि कृष्णावतार अग्रज है तिनकै बल उदार ॥  
यह देहु तिनहिं कन्या विवाहि, आयो सुनि रेवत भुव उमाहि ६  
तनया सु बलहिं परिनाय तत्त, वन तुँहिन गयो रेवत बिरत्त ॥  
बल सौर अग्र करि तिहिं नमाय, सम किन्न प्रांसुपन नस विहाय ७ ॥

पुत्र सुधुम्न, पृषध, करूप, दिष्ट इन चारों के आचरण और वंशवर्णन का छ-  
त्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥ आदि से अठहत्तर मयूख हुए ॥ ७८ ॥

१ सुन्दर २ आनर्त नामक अष्ट पुत्र हुआ जिसके नाम से आनर्त देश प्रसिद्ध  
हुआ ३ सुकन्या नामक ४ खड्ग चलाने में प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ १ विशेष  
पंडित ६ उस रेवत के रेवती नामक कन्या हुई ७ गुणों में बड़ी  
॥ ३ ॥ उस कन्या का ९ पिता ८ उसके उचित वर पूछने को १० ब्रह्मा के लो-  
क में लेगया वहाँ ११ हाहा हूहू नामक गन्धर्व गान करते थे ॥ ४ ॥ १२ दो  
घड़ी तक १३ गान १४ प्रिय अभिप्राय ॥ ५ ॥ १५ बड़ा भाई ॥ ६ ॥ १६ ब-  
लदेव को १७ हिमालय के वन में १८ विरक्त होकर १९ बलदेव ने हल के  
अग्रभाग से २० जंचापन मिटा कर बराबर किया ॥ ७ ॥

रैवतके इतरहु कुल विसस, सब दिसन माँहि जानहु नरेस ॥  
 मगधिष्ट६।२ कह्यो जो मनुतनूज, धृष्ट६।२हु कहात वह प्राप्तपूज  
 ताकैहु वंस बहुयार्ष्टनाम, सबठाम वढे भूतल सुधाम ॥  
 मनु पुत्र नभग६।५कै हुव कुमार, नाभाग७नाम अतिवल उदार॥९॥  
 हुव अंबरीष८ताकै बिरक्त, दुर्वासादमन रु विष्णुभक्त ॥  
 ताकै बिरूप९वृहदश्व१०तास, तस पुत्र रथीतर११भूरिभास ॥१०॥  
 ताकी तियमै सुनि अंगिराहि, आत्मज जनेति सब विप्र आहि ॥  
 मनुपुत्र नरिष्यंत६।८हु सहंत, कुल तास अतुल सब दिस कहंत॥११॥  
 वृषकेतु१२वंस त्योंही विथार, सब दिसन पाय हुव धर्मधार ॥  
 इक्ष्वाकु६।१भयो मनु पुत्र अच्छ, दंडक सब दुष्टन धर्म दच्छ ॥१२॥  
 सत१००पुत्र भये याकेहु श्रेष्ठ,

जिनमै बिकुक्षि७।१निमि७।२दंड७।३ज्येष्ठ ॥

पंचास५०इतर उत्तर अर्धास, अरु तुरगवेद४७जर्मककुभ ईसा१३।  
 रुचि आढ करन इक्ष्वाकुराज, पठयो बिकुक्षि७पल हरन काज ॥  
 बनमाँहि छुधित ईक१ससहिँ खाय, यहकुमरखिलहिँलापोनिकाय॥  
 इम तस ससाद७अभिधान आसँ, हुव पुत्र पुरंजय८नाम तास ॥  
 असुरनके जिते सुर असेस, बैकुण्ठ सरन हुव दीन बेस ॥ १५ ॥  
 हरि कहिय पुरंजय८नाम राज, लै तुम सहाय निज करहु काज॥  
 तव देव पुरंजय सरन पत्त, बुँले जय दीजै अप्रमत्त ॥१६॥

१ और भी २ मनु का पुत्र प्राप्त हुई है पूजा जिसको ( पूजायोग्य ) ३ दुर्वासा  
 को दंड देनेवाला ४ पुत्र जने ५ वे सब ब्राह्मण ७ हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ८ श्रेष्ठ  
 ९ धर्म में चतुर ॥ १२ ॥ १० दूसरे पचास पुत्र उत्तर दिशा के स्वामी हुए १३।  
 और सैतालीस पुत्र १४ दक्षिण दिशा के पति हुए, रुचि का आढ करने को  
 इक्ष्वाकु ने बिकुक्षि को १२ मांस लेने भेजा वहाँ वन में १३ भूखा होने के  
 कारण एक १४ खरगोस खाकर १५ बाकी मांस १६ घर पर लाया ॥ १४ ॥  
 इसकारण से ( सस को खाने से ) उसका ससाद नाम १७ हुआ, १८ दैत्या  
 ने सम्पूर्ण १९ देवताओं को जीत लिया वे दीन होकर २० विष्णु के शरण  
 गये २१ पहुंचे २२ थोले २३ सावधान होकर ॥ १६ ॥

नृप कहिय सोहि नर देवराय, व्है बाह व्हैं तो मैं सहाय ॥  
 सुरपति बइछा हुव तब सयान, थिर भूप चढ्यो तस ककुद थान ॥  
 इम तास ककुत्स्थ हुव नामधेय, काकुत्स्थ ८ वंस जिहिं करि अजेय ॥  
 भूप सु लख्यो हि करि सुरन भीर, बासव रिपु मारे सब प्रवीर ॥ १८ ॥  
 हुव पुत्र पुरंजयकै उदार, अभिधान अनेना ९ धर्मधार ॥  
 ताकै पृथु १० विश्वग ११ पुत्र तास, तस चांद्र १२ तास सुत उभय २ आस  
 युवनाश्व १३ १ बहुरि श्रावस्त १३ १ जोहि, श्रावस्तीनगरी रचक सोहि  
 श्रावस्त तनय दृढाश्व १४ नाम, हुव कुवल्याश्व १५ ताकै ललाम ॥  
 इकबीस सहस्र २१००० पुत्रन उपेत, जुज्झ्यो सु धुंधुसन खिजि खेत  
 उत्तक विप्रको अहितकार, हनि धुंधु कहाय उ धुंधुमार १५ ॥ २१ ॥  
 युवनाश्व सुतहु इहिं रन समस्त, धुंधु हने उबरे त्रय ३ अत्रस्त ॥

नृप जे दृढाश्व १४ १ चंद्राश्व १४ १ नाम ॥

कपिलाश्व १४ ३ बहुरि ए ३ धर्मधाम ॥ २२ ॥

रु दृढाश्व तनय हर्यश्व १५ वीर, ताकै निकुंभ १६ धरनीस धीर ॥  
 तस संहिताश्व १७ जानहु नृपाल, ताकै कृसास्व १८ कलि अहितकाल  
 ताकै प्रसेनजित १९ नामधेय, युवनाश्व २० तास अप्रज अजेय ॥  
 लखि सुत अभाव निबेद लाय, जुरह्यो वन मुनिगन उटै जाय २४ ॥  
 तहैं मुनिन दया करि ईष्टि कीन, जल मंत्रि धरयो घट इक प्रवीन ॥  
 नृपजगिनि सीथै किय सोहि पान, नहिं जानि सक्यो त सब सनि ३१ ॥ २५ ॥

राजा ने कहा कि मैं मनुष्य हूँ जिसको इन्द्र वाहन होकर मुझे उठावे तो मैं सहाय करूँ। तब इन्द्र बैल (गृध्र) हुआ जिसकी खंड (पीठ) के ऊपर कामांस पिंड पर राजा चढ़ा ॥ १७ ॥ इस कारण उस राजा का नाम ककुत्स्थ हुआ उसीके नाम से काकुत्स्थ वंश कहा जाता है ? इन्द्र के शत्रुओं को मारे ॥ १८ ॥ २ नाम ३ हुआ ॥ १९ ॥ ४ रननेवाला ५ सुन्दर ॥ २० ॥ इक्ष्वाकु हजार पुत्रों ३ सहित ॥ २१ ॥ ७ निर्भय ॥ २२ ॥ दमुड में शत्रुओं का काल ॥ २३ ॥ ६ दिना मन्तानवाला १० पुत्र नहीं होने के कारण ग्लानि लाकर वन में मुनियों की ११ पर्यकुटी में जा रहा । २४ ॥ तहाँ मुनियों ने दया करके राजा के पुत्र होने के अर्थ १२ : किया १३ आधी रात्रि में जग कर उस पानी को पीमया १४ प्यास के १५ : होकर उस का कारण नहीं जान सका ॥ २५ ॥

जगि मुनिन लख्यो निर्जल करीर, बुल्ले किहिं पित्रों निखिल नीर  
युवनाश्व बधूके उचित जोहि, करि पान भयो सह गर्भ कोहि ॥ २६ ॥  
पित्रों अजान मैं कहिय भूप, अरु उदर बढ्यो गर्भ हु अनूप ॥

समयांत कुक्षि अपसव्य फारि, सो बाल कढ्यो जनकहिं न मारि  
कां धास्यति यह इम मुनि कहाय, मां धास्यति अक्खिय इंद्र आय  
तांत मांघाता २१ नाम तास, हुव ख्यात बिरचि पुहवी प्रकासा ॥ २८ ॥  
सुरपति निज अंगुलि मुख तदीय, पीयूख भरी दिय पिहुल पीय ॥  
तासाहि बढ्यो वह नृप कुमार, भो द्वीप सम्रभोक्ता उदार ॥ २९ ॥  
ससविंदु भूप दुहिता सुबेस, तिय बिंदुमती परन्यो नरेस ॥

तामैं मांघाताकै तनूज, प्रकटे त्रयशुद्धर प्राप्तपूज ॥ ३० ॥  
पुरुकुत्स २२ ॥ १ बडो पट्टपप्रमानि, ज्यों अंवरीप २२ ॥ २ मुचुकुंद २२ ॥ ३ जानि  
तनया पचास ५० हुव बहुरि तास, परनी समस्त सौभरि सभास ३१  
पहिलें करि जमुना न्हद प्रवेस, सौभरि तप सद्धिय विधि बिसेस ॥  
तहैं मीनसंग लखि तजि समाधि, आयो मुनि बाहिर सहत आधि  
जर्जर शरीर सौभरि सजाय, अक्खिय मांघाता पास आय ॥  
पुत्री नरेस तव है पचास ५०, इक १ भोहि देहु लखि भोग आस ॥ ३३ ॥

१ घड़ को बिना जल देखा २ सब पानी किसने पिया वह तो युवनाश्व की  
स्त्री के उचित था सो उसको पीकर गर्भ सहित कौन हुआ ॥ २६ ॥ २  
उपमा रहित ४ गर्भ की अवधि के अंत में दाहिनी छूँव फाड़ कर  
पिता को बचा कर वह बालक कहा ॥ २७ ॥ जब मुनियों ने कहा कि इसको  
कौन धावे (दूध चुगावे) गा तब इंद्र ने आकर कहा कि मैं धाऊंगा, इसी  
मे उसका नाम मांघाता हुआ ॥ २८ ॥ इंद्र ने अमृत की भरी हुई अंगुली  
उस बालक के मुख में दी जिसको बहुत पीकर वह उदार सातों द्वी  
पों का भोगनेवाला हुआ ॥ २९ ॥ ५ पुत्री को ६ पुत्र ७ पूजन यो-  
ग्य ॥ ३० ॥ ८ पाटवी ९ पचाम पुत्रियों हुई जिनको सौभरि नामक मु-  
नि ने व्यादा ॥ ३१ ॥ उस सौभरि मुनि ने जमुना के दह (जलाशय) में प्रवेश  
करके विशेष विधि से तप साधा वहाँ १० मच्छियों को संगम करके देख कर  
समाधि छोड़ कर मन की पीड़ा सहना हुआ बाहर आया ॥ ३२ ॥ फिर  
वह सौभरि मुनि बहुत बड़ा शरीर बनाकर मांघाता के पास आकर

जान्यौ नृप वोरौ कूप काहि, जंपिय जो चाहैं लेहु जाहि ॥  
 करि मंजु रूप तब उचित काल, अवरोध गयउ सौभरि उताल ॥  
 देखतहि रम्य कन्या हु दोरि, मुनि संग लगी सब लज्ज छोरि ॥  
 उपयस करि लायो सबन एह, सब पास रम्यौ करि भिन्नहेहा ॥३५॥  
 पुरुकुत्स २२हु भो. वरै भूमिपाल, विक्रम १ नय २ बिद्या ३ वल ४ विसाल  
 जबही छकोटि ६००००००० पाताल धाम, गंधर्व बढे मौनेय नाम ॥  
 नागनसौ जय करि छिन्नि रत्न, सठ होय रहे दुस्सह सपत्न ॥  
 पहुँचे जलसाँई सरन व्याल, अविश्वय सहाय करिये कृपाल ॥३७॥  
 प्रभु कहिय जाहु पुरुकुत्स २२पास, देहैं सहाय होहु न उदास ॥  
 नागन तब रेवा नदि पठाय, पुरुकुत्स बुलायउ निज निकाय ॥३८॥  
 नागनकी भगिनी नर्मदाहु, परन्यौ पुरुकुत्स सु विहित व्याहु ॥  
 लाई पुनि भूपहिं नागलोक, इहिं जित्ति लये गंधर्वओक ॥३९॥  
 जननी मुनि १ कश्यप २ जनक जास, ब्रातैं सु नृप मेढ्यो करि बिनास  
 निज पाय रत्न १ अधिकार २ नाग, राजाहित वर दिय रक्खि रागै ४०  
 जोलौ रवि उदय रु अस्त जाय, पुरुकुत्स २२कुल न उच्छेद पाय ॥  
 वर दिय स्वसाहुकोँ मधुर वैन, नर तोहि चिंति अहिभय लहै न

बोला ॥३३॥ राजा ने जाना कि इसके साथ विवाह करके मैं किस लड़की  
 को हुए में बुचोड़. जब मुनि से कहा कि जो कन्या तुमको चाहै उ  
 सीको लेजाओ तब मुनि अपना मनोहर रूप करके समय देख कर शा  
 घ जनाने में गया ॥ ३४ ॥ उसको १ सुन्दर देख कर २ विवाह करके  
 ३ जुदे जुदे शरीर करके ॥३५॥ ४ अष्ट राजा हुआ ५ गन्धर्व गण विशेष  
 ॥ ३६ ॥ ६ शत्रु ८ सर्प ७ विष्णु के शरण गये ॥ ३७ ॥ ९ सर्पों ने नर्मदा  
 नदी को राजा पुरुकुत्स के पास भेज कर अपने घर पर बुलाया ॥ ३८ ॥ व  
 ह नर्मदा नदी सर्पों की वहिन थी जिसको उचित विवाह करके पु  
 रुकुत्स परणा १० गंधर्वों के घर जीत लिये ॥३९॥ मुनि नामक जिनकी मा  
 ता और कश्यप जिनका पिता है ऐसे ११ समूह का राजा ने नाश करके  
 भेंट दिया १२ प्रीति रखकर राजा को वर दिया ॥ ४० ॥ जब तक सूर्य उ  
 दय अस्त को गमन करता रहै तब तक पुरुकुत्स का वंश नाश नहीं पा  
 वे. अपनी वहिन नर्मदा नदी को भी वर दिया कि जो मनुष्य तेरा चि  
 न्तवन करेगा उसको सर्प का भय नहीं होवेगा ॥ ४१ ॥

नृप आयुः रेवाजुतं निकेत, सह धर्म भोग भुक्ते सुचेत ॥  
 याकै हु त्रसद्वस्युः २३ अभिधान, सुत भो प्रवीर नेता सुजान ॥ ४२ ॥  
 अनरण्य २४ भयो ताकै अभंग, जो सास्यो रावन विजय जंग ॥  
 हर्यश्व २५ भयो अनरण्य पुतै, ताकै सु बसुमना २६ धर्मजुत ॥ ४३ ॥  
 सुत तास त्रिधन्वा २७ नामधेय, अधिबीर त्रयारुणा २८ तस अजेय ॥  
 सत्यव्रत २९ ताकै तनय सूर, संकुलथं ३ धारक गुन गरूर ॥ ४४ ॥  
 पितु हुकम भंग १ गुरुधेनु घात २, अप्रोक्षित आमिष खान ३ ख्यात ॥  
 पातै त्रिसंकु २९ सोही कहाय, चांडाल भयो गुरुसाप पाय ॥ ४५ ॥  
 कौशिक मुनि पठयो स्वर्ग जोहि, लुब्धोहि अधोमुख गर्गन सोहि ॥  
 हुव तास हरिश्चंद्राभिधान ३०, तस लोहिताश्व ३१ नय गुन निधान ॥

तस हरित ३२ तास चंपक ३३ सधीर,

विजय ३४ १ रु मुदेव ३४ २ दुव २ तस प्रवीर ॥

सुत द्रवक ३५ विजयकै सावधान, वृक ३६ तास बाहु ३७ ताकै सुजान  
 जाकौ अनेक ससिबंस संघ, जिते रन हैहय तालजंघ ॥

परिभूत बाहु ३७ तब विपिन पत, रानीहु गर्भ जुत तदनु रत्न ॥ ४८ ॥

दिय तिहि सउत्ति गर असन डारि, च्युत होहु गर्भ यह अति विचारि  
 सो स्तब्ध गर्भ हुव अब्द सात ७, तत्थहि वपु छोरोयो तास तात ॥ ४९ ॥

१ नर्मदा सहित २ त्रसद्वस्यु नामक ३ नायक (सच को निभानेवाला) ॥ ४२ ॥ ४ पुत्र  
 ॥ ४३ ॥ ५ नामवाला ६ पुत्र ७ तीन शल्य (साल अथवा संकोच) धारण  
 करनेवाला ॥ ४४ ॥ ८ विना मंत्र संस्कार किया हुआ ९ मांस खाने में  
 मसिद्ध, इन्हीं कारणों से वह त्रिशंकु कहलाया ॥ ४५ ॥ ११ आकाश में नी-  
 चे मुख लटकते हुए को १० कौशिक मुनि ने स्वर्ग में भेजा १२ हरिश्चन्द्र ना-  
 मवाला ॥ ४६ ॥ जब हैहय और तालजंघ आदि चन्द्रवंशियों के समू-  
 ह ने बाहु नामक राजा को जीतलिया तब वह अनादर पाकर वन  
 में गया और रानी भी गर्भवती थी तो भी उसके पीछे प्रीति रख-  
 नेवाली हुई अर्थात् उसके साथ गई ॥ ४८ ॥ उसके भोजन में उसको  
 सोकने विष डाल दिया, इस विचार से कि इसका गर्भ गिर जा-  
 वेगा. वह गर्भ सात वर्ष तक जड़ रूप होगया वहीं पर (उसी वन में)  
 उस गर्भ के पिता (बाहु) ने शरीर छोड़ दिया ॥ ४९ ॥

रानी सु लगी प्रविसन चिताहि, जब आय निवारिय और्य जाहि ॥  
 इम कहिय उदर तव गर्भ एस, नखुं होहिं चक्रवर्ती नरेस ॥ ५० ॥  
 इम ताहि वराजि निज उटैज लाय, रानी मुनि रक्षिय दित रचाय ॥  
 लहि काल सगर हुव बाल तास, यौतैं तस नामहु सगर ॥ ५१ ॥  
 ब्रतगुन श्रुतिवाय तिहिं सास्त्र श्रवैद, आर्गनय अस्त्र सस्त्रन प्रभेद ॥  
 इत्यादि सिखाये और्य जाहि इकदिन सुत पुच्छिय अंकि काहि ॥ ५२ ॥  
 कयो काल निकासत अर्थ माय, सो देत भई तव सब सुनाय ॥  
 मुनि सगर कुपि टंकारि चाप, आयउ निज सन्तुन दनन आपा ॥ ५३ ॥  
 जुरि लक्ष्यन हँहय तालजंघ, संग्राम दने परपक्षसंघ ॥  
 भजिगय बसिष्ठपँहँ कति विभाँन, पुनि कहिय देहु मुनि हमहिं प्रान ॥  
 मुनि कहिय मिच्छै होवहु समस्त, तजि सगर दय तिम होत वस्त ॥  
 किन्तैं सिर मुंडित जवन केक, इम करिय अर्द्धमुंडित अनेका ॥ ५४ ॥  
 छुरकर्म रहित पन कतिन अपि, सक जाति करे प्रत्यंत थपि ॥

पौरव ३ अरु पल्लवर्ध ४ केक कीन,

मुख लोम अकर्तन ३४ तिनहिं दीन ॥ ५५ ॥

परिभूत सगरसन अपसंल, बहु मिच्छ भये इम चंद्र वंस ॥

रानी चिता में धुमने लगी ॥ ५० ॥ और्य मुनि ने रानी श्रुतिवाय दी ॥ ५१ ॥ पण्डित  
 ने लाकर ३ रानी को ५ समय जाने पर धिप के सहित बालक दृष्टा हमी-  
 फारण से उस का नाम सगर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥  
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥  
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

असपत्न सगर ३८ लिय राज्य आनि, भो द्वीपसप्तपालक प्रमानि  
 व्याहयो हुव २ रानी सगर बामे, इक १ कस्यपतनया सुमति १ नाम ॥  
 दूजी २ बिदर्भनृप आत्मजा सु, सुभरूप केसिनी २ नाम तासु ॥ ५८ ॥  
 मुनिआर्व सेय मंगे दुहसन, सुतछ अयुत ६०००० अरु इक १ बल अनून  
 क्रम सुमति १ जने छ अयुत ६०००० कुमार,  
 असमंजस ३९ १ केसिनी २ इक १ उदार ॥ ५९ ॥

धल्लिय असमंजस ३९ अति कुचाल, हुव अंसुमान ४० तस हे नृपाल  
 सुभकर्म बिगारत लखि स्वभाय, त्याग्यो असमंजस सगर राय ६०  
 इतरहु सुत असमंजस निसर्ग, विध्वस्त करत हुव धर्म गर्व ॥  
 कपिलावतारको सरन पाय, तिन प्रति पुकार किध द्विजन जाय ॥  
 प्रभु कहिय नास पैहैं ति दुष्ट, हयमेध रचिय इत सगर तुष्ट ॥  
 कोउक मखँहयको कपिल पास, लैगो कैजाक सुँसि अप्रकास ६२  
 खोजन तिहिँछ अयुत ६०००० सगर पुत, जवँ करि भुवविचरे प्रसभ जुत ॥  
 भुवहेगिखनँन अधलोक भुम्मि, बटिइक १ इक १ जो जन खनिय भुम्मि  
 पाताल जाय पिकरुयो स्वर्गीति, कपिलहु ढिग जानैं कुँहक रीति  
 दोरे तिन्ह मारन बकि अखर्व, प्रभु कहुक पिकिख किय भस्म सर्व  
 नाती तव पठयो अंसुमान ४०, जिहिँ आय कपिल सेये सुजान ॥

प्रशंसा हीन बहुत चन्द्रवंशी स्लेच्छ होगये. सगर ने १ बिना  
 शत्रु ( निष्कंदक ) होकर अपना राज्य पीछा लिया ॥ ५७ ॥ २ स्त्रियां ३ पु  
 त्री ॥ ५८ ॥ आर्व मुनि की सेवा करके दोनों रानियों ने पुत्र मांगे जिनमें एक  
 ने ९ साठ हजार और एक ने ६ बड़ा बलवान् पुत्र मांगा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ७ दू  
 सरे पुत्र भी असमंजस के जैसे ८ स्वभाववाले ही थे जिन्होंने धर्म के स  
 मूह का ९ नाश किया ॥ ६१ ॥ १० ते ( वे ) दुष्ट नाश पावेंगे १२ किसी युद्ध  
 करानेवाले ( छली ) ने छाने १३ छलकर ११ पञ्च के घोड़े को कपिलदेव के  
 पास जावांथा ॥ ६२ ॥ १४ शीघ्रता करके हठ पूर्वक १५ पाताल को खोदने  
 लगे और एक एक ने एक एक योजन भूमि बांट कर खोदी ॥ ६३ ॥ १६ अ  
 पके घोड़े को देखा और पास देख कर कपिलदेव को ही १७ छली जाना  
 कि घोड़ा चुराकर अब तपस्वी बन बैठा है ॥ ६४ ॥ इन साठ हजार पुत्रों को



हरि वैं प्रसन्न दै तुरग ताहि, पुनि कहिय कछुक वर लेहु चाहि ॥ ६५ ॥  
 अंजलि करि बुल्लिय अंसुमान, थप्पहु ममै पितरन मुक्ति थान ॥  
 हरि कहिय पौत्र वैं है त्वदीय, गंगा जो आनहिं भुव गरीया ॥ ६६ ॥  
 तब तुज्झ पितृव्यकै लहहिं मुक्ति, अश्वहिं यह लायो सु सुनि उक्ति  
 सगरहु विरक्त करि मख सुहार, दिय राज्य अंसुमान ॥ ६७ ॥ उदार  
 पाकै दिलाप ॥ ६८ ॥ सुत हुव अजेय, सुत तास भगीरथ ॥ ६९ ॥ नामधेय ॥  
 जिहिं नाँकनदी भुवलोक आनि, किय पितर मुक्तप्रनभक्ति मानि  
 सुत अंबरीष ॥ ७० ॥ ताकै सुधाम, ताकै हुव सिंधुद्वीप ॥ ७१ ॥ नाम ॥  
 ऋतुपर्णा ॥ ७२ ॥ तास लहि नल सहाय, सिद्धरूपो जु अर्चाविद्या सुभाय  
 तस सर्वकाम ॥ ७३ ॥ तस सुप्रकास ॥ ७४ ॥ ताकै सुदास ॥ ७५ ॥ सौदास ॥ ७६ ॥ तास  
 जिहिं नाम मित्रसह ॥ ७७ ॥ अपर आहि, इक काल गयो मृगर्या उमाहि  
 रक्खस दुव रहे तहैं व्याघ्र रूप, तिनभैं इक ॥ मारयो भयंद भूप ॥  
 तब अक्खि बर लैंहों द्वितीय ॥ गो पिहित होय भजि छलंगरीय ॥ ७८ ॥  
 नृप मित्रसह ॥ ७९ ॥ आयो निकेतैं, आरंभिय अर्ध्वर धर्म हेत ॥  
 बनि तब बसिष्ठ आसिर सु आय, बुल्लयो बँ देहु नरपल्ल जिमाय  
 गुरु गिनि नृप हुव आणा अधीन, पुनि खलैं वैं सूर्य सु सिद्ध कीन  
 भौ पिहितें दुष्ट नृपहिं सु दिखाय ॥ अनुचित बसिष्ठ मन्नी सु जाय ॥

भस्म हुप जानकर सगर ने अपने पोते अंगुमान को भेजा ॥ ६५ ॥ १ हाथ  
 जोड़ कर बोला २ जेरे साठ हजार मेरे हुप पितरों को ३ कपिलदेव ने कहा  
 कि तेरे पोता होयगा वह भारी गंगा नदी को लावेगा ॥ ६६ ॥ तब तुम्हारे  
 ४ चचे मुक्ति पावेंगे ॥ ६७ ॥ ५ जिसने स्वर्ग की नदी को भूमि लोक में ला-  
 का अपने पितरों का उद्धार किया ॥ ६८ ॥ ६ हूनविद्या ७ दूसरा नाम  
 शिकार गया ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ८ राजस १० भय देनेवाले (भयंकर) व्याघ्र का  
 ११ अन्तर्धान होकर १२ छल में भारी ॥ ७२ ॥ १३ अपने घर १४ यज्ञ का  
 आरंभ किया तब उस १५ राजस ने बसिष्ठ मुनि का स्वरूप करके राजा  
 से कहा कि १६ ज्ञान १७ अनुपम का नाम जिमा दो ॥ ७८ ॥ उसको गुरु जानकर  
 राजा उस १८ अधम (नीच) के आधीन होयगा, फिर उसी राजस ने १९,  
 रत्नोद्धार होकर पताया २० अन्तर्धान होयगा ॥ ७९ ॥

अग्निख्य नृप नरपत्न्य हमहिं देत, कव्याद होहु यातैं कुचेत ॥७४॥  
 नृपकहिय कह्यो तुमही निदान, सुनि मुनिहु लखी सब विरचि ध्यान  
 बुल्ले अथ बारह १२ अवद होहु, जल लेत भयो तब सपन सोहु ॥  
 रानी मदयंती दिय निवारि, दिन्नौ तब जल निज पयन डारि ॥७५॥  
 यातैं सु होय कल्माषपाद ४९, कव्याद भयो नृप अप्रमाद ॥  
 छठे दिन दुर्मति प्रबल पाय, खेचे लग्यो सु मनुजन खिसाय ॥७६॥  
 इक समय मुदित मोहन प्रसक्त, देखे द्विज दंपति स्नेह अक्त ॥  
 तिनमांहिं नरहिं लग्यो सु खान, पतनी तस जखिय देहु मान ॥७७॥  
 न भई कृतार्थ मै नरननाह, अथ रुद्ध करहु खावन उछाह ॥  
 मन्नी न तदपि नृप लियउ खाय, सहगमन द्विजा विरचिय सुभाय ॥  
 दिय नृपहिं साप करिहै व्यवाय, कामुक तब तजिहै तूहु काय ॥  
 तदनंतर बारह १२ लांघि वर्ष, निज रूप पाय नृप हुव महर्ष ॥७८॥  
 लोलुप मदयंती अंक लिन्न, दयिता सु साप सुमिराय दिन्न ॥  
 तब ताहि छोरि बंदे वसिष्ठ, अकखी ब करहु इहिं गर्भ निष्ठ ॥

मनुष्यों का मांस हमका देता है इस कारण से राजा होजा, राजा ने कहा कि तुमने ही तो कहा है इसका कारण तो तुम ही हो, यह सुन कर वसिष्ठ ने ध्यान करके सब बात को जान ली ॥७४॥ बारह वर्ष तक राजा हुआ तो यह जब वसिष्ठ ने कहा तब राजा ने भी आप देने के लिये हाथ में पानी लिया जब मदयंती नाम रानी ने राजा को मना किया तब उस जल को राजा ने अपने ही पगों पर डाल दिया ॥ ७५ ॥ जिससे राजा के पग काले होगये इससे उसका नाम ही कल्माषपाद हुआ, वह सावधानता पूर्वक राजास हुआ खोटी बुद्धि पाकर क्रोध करके मनुष्यों को खाने लगा ॥ ७६ ॥ एक समय ब्राह्मण जाति के स्त्री पुरुष को स्नेह युक्त मैथुन करने में आसक्त देखे जिनमें से जब पुरुष को खाने लगा तब स्त्री ने याचना की कि इसके प्राण लुके दे ॥ ७७ ॥ मै कृतकार्य नहीं हुई हूं इस कारण से खाने के उच्छाह को रोक तो भी राजा ने नहीं मानी और जब उस ब्राह्मण को खालिया तब वह ब्राह्मणी भी जल गई ॥ ७८ ॥ उस ब्राह्मणी ने राजा को आप दिया कि जब तू भी मैथुन करेगा तब हे कासी तू भी शरीर छोड़ेगा ॥ ७९ ॥ बारह वर्ष का आप भोगे पीछे अपना स्वरूप पाये पीछे अत्यन्त लोभी होकर राजा मित्रसह ने मदयंती राणी को भुजपाश में ली जब स्त्री ने आप की याद दिलाई

तब मुनि वसिष्ठ आधान तास, नैगम मग रक्खिय सुख निरास॥  
मदयंती स्वोदर अस्म मारि, निजगर्भ लह्यो चिर सहि निकारि॥ ८१॥  
यातैं सु अस्मक ५० हि हुव अनूप. ताकैं हुव मूलक ५१ भोरु भूप ॥  
जो राम करत नच्छत्रदेस, नारिन छिपाय रक्ख्यो नरेस॥ ८२ ॥  
नारीकवच ५२ हु इत तास नाम, ताकैं सुत दसरथ ५३ धर्मधाम ॥

सुत तास भयो इलविल ५३ सुभास,

तस विश्वसह ५४ रु खड्गांग ५५ तास ॥ ८३ ॥

जिहिं सूर सहाय करि रन अजेय, मारे नृप आसुर अप्रमेय ॥  
बरलेहुक ह्योतवसुरन जाहि, बुल्लयो मर्मायुखिल कतिक आहि ॥ ८४॥  
सु मुहूर्त १ बतायउ सुरन सेसैं, बुल्लयो तब पहुँचौ अवहि देस ॥  
तब सुरन पठायउ सीघ्र तत्थ, सो हुव कृतार्थ तजि त्रिशुनसत्था ॥ ८५॥  
हुव दीर्घबाहु ५६ ताकैं कुमार, ताकैं रघु ५७ ताकैं अज ५८ उदार ॥

अजकैं नृप दसरथ ५९ भाग्यवान,

श्रीराम ६० १ आदि चउ ४ तरा सुजान ॥ ८६ ॥

कौसल्या औरैंस रामचंद्र ६० १, भरत ६० २ सु कैकई सुत अतंद्र ॥  
सत्रुघ्न ६० ३ रु लक्खन ६० ४ धर्मधीर, प्रकटे ति सुमित्रामैं प्रवीर ॥ ८७॥  
इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयराशौ बीतिहोत्र-

तब राणी को छोड कर वसिष्ठ मुनि से नमस्कार करके कहा कि आप के कारण मैं तो स्त्री संग नहीं करसक्ता अब आप इसराणी को गर्भवती करो ॥ ८० ॥ मुनि ने वेदमार्ग से राणी के गर्भ रक्खा. ३ बहुत समय तक सहन किये पीछे राणी ने अपने १ उदर (पेट) पर २ पत्थर मार कर गर्भ का निकाल किया ॥ ८१ ॥ इसकारण से उसका नाम अस्मक हुआ. ४ कायर ५ जब परशुराम भूमि को नष्ट करे लगे तब मूलक नामक राजा को स्त्रियों ने छिपा रक्खा ॥ ८२ ॥ इसीसे उसका नाम नारीकवच प्रसिद्ध हुआ ॥ ८३ ॥ ६ देवताओं की सहाय करके ७ बिना गिनती के असुर मारे जब देवताओं ने कहा कि बर मांग. तब राजा ने कहा कि मेरी आयु ६ बाकी कितनी? ८ है ॥ ८४॥ देवताओं ने ११ दो घड़ी आयु १२ बाकी बताई. १३ सत, रज, तम का साथ छोड (मुक्त हो) कर ॥ ८५ ॥ कौसल्या के १४ उदर से १५ निराल सी ॥ ८६ ॥

चण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ८६ वला ८६।१ विवहनसमसूर्यवंशसमुद्देश  
सङ्गतवैवस्वतमनुसुतशर्याति १ मगधिष्ठ २ नभग ३ नरिष्यन्त ४ वृषके  
तु ५ सन्ततिसूचनमुख्येक्ष्वाकु १ वंशान्तर्भूतविकुक्षिवंशपरम्पराप्राप्तस-  
सुतचतुष्क ४ दशरथावसानाऽन्वबायसमाख्यानं सप्तत्रिंशो ३७ मयू-  
खः ॥३७॥ आदित एकोनशीतितमः ॥७९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

दसरथकै चउ४सुत उदित, उपजे प्रभु अवतार ॥

पायउ बेस किसोर पुनि, भुम्मि उतारन आर ॥१॥

षट्पात्

जँहँ कौसिक सुनिराय राम ६०।१ लखन ६०।२ जँघे जब ॥

कौसलेसँ अकुलाय निँडि तिन संग दये तब ॥

लैकुमरन गाधेयँ आन लग्गे निज आश्रम ॥

रात्रिचरी मग रुक्मि मिली विच चहि कराल क्रम ॥

ताडका नाम बिक्रम अतुल सो रघुवर मारिय सहज ॥

सुनि रचिय सत्रँ अप्पन उटजँ बढिय तत्थ क्रव्यादँ ब्रँज ॥२॥

मिलि सुबाहु १ मारीच २ आदि रक्खस अति साहस ॥

अध्वरँ नासनँ आय रचे बिग्रँह बिरोध बस ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वाचरण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
वंशवर्णन में चहुवाण वसुदेव और बेला के विवाह समय में सूर्यवंश के कथन  
के साथ वैवस्वत मनु के पुत्र शर्याति-मगधिष्ठ-नभग-नरिष्यन्त-वृषकेतु के स-  
न्तान की सूचना में मुख्य इक्ष्वाकु वंश के भीतर विकुक्षि के वंश के अनुक्रम  
(पीढ़ियों) का प्राप्त होकर अंतिम वंश दशरथ के चार पुत्रों के श्रेष्ठ आख्यान  
का सैंतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३७ ॥ और आदि से उन्वासी मयूख हुए  
॥ ७९ ॥

१ अवस्था २ दश वर्ष से ऊपर और पन्द्रह से नीचे किशोर अवस्था कहलाती  
है ॥ १ ॥ ३ मांगे ४ दशरथ ने ५ कठिनाई से ६ विश्वामित्र ऋत्विजों से  
७ अपनी पण्डुटी में १० राजसों का ११ समूह ॥ २ ॥ १२ वंश का १३ ना-  
श करने को १४ युद्ध रचा.

तबहि चाप टंकारि राम मारिय सुबाहु रन ॥

पुंख पवन मारीच जलधि डारिय सत १० जोजन ॥

कौसिक स्वकीय मख सिद्ध करि जनक सत्र पिक्खन चलिय ॥

तहँ उपलै रूप गोतम तियहिँ परसि पाय प्रभु मुक्ति दिया ॥

दोहा

पहुँचे पुनि मिथिला पुरी, आयउ समुह विदेह ॥

कौसिक १ कुमर २ वधायकै, नगर लये धरि नेह ॥ ४ ॥

उच्छव दिन नृप इकठे, सकल करे मखसाल ॥

कहयो चढावहु चापकोँ, लहहु जानकी लाल ॥ ५ ॥

षट्पात

रावनसे जहँ करखि करखि हारे कोदंडहिँ ॥

ईतर नृपहु हत ओज बिमद हुव परसि प्रचंडहिँ ॥

जनक भूप यह जानि कहिय अनुचित पैन किन्नौ ॥

अवितत कन्याकाल दिष्ट पुत्रिय हत दिन्नौ ॥

गत छत्र बीज भासत धरनि कुपि सुँ सुनि लखन कहिय

अनुचित विदेह जंपहु यह न मन्नहु प्रभु रघुकुल महिय ॥ ६ ॥

दोहा

है न मोहि अग्रज हुकम, कितो सरासँन काम ॥

तुन जिम तोरौ कर करखि, रुचि जो धारहिँ राम ॥ ७ ॥

षट्पात

१ बाण के पांखों के पवन से मारीच को समुद्र में डाला २ राजा जनक के यज्ञ को देखने चले ३ पापाण ४ विश्वामित्र और दोनों कुमरों (राम लक्ष्मण) को ५ यज्ञ शाला में ६ खेंच खेंच कर ७ धनुष को ८ दूसरे राजा भी हतक्रान्ति होकर मद रहित हो गये ९ अयंकर धनुष का स्पर्श करके १० सैन यह नेम अनुचित किया, ११ देव ने कन्यापन का १२ समय १३ न्यून दिया और भूमि के ऊपर १४ क्षत्रियों का धीज गया हुआ सालूम होता है १५ सो (यह) सुनकर लक्ष्मण ने कहा कि यह अनुचित मत १६ कहो १७ बड़े भाई का १८ धनुष चढ़ाने का कार्य कितना है ॥ १७ ॥

सेस कथन यह सुनत अखिल चितये कुमारन इत ॥  
 कौसिक मुनि तहँ कहिय देहु रघुराज चाप चित ॥  
 सुनि समेटि पटपीत अखिल प्रेरक हसि उठिय ॥  
 रहे निरखि रुद्रादि मिलत लस्तके प्रभु मुष्टिय ॥  
 कंपात धरनि धनु करि निकट बाम सु करपल्लव बहिय ॥  
 सद्गुल छुधित डगधरि समुख गड्डरि जनु खिलति गहिया ॥  
 कर घल्लत कौदंड चकित दिकपाल चमंकिय ॥  
 चलि पब्वय भुव चक्र मँक१संकर२अज३संकिय ॥  
 कौसलराज कुमार करखि टंकारि सहज क्रम ॥  
 तन सम डारिय तोरि दुसह दुवखंड अरिंदम ॥  
 पिक्खिय विदेह अंतहपुरहु गुन अवाज लोकन गई ॥  
 श्रीराम वरस द्वादस१२समय जनक टेक जानन दई ॥९॥  
 मैथिल नृप अतिमुदित पत्र साकेत पठायउ ॥  
 सहित भरत१सत्रुघ्न२अधिप दरसथ तहँ आयउ ॥  
 सीरध्वज नृप समुख बिहित क्रम जाय बधाये ॥  
 लगन उदय चउ४ललित रूच्य तोरन पधराये ॥  
 नीराजनंदि सब सद्धि नैय सतानंद मुनि अगग सरि ॥  
 मंडप प्रदेस अनै मुदित क्रम अर्चन निगमोक्त करि ॥१०॥

१ लक्ष्मण का यह कहना सुन कर सब कुमारों की ओर देखने लगे ३ सम्पूर्ण संसार को प्रेरणा करनेवाले (परमेश्वर) ४ महादेव को आदि लेकर सब देख रहे थे ५ धनुष के मध्यभाग (मूँठ) पर रामचन्द्र की मुठ्ठी मिलते ही भूमि को धुजाते हुए धनुष को समीप लेकर बाम हाथ की ६ अंगुलियों में प्राप्त किया सो मानों खेलते हुए ७ भूखे ८ सिंह ने सामने पैड देकर भेड़ पकड़ा ॥ ८ ॥ १० धनुष पर हाथ घालते ही दिशाओं के हाथी चकित होकर चौंक गये और भूमि का गोला और पर्वत ११ चलायमान होगये १२ इन्द्र शिव और १३ ब्रह्मा डरगये, १४ शत्रुओं को दंड देनेवाले १५ जनाने ने भी देखा १६ प्रत्यंचा का शब्द ॥ ९ ॥ १७ अयोध्या को पत्र भेजा १८ राजा सीरध्वज (जनक) पेसवाई को गया, सुन्दर चार १९ दुलहे २० आरती आदि सब २१ नीति साधकर शतानन्द मुनि आगे चल कर वेद के कहे हुए क्रम से पूजन करके मंडपस्थान में लाया ॥ १० ॥

( दोहा )

पीठे १ चरनधावन २ प्रमुख, रचि पुब्बावर राह ॥  
किन्नाँ कुमर चतुष्क ४ को, विधिजुत जनक विवाह ॥११॥  
सीता १ दुलहनि समय गहि, दुल्लह राम १ उदार ॥  
मंजु भरत २ वर मांडवी२, किय वामांग कुमार ॥ १२ ॥  
इम पुनि लक्खन ३ ऊर्मिला३, निज किय धर्मनिधान ॥  
सञ्जुधन हु श्रुतकीर्ति ४ सुभ, व्याहिय उचित विधान ॥ १३ ॥

( पटपात् )

साकेतप चउ ४ सुतन पाणिपीडनँ सुभ सद्धिय ॥  
दायज अगनित द्रव्य दास दासिय मैथिल दिय ॥  
पटुँ विधि दंपति २ पुज्जि सिक्ख अप्पिय बरात सह ॥  
राम नाम अभिराम गलित किय राम अनाग्रह ॥  
कोसला समुख पहुँचे कुमर नृप लडाय रक्खे निकट ॥  
कैकेयराज तनया कुटिल बहुरि फंद डारिय बिकट ॥१४॥  
दुव २ अगँ वरदान कथित दसरथ देनँ करिं ॥  
कैकेयी मन मुदित भूप किय प्रचुर अंक भरि ॥  
अक्खिय तिहिँ अवकास बहुरि मै लाहि लैहाँ वर ॥  
तिन्ह चाहत तवतैहि सुगम पिकख्यो अबँ ओसर ॥  
चिंतहु करार नृपसौँ चवियँ कोसलेस भरतहिँ करहु ॥

१ आसन और चरण धोने आदि आगे पीछे की राह रच कर मनोहर ३ अयोध्या के पति (दशरथ) ने चारों पुत्रों का शुभ ४ विवाह किया ५ जनक ने दुन्दर विधि से ७ स्त्रीपुरुष के जोड़े को पूज कर बरात को सीख दी वहाँ रामचन्द्र ने बिना ही आक्रमण (घेरा लगाने) के परशुराम के ८ मनोहर नाम को गलित कर दिया अर्थात् परशुराम का मान मर्दन किया ९ कैकेय राजा की पुत्री [कैकेयी] ने फिर भयंकर फंदा डाला ॥ १४ ॥ दशरथ ने आगे कैकेयी को दो वरदान दिये थे कि जो कहेंगी सो देंगे इस प्रकार कैकेयी को अंकमें लेकर बहुत मन प्रसन्न किया था, उसने कहा कि जब अवकाश होगा तब ले लूँगी ? अब समय देखा ?? राजा से कहा कि आपका करार याद करो और रामचन्द्र को वनवास देकर अयोध्या का

वनवास देहु रामहिं बिदित अधिप इष्ट मम आदरहु ॥१५॥

( दोहा )

क्रिय देवन याकी कुमति, हित निज साधक होय ॥

अकिखय रानी याहितै, दिजै ए वर दोय २ ॥ १६ ॥

( पटपात )

सुनत बज्र सिर परिय कहुन अकिखय हितकातर ॥

पाटलपट अप्पे सजति जननी रघुवर कर ॥

निरखि तबहि सब नाथ जथा अभिषेक तथा गहि ॥

सदा मुदित संकभित चलन लखन १ सीता २ चहि ॥

अटकेहु प्रनमि पितरन उभय २ भा जिम हठि संगहि भये

साकेत सहर उछव समय गजब फुटि हा ख गये ॥ १७ ॥

पट भूखन दिय पुष्प कल्पवृक्ष १ लता २ पात्रन कहैं ॥

सुगहा जिम अज्जू सुमंतु तिन्ह रथ चढाय तहैं ॥

किन्न गमन चउ ४ कोस प्रजा लगिय पहुँचावन ॥

राजा भरत को करो, यही मेरा प्रिय करके हे राजा मेरा आदर करो ॥१५॥

१ कैकेयी की २ इसी कारण से राणी ने कहा कि ॥ १६ ॥ ३ कैकेयी के स्ने-

ह के कायर दशरथ ने पीछा छोड़ नहीं कहा माता की सौति ( सोक )

कैकेयी ने रामचन्द्र के हाथ में ४ भगवां वस्त्र दिये जिनको देख कर

सब के स्वामी रामचन्द्र ने राज्याभिषेक के वस्त्र लेवें इस भाषिक ले-

लिये, जो सदैव आनन्द से साथ चलते हैं उन लक्ष्मण और सीता ने सा-

थ चलना चाहा जिनको मना किया तो भी माता पिता और सास ससुर-

र को प्रणाम करके हठ के साथ छाया के समान साथ ही हुए, इसप्रकार

अयोध्या शहर में उत्सव के समय गजब करनेवाला हाहाकार शब्द फू-

दगाया ॥ १७ ॥ प्रफुल्लित होकर कल्पवृक्ष के समान रामचन्द्र ने और कल्प-

लता के समान सीता ने पात्रों को वस्त्र और आभूषण दिये अथवा कल्प

वृक्ष और कल्पलता पुष्प देवे जैसे रामचन्द्र और सीता ने पात्रों को वस्त्र

और भूषण दिये और ४ स्तुपा ( पुत्र की स्त्री ) को ६ ससुरा चढावे ऐसे ७

सुमंत्र ने सीता को रथ पर चढाया और रामचन्द्र चार कोस गये वहां



बारि गहिर गुन बद्ध नैक छोरत जिम नावन ॥

दसरथ नरेस करतैं बिछुटि किम तत्थहि ठहरन कहैं ॥

मखतूल रज्जु साकेत भन रामचन्द्र संगहि रहैं ॥ १८ ॥

दोहा

पकख बिसद मेधु पंचमीप, तटिनी सरजू तीर ॥

नगर कोसलातैं निकसि, वसे रँति रघुबीर ॥ १९ ॥

सोवत तहँ परिहरि सबन, छिप्र कढे जगि छन्न ॥

तजि पुहल असु जिम तरल, समन सुमंत्र प्रसन्न ॥ २० ॥

दूजेरदिवस मिलान दिय, शंगवेर पुर सुद्ध ॥

ईस तहाँको गुह मिलयो, प्रभुसंन थिल्ल प्रबुद्ध ॥ २१ ॥

वय बसुधसम उपवीत लिय, बारह श्वेस विवाह ॥

अब्द पचीसमरूप किय अटन, राघव कानन राह ॥ २२ ॥

षट्पात

शंगवेर पुर सवन प्रनत लग्गो प्रभु पायन ॥

दिय सुमंत्रकहैं सिक्ख तत्थ परपुरुष परायन ॥

कहिय जाहु साकेत कहहु किय हुकम धनीको ॥

तक पहुंचाने को प्रजा साथ लगी। जैसे गहरे जल में रस्सी से बंधी हुई नाव थोड़ी सी छोटते ही वहां नहीं ठहर सकती तैसे ही प्रजा रूपी नाव दशरथ के हाथ से छूट कर वहीं पर कैसे ठहर सकती है। रसम की डोरी से बंधा हुआ अयोध्या का मन रामचंद्र के साथ ही रहता है ॥ १८ ॥ १ चैत्र सुदी पक्ष की पंचमी को सरजू नदी के तट पर २ रात्रि ॥ १९ ॥ ३ शरीर को छोड़ कर ४ चंचल प्राण चला जाता है ऐसे रामचन्द्र सब को सोते हुए छोड़ कर छाने जगकर शीघ्र कदगये जिसके साथ सुमंत्र गया इससे वह मन से प्रसन्न रहा ॥ २० ॥ ५ सुकाम ६ बुद्धिमान् ॥ २१ ॥ रामचन्द्र ने आठ वर्ष की अवस्था में जनेऊ ली, बारह वर्ष की अवस्था में विवाह किया और पचीसवें वर्ष में वन के मार्ग में गमन किया ॥ २२ ॥ न ज्ञाता सहित उसव के आश्रय परम पुरुष विष्णु भगवान् ने ८ अयोध्या को जा और यह कहना कि जैसी स्वामी की आज्ञा थी वैसा कर आया हूं अर्थात् रामचन्द्र को वन में छोड़ आया हूं यदि ऐसा नहीं कहेंगा तो कैकयी ठीक

कैकेयी करिहै न नतो प्रत्यय कछु नीको ॥

स्वीकृत न किन्न दसरथसचिव तदपि बुद्धि पलटाय तिम  
पठयो सुमंतु रथजुत पुरहिँ अहरि बन रघुनाथ इस ॥२३॥

दोहा

सृंगवेर सन धारिय सब, बैखानस व्रतश्वेसर ॥

बटपय तप्ता बंधिकै, अटन किन्न आखिलेस ॥२४॥

आश्रम भारद्वाज अब, पहुँचे पयन कृपाल ॥

कुस दब्बत अपदत्र क्रम, विलसत सानुज बाल ॥२५॥

रत्ति निबसि पुनि गमन रचि, चित्रकूट नगपाल ॥

ऋषिजन अनुमत तहँ रहे, कछु दिन कहुन काल ॥२६॥

विजन थान करि बास्तुविधि, छदनन छति छवाय ॥

वसे मुदित बहु वासरन, रुचि करि तहँ रघुराय ॥२७॥

षट्पात

समय इक सौमित्रि गहन फल मूल गहन गय ॥

मैथिलजाश्रघुमुकुटललित विलसत उटजालय ॥

स्वपति अंक सीताहु सोय गहि गहिर गुडाका ॥

पुनि जगि पति पौढाय रही ससिजुत जिम राका ॥

विश्वास नहीं करैगी, यह सुमंत्र ने स्वीकार नहीं किया तो श्री उसकी बुद्धि पलटाकर सुमंत्र को रथ सहित अयोध्या को भेज कर रामचन्द्र ने वन को आदर दिया (वन में गये) ॥ २३ ॥ शृंगवेर पुर से ही रामचन्द्र ने वानप्रस्थ का व्रत और भेस धारण किया। बड़ के वृक्ष के दूध से जटा बांध कर सब के स्वामी ने गमन किया ॥ २४ ॥ शृंगवेर विना पगरक्खी (जूते) डाँभ को दवाते हुए छोटे भाई और स्त्री सहित विलास करने लगे ॥ २५ ॥ २ रात्रि में निवास करके ऋषियों के आज्ञाकारी होकर चित्रकूट नामक पर्वतराज में रहे ॥ २६ ॥ ३ निर्जन स्थल में ४ घर बनाने की भूमि को विधि पूर्वक ५ पत्तों से ऊपर की छत को छाकर ६ बहुत दिनों तक ॥ २७ ॥ ७ लक्ष्मण फल मूल ग्रहण करने को वन में गये सीता पणकुटी में अपने पति की गोदी में गहरी निद्रा लेकर सोई, फिर आप तो जग गई और पति को पौढा कर ऐसी रही जैसी चन्द्रमा को लेकर पूर्णिमा, वहाँ इन्द्र के पुत्र मूर्ख जयन्त ने

तहँ सठ जयंत वासव तनुज करटकाय छवि देखि छकि ॥

जननी उरोज चुंबन जहर त्रोटि त्रयश्रमारीय तमकि ॥२८॥

अर्तुल चंचु आघात चलिग सोनित पिचकारिय ॥

प्रभु लग्नन भय पाय नहिन अंवा सु निवारिय ॥

छुवत छतज जगि छिप्र सौं क धरि सहज ब्रह्मसर ॥

द्विक पर मुक्तत दहन दहन लगिय तिहि दुद्धर ॥

भमि खल सभिक सकरि १४ भवन सु पुनि आय राघव सरन ॥

असु पाय भयउ बंदत अभय चंडाकिरनकुलपति चरन ॥२९॥

दोहा

अखिय प्रभु निज अस्त्रसन, तू रक्खन निज तोर ॥

काकहिँ इकदग हीन करि, ज्वलन समावहु जोर ॥३०॥

समिति सभ्यो तव ब्रह्मसर, करि जयंत कहँ कान ॥

द्विककुल तवतँ इकदग, यहहु धरत अभिधान ॥ ३१ ॥

( षट्पात् )

उत सुमंतु पुर जाय कहिय रघुवर जिम किन्नी ॥

दसरथ सुनत सदाहँ दुतहि तनु निज तजि दिन्नी ॥

आये इत अखिलेस भरत हो तव मामालय ॥

काकपत्नी का स्वरूप करके सीता माता के कुचों से विपचूसने के लिये खींच कर तीन चौंच मारी ॥ २८ ॥ चंचु के ? बहुत आघात से १ रुधिर २ शीघ्र एक ४ तिनका लेकर ब्रह्मवाण करके ५ उसकाक पर छोड़ा उसकी अग्नि से वह जलने लगा. भय सहित वह दुष्ट चौदह लोकों में भ्रम कर फिर रामचन्द्र के शरण आया और प्राण पाकर सूर्यवंश के पति के चरणों में नमस्कार किया ॥ २९ ॥ रामचन्द्र ने अपने अस्त्र से कहा कि तू अपना तेज रखने के लिये इस काकपत्नी का एक नेत्र फौड़ कर अपनी अग्नि को सिमेट ले ॥ ३० ॥ तब अग्नि को समेट कर वह ब्रह्मशर आप भी शान्त होगया. जयंत को काखा किया जब से ही काक पत्नियाँ ने काण नाम धारण किया है ॥ ३१ ॥ ६ दाह सहित ७ शीघ्र ही अपना ८ शरीर छोड़ दिया ९ सब के स्वामी (रामचन्द्र) वन को आये तब भरत अपने मामा के घर थे जहाँ विरूद्ध

पिक्खि स्वपन प्रतिकूल गेह अप्पन आतुर गय ॥

वन राम वास १ नृपनास २ बलि सुनि बिहाल रोवत सतत ॥  
निजमाय तरजि खिल दुवञ्जननि बंदन किय परि पय विरता ३२ ॥

नृपहिं अप्पि तिलनीरं भरत सकुटुंब सोक भरि ॥

नर नागैर १ जानपद २ कटक १ पुनि सचिव २ संग करि ॥

चित्रकूट रुख चलिय संग लै गुह ढिग जावत ॥

पृतनादिक तजि पिठि अगग पहुँच्यो अकुलावत ॥

नभरज बितान इत प्रभु निरखि लखन प्रति अक्खिय ललित ॥  
बिनु कटक खेह न इती बढत है खलु आवन भरत हित ॥ ३३ ॥

सुनत एह सौमिलि भनिय दासहिं प्रभु भेजहु ॥

अप्पहिं मारन आत लुंछि मै तिहिं अहाँ लहुं ॥

किय बर्जित सुनि कोसलेस भरतहु इहिं अंतर ॥

इक मिजल दल अगग सगुहं पहुँचे अग्रेसर ॥

पहिचानि निठि इतउत परत गिरत पाय प्रभु लाय गल ॥

आगम निदान पुच्छिय अभय कहहु भरत कौसल कुसल ॥ ३४ ॥

( दोहा )

विजन मंत्र तव है कि बलि, है कि सत्रु मदहीन ॥

है कि जनक आमय रहित, प्रकटहु हेतु प्रवीन ॥ ३५ ॥

स्वप्न देख कर घबराकर अपने घर गये तहां रामचन्द्र का वन में जाना और फिर दशरथ का नाश सुन कर १ निरन्तर २ बाकी की ३ विशेष प्रीति युक्त होकर ॥ ३२ ॥ ४ तिलांजली देकर ५ नगर निवासी ६ देश में रहनेवालों को ७ सेना को पीछे छोड़ कर आगे पहुँचे. इधर रामचन्द्र ने आकाश में खेह को फैली हुई देख कर लक्ष्मण से मनोहर वचन कहे कि बिना सेना के इतनी खेह नहीं बढ़ती इससे निश्चय ही यह रज भरत के आने से है ॥ ३३ ॥ ८ लक्ष्मण ९ लुंचन करके १० शीघ्र ११ सेना से एक मंजिल आगे १२ गुह सहित १३ सब से आगे १४ आने का कारण पूछ कर कहा कि हे भरत सम्पूर्ण कौसल देश कुशल है सो कहो. तुम्हारा मंत्र (सलाह) कोई दूसरा मनुष्य जानसक्ता है कि नहीं? फिर तुम्हारे शत्रु मदहीन हैं कि नहीं? पिता (दशरथ) रोग रहित हैं कि नहीं? हे प्रवीण इनका कारण प्रकट करो ॥ ३४ ॥

( पट्टपात )

भरि लोचन सुनि भरत कहिय प्रभु जब इत आये ॥  
 दुख इहि सतम ७ दिनहि सुपहु परलोक सिधाये ॥  
 मूँय अमृत साकेत पट्ट निज धरहु पधारहु ॥  
 रुदन पुब्ब सुनि राम बिहित जन कहिँ दिय बारहु ॥  
 करि न्हान सरित मंदाकिनिय भरि उपहारन सुख भुव ॥  
 विधि श्राद्ध सहि श्रद्धा बहुल छदनसदन पुनि आतहुव ॥३६॥  
 अह दूजेर तँहँ आय मिले गुरुजनहु प्रसू मुख ॥  
 भरत सच्यंजलि मनिय स्वामि भुग्गहु नृपता सुख ॥  
 को लुप्पत प्रभु कहिय जनक संधा सुत जीवत ॥  
 राज्य दयित तुम करहु रणगा हम भजहिँ धर्मरत ॥  
 मन्थ्यौ न राम जब इम मुरन लैवे व्रत दारुन लगिय ॥  
 निजसुतहिँ सत्यपालक निरखि कौसल्याहु निदेस किय ॥३७॥

( दोहा )

प्यारे अनुजहि पादुका, अप्पि जाहु रघुईस ॥  
 भरत उठावहिँ राज्यभर, सनैति तिन्हैँ धरि सीस ॥ ३८ ॥  
 गगनहु हुव तिहिँ खिन गिरा, भरत प्रबोधन पाय ॥  
 करन देव द्विज काजकौँ, रणगा अटन रघुराय ॥ ३९ ॥

आपइधर आये जिसके सातवें दिन इसी दुःख से वह श्रेष्ठ राजा परलोक सिधा गये अब अमृत रूपी अयोध्या का पाट शून्य है जिसको पधार कर धारण करो यह बात रामचन्द्र ने रुदन पूर्वक सुन कर पिता को जलांजली दी। सामग्री से शुद्ध भूमि को भर कर बहुत श्रद्धा से श्राद्ध करके फिर पत्तों के छाये हुए घर में आये ॥ ३६ ॥ दूसरे दिन माता आदि गुरुलोग भी आ मिले जब भरत ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे स्वामी राजापन का सुख भोगो तब रामचन्द्र ने कहा कि कौन ऐसा पुत्र है कि जो अपने जीते जी पिता की प्रतिज्ञा को लोपै। वह प्यारा राज तुम करो हम धर्म दो प्रीति रख कर वन सेवन करेंगे १ कौसल्या ने आज्ञा की ॥ ३७ ॥ २ राज्यभार ३ नम्रता सहित ॥ ३८ ॥ उस समय आकाशवाणी हुई कि हे भरत ४ विशेषज्ञान पाकर, देवता और ब्राह्मणों के कार्य करने को रामचन्द्र वन में जाते हैं ॥३९॥

आग्रह तजहु बिचारि इम, सुनि भरतहु मन सुद ॥  
 प्रभुकी सिर धरि पादुका; बुल्लिय विदित प्रबुद्ध ॥ ४० ॥  
 तक्के जे व्रत राम तुम, अब तेही मम आहि ॥  
 राज्य करहिं प्रभु पावरी, आगम अवाधि निबाहि ॥ ४१ ॥  
 अब्द चउदह १४ लांघि इत, दैहो चित्त न देव ॥  
 देखहु तो निजदासको, आलय पावक एव ॥ ४२ ॥  
 बदि इम लै सब रामव्रत, सह कुटुंब निजसत्थ ॥  
 गहिय भरत साकेत मग, समुक्ति भविष्य समत्थ ॥ ४३ ॥  
 कछु अंतर साकेततैं, नंदीग्राम सुधाम ॥  
 भक्त रहिय तोलौ भरत, राह निहारत राम ॥ ४४ ॥

षट्पात

जे प्रभु व्रत लिय भरत सचिव मुख कति न तेहि लिय ॥  
 इत रामहु छुपि अटन बिपिन दंडक प्रवेस किय ॥  
 तहँ विराध क्रव्याद गहिय सीता खावन हित ॥  
 भीमकाय पुनि भनिय चलहु न करहु मोचन चित ॥  
 सुनि प्रभु छुराय सैरध्वजिय मारि विराधहिं दिय मुकति ॥  
 तिहिं कहिय सबभ गडहु तनुव गज १ ह म २ अनु पावैं न गति ॥ ४५ ॥

यह विचार कर १ हठ छोड़ दो २ पावड़ी [खड़ाऊ] ३ विद्वान् भरत बोले ॥ ४० ॥ हे रामचन्द्र जो व्रत आपने लिये वे ही व्रत अब से मेरे हैं, आपके पीछे आने की अवधि तक आप की पावड़ी राज्य करेगी ॥ ४१ ॥ हे देव जो चौदह वर्ष लांघ कर इधर आने को चित्त नहीं देओगे तो आप के दास [भरत] के घरों को अग्नि ही देखोगे अर्थात् घर सहित जलजाऊंगा ॥ ४२ ॥ यह कह कर जितने व्रत रामचन्द्र ने लिये थे वे ही नियम लेकर भरत ने सब कुटुम्ब को अपने साथ लेकर भावी को बलवान् जान कर अयोध्या का मार्ग लिया ॥ ४३ ॥ ४ सचिव आदि ने ५ दंडक वन में विराध नामक राक्षस ने सीता को पकड़ ली उस भयंकर शरीरवाले ने कहा कि चले जाओ ६ छुड़ाने का चित्त मत करो यह सुनके रामचन्द्र ने जानकी को छुड़ा कर विराध को मार कर मुक्ति दी उस विराध ने कहा कि मेरे शरीर को भूमि में गाड़ दो, खड़े के बिना हम पीछे गति नहीं पाते [राक्षस लोग खड़े में गडने से ही गति पाते हैं] ॥ ४४ ॥

चिराध ने कहा वैसे ही उसको भूमि में दबाकर शरभंग ऋषि के स्थान पर जाने का चिराध ने संकेत [चिराध ने मारते समय रामचन्द्र से कहा कि यहाँ से आप शरभंग मुनि के आश्रम पर जाइये वहाँ आपको बड़ा लाभ होवेगा उसी संकेत के अनुसार] बताया था उस माफिक वहाँ गये मुनि आये का आदर करके मिले और हरि [रामचन्द्र] ने नेह भर कर आलिङ्गन [भुजों से भर कर मिलना] किया ॥ ४३ ॥ मार्ग देखते हुए शरभंग ने नीठ नीठ रामचन्द्र को देखे और रामचन्द्र के देखते हुए अग्नि में प्रवेश कर गये वहाँ रामचन्द्र को देखने के लिये वालखिल्य आदि नाना प्रकार के मुनि आये उनमें रदऊल (जिनके दन्त ऊँखल का काम देते हैं) तथा पत्ते, सूर्य की किरणें, जल और पवन भक्षण करनेवाले बहुत थे. शरभंग ऋषि से अपने द्धित के लिये मिलने को हरे रंग के घोड़े रथ में जोत कर इंद्र आया था उसको रामचन्द्र ने देखा ॥ ४७ ॥ १ पुनि २ मनुष्यों में उत्तम ॥ ४८ ॥ रामचन्द्र ने कहा कि ३ अगस्त्य का आश्रम किधर है ४ मार्ग का क्रम बताया ५ पीपल वृक्षों

भिंटे \* कुंभजभ्रात अगग विचरत पथं अंकन ॥

आतिथ्य प्राय तिनसौं उचित घटभव मुनिके छदनघर ॥

पहुँचे सुतीक्ष्ण पणोंक सन प्रमित अट्टगव्यूति पर ॥ ४९ ॥

दोहा

मुनि अगस्त्य तहँ क्रिय महत, प्रभुपूजन मुद पाय ॥

इंद्र गयो धरि अस्त्र जे, अप्पे रामहिँ आय ॥ ५० ॥

अक्खय धनु १ तूणा २ ५५ दि ए, हेति धरे रघु हेलि ॥

निरखे बहु देवन निलय, ठाये कलिमल ठेलि ॥ ५१ ॥

विचरत इम दंडक बिपिन, कडि बरस दस १० काल ॥

वसे जाय प्रभु पंचपवट, सुभग विरचि छदसाल ॥ ५२ ॥

पट्टपात्

पहिलै इक मनुपुत्र भोज दांडिक्य भूप हुव ॥

सु लहि पुरोहित सुक्र भयउ प्रभु सत १०० जो जैन भुव ॥

अरजाँ जिहिँ अभिधान सुक्र तनया सु सयानी ॥

भुग्गी तिहिँ गहि भीत बिजय खलनृप बिललानी ॥

कन्या सु कुकृत जन कहिँ कहिय तमकिँ सुक्र दिय साप तब ॥

ममँ थल निवारि सत्तम ७ दिवस यह भुव दब्बहु धूलि अब ॥ ५३ ॥

( दोहा )

सत्तम ७ दिन कैविके सपन, धन बुडिय रज घोर ॥

का धन \* अगस्त्य के भाई से मिले। मार्ग को चिन्हित करते हुए २ सुतीक्ष्ण मुनि की पर्णकुटी से आठ गव्यूति (दो कोश को गव्यूति कहते हैं) अर्थात् सौलह कोश पर अगस्त्य मुनि की पर्णकुटी पर पहुँचे ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ३ अक्षय धनुष भाथा आदि शस्त्र रघुवंश के सूर्य ने धारण किये और बहुत देवताओं के घर देखे ४ प्रसिद्ध ५ पापों को हटाकर ॥ ५१ ॥ ६ पर्णकुटी रचकर ॥ ५२ ॥ ७ चार सौ कोश की भूमि का स्वामी हुआ ८ अरजा नामक शुक्राचार्य की पुत्री को उस दुष्ट राजा ने पकड़ कर ९ विजय करके अथवा विमान में बिठाकर भोगी जिसके भय से वह रोई, इस खोटे कृत्य को कन्या ने पिता (शुक्र) से कहा १० क्रोध करके ११ मेरे स्थल को छोड़कर ॥ ५३ ॥ १२ शुक्र के आप से उस राजा के सीमा तक फैले हुए देश को रज की वर्षा होकर दबा



रामचन्द्रवर्णन ] तृतीयराशि—ऊनचत्वारिंशमयूख ( ८११ )

तस जनपद जोजन सतक १००, दब्ब्यो सीमन दोरा ॥ ५४ ॥

बच्च्यो सुक्र आश्रम विहित, मित इके जोजन मान ॥

जनस्थान अभिधान जो, थिरा बिदित हुव थान ॥ ५५ ॥

बज्ज्यो सब दंडक विपिन, दब्ब्यो जो रज देस ॥

बिरचत तामैं पंचपवट, इम पहुँचे आखिलेस ॥ ५६ ॥

जनस्थान बिच जिन दिनन, सहँसन आसिर सत्थ ॥

रावनको थानौ रहत, मुख्य खराँदि समत्थ ॥ ५७ ॥

ताके अंतिक समय तिहिँ, साबुज राम ससीत ॥

पंचपवटी निवसे प्रथित, भुवनन करत अभीत ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वी-  
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव ६८ वेलो ६८।१ पयामसमयव  
र्णनविषयजयच्चतुर्जननसमुद्देशसङ्गतवैवस्वतात्मजनुरिक्ष्वाकु ६पट्ट  
पपुत्रीविकुत्ति ७ सन्ततिसमर्थनाऽन्तर्गतश्रीवैदेहीवल्लभचरित्रेश्रीरा  
मपञ्चवटीनिवसनमष्टत्रिंशो ३८मयूखः ॥ ३८ ॥ आदितोऽशीतितमः ॥ ८० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

( हरिगीतम् ) .

अटमान दंडक रणरायँ रघुराज पंचपवटी रहे ॥

.लिया ॥ ५४ ॥ १ एक जोजन प्रामाणवाला वह स्थान भूमि पर जनस्थान  
के नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥ ५५ ॥ जिस देश को रज ने दयालिया था वह  
दंडक नाम से प्रसिद्ध हुआ २ सब के स्वामी ॥ ५६ ॥ ३ राक्षसों का साथ  
४ खर को आदि लेकर बलवान् ॥ ५७ ॥ ५ उसीके समीप छोटे भाई स-  
हित और सीता सहित प्रसिद्ध पंचवटी में वास किया ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण वंश वर्णन में बसुदेव और वेला के विवाह समय वर्णन करने के वि-  
षय ( आश्रय ) में सूर्य वंश के कीर्तन के साथ वैवस्वत मनु के पुत्र उत्पत्ति  
में इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुत्ति की सन्तान के समर्थन के भीतर श्रीसी-  
ता के प्यारे ( रामचन्द्र ) के चरित्र में रामचन्द्र का पंचवटी निवास करने  
का अङ्गीकार सवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३८ ॥ और आदि से अस्सी मयूख हुए ॥ ८० ॥  
इसप्रकार दंडक वन में भ्रमण करते हुए रामचन्द्र पंचवटी में रहे

राचि पर्णसाल विसाल ब्रह्म दिन सेस कङ्कनको चहे ॥  
 तिहिंठाँ बिभीखनसौं बडी बहिनी दसाननकी गई ॥  
 जिहिं नाम सुप्पनखा सु रामहिं रीझिकैं लखती भई ॥१॥  
 सजि रूप सुंदर यौ कह्यो करि मोहि राघव सुंदरी ॥  
 सौमित्रि आहि अदारकोँ इक १ दारहौं प्रभु उच्चरी ॥  
 तव जाय लक्ष्मनको सुनावत सेस उत्तर यौ दगो ॥  
 तजि स्वामिनीपनतैं दृथा यह किंकरीपन क्यों लयो ॥२॥  
 नहि खान १ पीवन २ सैन ३ चैन रु अन्न ४ है न निवासकोँ ॥  
 सुनि रक्खसी पुनि जाय जंपिय लैन जानकि ग्रासकोँ ॥  
 तव राम सस्मित सैनसौं अनुजात कहुि कृपानिका ॥  
 अति १ नक्क २ कटि दई विडारि धुरीण जो अघधानिका ॥३॥  
 जनथानमैं तिहिं जाय दूखन १ सौं त्रिमस्तक २ सौं कह्यो ॥  
 खर ३ सौं तथा कहि दुर्मुखी हिय जाय रावनको दह्यो ॥  
 जनथानसौं हु हजार सकरि १४००० रक्खसी पृतना चली ॥  
 रनघोर तानक बंब १ आनक २ है अचानक भू हली ॥ ४ ॥  
 लखि खेह अब्ध विदेहजा प्रभुनैं पठाय दरी दई ॥  
 तस द्वार लक्ष्मन सज्ज गखिख रु दिट्टि अगग स्वयं लई ॥

पत्तों में छड़ी हुई पड़ी शाला में बाकी के दिन निकालने चाहें १ वहां पर रावण की  
 बहिन रज्जुपणखा ॥ १ ॥ है रामचन्द्र मुक्तको तुम्हारी स्त्री बनालो जय रा-  
 मचन्द्र ने कहा कि मैं तो एक स्त्री रखने का नियम रखनेवाला हूँ और लक्ष्म-  
 ण बिना स्त्रीवाला है उसको पति बना. तब वही चार्ता लक्ष्मण से कही. ल-  
 क्ष्मण ने कहा कि मालिक रूपन को छोड़ कर दासीपन क्यों लेती है ॥ २ ॥  
 भरतने को घर भी नहीं है शराचमी ने यह सुन कर फिर रामचन्द्र से जा-  
 कर कहा कि पानों मुझे स्त्री बनालो नहीं तो सीता को स्वाजाऊंगी. हमने  
 हुए रामचन्द्र के इमारें में छोड़े भाई (लक्ष्मण) ने तरवार निकाल कर कान  
 और नाक काट कर निकाल दी जा पापों के आधार में मुख्य थी ॥३॥ १ रूपण  
 नामक राजन से और त्रिशिरा नामक राजस से छोटे मुखवाली ने ६ सोना  
 ७ घोर युद्ध को फैलानेवाले नकारे और नोवत बजकर ॥ ४ ॥ आकाश में खेह  
 देख कर रामचन्द्र ने सीता को एक मुफा में भेज दी उस मुफा के द्वार पर

कट कच्छिकै पट पीत उत्कट बल्लु बांधि जटावली ॥  
 कसि पिष्टि अकखयतून ज्या फटकारि चाप लयो बली ॥५॥  
 सिर सेसके पय गड्डि संगर साँवरो समुहो भयो ॥  
 हनिकै चउदह ही हजार १४००० अनीकको पद जो दयो ॥  
 घटिकाऽर्ध जुत्त मुहुत्त २१३ मै निसचार चकहि चूरिकै ॥  
 खर १ दूखन २ त्रिसिरा ३ हनै धनुज्या दिसामुख पूरिकै ॥६॥  
 दससीस चार अधीस बत्त यहै अकंपन जानिकै ॥  
 बरनी निसाचरराजसौ पुरलंक आतुर आनिकै ॥  
 बसि द्वै २ मनुष्यन रणगा दंडक स्वैरता बहु बित्थरी ॥  
 प्रभुकी स्वसा जिन नक्र १ कर्ण २ विहीन सूर्पणाखा करी ॥७॥  
 जनथानको अपनौ अनीक खरादि ३ संजुत संहरयो ॥  
 अपमान सो प्रभुको कुपावन काल कूरननै काख्यो ॥  
 तिन संग है इक १ नारि सुंदर अद्वितीय त्रिश्लोकमै ॥  
 हरि ताहि आनहु दुष्ट वे मरिहै परे तस सोकमै ॥ ८ ॥  
 सुनि विश्वासुत स्वीय मातुल पास जाय सुही कही ॥  
 मारीच हेमकुरंग व्है तुम जाहु दंडकमै सही ॥  
 लैजाहु दूर लुभाय रामहिं मै हरो जुवती जहाँ ॥  
 सुनि यौ नटयो वह भाँड़ने जहिं मृत्युहै तुमरो तहाँ ॥ ९ ॥

लक्ष्मण को सज्जीभूत रख कर अपनी दृष्टि राजसों की ओर आगे दी और ता-  
 ब्र होकर कमर पर पीताम्बर और सुन्दर जटा की पंक्ति को बांध ली १ आधा  
 २ प्रत्यंचा को फटकारके बलवान् (रामचन्द्र) ने धनुष लिया ॥ ५ ॥ ३ युद्ध में  
 श्याम रंगवाले [रामचन्द्र] सम्मुख हुए ४ मैन्स को वही सैन्य पद दिया अर्थात्  
 सबको शयन करा दिया ५ आधी घड़ी के सहित एक मुहूर्त [दो घड़ी] अर्थात्  
 अढ़ाई घड़ी में राजसों की सेना का चूर्ण करके ६ धनुष की प्रत्यंचा के शब्द से  
 दिशाओं को पूर्ण करके ॥ ६ ॥ रावण के हलकारों के स्वामी अकंपन ने यह या-  
 त जान कर रावण से कही ७ दंडक वन में वास करके बहुत स्वतंत्रता फैलाई  
 है. हे स्वामी आपकी यहिन सूर्पणाखा को नाक और कान बिना कर दी ॥ ७ ॥  
 ॥ ८ ॥ रावण ने यह सुनकर अपने मामा (मारीच) से जाकर कहा ८ भाण्ड-  
 ज

प्रभु राम है बलवानतैं न बिरोध चित्तहु धारिये ॥  
 सिखयो जिन्हें यह मंत्र अप्पहिं ते स्वसत्रु बिचारिये ॥  
 इम पाय मातुलसों प्रबोध स्वगेह रावनहू गयो ॥  
 इहिं काल सुप्पनखा हु आनन तास दिठि निवेदयो ॥१०॥  
 रु कहयो करी यह मो दसा जनथान सेन सबै हनी ॥  
 धिक्कार तावक भूपताकहैं जाहि जीवत यों बनी ॥  
 भगिनी प्रबोधित कैबुरेस बहोरि मातुलपै गयो ॥  
 मगमैं महाबल बैनतेय प्रभाव जो लखतो भयो ॥ ११ ॥  
 खखइंदु १०० जोजन उच्छूयी बहुपाद पादप साखपै ॥  
 खगराज बैठिय आनि खावन कुम्भ १ गै २ अभिलाखपै ॥  
 तस भार तुटिय साख लुंबत वालखिल्ल्य समेतही ॥  
 तिहिं त्रोटिमैं गहि तातपै उरगारि चल्लनकी चही ॥ १२ ॥  
 पथमांहिं कौतुक पिक्खि यों दससीस मातुलपै सरयो ॥  
 मारीच याहि बहोरि हू प्रथमोक्त आसय उच्चरयो ॥  
 तब विश्रंवासुत कुपि अक्खिय तोहि तो अब मारिहौं ॥  
 नहिं जो करै यह ओ करै बहु थान मान बढ़ारिहौं ॥१३॥

से नटा कि वहां तुम्हारा मृत्यु है ॥ ९ ॥ रामचंद्र ईश्वर हैं इसकारण बलवान्  
 से चित्त में भी विरोध नहीं करना चाहिये. आपको जिसने यह सलाह दी  
 है उसको अपना शत्रु मानो. मामा से ज्ञान पाकर रावण अपने घर गया, इसी-  
 समय सूर्यणखा ने अपना मुख रावण को अर्पण किया (दिखाया) ॥ १० ॥ १  
 तेरे राजापन को २ राक्षसों का पति (रावण) अपनी बहिन को समझाकर मा-  
 रीच के पास गया वहां मार्ग में गरुड़ के बड़े बल का प्रभाव देखा ॥ ११ ॥ सौ  
 योजन ऊंचे बड़े वृक्ष की शाखा पर एक हाथी और कच्छप को खाने को अ-  
 भिलाषा से गरुड़ आकर बैठा उसके भार से वह शाखा तूट गई जिसके साथ  
 हजार वालखिल्य ऋषि लटकर रहे थे उनके सहित ही उस शाखा को चौंच में  
 पकड़कर गरुड़ ने अपने पिता कश्यप के पास जाना चाहा ॥ १२ ॥ यह तमाशा  
 मार्ग में देखकर रावण मामा के पास चला. ४ पहिले कहा उसीमाफिक रावण  
 ने क्रोध करके कहा कि तू मेरा कहना नहीं करेगा तो अभी मार डालूंगा और  
 कहना करेगा तो बहुत स्थान देकर मान बढ़ाऊंगा ॥ १३ ॥ मारीच ने दोनों

रामचन्द्रवर्णन ] तृतीयराशि—ऊनचत्वारिंशमयूख ( ८२५ )

मारीच द्वैदिस मेचुमैं लखि अछ छ श्रीअखिलेससौं ॥

खलसंग पंचवटी गयो तपनीय मृगवरवेससौं ॥

सीताहु हाटक एनकाँ लखि रामसौं बिनती करी ॥

गहिलेहु याकँहँ वा हनौ इहिँ चर्मइष्ट हमैं बरी ॥ १४ ॥

तब सेस वारितहु चले सर चाप राम सम्हारिकैं ॥

लैजान राघवकाँ बिदूर चलयो कुरंग विचारिकैं ॥

थपि मैथिली ढिग सेसकाँ प्रभु जाय एन सु मारयो ॥

बपु वान लगगत हाय लक्ष्मन हा प्रिया सु पुकारयो ॥ १५ ॥

सुनि जानकी सु कह्यो हि देवर जाहु संकट तथ है ॥

सौमित्रि अखिय सर्वके प्रभु कौसलेस समथ है ॥

सुनि छद्मकातर कर्बुरध्वनि अप्प नाँ बिधुरा लहो ॥

जगदंब अखिय राम अर्क अथाय मोहि वृथा चहो ॥ १६ ॥

पठये कहा तुम केकईसुत राम मारन कजही ॥

सुनिकैं इती श्रुति मुंदि सेस अरण्यदेवनसौं कही ॥

तुम सखि रक्खहु जानकी जबलौं मुरौं लखि रामकाँ ॥

इम अखि सेस चलयो रु रावन सिद्ध पिखिय कामकाँ ॥ १७ ॥

ओर में मृत्यु देखकर रामचंद्र के हाथ से मरना ही अच्छा जाना । सोने का मृग बनकर रसोना का मृग देख कर रामचंद्र से कहा कि इसको पकड़ लो अथवा मार डालो इसका चमड़ा मुझे प्यारा है सो मैंने स्वीकार किया है ॥ १४ ॥ उस समय लक्ष्मण के मना करने पर भी रामचंद्र चले सीता के पास लक्ष्मण को रख कर रामचंद्र ने हरिण को मारा जिसके शरीर में बाण लगते ही हा लक्ष्मण हा प्रिया ऐसा शब्द उच्चारण किया ॥ १५ ॥ सो सुनकर सीता ने कहा कि हे देवर तुम जाओ वहां संकट है लक्ष्मण ने कहा कि रामचन्द्र सब के स्वामी बलवाले हैं छल से कायर हुए राक्षस का शब्द सुन कर आप विकलता को प्राप्त मत होओ (मत घबराओ) इस पर सीता ने कहा कि रामचन्द्र रूपी सूर्य को अस्त कराके तुम मुझको चाहते हो सो यह वृथा है ॥ १६ ॥ यह सुन कर कान सूँढ़ कर लक्ष्मण ने वनदेवताओं से कहा कि सीता ने कहा जिसके तुम सार्थी हो जब तक रामचंद्र को लेकर पीछा आज तक तुम सीता की रक्षा करना ॥ १७ ॥

धरि भिच्छुवेस रु वेसके अनुकूल ढेर तहाँ दई ॥  
 कछु दैन लगिगय मैथिली गहि तत्थ रावननै लई ॥  
 निज नामरूपप्रकासि चिंति अरोहि स्पंदनकाँ चलयो ॥  
 तिहिँ जात रोकि अनूरुको सुत आय आहव उज्झलयो ॥८॥  
 सु जटायु सठि हजार ६०००० हायन बैधरै बटपै रहयो ॥  
 कित जात तस्कर मो छतै करि लूट यौ खलसौ कहयो ॥  
 तरु तोरि पच्छनै पोततै अवनी धुजावत उत्तस्यो ॥  
 नख १ त्रोटि २ कोटिन मारिकै रथ हीन रावनकाँ करयो ॥९॥  
 हय १ सूत २ मारत बेग मारुत नावलाँ अवनी धुकी ॥  
 खगराज पत्रन बाज बाजत गाज भद्रवकी लुकी ॥  
 मगमै अचानक सिंह उठत आत अध्वग संकरै ॥  
 गहि एक रावनकी जटायु करी सु क्यौ न अलं करै ॥२०॥

संकरै लंकरै अन्त्यानुप्रासः ॥

कछुकालमैं खल हू सम्हारि रु चंद्रहास प्रहारिकै  
 खगराज पच्छति दोहु २ कटि दयो सु छोनिय डारिकै ॥  
 रु बिमान पुष्पक चिति बैठि स्वगेहलाँ उडि संवरयो ॥  
 कटि अर्घ्यमूक अहार्य पै मन अगग धावनकाँ धरयो ॥२१॥  
 तहँ जानकी कछु स्वीय भूखन उत्तरीय उतारिकै ॥

भिच्छुक का वेस धारण किया और उस वेसके माफिक ही शब्द किया। सीता को रथ पर चढ़ा कर चला जिसको रोक कर अरुण का पुत्र (जटायु) युद्ध के लिये बड़ा। १। वह जटायु साठ हजार वर्ष तक बैधरे नामी वड़ के वृक्ष पर रहा था, जिसे चोर से कहा अपने पाँखों के पवन से वृक्ष को तोड़ कर भूमि को धुजाता हुआ उतरा और फोड़ों नख और चंचू मार कर रावण को रथ हीन कर दिया। २। पवन के वेग से नाव धूलै जैसे भूमि धूजने लगी, जटायु के पाँखों के बाजे वज्र से भादप के मेघ की गर्जना छिप गई, और मार्ग में अचानक सिंह के उठने से मार्ग चलनेवाला सकड़ाई में आजाता है वह गति जटायु ने रावण की करी सो क्यौ नहीं करे क्यौंकि जटायु बल से पूर्ण था ॥२०॥ श्वेद मार कर जटायु के दोनों पाँख काट कर भूमि पर डाल दिये ४ ऋष्यमूक नामक पर्वत पर जानिकला और आगे दौड़ने का मन किया ॥२१॥ वहाँ सीता ने अपना

अध डारि रखस नैर जाय सती रही ब्रत धारिकैं ॥  
 प्रभुता बढाय बढाय दुष्ट दिखाय वैभवकोँ थक्यो ॥  
 जननी गिन्यौँ तन तुच्छ वहाँ बलि कोप उद्धत व्है वक्यो २२  
 भजि मोहिकौँ बचिहै न तो भखिलेहु याहि निसाचरी ॥  
 करि इक्कअब्द करार यौँ जननी असोक बनी धरी ॥  
 इत पाय राम कलंव हाटक एन व्है निजरूपसौँ ॥  
 परि छोरि पुद्गल गम्यलोक गयो सु उद्धरि कोपसौँ ॥ २३ ॥  
 मृग ओर लै तब राम बाहुरि सेसकोँ बहुरायकैं ॥  
 अतिवेग दोउन २ पणी आलय सून्य पिक्खिय आयकैं ॥  
 अनुजात जावन निदि राम बिलपि कातरता लई ॥  
 तहँ सेस अक्खिय कै सु न्हावन गोदिका तटपैं गई ॥ २४ ॥  
 अथवा गई फल लूमकोँ इम अक्खि खोजन नीसरे ॥  
 प्रभुनैं कह्यो सब दुक्ख मैँ लहि जानकी सुख वीसरे ॥  
 हिय फाँक होवत जात लक्खन ए विलाप धरे धनी ॥  
 प्रतिरुक्ख पुच्छत निक्खसे प्रभु लाय पीर धनी धनी ॥ २५ ॥

भूषण और कंधे पर रखने का उपवच्छ उतार दिया. नीचे डाल कर राजस के पुर में जाकर वह सती (पतिव्रता) ब्रत धारण करके रही, रावण अपना बडप्पन और वैभव दिखा दिखा कर थक गया जिसको माता (सीता) ने तृण से भी तुच्छ गिना फिर कोप में उद्धत होकर कहा कि ॥ २२ ॥ मुझको सेवन करने से बचैगी नहीं तो हे राजसियो इसको खाजाओ, फिर एक वर्ष में मुझको स्वीकार नहीं करैगी तो मार डालेंगा ऐसा इकरार करके सीता को अशोक वाटिका में रख दी। इधर रामचन्द्र के बाण लगने से सोने का हरिण अपना राजस रूप होकर भूमि पर गिरके शरीर छोड़ जाने योग्य (स्वर्ग) लोक में कोप से निकल कर गया ॥ २३ ॥ रामचन्द्र दूसरा मृग मार कर लक्ष्मण को पीछे फेर कर आप भी पीछे फिर १ पर्णकुटी को छोटे २ भाई (लक्ष्मण) सीता को छोड़ कर चले गये जिसकी निन्दा करके रामचन्द्र ने विलाप करके कायरता पाई. गंगादावरी नदी के किनारे गई होवेगी ॥ २४ ॥ रामचन्द्र ने कहा कि मैं सीता का सुख लेकर सब दुःख भूल गया था सो हे लक्ष्मण हृदय फटा जाता है. इसप्रकार के विलाप स्वामी (रामचन्द्र) ने धारण किये १ प्रत्येक वृत्त से प्रकृते हुए ॥ २५ ॥

इम दोहु२दंडक अंतरागत कौंच काननमें गये ॥  
 गहि तत्थ खावन काज कुपि कबंध रक्खसनै लये ॥  
 इक१इक१जोजन लंब वहाँ खल हत्थ दोउन२कट्टिकै ॥  
 दिय मर्म छेदि गिराय बीरन दाव दुद्धर दट्टिकै ॥ २६ ॥  
 तव पूर्वरूपहि पाय रक्खस रामसौं नुतिकै कह्यो ॥  
 गधर्व मै लहि साप राघव अंग आसिरको लह्यो ॥  
 अब अप्प अप्पिय स्वर्ग ओ प्रभु जाहु है सबरी जहाँ ॥  
 रु मतंग आश्रम१ऋष्यमूक२पधारि खोज लहो तहाँ ॥ २७ ॥  
 इम अक्खि गो वह ए उभै२सबरी निकेतनपै गये ॥  
 तहँ अर्चना उपहार तुच्छहु तास सम्मदसौं लये ॥  
 परिनामकै प्रभु अगग आत्मसमाधिकै सबरी जरी ॥  
 रु मतंग आश्रम यौं गये अनुजात संजुत श्रीहरी ॥ २८ ॥  
 बहु विप्रराजन पाय पूजन पंषिकां तटपै गये ॥  
 छवि तास पिक्रवत श्रीनिवास बिसेसही बिरही भये ॥  
 पुनि राम लक्खननै प्रबोधिय पंषिका तट पारपै ॥  
 सुग्रीव ए निरखे धराधर ऋष्यमूक सुढारपै ॥ २९ ॥  
 कपि च्यारि४कीसनसौं इहाँ यह बालिसौं बचिवे रह्यो ॥

दंडक वन से दूर आकर कौंचवनमें गये वहाँ क्रोध करके खाने के लिये दोनों भाइयों को कबंध नामक राक्षस ने पकड़ लिया उसके एक एक योजन लंबे हाथ दोनों भाइयों ने काट कर मर्मस्थल वेध कर दुस्तर दाव से दया दिया ॥ २६ ॥ स्तुतिकर के रामचंद्र से कहा कि २ हे रामचंद्र ३ राक्षस का शरीर लिया है, अब ४ आपने स्वर्ग दिया है ॥ २७ ॥ भीलनी के घर पर गये वहाँ तुच्छ पूजन और तुच्छ सामग्री पाकर भी हर्ष के साथ लिये वहाँ रामचंद्र से प्रणाम करके आत्मसमाधि करके शबरी (भील की स्त्री) जल गई, ढूँढते भाई सहित श्रीरामचन्द्र मतंग के आश्रम पर गये ॥ २८ ॥ पंपा नामक सरोवर की तीर पर गये, उस तालाब की विशेष शोभा देख कर लक्ष्मी के निवास (रामचन्द्र) बहुत चिरही हुए वहाँ लक्ष्मण ने रामचंद्र को समझाया, ऋष्यमूक नामक श्रेष्ठ पर्वत के ऊपर से, सुग्रीव ने पंपासर के परले किनारे इन (रामचंद्र) को देखा, सुग्रीव नामक बंदर चार बंदरों सहित बालि से यंचने के अर्थ इस पर्वत पर रहा था जिसने जाना



जिहिँ जीवते तजिहै न ए अब बालिनैं पठयो कहयो ॥  
 हनुमान निश्चय लैनकाँ तब विप्र आकृति उत्तरे ॥  
 धरि खंध दोउ२न ऋष्यसूक अधित्यका सुखसौँ धरे ॥३०॥  
 तहँ अगिकों करि सखिख राघव १कीसराज२सखा भये ॥  
 कछु खोज पुच्छिय राम वहाँ हनुमान प्रत्यय अप्पये ॥  
 केयूर१कुंडल२रम्य हंसक३उत्तरीय४निहारिकैं ॥  
 अनुजातसौँ प्रभु उच्चरी लखि चिन्ह बच्छ बिचारिकैं ॥  
 सौमित्रि अखिख्य ओरकी पहिचानि मोहि कछू नही ॥  
 पय नित्य बंदनतैं लखे जगदंब हंसक ए२सही ॥  
 सुनि राम सो प्रभु हे तथापि बिलापि रोदन वित्थरयो ॥  
 सुग्रीव१राघव२नैं परस्पर काज सदन स्वीकरयो ॥ ३२ ॥  
 कपिराज अखिख्य आत्मभू सन कीस ऋत्तरजा भयो ॥  
 इक दीर्घिका जल संगसौँ ततकाल नारि सु व्है गयो ॥  
 तहँ आय वासव पिखिख ताकहँ बीज उज्जिभय अप्पनौँ ॥

कि हम को मारने के अर्थ बालि ने इनको भेजा है सो अब ये नहीं छोड़ेंगे।  
 ब्राह्मण का स्वरूप करके हनुमान् निश्चय करने को गया जिसने राम लक्ष्मण  
 दोनों भाइयों को अपने कंधे पर रख कर पर्वत के मस्तक की भूमि पर जा  
 रक्खा ॥ ३० ॥ वहाँ पर अग्नि को साक्षी करके रामचन्द्र और सुग्रीव सखा  
 हुए जब रामचन्द्र ने सीता का पता पूछा तब हनुमान् ने विश्वास कराने के  
 लिये (जिसके करने से या दिखाने से प्रतीति होवे उसको प्रत्यय कहते हैं)  
 इसीको यावनीभाषा में सुवृत कहते हैं) भुजबंध, कुंडल, पगों में पहनने के  
 कड़े और उपवस्त्र दिये जिनको देख कर रामचन्द्र ने छोटे भाई से कहा कि  
 हे यत्स (पुत्र) इनको विचारो कि सीता के ही हैं या नहीं ॥ ३१ ॥ लक्ष्मण  
 ने कहा कि औरों की मुझे पहिचान नहीं है क्योंकि मैं कभी सीता के सा-  
 मने नहीं देखता था परंतु पगों में नित्य नमस्कार करने के कारण जानता हूँ  
 कि ये पगों के कड़े अवश्य जगत्माता (सीता) के हैं यह सुनकर रामचन्द्र  
 परमेश्वर थे तोभी विलाप करके रुदन करने लगे १ स्वीकार किया ॥ ३२ ॥  
 अब बालि और सुग्रीव की उत्पत्ति कहते हैं, सुग्रीव बोला कि ब्रह्मा से एक  
 चंदर रौंछाँ का अथवा वेदरों का राजा हुआ वह एक यावड़ी (वापी) के जल  
 के संग से तुरत स्त्री होगया। वहाँ पर इन्द्र आया जिसने उस स्त्री को देख

परि तास बालनमाँहिं सा हुव वालि श्वीर बली घनों ॥३३॥  
 पुनि तत्थ आयउ अक पिक्खत ताहुकी गति सो भई ॥  
 परि कंधराविच बीजमें शकपि जुग रघों हुव हे जई ॥  
 वनिता प्लवंगम वहे बहोरि सु नैर किष्किंधा रहयो ॥  
 परमेष्ठिं सासन पाय हम जुत राज्यभार इहाँ लहयो ॥३४॥  
 मुनि वालि भो कपिराज अस्रप दुंदुभी तँहँ आयकैं ॥  
 करि गज अग्रज बुल्लयो सु जुख्योहि रंग रिसायकैं ॥  
 कपिराजसौं सिर तास तुष्टि रु पाय ठोकर उच्छर्यो ॥  
 सु मतंग आश्रम रत्त रंगन इक्क शजोजनपैं प्ररयो ॥ ३५ ॥  
 लखि अल साप मतंग अप्पिय अत्थ खेपक आयहै ॥  
 तव तास मस्तकके हु भोवच टूक टूक गिरायहै ॥  
 इहिं हेतु वालि न अत्थ आवत यों इहाँ रहिं मै बच्यो ॥  
 मायावि नामक दुंदुभीसुत जंग वहाँ बहुर्यो रच्यो ॥३६॥  
 जब वालि सानुज सूर सम्मुह तास जुझनकाँ गयो ॥

कर अपना वीर्य छोड़ा सो उस स्त्री के बालों में गिरा जिससे बालि नामक  
 बीर पैदा हुआ ॥ ३३ ॥ फिर वहाँ पर सूर्य आया उसने उस स्त्री को देखा  
 जिसकी भी वही गति हुई अर्थात् स्त्री को देखते ही सूर्य का वीर्य गिरा सो  
 उस स्त्री के कंधे पर गिरा जिससे मैं [सुग्रीव] हुआ हे विजय पानेवाले  
 (रामचंद्र) इसप्रकार दोनों बंदर हुए, वह स्त्री भी पीछा बंदर होकर किष्किं  
 धा नामक नगर में रहा ? ब्रह्मा की आज्ञा पाकर ॥ ३४ ॥ बालि को बंदरों  
 का राजा हुआ सुन कर राजस दुंदुभी (मय के पुत्र मायावी से और बालि  
 से स्त्री के कारण पैर होगया था वही मायावी दुंदुभी का पुत्र हुआ जिस)  
 ने आकर मेरे बड़े भाई (बालि) को बुलाया सो युद्ध में कांध करके जुड़ा  
 उसका शिर तूट कर बालि की टोंकर लग कर उड़ा सो रुधिर से रंगा हुआ  
 एक गोजन पर मतंग ऋषि के आश्रम में पड़ा ॥ ३५ ॥ उस रुधिर को देख  
 कर मतंग ने आप दिया कि इसका फैलनेवाला आवेगा तब मेरे वचन से  
 उसका मस्तक टूकटूक होकर गिरेगा, इसकारण से बालि यहाँ नहीं आ-  
 ता है इसीसे मैं भी यहाँ आकर बना हूँ और मायावी नामक दुंदुभी के  
 पुत्र ने वहाँ फिर युद्ध रचा ॥ ३६ ॥ छोटे भाई ? (सुग्रीव) सहित पर्वत की  
 गुहा में पुस कर सब से गुप्त होगया वहाँ एक वर्ष में पीछा आने का इक-

तब भज्जि सो खल कंदरा धसि छत्र सर्वनसौं भयो ॥  
 करि इक्क१अब्द करार वहां बिलमाँहिँ बालिहु संचरयो ॥  
 नहिँ कोलपैँ सु कढ्यो कढ्यो छतजात उब्बकि उच्छरयो ॥३७॥  
 तब मैँ भज्यो हत बालि जानि रु पौंठि पत्तनमैँ डस्यो ॥  
 जुवराज अंगद थप्पि पंचन मोहि गदियपैँ धरयो ॥  
 पुनि मारि दुंदुभिपुत्रकोँ कढिकैँ कपीश्वर गज्जयो ॥  
 हनुमान आदिक च्यारि४कोसँ उपेत मैँ तब भज्जयो ॥३८॥  
 खिजि बालि पिठि लग्यो फिरे हम सर्व भूतलपैँ जहाँ ॥  
 हनुमान प्राननत्रान तानक ऋष्यमूक कह्यो तहाँ ॥  
 तब खेत सुकृत मेघलों यह अद्रि पाय इहाँ बसे ॥  
 अब रावरे पय कंज पिक्खत त्रास१पाय२सबै नसे ॥ ३९ ॥  
 यह सुक दुंदुभि सीस फैंकहु बालि ज्यो प्रभु पायसौँ ॥  
 सुनि फैंकि अंगुलसौँ दयो चालीस४०कोस सु चायसौँ ॥  
 कपिनैँ कह्यो पुनि ताल सप्तक७बालि वेधत बान दै ॥  
 इन्ह अज्ज बेदहु अप्पहू किय सोहु स्वीकृत कान दै ॥४०॥  
 तब अँचि अक्खय तूनतैँ इखु ईस इक्क१हि मुक्यो ॥  
 तरु सत्त७भेदि रु भेदि सो गिरिसौँ रसातललौँ गयो ॥

रार करके बालि भी उस बिल में घुस गया. उस कोल पर बालि तो नहीं निकला और रुधिर उबक कर निकला ॥ ३७ ॥ बालि को मराहुआ जान कर मैँ वहाँसे भागा और डर कर पुर में घुस गया १ बंदरों का राजा (बालि) २ बंदरों सहित ॥ ३८ ॥ ३ हनुमान् ने प्राणों की रक्षा का फैलानेवाला ऋष्यमूक पर्वत बताया तब सूखतेहुए खेत पर मेघ के समान इस पर्वत को पाकर यहाँ बसे. अब आपके चरणकमल के देखने से भय और पाप सब मिटगये ॥ ३९ ॥ बालि ने जिसप्रकार दुंदुभी के मस्तक को फैंका था तिस प्रकार इस सुखे हुए मस्तक को आप भी पग से फैंकिये ४ पग के अंगूठे से चालीस कोश फैंक दिया, फिर सुग्रीव ने कहा कि ताड़ के सात वृत्तों को बालि बाण देकर बेधेता है इनको आप भी आज बेधिये सो सुन कर रामचंद्र ने स्वीकार किया ॥ ४० ॥ तब अक्षय भाथा से बाण रामचंद्र ने छोड़ा सो उन सात वृत्तों

मुरिकैं बहोरि सुरोप राघवके कलापहिमैं रहयो ॥  
 तब बालिपातनमाँहिँ प्रत्यय अक्कअंगजनैं लहयो ॥ ४१ ॥  
 प्रभुनैं प्लवंग सुकंठ जुज्झन बालिपैं पुनि मुकल्यो ॥  
 सुरराजके सुतसौं सु हारि बिहाल राघवपैं चलयो ॥  
 तब राम सासन पाय सेस सुकंठ कंठ यहै करी ॥  
 पहिचानिकौं गजपुष्पिका व्रतती प्रफुल्लित लै धरी ॥ ४२ ॥  
 पुनि जुज्झकाँ पठयो सु जानि रु इन्द्रकाँ सुत आत भो ॥  
 तिय तारिकाँ वरज्यो बली रयकाँ न तोहु रुकात भो ॥  
 करि मल्लसंगर सूरसूनुहिँ बालि मारनको भयो ॥  
 तरु ओटतैं प्रभुनैं कलंब तहाँ कपीश्वरकै दयो ॥ ४३ ॥  
 जिय जात बेरहु बालि बानर दोस दै प्रभुकाँ कहयो ॥  
 लखिबो तुम्हैं फलजन्मको अवसान दुर्लभ मै लहयो ॥  
 कहते जु मोकैंहैं तो सरावन मैथिली यहै आनतो ॥  
 वरन्यौं न वीरन धर्म है यह छलघात विधान तो ॥ ४४ ॥  
 तब राम ताकहैं प्रान देनलगे बहोरि तहाँ कही ॥  
 करिये व क्यौं यह जो जतीन दुराप सो गति मै लही ॥  
 अनुजातसौं पुनि बालि बुल्लिय धर्मसौं भजि तू धरा ॥

काँ और उस पर्वत को भेद कर रसातल तक जाकर पीछा फिरके वह बाण  
 रामचंद्र के भाथे में आरहा जब बालि के मारने में सूर्य के पुत्र (सुग्रीव)  
 ने विश्वास (भरोसा) किया ॥ ४१ ॥ फिर रामचंद्र ने सुग्रीव बंदर को बालि  
 से युद्ध करने भेजा १ बालि से २ सुग्रीव के कंठ में फूली हुई ३ नागपुष्पी  
 नामक लता (वेलि) धरदी ॥ ४२ ॥ ४ युद्ध को भेजा ५ तारा नामक बालि  
 की स्त्री ने मना किया तोभी उस बलवान् ने अपने वेग को नहीं रोका ६  
 मल्लयुद्ध करके सूर्य के पुत्र को बालि मारने लगा जब वृत्त की आड़ से रा-  
 मचंद्र ने बालि के बाण दिया ॥ ४३ ॥ ७ अंत समय में आपका देखना दुर्ल-  
 भ है सो मुझे मिला, मुझे जो आप कहते तो रावण सहित सीता को य-  
 हाँ लादेता, छलघात से मारना वीरों की रीति नहीं है ॥ ४४ ॥ ८ अब आप  
 यह क्यों करते हो, योगियों को भी दुर्लभ है सो गति मैंने ली है, फिर  
 अपने छोटेभाई से बोला,

प्रिय अंगदादिनको बनाय रु पायहै गति जो परा ॥४५॥

सुतसौहु अक्खिय बुझि सीस सदा पितृव्यकको धरो ॥

सुग्रीव तात गिनौ तदीय अरातिको न सखा करो ॥

बपु बालि एम तज्यो बलीमुख भूप भानुतनै भयो ॥

तारा बिलप्पि गई तहाँ प्रभु बोध याहिहु अप्पयो ॥ ४६॥

पुनि बालि काय जराय किय सुग्रीव किष्किंधा धनी ॥

रु कह्यो ब पाउसँ अंत हेरहु है कि मैथिलजा हनी ॥

सुग्रीव स्वीकृत सो सबै करि पैठि पत्तनै भूप भो ॥

इत राम १ लक्ष्मण २ बास प्रसन्ननादि शृंग अनूप भो ॥४७॥

क्रमसौ प्रियाविरही तहाँ प्रभु निष्ठि पाउसँ कट्यो ॥

पुनि पाय राम निदेस सैस प्रवेस पत्तनमै लयो ॥

जहँ गेह अंगद १ मैद २ गज ३ हनुमान ४ नील ५ गवाक्ष ६ के ॥

संपाति ७ गवय ८ सुबाहु ९ कुमुद १० सुनेत्र ११ नल १२ सूर्याक्ष १३ के ॥४८॥

द्विविद १४ रुसुपाटल १५ सरभ १६ विद्युन्मालि १७ दधिमुख १८ तार १९ के ॥

जहँ जांबवान २० सुसेन २१ बानर वीरबाहु २२ अगार के ॥

इत्यादि पिक्रखत सैस कीसनरेस द्वार गये जहाँ ॥

ताराहि पूरब आय राघव रोस सो समयो तहाँ ॥ ४९ ॥

पय अंगदादि परे बहोरि कपीसँ हू विनती करी ॥

१ परम गति (मोक्ष) ॥ ४५ ॥ अंगद से भी कहा कि सदैव काका की आज्ञा धारण करो सुग्रीव को पिता जानो और उसके शत्रु को कभी मित्र मत बनाओ, इसप्रकार बालि ने शरीर छोड़ा और सूर्य का पुत्र बंदर सुग्रीव रा जा हुआ तारा भी विलाप करके वहाँ गई उसको भी रामचंद्र ने ज्ञान दिया ॥४६॥ २ अब वर्षा के अंत में हेरना ३ सीता है कि मारी गई ४ स्वीकार करके ५ पुर में जाकर राजा हुआ ६ प्रसन्न नामक पर्वत पर ॥ ४७ ॥ ७ वर्षा समय कठिनाई से काटा फिर रामचंद्र की आज्ञा लेकर लक्ष्मण किष्किंधा पुरी में गये ८ कितने ही घर ९ सुग्रीव के द्वार पर गये वहाँ सब से पहिले बालि की स्त्री तारा जो सुग्रीव की स्त्री होगई थी आई और लक्ष्मण का क्रोध शान्त किया ॥ ४८ ॥ १० सुग्रीव ने भी नम्रता करी

तुम भल्लि भोगनमैं रहे यह बत लखन उच्चरी ॥

सुनि सोहि कं पि कपीस बुल्लि प्रधान प्लक्ष १ प्रभास २ काँ ॥

किय यौ निदेस असेस बुल्लहु कीस जानकि चासकाँ ॥ ५० ॥

सुनि यौ अमात्यन दूत मुक्कलि सर्व बानर बुल्लये ॥

भुवभार दब्बत गज्जि गब्बत जूहँ हाजरि जे भये ॥

तिनमाँहिलैं विनता १ दि बानर लख १००००० बानर संग दै ॥

दिस पुब्ब खोजन मुक्कले दुँत राज्य कादि उमंग दै ॥ ५१ ॥

तिम लख १००००० बानर दै सँता दिबली २ बलीमुख उत्तरा

पठयो रू अक्खिय कज्जकाँ करि आय श्री लाहिहँ परा ॥

तारापिता सु मरीचिपुत्र सुसेन ३ पच्छिम ३ थप्पयो ॥

दिय लख १००००० बानर संग ओ भुजभार अप्पन अप्पयो ॥ ५२ ॥

जमँ ओर ४ अंगद ४ जांबवान १ रू अजनेय २ सुसील ज्यौ ॥

सरगुलम ३ मैद ४ सुहोत्र ५ द्विविद ६ रू गंधमादन ७ नील ८ ज्यौ ॥

उल्कावदन ९ गज १० ओ गवाक्ष ११ सरारि १२ संग असंग १३ हू ॥

कपि द्वै २ सुसेन १४ १५ चले इमैं इम लख १००००० पानिपमैं पँहू ॥ ५३ ॥

कपिराज अक्खियँ सर्व आवहु इक्क १ भास करारलौ ॥

अरु पाय दैव विलंब आवहु माघ लगगत वारलौ ॥

कपि कोल चुक्कत प्रानदंडहिँ पाय बेरँ बिहायहै ॥

अरु जानकी लाखि आयहै सुख मो समान सु पायहै ॥ ५४ ॥

लाहि स्वामिसाँसन सूर यौ चहुँ ४ ओर बानर उज्जले ॥

हनुमान अंगद आदि ए इत बीर दक्खिनघाँ चले ॥

पुर १ ग्राम ३ अंदि ३ अरराय ४ खोजत विंध्यै पव्वयपै गये ॥

तंस १ भूख २ पीडित जाय इक्कत कंदरा इक्क १ मै गये ॥ ५५ ॥

१ यह वार्ता लक्ष्मण ने कही २ खबर करने को ॥ ५० ॥ ३ मंत्रियों ने ४ गर्व (घमंड) करते हुए ५ समूह ६ शीघ्र ॥ ५१ ॥ ७ शतबली ८ यंदर को ९ उत्तर दिशा को भेजा १० परम ११ लक्ष्मी पावेगा १२ दक्षिण दिशा में १३ हनुमान १४ पराक्रम में २५ प्रभु (नायक) ॥ ५२ ॥ १६ कहा कि १७ शरीर छोड़ोगे ॥ ५३ ॥ १८ स्वामि की आज्ञा १९ दक्षिण की ओर २० पर्वत २१ वन २२ विंध्याचल पर गये २३ तृपा (प्यास) से २४ इकट्ठे होकर ॥ ५४ ॥

जहँ दिव्य उपवन<sup>१</sup> शरत्नश्याँ विटपी<sup>२</sup> जलांसय<sup>३</sup> पिक्खये ॥  
 लखि अर्क कोटि प्रकास व्है मिचि नैन कीसनके गय ॥  
 पुनि खोजिखोजि प्रसन्न व्है फल मूल खावनकों चले ॥  
 जुवराँज अक्खिय हेरि मालिक होहु आयस लै भले ॥५६॥  
 सुनि त्योंहि हेरत इक्क<sup>१</sup> वृद्ध तपस्विनी सबनै लही ॥  
 करि प्रार्थना तिहिँ अंब ए फल देहु खावन यों कही ॥  
 तजिकैँ समाधि सु नारि बुल्लिय हेमिका इक्क<sup>१</sup> अच्छरी ॥  
 तस मैं सखी रु स्वयंप्रभा मम नाम जानहु हे हरी ॥५७॥  
 मय नाम दानवकैँ रु अच्छरिकैँ हु ही अति मित्रता ॥  
 तस बासकों मयनैँ रची यह अत्थ थान विचित्रता ॥  
 सुनि तास सासन पायकैँ फल खाय स्वस्थ भये भले ॥  
 कर जोरि अक्खिय जुगिनी सन प्रान चेरनके चले ॥५८॥  
 तब पुच्छि पुच्छि स्वयंप्रभा सब आदि अंत सुनी कथा ॥  
 रु कह्यो विहावहु भीम है इत आयबो तुमरो वृथा ॥  
 अनई दसानन जानकी हरिकैँ असोक बनी धरी ॥  
 तुम सिंधुके तट जाहु पूरनकामना करिहै हरी ॥५९॥  
 संपाति नामक गिद्ध है तँहँ सो बहोरि बतायहै ॥  
 हैरि बुल्लये तब नैकहू न हमै दिसा सुधि माँय है ॥  
 सुनि कीस नैन मिचाय व्हँ पहुँचाय जुगिनिनैँ दये ॥  
 तँहँ पिक्ख सिंधु अंगाध बानर प्रान उज्झनकों भये ॥६०॥

१ बाग २ वृक्ष ३ बंदरों के नेत्र मिचगये ४ अंगद ने कहा कि इस बाग के मालिक को हेर कर उसकी ५ आज्ञा लेकर भले ही खाओ ॥ ५६ ॥ ६ हे माता ७ हे बंदरो ॥ ५७ ॥ ८ आप के सेवकों के अब प्राण जाते हैं ९ इस स्थान को छोड़ दो यहां आना १० भयंकर और वृथा है ११ अशोक बाटिका में १२ विष्णु तुम्हारी कामना पूर्ण करेंगे ॥ ५९ ॥ १३ बंदर बोले कि १४ हे माता हमको दिशा की कुछ भी सुध नहीं है यह सुन कर १५ बंदरों के नेत्र बंध करवाकर उस योगिनी ने समुद्र के किनारे पहुंचादिये वहां १६ अथाह समुद्र को देख कर बंदर प्राण १७ छोड़ने को तैयार हुए ॥ ६० ॥

जुवराज अक्खिय इक्क१ मास करार बिंध्यहि वित्तयो ॥  
 रु न माघ पुंख करार अप्पनसौं सध्यो जु तपा गयो ॥  
 अब सिंधु सोधन क्यों वनैं इतनों हि अप्पन आयु हो ॥  
 रन राम काम मरयो सु गिद्धहि भाग्यवान जटायु हो ॥६१॥  
 जिहिं प्रेतकर्म स्वतात ज्यों रघुराज राम सबै कर्यो ॥  
 इम द्वादसाहं व्रतस्थं सद्धि रु अग्ग आवन अद्वर्यो ॥  
 अब नास होहु अनौंससौं कपिराज वहाँ हनिहै नतो ॥  
 संपाति पच्छ बिहीन तत्थ सुन्यों सु कीसनको मतो ॥६२॥  
 कठि कंदरासन निठि बुल्लिय अद्रिके अनुंकार जो ॥  
 तुममाहिं मोहि उठाय रक्खहु पायहो दुख पार जो ॥  
 सुनि यौं प्लवंगन गिद्धराज उठाय अप्पनमैं धरयो ॥  
 तुम कोन यौं सुनि अग्गभूत उदंत अंडज विस्तरयो ॥ ६३ ॥  
 सुत मैं १ जटायु २ अनूरुके उडि अक्कमंडललौं गये ॥  
 तिहिं घाममैं हम पच्छ तापन तापमैं जरते भये ॥  
 मम हेठु भ्रात बचाय म जरि पिंडसेस इहाँ परयो ॥  
 तबतैं सु बल्लभ बीर भ्रात जटायु मोसन बिच्छरयो ॥६४॥

अंगद ने कहा कि एक महीने का करार था सो तो विंध्याचल में ही धीत गया  
 और माघ मास से पहिले आने का करार था सो भी अपने से नहीं सधा और  
 वह माघ मास गया अब समुद्र का सोधना कैसे बने इस कारण से अ-  
 पना आयु इतना ही था ॥ ६१ ॥ १ अपने पिता के समान २ बारह दिन तक  
 ३ व्रत में स्थित रहकर प्रेतकर्म साध कर ४ नाश नहीं होने से वहाँ ५ बि-  
 ना पंखवाले सम्पाति ने ६ बंदरों का यह मता सुना ॥ ६२ ॥ ७ पर्वत के  
 समान संपाति कन्दरा से नीठ कठिकर बोला ८ बंदरों ने गिद्धराज को  
 उठाकर अपने में धर दिया और तुम कौन हो ऐसा प्रश्न सुनकर उस पक्षी  
 ने आगे बीताहुआ वृत्तांत विस्तार से कहना प्रारंभ किया ॥ ६३ ॥ मैं और  
 जटायु अरुण के पुत्र हैं सो एक समय हम दोनों उड़कर सूर्यमण्डल में गये जब  
 उस सूर्यमंडल की गर्मी में हमारे पंख सूर्य के ताप में जल गये तब मैंने  
 भाई को नीचे लेकर बचाया और मैं जलकर पिंड मात्र बाकी रहकर यहाँ  
 पड़ा ॥ ६४ ॥



मुनि ह्याँ निसाकर नाम हे तिन मोहि आनि दया कही  
चउबीस २४ मैं त्रेता अनेह पतत्र तू लहिहे सही ॥

प्रभु रामदूत प्लवंग हेरन मैथिली इत आयहै ॥

सुनिकै कथा तिनसों सपत्र स्वतंत्रभावहि पायहै ॥६५॥

सत १०० अब्दपूरव वे समाहित सिद्धलोक गये मुनी ॥

अरु अज्ज मैं इहिँठाँ परास्त व्यथा जटायु कथा सुनी ॥

सु जटायुको सुनि यों समस्त उदंत कीसन बर्णायो ॥

ततकाल सो करि कर्ण तंत्र सपत्र पत्रिपती भयो ॥६६॥

रु कहयो पितामहनेँ हमैँ बर दूर देखनको दयो ॥

इमही हजारन कोस आर्मिख गूद गिद्धनकै गयो ॥

तसमांत जानहु मैथिली खल कबुरेस्वरनेँ हरी ॥

तरु सिंसपा तर मोहि दीसत सो असोकवनी धरी ॥६७॥

इम अक्खि भ्रातहि नीर दै उडि गिद्धनेँ खगताँ गही ॥

इत सिंधु लंघन अप्प अप्पन सक्ति कीसननेँ कही ॥

गज १ बुल्लयो दस १० मान जोजन त्यों गवाक्ष २ सुबिसती २०॥

अरु रंभ ३ तीस ३० सुहोत्र ४ तिम चालीस ४० गज्जि चैवी गति ६८॥

पंचास ५० कीस सुसेन ५ जोजन सडि ६० मैद ६६ उच्चरी ॥

द्विविदाख्य ७ सत्तरि ७० ओ असी ८० गति गंधमादन ८ उच्चरी ॥

जैह जांबवान ९ कहयो बै वृद्धहु भंप मैं नवती ९० करौं ॥

जुवराज १० अक्खिय जाय सत १०० पुनि आत संसयमैं परौं ॥६९॥

यहां पर निशाकर नाम मुनि थे उन्होंने मुझ पर दया लाकर कहा कि चौ-  
बीसवें त्रेतायुग के समय में तू अवश्य पंख लेवेगा १ बंदर सीता को हेरने के  
लिये २ आपसे आप ही पंख पावेगा ३ सौ वर्ष पहिले वे जितात्मा [आत्मा  
को जीतनेवाले] सिद्ध लोक को गये ३ अनादर पायाहुआ ४ वहां पर  
५ पक्षिराज पंखों सहित होगया ॥ ६६ ॥ ६ ब्रह्मा ने ७ मांस ह मज्जा ९ ह  
सकारण से १० राजसों के पति (रावण) ने ॥ ६७ ॥ ११ आकाश में जाने  
की गति १२ इधर समुद्र को कूदने में सब बंदरों ने अपनी अपनी शक्ति  
कही १३ कही १४ द्विविद नामक ने १५ अब वृद्ध होगया हूं तोभी ॥६८॥ ६९॥

तव वारि सर्वन वालिपुत्र सिराह मारुतिकी करी ॥

बलवान तू ग्रहराज ग्रासक होतमात्र बन्यौ हरी ॥

हनुमान ईसवतार बीर यहैहु तावक बेर है ॥

मुनि फुल्लि मारुति बुल्लयो कति दूर भूखलकेरहै ॥ ७० ॥

उदयाद्रिसौं उडि अस्त जाय बहोरि तदिन बाहुरौं ॥

अब स्वांमि सदन कज्ज हौं दुत सज्जहौं हर क्यौं दुरौं ॥

तव ही समस्तन प्रानरच्छक जानि मारुतिसौं कही ॥

हम तोरआगम अंत हयाँ इक १ अंग्रिसौं रहिहैं मही ॥ ७१ ॥

हनुमानहू तव तीस ३० जोजन उच्च भूंधरपै गयो ॥

तहैं पुव्व चित्तहिसौं सु रक्खसराजके घरपै गयो ॥

पुनि मंपलै पवमानको सुत सिंधु लंघन उच्चर्यो ॥

जवजोरसौं सिखरी मलप्पत मग्न भूतलमैं कर्यो ॥ ७२ ॥

लखि जात मारुति सिंधुनै मइनाक उप्पर प्रेसयो ॥

उर फेट दै तिहिं विघ्न जानि डुलाय आनिलनै दयो ॥

तव सिंधु अक्खिय पुत्र तैं मिहिकाद्रिको यह मुक्कल्यो ॥

मम मन्नि स्वागत जाहु मेल दुराप संचितसौं फल्यो ॥ ७३ ॥

सबको मना करके अंगद ने हनुमान् की प्रशंसा करी है बलवान् बंदर तू जन्म लेते ही सूर्य को पकड़नेवाला हुआ था है हनुमान् तू महादेव का अवतार है तेरा यही समय है यह सुन कर प्रफुल्लित होकर हनुमान् बोला कि दुष्ट (रावण) की भूमि क्या दूर है ॥ ७० ॥ १ उसी दिन पीछा आजाऊँ २ स्वामी का कार्य साधने के लिये मैं शीघ्र ही तैयार हूँ शिव का अंश होकर मैं क्यौं छिपूँ ३ एक पग से खड़े रहेंगे ॥ ७१ ॥ ४ पर्वत पर गया उससे पहिले ही वह हनुमान अपने मन करके रावण के घर पर चला गया था ५ पवन के पुत्र ने जोर से भँव लेने के वेग से ६ पर्वत को भूमि में डुबो दिया ॥ ७२ ॥ हनुमान को जाता हुआ देख कर विश्राम देने के लिये समुद्र ने मैनाक नामा पर्वत को ऊपर भेजा जिसको भय जान कर हनुमान ने छाती की टक्कर से उड़ा दिया तब समुद्र ने कहा कि हे पुत्र इस हिमवान् पर्वत को मैंने ही भेजा है मेरे किये हुए सत्कार को मान कर जाओ. तुम्हारा मिलना दुर्लभ है सो संचित कर्मों के फल से ही हुआ है ॥ ७३ ॥

छुवि हत्थसौ तब अदिकौ हनुमान अगग बढ्यो बली ॥  
 अहिमात कस्यपनारि देवन वहाँ परक्खन मुक्कली ॥  
 मइनाककाँ तबतैं हि इंद्रहु पच्छछेद अभै दयो ॥  
 इत खान मारुतिकौ बडो मुख फारि सर्पप्रसू लयो ॥ ७४ ॥  
 रु कह्यो इहाँ बिधि मै धरो इतकेहि अध्वग खाइवे ॥  
 सुहि मन्नि तोकैंहँ चकिखहाँ किय चित्त क्यों इत आयवे ॥  
 दस१०जोजनी प्रम पिक्खि तम्मुह बीस२०जोजन कीस हू ॥  
 सत१००या अनुक्रम तुंड वहाँ नवति९०प्रमान कपीस हू ॥ ७५ ॥  
 मुख तास पैठि रु ओठ मीलन पुब्ब आयउ अल्प व्है ॥  
 सुरसा हु आसिख दै कह्यो सुत काज सइहु कल्प व्है ॥  
 कपि अगग हंकि य सिंहिका तैंहँ छाँहग्राहिनि रक्खसी ॥  
 कपि छाँह बेधिय ताहिसौं गति बीरकी बहती नसी ॥ ७६ ॥  
 सुपरयो अचानक हेठ आय रु लीलि पापिनिनै लयो ॥  
 कपि ताहि अंत्रन तंत्र तंत्रित फारि बाहिर व्हैगयो ॥

हनुमान हाथ से उस पर्वत का स्पर्श करके आगे बढ़ा तब से ही इंद्र ने मैनाक पर्वत को पंख काटने का अभय दिया कि अब तुम्हारे पंख नहीं काटेंगे फिर कश्यप की स्त्री और सपों की माता को देवताओं ने हनुमान की परीक्षा लेने को भेजा जिस सपों की माता ने हनुमान को खाने के लिये बड़ा मुख फाड़ा ॥ ७४ ॥ और कहा कि ब्रह्मा ने मुझे इधर के मार्ग चलनेवालों को खाने के लिये ही रक्खी है, दश योजन के प्रमाणवाला उसका मुख देख कर हनुमान बीस योजन के शरीर वाला होगया इस क्रम से सौ १०० योजन उसका मुख हुआ तब निम्ने योजन मोटा हनुमान होकर ॥ ७५ ॥ उसके मुख में घुस कर पीछे आंठ बंध नहीं करे जिस पहिले छोटा शरीर करके पीछा बाहर आगया तब सुरसा ने भी आशिष देकर कहा कि हे पुत्र प्रलय का रूप होकर कार्य सिद्धि कर, इससे आगे हनुमान गया जहाँ छाया को पकड़ लेनेवाली सिंहिका (राहु की लाता) नाम राक्षसी ने हनुमान की छाया को पकड़ ली जिससे उसकी गति रुक गई ॥ ७६ ॥ और जब वह नीचे आपड़ा तब उस पापिनी ने लीला पूर्वक (खेल से ही) खालिया जहाँ हनुमान आंतों से तने हुए तंत्र (वेजे) को फाड़ कर बाहर आगया और लंका के कोद पर चढ़ उस

चढि लंक कोट बड़ठ तासन पिक्खि पत्तन सर्वही ॥  
 वृखदंस मान कपीस बाहिर आय द्वारदिसा लही ॥७७॥  
 धसिकै खुले पुर द्वार जामिक जातुधाननमै कह्यो ॥  
 नहि तेहु जानि सके पुरी तँहँ पाय जावहु जै पढ्यो ॥  
 कपिनै कह्यो तिय है अवध्य टरै नतों करि वार तू ॥  
 तल लंक दै कछु मुठि लै छकि उच्चरयो अवतार तू ॥७८॥  
 जिम अगग मारुति मैं भई तिम भाव रक्खसको मिल्यो ॥  
 सुनि सो सबै हनुमान आसय अज्ज मो हिय है खिल्यो ॥  
 ॥७९॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयः राशौ वी  
 तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेलो ६८१ पयामसमयवर्ण-  
 नविषयकजगच्चतुर्जननसमुद्देशसङ्गतवैवस्वतमन्वाऽऽत्मजनुरिक्ष्वा-  
 कु ६ पट्टपुत्रविकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनान्तर्गतश्रीवैदेहीवल्लभचरि-

बैठ कर उसके ऊपर से उसने सब शहर देखा. फिर विल्ली के समान हांकर  
 बाहर आकर दरवाजे का मार्ग लिया ॥ ७७ ॥ शहर का द्वार खुला हुआ  
 था जहां पहरेवाले राक्षसों में होकर निकल गया परन्तु किसीने इसके आ-  
 ने का कारण नहीं जाना तहां लंका पुरी ने आकर कहा कि मुझे विजय  
 करके जा, जब हनुमान ने कहा कि स्त्री मारने योग्य नहीं इसकारण तू टल  
 जा और वहीं टलै तो पहिले तू प्रहार कर तब लंका ने हनुमान के लात की  
 दी फिर हनुमान ने उसके मुकी लगाई जिससे ब्रक कर लंका ने कहा कि  
 तू अवतार है ॥ ७८ ॥ फिर वह लंका की अधिष्ठात्री राक्षसी बोली कि हे  
 हनुमान मुझमें जिसप्रकार आगे हुई थी वही भाव राक्षस को मिला है अ-  
 र्थात् ब्रह्माजी ने पहिले हम से कहा था कि जब कोई वानर विक्रम प्रकाश  
 करके तुझको अपने वश में करलेगा तभी तू यह जानलेना कि राक्षसों को  
 भय आन पहुँचा सो वही आशय आज खुला ॥ ७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा-  
 ण वंश वर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन करने के वि-  
 षय में सूर्यवंश के कीर्तन के साथ वैवस्वत शत्रु के पुत्रोत्पत्ति में इक्ष्वाकु के  
 पादवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन (उचित अनुचित के निश्चय कर-  
 ने) के भीतर श्रीजानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में श्रीरामचन्द्र के

त्रे श्रीरामसन्देशहारकहनुमल्लङ्घविजयनमेकोनचत्वारिंशत्तमो ३९  
मयूखः ॥ ३९ ॥ आदित एकाऽशीतितमः ॥ ८१ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( दोहा )

कपिपति प्रति लंका कहिय, आसिर तीनन ३ अगग ॥  
तिदसनसौं लिय लोक त्रय ३, मेदि निखिल श्रुतिमगग ॥ १ ॥

( पादाकुलकम् )

मालीश्वहुरि सुमालीरखखस, माल्यवान३तीजो३बल दुर्वस ॥  
इक समय ए तीन बढे अति, सेवक किन्न सुरन जुत सुरपति ॥२॥  
करि तिन हुकम विश्वकर्मा सन, मैं लंका बनवाई सुखमन ॥  
पुरटजंत्रपरिखारप्राकारा३, विहित बीस२०जोजन बिस्तारा॥३॥

जोजन सत१००लंबीजग ठाई, सखन संकुल पुरी सुहाई॥४॥  
बर्हकिराज रची मैं वामा, रात्रिचरन भुग्गी अभिरामा ॥  
हुदिन लोक पहुँचेसुर अतिदुख, समय खिलहुतिन कहिय तजहुसुख  
त्रिदस फटिक सिखरी पहुँचे तब, सिवहु कद्यो विधिको आसय सब॥  
विष्णु सरन पहुँचे लंदारक, कहिय नाथ रक्खस तय३मारका॥६॥

दूत हनुमान का लंका की अधिष्ठात्री राक्षसी को विजय करने का उनचा-  
लीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३९॥ और आदि से इक्कासी मयूख हुए ॥८१॥  
वह लंका राक्षसी हनुमान को प्राचीन इतिहास कहने लगी कि आगे तीन  
राक्षसों ने देवताओं से सम्पूर्ण वेदमार्ग मिटाकर तीनों लोक लेलिये ॥ १ ॥  
१ देवताओं सहित इंद्रको सेवक करलिया ॥२॥ उन तीनों राक्षसों ने आज्ञा  
देकर विश्वकर्मा से मुक्त लंका को बनवाई. स्वर्ण के तोप आदि अस्त्र, खाई,  
कोट रचे ॥ ३ ॥ २ राक्षसों से भरी हुई ॥ ४ ॥ विश्वकर्मा ने मुक्त स्त्री रूपी  
पुरी को रची जिस मनोहर स्त्री को राक्षसों ने भोगी, इस अत्यन्त दुःख से  
दुखी होकर देवता ब्रह्मा के लोक में गये वहाँ ब्रह्मा ने कहा कि सुख को  
छोड़ कर समय को देखा ॥ ५ ॥ तब देवता हिमालय पर्वत पर गये जय  
शिव ने भी ब्रह्मा ने कहा था वैसा ही कहा जब फिर देवता विष्णु की शरण  
में गये ॥ ६ ॥

प्रभु दयालु सुनि भीर पधारे, पुर लंका क्रव्याद प्रचारे ॥  
 भयो दुश्चोर तुमुल रन भारी, अच्युत लरे बैठि उरगारी ॥७॥  
 कति उडि खगपति पत्र पवन करि, मूढ कतिक सुनि दरहि गये मरि ॥  
 कतिक प्रहारि सुदर्शन कट्टे, दल रक्खस दिस दिस प्रभु दटे ॥८॥  
 खिजि तँहँ समुख भये तीन रहि खल, दुर्दर जुरे मोरि अप्पन दल ॥  
 रोप शकुंतल असि शकारि प्ररुष्टन, द्विजपति पिठि फिराई दुष्टन ॥९॥  
 सचिवनको जित्तयो जिम स्वामी, बलहक मंगत भजत विरामी ॥  
 इम दग मुंदि मुखो उरगासन, परे किलकि कर्बुर चउपासन ॥१०॥  
 प्रभु अखिय खगपति फिरि पच्छो, अपनौं क्यों न दिखावत अच्छो ॥  
 लावत अमृत लख्यो जो लखन, सुकितगयो बल तोर समखन ॥  
 सुनि मुरखो संपाति पितृव्यक, धारि लखन खंडन कर रीधक ॥  
 मारयो तमकि महाप्रभु माली, चकित सेसँ एतना भजि चाली ॥११॥  
 पुनि हरि लग्गे पिठि प्रहारन, माल्यवान रु सुमाली मारन ॥  
 चवियँ उनहु तँहँ सुनहु चक्रधर, वीर न भजत न हनत वीरवर ॥१२॥  
 दरँ वजाय तव मुरे महादय, भजि पाताल दुरे खल अतिभय ॥

दयालु प्रभु सुन कर मदत को आये. लंकापुरी में आकर राक्षसों को ललकारे  
 भयंकर विष्णु भगवान् गरुड़ पर बैठकर लड़े ॥ ७ ॥ कितनेक तो गरुड़ के  
 पंखों के पवन से और कितनेक शंख के शब्द से मूर्छित होकर मर गये ॥ ८ ॥  
 तब माली, सुमाली और माल्यवान् ये तीनों राक्षस क्रोध करके सामने हुए  
 और अपनी भगीरुई सेना को पीछी फेर कर दुस्तर युद्ध में जुड़े, उन दुष्ट  
 क्रुधित राक्षसों ने बाण, भाला, तरवार मारकर गरुड़ की पीठ फिरा दी ॥ ९ ॥  
 कामदारों का जीताहुआ राजा सेना के तनखा मांगने से विश्राम लेना  
 चाहकर भागता है ऐसे नेत्र मीचकर गरुड़ पीछा फिरा और राक्षस किल-  
 किला शब्द करके चारों ओर हुए ॥ १० ॥ विष्णु भगवान् ने कहा कि हे  
 गरुड़ पीछा फिर अपना अच्छा क्यों नहीं दिखाता है. स्वर्ग से अमृत ला-  
 ने के समय लक्षों देवता आदि ने तेरा बल देखा था वह मेरे सामने (नेत्रों  
 के आगे) कहाँ गया ॥ ११ ॥ सम्पाति का चचा (गरुड़) यह सुनकर मुड़ा ?  
 विष्णु भगवान् ने माली नामक राक्षस को मारा २ बाकी की सेना ॥ १२ ॥  
 उन राक्षसों ने कहा ॥ १३ ॥ शंख बजाकर ५ बड़ी दयावाल

सुरन स्वीय अधिकार सम्हारे, प्रभु अनिच्छ निजलोक पधारे १४  
( दोहा )

सुत पुलस्त्यके इक समय, निरघ विश्वा नाम ॥

करत राज्य तृणविन्दुकै, तपःजपसिद्धि ताम ॥ १५ ॥

( पादाकुलकम् )

कन्या सबपुरकी प्रतिदिन क्रम, आवन लगी विश्वा आश्रम ॥  
अधिप सुताहु संग तिन आवैं, सुखद ठाम वह सवन सुहावैं १६।  
करैं विविध गीतादि कुतूहल, पहुँचि समाधि खुलैं मुनिके पल ॥  
तब तिन्ह कुपितविश्व त्रजैं, बिहित अस्त्रि आवन तहँ बरजैं १७  
इक दिन कहिय बहुरि जो अहो, परिनय विनुहि गर्भ सब पैहो ॥  
सुनत इतर आई न भीति सन, नृप तृणविन्दु सुता सुसुनीनन १८  
अह दूजेरहु इडबिडा आई, सो अहेतु लहि गर्भ सिधाई ॥  
यह तृणविन्दु जानि गति अन्या, करिय विश्वा भेट सु कन्या ९  
तनय कुबेर भयो तहँ ताकै, जपःतपसिद्धिबढी अति जाकै ॥  
जोग सौंदि एकांत जनक जिम, एकपिंग सु समर्थ भयो इम ॥ २० ॥  
विधि अधिकारी उचित विचार्यो, नाती सुत यह बिहित निहार्यो  
कंजज काज विश्वकर्मा किय, प्रथित विमान नाम पुष्पक प्रिया २१।

देवताओं ने अपने अधिकार सम्हाले और विष्णु भगवान् इच्छा रहित थे सो अपने लोक पधार गये ॥ १४ ॥ एक समय पुलस्त्य के पाप रहित विश्वा नामी पुत्र ने तृणविन्दु नामक राजा के राज्य करते समय तहाँ परतप और जप साधा ॥ १५ ॥ राजा तृणविन्दु की पुत्री भी उन कन्याओं के साथ आने लगी १ सुख देनेवाली (सुन्दर) जगह ॥ १६ ॥ उन कन्याओं को विश्वा धमकावे और उचित वार्ता कहकर उनको वहाँ आने से मना करै ॥ १७ ॥ विवाह किये बिना ही गर्भ पाओगी, यह सुनकर और तो डर से नहीं आई परन्तु राजा तृणविन्दु की कन्या ने वह बात नहीं सुनी ॥ १८ ॥ इडबिडा नामक वह कन्या दूसरे दिन फिर आई सो बिना ही कारण [संगम किये बिना ही] गर्भवती होकर गई तृणविन्दु राजा ने उसकी दूसरी ही गति (गर्भवती) जान कर उस कन्या को विश्वा के भेट करदी ॥ १९ ॥ २ पुत्र ४ पिता के समान योग ३ साधकर ५ कुबेर समर्थ होगया ॥ २० ॥ ब्रह्मा ने इसको उचित अधिकारी विचारा और अपने पुत्र (पुलस्त्य) के पोते को कार्य करने योग्य देखा. ब्रह्मा के

सो कुबेर कैहँ दै हंसासन, थप्पि बहुरि लंकापुर आसन ॥  
 स्वापतेय अधिकार समप्पिय, दिश उत्तर लोकाधिपत्य दिय ॥२२॥  
 गुह्यकश्किन्नरदच्छप्रभृत गन, सासनीय तस किय कंजासन ॥  
 पाय मोहि धनपति सुख पाये, व्योमकेससे मित्र बनाये ॥२३॥  
 प्रभु कुबेर इम धारि श्रीदंपन, सखिनय जात विश्रवा दरसन ॥  
 माल्यवान रक्खस बडवामुख, श्रीद अधीन जानि दुर्लभ सुख ॥२४॥  
 पुत्री आनि कैकसी अप्पन, धरि विश्रवा निकट मायाधन ॥  
 बुल्लयो बीज प्रबल नातैं बरि, भजहु विश्रवा हाव भाव करि ॥२५॥  
 सुत तो तू जनिहै कुबेर सम, रक्खस कुल रक्खवार मनोरम ॥  
 कबुर गो प्रच्छन्न यहै कहि, रचिय तास तनया सेवन रहि ॥२६॥  
 इक समय मुनि आंखि उधारी, निज ढिग विनंत लखी बरनारी ॥  
 कहिय भीरु सेवत किहिँ कारन, बलि मुनि हार्द कहिय सुभवारन  
 लगि प्रसभँ तब मुनि ललचायउ, प्रबल गर्भ संध्या विच पायउ ॥  
 हसि मुनि कहिय घोर दुवखहैहै, पुत्र तृतीयसंतांमति पैहै ॥२८॥  
 इम मुनि तीनशतनूज उपाये, जे रन बीर कैकसी जाये ॥

अथ विश्वकर्मा ने पुष्पक नामक प्रसिद्ध और प्यारा विमान बनाया ॥ २१ ॥  
 वह विमान ब्रह्मा ने कुबेर को देकर फिर लंका के आसन पर स्थापन किया  
 और धन का अधिकार देकर उत्तर दिशा के लोक का स्वामी बनाया ॥ २२ ॥  
 १ आदि गणों को ब्रह्मा ने उसकी आज्ञा में किया. मुक्त (लंका) को पाकर  
 कुबेर ने सुख पाया और महादेव जैसे मित्र किये ॥ २३ ॥ २ लक्ष्मी का दा-  
 तापन अथवा लक्ष्मी का प्यारापन पाया, वह कुबेर नम्रता पूर्वक अपने पिता  
 विश्रवा के दर्शन करने जाता था जिसको देखकर पाताल में माल्यवान्  
 राजस ने कुबेर के अधिकार में दुर्लभ सुख जानकर ॥ २४ ॥ माया ही है  
 धन जिसके ऐसा माल्यवान् कैकसी नामक अपनी पुत्री को विश्रवा के आ-  
 सन के समीप धरकर बोला कि इसका वीर्य प्रबल है इसकारण से इसको  
 वर कर हाव भाव सहित विश्रवा का सेवन कर ॥ २५ ॥ ३ राजस तो यह  
 कह कर अतर्धान होगया और उसकी पुत्री ने सेवन रचा ॥ २६ ॥ ४ वि-  
 शेष नम्र अंठ स्त्री को देखा ५ हे सुन्दर स्त्री तू किसकारण सेवा करती  
 है ६ फिर उसका अभिप्राय सुन कर मुनि ने कहा कि यह समय शुभ नहीं  
 है ॥ २७ ॥ जध स्त्री ने गृह्य किया तब मुनि भी लालच के बश होगया ॥ २८ ॥ ८ पुत्र



दसग्रीवश्च्येठो हुव दारुन, अर्जुन तस कुंभकर्णरद्वग आरुन॥२९॥

भक्त तृतीयश्चिभीखनश्भ्राता, ज्यौं पुनि सूर्पनखाश्च्युर्जाता ॥

पोतं च्यारिश्कैकसि ए पोखत, नाथ विश्रवा निलयर ीनता३०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयश्चाशौ वीति-

होत्रचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव६८बेला६८१पाणिपीडनवेलावर्णि-

तजगच्चक्षुर्जननमणिवैवस्वतमन्वङ्गजन्मेक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रविकुक्षि

उसन्ततिसमर्थनाऽन्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासंवादे

दशग्रीवादुद्भवनचत्वारिंशत्तमोमयूखः॥४०॥आदितो द्व्यशीतितमः॥८३॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

पादाकुलकम्

अर्भक बड़े उचित बय आवत, जनक दरस हित धनपतिजावत॥

छर्म पुष्पक बैठो छक छायो, तबहि कैकसी सुतन बतायो॥१॥

भनी लखहु तुमरे इहिं भाई, प्रभुता मोर सोति सुत पाई ॥

तप बिहीन कुलपांसन हो तुम, दुर्लभ फलत इक तपहि कल्पद्रुम॥२॥

दसग्रीव आदिक सुनि दुदर, सोदर चले करन तप सत्वर ॥

कह्यो अधिक व्है हैं कुबेर सन, पै न्यून न अैं गृह हठपन ॥३॥

१ उसके पीछे ॥ २९ ॥ २ पीछे जन्म लेनेवाली ३ बालक ४ पति विश्रवा के घर में नन्न होकर रही ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण वंश वर्णन में बसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश-  
मणि वैवस्वत मनुपुत्र जन्म में इक्ष्वाकु के पाटवीपुत्र विकुक्षि की सन्तान  
के समर्थन के भीतर जानकीजानि (रामचन्द्र) चरित्र में हनुमान् और लंका  
के संवाद में रावण आदि के जन्म का चालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४० ॥  
और आदि से बियासी मयूख हुए ॥ ८२ ॥

५ बालक ६ पिता के ७ कुबेर ८ समर्थ पुष्पक विमान में बैठा सोद से छा-  
याहुआ कैकसी ने अपने पुत्रों को बताया ॥ १ ॥ और कहा कि मेरी सोत के  
पुत्र और तुम्हारे भाई ने कैसी प्रभुता पाई है, तप के बिना तुम कुल को दोष  
लगानेवाले हो, दुर्लभ फल का देनेवाला एक तप ही कल्पवृक्ष है ॥ २ ॥ ९  
दुस्तर तप करने को ? शीघ्र चले ॥ ३ ॥

इम कहि छेत्र गोकर्न आये, करि संघाँ तप कठिन कुमाये ॥  
 दसहजार १०००० हायन दसकंधर १, पंचसहस्र ५००० मध्यम २ तपतत्पर  
 बच्छर पंचहि सहस्र ५००० विभीषन ३, तहँ इम तपन लगै लैलै पन ॥  
 सबसौं कठिन दसानन सद्धी, होमन सीस लग्यो खल हँद्धी ॥ ५ ॥  
 सम्रासहस्र इक १००० प्रति इक १ सिर, कट्टि कट्टि हुत अनल करे किर  
 हुव पूरन जब दसम १० हजार, धरी दसम गलपर आसिधारा ॥ ६ ॥  
 त्वरित पधारि निवार्यो विधिं तव, अकिखय नभ कट्टहु मंगहु अव ॥  
 मंगिय दुष्ट काहुसौं न मरौं, करि प्रतिहत सत्रुन विजय करौं ॥ ७ ॥  
 प्रभुता मोसम अन्य न पावैं, चउ ४ दिस सासैन सीस चढावैं ॥  
 तव विधि कहिय तथारस्तु इष्ट तव, जंगम १ वर २ प्रेरहु सासन जव ॥ ८ ॥  
 इतर कहा न मरैं हरि १ ईसरन, करहु विचारि वैर नर १ कीसरन ॥  
 हुतभुक्त जे सिर कट्टि करे हुत, जे तव होहु बहुरि सुखसाँ जुत ॥ ९ ॥  
 रावन कहिय बली वर टारे, है नर १ वानर २ अन्न हमारे ॥  
 मन्नै कुंभकरन निज मानस, वर लाहि नहि व्हैहौं निद्रावस ॥ १० ॥  
 आलस हीन करौं जय अविरत, मोरयो सुरन गिरा करि यह मत ॥  
 विधिके ब्रूहि कहत भाखावट, खल वर मंगिय सयन श्राम खट ११  
 परं प्रभुसक्ति विभीषन पाई, आसिरें त्रयी ३ निलय अव आई ॥

१ गोकर्णेश्वर महादेव जो जयपुर के राज्य में यनास नदी के किनारे  
 पर हैं २ प्रतिज्ञा ३ वर्ष ४ कुंभकर्ण ५ वर्ष ६ हनबुद्धि ॥ ५ ॥ ७ एक हजार  
 वर्ष में एक मस्तक को काट कर ८ अग्नि में ९ फेंक कर होम किये ॥ ६ ॥  
 १० ब्रह्मा ने ११ मस्तक मत काट और वर मांग १२ बंधन [कैद] करके ॥ ७ ॥  
 १३ मेरी आज्ञा को १४ ऐसा ही होओ १५ चलनेवाले पदार्थों  
 पर वर के प्रभाव से शीघ्र आज्ञा प्रेरो ॥ ८ ॥ और तो क्या है? विष्णु और  
 शिव से भी नहीं मरेगा परंतु मनुष्य और वंदरों से विचार कर वैर करना  
 १६ अग्नि में होमे १७ परम शोभा सहित ॥ ९ ॥ रावण ने कहा कि आपने अच्छे  
 यलवान् डाले, मनुष्य और वंदर ये तो हमारे अन्न हैं, कुंभकर्ण ने अपने मन  
 में यह विचारा कि निद्रा के बश नहीं होने का वर मांगूंगा ॥ १० ॥ निरंतर  
 देयताओं ने सरस्वती करके उसका यह विचार फेर दिया, १८ मांग यह कहते  
 ही १९ मास ॥ ११ ॥ २० परम प्रभुसक्ति २१ तीन सुखों का समूह अपने घर आया.

विरचिजनक १ जननी रपय बंदन, छक भरि कहिय कवन हम छंदेन ॥ १२ ॥  
 रचि बल हुकम सवन सिर रक्खन, लग्गो करन उपद्रव लक्खन ॥  
 यह सुनि माल्यवान खल आदिक, पहुँचे तजि पाताल प्रमादिक ॥ १३ ॥  
 मातामह अक्खिय दसमुख सन, अगग हुतो लंकापुर अप्पन ॥  
 भुगगत अब तिहिँ धनद वीतभय, जाय कहिँ दौहित्र करहु जया ॥ १४ ॥  
 सुनि दससिर लंका रचि संगर, धनद कहिँ सब छिन्न लई धर ॥  
 खंधाबोर तत्थ मंडिय खल, बोरन लग्यो धर्ममग अतिबल ॥ १५ ॥  
 जो सुनि खलहिँ धनद बरजायो, भ्रात न दुरित करहु मन भायो ॥  
 धनद दूत कहँ हनि दसकंधर, प्रथम चढ्यो यह सुनि अलकापरा ॥ १६ ॥  
 करि जय दमित कुबेरहिँ किन्नो, लरि विमान पुष्पक खल लिन्नो ॥  
 आरुहि ताहि चलयो उत अगगै, भनैक सुनत जिततित सब भगगै ॥ १७ ॥  
 पहुँचत सीस अद्रिअष्टापद, देख्यो रुकत विमान सु दुर्मद ॥  
 सचिव प्रहस्त डिग रु भट रक्खस, बलि मातुल मारीच हुकम बस ॥ १८ ॥  
 विस्मित हुव तव रुकत विमानहिँ, दससिर पुच्छिय रोधै निदानहिँ ॥  
 इहिँ अंतर नंदी तँहँ आयउ, सयँ त्रिसूल अमरैख उफनायउ ॥ १९ ॥  
 जंषियँ दुगम फटिकै गिरि जानहु, मध्य रमत सिव साँवै प्रमानहु ॥  
 ईश्वरको प्रविसँन आदेसन, आसिरँ बचहु करहु भट एस ना ॥ २० ॥

१ हमारे बश में कौन नहीं है ॥ १२ ॥ २ उन्मत्त होकर ॥ १३ ॥

३ नाना (माल्यवान्) ने कहा कि लंका पुर पहिले अपना था जिसको ४

कुबेर विना भय होकर भोगता है ॥ १४ ॥ वहाँ दुष्ट ने अपनी ५ राज-

धानी बनाई ॥ १५ ॥ ६ कुबेर ने मना कराया कि हे भाई मनमाना ७ पा-

प मत कर ८ कुबेर की पुरी पर चढ़ा ॥ १६ ॥ ९ दंडित १० पुष्पक विमा-

न पर चढ़ कर उसी तरफ (उत्तर) को आगे चला ११ आहत सुनत ही ॥ १७ ॥

१२ सुमेरु पर्वत के मस्तक पर पहुँचते ही उस दुर्मद ने अपने विमान को

रुकता देखा १३ राजस १४ फिर १५ मामा ॥ १८ ॥ १६ रुकने का कारण १७ नन्दी

नामक महादेव का गण १८ हाथ में त्रिशूल लिये १९ क्रोध में उफना ॥ १९ ॥

उसने २० कहा कि २१ कैलास पर्वत को दुर्गम जानो इसमें २२ पार्यती सहित

महादेव रमते हैं इसके २३ भीतर जाने की महादेव की आज्ञा नहीं है २४ हेराक्ष

अधिपसदार रमत खल अक्खिय, रीति किम सु अवधूत न रक्खिय॥  
 कुकृत तू वानर अनुकारक, धनी तिमहिं व्है हैं वृखधारक ॥२१॥  
 गर्व अतुल लखि दियउ साप गन, मोसे कपिहि होहु तव मारन॥  
 धकिं यह सुनत बढ्यो दसकंधर, कइलासहिं उप्पार लयो कर ॥२२॥  
 कंपिय गिरि बसवान त्रान करि, भव गर लगी सिवा हाहाभरि॥  
 सिव दब्बिय अंगुठ इक्कसन, रोयो कर गिरि तर चिपि रावन ॥२३॥  
 रीति<sup>१</sup> कहिय मारीच न रोवहु, खंडपरसु भुंति करि दुख खोवहु॥  
 प्रभुसौं अभय दीन बनि पावहु, जिन करि बुंभ त्रिलोक जगावहु २४  
 धुंति तव निठि निठि खल धारी, पढि भुंति साम नुंये त्रिपुरारी॥  
 बलि अप्पहु इक स्तोत्र बनायो,

मुख दस १० दस १० हि नाराच नमायो ॥ २५ ॥

त्वरित तुष्ट अक्खिय प्रभु अंबक, कछु मंगहु करि प्रनति कंदंबक॥  
 तव क्रव्याद कहिय कर तुष्ट, छिप्र प्रसाद होय जब छुटै ॥२६॥  
 खगडपरसु हसि छोरि दयो खल, बलि इक ताहि सख दिय अतिबल॥  
 कहिय घोर परिहै जब संकट, करि अरिबध व्हैहै तव कंकट २७  
 याको तू जब करहिं अनादर, तव मम ढिग अहै यह सत्वर॥

ऐसा मत करो. वचो ॥ २० ॥ रावण ने कहा कि शिव ? स्त्री सहित  
 रमते हैं तो १ योगियों की रीति कैसे बनारवली है, तू ३ बदर के समा-  
 न कूकता है ऐसे ही ४ बैल को रखनेवाले तेरे धनी होवेंगे ॥ २१ ॥ ५ क्रोध  
 करके ॥ २२ ॥ ६ रक्षा करो यह कह कर और ८ पार्वती भी हाहाकार  
 करके ७ शिव के गले लग गई जब महादेव ने अपने अंगुठ से पर्वत को द-  
 बाया तब उस के नीचे ८ हाथ चिपजाने से रावण रोया ॥ २३ ॥ मारी-  
 च ने छूटने की १० रीति बताई कि रोवै मत ? १ महादेव की ? २ स्तुति करके  
 दुःख मिटा ? ३ कूक करके तीनों लोकों को मत जगा ॥ २४ ॥ १४ धीरज ? ५  
 सामवेद पढ़ कर शिव की १६ स्तुति करी १७ नाराच जाति का छन्द ॥ २५ ॥  
 १८ महादेव ने कहा कि मैं प्रसन्न हुआ १९ नमस्कारों के समूह करके (बहुत  
 नमस्कार करके) तब २० राजस ने कहा कि मेरा हाथ टूटता है सो आप २१ शीघ्र  
 प्रसन्न होवें जब छूटैगा ॥ २६ ॥ २२ महादेव ने हसकर २३ कवच ॥ २७ ॥ २४ शीघ्र  
 मेरे पास पीछा आजावेगा

तै रुदनारव दिसन तनायउ, आब्हय तव रावन अब आयउ । २८।  
खगडपरसु इम छोरि दयो खल, आयो विमद तुराय दुणै कि अल ॥  
पुनै दिगविजय काज दिस प्राची, रावन चलयो टेक हिय राची । २९।

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वी-  
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ पाणिपीडनवेला  
वर्णितसप्तसप्तिसन्ततिवर्षवैवस्वतमन्वङ्गजनुर्दिवाकु ६ पट्टपपुत्र  
विकुक्षि ७ वंशवर्णनाऽन्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासंवा-  
दे रावणपूर्वचर्यायां वेधोऽवामदेवऽवरप्रापणमेकचत्वारिंशत्तमो ४१  
मयूखः ॥ ४१ ॥ आदितस्त्र्यशीतितमः ॥ ८३ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिथितभाषा )

( दोहा )

भुसुरै इक पहिलै भयो, विद्या अतुल विवेक ॥

वेद पढत तस बदनतै, उपजी कन्या एक ॥ १॥

पादाकुलकम्

दै तिहिँ वेदवती आब्हय द्विज, निरखि अतुलगुन १ रूप २ सुतानिज  
याकै उचित धरँ न बिनु अच्युत, दैन तिन्हँ करि तुष्ट तपो द्रुता २।  
इम विचारि अखिलेस रिभावन, प्रथित करन लग्गो तप पावन ॥

तूने राने का शब्द दिशाओं में फैला दिया इस कारण से तेरा नाम रावण होवेगा  
। २८। महादेवने उम दुष्ट को छोड़ दिया सो मानों १ वीछू डंक तुड़ाकर आवे ऐसे  
बिना मद होकर आया फिर दिग्विजय करने को पूर्वदिशा में गया । २९।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य स-  
न्तान प्रजापति वैवस्वत मनु के पुत्र जन्म में इक्ष्वाकु के बड़े पुत्र विकुक्षि के  
वंश वर्णन में श्रीजानकीपति (रामचन्द्र) के चरित्र में हनुमान और लंका  
के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में ब्रह्मा और महादेव से वर प्राप्त होने  
का इकतालीसवां मयूख समाप्त हुआ । ४१। और आदि से तैंयासी मयूख हुए । ८३।  
३ ब्राह्मण ४ बहुत ज्ञानवान् ५ मुख से ६ वेदवती नाम दिया ७ पति ८  
विष्णु भगवान् के बिना और कोई नहीं उन विष्णु को प्रसन्न करने के  
लिये शीघ्र तप करो ॥ २ ॥ ९, प्रसिद्ध

नृपन वहुन द्विज मंगि बहोरिय, छेम नतदपि हरिसौँ हठ छोरिया ॥  
कन्यारूप निरखि कव्यादन, द्विज सन मंगिय पाय प्रमादन ॥

नहि दिन्नी तव द्विजहिँ निलज्जन,

खाय कहिय तोसम भुव खज्जन ॥ ४ ॥

मरत विप्र तस नारि गई मरि, बेदवती सु बची हिय हरि भरि ॥

सो तव करत निहारी दससिर, केसपकरि लेजान लग्यो किरा ॥

कचनिज कट्टि सु गई धरनि धसि, मोही करि मरिहै इम कहि हसि

सुनि रावन यह अग्गसिधायउ, उँसीरबीज देसविच आयउ ॥ ६ ॥

नृप मरुत तँहँ सत्र वनावै, जीव भ्रात संबत जँजावै ॥

वासौँ रन संगत नृप उठत, रोक्यो मुनिन दिच्छित न रुठत ॥ ७ ॥

तिनके कहँ कही यह तानै, हारे हम मखही मिस मानै ॥

आयेहै देवहु तिहिँ अध्वर, चकित भजे छिपि छिपि सुनि निसचर ॥ ८ ॥

इन्द्र १ मयूर २ उड्यो द्विके २ वहै यम २, श्रीदे ३ सरट ३ वक्रांग ४ वरुन ४ सम

हास्यो नृपहिँ कहाय दुष्ट हसि, गो जब रावन सुँरन गर्व ग्रसि ॥ ९ ॥

आये लोकपाल तव अध्वर, बेस धरे तिन्हके जिन्ह दिय बर ॥

चविय सर्क १ है सिखि १ तेरेचहि, होहु पुच्छ ममनपन हजार १००० हि

१ उस समर्थने तभी विष्णु को विवाह ने का नहीं छोड़ा । २ राक्षसों ने

उस ब्राह्मण को खाकर कहा कि तुम्हारे समान और खज (खाने की वस्तु)

नहीं है । ३ विष्णु को हिये में भरके उसके तप में विलेप करते । ४ अपने

केसों को काट कर भूमि में घुस गई और कहा कि मेरे कारण से ही तू मरेगा ७ उ

सीरबीज नामक (कुन्धार) देश में यज्ञ १ वृहस्पति का भाई १० यज्ञ करार हुआ

११ जिसने यज्ञ की दीक्षा ली होवे वह क्रोध नहीं करता है ॥ ७ ॥ उन मु-

नियों के कहने से राजा ने रावण से कहा कि यज्ञ को ही मिस (बहाना)

मान कर हम हारे, उस यज्ञ में देवता भी आये थे सो रावण को आया हुआ

सुन कर चकित होकर छिप छिपके आगे ॥ ८ ॥ इन्द्र मयूर होकर उड़ा और

यमराज १२ काक पक्षी हुआ १३ कुबेर १४ गिरगिट (किरकांटिया) और व-

रुण १५ हंस होकर राग द्वेष से रहित होकर आगे १६ देवताओं का गर्व ग्र-

स कर जब रावण चला गया ॥ ९ ॥ तब उपरोक्त लोकपाल पीछे १७ यज्ञ

में आये और जिन जिन देवताओं ने जिन जिन का रूप धारण किया

था उनको वर दिये १८ इन्द्र ने कहा कि हे मयूर ॥ १० ॥

रामचन्द्रवर्णन ] तृतीयराशि—हाचत्वारिंशमयूख (८५१)

जलद मंडि मैं बुढ़ करौं जब, तैरै अति आनंद बढहु तब ॥  
 भनिय समनरका कहि २ सुखभावहिं, जेतो कहि विचश्राद्धजिमावहिं  
 तृप्ति पितर लहि है सब तासौं, अभय फिरहु बायस इच्छासौं ॥  
 सरटन ३ श्रीद ३ पुरटब पु थपिय, सब गुन हंसहिं ४ वरुन ४ समपिय १२  
 इम मरुत्त अध्वर उदंत हुव, भयद चलयो रावन जिततित भुव ॥  
 पुरुरवा १ गय २ गाधि ३ महीपति, सुरथ ४ बहुरि दुख खंत ५ सुद्धमति ॥ १३ ॥  
 नृप इति मुख पुच्छाय परस्पर, भेजत भये पराभव कग्गर ॥  
 समय चिति इम भूप नटे सब, आयउ यह साकैत दुष्ट अवा १४  
 जहँ अनरण्य नरेस विराजै,  
 सिंधुर अयुत १०००० द्विगुन २०००० रथ साजै ॥

तुरग लख १००००० पाँडक द्विगुन २००००० तसं ॥ १५ ॥  
 हसि खल कछो बचहु कहि हारे, मुखो तउ न नृप बहु अरि मारे ॥  
 कायतजत अनरण्य तुमुल करि, धीर कहिय खल संक कछु न धरि १६  
 पोखि प्रजा किय राज्य धर्मपथ, जो हम तो यह होहु जथांतथ ॥  
 ध्वंसक तव होवहु मम कुल धव,  
 भनि अनरण्य तजे तब वपु १ भव २ ॥ १७ ॥

१ मेघ मंडकर जब मैं वर्षा करूं २ यमराज ने काक से कहा कि जो तुझको आह में  
 जिम्हावे ११ उसके पितर उससे तृप्ति लेवेंगे ३ हे काक तू अपनी इच्छा से निर्भय  
 फिर गिरगिट को कुंवर ने सोने के शरीरवाला बनाया और वरुण ने हंस को  
 सप्त गुण दिये ॥ १२ ॥ इस प्रकार मरुत्त नामक राजा के यज्ञ में वृत्तान्त हुआ  
 ४ भय देता हुआ ५ दुष्यन्त ॥ १३ ॥ ६ इत्यादि राजाओं ने परस्पर पुछाकर  
 समय देखकर सब राजाओं ने युद्ध करने से नदकर रावण के पास पराजय  
 (हार) के पत्र भेजे ७ अयोध्या में १४ ॥ हाथी ६ घोड़े १० पैदल ॥ १५ ॥ श-  
 रीर छोड़ते समय भयंकर कार्य करके रावण की कुछ शंका नहीं करके अ-  
 नरण्य ने कहा ॥ १६ ॥ हम ने जो प्रजा का पालन करके धर्म से राज्य कि-  
 या है तो जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही होवेगा कि हमारे कुल का पति तुम्हा-  
 रा मारनेवाला होवेगा यह कहकर अनरण्य ने इस संसार से शरीर छोड़ा

छितिपालन इम गंजि बडे छक, उप्पर चलयो देन दिव ओदक ॥  
नारद मिलि जँह कहिय निवारहु, मारि काल रखे ति न मारहु ॥ १८ ॥

( दाहा )

संजमिनी पुरमैं सदा, करत बास सुहि काल ॥

जितहु ताकाँ जायकै, प्रबल पुण्यजनपाल ॥ १९ ॥

( पादाकुलकम् )

मोरयो इम बीचाहि नारद मुनि, संजमिनी पहुँच्यो रावन मुनि ॥

कनकशतनमहलन बिच केते, जहँ खल लखे पुण्यनर जेते ॥ २० ॥

त्यौं नरकन पापी बहु त्रासे, बाहिर खल तिन्ह कडि विसासे ॥

कर्बुरपति पुनि जमहिँ कहाई, भनहु हारि वा जुझहु भाई ॥ २१ ॥

जमश्रावनबहु दिन जब जुट्टे, छोहँ प्रसभ दुहुँओर न छुट्टे ॥

हुलसिपिक्खिनारदकियहासहिँ, विधिआयेलाखिसृष्टिबिनासहिँ ॥ २२ ॥

वरजि बडे मन दुहुँनबहोरे, जय न दुर्घाँ न दुर्घाँ कर जोरे ॥

अजकी सुनि रावन मुरि आयो, चंडकिरन जित करन चलायो ॥ २३ ॥

कहिय जाय रविमंडल कंटक, हारि धरहु वा लरहु बीर हक ॥

पासवान दंड सु मुनि रविपँहँ, जाय निवेदि लगे आसय जँह ॥ २४ ॥

१ राजाओं को २ स्वर्ग का ३ भय देने को चला जहाँ मार्ग में ना-

रद मुनि मिले तिनने कहा कि जिनको काल ने पहिले ही मार रखे हैं ति-

नको मत मार ॥ १८ ॥ सबको मारनेवाला वह काल संजमिनी नामक पुर

में वास करता है सो हे राजाओं की पालना करनेवाले ( रावण ) उस को

जाकर जीत ॥ १९ ॥ यमराज की राजधानी में पहुँचा वहाँ रत्नों के जड़े हु-

ए सोने के महलों में धर्मात्मा मनुष्यों को देखा ॥ २० ॥ और नर-

कों में त्रास पाते हुए पापी लोगों को बाहर निकाल कर उनको धीरज दि-

या फिर रावण ने ॥ २१ ॥ १५ क्रोध और हठ दोनों ओर का नहीं छूटा जिन

को देखकर प्रसन्न होकर नारद हसे उस समय सृष्टि का नाश देखकर ब्रह्मा

आये ॥ २२ ॥ दोनों ओर से मन बढरहे थे जिनको मना करके पीछे फेरे

इनमें दोनों ओर नतो किसीका विजय हुआ और न दोनों ओर में किसी

ने हार मानकर हाथ जोड़े ब्रह्मा की बात सुनकर रावण वहाँसे पीछा फिर

आया और सूर्य की तरफ विजय करने को चला ॥ २३ ॥ सूर्य की कक्षा के

नीचे ( समीप ) रहनेवाले दंड नामक सूर्य के सेवक ने सूर्य से जाकर कहा



हेलिहु कहिय दुष्ट सन हारे, पुनि खल ससि दिस सुभट प्रचारे ॥  
 ससिमंडल पहुँचत भट सारे, प्रचुर सीत जड होय पुकारे ॥ २५ ॥  
 सुनि मारीच १ प्रहस्त २ आदि सन, रावन अकिखय भय न उचित रन  
 जंपिय उनहु गरे हम जावत, निठुर हिमानी दर्प नसावत ॥ २६ ॥  
 रक्खहु गाढ सबन कहि रावन, पुनिहु बढ्यो ससिसौं जय जावन ॥  
 विधिहिं आनि पुनि खलहिं बहोरयो, छिति अमृत द्विज पति सुनि छोरयो ॥  
 बालि जितन अधभुवन विचारत, पहुँच्यो नागलोक भय पारत ॥  
 प्रतिभट भोगवती पुर के पहु, बासुकि आदि नाग जित्यो बहु ॥ २७ ॥  
 उत्तम नागसुता गहि आनी, सनिमय नगर गयो पुनि मानी ॥  
 सहि हजार ६०००० निवात कवच जहँ, तिनहु घोर संगर मंडिय तहँ ॥ २८ ॥  
 उनहु सुभट रावन किय आकुल, साँग्र अब्द रन रहिय समाकुल  
 विधिहिं आय तथहु दुव २ वर जे, तुम मम वर होहु न परतर जे ॥ २९ ॥  
 इत मम वर लंके सहु उद्धत, मित्र बनहु अब दुहुँ दिस सम्मत ॥  
 सुनि निवात कवच रावन सन, मैत्री करि रक्ख्यो वह हित मन ॥ ३० ॥  
 लंकासौं हु अधिक सुख लित्रौं, क्रम पद्यान अगं पुनि किन्नौं ॥  
 खोजत पुच्छि बरुन लोकहिं खल, पुर अस्मकं पहुँच्यो विमान बल ॥ ३१ ॥  
 दानव जत्य च्यारिस त ४०० दुष्ट, कालकेय निवसैं बल जयकर ॥

॥ २४ ॥ सूर्य ने भी कहा कि उस दुष्ट से हारे ? चंद्रमा की ओर २ बहुत  
 ठंड से जड़ होकर पुकारे ॥ २५ ॥ दया रहित ३ बर्फ हमारा घमंड मिटाती  
 है ॥ २६ ॥ ४ ब्रह्मा ने आकर उस दुष्ट को पीछा फेरा तब ५ चन्द्रमा ने पृथ्वी  
 की ओर अमृत छोड़ा (चन्द्रमा सदैव अपने पास से अमृत वर्षाकर पृथ्वी  
 की पालना करता है सो रावण के जाने से बन्ध कर लिया था सो फिर छो-  
 डा) ॥ २७ ॥ फिर ६ पाताल को जीतने का विचार करके ७ भोगवती ना-  
 मक नगरी के राजा सामने युद्ध करनेवाले हुए जिन बासुकि आदि बहुतों  
 को विजय किये ॥ २८ ॥ २९ ॥ ८ उमरावों सहित ९ डेढ़ वर्ष तक १० भरपूर  
 युद्ध रहा ? ११ ब्रह्मा ने कहा कि तुम दोनों मेरे वर से बड़े हो सो परस्पर एक दू-  
 सरे का बाल देनेवाले मत हो ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १२ अस्म नामक पुर में ॥ ३२ ॥  
 १३ दुस्तर (दुर्धर्ष) विजय करनेवाली कालकेयों की सेना जहाँ बास करता

इक तहँ विद्युज्जिह्व करालक, सुप्पनखा व्याही जिहिँ सालक ३३  
 सो लहि कालकेय सब सत्थै, मंडि चलयो रन रावन मत्थै ॥  
 सहबल खल भामसुसंहारयो, बलिजयकरितससोकवचारयो ॥ ३४ ॥  
 पासीलोकें खोजि तिहँ पापी, थिरहठ प्रविसि लरन मति थापी ॥  
 रोक्यो तत्थ जामिकन रावन, प्रविश्योतिन्हहनिअग्नअपावन ॥ ३५ ॥  
 पासीसुत इहिँ सुनि गो१ पुष्कल २, विरचन रन आये उद्धतबल ॥  
 लरे बहुत तदपि न जय लब्धो, खल तिनकोहु कटक बहु खब्धो ॥ ३६ ॥  
 स्यंदन छोरि गगन पासीसुत, जाय लरे बहुतहि छलबलजुत ॥  
 तदपि न रावन हारि भई तब, स्वपुर गये भजि खिल भट लै सब ३७  
 कहि पठई रावन करि हासी, पठवहु लरन छिप्यो क्यों पासी ॥  
 जल पति सचिव प्रभास कह्यो जहँ, क्योंयहँ हेरतअप्पवरुन कहँ ॥ ३८ ॥  
 सुनन गानविद्या सु विलासी, पंकज सुनु लोक गो पासी ॥  
 कहि मम विजय भयो दसकंधर, खोजनलग्यो इतर तहँ खेचर ३९

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयः श्लोकः श्री-  
 तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ पाणिपीडनबेलाव-  
 शितसूर्यसन्ततिवर्षवैवस्वततनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रविकुक्षिवंश

है वहां एक विद्युज्जिह्व नामक भयंकर राक्षस जिसको रावण की वहिन  
 मूर्धणखा को शाले (रावण) ने परणाई थी ॥ ३३ ॥ दुष्ट रावण ने सेना स-  
 हित २ वहिनोऊ को मारकर फिर उसका शोक किया ॥ ३४ ॥ वहां ३ व-  
 रुण लोक को खोजकर ४ पहराइतों ने रावण को रोका ॥ ३५ ॥ यह सुनकर गो-  
 और पुष्कल नामक वरुण के पुत्र युद्ध करने को गये शतोभी ॥ ३६ ॥ ६ रथ  
 को छोड़कर ७ बाकी के बचेहुए वीरों को लेकर ॥ ३७ ॥ ८ वरुण क्यों छि-  
 प गया है ९ वरुण के सचिव प्रभास ने कहा कि आप वरुण को यहां क्यों  
 हेरते हो ॥ ३८ ॥ वह वरुण गानविद्या सुनने का विलासी ब्रह्मा के लोक में  
 गया है, यह सुनके मेरा विजय हुआ यह कहकर राक्षस (रावण) दूसरों  
 को हेरने गया ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे श्लोक में अग्निवंशी चह-  
 वाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य के  
 सन्तान प्रजापति वैवस्वत के पुत्रों की उत्पत्ति में इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र

[रामचन्द्रवर्णन] तृतीयराशि—त्रिचत्वारिंशमयूख (८५५)

१। ख्यानाऽन्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रेहनुमल्लङ्कासँव्वादेरावणपू  
र्यायां दिग्विजयवारुणास्थानपर्यन्तसमाक्रमणं द्विचत्वारिंशत्तमो  
॥ मयूखः ॥४२॥ आदितश्चतुरशीतितमः ॥८४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम्

१। रिडमग्रश्मनगरदुवर्जयकलि, बलिकोस्थानतृतीयश्चलख्योबलि  
२। ज्य नगर आभा तँहँ दीसी, तिरस्कार दिवको करती सी ॥१॥

॥ शुद्धप्राकृतिभाषा ॥ गीई ॥

१। वेरुलिअवार१गोउर२कुड्ड३कवाडा४वडरविअड्डिवरा ॥

२। फलिहमणिप्पायारा दिड्डा तह दहमुहेण बलिणायरी ॥२॥

३। एत्ताहे तं ठाणं दडूण अमुम्मि को हु वसइ ति ॥

४। पड्डाविओ खलेण वि मारीओ माउलो सुवो मज्जे ॥३॥

गीर्वाणभाषा

५। चाक्कचक्कचकितचेता मारीचोऽपि प्रविश्य वरणाऽन्तः ॥

६। आदर्शमिव मयकपिः सोऽद्राक्षीद्वैत्यराजनिजनिलयम् ॥४॥

१। कुत्ति के वंशवर्णन के भीतर श्रीजानकी प्रिय (रामचन्द्र) के चरित्र में  
नुमान और लङ्का के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में वरुण के स्था-  
को घेरने पर्यन्त दिग्विजय का बिघालीसवां मयूख समाप्त हुआ। ४२।  
२। आदि से चौरासी मयूख हुए ॥ ८४ ॥

युद्ध में २ फिर ३ क्रान्ति ५ स्वर्ग का ४ अनादर करती हुई दीखी ॥ १ ॥  
हाँ रावण ने लहसनीयों से बनेहुए शहर के दरवाजे, दीवारें और किवा-  
ँवाली हीरों की बेंदियोंवाली और बिल्लोर के कोटवाली बलि की पुरी  
खी ॥ २ ॥ उस समय में उसको देखकर इसमें कौन रहता है यह देखने  
लिये डुष्ट रावण ने अपने मामा मारीच को भीतर भेजा ॥ ३ ॥ जिस  
कार वंदर काच के बनेहुए महल को देखें तिसप्रकार, चकाचोंधि से चकित  
आ है चित्त जिसका ऐसे मारीच ने कोट के भीतर घुसकर दैत्यराज के  
खय महल को देखा ॥ ४ ॥

३। वैदूर्यद्वारगोपुरकुल्लकपाटा वज्रवितर्दिवरा। स्फटिकमणिप्राकारा दृष्टा तत्र दशमुखेन बलिनगरी ॥२॥  
स्मिन्काले तत्स्थानं दृष्ट्वा अमुष्मिन्कः खनु वसतीति। प्रस्थापितः खत्तेनापि मारीचो मानुलः सो मध्ये ॥३॥



पुनिवलि कहिय होय जब प्रत्यय सहज करहु इक कज बीस २० संय  
मंजूया यह लखहु मनोरम, याबिच है कुंडल दुव २ उत्तम ॥ १२ ॥

मेरो तबहि जानिहो मोचन, आनहु करु बल १४ आलोचन २ ॥

यह पैठा तब दुष्ट उधारी, कुंडल दुव २ देखे रुचिकारी ॥ १३ ॥

उठे तदपि न जदपि उठाये, लाहि अँचिज भुज सर्वाहि लगाये ॥

जोर करत गिरगो टिक जाबुन, गर्वहिँ तजि आयो लज्जित गुन १४

कंदुक करि कइलास उठायो, इक १ हु न तासौं कुंडल आयो ॥

अकिखय हसिवलि पुव्वकाल ग्रह, मभ जु हिरण्यकस्यपु प्रपितामह

धारतहो कुंडल ए २ उत्तम, सुँ हन्यौं द्वारपुरैं सो दैरसम ॥

अतिबल स्यामपुरुष यह असो, हठ तजि जाहु द्वार पर है सो ॥ १६ ॥

बिरचतदपिवलि मंदिरवाहिर, जयनिज कहि निकस्यो खल जाहिर ॥

पुष्पक चढि लैकैं निज पंचन, आयो निजपुर धर्म उदंचन ॥ १७ ॥

नर १ गंधर्व २ जच्छ ३ सुर ४ किन्नर ५,

दनुज ६ नाग ७ कन्या बहु निरंदर ॥

लायो पकरि रूप १ गुन रल्लच्छी, उद्धत दर्प विकिखैं सब अच्छी ॥ १८ ॥

मय कन्या पहिलैं मंदोदरि, आनी परनि बेदैपद्धति अरि ॥

तनुज ति मेघनाद हुव तामैं, सबन बडो वर सूर सभामैं ॥ १९ ॥

२हे बीस हाथवाले तुम्हार कहने का जब १ विश्वास होवे कि एक सहज कार्य

है उसको कर दो, यह ३ सन्दूक (पेटी) ॥ १२ ॥ ४ तभी मेरा छुडाना मान

लूंगा, उन कुंडलों को बल करके ला और उनके ५ दर्शन कर, अथवा बिना

विचार किये उठा ला, तब रावण ने उसपेटी को खोली ॥ १३ ॥ ७ आश्चर्य

करके ८ घुटने टिक कर ॥ १४ ॥ ९ गैद के समान कैलास पर्वत को १० पहिले

समय में मेरा पड़दादा ॥ १५ ॥ ११ उसको १२ द्वार पर रहनेवाले इस पुरुष

ने जैसे १३ शंख का फौड़ डाले इस प्रकार मार डाला, ऐसा बलवान यह श्या-

म पुरुष है सो द्वार पर है इससे हठ बौड कर चला जा ॥ १६ ॥ तोभी वह

नकटा बली के घर के बाहिर अपना विजय कहता हुआ निकसा १४ टका

ना (धर्म को टक देनेवाला) ॥ १७ ॥ १५ निर्भय अथवा निर्लज्ज १६ लक्ष्मी को

समान १७ घमंड में भरेहुए ने १८ अच्छी देख देख कर ॥ १८ ॥ १९ वेदमार्ग

के शत्रु (रावण) ने ॥ १९ ॥

यह दिगविजय करन खल गो यह, मेघनाद आरंभिय तब मह ॥  
 दिच्छा ले रु बुल्लि तहँ देवन, सोमशहव्यं उपहरि किय सेवना ॥ २० ॥  
 उचित द्विजहु लंका मख आये, रक्खस इम सब सप्तश्रचाये ॥  
 ब्रह्मादिक देवन तिहिँ दिय बर, मायारहहु तामसी तव कर ॥ २१ ॥  
 समर अदिहँ होहु रसव सत्रुन, अरु तू लखि लखि करहु जेर ॥ २२ ॥  
 क्रतुँ ए जव घननाद शरह्यो करि, सुतो कुंभकरन शर्वर अनुसरि ॥ २३ ॥  
 बैठि तवहिँ जलबीच विभीषन, संतत व्रत लग्यो तप सदन ॥  
 अस्म नगरसन रावन नायो, मधु इहिँ अंतर जोर मचायो ॥ २४ ॥  
 आसिरँ यहहु भौम रावनको, अवसर पिक्खि चोर आवनको ॥  
 लंका आय पैठि अंतहपुर, तहँ निज इष्ट खोजि अटि आतुरा ॥ २५ ॥  
 भव्य वंधुगन रावन भगिनी, अस्रपँ कुल मायागुन अगिनी ॥  
 कुंभीनसी नाम कांता जो, साहस प्रबल ताहि गहि मधु सो ॥ २६ ॥  
 आलस्य निज मधुवन वह आयो, बसि दंपति सुख समय बितायो ॥  
 रावन नहि घननाद रज जनरत, ज्यौं दुँव अनुज सुप्त अरु जलगत ॥

१ जव ऊपर कहा हुआ दिगविजय करने को यह रावण गया था तब मेघनाद ने उत्सव आरंभ किया ३ यज्ञ की दीक्षा लेकर देवताओं को बुलाये और सोमयज्ञ के ४ होमने की सामग्री का सेवन किया ॥ २० ॥ उचित ब्राह्मण भी लंका के यज्ञ में आये और मेघनाद ने सात यज्ञ किये ५ तमोगुणी (राक्षसी) माया तेरे हाथ में ॥ २१ ॥ युद्ध में सब शत्रुओं से ६ अट्टहास होकर तू उनको देखकर सब को दवा. जब यह मेघनाद यज्ञ कर रहा था और ८ वर के अनुसार कुंभकर्ण सोता था ॥ २२ ॥ विभीषण जल में घुस कर ९ निरंतर व्रत करके तप साध रहा था और अस्म नगर से रावण पीछा ? नहीं आया तब इस समय में ? मधु नामा राक्षस ने बल पकड़ा ॥ २३ ॥ यह ? राक्षस रावण का ? बहिनोऊ चौर के आने का समय देख कर लंका में आय ? जनाने में घुमकर जल्दी से ? फिर करा ॥ २४ ॥ ६ सुन्दर वंधुगण में रावण की बहिन (सगी बहिन नहीं थी) ? राक्षसों के कुल की माया के गुणों में अग्रणी कुंभीनसी नामक ? सब अंगों में सुन्दर को बड़े हठ से मधु ने पकड़ी ॥ २५ ॥ उसको लेकर मधुवन नामक अपने ? स्थान में आया और २० स्त्रीपुरुष ने जोड़े से भास कर सुख से समय बिताया. रावण तो था नहीं, मेघनाद ? यज्ञ करने में रत था इसी प्रकार २२ कुंभकर्ण शयन में और विभीषण पानी में गया

निज निज कर्म तजि सु अटक्यो नन,

मधु करि सफल गयो इच्छित मन ॥

अस्मनगर संगत रावन इत, जुरि करि कालकेय<sup>१</sup> बारुनै<sup>२</sup> जित ॥ २७ ॥

वहै बलिधाम<sup>३</sup> गेह अब आयो, ललित<sup>४</sup> विविधकन्या गहिलायो ॥

आत सुन्यौ सागसँ मधु आगम<sup>५</sup>, मेघनाद मख सुरनै समागमा ॥ २८ ॥

सुतसौं कुपित कह्यो तहँ दससिर, कुतनै<sup>६</sup> भयो सत्रपूजक कि<sup>७</sup> ॥

देवन तिन्हमै प्रभु अब दमिहौं, रन मधु मारि अनै<sup>८</sup> रंगलरमिहौं ॥ २९ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय<sup>९</sup> राशौ वी-

तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ विवाहवेलाव

र्णितसूर्यसन्ततिवर्षवैवस्वततनुजेक्ष्वाकु<sup>१०</sup> पट्टपपुत्रविकुक्षि<sup>११</sup> वंशव

र्णनसावसरश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासँवादे रावणपूर्व

चर्यायांबलिस्थानमर्दितमानदशग्रीवागमनं त्रिचत्वारिंशत्तमो ४३

मयूखः ॥ ४३ ॥ आदितः पञ्चाशीतितमः ॥ ८५ ॥

( प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( पादाकुलकम् )

इमकहिचढयोतिर्तहिअतिआग्रह, सहँसइक्क<sup>१२</sup> ००० अँछोहिनिदलसह

हुआ था ॥ २६ ॥ इन्होंने अपना अपना कार्य छोड़ कर मधु को नहीं रोका

१ इधर अस्मनगर के साथ कालकेय और रचरण के सेवकों को जीतकर

॥ २७ ॥ ३ सुन्दर ४ अपराध सहित मधु का आना और मेघनाद का यज्ञ

में ५ देवताओं का मिलना सुना ६ कुपुत्र हुआ. शत्रुओं की पूजा करनेवा-

ला और ७ प्रीति करनेवाला होकर. ८ मैं समर्थ हूँ सो उन देवताओं को ९

दंड दूंगा और मधु को युद्ध में मार कर १० बिना रोक टोक रसूंगा ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-

वान वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यसन्ता-

न प्रजापति वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के बड़े पुत्र विकुक्षि के वंशवर्णन के अ-

वसर में श्रीजानकी है स्त्री जिनकी अर्थात् जानकी के पति (रामचन्द्र) के

चरित्र में हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में

बलि के स्थान में मानमर्दित होकर रावण के आने का तियालीसवां मयू-

ख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से पन्चासी मयूख हुए ॥ ८५ ॥

वेढियं जाय दसानन मधुवन, मधुहु सुनत लायो ओदक भेन ॥१॥  
 यह लैगो सु भ्रातडिग आई, बलप १ पोतरनिज लाज बताई ॥  
 बुली भामहि सद्य बचावहु, परै काम तहँ लरन पठावहु ॥ २ ॥  
 कांतं विहीन मोहि जो करिहो, भ्रात तदपि मोदुख हिय भरिहो ॥  
 यहहि वत्त सचिवन जब अकिखय, रिरातजि तबहि छमा खल रकिखय  
 ( शुद्ध प्राकृतभाषा इन्द्रवज्रा )

गाऊणा लङ्कावइणा वि विज्जुजीहं, निसुट्टं किरकालकेअं ॥  
 भामं सुवं सुप्पणाहीछइल्लं, पल्लट्टिऊणा त्ति जढो महुग्गं ॥४॥

( वंशस्थो )

काऊणा सत्थेदहकंधरो वि तं कुम्भीणाहीकङ्कणापीठकंधरं ॥  
 अफ्फुण्णाअट्ठावयपव्वओवले ठाही खलो मेरुसिरं स गध्विरो ॥५॥  
 रम्भातहिअच्छरसाऽहिसारिआजान्तीधणाऽहीससुअप्पिआऽलअं।  
 सुगहा वि विक्खेणा खलेणा वेवई वलेणा भुत्ता पयडं पमूविय ॥६॥

१ मधुवन की ओर २ एक हजार अक्षौहिणी सेना सहित ३ धेरा २ मन में भय लाया ॥ १ ॥ मधु ले गया था ३ वह (कुम्भीनसी) भाई (रावण) के पास आई और अपने ४ चूड़ा और ५ तिमणियाँ (गले का भूषण) की लज्जा बताई कि इन दोनों की लज्जा तुम्हे है (स्त्रियाँ उन दोनों पदार्थों को सुहाग का चिन्ह मानती हैं) ६ तुम्हारे बहिनोज को दया सहित बचाओ ॥ २ ॥ ७ तुम्हे जो पति बिना करोगे तो ॥ ३ ॥ रावण ने भी काल केय वंश के अपनी वहन मूर्पणखा के पति क्रूर विद्युजिह्व को पहिले समय में भूल से मार डाला था उसको सोचकर कुम्भीनसी के पति मधु को छोड़ दिया ॥ ४ ॥ फिर दुष्ट रावण उस कुम्भीनसी के पति मधु को साथ लेकर सुवर्ण पर्वत (मेरु) का आक्रमण करके गर्वित होकर विचार बांध कर उसके शिखर पर स्थित हुआ ॥ ५ ॥ वहाँ रंभा नाम अप्सरा कुवेर के पुत्र की प्यारी अभिसारिका की तरह अलकापुरी को जाती थी उस भय से कांपती हुई पुत्रवधू को भी दुष्टरावण ने प्रत्यक्ष पशु की तरह बल

इन्द्रवज्रा ॥ जात्या लङ्कापतिनापि विद्युजिह्वं निपातितं किल कालकेयं। भामं स्वं सूर्पणखारसिकं पर्याय इति त्वक्तो मधु उग्रम् ॥४॥ वंशस्थः॥ कृत्वा सार्ये दशकन्धरोऽपि तं कुम्भीनसीकङ्कणपीठकन्धरम्। आक्रान्ताऽष्टापदपर्वतो निर्झर्य तस्थौ खलो मेरुशिरसि स गर्वितः ॥५॥ रम्भा तत्र अप्सरा अभिसारिका यान्ती धनाधीशुसुतयिया अलकाम्। स्तुतापि विद्येन खलेन वेपमाना वलेन मुक्ता प्रकटं पशुशिव ॥६॥



प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

तिहिँ अक्खिय हाहा तजहु, तनय बध मैँ तोर ॥  
तदपि सिलातल डारि तहिँ, जहण किन्न छक जोर ॥ ७ ॥  
गति विहाल अछरि गई, नलकूबर ग्रह निहि ॥  
कंपत उर धकधक विकल, दुमँन परी तस दिहि ॥ ८ ॥  
कारन तासौँ श्रवन करि, श्रीदतनय दिय साप ॥  
अवसौँ बल करि अंगनाँ, पकरत मरिहै पाप ॥ ९ ॥  
इत दससीसहु इंद्र पर, कटक चढाई किन्न ॥  
सुरपति गो हंसगँ सरन, भीलुँ कहिय भय भिन्न ॥ १० ॥  
दुर्जय वह अक्खिय दुँहिन, प्रिय सोसौँ बर पाय ॥  
दुष्ट तुमहिँ दैहँ सु दुख, लखहु काल नयँ लाय ॥ ११ ॥

षट्पात

सुनि अजँ वच सक्राँदि पहुँचि तजि ओर धनी पँहँ ॥  
कहन लगे हम कृषुकँ तंत्रँ सचिवन किन्ने तँहँ ॥  
कथित कथित हम करत तदपि तृखँसकँटबिकाये ॥  
सचिव ईसँ बिधिँसरनि लुप्पि बँदुरेहु लुटाये ॥  
बर कूपँबित्तँचोरहिँ बखसि पटकयो रावन धाट पर ॥

पूर्वक भोगी ॥ ६ ॥ मैँ १ तेरे पुत्र की स्त्री हूँ तोभी २ जवरी से ३ भोग किया ॥ ७ ॥ ४ उदास दीखी ॥ ८ ॥ ५ कुबेर के पुत्र नलकूबर ने रावण को आप दिया कि अब से किसी अन्य पुरुष की स्त्री को उस की इच्छा बिना बल से पकड़ते समय यह पापी मरेगा ॥ ९ ॥ ७ ब्रह्मा के शरण में ८ भीरु (कायर) ने कहा कि हम भय से भिन्न होगये हैं ॥ १० ॥ ९ ब्रह्मा ने १० नीति लेकर ॥ ११ ॥ ११ ब्रह्मा के वचन सुनकर १२ इंद्र आदि औरों को छोड़ कर मालिक (विष्णु) के पास पहुँचकर कहने लगे कि हम १३ कर्षे (खेती करनेवाले) हैं जिनको आपने मंत्रियों के १४ वश में करदिये, उनका हम कहना करते हैं तोभी १५ बैल और १६ गाडा (छकड़ा) बिका दिये, आपके मंत्री महादेव और ब्रह्मा हैं, जिन्होंने मार्ग लोप कर हम को १७ बहुरं (उधार देनेवालों) से लुटवालिये, ओष्ठ कुप और धन चोरों

अब निलपसोंहु कहुत असहि धनी सरन लिय चक्रधर १२  
दोहा

सोक अनखर नाथके , सरैं करहु विनु काम ॥  
हम भिच्छुक किततो रहै, धनी बतावहु धाम ॥१३॥  
हरि अक्खिय सचिवन बहुन, पन परिख कछु पारि ॥  
मैं तुम तखर मारिहों, पखर गुरुर प्रसारि ॥१४॥  
सुरन कहिय जोलों समय, परखन तोलों पीर ॥  
हेलन विनु हसिकैं सु हरि, धरहु अबै कहि धीर ॥१५॥  
वासवै मुख दुर्मन विबुध, आय त्रिदिव यह अक्खि ॥  
अधिक सज्ज अमरावती, रचिय जतन दृढ रक्खि ॥१६॥

पट्पात

इहिं अंतर बल अतुल त्रिदिव पैतो लंकापति ॥  
दुव २ दिस जुज्झिय दुसह अमर १ आसिर २ प्रसभी अति ॥  
वसु निर्जर सावित १ मिलत उत जरठ सुमाली २ ॥  
सुरनै रक्खस सीस कटि मोदित किय काली ॥

मृत सुनत ज्येष्ठमातामहहिं कलि प्रचंड रावन करिय ॥

कां दिला कर रावण कां धाड़ा डालन कां डाला और अब घर से भी निकालते हैं सो नहीं सहन करके हे विष्णु भगवान् आप धनी का हम ने शरण लिया है ॥ १२ ॥ आपके शोक और पीड़ा रहित होने से सरजाता (काम चलजाता) है इसीप्रकार हम को भी कामना रहित कर दो नहीं तो हम भिक्षु हैं सो कहीं तो जाकर रहें सो हे स्वामी जगह बताइये ॥ १३ ॥ विष्णु भगवान् ने कहा कि कामदारों के बहुत नियम हैं जिनकी कुछ परीक्षा करके मैं तुम्हारे तस्करों (चोरों) को गरुड़ पर पाखर डालकर मारुंगा ॥ १४ ॥ देवताओं की अचज्ञा नहीं करके विष्णु ने कहा कि अभी धीरज करो ॥ १५ ॥ २ इन्द्र आदि उदात्त देवताओं ने स्वर्ग में आकर यह [विष्णु ने कथन किया वह] कहा ३ इन्द्र की राजधानी अमरावती नामक नगर को ॥ १६ ॥ ४ स्वर्ग में ५ पलुना ६ देवता और राजस, अत्यन्त दृढ़ करनेवाले लड़े वस्तु जाति का सायिध नाम देवता और सुमाली नामक बुढ़ा राजस जुड़े जिन में देवता ने राजस का मस्तक काट कर देवी को प्रसन्न करी. यड़े नाना को सराया सुन कर रावण ने भयंकर युद्ध किया

रामचन्द्रवर्णन ] तृतीयराशि—चतुश्चत्वारिंशमयूख ( ८६३ )

तामसी प्रबल माया तबहि बारिदनादहु बित्थरिय ॥ १७ ॥

( दोहा )

सक्र गहयो सुरजिति सब, निडर बली घननाद ॥

भजि जयंत व्यवहित भयो, बदि न सक्यो रनबाद ॥ १८ ॥

दिव भंडे दससीसके, गडे सुर मदगारि ॥

याहि नाम दिय इंद्रजित, पंकजजात पधारि ॥ १९ ॥

बलि दससिरहि सिराहि बिधि, इन्द्रहि त्रिदिव दिवाय ॥

लंका पुर पठयो खलहु, सदयभाव समुभाय ॥ २० ॥

कन्या इक बारिजकुसुम, बैठी बारिधि बीच ॥

लंका आयउ ताहि लै, निर्धरक रावन नीच ॥ २१ ॥

काहूको सुनि पुनि कथन, निलज तजी बहूनारि ॥

बहुरि बिथारन दिगविजय, हंक्यो गिनि तहँ हारि ॥ २२ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ वीति  
त्रयशुद्धासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८१ पाणिपीडनवेलावर्णि  
मेहिरसन्तानमणिवैवस्वतनुजेक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रविकुक्षि ७ वंश  
र्णनसाऽवसरश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासंवादेरावणपूर्व  
र्णियांस्वर्गसमाक्रमणं चतुश्चत्वारिंशत्तमोऽष्टमयूखः ॥ ४४ ॥ आदितः

इस समय मेघनाद ने तमोगुणी माया फैलाई ॥ १७ ॥ देवताओं को जीतकर

मेघनाद ने इन्द्र को पकड़ लिया और इन्द्र का पुत्र जयन्त छिप गया ॥ १८ ॥

देवताओं के मद को नाश करनेवाले ( मेघनाद ) ने स्वर्ग में रावण के

दि रोप दिये इस कारण से ब्रह्मा ने आकर उसका नाम इन्द्रजित दिया

॥ १९ ॥ ब्रह्मा ने रावण की प्रशंसा करके दयाभाव से समझाकर इन्द्र को

वर्ग दिलाकर पीछा लंका को भेजा ॥ २० ॥ १ कमल के पुष्प पर २ समुद्र

में निर्भय ॥ २१ ॥ ४ दिग्विजय फैलाने को ॥ २२ ॥

विंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाहवर्णन समय में सूर्य की संतान में

मणि रूप वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के चडे पुत्र विकुक्षि के वंशवर्णन के समय

में श्रीजानकी के पति ( रामचन्द्र ) के चरित्र में, हनुमान और लंका के स-

ंवाद् में रावण के पूर्व आचरण में स्वर्ग को धरने का चवालीसवां मयूख

षडशीतितमः॥ ८६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिथितभाषा॥

( सौरठा )

समय इक्कसदससीस, मत्त नगर माहिष्मती ॥

आय निस्तारईस, पठई कहि हैहय नृपहिं ॥ १ ॥

कै रन मंडहु कूर, कै परिजित तेरे कहहु ॥

समुख चलावत सूर, दारन बिच कातर दुरत ॥ २ ॥

जहु हैहयपति जत्थ, अर्जुन तपत सहस्रकर ॥

रेवा सलिल समथ, क्रीडत हो सकलत्र सो ॥ ३ ॥

रावनको किय रोध, जब ताके जामिक जनन ॥

कंटक तबहि कुबोध, हनै बहुत परतंत्र हठि ॥ ४ ॥

( पट्टपात )

जैपिय कतिकन जाय तबहि नृपसौं खल तर्जन ॥

अहौं अर्जुन कहिय जबहि क्रीड़ा उत्सर्जन ॥

व्रत प्रदोस दसवदन हो सु यह सुनि तब श्रीहर ॥

पूजन लगगो प्रनत धुनीकूलहि साहस धर ॥

रोक्यो सु सलिल अर्जुन रमत कर नदि सेतु सहस्रकर ॥

तस स्रोत उफनि प्रतिगति तबहि वारे खल उपहार बराध ॥

बहत इक्खि उपहार जजन रावन जिम तिम करि ॥

समाप्त हुआ॥४४॥ आदि से खियासी मयूख हुए ॥ ८६ ॥

१ उन्नता (महत) रावण ने ॥१॥२ द्वारा हुआ स्त्रियों में कायर छुसता है ॥ २ ॥

यदुकुल का पनि हैहयार्जुन हजार हाथोंवाला जहां पर तपता था सो वह

समर्थ स्त्रियों सहित नर्मदा नदी के जल में क्रीड़ा करता था ॥ ३ ॥ रावण

को जब उसके पोहरायतों ने रोका तब उन पराधीनों को हठ से मार डाला

॥ ४ ॥ ३ कहा ४ जलक्रीड़ा को छोड़ूंगा जब ५ विशेष नम्र होकर नदी के

किनारे पर ही हठ धारण करके पूजन करने लगा सो सहस्रार्जुन ने जलक्री-

ड़ा करने समय अपने हाथों का पुल बांधकर नदी के जल को रोका दिया जिससे

प्रवाह दलड़ा बहकर पूजा करने की रावण की सामग्री को डुबो दी ॥५॥६ पूजन

रामचन्द्रवर्णन ] तृतीयराशि—पञ्चचत्वारिंशमध्याह्न ( ८६५ )

नखि त्रिलोचन अगग भेट कुसुमन अंजलि भरि ॥  
 संगर पर हुव सज्ज इतहु क्रीडन करि अर्जुन ॥  
 गरुर भंपि जिम नाग गहयो कर्बुर कमान गुन ॥  
 कौतुक समान ताकोँ करखि लै निजपुर आयउ लसत ॥  
 ..... ॥ ६ ॥

( दोहा )

अर्जुनको सब दिस उडयो, अतुल सुजस आमोद ॥  
 सो सुरलोक पुलस्त्य सुनि, क्रमैँ सहसकर कोद ॥ ७ ॥  
 बुझिय मिलि तव जस बगर, छिति दिवदिन छिपाय ॥  
 क्यों अब रखहु विप्रको, ज्यों गुनदोखहि जाय ॥ ८ ॥  
 छोरो तव रावन छिति, यँहँ पुलस्त्य पुनि अकिख ॥  
 करे मित्र दुवर्मेल करि, सप्तकील धरि सकिख ॥ ९ ॥  
 सो दससिर कोउक समय, किष्किषा रन काज ॥  
 खोजुन कपिपति बालि खल, पहुँच्यों लोपत लाज ॥ १० ॥  
 स्वसुर लख्यो सुग्रीवको, तथ्य बलीमुख तार ॥  
 मिलि पुच्छ्यो कित बालि मैँ, हेरत जुझनहार ॥ ११ ॥  
 बुल्ल्यो वह कछु दिन बचहु, निरखहु प्रसभ निवारि ॥  
 अस्थिकोट किय बालि ए, प्रतिभट निचय पछारि ॥ १२ ॥

१ शिव के आगे फूलों की अंजली भेंट करके युद्ध पर तैयार हुआ।  
 इधर अर्जुन ने भी जलक्रीड़ा करके गरुड़ भंष लेकर सर्प को पकड़े  
 ऐसे धनुष की प्रत्यञ्चा में राक्षस को पकड़ लिया और खेल के समान उस-  
 को खींचकर शोभायमान होना हुआ अपने पुर में लेआया ॥ ६ ॥ २ गन्ध  
 चल ३ सहस्रार्जुन की दिशा को ॥ ७ ॥ तरे यश ने फैलकर भूमि और स्वर्ग  
 को छिपा दिया अब इस ब्राह्मण (रावण ने विश्रवा ब्राह्मण से जन्म लिया  
 था) को क्यों रखता है इससे तो तेरा विजय करने का गुण है वही ब्राह्मण  
 के कैद करने से दोष होजाता है ॥ ८ ॥ ४ राजा सहस्रार्जुन ने ५ अग्नि  
 को साजी करके ॥ ६ ॥ १० ॥ ६ तार नामक बंदर को ॥ ११ ॥ ७ हठ छोड़  
 कर ८ हड्डियों के ढेर ९ युद्ध करनवाले के समूह को गिराकर ॥ १२ ॥

प्रतिकूलहि जो प्रानसाँ, रंच लखहु तो राह ॥  
 कुपरिधि इक१मुहूर्त क्रमि, नित्याहि जिम्मत नाह ॥ १३ ॥  
 यातैं अवनि परिक्रमन, अबही पूरब०ओर ॥  
 भूप गयो तँहँ जाहु भल, जो मन जुझन जोर ॥ १४ ॥  
 ( षट्पात )

सुनि करि पुच्छ प्रयानखलहु खोज्यो बासव सुत ॥  
 सागर तट पायो सु करत संध्या बिधि संजुत ॥  
 उदधिमाँहिँ गहि याहि अबहि वोरों बिचार इम ॥  
 पकरन लग्गो पाय तउ न कपि कर्म तजिय तिम ॥  
 गहि सहज कंख धरि दसगलहिँ करत रह्यो आन्हिँक सकल ॥  
 बलि सद्धि प्रदक्खिन भुव बलय पत्तन निज आयउ प्रबल ॥ १५ ॥  
 ( दोहा )

गैल गैल लुबत गयो, गरुँ त्रोटि जिम नाग ॥  
 आय निकासो निज निलय, भनित मुहूर्त विभाग ॥ १६ ॥  
 निकसि जेरि कपिसौं नयन, सौ हतओज सिटाय ॥  
 विरुदावनलग्गो विविध, लज्जा अंतर लाय ॥ १७ ॥  
 मनहाँसौं तिहिँ मित्र करि, कहि प्रानहु तव काज ॥  
 किष्किधा इक१मास मित, रह्यो निसाचरराज ॥ १८ ॥  
 ( षट्पात )

इक समय इम अटत पुरुष पिकख्यो इक आसिरँ  
 पिकखत खिन हुव पिहितँ खल सु सोधन लग्गो मिर ॥

जो१तु अपने प्राण से ही विरुद्ध है२भूमि की परिक्रमा में दो घड़ी तक३फि-  
 रकर वह ४ स्वामी नित्य भोजन करता है ॥ १३ ॥ पूर्व दिशा में जाकर  
 रावण ने ५ इन्द्र के पुत्र (बालि) को खोजा ६ सन्ध्या ॥ १५ ॥ ७ गरुड़  
 की चंचू में सर्प लटकै ऐसे रावण साथ साथ लटकता गया ८ अपने घर में  
 जाकर ऊपर कहे हुए दो घड़ी के समय में निकाला ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ९  
 फिरते हुए १० राक्षस (रावण) ने ११ देखते ही वह पुरुष अन्तर्धान हो गया

इतउत लखि बिल इक प्रविसि परिकरहि द्वार धरि  
जिहि बिल अंदर जाय भुवन पिकरयो विस्मय भरि ॥

ऋतु उचित रम्य रविकोटि रुचि भोग दिव्य तिहि ठाँ सुभग ॥  
पिकरखेत्रिकोटि ३०००००००० चउ ४ भुज पुरुख ज्वलित धामधारक त्रिजग  
दोहा

तँहँ विस्मित रावन अटत, इक अद्भुत आवास ॥  
इक पुरुख सबसों अधिक, पिकरयो अमित प्रकास ॥ २० ॥  
नील जलद १ अर्तसी सुमन २, स्याम सदय सुकुमार ॥  
ललित तल्प पोढे लखे, ते ईश्वर कर्तार ॥ २१ ॥  
प्रभुके ढिग इक पीछँ पर, देखी कमला दुष्ट ॥  
कांतहि बीजत व्यजन करि, तिमहि चतुर्भुज तुष्ट ॥ २२ ॥  
श्रीकहँ रूप विरूढ सठ, जब चिंतिय लै जान ॥  
हस्य तबहि वह परपुरुख, मंदहि करन विमान ॥ २३ ॥  
हसतहि दुष्ट अचेत ठहै, जकि जानुनँ परि जतथ ॥  
भंतिगति इक १ मुहूर्त मैं, हठि निठिन किय हतथ ॥ २४ ॥  
बुल्लयो खल वंदनँ विरचि, अप्प चराचर ईस ॥  
होय मिच्छु प्रभु हतथैं, यह मैं चहत असीस ॥ २५ ॥  
( पटपात् )

१ अपनी परगह [साथ के लोगों] को द्वार पर रखकर रावण उस बिल में गुप्त  
२ कोढ़ सूर्यो की भ्रान्तिवाला ॥ १६ ॥ ३ महल में ॥ २० ॥ ४ अतसी के  
पुष्प समान श्याम रंगवाला दयावान् कोमल ५ सुन्दर सेह पर ६ कर्तार  
॥ २१ ॥ ७ आसन पर उस दुष्ट रावण ने लक्ष्मी को देवी जो पति  
को पंखे से पवन करती थी, इसीप्रकार चार हाथवाले [विष्णु भग-  
वान्] भी प्रसन्न थे ॥ २२ ॥ लक्ष्मी को विशेष रूप पर चढ़ाई देव  
कर दुष्ट रावण ने उसका लेजाना चाहता तब मूर्ख [रावण] को बिना मान-  
करने के लिये वे परमात्मा हसे ॥ २३ ॥ ६ बुद्धों के बल ७ गिर गया  
सों १० दो वही में ११ बुद्धि और चलन की शक्ति कठिनाई से पायी मिली  
॥ २४ ॥ १२ नमस्कार करके १३ आप के हाथ से मृत्यु होवे यह मैं मांगता हूँ

प्रभु अक्खिय नहि भस्म भयउ यह कुंकृत विचारत ॥

कारन याको कछुक काल बिधि वर प्रतिपारत ॥

मंगत मम कर मरन सोहु लहिहै समयांतर ॥

इम कहि ताहि दिखाय विश्वरूपहु दिय श्रीवर ॥

सिर ताहि नाय सवन दस १० हि आय लहयो निज सत्य इम ॥

इक समय अग्न सनकादिकहु तिहिं खल पिक्खे सरनि तिमर १६।

( दोहा )

मिलत खल सु पुच्छयो मुनिन, कहाँ जात किहिं काम ॥

बुल्लयो यह खोजन प्रबल, जो न मिलत शर्मजाम ॥ २७ ॥

जोगीजन काको भजत, अखिल नाथ को आहि ॥

समर मरें जासों सुगति, तुम मुनि अक्खहु ताहि ॥ २८ ॥

कहयो मुनिन है विष्णुको, कोपहु वर अनुकार ॥

तिनके कर मरि सुगति तू, पैहै तरि भुव पार ॥ २९ ॥

हमहिं रुक्मि क्रव्याद हुव, तू जैय तब सहि साँप ॥

पच्छो लहिहै काल पर, पद अपनो तजि पाप ॥ ३० ॥

इक समय रावन इमहि, मुनि नारद मिलि मग्न ॥

कित जावत पुच्छयो कहयो, अति बल लखन उदग्ग ३१।

॥ २६ ॥ परमेश्वर ने कहा कि लक्ष्मी को लेजाने का १ छोटा कार्य विचार ते ही भस्म नहीं हुआ जिसका यह कारण है कि थोड़े २ समय तक ३ ब्रह्मा के वर को पालते हैं ४ समय के अंतर से ५ विराट् स्वरूप ६ परमेश्वर ने ७ मार्ग में सनकादिक ऋषियों को देखे ॥ २६ ॥ ८ अम उत्पन्न करनेवाला नहीं मिलता ॥ २७ ॥ रावण ने पूछा कि योगीजन किसको भजते हैं, और सबका स्वामी कौन ९ है. रावण बोला कि ब्रह्म में जिसके हाथ से मरने से श्रेष्ठ गति मिले उसको बताओ ॥ २८ ॥ मुनियों ने कहा कि विष्णु का कोप भी वर के १० जैसा [अनुकरण करनेवाला] है ॥ २९ ॥ सनकादिकों ने कहा कि हम जब विष्णु भगवान् के दर्शन को जाते थे तब तू ११ जय नामक द्वारपाल था जिसने हमको रोका था तब हमारा ही आप लेकर १२ राजस हुआ था सो १३ पीछा लेवेगा ॥ ३० ॥ १४ उदग्ग [उठे हुए] मस्तकवाला अर्थात्



बुल्ले मुनि सबसों प्रबल, स्वेतद्वीप बिच मूर ॥  
 है दुबैर तहँ जाहु हम, देखहिँ कोतुकँ दूर ॥ ३२ ॥  
 भनि नारद संगहि भये, जोहु गयो सुनि जत्थ ॥  
 स्वेतद्वीपकी सुंदरिन, तसँ दुर्गति किय तत्थ ॥ ३३ ॥  
 प्रमदा निकर निपान पर, उदक लैन बहु आय ॥  
 सह अचिज्जलखि दस १० सिरहिँ, उनलिय बिहसि उठाय ३४  
 नैव आकृति फेरयो फिरयो, दिस दिस हत्थन हत्थ ॥  
 जान्योँ रावन करन जय, आयो यह हुव अत्थ ॥ ३५ ॥  
 खल गड्डे जब रद १ नखर २, धुनि तिन डारिय धूरि ॥  
 कैसोरी यह कँटि कहि, बाहुन लेत लवूरि ॥ ३६ ॥  
 गर्ब बिसरि औसोहु गति, पाप लही बहु पाय ॥  
 संतापत त्रिजंगहिँ तदपि, रुक्यो न कर्बुरराय ॥ ३७ ॥  
 मै आई जब मंदकै, सोची वृजिन बिचारि ॥  
 अजपँहँ जाय रु किय अरज, कहिय दुहिन हितकारि ॥ ३८ ॥  
 जब कोउक कपि जित्तिहै, जेता अंतर तोहि ॥  
 उहाँ दसानन अंतको, जानहु अंकुरँ जोहि ॥ ३९ ॥  
 सो तबतँ अघभरँ सहत, मै व्याकुल हनुमंत ॥  
 दुरित अज्ज तँ ममँ दल्यो, अब ढिग रावन अंत ॥ ४० ॥

नम्रता रहित ॥ ३१ ॥ १ दुबैर (जिसका अनादर नहीं हो सके) हम दूर खड़े रहकर  
 रतमाशा देखेंगे ॥ ३२ ॥ स्वेतद्वीप की स्त्रियों ने ३ रावण की दुर्गति  
 ॥ ३३ ॥ स्त्रियों के समूह पनवट पर पानि लेने को बहुत आये उनके  
 अचरज के साथ रावण को देखकर हसकर उठालिया ॥ ३४ ॥ ४ न-  
 यीन स्वरूपवाला ५ एक हाथ से दूसरे हाथ में ॥ ३५ ॥ दुष्ट रावण ने जब  
 उन स्त्रियों के दन्त और नख गडाये तब उनसे रुई का पीँजै इस माफि-  
 क ६ पीँजकर ७ कीड़ा ॥ ३६ ॥ ८ दुख देता हुआ ९ राजसों का राजा ॥ ३७ ॥  
 लज्जा कहती है कि जब मैं इस भूर्ख के आई तब कर्मों के फल को वि-  
 चारकर चिन्ता करके ब्रह्मा के पास जाकर मैंने अरज की तब ब्रह्मा ने  
 हित करके कहा ॥ ३८ ॥ १० प्रादुर्भाव (उदय) ॥ ३९ ॥ ११ पाप का भार १२ मेरे पाप  
 का आप ने नाश किया, अब रावण का नाश भी समीप ही है ॥ ४० ॥

( शुद्धप्राकृतभाषा गीर्ह )

इअ वयणं सोऊणं लङ्गाए अकुसीअ हणुमन्तो ॥

बहुणिसिअरणिलएसुं घत्तन्तो सीअ मग्गमग्गम्मि ॥ ४१ ॥

इतिथी वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

वीतिहोत्रचण्डासिबंशवर्णने वसुदेव ६८। बेला ६८।१ पाणिपीड-

नवेलावर्णितजगच्चतुर्जननमणिवैवस्वताङ्गजन्मेक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्र

विकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनान्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्ल-

ङ्कासंवादे रावणपूर्वचर्यापारक्षोराजमानमर्दनपञ्चचत्वारिंशत्तमां ४५

मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः सप्ताशीतितमः ॥ ८७ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( दोहा )

लंकाकाँ इम जित्ति लघु, आसिर पुब्ब उदंत ॥

सुनि मारुति अगँ सरयो, सीता सोधन संत ॥ १ ॥

पञ्चटिका

जिहिँ दंगं विस्पो अब वातजाँत, कौणप गृह पिक्खतं सब सुहात

लखि बज्जदंष्ट्रअतिकायअक्रोह, सोधे सुक३सारण४गृह विसोक

मकराक्ष५महोदर६माल्यवान७, धूम्राक्ष८नरांतक९बलाविधान ॥

देवांतक१०रु महापार्श्व११दुष्ट, रोमस१३कराल१३सुकनाभ१४रुष्ट

हनुमान् इसप्रकार वचन सुन कर बहुत से राज्ञसों के स्थानों में मार्ग मार्ग में सीता को ढूँढता हुआ लंका से गया ॥ ४१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
चाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश-  
मणि वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के पाठवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थ  
न के भीतर श्रीजानकीपति के चरित्र में हनुमान और लंका के संवाद में  
रावण के पूर्वचरित्र में रावण के मानमर्दन का पैतालीसवां मयूख स-  
माप्त हुआ ॥ ४५ ॥ और आदि से सत्यासी मयूख हुए ॥ ८७ ॥

इसप्रकार लंकाको शीघ्र जीतकर राज्ञस का पहिल का वृत्तान्त सुनकर सीता  
को सोधने को हनुमान आगे चला ॥ १ ॥ जिस पुर में अब हनुमान हुआ ॥ ३ ॥  
इति वंशभास्करे लङ्काया अगच्छत् हनुमान् । बहुनिश्चिन्नलयेषु गवेपयन् सीतां मार्गे मार्गे ॥ ४१ ॥

धूम्र १५ रुद्रप्रहस्त १६ संपाति १७ धीर, वक्र १८ रुबिसाल १९ यूपान्त २० वीर  
तिम सादिन २१ विद्युजिह्व २२ तत, विद्युद्रूप २३ विरुपाक्ष २४ मत्त २५।

घन २६ विघन २७ दंष्ट्र २८ प्रघस २९ रुद्र प्रघास ३०,

रविसत्रु ३१ सुमाली ३२ वृजिनवास ॥

कपर ३३ करद्रूप ३४ रुद्रस्मिकेतु ३५, हस्तिमुख ३६ अकंपन ३७ पापहेतु  
बैलि विद्युन्माली ३८ वज्रकाय ३९, कव्याद ध्वजग्रीव ४० हु कुभाय ॥

अरुणाक्ष ४१ जंबुमाली ४२ अपर्णा, क्रमयुद्धोन्मत्त ४३ रुद्रस्वकर्ण ४४  
कुंभरु ४५। १ निकुंभ ४६। २ निद्रालुजात, खलइंद्रजिह्व ४७ अघइष्टख्यात

घननाद ४८ विभीषण ४९ कुंभकर्ण ५०, इत्यादि ओं कं विक्रमे सुवर्ण  
दसकंधरके नाना निवास, पुनि अग्न लखे कपि रविप्रकास ॥

तैंहें भुवन इक पिक्खयो सतोस, चउ४कोस दिग्ध आयतें दु२कोस  
जैंहें हुव प्रविष्ट भौरुति सुजान, पिक्खयो धरयो सु पुष्पक विमान

सहंसन जहैं सुंदरि करत सैन, अति नौक भोग पिक्खयो सु अैन  
निरखी मँयतनया तिहिं निकेतें, सोवत हजार १००० दासिन समेत

जिहिं प्रथम जनकैतनयाहि जानि, पुनि मँय लखत मुररयो प्रमानि  
रसवैति १ सुगंधगृह २ रंजमान, वासोकै ३ चंद्रसाला ४ वितान ५॥

वेदी ६ अलिंद ७ तोरन ८ बिसाल, मँनिखचित लसत बहु रचित माल  
इम अखिल पस्त्य पिक्खे प्रवीन, मैथिलजौं मारुतिकौं मिली न

१ पाप का निवास ॥ ५॥ २ पुनि ३ राक्षस ४ विना पत्तोवाला (पक्षा बनाहुआ) ॥ ६॥  
५ कुंभकर्ण का पुत्र १ पाप ही है प्यारा जिसके ७ घर ८ स्वर्ण के बने हुए अथवा

अष्ट रंगवाले ॥ ७॥ ९ सूर्य के प्रकाश समान प्रकाशवाला १० लंबा ११ चौड़ा  
॥ ८॥ १२ हनुमान १३ स्वर्ग के समान है भोग जिसमें ऐसा १४ घर ॥ ९॥ १५

उस स्थान में १५ मंदोदरी को देखी १७ जिसको पहिले सीता ही जानी परंतु  
उसको १८ पलंग पर शयन करती देख कर पीछा फिरगया अर्थात् रामचन्द्र

के वियोग में सीता पलंग पर नहीं सोसती यह प्रमाण मानकर पीछा फि  
रा ॥ १०॥ ११ रसोड़ा और सुगंध के घर २० शोभायमान २१ शयन गृह २२  
सब से ऊपर का महल २३ यज्ञशाला, वेदी २४ बाहर का चौक २५ द्वार,  
मणियों के २६ जने हुए ॥ ११॥ सब घर देखे २७ सीता हनुमान को नहीं

निबेड़ लह्यो तँहँ आँजनेयँ, स्मृत हुव कह्यो जु संपाति श्रेय ॥१२॥  
जब मुदित व्यर्थ कंपन न जानि, ..... ॥  
जिहिँ सिससाखि तर जानकी सु, क्रम पिहित चढ्यो तिहिँ थान कीसु ।  
अवसेस रति इक १ जाम जत्थ, ताजि निंद उढ्यो दससीस तत्थ ॥  
सो दुष्ट मंद उदरी समेत, क्रव्याद चलयो सीता निकेत ॥१४॥  
सहँसन प्रदीपिका पथ प्रकास, जुवतीजन सहँसन संग जास ॥  
वादित्र अंग सहँसन बिबाँद, प्रतिहार प्रनत बुल्लत प्रसाद ॥१५॥  
पवमानजातँ यह भेद पाय, कपिदलन दुख्यो करि अल्पकाय ॥  
क्रव्याद आय तँहँ कैकैसेय, अँवो प्रति अक्खिय हौं न हेय ॥१६॥  
मैं किय करार इक १ अब्द माँहिँ, अवसेसँ तत्थ दुव २ थामँ आँहिँ ॥  
माँनिनि तथापि भजिहै न मोहि, तो सूँद धरहिँ उद्धानँ तोहि ॥१७॥  
सुनि असह जननि अक्खिय समासँ, गोमाँयु न मरि चहिँ सरभग्राँस  
खल तदपि कह्यो अतिसय खिसाय, बहु जामिक कर्बुरिकाँ बुलाय  
गोकर्णी १ त्रिजटा २ गोपदी ३रू, अजबदना ४ गजबदना ५ अभीरू ॥  
गतनासा ६ अतिनासा ७ कुगात्र, पुनि पादचूलिका ८ पापपात्र ॥१९॥  
विकराल दीर्घनासा ९ बहोरि, जिन संग संकुकर्णी १० हु जोरि ॥  
सरमा ११ हु बिभीषन नारि सत्थ, इत्यादि टेरि अक्खिय अनत्थ ॥२०॥

मिली उस समय १ हनुमान को २ ग्लानि होगई परंतु फिर सम्पाति ने  
कहा था वह ३ स्मरण हुआ कि सीता अशोक वन में है ॥ १२ ॥ सिसपा  
४ वृक्ष के नीचे सीता थी उस पर ५ बंदर (हनुमान) छिपकर चढ़गया ॥१३॥  
एक ६ पहर रात्रि बाकी रहे ७ मन्दोदरी सहित ८ राक्षस (रावण) सीता  
के स्थान पर चला ॥ १४ ॥ ९ दीपक १० बजते हुए ११ द्वारपाल विशेष  
नम्रता से १२ प्रसन्न करने के शब्द बोलते हुए ॥ १५ ॥ १३ हनुमान यह भेद  
पाकर छोटा शरीर करके पत्तों में छिपगया १४ कैकसी के पुत्र (रावण) ने  
आकर १५ सीता माता से कहा कि मैं १६ त्याग ने योग्य नहीं हूँ ॥ १६ ॥ १७  
एक वर्ष में दो १९ मास १८ बाकी हैं तो भी जो २० हे मान करनेवाला मुझे  
नहीं भजेगी तो २१ रसोड़दार (रसोई पकानेवाले) तुझको २२ चूल्हे में धरे-  
गे १७ ॥ २३ संक्षेप से ही उत्तर दिया २४ हे गीदड़ २५ सिंह के घास को  
चाहना करके मत सर २६ पहिरायत राक्षसियों को बुलाकर ॥ ८ ॥ १९ ॥

अबहु तुम रालिचगी असेस, दै इहिं समुझावहु संपदेस ॥  
 इस अक्खि गयो दसमुख अगार, कहि हारि वेहु सोई कुदारी ॥ २१ ॥  
 जननी जनलीला विहित जानि, प्रभु जैन सिथिल अबलौ प्रमानि ॥  
 हेरन लगी सु वपुहान हेतु, कछु ढिग न सखि विखरधूस्रकेतु ॥ २२ ॥  
 गहि इक तरु साखा तव गरीय, उद्वंघनकों लिय उत्तरीय ॥  
 जो लखि चरित्र पवमानजात, वरनी सब स्वाडगम अवधि वात ॥ २३ ॥  
 लैयु सुनत मोद जननीहु लाय, अक्खिय उपांसु तजि बध उपाय ॥  
 किम नृपन? कपिन संगति अकथ, सुग्रीव सँक्खि किम रामसाथ ॥ २४ ॥  
 अब कहहु चिन्ह जो सत्य एह, वरनै तव लखन रामदेह ॥  
 बानी निसर्ग रङ्गित श्रवताय सामुद्रिक सव दिय कपि सुनाय ॥ २५ ॥  
 विश्वास तदैपि न लख्यो विसेस, पुनि अंगुलीयक पसु किन्न पेस ॥  
 प्रत्यय हित पठ्यो प्रभु पुनीत, सीता लखि किय हिय तँ सीत ॥ २६ ॥  
 पुनि अक्खिय ये हैं कथ कृपाल, कपि अक्खिय जानहु तूँ काँकाल ॥  
 माता निदेस तव होय मोहि, तो लै बैँ मिलाऊँ जाय तोहि ॥ २७ ॥  
 सुनि जननि असंभवे कहिय एह, दुर्दर तव कपि किय अद्रिदेह ॥

॥ २० ॥ ? हे राजसियों तुम सब अब भी इसको २ अष्ट उपदेश देकर  
 समझाओ ३ स्त्रियों ॥ २१ ॥ सीता माता ४ मनुष्य लीलाको ५ उचित  
 जानकर और रामचन्द्र को उपाय में अब तक शिथिल मानकर ७ शरीर  
 को नाश करने का साधन करने लगी परंतु पास न तो शस्त्र था न विष था  
 और न ८ अग्नि था ॥ २२ ॥ तब एक वृक्ष की बड़ी शाखा को पकड़ कर  
 ९, पासी खाने को १० उपवृत्त (उत्तरासन) लिया ११ हनुमान ने १२ अपने  
 थाने की बात कही ॥ २३ ॥ १३ शीघ्र १४ बहुत धीरे से (पासवाला भी नहीं  
 सुन सकै इस प्रकार) बोली १५ मखापन ॥ २४ ॥ १६ स्वभाव १७ चेष्टा १८ सामु-  
 द्रिक शास्त्र में पुरुष के लक्षण लिखे हैं वे रामचन्द्र के शरीर में मिलते थे  
 सो भी सब सुनाये ॥ २५ ॥ १९ तो भी २० अंगुठी जो रामचन्द्र ने हनुमान  
 को, सीता को २१ विश्वास कराने के अर्थ दी थी वह भेट की जिसमें सीता  
 ने अपने २२ तपेनृप हृदय को डंढा किया ॥ २३ ॥ २३ उस समय को जीव  
 जानो और जो है माता मुझे याज्ञा होवे तो २४ अभी तुम को लेकर राम-  
 चन्द्र ने जा मिलाऊँ ॥ जब सीता ने कहा कि यह २५ असंभव है तब  
 हनुमान ने नहीं सहन किया जावे ऐसा २६ पर्वत के समान शरीर किया

पुनि माय कहिय प्रत्यय सु पाय, है बिहित नाथ आगम हिताय ॥ २८ ॥  
 मदग्रंथ खलहिं सकुटुंब मारि, लै मोहि जाय यह किंति कारि ॥  
 माता निदेस तैसेहि मानि, अब किय कपि प्रकटन जत्न आनि ॥ २९ ॥  
 बिध्वसन लग्गो लुंछि वाग, भिरि किय सत १०० रच्छक काल भाग  
 निकसां जनिको इक चैत्य नाम, प्रासाद हुतो तहँ केलिकाम ॥ ३० ॥  
 वाकेहि थंभ मारुति उपारि, मज्झुल्ल रच्छकहु लिय ति मारि ॥  
 अरु कहिय जयति रघुराज राम, १ सौमित्रि जयति सुभधर्मधाम ॥ ३१ ॥  
 सुग्रीव जयति प्रभु पाल्यमान, बदि इम किय औस्फोटन विधान ॥  
 यह सुनि अचिज्ज लंकेस आप, पठये प्रधान सुत सप्त ७ पाप ॥ ३२ ॥  
 रचि तिन अनीक जुत अतुल रारि, परलोक लह्यो कपिकों प्रचारि  
 क्रव्याद न किंकर अयुत अष्ट ८००००, पठयेति पुनिहु किय निखिल नष्ट  
 निजपुत्र कुपित तव अक्ष नाम, कर्बुरूपति पठयो विजय काम ॥  
 भवअंस सोहु पय गहि भ्रमाय, सानीक हन्यो निजभुज सहाय ॥ ३४ ॥  
 नैक प तव पिछ्यो मुदिरनाद, विरच्यो तिहिं अद्वैत तुमुल बाद ॥  
 पिछ्यो तथापि कपिपति कराल, तव ब्रह्म अस्त्र मुख्यो उताल ॥ ३५ ॥  
 स्वासनि नत तिहिं लखि धर्मसखि, आयो गहिवेमैं उचित अखिख  
 निर्गंडित करि लै गौ मेघनाद, प्लवगेसँ लख्यो वैभव प्रसाद ॥ ३६ ॥  
 हियमैंहि कह्यो जो धर्म होय, दसमुखहि इक १ प्रभु तो न दोय ॥

जिससे विश्वास पाकर सीता ने कहा कि रामचंद्र का आना ही उचित है ॥ ३६ ॥ २ कीर्ति करनेवाला कार्य है ३ प्रसिद्ध होने का उपाय ॥ २९ ॥  
 ४ तोड़ फौड़ कर ५ काल के हिस्से में ६ राजसों (निकसा है माता जि-  
 नकी) का चैत्य नामक ७ महल ८ कीड़ा करने का था उसके खंभे उपाड़ कर  
 स्वीच के रत्नों को ९ लक्ष्मण की जय हो १० भुज ठोके ११ मुख्य पुत्र १२ सेना  
 सहित १३ राजसों के १४ से १५ क १६ तिनको १७ रावण ने १८ शिव के अवतार  
 (हनुमान) ने १९ सेना सहित मार लिया ॥ ३४ ॥ २० नैकपी के पुत्र (रावण) ने २१  
 मेघनाद को भेजा जिसने २२ अद्वितीय २३ भयंकर शब्द किया तो भी २४ हनुमान्  
 को भयंकर देखा तब शीघ्र ब्रह्मास्त्र छोड़ा ॥ ३५ ॥ २५ पवनपुत्र (हनुमान्) नम्र हो-  
 कर धर्म को साक्षात् जानकर २६ बंधन युक्त करके २७ हनुमान् ने उसको वैभव में  
 प्रमत्त देखा ॥ ३६ ॥ और अपने मन में ही कहा कि रावण में धर्म जो होवे

ऐसे विचार जुत आंजनेय, मांदोदरेय गहि गो अमेय ॥ ३७ ॥  
 रावनजहँ परिखद राजमान, जो किय तहँ हाजिर जातुधान ॥  
 दससिर प्रहस्तसन कियनिदेस, आयउ किम पुच्छहु कोन एस ३८  
 उपवन विगार क्यों किय अजान, अच्छादि हनें क्यों प्रथित प्रान ॥  
 पुच्छिय प्रहस्त कहिसत्य काज, पठयो तू इंद्र कि राजराज २॥ ३९ ॥  
 प्लवंग न तू ठहै करि प्रकास, बिनु सत्य न छुटहि बंदिवास ॥  
 सुनि कहिय कीस हनुमान नाम, मैं दूत पठायउ अथ राम ॥ ४० ॥  
 लायो हरि सीता तू निलज, आसोक बेलि पिकखी सु अज ॥  
 लगौ न खबरि बिनु कुछ विगार, किय इम बिरूप उपवन प्रकार ४१  
 अच्छादि हनें जुझत असेस, आन्यों ब इंद्रजित पकरि एस ॥  
 अब जो रक्खसकुल वधन इष्ट, बलि प्रान दंषित प्रभुता विसिष्ट ४२  
 तो कालरात्रि सीताहि जानि, प्रभु हित चलि अप्पहु जोरि पानि ॥  
 सुग्रीव सखा तव जो सनेह, बानेंहु कहाइय बत एह ॥ ४३ ॥  
 दससीस सु सुनि खिजि दिय निदेस, इहिं कपिहिं हनहु संसय न सेस ॥  
 तब कहिय विभीषन सुनहु सार, है प्रभु अवध्य संदेसहार ॥ ४४ ॥  
 कीसनकै पुच्छहि प्रिय कहात, तिहिं जारि देहु जो रुचत तात ॥  
 दृढ हुव यहैहि परि बहु विवाद, सासन सुहि अप्पिय मानुषाद ४५  
 तव आनि मूल १ सन २ तैल ३ तूल ३, मढि पुच्छ दयो कपिको समूल ॥

तो संसार भर में यह एक ही है ऐसी प्रभुतावाला दूसरा नहीं है, इस प्रकार विचार करते हुए १ हनुमान् को २ प्रमाण रहित पराक्रमवाला ३ मन्दोदरी का पुत्र (मेघनाद) पकड़ कर ले गया ॥ ३७ ॥ रावण जहां सभा में शोभायमान था तहां ४ राक्षस ने हनुमान् को हाजिर किया. ५ वाग का ७ अचकुमर आदि, ८ प्रसिद्ध ९ बलवान् थे जिनको क्यों मारे १० कुबेर ने भेजा है ॥ ३९ ॥ ११ तू चंद्र नहीं होवेगा १२ कैदखाने से १३ चंद्र ने ॥ ४० ॥ १४ अशोकवाटिका में आज मैं ने देखी १५ वाग को ॥ ४१ ॥ १६ प्रभुता सहित प्राण जो प्यारे हैं तो ॥ ४२ ॥ सीता को १७ मृत्यु जानकर १८ हाथ जोड़ कर रामचन्द्र को दे दे ॥ ४३ ॥ संदेह १९ बाकी नहीं समझ कर २० दूत ॥ ४४ ॥ चन्द्रों के पूछ ही प्यारी है सो रुचै तो जलादा इसपर बहुत वाद विवाद होकर पूंछ जलाना ही निश्चित हुआ और २१ मनुष्यों के खानेवाले (रावण) ने यही आज्ञा दी ॥ ४५ ॥ २२ रुई

लंकेस कहिय अव\*अग्नि लाय, इहिँ देहु जारि पुर बिच फिराहि ॥ ४६ ॥  
 सुनि धूमकेतुँ करि लूम संग, दोरे गहि फेरन ताहि दंग ॥  
 बंधन तव तोरे वधु बढाय, लै भंग महल दिन्नै लगाय ॥ ४७ ॥  
 इक इक गृह लंकापुर असेस, वालाधि करि जारे बानरेस ॥  
 इक १ टारि विभीषनको अगार, छिन बिच किय लंकानैर छार ॥ ४८ ॥  
 जयनी १ कपाट २ उल्लोच ३ जेम, हुव भस्म बहो तिम दवित हेम ॥  
 लंकापुर करि करिवीर कल्प, अगर्णाव कपि मज्जित भंगि अल्प ४ ९  
 वालाधि बुझाय निज छार बार, चढि पुनि पुर गोपुर किय विचार ॥  
 मै मंद लखी नहिँ मन्थु माँहिँ, अंबा बची कि दवदग्ध आँहिँ ५ ०  
 तव चारनदेवन कहिय तत्थ, सीताहु बचाई कपि समत्थ ॥  
 यह सुनत असोकाराम आय, किय दरस प्रसूको प्रनत काय ५ १  
 जंपिय अव किंकर तत्थ जात, मन धरहु नियत विस्वास मात ॥  
 जगदंबा अक्खिय कलिह जाहु, लखि ताहि फुरत प्रभु मिलन लाहु ५ २  
 कपि कहिय रहैं बिबंदत बिलंब, आनत मै छिप्रहिँ प्रभुहिँ अंब ॥  
 तव सीता निज सिरमनि उतारि, कपिकौँ दिय प्रत्यय पुष्टकारि ५ ३  
 कहि एह जनक दिय लगनकाल, लै याहि जाहु प्रभुपास लाल ॥

\* अग्नि लाकर १ अग्नि २ पूंछ में लगा दिया ३ पुर में फेरने लगे ४ शरीर को बढाकर ॥ ४७ ॥ ५ सम्पूर्ण ६ पूंछ से ७ विभीषण के घर को छोड़ कर ८ भस्म कर दिया ॥ ४८ ॥ ९ पड़दा, किवाड़ चढ़ा (घर की छत में लगाने का वस्त्र) भस्म होगये और स्वर्ण पिघल कर बह गया, उस वीर ने लंका में प्रलय कर करके छोटी मलंग लेकर समुद्र में गोता लगाया ॥ ४९ ॥ पूंछ को बुझाकर, अपने शरीर के ऊपर की भस्म को दूर करके शहर के दरवाजे पर चढ़कर जब विचार किया कि मुझ मूर्ख ने क्रोध में नहीं देखा कि सीता माता यची कि अग्नि में भस्म होगई है ॥ ५० ॥ तब वहाँ पर चारण देव-ताओं ने कहा कि समर्थ कपि ने लंका को जलाकर सीता को बचा ली, अशोकवन में आकर नम्र शरीर होकर माता का दर्शन किया ॥ ५१ ॥ ६ सीता माता ने कहा कि कल जाना तुम्हारे देखने से रामचन्द्र के मिलने का लाभ स्मरण होता है ॥ ५२ ॥ १० विशेष बढता है ११ शीघ्र ही १२ हे माता १३ विश्वास को दृढ़ करनेवाली ॥ ५३ ॥



इक कहहु \*पिहित इतरहु उदंत, जब चित्रकूट आये \*\*अनंत ॥५४॥  
जो द्विक जयंत, ईषत अजान, किय तजि इषीक अघलिप्सु कान  
हुव प्रत्यय मारुति ए दृढाय, चहि सीध प्रभुहिँ आनहु चढाय ॥५५॥  
लखन प्रति अखहु बिदित वीर, भुलहु मम बैन रु करहु भीर ॥  
करै तुज भू लज्ज रघुवंस केर, देवर अब नैक न उचित देर ॥५६॥  
करि प्रनति यहै सुनि चलिय कीसँ, आरूढ भयउ पुर अद्रिसीस ॥  
लिय मलपि भंप चहि वार आन, बिच आतर च्योक्षेढाँ विधान ५७  
अंगद मुखँ सुनि हुव मोर्द इद्ध, संसय तजि जानिय काज सिद्ध ॥  
इहिँ अंतर मारुति मिलिय आय, सब भूत अंगदहिँ दिय सुनाय ५८  
हुव चरन धरे तब भूपदेस, आये किष्किंधा पुनि असेसँ ॥  
मधुवन तँहँ रविसुत माल्यवान, खुलवाय लगे फल मूल खान ५९  
पिन्नाँ ताड़ाँसव मुद प्रसारि, बरजे ति दये रच्छक विडारि ॥  
दधिमुख हु बेल अध्यक्ष दोरि, बरजे रुके न बिलसे बहोरि ॥६०॥  
कपिपतिको मारुतै एह ईस, अपमानि पठायो जँहँ अधीसँ ॥  
दधिमुख तँहँ अखिय अंगदाँदि, मन्नै न बाग लुंचत प्रमादि ॥६१॥  
सुग्रीव सु सुनि गिनि काज सिद्ध, आन्योँ स्वचित्त उच्छाह इद्ध ॥  
इहिँ अंतर अंगद प्रमुख आय, निज वृत्त कह्यो सिर पयन नाय ६२

\*एक और छिपाहुआ वृत्तान्त भी कहना\*\*रामचन्द्र ॥५४॥ इन्द्र के पुत्र जयंत ने मूर्खता से काकपत्नी होकर इषी की थी उस पाप की इच्छावाले को दर्भ की सीक छोडकर काणा किया था यह दोनों सुबून देकर हे हनुमान प्रभु को शीघ्र चढालाना ॥५५॥ लक्ष्मण से कहना रतुम्हार हाथ में रघुवंश की लाज है ॥५६॥ ३ प्रणाम करके ४ बंदर ५ पुर के समीप पर्वत था उस पर चढा विसिंहनाद किया ॥ ५७ ॥ अङ्गद ७ आदि ने सुन कर ८ आनन्द बढानेवाले हुए ९ पीतेहुए समाचार ॥ ५८ ॥ अङ्गद आदि बंदरों ने हनुमान के पीछे आन तक एक पग से खड़े रहने की प्रतिज्ञा की थी सो अब दूसरा पग भूमि पर धरा. १० सब, सुग्रीव का मधुवन नामक वाग था जिसको फल मूल खाने के लिये माली से खुलवाया ॥ ५९ ॥ ११ ताड़ी का मद्य १२ वाग का दरोगा ॥ ६० ॥ दधि-मुख नामा यह बंदर सुग्रीव का १३ मामा था उसका अपमान करके जहाँ १४ सुग्रीव था वहाँ भेजा ॥ ६१ ॥ १५ अंगद आदि १६ अपना वृत्तान्त कहा

सुनतहि प्रसन्न लै सबन संग, आयो सु प्रश्रवन गिरि अभंग ॥  
 साखांमृग प्रभु पय परि समस्त, हनुमान दयो मनि कहि हस्त ६३  
 वज्रोद्दु कह्यो व्यवहित उदंत, जामैं इक १लोचन भो जयंत ॥  
 प्रभु सुनत सिराहे अखिल प्रेय, उर लाय लयो दुत आजनेय ६४  
 दिय सासन होवत त्रि३विध दास, तू मारुति उत्तम १आहि तासा  
 भृत्या बिनु तैं किय दुकर भृत्य, कोउ न तस प्रत्युपकार कृत्य ६५  
 बदि इम प्रभु मनि लखि किय बिलाप, करिहै कब जानकि त्यक्तताप  
 बल तदनु सजि धरि चाप १वान, प्रभु करिय खवरि सुनतहि प्रयान  
 मध्यान्ह समय मंगल मुहूर्त, प्रस्थान आभिजितं विजय पूर्त ॥  
 संख्याविहीन कपि १रिच्छ २सेन, रघुनाथ चले लै नरसुरेन ॥६७॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ गीतिः ॥

रघुवरवर्धितदर्पा गोलाङ्गूल १क्ष २वीरबल्लगुबलाः ॥

प्लवगा ग्रहमहमिकया लङ्कां जय्यां निरीयुरुद्विश्य ॥६८॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयः राशौ वी-  
 तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८वेला ६८ १ पाणिपीडनवेलाव-  
 शितविभाकरवंशवर्धवैवस्वताङ्गजगुरिष्वाकु ६ पट्टपुत्रविकुञ्जि ७

१ सब बन्दर ॥ ६३ ॥ २ छिपाहुआ ३ वृत्तान्त ४ मरे प्यार  
 ऐसा कहकर रामचन्द्र ने सब की प्रशंसा की और ५ हनुमान को हृदय से  
 लगा लिया ॥ ६४ ॥ और आज्ञा की कि तीन प्रकार के सेवक होते हैं जिन-  
 में हैं हनुमान तू उत्तम है तुने बिना ५ तनखा आदि जीविका के ६ दुष्कर  
 ( कठिनाई से होनेवाला ) कार्य किया है सो ७ प्रीछा तेरा उपकार करने के  
 योग्य कोई कार्य नहीं है ॥ ६५ ॥ ८ ताप रहित ९ जिसपीछे सेना सभ्र कर  
 ॥६६॥ १० विजयसे भरेहुए अभिजित् नामक मुहूर्त में प्रलुब्ध और देवताओं  
 के पति अथवा नरेन्द्र रामचन्द्र ने प्रयाण किया ॥ ६७ ॥ रामचन्द्र से बड़ा  
 है नमंड जिनके ऐसे वीर गोपुच्छ ( लंगूर ) और रीछों के समान श्रेष्ठ बल-  
 वाले वानर लंका को जीत लेना मन में ठान कर अहंभाव के साथ अर्थात्  
 मैं आगे होऊं मैं आगे होऊं इसप्रकार निकले ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
 वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाहसमय के वर्णन में सूर्यवंशी प्रजाप-  
 ति वैवस्वत के पुत्र इष्वाकु के बड़े पुत्र विकुञ्जि की सन्तान के समर्थन

राजयन्त्रवर्णन ] तृतीयराशि—मत्तनत्वारिश्मयुत्त ( ८७७ )

मन्ततिसमर्पणान्तर्भूतश्रीविंशतीवल्लभचर्यायां दृष्टजगदम्बदग्धरत्नोद  
 झपावमानिप्राप्तप्रत्ययश्रीरघुनाथविजयप्रस्थानं पट्टचत्वारिंशत्तमो  
 ४६ मङ्गलः ॥ ४६ ॥ आदितोऽष्टाशीतितमः ॥८८॥

( प्रायः व्रजदेशीया प्राकृती मिथितभाषा )

पदपाल्

वीरचनियसतवलिपि१संगकपिअयुतकोटि१००००००००००करि।  
गोलांभूज गवाक्षधोर भद्र सहैस कोटि१००००००००००धरि ॥  
गिच्छ धृष्टदनुव सहैस कोटि१००००००००००भल्लुकं सज्जि भट॥  
सह त्रिकोटि३००००००००कपि सेन पनस४हंकिय कर कंकट ॥

कपि नीलकण्ठक दस कोटि १,००,००,००,०० जुत,

गजशत्रिकोटिश०००००००० जूत जंगजय ॥

[illegible]

गत संक्रु १०-०००००००००००० गंधमादन १३ सजिय,

दुर्मुख १२ कपि दुव कोटि २००००००० इत ॥

नमकोटि १००००००० सजिय इविमुय १५ दसह,

सद्वैत कोटि १०००००००००० मारुति १६ मन्त्र ॥ २ ॥

SECRET

[illegible]

अंगद १७ भयउ तयार ॥

सेना ग्यारह कोटि ११००००००० सह, इंद्रभानु १८ लगी लार ॥ ३ ॥

सहस्र रुद्र ११००० इक सत १०० सहित, रंभ १९ चलयो कपि रज्जि ॥

सत मित कोटि १००००००००० रु इक सहस्र १०००,

सत इक १०० सौ नल २० सज्जि ॥ ४ ॥

रुमांजनक कपिपतिस्वसुर, सहस्रकोटि १०००००००००० सनतार २१

दूजो २ तार २२हु सज्जि दल, पंचक कोटि ५०००००००० प्रसार ॥ ५ ॥

जिम केसरि २३ मारुतिजनक, अर्कतरुनबपुआभ ॥

सहस्र अनेकनसौ सज्यो, लंका रन जय लाभ ॥ ६ ॥

कनकाचलरुचि वीर करि, सहस्र अनेकन सत्थ ॥

ताराजनक सुसेन २४ तिम, संक्रम रचिय समत्थ ॥ ७ ॥

कास सरभ २५ बन्धि २६ रु कुमुद २७, चले जुत्थपति चंड ॥

दूजे २८ रंभ २९ समेत दल, उफन्याँ सरनि अखंड ॥ ८ ॥

षट्पात

अंस विविध अवतार मिलिग भल्लुंक १ कपि २ मर्कट ३ ॥

प्रसरि चले इति प्रभृति व्योम १ जल २ थल ३ वट १ उब्बट २ ॥

सवितासुत सुग्रीव १ अंस वासवभव अंगद २ ॥

तार ३ त्रिदिशगुरु तनय गंधमादन ४ कपि ध्यानद ॥

पावकवतार नील ५ सु प्रथित विस्वकर्म अवतार नल ६ ॥

दुवर्द्धस्र अंस मैद १ रु द्विविद २ ८ प्राभंजन हगुमा ९ प्रवल ॥ ९ ॥

१ प्रीति सहित २ रुमा नामक सुग्रीव की स्त्री का पिता और सुग्रीव का ससुर

॥ ५ ॥ ३ हनुमान का पिता, ४ प्रभात के सूर्य समान कान्तिवाला ॥ ६ ॥ ५ सु-

मेरु पर्वत के समान ६ कान्तिवाला ७ घालि की स्त्री तारा का पिता ८ मार्-

ग में बड़ा ॥ ८ ॥ ९ रीछ १० चन्दर ११ लंगूर १२ इनको आदि लेकर १३ आ

काश में १४ मार्ग और १५ बिना मार्ग (ऊजड़) फैलकर चले १६ सूर्य का पुत्र

सुग्रीव १७ इंद्र के अंश वालि का पुत्र अंगद १८ वृहस्पति का पुत्र तार १९

धनद (कुवेर) के पुत्र गंधमादन का पुत्र गंधमादन २० अग्नि का पुत्र नील

२१ प्रसिद्ध २२ दोनों अश्विनीकुमारों के अंश से २३ पवन के अंश से ॥ ८ ॥

दोहा

ताराजनक सुसेन<sup>१०</sup>कपि, मुनि मरीचि अवतार ॥  
वरुन अंस उद्धव बली, अपर<sup>२</sup>सुसेन<sup>११</sup>उदार ॥ १० ॥  
जांबवान<sup>१२</sup>गङ्गाद जन्यो, जन्यो सरम<sup>१३</sup>परजन्य ॥  
इत्यादिक अंसन उतरि, उमडे लरत अनन्य ॥ ११ ॥  
अमर<sup>१</sup>सिद्ध<sup>२</sup>चारन<sup>३</sup>उरग<sup>४</sup>, विद्याधर<sup>५</sup>मयु<sup>६</sup>द्वार्त ॥  
नाग<sup>७</sup>जच्छ<sup>८</sup>गंधर्व<sup>९</sup>मुनि<sup>१०</sup>, इति<sup>११</sup>मुख अंसन जात ॥ १२ ॥

( पट्पात् )

इतिमुख अंसन जात क्रूर भल्लुक<sup>१</sup>मर्कट<sup>२</sup>कपि<sup>३</sup> ॥  
किष्किंधा सन कलिय जुद्ध उत्सुक<sup>४</sup> जय जय जपि ॥  
सानुज<sup>५</sup>रघुवर सज्ज बंधि परिकर<sup>६</sup> पट पीवल ॥  
चलिय चाप टंकार चलित<sup>७</sup> करि संग<sup>८</sup> चला<sup>९</sup>चल<sup>१०</sup> ॥  
दिस दिसन फुटि ओढके दुसह भुवनचउद्ध<sup>११</sup>बीच भरि ॥  
देखत निमित्त जिततित दारित प्रबल छोह बिस्मय पकरि ॥ १३ ॥  
कोटी उपपर कोप जदपि सरंभ न करि जानै ॥  
तदपि सहज संक्रमत<sup>१</sup> त्रास स्वासहि तंस तानै ॥  
उधरि ईस बंकेनिय गाज घन<sup>२</sup> बिनु घुररकिय ॥  
रज ढक्किय सिमुंमार मेरु अवयव<sup>३</sup> मुरर<sup>४</sup>किय ॥

१ वरुण के अंश से पैदा हुआ बलवान् २ दूसरा सुसेण ३ ब्रह्मा का पुत्र जाम्बवान् ४ मेघ अथवा इन्द्र का पुत्र शरभ ॥ ११ ॥ ५ देवता ६ सर्प ७ किन्नरों से ८ समूह ९ यत्न १० इनको आदि लेकर ११ उत्पन्न हुए ॥ १२ ॥ १२ युद्ध की इच्छा करनेवाले १३ छोटे भाई सहित रामचन्द्र १४ पीताम्बर को १५ दृढ़ बांध कर १६ सृष्टि और १७ चर अचर को १८ चलायमान करके चले १९ भय २० डरकर ॥ १३ ॥ यद्यपि २१ चौंटी पर २२ सिंह कोप नहीं कर जानता तथापि २३ सहज से चलने में भी २४ उस चौंटी के स्वास खिचते हैं ऐसे ही रामचन्द्र के सहज चलने से रावण के स्वास खिचते हैं. शिव की २५ पलें खुल गईं और बिना ही २६ मेघ के गर्जना का ध्वराद शब्द होने लगा २७ शिशुमार चक्र रज से ढक गया और मेरु पर्वत के २८ अंग २९ मुरक गये

उच्छलि अमेयसिंधुन सलिल लोकन छलि छिरकन लगिय ॥

रघुनाथ चढत भूतल दराकि करकि अंड चटचट किय ॥१४॥

उलटि सेस सिर सहँस १००० सहँस दुव २००० बटि उर चटिय

दबबत दंतुलि दारि पुहवि सूकर कनपटिय ॥

कमठ पिट्टि कंडनिय धसत किरि पय चउ४ मूसल ॥

अवनि दरारन उमँगि जंत्र जिम कढत गर्भजल ॥

मृतगति गिरंत दिग्गज बिमद पलट देत दुस्सह पवन ॥

साँवरो चढ्यो बहै किम सहज भनत कल्प बहुदह १४ भवन ॥१५॥

डरि डुंगर डगडगत जगत लगलगत पत्र जिम ॥

दाव दगत भिरि ग्राव ताव भगभगत उव्य तिम ॥

दुर्म रज दिसदिसन करत कर्म कासारन ॥

निखिल धाम नीहार अतिग भद्व आसारन ॥

जन अजक भूमि भौनन भजत मोन चरन हुव थिर न मत ॥

करता चढ्यो सु नङ्गल कहत बहत देवलिपिलेवत्रत ॥१६॥

समुद्रांसे अमाप जल उछल कर बाहर बढकर लोकों को छिड़कने लगा इस प्रकार रामचंद्र के चढ़ने से भूमि फटकर ब्रह्मांड चटचट शब्द करने लगा ॥१४॥ शेष के हजार मस्तक उलटकर दो हजार जिह्वा उर चाटने लगीं और दंतुलि दबाकर भूमि से सूवर (वराह) की कनपट्टी फटने लगी, कमठ की पीठ उखल के समान हो कर उसमें मूसल के समान सूवर के चारों पग घुसने लगे, भूमि के दरारों से भीतर का जल छुहारों के समान उबकने लगा, दिशाओं के हाथी सुदों के समान गिरने लगे और पवन दुस्सह पलटा करने लगा, रामचन्द्र ने चढ़ाई की सो कैसे सहज होसकता था चौदह लोकों का प्रलय होना कहने लगे ॥१५॥ पर्वत हिलने लगे संसार पत्ते के समान कांपने लगा, पत्थर से पत्थर की रगड़ लगकर बड़ बाग्नि के समान अग्नि जलने लगा, कठिनाई से मिटसके ऐसा रज दशां दिशा में बढकर तालावों में लीचड़ करने लगा, सम्पूर्ण वर्ग के स्थानों की अत्यन्त गति बढकर भादवा के मेघ के समान बहने लगे, भूमि के भवनों में मनुष्य अचैन भोगने लगे और मौन धारण करनेवालों के मत भी स्थिर नहीं हुए वासुदेव चहुवान को अयोध्या के राजा कुंडक का नड्बल नामक पुरोहित कहता है कि संसार का कर्ता चढा सो मानों देवलिपि को लीपने का नियम धारण करता है अर्थात् पर्वत जल आदि की दैवकृत मर्यादा मिटाता है ॥१६॥

पय कुलाल घटपिंड चिपत पव्वय दल चल्लत ॥

वदरीवन जनु बड्ढ मही भाल्लन हलमल्लत ॥

तरुन लुंबि तजि तरुन वदत बानर बुंकारव ॥

आनूपक मारव न मचत आनूपन मारव ॥

मिटि मिटि मवास पद्धर परत त्रास असह जिततित तचिग ॥

पुहवी नटेस फन पट्टरिच नियत नच्च तद्धिन नचिग ॥१७॥

छार गिरत जलछार निखिल खलभल्लत निपानन ॥

कतिक अल्प गिरि करभ भजत सुखरुख मग भानन ॥

गड्डे कड्डत गहिर गरद कड्डे थल गड्डत ॥

तरु उड्डत बहु तुड्डि छदन छत्ति सु गेहन गत ॥

पत्थर न तत्थ पव्वय परत गिरि उच्छिन्न तहँ ग्रावनन ॥

रघुनाथ कटक मारव पवन पलटावत लघुदिग्घपन ॥१८॥

सरदकाल जिम सलभ प्रभुर तप अंत पिपीलक ॥

कुम्हार के घड़े का पिंड फिरते हुए चाक पर चिप जाता है इसी प्रकार सेना के चलने से फिरती हुई भूमि पर पर्वत पग चिपाने हैं और मानों वदरीवन के मार्ग में भूमि झोले खाकर होंडती है वृक्षों के लटक लटक कर उनको छोड़ते हुए वन्दर बुंकार शब्द करते हैं जिससे समुद्र उफ़ल कर जलभरी देशों को जलहीन और जलहीन देशों को जलवाले करते हैं। पिकट स्थानों में चोरों के घर हैं सो मिटकर सीधे होते हैं और जिधर देवें उधर दुस्मह त्रास के ताव से संकुचते हैं, भूमि रूपी नटेस (नाच करनेवालों में ईश) शेष नाग के फणों रूपी पटड़ी पर उस दिन निरन्तर नाच नचा ॥ १७ ॥ रज उडकर सारे पानी (चारसमुद्र) में गिरती है जिससे सब जलाशय खलभला गये और कितने ही छोटे पर्वत जिधर सुख होवे उधर ही ऊँटों के समान विना ज्ञान भागने लगे और जो भूमि में गहरे गड्ढे थे वे बाहर निकल आते हैं और जो बाहर के स्थल हैं उनको वह रज गहरे गाड़ देती है, बहुत से वृक्ष तृट कर उडते हैं उनके पत्ते धरों की छतों पर जाते हैं, जहाँ एक भी पत्थर नहीं तहाँ पर्वत पड़ जाते हैं और जहाँ ऊँचे पर्वत हैं तहाँ पत्थर भी नहीं रहते इस प्रकार मारवाड़ के पवन के समान रामचन्द्र की सेना छोटे और बड़े पन का पलटा करती है (मारवाड़ में जब पवन चलता है तब रेत उड़ कर समभूमि में तो ऊँचे ढीले हो जाते हैं और जहाँ ऊँचे ढीले होते हैं वे उड़कर समभूमि हो जाती है) ॥ १८ ॥

पाउस मसकन प्रसर मुदिर सीकर उन्मीलक ॥

पटपद पद्म प्रसार अतुल रजकन अवनीतल ॥

फवत दाव फुल्लिंग विपिन तरु तरुन फुल्ल फल ॥

अगनित समूह कपिशिच्छिन्ने मबढत जंग इच्छत वलिय ॥

रघुवंसतिलक रावन तरफ कटके कुंच दरकुंच किया ॥ १९ ॥

( दोहा )

कीस संग दुव लक्ष्म २००००० करि, ईश्वर पठयो अग ॥

नील चलयो तव हुकम नत, मुदित परदखन मग ॥ २० ॥

सब अनीक जुत पिष्टि सन, हले हंसकुल हंस ॥

बैठे कहूँ कहूँ श्रमित बिभु, उभयशपवनमुत अंस ॥ २१ ॥

कति बानर नभगति क्रमत, कति उत्पथ अतिकाय ॥

कति पथ राघव संग करि, बिचरत भक्ति बढाय ॥ २२ ॥

सह्य सिलोच्चय लांघि सब, सानुज राघव सेन ॥

पहुँचे छारमितद्रु पर, तरि मारन रन तेन ॥ २३ ॥

उत मारुति लंका अनल, दै आयो प्रभुदूत ॥

तदनंतर दसकंध तहँ, कियउ मंत्र साकूत ॥ २४ ॥

( षट्पात )

कियउ मंत्र दसकंध सबन इकत करि संसर्द ॥

कवन कज्ज अघ कहहु दहन दैगो कपि दुर्मद ॥

शरद ऋतु के अन्त में दीडियां बहुत होती हैं इसीप्रकार ग्रीष्म ऋतु के अंत में चूडियां, वर्षाकाल में मच्छरों का फैलाव, और मेघ की बुन्दों का विकास, और क्षुप्य छन्द का प्रसार, भूमितल पर बिना गिनती के रजकण, अग्नि के कण, वन के वृक्ष और वृक्षों के फल फूल अगणित होते हैं इसीप्रकार बन्दर और रीछों के अगणित समूह युद्ध की इच्छा करते हुए बड़े सेना का ॥ १९ ॥ २ ईश्वर नामक बन्दर को ॥ २० ॥ ३ सेना सहित पिछाड़ी से ४ सूर्यवंश के ५ सूर्य चले ६ व्यापक (रामचंद्र और लक्ष्मण) ७ हनुमान के कंधे पर ॥ २१ ॥ ८ आकाश में चलते हैं ९ उपवट (बिना मार्ग) ॥ २२ ॥ १० सहाय नामक ११ पर्वत को लांघ कर १२ चारसमुद्र पर ॥ २३ ॥ १३ हनुमान ने १४ जिस पीछे १५ अभिप्राय सहित ॥ २४ ॥ १६ सभा में १७ अग्नि



मातामह तव माल्यवानश्वलि अनुज विभीषन॥  
कुंभकरनइन कहिय नाथ रक्खहु सीता नन ॥  
सचिवहु प्रहस्त आदिक सकल यहहि करन लग्गे अरज॥  
मन्त्री नखल सुन भजत मिलहि कवहु चर्म मृदुपन करजा२५॥  
( दोहा )

परिखँद दूजीश्वेर पुनि, करन मंल खल कीन ॥  
जबहु दिवावन जानकी, अक्खिय प्रनैति अधीन ॥ २६ ॥  
आसय खलको जानि अब, मौन रहे सब मानि ॥  
वहहि विभीषन किय अरज, तीजीश्वेरहु तानि ॥ २७ ॥  
सुनत सु दब्ब्यो सक्रजितँ, तरजि पितृव्यक ताथ ॥  
कौणंपराजहु कोप किय, महत विभीषन मत्थ ॥ २८ ॥  
( षट्पात् )

कुलकुठार खल कुटिल बंदतँ जसहानि विभीषन ॥  
जब जब संसद जुरत गिनत तव तव सब सीखैन ॥  
मिल्यो ध्रुवहिँ रिपुमाँहिँ जत्थ तापसँ तँहँ जावहु ॥  
मुख मेचक तव मँदँ बहुरि नन हमहिँ बतावहु ॥  
तव निजप्रधान मौलीतनय विहगअनलसंपातिश्वलि ॥  
अरु सरभअजुत रावन अनुज चढ्यो गगन प्रभु सरन चलि२९  
इम दुतँ अर्णव वार विर्यैत मग आय विभीषन ॥  
प्रभु दल अंतिक पहुँचि सैनति अक्खिय कपिपति सन ॥

१ रावण कानाना २ पुनि ३ कामल नखों सं भागते हुए की चमड़ी नहीं मिल सकती  
४ २९ ५ सभा विशेष नम्रता करके ॥ २६ ॥ ६ खींचकर ॥ २७ ॥ ७ मेघनाद ने विभी-  
षण को दयाया ८ काका को ९ राजसुराज ( रावण ) ने ॥ २८ ॥ हमारे  
यश की हानि होवे ऐसा १० बोलता है और जब जब सभा जुड़ती है तब  
तब सब ११ शिक्षा गिनाता है १२ निश्चय ही १३ जहाँ पर तपस्वी ( रामचन्द्र )  
हैं तहाँ जा और हे मूर्ख तेरा १४ काला मुख फिर मत बता १५ मौली नाम-  
क राजन का पुत्र १६ १७ शत्रु १८ समुद्र के द्वार १९ आकाश मार्ग से आया  
और रामचन्द्र की सेना के समीप पहुँच कर २० नम्रता सहित सुग्रीव से कहा;

रामसरन में रंक भयो रावन लघुभ्राता ॥

अरज निवेदहु अप्प त्रास टारहु वनि त्राता ॥

कपिराज सुनत विन्नति करि रू राम हुकम चाहत रहिय ॥

करतारनिकट कतिपय कपिनकरि परखख लावन कहिय ॥३०॥

वाततनय तँहँ बहिय विनत यह साधु विभीखन ॥

देखयो सिक्खहि देत उतहु जननी कहँ अप्पन ॥

कहा परख प्रभु कहिय सजव आनहु सरनागत ॥

राह कहँ न तस रुद्र जदपि अंतरछल जागत ॥

आन्यौसु कपिन होवत हुकम हिय लगाय प्रभु मिलि मुदित ॥

कपिसमज मध्य लंकेस कहि अभय दिन्न दुर्लभ उचित ॥३१॥

जदिन सयन शतनतल्प चरन बाहन सपत्र सुन ॥

छदन ३ मृदुच्छद छलि आसन ४ सुमवान १ मलाटुशन ॥

पत्थर खर पाथीढ ६ थाल ६ पत्रावलि पावन ॥

उटज खास आवास ७ पास जामिक ८ रोपासन ॥

विरहग्नि भोग उपहार ९ विधि पसुन सभय संगम १० दियउ ॥

उपपन्न अरथ राघव तदिन कनक द्रंग बितरन कियउ ॥३२॥

( दोहा )

१ रक्षा करनेवाला होकर २ रामचंद्र के पास कितनेक वंदरों ने कहा कि परीक्षा करके विभीषण को लाना चाहिये ॥ ३० ॥ हनुमान ने कहा कि विभीषण अंध और विशेष नश्वरतावाला है लंका से भी सीता माता को अपनी शिखा ही देते देखा है। रामचंद्र ने आज्ञा दी कि शरणा आये हुए की क्या परीक्षा है शीघ्र ले आओ। उसके मन में छल है तो भी उसका मार्ग मन रोको। ३ वंदरों के समूह में ( पशुओं के समूह को समज कहते हैं "पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ॥" इत्यमरः ) ॥३१॥ जिसदिन तृणों की सेक, बिना पगरकली ( उपानत् ) के चरण ही बाहन, भोजपत्र की छाल ही वस्त्र, पुष्प और गीले फल ही भोजन, नीचे पत्थर ही आसन, पत्रावलि ही पवित्र थाल, पर्णशाला ( पत्तों से छाई हुई झोंपड़ी ) ही खास महल, पास में धनुष ही पोहोराइत, विरह की अग्नि ही भोग की सामग्री, समासदों में पशुओं का साथ था तिसदिन रामचन्द्र ने अपने साथी ( मित्र ) को

पुनि लखन सन अखिख प्रभु, उचित न्हान करवाय ॥  
कौणपकै अभिसेक किय, लंका दै हित लाय ॥३३॥

( षट्पात् )

अखिखय पुनि अखिलेस कैलहमैं हनि दसकंधर ॥  
तो कहैं लंका तखत धरौ प्रभु करि सर्वोपर ॥  
हैं मो कहैं त्रय ३ भ्रात सपथ नहिं वितथ बिभीखन ॥  
इहिं अखिखय असु रहहिं करहिं तोलों किं करपन ॥  
त्रि३गुनेस बैठि कुसकट तदनु राह उदधि जोवत रहिय ॥  
वित्तिय त्रि३जाम नायउ बनधि कुपित बहि सेसहिं कहिया ॥३४॥  
सतत छमा सौमित्रि करत निंदा अब अप्पन ॥  
यातैं सर१धनु२आनि मोहि अप्पहु जल मप्पन ॥  
सुनत चाप१सर२सेस दये जोरे जगनायक ॥  
हुव त्रि३भुवन हाकार देखि आकृति भयदायक ॥  
फटि नीर इच्छ१जोजन अवधि कांति हरित नीरधि कढ्यो ॥  
रुचि दिव्य वसन ? भूषन २ धरत पायन परि हायन पढ्यो ॥३५॥  
भूरि रतन करि भेट छमहु अखिखय छारोदक ॥  
सही न जावत समुख अबहु संधित सर ओदक ॥  
प्रभुकै पुरुखन अगग मैहु विरच्यो करुनामय ॥  
अनुगैं धनीको अभय अप्पि मेटहु यह आमैंय ॥  
हो दूर बहुत इम देर हुव कहहु नाथ सुहि अब करौ ॥

संज्ञ का पुर दान किया ॥३२॥ १ राक्षस के ॥३३॥ २ युद्ध में ३ भूक्तों तीनों भाइयों की सोगन है कि हे बिभीषण यह झूठ नहीं है, बिभीषण ने कहा कि प्राण रहेगा तब तक सेवकपन करूंगा. सत, रज, तम तीनों गुणों के स्वामी ( रामचन्द्र ) जिसपीछे डाम की चटाई पर बैठ कर समुद्र का मार्ग देखते रहे परन्तु तीन पहर बीत जाने पर भी समुद्र नहीं आया तब क्रोध करके लक्ष्मण से कहा ॥३४॥ ४ हे लक्ष्मण निरंतर क्षमा करने से अपनी निन्दा होती है. ५ हरे रंग की क्रान्तिवाला समुद्र निकला दिव्यक्रान्ति ७ हाहाकार किया ॥३५॥ ८ बहुत ९ क्षमा करो यह कहा १० चार समुद्र ने ११ संधान किये हू-ए वाण का भय सहा नहीं जाता है १२ आपका सेवक हूँ सो १३ रोग ॥ ३६ ॥

दियहुकम सेतु धारहु उदधि धुज्जि कहिय मस्तक धरौ ॥ ३६ ॥

प्रनत सिंधु इम पिक्खि स्वामि अक्खिय अमोघसर ॥

तव तिहिं मरुकांतर भेद्य अक्खिय कलमपभर ॥

तहँ प्रभु मुक्कि पसत्क भस्म किय देस भयानक ॥

दिय वर वहुरि दयाल थिर सु होवहु सुभथानक ॥

जल मिष्ट हरित तरु वल्लि जुत जीवहु तहँ सब दग्ध जन ॥

यह अक्खि सिक्खि सिंधुहि दिय रु रचिय सेतु ताकहँ तिरना ॥ ३७ ॥

विश्वकर्म सुत नल १ वलिष्ट कपि हुव चितिकारक ॥

सुमति नील २ धरि सूत्र वन्यो सरलत्व विथारक ॥

दैनहार उपहार रह्यो हनुमंत ३ भक्तिरत ॥

लावन लग्गे और पृथुल पत्थर १ तरु २ पर्वत ३ ॥

क्रमपूर्व सेतु पदर कियउ जोजन दस १ आयत अतुल ॥

चउदह १ २ पूमान जोजन रुंचिर पृथम १ घस्र किय लंब पुल ॥ ३८ ॥

दूजे १ दिन सुहि दिग्ध बीस २ ० जोजन बिसतारिय ॥

इहिं क्रम सने इकबीस २ १ सु पुनि बाबीस २ २ सुधारिय ॥

बातर पंचम ५ विक्कांतर ३ जोरि पूरन सत १ ० ० जोजन ॥

सेतु पृथुल करि सज्ज फैल मंडिय कपि फोजन ॥

कपिराज ताहि परखन हुकम दलोहि जान आवन दयो ॥

तिहिं दृढ दिखाय रघुकुलतिलक अब पयान आरंभयो ॥ ३९ ॥

सुक रक्खस पद सुनत दूत पठयो दसकंधर ॥

१ विशाख नल २ मेरा बाग अमोघ है (खाली नहीं जाता) समुद्र ने कहा कि ३ मरुवन ४ पापों से भरा हुआ है जिसको भेदा १ बाग छोड़ कर ६ फिर उल्टा बन का कर दिया. ७ पैलों सहित ८ जलद्वारा लुप्य फिर जीवित हो जायाने विदा ॥ ३७ ॥ १ ० ० पुष्पा २ करनेवाला १ १ सीधेपन को फैलाने (पैमाने करने)वाला १ २ नामची देनेवाला १ देवदे १ २ कम पूर्वक सेतु को सीधा किया १ ३ दस जोजन ( खालीस कोस ) बाँटा १ ४ सुंदर १ ५ प्रथम दिन में लंबा पुल बनाया ॥ ३८ ॥ १ ८ लंबा १ २ इसी क्रम से २० पड़ा १ ३ परीक्षा के लिये नेत्र को जाने आने का दृश्य दिया ॥ ३९ ॥ शुकनासक १ २ राक्षस को

उदधि पार तिहिं आय कटक पिकख्यो सु भयंकर ॥

पकरि लयो पहिबानि कपिन छत्रै तस्कर कहि ॥

कुंच हुकम प्रभु करत चले अब सब उमंग चहि ॥

मारुति१अरौहि रघुकुलमुकुट२चढि अंगद२लक्ष्मन२चलिय।

सुग्रीव१सहित ए अगग हुव इतर पिढि दल उज्जलिय॥४०॥

गगन देव१गंधर्व२सिद्ध३चारन४सुम डारत ॥

पहुंचे राघव पार हरिन१रिच्छक२हलकारत ॥

दल मुकाम तहँ दियउ नाथ रचि व्यूह ऊहनय ॥

निज दल अंगद१नील२दुव२हि रक्खे उर१दुर्जय ॥

दक्षिण२विभाग रक्ख्यो ऋषभ१बाम३गंधमादन१विदित ॥

सिरभाग४अप्प१सानुज२रहिय थिर कपीस१हुव जँघन५थित॥४१॥

दोहा

कटक कुँच्छि६रच्छक करे, जांववान१धुर धीर ॥

प्रथित वेगदरसी२प्लवंग, बलि सुसेन३त्रय३वीर ॥४२॥

करि इम व्यूह मुकाम किय, दकैनिधि उत्तर दूर ॥

बजत बाद्य लंका बहुल, सुनत तत्थ सब सूर ॥४३॥

इतिथी वंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ

वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८वेला६८।१विवाहवेला

वर्णितविभाकरवंशवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुभवैक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रवि

कुक्षि ७ सन्तानशिरोमणिश्रीजानकीजानिचर्यायां कृतप्रस्थानर

१ चौर कहकर २ हनुमान पर चढ़कर ३ लक्ष्मण ४ दूसरे ॥ ४० ॥ ५ पुष्प डालतेहुए ६ वेदों और रीतों को बढ़ातेहुए ७ सेना का ८ तर्कना और नीति से ९ हृदय के स्थान पर १० कटि ( कमर ) प्रदेश में ॥ ४१ ॥ ११ कौम्य के १२ सिद्ध ॥ ४२ ॥ १३ समुद्र को उत्तरदिशा में दूर छोड़कर १४ बहुत ॥ ४३ ॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाग वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश को बढ़ानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के षडे पुत्र विकुक्षि की संतान के शिरोमणि श्रीजानकी के पनि ( रामचंद्र ) के चरित्र में प्रस्थान करके विभी-

क्षोराज्याऽभिषिक्तविभीषणावद्वारिधिश्चौरघुनाथपारोत्तराणां सप्त  
चत्वारिंशत्तमोऽयमयूखः ॥४७॥ आदित एकोननवतितमः ॥८९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पात

राम कहिय कपिराज कटक अप्पन प्रबंध किय ॥

सुक अब छोरहु सुनत दूत वह कपिन छोरि दिय ॥

जंपिये तिहिँ उत जात वार उत्तरि अरि आगत ॥

सीता देहु कि समर रचहु अनुरूप जत्नरत ॥

पौलस्त्य कहिय चरमादि पर जब रविउज्जम जानिहैं ॥

ध्रुव तबहि साम संसय धरहि प्रथम न हारि प्रमानिहैं ॥१॥

इम कहि रावन उभयरसचिव पठये सुक १ सारन २ ॥

कहिय लखहु तुम कटक कवन भासत जयकारन ॥

बिरचि दूत कपिवेस तबहि पते दल अंतर ॥

दुवहि विभीषन देखि चतुर पकराय लये चर ॥

उन किय सुनाय रामहिं अरज लंकेश्वर पठये लखन ॥

प्रभु कहिय पिक्खि जावहु प्रथित बदहु तत्थ एमम वचन २

दोहा

षण के राजसों का पति होने का अभिषेक करना, समुद्र को बांध कर रामचंद्र का पार उतरने का सैतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४७ ॥ और आदि से निव्यासी मयूख हुए ॥ ८९ ॥

रामचन्द्र ने कहा कि हे सुग्रीव आपन ने सेना का प्रबंध कर लिया इसकारण से अब शुक नामक रावण के दूत को छोड़ दो, उसने लंका में जाकर १ कहा २ शत्रु का आना ३ युद्ध रचो ४ अपने स्वरूप के अनुसार यत्न करने में प्रीति करके ५ रावण ने कहा कि अस्ताचल पर सूर्य का उदय होना निश्चय मान लिया जावे तो भी हमारे सन्धि (मिलाप) में सन्देह ही जानो, पहिले से ही हार नहीं मानना चाहिये ॥ १ ॥ ६ घंदर का स्वांग करके ७ रामचन्द्र की सेना में पहुंचे ८ दूतों (हलकारों) को ९ रामचन्द्र ने कहा कि प्रसिद्ध होकर ही देखजाओ और वहां (रावण से) मेरे ये वचन कहो ॥ २ ॥

रे दसकंध कुमंगरत, प्रसभ१दर्प२अघ३पूर ॥

जिहि बल आनी जानकी, सो ब दिखावहु सूर ॥३॥

इम कहि सुक१सारन२उभय२, दिय छुराय जगदीस ॥

लंकापुर तिन आय लघु, संबोधिय दससीस ॥४॥

जुरे इकठे च्यारि४जैहँ, रघुबर१लक्ष्मन२रारि ॥

सुगल३बिभीषन४ते मलिल, पटकहि नगर उपारि ॥५॥

सुनत तुंग प्रासाद मिर, सुक१सारन२लै साथ ॥

चढि रावन बुल्लयो चवहुँ, इक१इक१को को अत्थ ॥६॥

षट्पात

सुनि सारन क्रम कहिय कटक अगँ कपिकुंजर ॥

सत सहस्र१००००००जुथप समेत यह नील१धुरंधर ॥

बाहुन कुंपित बजाय पुहवि लौंगूल प्रहारत ॥

जो अंगद२जुवराज निनैद यह दिसन निकारत ॥

सो एह जुथ दसकोटि१०००००००००सह निडर सेतु करतार नल

यह स्वेत४कोटि दससत१०००००००००००अधिक,

बसू लक्ष्म८०००००पेरक प्रबल ॥७॥

नदिय गोमति य निकट रुचिर पर्वत संरोचन ॥

ताको पति अतितेज कुमुद५यह चहत रुष्टरन ॥

पृथुललोम जिहि पुच्छ विदित बहुरंग विराजत ॥

चंडप्रकृति यह चंड६सहस्र लक्ष्मन१०००००००००दल साजत

यह सह१सुदर्शन२विंध्य३अरु कृष्ण४अर्चल सासन करत ॥

सोरंभ७दिग्धकेसर दुसह कपिलकांति धावहि धरत ॥८॥

१कुमंग में प्रीति रखनेवाला २हठ३घमंड और पाप से पूर्ण४अव ॥३॥ ५श्रीघट

रावण को समझाया ॥४॥ ७सुग्रीव=जल में ६ऊँचे महल के ऊपर १०कहो ॥५॥ ६॥

११हाथी के समान शरीरवाला १२धुर को धारण करनेवाला १३क्रोध क-

के भुज ठोकता है और भूमि पर १४पूँछ को पटकता है सो १५नाद ॥७॥

१६संरोचन नामा पर्वत १७जिसकी पूँछ पर मोटे केस हैं १८भयंकर प्रकृति

१९पर्वतों पर आज्ञा चलाता है २०पीली कान्तिवाला

( षट्पात् )

मध्यगत ॥ २० ॥

( दोहा )

जांबवान१५यह तस अनुजें, नगैनिभ जुत्यपनाह ॥

१ है २ तोड़ फोड़ कर ॥ ८ ॥ ११ ३ विहार पदवी (खिताब) वाला ४ बंदरों का पति ५  
 साल्वेय नामक पर्वत का पति ६ नौबत के समान नाद करनेवाला ७  
 समुद्र के समीप ८ मेघ के ९ सदृश १० गैर (रक्तधातु) के समान का-  
 न्तिवाला ॥ १० ॥ ११ वन का पति १२ खड़ा १३ निर्भय १४ फैला हुआ १५ पूंछ १६  
 बहुत मोटे बाल १७ श्याम १८ स्वेत १९ पीले ॥ १२ ॥ २० नदियों में २१ अग्नि  
 के सदृश २२ राजा २३ नर्मदा २४ रीछ २५ उसका छोटा भाई २६ पर्वत





बुल्लत बकारि मैही बहुत आहव मम पिक्खहु इतर ॥ १९ ॥

( दोहा )

प्रबल जुत्थ दसकोटि १००००००००० पति, इत ठड्डो गजर २३ एह ॥

इतर विंध्यवासी अमित, देखहु ए गिरिदेह ॥ २० ॥

कपि इति सुख सारन १ कहै, अब सुक २ कहत अनेक ॥

बहु जुत्थप मैद २४ रु द्विविद २५, पिक्खहु ए सुबिवेक ॥ २१ ॥

दुव २ कुमार सुररूप द्युति, आश्विन जुग २ अवतार ॥

कहत एहु लंका कतिक, छिन विच विरचहिं छार ॥ २२ ॥

बहु वृंदन संकुन सहित, मपत निडि जिन्ह मान ॥

सचिव तेहि सुग्रीवके, ए इत लेत उडान ॥ २३ ॥

केसरिको जेठो कुमार, यह छेत्रज बलवान ॥

कहियत औरस धातको, है सो कपि हनुमान २६ ॥ २४ ॥

इत जुत्थप जुत्थप अमित, पति सुग्रीव २७ प्रवीर ॥

सत १०० प्रफुल्ल कांचन कमल, मालाधारक धीर ॥ २५ ॥

कहुं जुत्थप १ संख्या कहिय, पुनि कहुं जुत्थ २ प्रमान ॥

कहुंक व्यक्ति ३ घटि बडि कहुंक, पुव्व प्रमिति पलटान ६।२६।

खर आदिक मारक खरे, ए रवि कुंल रवि राम १ ॥

जिनसौं दक्खिन बाहु जिम, ए लक्खन २ अभिराम ॥ २७ ॥

सोदैर इत यह स्वामिको, रुप्यो बिभीखन १ रंग ॥

१ मर युद्ध को कुमार देखो २ और भी विंध्याचल में बसनेवाले ३ इत्यादि कपियों के नाश सारण नामक दूत ने कहे ४ विचार पूर्वक ५ देवताओं के स्वरूप की सी कान्तिवाले ६ दोनों अश्विनीकुरों के अवतार ७ सौ खर का एक शंकु होना है ८ माप ( गिनती ) ॥ ९ केसरि की स्त्री में १० पवन के धार्य से पैदा हुआ ॥ २४ ॥ ११ सोना के फूले हुए सौ कमलों की माला को धारणवाला ॥ २५ ॥ ग्रन्थकर्ता ( सूर्यमल्ल ) कहते हैं कि वाल्मीकि रामायण में कहीं तो युगों की संख्या कही है और कहीं सूत्रपतियों का प्रमाण दिया है और कहीं १२ व्यक्ति पृथक् ( आत्मा ) घटवद कही है और कहीं प्रथमक ही हुई १३ गणना का फिर पलटा कर दिया है ॥ २६ ॥ १४ सूर्यकुल के सूर्य ॥ २७ ॥ १५ दे स्वामी ( रावण ) वह १६ आपका छोटा भाई

रामचन्द्रवर्णन ] तृतीयराशि—अष्टचत्वारिंशमयूख ( ८९५ )

अप्पहु प्रभु सीता इनहिं, जुज्झहु जंग उमंग ॥ २८ ॥  
 सत्र सुजस तिनसौं सुनत, सारन सुकशनिकसाय ॥  
 कुटिल महोदरसौं कह्यो, रक्खस कुल अधिराय ॥ २९ ॥  
 इतरें बुलावहु दूत यँहँ, जिन्ह हम भेजहिं तत्थ ॥  
 सुनत महोदर टेरि सब, अरें बुल्ले चरें अत्थ ॥ ३० ॥

( षट्पात )

दूत नाम सडूल सु करि तिन बिच अग्रेसर ॥  
 कहि पठये तुम कटक तँकि आवहु सुबेल तर ॥  
 बदलि रूप तब बेग दूत प्रविसे राघव दल ॥  
 परखि बिभीषन पुनिहु खिजि पकराय लगे खल ॥  
 राघव छुराय पठये बहुरि हाजरि दससिर अगग हुव ॥  
 सडूल कहिय मैथिलसुतां देहु नतो नहि जेयँ दुवर ॥ ३१ ॥

( दोहा )

पुनि रावन सडूल प्रति, मँद कहिय क्यों मूर्क ॥  
 कोन कोनके पुत्र कहि, कौपि मर्कट भल्लूक ॥ ३२ ॥

( षट्पात )

सुनि रावन आदेसँ कहिय सडूल जोरि कर ॥  
 अछराज कपिकेर सुवन सुगीव कपीश्वर ॥  
 जांबवान २ १ अरु धूम्र ३ २ रिच्छ ए दुवर गद्गद सुत ॥  
 तिम केसरि ४ १ अरु जिह्वा १ २ जीव अंगज बल संजुत ॥  
 ससधरें तनूज दधिसुख सुमति कपि सुसेन अधर्मज कहत ॥

१ इनको सीता देदो जो २ युद्ध करने की उमंग है तो लड़ो ३ राजसों के कुल के स्वामी ने ४ दूसरे ५ शीघ्र बुलाये ६ हलकारों को ॥ ३० ॥ ७ शा-  
 दूल को अग्रणी करके ८ देख आओ ९ सुबेल नामा पर्वत के नीचे १० सी-  
 ता को ११ विजय करने में आवें ऐसे नहीं हैं ॥ ३१ ॥ १२ शार्दूल से १३ मूर्ख  
 ( रावण ) ने कहा कि १४ चुप क्यों है १५ बंदर १६ लंगूर १७ रीछ, किस किस  
 के पुत्र हैं सो कहो ॥ ३२ ॥ १८ आज्ञा सुनकर १९ पुत्र २० रीछ २१ बृहस्पति के  
 पुत्र २२ चन्द्रमा का पुत्र २३ यमराज का पुत्र

दुर्मुख ८।१रु वेगदर्शी ९।२सुमुख १०।३मृत्युतनय ए त्रय ३महत ३३  
दोहा

पंचपकृतांततनूज पुनि, इतरन नाम उपेत ॥

गज ११।१रुगंधमादन १२।२गवय १३।३सरभ १४।४गवाक्ष १५।५समेत ३४

ज्योतिर्मुख १६।२अरु स्वेत १७।२जुग ३, प्लवंग प्रभांकर पुत्त ॥

वसुसुत दुव २बिकांत १८।२कपि, जानहु दुर्बर १९।२जुत्त ॥ ३५ ॥

पट्पात

वरुनपुतदूजो २सुसेन २०।१अरु हेमकूट २१।२दुव २॥

तीजो ३बहुरि सुसेन २सुकपि मुनिबर मरीचि सुंव ॥

दूजो २सरभ २३उदार विदित परजन्य तनै वर ॥

अपरं गंधमादन २४ कुबेर अंगंज जय उद्भर ॥

वजांग २५नील २६ मैद २७।१रुद्विविद २८।२

अंगद २९नल ३०सुग्रीव ३१यह ॥

पवमान २५अनल २६अश्विन २७।२८वृषा २९

विश्वकर्म ३०रवि ३१सुत असह ॥ ३६ ॥

दोहा

उचित प्रश्न सब अक्खि इम, दससिर सन सहूल ॥

भियँ लिय राम अनीकभव, हिय खलकै दिय हूल ॥ ३७ ॥

॥ शुद्धप्राकृतभाषा ॥ मालिणी ॥

इअ तह वि सुगान्ते दूअसहूलवकं

१ मृत्यु के पुत्र २ यमराज के पुत्र ३ सहित ४ बन्दर ५ सूर्य का पुत्र ६ यसु देवता के पुत्र ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७ पुत्र ८ इन्द्र का पुत्र ९ दूसरा गंधमादन १० कुबेर का पुत्र ११ दुर्बष, हनुमान १२ पवन का, नील १३ अग्नि का, मैन्द और द्विविद १४ दोनों अश्विनीकुमारों के, अंगद १५ इन्द्र ( इन्द्र का पुत्र बालि और उसका पुत्र अंगद ) का अंश १६ नल विश्वकर्मा का और सुग्रीव सूर्य का पुत्र है ॥ ३३ ॥ रामचन्द्र की सेना से पैदा हुआ १७ भय लेकर दुष्ट ( रावण ) के हृदय में हूल लगाई ॥ ३७ ॥

मालिनी ॥ इति तत्रापि शृण्वन् दूतशार्दूलवाक्यं ज्ञातुमरिसैन्यं यातुधानानां नाथः । अनन्तरं गिरिसुखेले शूरे त्रेष्ठ्यमानं रघुकुलकलसं तं सानुजं सः अश्रीवीन् ॥ ३८ ॥

मुग्धिउ मरिसइगणं जाउहाणाण साहो ॥

सावरि गिरिसुवेले मूरसंतेलमाणं,

रहुउलकलसं गां साऽणुअं सो मुग्धिअ ॥३८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयश्राशौ बीति होलचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८बेला६८।१बिबाहबेलावर्णनवि पयविभाकरवंशवितननवैवस्वतमनुतनुभवेक्ष्वाकु६पट्टपुत्रविकुत्ति ७कुलकलशश्रीवैदेहीबल्लभचरित्रे व्यूढबलरामशुक१सारण२शा र्दूल३ऽऽदिमोचनतत्पतिगमनयूथपयूथगणाना निगदनमष्टचत्वारिं शतमो४८मयूखः ॥४८॥ आदितो नवतितमः ॥९०॥

शुद्धप्राकृतभाषा॥उवजाई

तदो खलो आदरिऊंण बिज्जूजीहं निसाडं कुहएण तेण  
तं जाणइं जूरविउं स सीसं कारीअ मायामइअं पडुस्स॥१॥

तहा व चावंशसरं कलावंशगिम्माविऊणं सरिसं दहासो।

धेत्तूण जाहीअ असोअरणां रामं हयं जाणइ जाणइति ॥ २ ॥

उससे पीछे राक्षसराज रावण ने शत्रु सेना का वृत्तान्त जानने के लिये सु-  
ख्य दूत की यात सुनते हुए सुवेल पर्वत पर स्थित शूरवीरोंको साथ लियेहुए  
छोटे माई लक्ष्मण सहित रघुकुल कलश श्रीरामचन्द्र को सुना ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य के वंश को  
फैलानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुत्ति के कुल के  
कलस श्रीजानकी के प्यारे ( रामचन्द्र ) के चरित्र में सेना का व्यूह रचकर  
रामचन्द्र का शुक, सारण, शार्दूल आदि को छोड़ना और उनका पीछा जा-  
कर यूथपतियों के यूथों की गिनती कहने का अड़तालीसवां मयूख स-  
माप्त हुआ ॥४८॥ और आदि से निब्बे मयूख हुए ॥९०॥

तब डुष्ट रावण ने विद्युज्जिह्व राक्षस का आदर करके कपट से जानकी को  
ठगने के लिये उस राक्षस द्वारा प्रभु रामचन्द्र का बनावटी मस्तक वनवाया ॥१॥

उसीप्रकार बाण सहित मरीचाधनुष और भाथा वनवाकर, सीता रामचन्द्र को

उपजातिः॥ तदा खल आदस्य विद्युज्जिह्वं निशटे बहुकेन तेन । तां जानकीं वञ्चयितुं सशर्पिकारकमाया-  
मयं प्रभोः ॥१॥ तथैव चापं मयं कलापं निर्माणं सदृशं दशरथः । गृहीत्वाऽयादरोन्मार्त्यं, रामं हतं जा-  
नोवाजानकीति ॥२॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा )

( षट्पात )

सीता दिग दससीस मत्थ डारिय मायामय ॥

कहिय राम सह कटक हन्यो लखि चलहु ममालय ॥

ताकै धनु१तूणीर२परखि प्रत्यय अब पावहु ॥

महिखीपन भाजि मोहि धरहु भय विविध बिहावहु ॥

जननी सु सुनत परि दुखजलधि कैकेई गरहन करिय ॥

मूर्छित मुहूर्त गिरिदंड मितं सुधि बहोरि कछु अनुसरिया ॥३॥

( दोहा )

सुधि सिरहिं लखि चिन्ह सब, लग्गी करन विलाप ॥

बुझी मंगत मैहु वध, देहु देहास दुराप ॥ २ ॥

( पादाकुलकम् )

कहिय तत्थ कोउक ब्रव्यादन, सुनी प्रहस्त चहत कछु प्रभुसन ॥

ग्रह सुनि उठि रावन गृह आयो, बल अप्पन रन सज्ज बनायो ॥३॥

पिहित भये कृत्रिम सिर१सर२धनु३, जनक सुताइत चाहिय तजन तनु ॥

निसाचरी सरमा अभिधाना, निपुन कही हितकी तह नाना ॥४॥

( दोहा )

सरमा नाम निसाचरी, मित्र करी जगमाय ॥

तानै विविध विसास दिय, कहि अजेय रघुराय ॥ ५ ॥

मेरेहुए जान लेवें इस प्रयोजन से रावण उन धनुष आदि को लेकर अशोकवा

टिका को गया ॥१॥ रामचंद्र को सेना सहित मारडाला जिसको देखकर मेरे घ

र में बल३भाषा को परख कर अय४विश्वास(सुबूत)पाकर५राणीपन धारण

कर६छोड़ दे७सीता यह सुनकर दुःख के समुद्र में पड़ कर कैकेयी की निंदा क

रने लगी ९ दो घड़ी तक दंड के१०समान गिरकर फिर कुछ चेत पाया ॥३॥

११ हे दशरथ ( रावण ) १२ दुर्लभ ॥ ४ ॥ उस समय किसी १३ राजसी

ने आकर रावण से कहा कि प्रहस्त १४ आप से कुछ सुना चाहता है १५

सेना को ॥ ३ ॥ १७ बनावटी मस्तक, वाण और धनुष १८ अंतर्धान होगये

१८ सीता ने १९ शरीर छोड़ना चाहा २० सरमा नामक राजसी ने ॥ ४ ॥

२१ सीता माता ने अपनी मित्र बना ली थी २२रामचन्द्र किसीसे विजय नहीं

रखस यह माया राखिय निहचै प्रभुवध नहिं ॥  
 जो तू चाहत तो सवन, आऊँ लखि ढिग आँहि ॥ ६ ॥  
 बात १ गरुडश्मम बेगकों, सुंदरि पहुँचि सकैं न ॥  
 जानहु मामँक जानकी, गमन अनर्गल गैँ ॥ ७ ॥  
 सीता अक्खिय हे सखी, पहिलैं रावन पास ॥  
 जाय खबरि आनहु संजव, कहा करत कर्षाँस ॥ ८ ॥  
 तव सरमा उडि नभ पिहितैं, गई दसानन गेह ॥  
 पहुँची सब सुनि तत्थ पुनि अक्खी सुनि सुभ एह ॥ ९ ॥  
 रावन माता कहि रही, तोहि दिवावन तत्थ ॥  
 वृद्ध अमात्य अबिद्धह, सुँहि अक्खी हित सत्थ ॥ १० ॥  
 मन्त्री नैक न मंदमति, यातैं सुभ अनुमान ॥  
 राघव जो नहि तो रचत, बैलि किम मंत्र विधान ॥ ११ ॥

( पट्पात )

मातामँह इत माल्यवान दसरिर संबोधियँ ॥  
 असकुन होत अनेक देयँ सीता जानहु जिय ॥  
 तुष्ट कहिय कैति दिनन रंगिं पिक्खहु मृत रामहिं ॥  
 जावहु गृह तुम जैरठ करत प्रेरन बिनु कामहि ॥  
 इम तिहिं विडारि मन्त्रिन उचित सज्ज करिय गढकोटसव ॥  
 प्रेरिय प्रहस्त प्रौची १कैकुभ तोरन पुर रखवार तब ॥ १२ ॥

( पादाकुलकम् )

कियेजावें ऐसे हैं ॥ ५ ॥ १ राक्षस ने २ रामचन्द्र का वध नहीं हुआ  
 ३ पास ही हैं सो देख आऊँ ॥ ६ ॥ ५ हे सुन्दरि ! मेरे बेग को ४ पवन  
 और गरुड भी नहीं पहुँचसके ६ मेरा जाना ८ आकाश में ७ बिना रो-  
 क के है ॥ ७ ॥ ११ सीता ने कहा १० क्षीघ्र १ राक्षस ॥ ८ ॥ १२ छिपकर ॥ ९ ॥ १३  
 बूढ़े कामदार ने १४ रावण की माता ने कही वही बात ॥ १० ॥ १५ फिर स-  
 लाह क्यों करता है ॥ ११ ॥ १६ रावण के नाना ने १७ रावण को समझाया  
 १८ देने योग्य १९ कितनेक दिनों में २० युद्धभूमि में २१ रामचन्द्र को मरा-  
 हुआ देखना २२ बुढ़ा २३ बिना प्रेरणा किये ही कार्य करता है २४ उसको  
 निकाल कर २५ पूर्व २६ दिशा के शहर के दरवाजे की रक्षा पर ॥ १२ ॥

महापार्श्व१अरु दुष्ट महोदर२, दक्षिण२द्वार पठाये दुष्ट ॥

जिम पच्छिम३गोपुर बासवैजित १,

अर्घ्य १ रु सुक २ सारन ३ उत्तर ४ इत ॥ १३ ॥

विचके गुल्मपतथाहि महाबल, खल रच्छक किय विरूपाक्ष१खल  
यह प्रबंध पिकखन पुर अंतर, बिसे बिभीखन सचिव छन्नवरा१४।  
अंडज बनि लायक लखि आये, सज्ज जथाक्रम सत्र सुनाये ॥

रावन अनुज सुनि सु सवरीती, प्रभु सन कहिय बढाय प्रतीती१५  
इमहि प्रबंध राम मन आयो, पूरव१गोपुर नील१पठायो ॥ ॥

अकिखय दबि प्रहस्तहि आहव, मारहु जेदपि सहाय उमाहव१६।  
दक्षिण१द्वार लरहु अंगद१हुँत, मूर वैरुनदिस३द्वार पवनसुत१ ॥

उत्तर४द्वारमें१रु लखन१इत, हनि हैं खलहि बीररस संहित ॥१७॥

रिच्छराज१कैपिराज२बिभीखन३, मध्यगुल्मपए लरहु महामन ॥

सेना जुत इम जाहु बीर सब, इक नियोगें सुनहु इतरहु अव ॥१८॥

नैरवपु कवहु कोहु धारहु नन, ज्यौं पहिचानैं हमहिं पुण्यजन ॥

लरिहैं नैवपु सत्त७में१लखन२, रावनभ्रात३सचिवचउ४ए७रन१९

दोहा

१ शहर के दरवाजे पर २ इन्द्रजित को ३ आप ( रावण ) ॥ १३ ॥ ४

बीच की सेना में ५ रत्नक ६ घुसे ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ पक्षी बन कर ८ सेना

की रक्षा करनेवालों को देख आये ९ शत्रु जिस क्रम से तैयार हुए सो क्र-

म पूर्वक विभीषण को सुनाया ॥ १५ ॥ १० पूर्वदिशा के शहर के द्वार पर

११ युद्ध में प्रहस्त को दबाकर १३ महादेव राक्षसों की सहाय पर है १२ तो भी

मारना ॥ १६ ॥ १४ शीघ्र १५ पश्चिम दिशा के द्वार पर १६ हनुमान १७ उत्तर के

द्वार पर मैं ( रामचंद्र ) और लक्ष्मण १८ बीर रस सहित ॥ १७ ॥ १९ जाग्र-

यान २० सुग्रीव २१ बीच की सेना अथवा रक्षा के अर्थ जुड़ी रखी हुई

( रिजर्व ) सेना में अर्थात् जिधर विशेष भार पड़ा हुआ देखे उधर ही जा-

कर रक्षा करनेवाली सेना में २१ एक दूसरी २२ आज्ञा भी सुना ॥ १८ ॥

युद्ध करते समय मनुष्य का २४ शरीर कोई मत धारण करना जिस कारण

से २५ राक्षस हमको पहिचान लें २६ मनुष्य शरीर से सात जने लगे

जिनमें मैं ( रामचंद्र ) लक्ष्मण, विभीषण और विभीषण के चारों भर्त्ता ॥ १९ ॥



कहि इम प्रभु लंका निकट, बर लखि सैल सुबेल ॥

रघुपति तँहँ रजनी रहन, मन किय सम्मति मेल ॥ २० ॥

पटपात

इम बिद्यारि प्रभु अरहि बुझि सुग्रीव बिभीषन ॥

अंगद ३ मार्कटि ४ आदि मुख्य इतरहु दुर्जर्य मन ॥

सानुज लहि निज सत्थ चढे पब्वय सुबेल पर ॥

ससुख बैठि तस सिखर लखिय सब नयर निसाचर ॥

भल्लुक १ प्लवंग २ मर्कट ३ भटन इक्खत किय गजन असह ॥

सकलेस बसिय परिकर सहित इम सुबेल सिररजनि वहा ॥ २१ ॥

( दोहा )

राकाँनिस इम तँहँ रहिय, सितै फग्गुन सकलेस ॥

पिक्खयो बहुरि बिहान पुर, बहु प्रकार दिववेस ॥ २२ ॥

सहँस १००० थंभ मनिमय सुघट, पिहुँल तुंग प्रासाद ॥

निरख्यो बिच रावन निलैप, कृतरच्छक कव्याद ॥ २३ ॥

( षट्पात )

पुरगोपुर परिकूट सीस तँहँ लखिय दसानन ॥

अरुन धरत आभरन रत्तचंदन अल्लेपन ॥

पट ससँलोहित रंग नील वपु छवि नीरदनिभ ॥

१ सुबेल नामक भेष्ट पर्वत देखकर ३ सब की सलाह मिलाकर उस पर २ रात्रि भर रहना चाहा ॥ ४ ॥ २० ॥ ४ शीघ्र ही ५ हनुमान आदि को ६ मन से भी नहीं जीतने में आवें ऐसोंको ७ राक्षसों के पुर को देखा ८ रीछ ९ बंदर १० लंगूर वीरों ने ११ लंका को देखते ही १२ सबके स्वामी ( रामचंद्र ) १३ अपनी परगह सहित ॥ २१ ॥ फाल्गुन १५ सुदि १४ पूर्णिमा की रात्रि को १५ सब के स्वामी १७ प्रभात समय में १८ स्वर्ग के समान लंका-पुर को देखा ॥ २२ ॥ १९ भेष्ट घड़ना युक्त २० मोटा और २१ ऊँचा २२ महल के बीच में २३ रावण का गृह देखा जिसकी रक्षा २४ राक्षस करते हैं ॥ २३ ॥ २५ शहर के दरवाजे के २६ ऊपर के मकान पर रावण को देखा जो २७ लाल रंग के भूषण २८ लाल चन्दन का २९ शरीर पर लेप किये हुए और ३० खरगोस के रुधिर समान लाल रंग के वस्त्र और ३१ मेघ के समान शरीर की

वच्छेध धरत किरण विदित दंत जहँ दियउ इंदइभ ॥  
 सिरछत्रविर्सद चामरसुभग केंछु प्रबंध जुझन करत ॥  
 इम ताहि लगवत कपिपति उडियहुलासि तास दर्पहिं हरत २४  
 ( दोहा )

वीर सु प्रभु सासन बिलुहि, लखि न सक्यो जय जुद्ध ॥  
 वानरराज सुबेलसौं, कुदयो खलसिर छुद्ध ॥ २५ ॥  
 ( पटपात् )

जिहिं गोपुर हो जातुधान रन जतन विचारत ॥  
 तहँ सुबेल सन मलपि गयउ कपिपति ललकारत ॥  
 इकसुहँत तिहिं इकिखें बहुरि जुटिय उडि बर्थन ॥  
 कहिय कवहु छुटैं न होय मध्यग मम हथन ॥  
 दिय भुव गिराय दससिर मुकुट खलहु ताहि डारिय धरनि ॥  
 पटकयो यहैहु कपि पुनि प्रवल तनय जंग रुक्मिय तरनि ॥ २६ ॥  
 दुवहि जुरे बलदावपलट ३ आघात ४ प्रसारत ॥  
 रतिन १ अरति २ कगाग्र ३ मुष्टि ४ कूर्पर ५ तल ६ मारत ॥  
 वरन १ निखात २ बीच प्रसभ बथन संकुल भरि ॥  
 लागे पुनि उठि लरन धीर जहँ अगग मलप धरि ॥

छवि और ? हृदय पर इन्द्र के ३ हाथों ने दन्ता लगाये थे जिनके २ मुख  
 त्रण (चक्राणों, निशान) मस्तक पर ४ स्वतन्त्र, सुन्दर चमर धारण किये हुए  
 ५ युद्ध करने का प्रबन्ध करता हुआ। इस प्रकार उसको देख कर ६ सुग्रीव  
 उसका ७ घमंड मिटाता हुआ उड़ा ॥ २४ ॥ ८ रामचन्द्र की आज्ञा के  
 विना ही ॥ २५ ॥ ९ राजस १० दो घड़ी तक उसको ११ देखकर १२ सुग्रीव  
 भी भरकर १३ रावण ने भी सुग्रीव को भूमि पर गिराया फिर सुग्रीव  
 ने भी प्रवल होकर १४ रावण को पटक सो १५ अपने पुत्र (सुग्रीव) का युद्ध  
 देखने को १६ मृत्यु रुक गया ॥ २६ ॥ १७ मुष्टि (मुक्ती) पाँच हुए हाथ को रतिन,  
 और १८ फैली हुई अंगुलियोंवाले हाथ को अरति कहते हैं १९ खूणी (या  
 मध्यमन्थि) और २० लात मारते हुए २१ कोट की २२ ग्लाई में २३ दृष्ट पूर्वक अवकाश  
 रतिन भरगये और फिर उठकर लड़ने लगे

गोभूत्र<sup>१</sup>थान<sup>२</sup>मंडल<sup>३</sup>गमन, गत<sup>४</sup>प्रत्यागत<sup>५</sup>चक्रगत<sup>६</sup> ॥  
प्राधांत<sup>७</sup>देन<sup>८</sup>श्वर्जन<sup>९</sup>प्रमुख<sup>१०</sup>, रचन लगे तिनि युद्धरत ॥ २७ ॥

( दोहा )

परिधावन<sup>१</sup>आप्लाव<sup>२</sup>पुनि, अभिदेवन<sup>३</sup>आस्थान<sup>४</sup> ॥  
परावृत्त<sup>५</sup>समर्वप्लुत<sup>६</sup>रु, अपावृत्त<sup>७</sup>अवधान ॥ २८ ॥  
इतिमुख असह नियुद्धके, प्रेरे दुहुन<sup>८</sup>प्रकार ॥  
इत कपीस<sup>९</sup>दससीस<sup>१०</sup>उत, जुरे प्रवल जुझार ॥ २९ ॥  
जान्यों दुर्जय कीस जव, माया रचिय दसासँ ॥  
सुँ लखि भूपि सुग्रीव हू, पुनि आयो प्रभु पास ॥ ३० ॥  
पुच्छि कुसल हिय लाय प्रभु, उपालंभ<sup>१</sup>दिय याहि ॥  
तू इहिं हठ आतो नतो, करते उद्यम काहि ॥ ३१ ॥  
लखन प्रति पुनि अखि लंघु, करन ठूह बलकेर ॥  
श्रीप्रभु उतरि सुबलतैं, घन लंका दिय घैर ॥ ३२ ॥  
पक्ष अंसित मधुँ पडिवया<sup>१</sup>, किय आहव आरंभ ॥  
जित रावन उत्तर बलैज, थित तित प्रभु जयथंभ ॥ ३३ ॥

( पटपात् )

प्राची गोपुँरी नील<sup>१</sup>द्विविदे<sup>२</sup>मैदे<sup>३</sup>हु सज्जिय हुँत ॥  
दक्खिन अंगद<sup>४</sup>गज<sup>५</sup>रु गवय<sup>६</sup>क्रपभ<sup>७</sup>रु गवाक्ष<sup>८</sup>पुजुत ॥

? गोभूत्र नामक चित्रकाव्य में देही गति से पढ़ा जाता है उसप्रकार देहे चलकर १  
अवकाश (छेटी) देना २ गोलाकार फिरना, आगे बढ़ना ३ पीछा हटना, तिरछी गति  
से चलना ४ चोट मारना ५ चोट बचाना ६ आदि ८ बाहुयुद्ध की रीति रच  
कर ॥ २७ ॥ ९ उलटा दौड़ना १० उठालेना अथवा भुका देना ११ येग से  
चलना १२ खड़ा रहना १३ लुडक जाना १४ कूदना १५ दाव से निकल जा  
ना और सावधान रहना ॥ २८ ॥ इनको आदि लेकर मल्लयुद्ध के दाव दोनों ने  
चलाये ॥ २९ ॥ जय सुग्रीव को अपने से १६ जय होने योग्य नहीं समझा  
तब १७ दशमुख ने माया रची १८ सो देखकर सुग्रीव कूद कर रामचन्द्र के  
पास आगया ॥ ३० ॥ १९ ओलंभा दिया ॥ ३१ ॥ २० शीघ्र ॥ ३२ ॥ २२ यैत्र  
२३ यदि एकम के दिन युद्ध आरंभ किया २३ उत्तर द्वार पर रावण था उधर  
रामचन्द्र जय के थंभ होकर खड़े हुए ॥ ३३ ॥ २४ पूर्वदिशा के द्वार पर २५ शीघ्र

पच्छिम गोपुर\*प्रावमान१तरस२रु प्रजंघ३तिम ॥

उत्तर राघव अप्प१अनुज लक्ष्मण२उपेत इम ॥

विच गुल्मरहिय कपिपति१प्रमुख जुत्थप कोटि छतीस३६००००००००  
जहँ ॥ इहिंरीति चैत प्रतिपदि१असित अच्युत रन मंडिय असह३४

[ दोहा ]

राघवसौ पच्छिम तरफ, मध्यगुल्म ढिग मत्त ॥

भल्लुकंराज १ सुसेन २ भट, उभय ३ रहे अनुरत्त ॥३५॥

प्रभु तत्थहु नृपधर्मपटु, पुनि रचि मंत्र प्रकास ॥

बांलितनय इत बुल्लिकै, पठयो रावन पास ॥ ३६ ॥

कहिय जाय अंगद कहहु, किय रावन अघकाम ॥

तस फल प्रावन जिय तजन, रन अब भिंटहु राम ॥ ३७ ॥

( पट्पात )

तब यह सुनि तारेयँ गगन पढ़ति मलंगि गय ॥

तँहँ रावन सह सचिव जाय बुल्लिय तँहँ दुर्जय ॥

जनकसुता लै जाय प्रान रक्खहु प्रायन परि ॥

कलह तथा सकुटुंब भुम्मि सोवहु गिद्धन भँरि ॥

यह सुनत दुष्ट असरख अनखि कुँटिलिनैन मंत्रिन कहिय ॥

इहिँ हनहु बंधि यह सुनि उठि सु गरजि च्यारि४दुष्टन गहिया३८

( दोहा )

परवस यह जानत परचो, रयप्रकटन तारेयँ ॥

सु पुनि च्यारि४रक्खस सहित, उड्डयो गनन अमेयँ ॥३९॥

( पट्पात )

\* हनुमान् १ लक्ष्मण सहित २ सेना के बीच में ३ सुग्रीव ४ आदि ५ यदि एकम के दिन ६ रामचन्द्र ने दुस्सह रण प्रारंभ किया ॥ ३४ ॥ ७ जाम्बवान ८ प्रीति पूर्वक ॥ ३५ ॥ ९ राजाओं के धर्म में चतुर १० अंगद को बुलाकर ॥ ३६ ॥ ११ युद्ध में राम से भिड़ ॥ ३७ ॥ १२ तारा का पुत्र (अंगद) १३ आकाश मार्ग में १४ गिद्धों का भरण पोषण करके १५ टेढ़े जेथ करके ॥ ३८ ॥ १६ अंगद अपना योग प्रकट करने के लिये वह १७ अमाप चलवाला आकाश में उड़ा

उडत बालिसुत उड गिरे मूर्छित चउ४ग्राहक ॥

उड तुंग इक सिखर बीर पहुँच्यो जयवाँदक ॥

सहज भंजि वह सुंग अक्खि आब्हय निज अंगद ॥

बहुरि भंप लिय बीर मारि आसिर अधीस मद ॥

प्रभु जत्थ तत्थ आयउ प्रबल पुण्यजनन विस्मय परिय ॥

रघुनाथ बलहिँ व्यूहित विरचि करन हल्ल संक्रम करिय ॥ ४० ॥

( पादाकुलकम् )

यँहँ सुसेन कपिपति पठवायो, यहँ प्राकार परिक्रमि आयो ॥

इकसत१००तत्थ प्लवग अँक्खोहनि, अवहित किन्न वँरन आरोहनि

( दोहा )

पूर्यो अब दल हंकि प्रभु, बँप्र१२खातिका२बीच ॥

सु सुनि लख्यो दससीसहू, निलैयअट्ट चढि नीच ॥४२॥

इत वानर गिरि१तरु२उँपल३, खिजि खिजि पटकि अखंड ॥

गोपुँर१कँपिसिर२अट्ट३गन, चूरन लग्गे चंड ॥ ४३ ॥

( पटपात् )

पनस१कुमुद२वँलि प्रघस३कोटिदस१०००००००००जुत ईसानक१

अनलँ कोन २ सतवलिय १, बीस कोटि १०००००००००

न बँलतानक ॥

नैर्ऋत कोन ३ सुसेन १ जुरिग कपि कोटि कोटि कोटि-

अंगद के १ ऊपर उडते ही पकड़नेवाले चारों गिरगंध, ऊपर एक ऊँचा शिखर था जिस पर रामचन्द्र की २ जय बोलता हुआ पहुँचा उस शिखर को सहज से ही तोड़कर ३ अपना नाम कह कर ४ राजसों के स्वामी का मद मारकर ५ राजसों को विस्मय हुआ. रामचन्द्र ने सेना को ६ व्यूह सहित करके हल्ला करने को ७ गमन किया ॥ ४० ॥ ८ सुग्रीव ने सुसेन को भेजा सो वह ९ कोट के प्रदक्षिणा करके आया और घंदरों की एक हजार १० अचौहिणी को ११ सावधान करके १२ कोट पर चढ़ा दी ॥ ४१ ॥ १३ कोट १४ खाई १५ अपने महल की छत पर चढ़कर ॥ ४२ ॥ १६ पत्थर १७ शहर के दरवाजे १८ कंगूरे १९ छतों के समूहों को चूर्ण करने लगे ॥ ४३ ॥ २० पुनि २१ ईशान दिशा में २२ अग्निकोण में २३ फैलानेवाला



जूहसेसु वेदमाणेसु लङ्कं कव्वाएसुं निक्खसन्तेसु अब्बो॥

अरणोरणाणां कोव इड्डं सुसड्डं दन्दाघाअं सम्पवट्ठंणिउड्डं । १ ।

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

( पञ्चटिका )

मधुमांस असितै प्रतिपद १ मिलाप, रन प्रथम १ द्वंद्व, मच्चिग दुराप ॥

मिलि अंगद १ इत उत मेघनाद २, संपाति १ प्रजंघ २ हु लागि सवादा १ ।

नुमान १ जंबुमाली २ हरोल, रु विभीषन १ लिय मित्रधन २ लोल ॥

गज १ तपन २ नील १ रु निकुंभ २ गज्जि, सुग्रीव १ प्रघसर २ किय द्वंद्व सज्जि

सौमित्रि १ विरूपाक्ष २ हु समत्थ, श्रीराम १ ईक १ अरि च्यारि सत्थ ॥

जहँ अग्निकेतु १ सुप्तधन २ जेतु, क्रम यज्ञकोप ३ अरु रस्मिकेतु ४ ॥ ४ ॥

मैद १ सु इत त्यों उत बज्रमुष्टि २ द्विविद १ रु असनिप्रभ २ रारि रुँट्टि ॥

इत नल १ उत पतपन २ इत सुसेन १, उत विद्युन्माली २ चरित एन १ ॥

इत्यादि मल्लरन जुरि असेस, अतिघोर तुमुल किय सुनहु एस ॥

इंद्रजित १ गदा तारेयँ अंग, मारी कराल धरि जय उमंग ॥ ६ ॥

अंगद तव याके सूत १ अश्व २, रथ ३ सहित कट्टि किय पल्लचरस्व

संपाति भेलि अरि तीर तीन ३, पटक्यो प्रजंघ सिर भुव प्रवीना १ ।

गहि उगू जंबुमाली अंगूढ, मारुति उर मारी संगि गूढ ॥

हनुमान मलपितव स्वामिहेत, सो मनु चूर्णा किय रथ समेत ॥ ८ ॥

मित्रधन विभीषन अतुल मोदँ, गिद्धन हित डोर विविध गोद ॥

गज तपन थंभि तपनहिँ गहीर, वरसे नभ आयुध विंदु वीर । ९ ।

१ चैत्र मास के २ कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा ( पड़िया ) के मिलाप में ३ दुर्लभ

॥ २ ॥ ४ अग्रणी होकर ५ चपलता से ॥ ३ ॥ ६ लक्ष्मण ७ अकेले रामचन्द्र

ने चार शत्रुओं के साथ युद्ध किया ८ युद्ध में क्रोध करके ९ पाप के चरित्र

करनेवाला ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० तारा के पुत्र (अंगद) के अंग में ॥ ३ ॥ ११ मांस भ-

क्षण करनेवाले शीघ्र आदि के अर्धान १२ प्रहार ॥ ७ ॥ १३ प्रत्यक्ष १४ हनु-

मान के डर में १५ सांग (बरछी) ॥ ८ ॥ १६ अत्यन्त आनन्द के साथ १७

तपन ने सूर्य को ठहराकर ॥ ९ ॥

नारिणी ॥ अनेषु वेदमाणेषु लङ्कां कव्वाएसुं निक्खसन्तेसु अब्बो । अणोरणाणां कोव इड्डं सुसड्डं दन्दाघाअं सम्पवट्ठंणिउड्डं । कां संवरणं निमुदन् ॥ १ ॥

क्रव्यादं निकुंभहु नीलकाय, सत१००बान दये अमरख सहाय ॥  
 तव बड्ढि तास रथचक्र नील, सिर तोरि दुष्ट पटक्यो कुंसील ॥१०॥  
 सुग्रीव सप्तपर्णाहिं चलाय, मारयो सु पृथस बल छक छलाय ॥  
 इक१वान मुक्कि लक्खन उदार, विनु प्रान विरूपाक्षहिं चकार ॥११॥  
 इत अग्निकेतु प्रमुखन अखंड, प्रभु बपुं प्रसत्कर् मारे प्रचंड ॥  
 रघुवरहु मुक्कि चउ४रोप रंग, जे च्यारि४गिराये मारि जंग ॥ १२ ॥  
 मैदहु स्वमुष्टि करि वज्रमुष्टि, तनुंहीन गिरायउ पाय तुंष्टि ॥  
 इतद्विविदसालरुक्खहिं उपारि, असनिप्रभ लिय सरथहय मारि ॥१३॥  
 नलनै प्रतपनके कड्ढि नैन, वह दुष्ट अंध किय जुद्ध अैन ॥  
 विद्युन्मालीके खाय बान, मुक्किय सुसेन गिरि इक१समान ॥ १४ ॥  
 लखि ताहि आत खलरथहिं छोरि, द्रुत गो प्लवंगपर दुष्ट दोरि ॥  
 तिहिं अद्रि जाय खल रथ तुरंग, सब चूरि उडाये बाते संग ॥१५॥  
 पुनि एक१सिला गहिंके प्लवंग, आयो खल ऊपर बितंत अंग ॥  
 वच्छत्यल मारिय सुहि प्रवीन, हुव विद्युन्माली असुंविहीन ॥१६॥  
 इम होत प्रथम दिन रन अखंड, तक्किय चरमाचल मारतंड ॥  
 कपि कौणप तउ जुझत रुके न, संजुरिग निसातमै हु सेन ॥१७॥  
 को तुम सुनि हम इत कहत कीस, उत कहत रात्रिचरजय अधीस ॥  
 निस तिमिरमै हु पहिचानि बैन, इम लरन लगे संहगहु अनैन ॥१८॥

१ राक्षस २ खोटे शीलवाले को ३ एक एक गांठ में सात सात पत्ते होवें ऐसे वृक्षवि  
 शेष को चलाकर ४ उदार लक्ष्मण ने ५ किया ॥ ११ ॥ ६ आदि ने ७ रामचन्द्र के शरीर में  
 ८ बाण मारे ९ बाण ॥ १२ ॥ १० शरीर विना करके ११ प्रसन्नता पाकर  
 १२ शालवृक्ष को उपाड़ कर ॥ १३ ॥ १३ जुद्धस्थल में ॥ १४ ॥ १४ बंदर पर १५  
 पवन के साथ उड़ादिये ॥ १५ ॥ १६ शरीर को फैलाकर १७ हृदय में मारी  
 १८ प्राण विना होगया ॥ १६ ॥ इसप्रकार युद्ध होते होते २० सूर्य ने १९ अस्ता  
 चल को देखा अर्थात् सूर्य अस्त हुआ तो भी बंदर और २१ राक्षस लड़ते हुए  
 नहीं रुके २२ रात्रि के अंधेरे में भी सेना २२ जुड़ी ( लड़ती ) रही ॥ १७ ॥  
 तुम कौन हो? यह सुनकर बंदर कहते हैं कि हम इधर हैं और उधर राक्षस  
 अपने स्वामी की जय घोषित हैं, उस रात्रि के अंधेरे में वाणी पहचानकर  
 २४ नेत्रों के होते हुए भी अन्ये होकर लड़ने लगे ॥ १८ ॥



तहँ कुपित मुक्ति रघुवर छद्तीर, हतमर्म टरे खटखल गहीर ॥  
 सारण<sup>१</sup>रु महोदर<sup>२</sup>यज्ञसत्रु<sup>३</sup>जिम बज्रदंष्ट्र<sup>४</sup>सुक<sup>५</sup>भिन्नजत्रु ॥ १९ ॥  
 क्रव्याद महापार्श्व<sup>६</sup>हु कराल, इत्यादि भजाये प्रभु उताल ॥  
 बहुरिहु इत अंगद मारि वान, इंद्रजित कियउ घायल अमान ॥ २० ॥  
 संहारि तास बाजी<sup>४</sup>रु सूत<sup>१</sup>, पुनि आतुर किय दससीसपूत ॥  
 रथ छोरि इंद्रजित तब दूरुह, है पिहित रचिय माया समह ॥ २१ ॥  
 सुर मुनिन बालिसूनुहिँ सिराहि, चवि सांधु गिरायउ कुंभुम चाहि ॥  
 रावनसुत करि तब कूट रारि, सरै नागरूप मुक्कियँ सम्हारि ॥ २२ ॥  
 उन सरन लागि रघुवीर अंग, भ्राता उभैरहि किय मर्मभंग ॥  
 पुनि नागसरन तिन बिरचि पीर, बंधि रु भुव डारे दुव<sup>२</sup>हि वीर ॥ २३ ॥  
 नाराच<sup>१</sup>अर्द्धनाराच<sup>२</sup>वान, अंजलि<sup>३</sup>क<sup>३</sup>भल्ल<sup>४</sup>छुर<sup>५</sup>प्रखरपाँन ॥  
 बलि सिंहदंष्ट्र<sup>६</sup>कति बँत्सदंत<sup>७</sup>, इत्यादि विसिख दै पुनि अनंत<sup>२४</sup>  
 रघुवर दुव<sup>२</sup>वेधे सैतत रंग, अंगुल रहयो न छूतहीन अंग ॥  
 मन दुहिँनदत्त वर कानि मानि, उभय<sup>२</sup>हि अचेत हुव मोहँ आनि<sup>२५</sup>  
 स्वामिनँ लखि सोवत वीर सैन, इत सबन वढ्योतिहिँ निसँ अचैन  
 इतरहुँ कपि रावनपुत्र ऐँक, वेधत हुव मायारन विवेक ॥ २६ ॥

१ काँख और कंधे की संघि (हसली की हड्डी) तूटी हुई है जिसकी २ राजस  
 ३ छोड़े और ४ साराथि को मारकर इंद्रजित को ५ व्याकुल किया ६ तर्कना  
 में नहीं आवे ऐसा ७ गुप्त होकर ॥ २१ ॥ ८ अंगद की प्रशंसा करके १० बहुत  
 ओष्ठ बहुत ओष्ठ<sup>२</sup>कहकर ११ पुष्पों की वर्षा की १२ मायायुज करके १३ सर्प पाण  
 १४ छोड़े १५ दोनों भाइयों के मर्मस्थल छेद डाले और उन नागयाणों ने उनके  
 पीड़ा करके नागपाश में बांधकर भूमि पर गिरादिये १६ अंजलि के सदृश १७  
 तीखी पाणवाले, कितने ही सिंह की डाढ़ के जैसे और कितने ही १८ यच्चों  
 के दन्तों के समान १९ बाण फिर अनेक दिये ॥ २४ ॥ युद्धभूमि में रामचन्द्र  
 और लक्ष्मण दोनों रघुवंशियों को २० निरन्तर वेधे जिनका शरीर बिना  
 २१ घाव एक अंगुल भी नहीं रहा. अपने मन में २२ ब्रह्मा के दिये हुए वर  
 की कान मानकर दोनों २३ मूर्छा लेकर अचेत हो गये ॥ २५ ॥ २४ अपने  
 स्वानियों (मालिकों) को वीरशय्या में सांते देखकर उस २५ रात्रि में इधर  
 सब के अचैन बढ़ा २६ दूसरे धंदरों को भी २७ अकेले रावण के पुत्र ने माया

नवएवानन बेध्यो नीलशनाम, त्रयत्रयत्रयकरि मैदरु द्विविदशताम

दुव २ दुवशगवाक्ष ४ अरु सरभ ५ देह,

सर दस१० हनि मारुति ६ कियउ सेह ॥ २७ ॥

अंगद७मैकटपति८जांबवान९, बहु दुष्ट दये इनकै हु बान ॥

निज बल इम अजि र मेघनाद, प्रविश्यो पुर दुदर लहि प्रसादा॥२८॥

पहुँच्यो रावन ढिम जोरि पाँनि, अक्खिय स्वकीय जय कहिय आनि

सुत सूक्ति सुनत रावन स्वभाय, उछर्यो तजि आसन मुद अघाया॥२९॥

सिर सुंघि लाय हिय कहि सुपुत, जान्यो खल अप्पहि बिजय पुत

बंधे र गिरे रघुवंस बीर, इत लखि अचेत हुव कपि अधीर॥३०॥

सुग्रीव आदि लहि हृदय साल, हत आस लगे रोवन बिहाल ॥

तहँ आय विभीषन कहिय तत्वं, दुर्गसलिल रुक्मि छोरहु दरत्वं॥३१॥

मन्नहु अजेय रघुवंसमोर, जिनपै न बिचारहु मृत्यु जोर ॥

कपिराज बदन हिमजल पखारि, इम कैकसेयदिय सुचँ उतारि॥३२॥

जीनत उत दससिर स्वीय जीत, भो पुत्रबचन सुनतहि अभीत ॥

सीता रखवारी जे समस्त, ते रात्रिचरिय बुल्लियँ अत्रस्त ॥ ३३ ॥

अक्खिय तिनसौं पुष्पक चढाय, सीताहि दिखावहु सत्रु जाय ॥

सानुँज लखि रामहिँ मूर्तिसेसँ, वलि सोहि मोहि भजिहँ विसस॥३४॥

युद्ध के ज्ञान से वेध ॥ २६ ॥ २ तहाँ ३ हनुमान का शरीर सेह (सहेला)

जंतुविशेष के समान करदिया ॥ २७ ॥ ४ सुग्रीव ५ दुर्द्धर्ष (किसीकी धर्षणा

में नहीं आवे ऐसा) होकर ६ प्रसन्नता लेकर पुर में घुसा ॥ २८ ॥ ७ हाथ

जोड़कर ८ शत्रु का नाश और अपनी जय कही ९ पुत्र का कहना सुनकर

॥ २९ ॥ ३० ॥ १० यथार्थ वार्ता कही कि हे बंदरो ११ नेत्रों का जल (आँस)

रोककर १२ भयपन (कायरता) छोड़ो ॥ ३१ ॥ १३ रघुवंशियों के मुकुट

(रामचन्द्र) को १४ सुग्रीव के मुख को ठेंहे जल से धोकर इसप्रकार १५

कैकसी के पुत्र (विभीषण) ने १६ शोक उतार दिया ॥ ३२ ॥ १७ अपनी

जीत २० निर्भय होकर सीता की रक्षा पर जिन १८ राक्षसियों का रक्खी

थी तिनको १९ बुलाई ॥ ३३ ॥ उसने कहा कि सीता को २१ पुष्पक विमान

पर चढ़ाकर, सीता को लेजाकर २२ हमारे शत्रु दिखाओ २३ अपने भाई सहित

रामचन्द्र को २४ मूर्ति ही है बाकी जिनकी (मुँदे) ऐसे देखकर २५ फिर

त्रिजटादि सुनत पुष्पक विमान, द्रुत लाय चढाई भय निदान ॥  
 रनभुम्भि लखे तिहि जाय राम, लागि धूरि गिरे सानुज ललाम ३५  
 बिलपन लगी सु लखतहि बिहाल, प्रभनाथ त्राहि हाहा कृपाल ॥  
 हा दिष्ट दीन मैं सरन होहु, सुभ मुनिनैं बैन हुव असुभ सोहु ३६।  
 सामुद्रिकलच्छन सुभ जितेक, मम अंग कहे बिप्रन तितेक ॥  
 ससुताँ रु सत्रिपत्नी हु मोहि, वरनी तृथाहि आग्रह अरोहि ३७।  
 इतिमुख त्रिकालदरसिन निदेस, सब मोघ होत प्रभु कीर्तिसेस ॥  
 बिलपत इम जानकि पारवस्य, लागि कर्न कह्यो त्रिजटा रहस्य ३८  
 रोवहु जिन जानकि जियत राम, न कहौ अलीक मैं कछुहु काम ॥  
 होते जो कुणपहि उभयईद, पुष्पक न तोहि धरतो प्रसिद्ध ३९।  
 भल्लुक कपि वदनहु भ्राजमान, यातैहु एह नासुभनिदान ॥  
 इम कहि दिखाय रन बहुरि आनि, मेलही असोक बन हुकम मानि ४०  
 इत राम कछुक बेलौं बिताय, सबद्वहि जागे संगराय ॥  
 सौमित्रि और लखि रुदन सत्य, सबजनक लगे बिलपन समथ ४१  
 हाहा यह लखन कोन हाल, उठहु प्रिय भाई रन अचाल ॥

मुझे भजेगी ॥ ३४ ॥ १ शीघ्र ॥ ३५ ॥ २ देखते ही बिहाल होकर विलाप क-  
 रनेलगी कि ३ हे भाग्य! तू ही मुझे शरण देनेवाला हो ४ मुनियों के शुभ  
 वचन थे सो भी अशुभ होगये ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणों ने मेरे शरीर में ५ सामु-  
 द्रिकशास्त्र के शुभलक्षण कहे थे कि तू ६ पुत्रवती होवेगी और ७ यज्ञ  
 करनेवाले की स्त्री होवेगी सो अभी रामचंद्र ने यज्ञ तो किया ही नहीं और  
 मरगये इससे उनने आग्रह करके ८ झूठ कहा था ॥ ३७ ॥ ९ इत्यादि १०  
 तीनों समय को जाननेवाले मुनियों की आज्ञा रामचंद्र के १२ कीर्तिशेष  
 ( कीर्ति ही है बाकी जिनकी अर्थात् मृतक ) होने से सब ११ झूठ होगई  
 १३ पराये वश में हुई जानकी इसप्रकार विलाप करनेलगी तब १४ कान के  
 लगकर त्रिजटा ने १५ गुप्त वार्ता कही ॥ ३८ ॥ १६ मिथ्या १७ बिना प्राण  
 ( मुर्दे ) होते तो यह १८ निर्मल पुष्पक विमान तुझको धारण नहीं करता  
 ॥ ३९ ॥ रीछ और बंदरों के मुख भी १९ शोभायमान हैं यह भी अशुभ का  
 २० कारण नहीं है ॥ ४० ॥ २१ कुछ समय बिताकर २२ संग्राम स्थल में बाणों  
 से बंधेहुए ही जगे और २३ लक्ष्मण की ओर देखकर २४ सब संसार के पि-  
 ता (रामचन्द्र) विलाप करनेलगे ॥ ४१ ॥ २५ युद्ध में चलायमान नहीं होनेवाले

सीता सम पुनि मिलि सकत नारि, तोसम न बच्छ भ्राता जितारि ४२  
 किय भीष विभीषन कौणपेस, बलि गेह न जेहौ अब कुवेस ॥  
 सुग्रीव आदि गृह जाहु सर्व, सब मैं न संक्त यह रन अखर्व ॥ ४३ ॥  
 यह सुनत लगे विलपन असेस, सुग्रीव स्वसुर सन कहिय एस ॥  
 धरि अंस राम लखन धरेन, किष्किधा जावहु तुम सुसेन ॥ ४४ ॥  
 मैं हनि दससीसहिं कुल समेत, अहौं लहि सीता जय उपेत ॥  
 बुल्लयो सुसेन क्षीरोदेभाहिं, औपध संजीवन विविध औहिं ॥ ४५ ॥  
 प्रभु तिन्ह मंगावहु कपि पठाय, गिरि दोन चंद्रादिस सुधि लगाय ॥  
 इहिं बीच अचानक गरजि अश्रै, अतिवात मचिग तंडिता अदभू ४६  
 द्वीपन तरु कडि कडि बेग दोर, सह मूल लगे उड्डन सजोर ॥  
 हे" नाग तहाँ जे रहनहार, भजि सिंधु दुरे लहि त्रास भार ॥ ४७ ॥  
 जिहिं समय अचानक बैनतेय, आयउ सवेग रनभुव अजेय ॥  
 विक्रैखत तिहिं भजि भजि नागवाने, सब छत्र दुरे जिततित सयान ४८  
 हुव सानुज प्रभु सरबंध हीन, पहुँच्यो खगेस तिहिं खिन प्रवीन ॥  
 इनको किय सपरस गरुड आय, निज कर मुख पौछे रज नैठाय ४९  
 दोउनके खगपति छुवत देह, छतहीन भये दडबल अछेह ॥

२ हे वत्स ३ शत्रुओं को जीतनेवाला तरे जैसा भाई नहीं मिलसका ॥ ४२ ॥ ४ विभीषण को राजाओं का राजा किया था सो ४ मिथ्या हुआ इस चंडे रण के जीतने को मैं समर्थ नहीं हूँ ॥ ४३ ॥ ७ सब सुग्रीव ने अपने मसुर से कहा कि १० भूमिपति राम लक्ष्मण को अपने ६ कंधे पर धर कर हे सुसेन किष्किधा जाओ ॥ ४४ ॥ ११ विजय सहित १२ क्षीरसागर में १३ अनेक प्रकार की संजीवन औषधियाँ हैं ॥ ४५ ॥ १४ खबर लगाकर १५ मेघ की गर्जना होकर १६ अत्यन्त पवन चलकर १७ अत्यन्त १८ चिल्ला चमकने लगी ॥ ४६ ॥ वहाँके रहनेवाले सर्प १९ जे वें भागकर समुद्र में विपणय ॥ ४७ ॥ २० गरुड आया २१ गरुड को देखते ही रामचन्द्र और लक्ष्मण को धाँयेहुए २२ पंखा में वे भागकर छिपगये ॥ ४८ ॥ भाई के सहित रामचन्द्र २३ पायों के बंधन से छुट गये उस समय प्रवीण २४ गरुड पहुँचा और दोनों भाइयों के मुख की भूलि अपने हाथ से २५ मिटाकर स्पर्श किया ॥ ४९ ॥ २६ पाव रहित होगय

स्मृति१ बुद्धिश्चोर्ज३ उच्छाह४ सत्य, सब द्वि२ गुनैव दायेपमुत्ससत्य५०  
 गरुडहु उठाय दोउन गभीर, बन्धन मिल्यो तु हिय लाय बीर ॥  
 श्रीराम कह्यो तुनरे मसाई, मिटिगो दुहुन पोडा पसाद ॥ ५१ ॥  
 दसरथ पिता रु अज ताततात, त्यौं लाखि तुम्हैहु मम हिय सिरार्त ॥  
 वपु दिव्यरूप तुम कौन बीर, धरि बिरजबल आये सधीर ॥ ५२ ॥  
 बुल्लयो यह सुनतहि दुहुन त्रिभै, मन्नहु तुम मोकहैं परम मित ॥  
 जानलै तुम अहिसरं बड जानि, मै बनतेयै यह खेद मानि ॥ ५३ ॥  
 सुहृदने सहाय हित हे सुसंधै, आयो इहाँ रु तुम किय अबंध ॥  
 यह बंध छुरावनकाज और, सुर१ असुर२ नाग३ कोउ न सजोर ५४  
 अब सावधान लारिये उचारि, गो मिलि खगेस खल गर्व गारि ॥  
 दुव२ भूतउठे छतहीन देह, आनंदित कपिबल हुव अछेह ॥ ५५ ॥  
 मिलि बजिगै संख भेरी मृदंग, अखिलेसै सेन निज दिय उमंग ॥  
 विटपिन उपारि कपि१ रिच्छवीर, धाये पुनि गज्जत लरन धीरा ५६

देहा

राम प्रदक्खिन करि गरुड, गो अवहित करि गेह ॥

भूप सुनहु वसुदेव ६८ भो, अहैं पहिले शरन एह ॥ ५७ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयः शराशौ बी

तिहोत्रचण्डासिबंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ विवाहवेलाव-

१ पराक्रम, आगे थे जिससे २ दुगुने बढ़ाकर रामचन्द्र को ३ समर्थ किया ॥ ५० ॥  
 म्हाारी कृपा से पीड़ा के कारण बेहोशी थी सां मिट गई ॥ ५१ ॥ पिता दशरथ और ५  
 पिता के पिता (दादा) अज के समान तुमको देखने से हृदय ठंडा होता है ॥ ५२ ॥  
 हित (निर्मल) ॥ ५३ ॥ ८ पक्षियों की रक्षा करनेवाला (गरुड) दोनों से बोला ॥ ५४ ॥  
 को १० नागपाश में बंधे हुए जानकर ११ मुझ गरुड ने यह दुःख मानकर ॥ ५५ ॥  
 १२ मित्रों की सहाय करने को १३ हे सत्य प्रतिज्ञावाले ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ १४  
 बजे १५ सबके स्वामी (रामचन्द्र) ने अपनी सेना को १६ गृहों को ॥ ५६ ॥  
 १७ सावधान करके, अयोध्या के राजा का पुरोहित वसुदेव ब्रह्मर्षि का पं-  
 होता है कि इसप्रकार १८ प्रथम दिन का युद्ध हुआ ॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवर्षा अष्टमा-  
 ण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश के

ज्ञानविषयबुद्धनवंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्र  
विकुक्षि ७ कुलकलशश्रीमैथिलीमहिलचरित्रेप्रथम १ दिनरणाारम्भ  
प्रत्येकनिघुद्धरचनपुण्यजनपराभवनशक्राजिन्नागशरसानुजरघुराज  
बंधनवैदेहीविलपनगरुत्तमदागमननागशरविद्रवणानिःशल्पराघवर  
पुनःसज्जीभवनं पञ्चाशत्तमो ५० मयूखः ॥ ५० ॥

आदितो द्वाववतितमः ॥ ९२ ॥

( प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( सचरणागद्यम् )

कपिनके कटकमें मंगल महानाद भयो सुनि दसग्रीवनें दूत  
भेजि निर्वंध सज्जीभूत सानुज रघुराजकी खबरि मँगाय आपनैं  
अनीकको ईस करि जातुधान धूम्राक्ष लखिकौ पठायो ॥

परस्पर कपि १ रक्खस २ तरु १ त्रिसूल २, मुष्टि १ मुद्गर २,  
प्रतल १ पट्टिस २, गंडसैल १ गदा २, दंत १ दंड २, महीधर १  
मुसल २, सिला १ शक्ति २, पत्थर १ परिध २ प्रहारि महांतुमुल मचायो ॥

तहाँ धूम्राक्षनैं अनेक प्रकारके आघात दैकैं प्लवंगनैंकी पृतनैं

बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि कुल के क-  
लश श्रीजानकी है स्त्री जिनकी ( जानकी के पति ) के चरित्र में प्रथम दि-  
न के रण के आरंभ में प्रत्येक के बाहुयुद्धरचने में राजसों का हारना, इन्द्र-  
जित् का छोटे भाई सहित रामचन्द्र को नागपाश में बांधना, सीता का  
विलाप करना, गरुड़ का आना, नागपाश का भागना और रामचन्द्र ल-  
क्ष्मण का शल्प रहित होकर फिर सज्जीभूत होने का पचासवां मयूख सं-  
माप्त हुआ ॥ ९० ॥ और आदि से बानवे मयूख हुए ॥ ९२ ॥

१ बंदरों की सेना में सेनापति करके ३ राजस ४ राजस को भेजा जहाँ पर-  
स्पर बंदर तो वृक्षों से और राजस त्रिशूल से इसी प्रकार इधर मुष्टि और  
उधर मुद्गर, इधर से ५ लात और उधर ६ कटारी ७ पर्वत से गिरिहूए मोटे  
पत्थर और गदा, दन्त और दंड ८, पर्वत और मुसल, शिला और शक्ति, सा-  
मान्य पत्थर और ९ लोहंगी (लोहा जड़ हुआ लड़) चलाकर १० बड़ा भयंकर  
मचाया. यहाँ प्रथम गिनायेहुए शस्त्र बंदरों के और पीछे गिनायेहुए राज-  
सों के यथाक्रम से जानलेना चाहिये. १ प्रहार देकर २ बंदरों की ३ सेना को

\*कांदिशीक कीनी ॥

ताकों देखतही बजांगनै एक बड़ी सिलाकों उठाय धूम्राक्षके  
ऊपर चलाय दीनी ॥ १ ॥

आवते उपलैकी दुस्सहता देखि धूम्राक्ष अपनै स्यंदनतै कूदिगयो॥  
अरु सिंहमुख बाहक बालेयन सहित सचक्र १ कूबर २ ध्व-  
ज ३ सरासन ४ रक्खसराजको रथ चूर्ण भयो ॥

तदनंतर बजांगनै हजारन जातुधान अपनै कोप दीपकके  
पतंग करे ॥

अरु धूम्राक्षहू सखनके संगं करिकेही प्लवंगनके प्रान हरे ॥२॥  
तहाँ हनुमान सिलोच्चयको शृंग लै निसाचरपै चलायो ताके  
मस्तकमै धूम्राक्षनै समुख जाय गदा पटकी॥  
सो प्रहार सिराहिकै कौणपके कपालमै साँमोरिनै सिखर  
की दई ॥

तासौं गतासुं हो लंकेसके महाभट धूम्राक्षकी मूर्ति लटकी ॥  
असैं चैत कृष्ण द्वितीयाके दिन जुद्धके अंतमै मारुतिनै धु-  
म्राक्ष मारयो ॥

तदनंतर तीजै दिन ३ तृतीया ३ के रनके आरंभमै रावननै  
आसुर बज्रदंष्ट प्रचारयो ॥३॥

सो बज्रदंष्ट दक्खिनके द्वार होय अंगदके अनीकके सम्मुह कढ्यो॥  
तहाँ बिना मेघही गगनमै बिजुरीनको ब्रांत १ ज्वाला बमत  
फेरवीनको फेत्कार २ बढ्यो॥

\*भय से भागनेवाली करी ( “ कां दिशीको भयदुतः ” इत्यमरः )

१ हनुमान् ने ॥ १ ॥ २ पत्थर ३ रथ से ४ रथ के जुते हुए गधों सहित ५ प-  
हिये ६ जुआ ( जुड़ा ) ७ धनुष ८ जिसपीछे ९ हजारों राजसों को अपने  
क्रोध रूपी दीपक में जलाये १० समूह से ११ बंदरों के ॥ २ ॥ १२ पर्वत का  
शिखर लेकर १३ राजस के मस्तक में १४ पवनपुत्र ( हनुमान् ) ने १५ बिना  
प्राण हुआ १६ हनुमान् ने ॥ १३ ॥ १७ सेना के सामने निकला १८ समूह १९  
ज्वाला उगलती हुई २० स्यालनि ( व्याघस्यालि ) यों का २१ फेत्कार ( स्यालनी

अैसे अपसकुनको अनादर करि वज्रदंष्ट्रनै \* बहुल वानर अंगद २ नै अनेक \* \* अस्रप मारिलये ॥

अरु वज्रदंष्ट्रनै अंगदके एक सहस्र १००० वान दये ॥ ४ ॥

अंगदनै एक वृक्ष चलायो ताहूको वाननसौं काटि आसिरनै आहवमै उत्कतभाव धर्यो ॥

तत्र तारेयनै एक १ बडो पर्वत पटक्यो ताको निहारि दुष्ट उहाँसौं कूदि बच्यो तथापि वा सैलनै सचक्र १ कूबर २ तुरंग ३ सूत ४ स्थंदन १ चूर्णा कर्यो ॥

तदनंतर और गिरिशंग उठाय बालिपुत्रनै मनुजादके मस्तक मै डार्यो ॥

तासौं गतसत्त्व रुधिरोग्दगारी होय वज्रदंष्ट्रनै महामोह धार्यो ॥ पा॥

मुहूर्त एक १ के अंतर चेतना पाय क्रव्यादनै अंगदके भुजां तरमै गदा मारी ॥

तथापि तारेयन डिंग्यो अरु दोउन २ मल्लजुद्ध करि मुष्टिकी मार प्रसारी ॥

पीछै खड्ग १ चर्म २ लैकै दोउन २ महाविचित्र मार्गनके पलटा करि अपनौ पटैतपनौ दिखायो ॥

अरु दोउन २ नै ही मंडलाग्रनके प्रहारनसौं अछक छाकि अचेत होय जानुनसौं जैकि जकि पृथ्वीतल पायो ॥ ६ ॥

निमेष एक १ के अनंतर अंगदनै मूर्छा तजि सिलासित खड्गसौं वज्रदंष्ट्रको मस्तक काटिलयो ॥

की बोली का अनुकरण है ) वडा \* बहुत \* \* राजस ॥ ४ ॥ १ राजस ने २ तीव्रभाव को धारण किया २ तारा के पुत्र ( अंगद ) ने ४ मनुष्यों के खानेवाले ( राजस ) मस्तक पर ५ पराक्रम रहित ६ रुधिर उगलनेवाला होकर ७ बड़ी मूर्छा पाई ॥ ५ ॥ ८ दो बड़ी पीछे ९ राजस ने १० हृदय में ११ तोभी अंगद नहीं डिंगा १२ ढाल १३ खड्गों के १४ बुद्धों के बल १५ गिर गिरके १६ भूमि पर गिरा ॥ ६ ॥ १७ वंशभर के १८ पीछे १९ शिला पर तीखे क्रियेहुए खड्ग से



ऐसी रीतिः मधु मेचक तृतीयाके ३ दिन कपि १ कौणप २  
नकै तीजो ३ जुद्ध भयो ॥

चतुर्थी ४ के दिन लंकेसनें क्रव्याद अकंपनकों बलमें बलिष्ठ  
करि संग्रामका प्रेस्यो ॥

अरु कपिः कौणपश्नकै जुद्ध होत रजके बितानेनै आच्छादित  
होत सर्वत्र अंधकारको छबीनै फेरयो ॥ ७ ॥

जातिमिरसों परंतत्र होय अपनै परायेको बिबेक न धारत भये ॥

अरु दुहुँ अरुके वीर कीसः कौणपश्नकों मिश्रितही मारत भये ॥

तहाँ मैद १ नल २ कुमुद ३ इन तीन ३ नकै गान करतहू अकंपननै  
बलिमुख बरूथिनीकों विकीर्ण करी ॥

सो व्यवस्था देखि बैजांगनै आय सजातीयनके सहायको धि-  
षणा करी ॥ ८ ॥

आंजनेय एक १ अद्रिकूटकों उठाय अकंपनपै प्रहारयो ॥

ताकों आवतही निसाचरनै अर्धचंद्र वाननसों टूकटूक करि डारयो ॥

तदनंतर रुद्रावतारनै एक १ अश्वकर्ण तरुकों उपारि हजार जा-  
तुंधान बिपोथित करे ॥

अरु इतकों अकंपननै सखनके संपातकरि सहस्रन साखामृग  
गनके स्वास हरे ॥ ९ ॥

\*चैत्र यदि तीज के दिन बंदर और राक्षसों के तीजा युद्ध हुआ ? राक्षसों के २ धूलि के विशेष फैलाव अथवा डरे ने सबको ढककर अन्धकार रूपी ३ छबीना ( रात्रि के समर सेना की रक्षा करने के अर्थ चारों ओर सवारों का घेरा लगाया जाता है उसको छबीना कहते हैं ) ॥ ७ ॥ ४ उस अन्धकार से पराधीन होकर ५ बंदरों और राक्षसों को विसामिल ( मिले हुए ) ही मारते रहे ७ ये तीनों रक्षा करते थे तो भी ८ बंदरों की ९ सेना को १० बिखेर दी ११ हनुमान ने १२ अपने जातिवालों की सहाय के लिये १३ बुद्धि करी ॥ ८ ॥ १४ हनुमान ने १५ पर्वत के शिखर को १६ जिसपीछे १७ महादेव के अवतार ( हनुमान् ) ने १८ सालवृत्त को उपाड़कर १९ हजार राक्षसों को २० चोट से नीचे गिरादिये २१ शस्त्रों के प्रहार

तहाँ मारुतिनैं बहोरि एक दीर्घतरुकाँ उपारि मस्तकपै प्रहारि  
अकंपनको प्रान लयो ॥

सेस कव्याद नगरमें भजि गये असैं उभयैरअनीकनकै चतु-  
र्थी४के दिन चोथो४संग्राम समाप्त भयो ॥

पंचमी५के दिन पहिलैं तो लंकेसनैं अपनैं पुरके प्राकार अद्व-  
नके सूरवीरनके गुल्मैं सम्हारे ॥

पीछैं सैमरमें सचिव प्रहस्तकाँ सज्ज होयबेको सासन दयो तहाँ  
प्रहस्तनैंहू सीताहरणके पूर्वमंलमें निषेध कहे हे ते रत्नोराजकी  
स्मृतिमें डारे ॥ १० ॥

तदनंतर अपनैं सचिव जे कुंभहनु१समुन्नत२नरांतक३महाना-  
द४तिन सहित सज्ज सेना लैकै प्रहस्त रक्षोराजकी प्रधान जंग-  
की उमंगमें नगरसाँ निकसतभयो ॥

तहाँ पलादसत्त्व याके रथकाँ अपसव्य मंडलमें लेतभये१,  
सिवांगनके मुखसाँ ज्वाला सहित सब्द कहे२,अंतरीक्षसाँ उल्का  
गिरी३,मेघहू रथपै रुधिर वरस्यो४, गिद्धन केतनके अग्रूपै निवास  
कीनाँ५रु याके बाँजी ठाकर खाय परे६ सारथीके करतैं प्रतोद  
गिरगयो७ ॥

इत्यादि अपसौननको अनादर करि प्रहस्तनैं रघुराजके सेना-  
धीस नीलकी अनीसाँ अनी मिलाई ॥

अरु नीलनैं निमीलितैनेत्र होय नीठि नीठि सही औसी

१ बाकी के राजस २ दोनों सेना के ३ शहर काट के  
ऊपर के ४ रत्नार्थ ( रिजर्व ) सेना को सम्हाल कर ५ पुरु  
में अपने मंत्री प्रहस्त को सीता को हरने से पहिले ६ सलाह हुई थी उसमें  
रावण को मना किया था कि दग्ग करना अच्छा नहीं है वह ७ रावण को  
याद दिलाया ॥ १० ॥ ८ मांस खानेवाले ( गिद्ध आदि ) जीवोंने दाहिने च-  
क्र में लिया ९ स्यालनी के मुख से १० आकाश से ११ अंगारे गिर १२ ध्वजा  
के अग्रभाग पर १३ घोड़े १४ चावक १५ अपशकुनों को लोपकर रामच-  
न्द्र के सेनापति नील की सेना के अग्रभाग से अपनी सेना का अग्रभाग  
मिलाया १६ नेत्र बन्ध करके

बिसिखनकी वृष्टि चलाई ॥ ११ ॥

कितेक काल असैं सहि नीलनैँ एक?सालवृक्षकोँ उपरि प्र-  
हस्तके बाजी मारि धनुषहू तोरि डार्यो ॥

तहाँ लंकेसके प्रधाननैँ मुसल गहि नीलके ललाटमैँ प्रहार्यो॥  
तहाँ नीलनैँ प्रहस्तके उरमैँ एक?पाइपको प्रहार करि अनंत-  
रही एक?महासिला मस्तक पर मारी ॥

तासौँ प्रहस्तनैँ प्रान छोरि पंचमेषयुद्धमैँ पंचमौषके दिन सूरस-  
ज्जा सोय वीरनिद्रा धारी ॥ १२ ॥

प्रहस्त को निपात सुनतही कोपाक्रांत होय छद्दि ६ के दिन  
स्वयं लंकेसही लखिबेकोँ चलायो ॥  
तहाँ आगैँसों अपूर्ब अनीकको संघट्ट देखि रघुवरकैहू अद्भुत  
उत्साह आयो॥

अनेक सूरवीर क्रव्यादनकोँ उद्धत देखि बिभीखनसौँ पूछत भये॥  
अरु यानैँ प्रत्येक पहिचानि पहिचानि प्रश्न आदेशके उचित  
उत्तर दये ॥ १३ ॥

जो यह अपनैँ भारसौँ बाहन मौतंगको मस्तक नमावत अम-  
र्षमैँ उफनावत आवैँ सु तो दूसरो २ अकंपन १ जानौँ ॥

अरु यह सिंहध्वजरथारूढ धनुषकोँ धुनावतरत्नोराजको पट्टप  
पुत्र मेघनाद २ मानौँ ॥ १४ ॥

इतकोँ यह रथारूढ कोदंडकोँटंकारत अतिरथवीर अतिकाय ३ आयो  
अरु इतकोँ घनघंटानादितैँ गजारूढ गर्जना करत बालीक

१ बाणों की वृष्टि?वृक्ष का प्रहार करके?उसके पीछे ही?प्रहस्त का पड़ना सुन  
कर?कोप में व्याप्त होकर?सेना का?समूह?राजसोंको?धीठ देख कर?० एक  
एक को?१ पूछने की आज्ञा के उचित ?२ हाथी का अस्तक नमाता हुआ?२  
क्रोध में उफनता हुआ ?४ सिंह के चिन्हवाली ध्वजा के रथ में चढ़ा हुआ  
१?राजसों के राजा ( रावण ) का पाटवी पुत्र ॥१४॥१६ धनुष को टंकारता  
है सो ?७ मेघ के समान घण्टा का नाद करता हुआ हाथी पर सवार ?८ प्र-  
भात के सूर्य.

प्रतिमे नेत्रनसों कपिनकों डरावैं सु महोदर ४ चलायो ॥

इतकों भर्मभांडभूषित संध्याकालके मेघ सहित महीधरके  
समान अश्वपै आरूढ मरीचिमाली प्रासकों उबाय आवैं सो वज्र  
बेग पिसाच जानिये ॥

अरु यह बडे ससिप्रभ बलीबंदपै आरूढ बीजुरी निभ तिसूल  
कों भ्रमावैं ताकों द्वितीय २ तिसिरा ६ प्रमानिये ॥ १५ ॥

इतकों यह पन्नर्गध्वज स्पंदन समारूढ बडे आयंत बच्छत्य-  
ल करि विराजमान कुंभ ७ नाम क्रव्याद चापके बिस्फारसों वा  
हिनीकों बहिरा करैं ॥

अरु या तरफ हेमहीरमंडित परिधकों पकरि आयो सो घोरक-  
र्मा निसाचर निकुंभ ८ नाम धरैं ॥

अरु इत देखिये चाप १ खड्ग २ बाण ३ विराजमान बडी पताकाके  
रथमें चढयो नर्गशृंग जुद्ध निपुन नरांतक ९ अपनी छतनाके प्राण  
पियैं जात ॥

इतकों व्याघ्र १ कैंरभ २ गज ३ सिंह ४ मुख भूतगन उपेत  
देवदर्पदमन देवांतक १० दिखात ॥ १६ ॥

सवनके बीच यह सारदी रौंकाके ससधैरसमान सितछत्र सो-  
हैं ताके तरैं महाकिरीट १ कुंडल २ विराजमान लोकपालनके  
दर्पको दौरक लंकेश्वर ११ आपही चलाय आयो ॥

असैं विभीषननै प्रत्येक प्रश्नको उत्तर जगदीसकों सुनायो ॥

१ सदृश नेत्रों से २ सेना के कलशों से शोभित ३ पर्वत के  
समान ४ नूर्य समान भाले को ५ चंद्रमा की कान्ति के समान ६  
वैलपर चढाहुआ ७ विजुली सदृश ॥ १५ ॥ ८ सर्प के चिन्हवाली ध्वजा के  
९ रथ पर चढाहुआ १० चौड़े ११ हृदय करके शोभायमान १२ राक्षस के १३ शब्द  
("विस्फारो धनुषस्वानौ" इत्यमरः) १४ सेना को १५ सोने में हीरों से जडीहुई  
१६ पर्वत के शिखर समान १७ सेना के १८ ऊंट १९ आदि २० सहित २१ दे-  
वताओं के घमंड को मिटानेवाला ॥ १६ ॥ २२ शरद पूर्णिमा के २३ चन्द्रमा  
समान २४ छत्र के नीचे २५ विदारण करनेवाला.

तदनंतर दसग्रीवनै सबही निसाचर संग आये देखि पुरीकों सू-  
नी जानि कितनेक लंकाकी रक्षाकों पीछे पठाये ॥

अरु आपनै रंगमें रूपि राघवके चक्रपै कराल कलंब चलाये ॥ १७ ॥

तहाँ सुग्रीवनै महामहीधर उपारि रत्नोराजपै फँकयो ॥

ताकों कंकपत्रनसों काटि अस्त्रपत्रधीसहू साखामृगेसपै बि-  
सेस चैक्यो ॥

कोपके साथही महापन्नग प्रतिभै फुल्लिलंग फुल्लयमान पावैक  
प्रकास तीर आँकणै अँचिकै दसग्रीवनै सुग्रीवके दयो ॥

तासों कपिराज क्रंदन करत पृथ्वीतलपै परि अचेत भयो ॥ १८ ॥

तब गय १ गवाक्ष २ ऋषभ ३ सुदंष्ट्र ४ ज्योतिर्मुख ५ नल ६ इत्यादिक  
कपिन पर्वत उठाय उठाय चलाये ॥

तेहू समस्त दसग्रीवनै चित्रपुंखनसों चूर्ण करि सबनके करा  
ल कलंब लगाये ॥

रावनके बाननसँ विहाल होय भीरु ज्यों भजिके सँकप साँखामृ-  
ग रामचंद्रके सरन गये ॥

तिनकों देखतही महाधानुष्के रघुराजहू चापकों टंकारि लंके-  
सपै चलावत भये ॥ १९ ॥

तिनकों अटकि अनुसासनै लैकै सौमित्रि अग्रेसर होय आये ॥

अरु उततैहु दसग्रीवनै इनपै अनंत चित्रपुंख चलाये ॥

तिन तीरनकों भेदि मौरुतिनै दसमुखके रथ ढिग जाय दक्खिन

१ जिस पीछे राघव युद्ध भूमिमें रूपकर २ रामचन्द्र की सेना पर भयंकर ४ बाण  
चलाये ॥ १७ ५ बड़ा पर्वत ६ रावण पर ७ काक के पंख लगे हुए बाणों से ८ राक्ष-  
सराज ९ बानरों के राजा पर बहुत १० क्रोध किया ११ बड़े सर्प सदृश १२  
अग्निकण उड़ते हुए १३ अग्नि के प्रकाश समान बाण १४ कान तक खींचकर  
१५ कूक ( रुदन ) करता हुआ ॥ १८ ॥ १६ चित्र विचित्र पाँखोंवाले बाणों से  
१७ भयंकर बाण लगाये १८ कायर के समान भागकर १९ धूजते हुए २० बानर  
२१ धनुर्विद्या के जाननेवाले रामचन्द्र भी ॥ १९ ॥ इनको रोककर २२ राम-  
चन्द्र की आज्ञा लेकर २३ लक्ष्मण आगे बढ़ आये २४ हनुमान ने

बाहु उठाय कह्यो ॥

तैं दुष्ट देव१दानव२गंधर्व३नाग४यक्ष५किन्नर६सिद्ध७चारण८  
विद्याधर९डराये पै आज बानरकेबस परि मेरे भुजादंडतैं मिंचुलह्यो॥

सो सुनि दसग्रीव कहि तू निस्संक प्रहार करि कीर्ति लैचुकि  
तदनंतरै तोहि मारौ ॥

तासौं आंजनेय कही तेरे तनूज अक्षके समान तेरोहू जीवित  
भार उतारौ ॥

यहै सुनतही दसग्रीवनै मारुतिके उरमें प्रतलको प्रहार कीनौ॥  
तासौं मुहूर्त मात्र स्थिर होय बँजांगनैहू आसिरके उरमें प्रत-

लको ही आघात दीनौ ॥२१॥

तासौं घुम्मिकैं बहोरि दूढ़ होय लंकेसनै मारुतिसौं कह्यो॥

वाहरे! बानर तेरे विक्रमकाँ तैं अच्छो आघात डारयो ॥

मारुति कही धिक्कार मेरे पराक्रमकाँ जासौं तैं दुष्ट सीध ही  
गाढ सम्हारयो ॥

यह सुनतही कोपाक्रांत होय दसमुखनै आंजनेयके उरमें द-  
क्खिन करकी मुष्टि मारी ॥

तासौं वज्रांगकाँ बिब्हल देखि रत्नोराजनै अगैं चलाय प्रमु-  
के पतनापति नीलसौं लरिवेकी उमंग धारी ॥२२॥

नीलनै पर्वत चलायो ताकाँ सप्त७वानन करि काटि दयो ॥

तापीछै अश्वकर्ण१साल२धव३आम्ब्र ४ इत्यादिक प्रचंड पाँद-  
प चलाये तिनके समूहकाँ चूर्ण करत भयो ॥

तव नीलहु अल्पकाय करि रावनके ध्वजाग्रपै उडिपरयो ॥

?मृत्यु ॥ २० ॥ २ जिसपीछे ३ हनुमान् ने रावण से कहा ४ पुत्र ५ लात मा-  
री ६ दो घड़ी तक खड़ा रहकर ७ हनुमान् ने भी ८ राक्षस के ॥ २१ ॥ ९  
हनुमान् से कहा १० अच्छा प्रहार किया ११ क्रोध में व्याप्त होके १२ हनुमान्  
के उर में १३ रामचन्द्र के सेनापति नील से ॥ २२ ॥ वृक्षविशेष १४ भयंकर  
वृक्ष १५ छोटा शरीर करके १६ ध्वजा के अग्रभाग पर

तहाँ क्षुभित होय दसमुखनै आग्नेय अस्त्रको संधान करि नीलकै प्रज्वलित पृसत्कको प्रहार करयो ॥२३॥

तासों अचेत होय नील पृथ्वीतलमैं जानुनै करि जक्यो परंतु अग्निको अवतार हो पातैं आग्नेयसों असु न गये ॥

याकों अचेत देखि लंकेस सौमित्रिपैं चलायो ताकै सेसावतारनै हु प्रचंड प्रदर दये ॥

लंकेसनै सप्त७सायंक चलाये तेहु लखननै क्रीडा करिकाटिडारे ॥

औरहु अपनै अनेक बाननकों व्यर्थ गये देखि लंकेसनै हूल-  
खनके अनेक बिसिख बिदारे ॥ २४ ॥

तदनंतर दसग्रीवनै ब्रह्माके दये बानकों चलाय लखनके ल-  
लाट देसमैं प्रहारयो ॥

तासों बिकल होय कछुक कालमैं चेतना पाय सेसावतारनै  
क्रव्यादराजको कोदंडैं काटि डारयो ॥

तदनंतरही सौमित्रिनै आसिरराजके उरमैं तीन३तीरलगायमूर्छादई

ताहूसों दुष्टनै बिह्वल होय कछुकालमैं चेतना लई ॥ २५ ॥

प्रबोधके पावतही स्वयंभूकी दई सक्तिकों उठाय लंकेसनै ल-  
खन विलखनमैं लखनपैं डारी ॥

ताहि भेदिवेकों सौमित्रिनै बहुत वान दये तथापि भुजांतरकों  
भेदि विजुरीसी पार पधारी ॥

तासों अचेत होय पृथ्वीपैं परतही लंकेसनै आय सौमित्रिकों  
दोहू२करनसों पकरि लैजायवेकों उठाये ॥

१ जलतेहुए बाण का प्रहार किया ॥२३॥ २ छुटनों के बल ३ गिर गया ४ अग्नि अस्त्र से प्राण नहीं गये ५ लक्ष्मण पर चला ६ भयंकर तीर लगाये ७ तीर (बाण) चलाये ८ बाण काटे ॥२४॥ जिसपीछे ९ रावण ने १० लक्ष्मण ने ११ रावण का १२ वरुण १३ जिसपीछे ही १४ लक्ष्मण ने १५ रावण के उर में ॥२५॥ १६ चेत होते ही १७ ब्रह्मा की दी हुई १८ लखनों के १९ देखतेहुए २० लक्ष्मण पर डाली जिसको काटने के लिये लक्ष्मण ने २१ हृदय ( छाती ) को फोड़ कर विजुली के समान पार निकल गई २२ लक्ष्मण को २३ दोनों हाथों से

परंतु जासों कैलास उख्यो ताहूसों न उठे तब दुष्टनैं बाहुनसों पीडन करि सेसके कलेवरकै अनेक उपमर्द लगाये ॥ २६ ॥

सो देखि बँज्गनैं आय आसिरराजके उरमैं बज्जूको उपमान मुष्टिपात दयो ॥

तासों अचेत होय जानुनसों जँकि दुष्ट मुख१नेत्र२नासा३श्रव-  
न४नसों लोहित बर्मन करत भयो ॥

ताकों छोरि हनुमान अचेत लखनकाँ उठाय रामचंद्रकै स-  
मीप आनैं ॥

अरु रावनकी सक्तिहू सौमित्रिकाँ तजि पीछी दुष्टके रथमैं  
जायरही इतक अंतर रखसरजनैं हू कछु धीर होय कोदंडपै नि-  
सितै बान तानैं ॥ २७ ॥

कपिनको कटक भज्यो देखि श्रीरामचंद्र लंकैसपै चलाये ॥  
तिनसों मारुति कही मोपै समारूढ होय लसिये यह सुनिसो-  
ही करि रघुराजनैं रावनके समुख जाय बानीप्रतोद लगाये ॥

रे दुष्ट सौमित्रिकी यह दसा करि इंद१जम२हुँहिन३संकर४अर्क  
५अग्नि६के सरन गयैहू मोसों बचैगो नही ॥

सो सुनि दुष्टनैं मारुतिके बान दये तिनकाँ देखि रघुराजनैं कृ-  
तांतैकी कांति गही ॥ २८ ॥

तीखे बान दैकै चँक्र१अश्व२केतु३छत्र४असंनि५खड्ग६सूल७दध-  
८सारथि९सहित लंकैसको रथ काटिडाख्यो ॥

अरु एक१आसुंग उल्काको उपमान भूतसंभक्तके भुजांतंगमैं मारयो

१ लक्ष्मण के शरीर पर २ रहे ( रगड़े ) लगाये ॥ २६ ॥ ३ हनुमान ने वज्र को जिसकी उपमा लगे ऐसी मुक्ती लगाई ५ घुटनों के बल ६ गिर कर ७ रुधिर = उगलने लगा ८ अचेत हुए लक्ष्मण को उठाकर १० लक्ष्मण को छोड़ कर ११ तीखे बाण खींचे ॥ २७ ॥ १२ हनुमान ने कहा कि मुझ पर सवार होकर लड़िये १३ वचन के चाबक लगाये कि अरे दुष्ट लक्ष्मण की यह दशा करके १४ ब्रह्मा १५ सूर्य १६ यमराज की क्रान्ति धारण की ॥ २८ ॥ १७ रथ के पहिये १८ ध्वजा १९ वज्र अथवा अंगारे वर्षाने का अस्त्र २० बाण २१ अग्नि के अंगार को जिसकी उपमा लगे ऐसा २२ महादेव के भक्त ( रावण ) के २३ हृदयमें



तासों मूर्छित होय करसों सख गिराय दसग्रीव घुम्मिकैं भु-  
म्मिपैं परचो ॥

तव\*अखिलेसनैं एक१ अर्द्धचंद्र चलाय कंटकको किरीटहूटूक  
टूक करयो ॥

तदनंतर विह्वल बलहीन जानि तासों रघुनाथ कह्यो रे दुष्ट  
पुरीमें जाय श्रमकों बिहाय धीरवीर होय आवहु ज्यों मेरे बानकों  
करुणा अटकिं सकैं नही ॥

सो सुनि दुष्टनैं हु सिटाय पुरीमें प्रवेस करि विश्वेसकैं विक्र  
मकों महादुस्सह मानि पहिलैं अनरगण्यश्वेदवती २ उमा३नंदीग  
न४नलकूबर५वरुनसुता पुंजिकस्थला६के साप भये सुमिरि क-  
व्यादनसों कुंभकर्णके जगावनकी कही ॥

जादिन बिभीखन सत्रुके सरन गयो तासों दूजे३दिन मंत्रके  
अनंतर कुंभकर्णनैं अपनैं गृह जाय निद्रा धारी ॥

अरु बिभीखन सरन गयो जादिन सहित त्रि३ दिन रघुवरनैं  
दर्भासन बैठि समुद्रसों सामं करिवेकी निहारी ॥३०॥

चोथे ४ दिनसोंही सिंधुकों सांसित करि पंच५दिन पर्यंत सेतु  
बंधि पंचम५दिनके अंतही सिंधुकों लंघि पैले तीर मिलान दये ॥

तादिनसों पूर्व कुंभकर्णकों सोवत दिन अष्ट८गये ॥

नवम९दिन एकाकी१राति रघुवरनैं सुबेलपैं चढि लंकाके म-  
र्म निहारे ॥

दसम १० दिन सुबेलसों उतरि लंकापैं कराल कीसनके

\*सबकं स्वामी (रामचन्द्र) ने १ अम को मिटाकर २ मेरे बाणों की दया नहीं रोकन  
कै अर्थात् इस समय बाण चलते दया आती है ३ संसार के स्वामी (रामचन्द्र) के  
पराक्रम को, ऊपर जिनके नाम कहें उन्होंने आप दिये थे जिनको ४ दया करके ५  
राजसों से कहा कि कुंभकर्ण को जगाओ विसलाह होने के पीछे ही ७ दाम के  
आसन पर बैठकर ८ सन्धि (मिलाप) ॥३०॥ ९ आज्ञा अर्पित करके १० म-  
मुद्र को लांघ कर ११ सुकाम दिया १२ पहिले १३ एकरात्रि १४ सुबेल ना-  
मकं पर्वत पर १५ मर्मस्थल (जीव की जगह) १६ बानरों के

आघात डारे ॥३१॥

सो जुब होतहू पूर्व कहे क्रमसों छ६दिन गये ॥

असैं चतुर्दस १४दिनसों सुप्त अनुजकों जगावनकों सप्तमी७के दिन निदेस दये ॥

सो सुनतही हजारन क्रव्याद मद्य१मांस२मय महोपहार लैकैं एक१एक१जोजन लंबायतं कुंभकर्णकी गुंथाके द्वार गये ॥

अरु ताके स्वासबेगसों विधूत होय बहुत बेरमैं नीठि नीठि प्र बिष्ट होत भये ॥३२॥

मद्यके कलस मृग१महिष२बराह३नके समूह आगैं धरि धूप धूपित१चंदनलिप्त२करि एकसंगहि सिंहनाद करि संख१भेरी२ पटह३नकों बजाये तथापि निद्रा न गई ॥

पीछैं सैलशृंग१मुसल२मुसुंडी३गदा४मुद्गर५वृक्ष६मुष्टि७प्रतल८ प्रहारे तथापि बिसेसही बढत भई ॥

दसहजार१००००क्रव्यादन इकसंगही हजारनभेरिनपैं आघातडारे ॥

असैं साँप परबस सुप्तकों उठावनमें अनेक उपाय करि हारे ॥

तबही एकहजार१०००हत्थिनकी घटा याके अंगपैं चढाय कितेकतो याके केस उपारिबे लगे ॥

अरु कितेक याके काननमैं केही जलकलस डारि दंतनसों दुष्टके मर्मदेस दारिबे लगे ॥

तब गजनके स्पर्श करि कुंभकर्णनैं नेत्र खोलि आने उपहार असैन करि जगायबेको हेतु पूछयो तब अग्रैजके अमात्य यूपक्ष

१ सोतेहुए छोटे भाई को २ आज्ञा दी ३ बड़ी सामग्री ४ लंबा और चौड़ा ५ गुंथा ६ कंपित होकर ७ घुसे ॥ ३२ ॥ ८ मैसे ९ खुर १० धूप देकर ११ चंदन का लेप करके १२ नौबत १३ डोल बजाये १४ तोभी १५ पर्वत के शिखर १६ अस्त्रविशेष १७ लात (चरणाघात) १८ राक्षसों ने १९ आप से परबरा होकर सोतेहुए को ॥ ३३ ॥ २० विदारण करने लगे २१ लाई हुई सामग्री को २२ भोजन करके जगाने का २३ कारण पूछा २४ बड़े भाई (रावण) के २५ सेत्री

नैं यथातथ कह्यो ॥

अरु रावनको थक्यो जानि रामनैं छोड्यो सुनतही लखिवेको  
चलायो तहाँ महादरके कहेसों जुद्धको जैयो तजि द्वेसहस्र २००० मद्य  
घटपान करि अनेक सत्वनको आहरि अग्रजको जायदरसन लह्यो  
वा समय चलते कुंभकर्णको सब सहरसों ऊपर देखि वानर  
व्यथित होय होय रघुनाथके सरन गये ॥

अरु आपँहू पर्वतके प्रमान विश्रवाके मध्यमपुत्रको देखि यह  
महादीर्घ कौन कव्वाँद ऐसे विभीखनसों पृथुत भये ॥

विभीखन कही यह कुंभकर्ण विनाँही वरदान स्वभावहीसों  
बलिष्ट जानैं होतही हजारन सत्त्व खाये ॥

तब प्रजाकी सहायपैं इंद्रनैं आय बज्रादिक अनेक आयुधनके  
आघात लगाये ॥ ३५ ॥

यानैं ऐरावनको दंत उपारि ताही करि इंद्रके उरमें महाप्रहार दयाँ  
तासों हताविक्रम होय लक्रे प्रजाके नासको निदानें मरालवाहनसों  
जाय कहत भयो ॥

ब्रह्मानैं सब राक्षस बुलाय कुंभकर्णको महाभयंकर देखि स  
दाही सुप्त होय पग्यो रहिवेको साप दीनों ॥

तासों त्वरितही मृतक कल्प होय पग्यो देखि दसंधीवनैं या-  
के सोवन १ जगन २ को करार कमलसनसों कर जोरि माँगि  
लोनों ॥ ३६ ॥

तबचतुर्मुखनैं कही छद्मास सोय यह एक १ दिन धँवाध पढ़ें ॥  
तथापि यह घोर दृष्ट एकही दिनमें अनेक मत्वनको खँहें ॥

विर्भावनसों ऐसी सुनि रघुनाथनैं सेनापति नीलकों पठाये  
लंकाके द्वार१ प्राकार२ ॥ अब रुद्ध कराये ॥

अरु अंगद१ गवाक्ष२ हनुमान३ सरभ४ हू संगही सिधाये ॥३७॥

इतकों लंकेसैन कुंभकर्णीसों जगायवेको निदान कह्यो ॥

तब यानैं कही पहिले मंत्रमें हमनैं दोष देख्यो सोही अब स-  
वनके पान लैवेकों वलिष्ट होय रणो ॥

केवल वल१ विक्रम२ के दैपतैं वेदहीके साथ मृत्युकों न्योतिलाये ॥

ऐसी सुनतही लंकेसैन अनुजकों अनेक कटुवचन सुनाये ॥३८॥

तब अग्रजकों कुपित जानि अनुजनैं कही मंत्रमें पूछा तो ह-  
म सदा ऐसीही कहैं ॥

अरु संगरमें पठायेसों सत्रुनके स्वासको पान कियैं रहैं ॥

अब काहू सेनाकों मेरे संग न भेजो ऐसैं कहि एकाकी कुं-  
भकर्णी लखिेकों चलायो ॥

तहाँ महादरनैं सवनके समन्तों याकों असत्त उत्तर सुनायो ॥३९॥

जनस्थानके कठ्यौदनकों रु दसग्रीवदपैदारक बालिकों मारि  
समुद्रमें सेतु गचि लंकाकों बेरि लंकेसकों विवेहल जानि जीवदा-  
न दे छोट्यो नितनों लखिेकों एकाकी१ जायवो उचित न जानों ॥

गनरंगमें अद्वितीय गद्यको कोष महाप्रलयके नमान मानों ॥

ऐमें महादरनैं कुंभकर्णीसों कहि लंकेससों कहोमें१ अरु द्विजिह्व  
२ सदाही ३ न चितईन ४ इन च्यारिदनकों पठाग हो ॥

तां तां कदापि नियति सानुकूल भयैं बहुहि अनुजकों नृप दे-  
मन पायदो ॥ ४० ॥

ऐसी सुनतही महोदरकों कुंभकर्णान कातर कहि अग्रजके मन-  
कों अनुमोद दीनों ॥

अरु लंकेसनै ऊठिकैं माल्य१ अनुलेपन२ वस्त्र३ भूषन४ नसों अ-  
नुजकों अलंकृत कीनों ॥

चतुरंग याके संग दयो तब हजार१००० भार भर्मर्मय कंकट-  
कों कसि अग्रजकों आंलिंगिप्रदक्षिणा करि जाज्वल्यमान का-  
लायेंस त्रिसूलकों पकरि कुंभकर्ण लखिकों चलायो ॥

जाके विग्रहको सत१०० धनुष परिगाह खटसत६०० धनुष उ-  
च्छ्रयें देखि कपिनको कटक ओर ओर पलायो ॥ ४१ ॥

ऐसैं लंकाके पार्कारकों उछंधि कुंभकर्णके आवत प्लवंगन-  
कों पलावत देखि अंगदनें नल१ नील२ कुमुद३ गवाक्ष४ सों कही  
यह आकृतिहीसों भयंकर है जुद्धमें तैसो समर्थ न जानों ॥

अरु पलायनसों बचिबोहू मरनसों विसेस मानों ॥

यह सुनतही अद्रि१ दुर्भ२ सिला३ लैकैं कपिननें कोपसों मुररि  
कुंभकर्णपंचहु४ ओरसों प्रहारे ते दुष्टको स्पर्शकरतही चूर्ण होतभयो

अरु याके आघातनसों छिन्न भिन्न होय रघुवीरके सुभट बानर  
१ तो दिसा१ आकास२ सभुद्र३ पर्वत४ नमें डुरित गये ॥ ४२ ॥

गोपुच्छें२ विलनमें पैठे रु भल्लूक३ बड़े विटपीनपैं चढि दुरे ॥

१ रावण के मन को २ प्रसन्न किया ३ माला पहनाकर ४ शरीर पर सुगन्धित  
वस्तु लगाकर ५ शोभायमान किया ६ सेना, ७ सौलह मासे का एक कर्प और  
चार कर्प का एक पल, सौ पल की एक तुला और बीस तुला का एक भार  
होता है ऐसे हजार भार ८ सुवर्ण का ९ कवच कसकर बड़े भाई से १० सि-  
लकर ११ क्रान्तिमान् १२ काले लोहे की बनी हुई १३ जिसके शरीर का १४  
विस्तार १५ छः सौ धनुष का ऊंचापन १६ भागा ॥ ४१ ॥ १७ कोट को कू-  
दकर १८ यानरों को भागेहुए देख १९ स्वरूप से ही भयदायक है २० भा-  
गकर बचना मरने से भी विशेष है २१ पर्वत २२ वृक्ष २३ कुंभकर्ण के प्रहार  
से २४ छिपगये ॥ ४२ ॥ २५ गौ की पूंछ के समान है पूंछ जिनकी ( लंगूर )  
ऐसे चन्दर गिरिकंदराओं में घुसे २६ रींछ २७ बड़े वृक्षों पर चढ़गये

बहोरि हू अंगदके वचन\*प्रतोदसौं पीछे फिरि ऋषभ१सरभ२मैंद  
३धूम्र४नील५कुमुद६सुसेन७गवाक्ष८रंभ९तार१०द्विविद ११ पनस  
१२बजांग१३इत्यादिक कितेक कुंभकर्णसौं जुरे ॥

तहाँ अष्टसहस्र८०००सप्तसत७००वानरतो दुष्टनै पहिलेही मि-  
लापमैं मीडिकैं अचेत पृथ्वीतल पसारै ॥

अरु दसन१वीसन२०तीसन३०कौसनकों इक१इक१वेरही आ-  
ननमैं फैंकि चाबि डारे ॥ ४३ ॥

तहाँ द्विविदनैं एक१धराधर लैकै कुंभकर्णपै चलायो सो दुष्ट-  
सौं चूकि क्रव्याद कटकमैं जाय पर्यो ॥

तानैं अनेक गज१हय२रथ३रथि४सारथि५नको चूर्ण कर्यो ॥

मारुतिनैं बडे बलसौं सिला१गिरि२तरु३नकी वृष्टि करी ॥

सोहू दुष्टके त्रिसूलसौं छिन्नभिन्न होय पृथ्वीतल परी ॥ ४४ ॥

क्रव्यादनैं आंजनेयके उरमैं त्रिसूल मार्यो ताकी लोह छक ले  
लोहितको बमन करि बज्रकंकटनैं महाघोर नाद कीनों ॥

तहाँ नीलनैं धराधर फैंक्यो सो हू निसाचरनैं मुष्टिपातहीसौं  
चूर्ण करि दीनों ॥

तदनंतर ऋषभ१सरभ२नील३गंधमादन४गवाक्ष५पंच५ही प्लव  
गनदुष्टके सैल१सिला२पाद३प्रतल४मुष्टि५चरन६जानु७नके प्रहार  
दये तेहू सब दुष्टके मृदुस्पर्शहीके सूचक भये ॥

कुंभकर्णनैं ऋषभकों १ भुजनसौं १ भौंछि, सरभ२कों मुष्टि  
सौं १, नीलकों ३ जानुसौं ३, गवाक्षकों ४ प्रतलसौं ४ प्रहारिकें  
अचेत रुधिरवमी करिडारे ॥

\*वचन रूपी चावक से१हनुमान् २ मसल ( कुचल ) कर ३वानरों को अपने  
मुख में फँकदिया ॥ ४३ ॥ ४ पर्वत लेकर ५ राजसों की सेना में जागिरा ६  
हनुमान् ने ॥ ४४ ॥ ७ हनुमान् के उर में ८ रुधिर ९ उगल कर १० हनुमान्  
ने ११ बंदरों ने १२ पर्वत १३ वृक्ष १४ थाप ( थप्पड़ ) १५ घुटनों के १६ को-  
मल स्पर्श को १७ जनानेवाले जाने ॥ ४५ ॥ १८ घुटनों से १९ थप्पड़ २० रुधिर  
उगलनेवाला

तबतो हजारन प्लवंग कुंभकर्णपै जाय चढे रु दंत१मुख२मुष्टि  
३प्रतल४प्रहार बिथारे ॥

तिनमाँहिँसों अनेकनकों पकरि दुष्टनै पाँतालविवरसे बँक्रमै  
फैंकिदये ॥

तेहू नासा१कर्ण२नके छिद्रन व्है बाहिर आय आय भजत  
भये ॥४६॥

निसाचरके करनँसों मथ्यो साखाँमृगनको समुद्र फूटत भयो॥  
सबनकों रघुनाथके सरन भजे देखि तारेयनै एक१ पर्वतउठा  
य कैकसीके मँध्यपुत्रके मस्तकमै प्रहार दयो ॥

ताहुको तिरँस्कार करि कुंभकर्णनै अंगदपै त्रिसूल चलायो॥  
यानैहु सो आवत देखि रनमार्गकोविदनै लाघवँसों मँलंगि  
चुकायो ॥४७॥

तदनंतर तारेयनै उडिके आँसिरके उदरमै प्रतलको प्रहार  
कीनो ॥

तासों कछुकालमै चेतना पाय कुंभकर्णनै अंगदके उरमै मुष्टि  
को आघात दीनों ॥

तासों यह मूर्छित व्है गिरयो तबतो त्रिसूलकों उठाय सुगीवपै  
चलायो ॥

अरु दोउन२ननै मिलिके परस्पर श्लाघाको बचन सुनायो ४८  
सुगीवनै धराधरँ फैक्यो सु आसिरके उरमै लागि फूटि गयो ॥

अरु यानै कपिराजपै त्रिसूल चलायो ताकों बँज्रांगनै बीचहीमै  
गहि जानुँकी मचक दै द्वैखंड करि दयो ॥

१ वंदर २ पाताल के छिद्र समान ३ मुख में फैंक दिया. चेही४नासिका ५कानों के छिद्रों में होकर६राक्षस के७हाथों से मथाहुआ८बंदरों का समुद्र फूट गया अर्थात् बंदर भागगये ९ अंगद ने १० कुंभकर्ण ११ अनादर १२ युद्ध मार्ग का पण्डित १३ शीघ्रता से १४ क्रुद्ध कर ॥ ४७ ॥ १५जिस पीछे १६ राक्षस के पैद में १७ प्रशंसा का वचन ॥ ४८ ॥ १८ पर्वत १९, हनुमान ने २० धुत्ने की

तव कुंभकर्णनैँ एक१सैलसंग उठाय सुग्रीवपैँ प्रहारयो तासों  
निश्चेष्ट हो कपिराज धूमिपरयो ॥

ताकों उठायकैँ निस्संक होय कुंभकर्णनैँ लंकाभैँ गमन करयो ॥४५॥

पुरवासिन रावणानुजकों चंदनोदकसों सींच्यो ताके सीतलस्पर्श  
करि सुग्रीवकी मूर्च्छा गई तव ही दंतनसों नक्र१दोह२करनसों  
कर्ण२काटि कुंभकर्णनैँ बहुत ही मीज्यो तथापि ताके पार्श्व में ल  
त्ताघातकरि भुंजकोटरसों छूटि आकासमें मलंग लई ॥

ऐसी अद्भुत करि कपिराज तो कूदिकैँ रघुराजके समीप आयो ॥  
अरु कुंभकर्ण आपको विरूप जानि लज्जासों पीछो मुररि मुह-  
रकों उठाय जंगकों चलायो ॥५०॥

कोपमूढ हकैँ अपने पराये रक्खस१पिलाच२रिच्छ१वानर२नकों  
एक१ही करसों आननमें फैंकि फैंकि खाये ॥

तहां सौमित्रिनैँ याको कवच भेदि भुंजांतरमें सप्त ७ सौंपक  
लगाये ॥

कुंभकर्णनैँ लखनसों कही कालको काल जो मैं ताके आगैं ठहरि  
तेनैँ खूबही वीरता रूपात करी ॥

परंतु रामकों दिखावहु तव सेसैँ कही ए निस्संक अंग रंगनमें  
खरे अनादि हरी ॥५१॥

ऐसी सुनतही रक्खसनैँ रघुराजके समुख चरन दये तहां जग-  
दीस रौद्र अस्त्रको प्रयोग करि आँसिरके उरमें कलर्व देतभये ॥

तासों अचेत भये दुष्टके करतैँ गदादिक आयुध गिरे ॥  
अरु अंगसों निकसिकैँ सबही जंगैरंगमें याके रुधिरके स्रोत  
फिरे ॥५२॥

१पर्वत का शिखर २चपटा रहित (बेहोश) ३कुंभकर्ण को ४चन्दन के पानी में  
५नासिका ६दवाया (कुचला) ७तोभी ८बगल में ९लात की चोट देकर १०हा  
थों के मन्दर (कोचर) से छूटकर ॥ ५० ॥ ११ लक्ष्मण ने १२ हृदय में १३ पाव  
१४ प्रसिद्ध करी १५ लक्ष्मण ने कहा कि १६ युद्धभूमि में ॥ ५१ ॥ १ आत्म  
का उर में १७ अंग १८ युद्धभूमि में रुधिर के १९ प्रवाह फिरे ॥ ५२ ॥



कछु कालमें चेत पाय जुग्यो तहाँ अखिले सैनै याको कवचहू  
काटि डारयो ॥

रक्खस नै एक १ अँदि चलायो सोहु रघुनाथ नै वानन सौं बिडौ रघो  
कुंभकर्णको कवच कटिकै गिरत गिरत द्वै सत २०० वानरन-  
काँ दावि मारत भयो ॥

तहाँ लक्खन नै अग्रजके समै छही समस्त साख्वा मृगन काँ नि-  
देस दयो ॥ ५३ ॥

यह सोनित गंधमत अपनै पराये काँ न जानै ताँतै अनेक क-  
पि याके ऊपर चढिकै भार सौं गिराय देहु ॥

यह सुनत ही हजारन भूप लैकै याके अंग पै आरूढ होत भ-  
ये तेहु ॥

जै सै व्याल गंज आधोरण काँ गिरावै या रीति कुंभकर्ण नै  
आरूढ रिच्छ १ वानर २ धुनाय डारे ॥

अरू रामचंद्र नै आपकी ओर बुलायो तहाँ हसिकै कुंभकर्ण नै  
ए बचन उचारे ॥ ५४ ॥

बिराध १ कबंध २ खर ३ वाली ४ मारी च ५ मोकाँ न जानौं ॥

कुंभकर्णके कालायेंस मुद्गर काँ महाप्रलयके समान घोर मानौं ॥

तुमारो पराक्रम देखि पीछै खाय लैहौं असो निस्संक बचन सु-  
नत ही राघव नै कराल कैलंब लगाये ॥

तिनहूसौं व्यथा न भई रु समस्त ही दुष्टन मुद्गर सौं हटायो ॥ ५५ ॥

कपिन पै चलायो देखि बायव्यैको संधान करि रघुराज नै कुंभ-  
कर्णको मुद्गर सहित एक १ पंचसौख १ काटि डारयो ॥

तबहू महानाद कीनौ रु कटे करहू प्लवंगनैको प्रकर मारयो ॥

१ रामचन्द्र ने २ पर्वत फैंका ३ बिखेर दिया ४ लक्ष्मण ने रामचन्द्र के ५ सामने ही मथ  
६ वानरों को ७ हुक्म दिया ॥ ५३ ॥ ८ रुधिर की गन्ध से मस्त होकर ९  
चढ गये १० जिस प्रकार दुष्ट हाथी ११ महावत को गिरा देवे तिस प्रकार कुं-  
भकर्ण ने अपने ऊपर चढे हुए ॥ ५४ ॥ १२ काले लोहे के १३ भयंकर वाज  
लगाया १४ पीड़ा नहीं हुई १५ पवन अस्त्र को संधान करके १६ हाथ १७ वंदरों के

तदनंतर सालपादपकों उपारि रघुराजपै चलायो तहाँ ऐंद्र अस्त्रको  
प्रयोग करि द्वितीय २ कर १ हू काटि लयो ॥

सोहू साखी १ सैल २ सिला ३ कपि ४ रिच्छ ५ रक्खसदनकों चूर्ण  
करत भयो ॥ ५६ ॥

तथापि नाद करि समुख दोरयो देखि द्वे २ अर्द्धचंदनसौं राघवनै  
दुष्टके दोहू २ चरन २ हू काटि गिराये ॥

तिनके पातनै दिसा बिदिसामै महाभयंकर नाद फिराये ॥

रक्खसहू बडो साहसी निकृत्तबाहुचरन आननकों फारि रामके  
समुख दुरिआयो ॥

ताको मुख राघवनै बाननसौं भरिदियो सु बोलिबे न पायो ॥ ५७ ॥

तदनंतर बहोरि ऐंद्रबानको संधान करि रघुराजनै कुंभकर्णको  
उत्तमांग हस्यो ॥

ताहुनै अनेक चैर्या १ पुर २ गोपुरे ३ प्राकार ४ अर्द्ध ५ नको चूर्ण  
करयो ॥

कुंभकर्णको कलेवर लैवणोदमै परयो ॥

अरु ग्राह १ मीन २ भुजंगम ३ नको मर्दन बिस्तरयो ॥ ५८ ॥

भूतधात्री धूजि उठी रु लंकामै सोक संताप भयो ॥

अरु सुर १ मुनि २ पन्नग ३ भूत ४ सुपर्णा ५ गुह्यक ६ जच्छ  
७ गंधर्व ८ नरन ९ रघुनाथके बिक्रमको वर्णन करि मोद लयो ॥

असै मधुमेचक सप्तमी ७ के दिन हंसबंसहंसनै दसग्रीवको अनुजहन्यो

समूह को १ जिसपीछे २ साल वृत्त को ३ इन्द्र अस्त्र से ४ वृ-  
ज ५ पर्वत ॥ ५९ ॥ ६ अर्धचन्द्राकार बाणों से ७ पड़ने ने ८ कट  
गये हैं हाथ पग जिसके ( कटे हाथों पगों वाला ) ९ मुख को फाड़  
कर ॥ ६० ॥ १० मस्तक काट डाला ११ अपने इष्ट का पूजन करनेवालों को  
( सायंकाल में कुंभकर्ण का मस्तक काटा गया था वही समय आन्हिक क-  
र्म करने का था इससे ) अथवा कुंभकर्ण के मस्तक के अमण ने १२ शहर  
के दरवाजे १३ कोठे १४ मकानों की छतों का चूर्ण कर दिया और कुंभकर्ण  
का निर्जीव शरीर १५ चारसमुद्र में गिरा ॥ ६८ ॥ १६ भूमि १७ चैत्र वदि  
सातम के दिन १८ सूर्यवंश के सूर्य ( रामचन्द्र ) ने कुंभकर्ण को मारा

रामचन्द्रवर्णन ] तृतीयराशि—द्विपञ्चाशमयुग ( ९३५ )

अरु लोकत्रयमें अद्वितीयकीर्तिको वितान तन्वों ॥५९॥

इतिथी वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ वी-  
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८वेला६८११विवाहवेलावर्णनवि-  
षयवृद्धवंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु६ पट्टपुत्रविकुक्षि-  
७कुलकलशश्रीजानकीजानिचरित्रे द्वितीया२सप्तम्य ७न्तसङ्ग्रामव-  
र्णनधृष्टाक्ष१वज्रदंष्ट्रा२कम्पन३प्रहस्त४मरणागवणा ५ पलायनकु-  
म्भकर्णशिरःकर्तनमेकपञ्चाशत्तमो५१मयूखः ॥५१॥

आदितस्त्रिणावतितमः ॥ ९३ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( सचरणगद्यम् )

कुम्भकर्णको निपात सुनतही दशग्रीव सूर्धित अचेत होय पश्यो ॥

अरु कितेक कालमें संज्ञा पाय जाग्रत अंगको इंगितधर्म जाशि  
अश्रुनकों अंबकैनके अतिथि करि चिरकाल परिदेवन करयो ॥

रावनके संबंधभ्राता महोदर१महापार्श्व२तथापुत्र त्रिसिरा१अ-  
तिकाय२देवांतक३नरांतक४इत्यादिक वा समय जे उहाँ हे ते स-  
व रुदनके रसज्ञ भये ॥

तदनंतर त्रिसिरानें दसग्रीवकों वीररसके वर्द्धक वचन दये ॥ १ ॥

वेरा ( तं वृ ) ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चटुवाण  
वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश  
के बहानवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल  
के कलश श्रीजानकी के पति ( रामचन्द्र ) के चरित्र में द्वितीया से लेकर  
सप्तमी के अन्त तक के युद्ध के वर्णन में धृष्टाक्ष, वज्रदंष्ट्रा, अकम्पन, प्रहस्त का  
मरण, रावण का भागना, कुम्भकर्ण के मस्तक काटने का इलायनवां मयूख  
नभात पृथा ॥ ५१ ॥ और आदि से जानये मयूख रूप ॥ ९३ ॥

अपह्नुत १ चन २ जगनादृष्टा शरीर कुल्लनकुल चष्टा अवश्य करना है इ-  
स शारीरिक धर्म को जानकर ३ अश्रुनों को नदों के ३ पाटने ( महानान )  
कस्के ४ चटुन समय तक ५ चिलाप किया ६ जने भाडे नहीं ७ थे ८ रुदन  
के रस को जानने वाले रूप ९ निजसर्पिष्ठ १०-सिन्धु को बहानवाले ॥ १ ॥

( दोहा )

कही जनक दसकंठसौं, सुत त्रिसिरा तजि सोक ॥  
 ब्रह्मदत्त निज साक्तिबल, अभय होहु जयओक ॥ २ ॥  
 खर सहस्र १००० रथ १बर अखय, त्यों सरचाप ३तनुत्र ४ ॥  
 अहं व अप्प विलसहु इहाँ, पिल्लहु जावत पुत्र ॥ ३ ॥

( षट्पात् )

इम त्रिसिरा १ अतिकाय २ देव अंतक ३ नर अंतक ४ ॥  
 महापार्श्व १ लहि संग महोदर २ बहुरि पितृव्यंक ॥  
 आसिर पंहि मुद अप्पि पाय आसिख १ अरु पूजन २ ॥  
 चले लरन अतिचंडकरन स्वकरन कपि कूजन ॥  
 घनगंजकुलीन घननीलनिभ नाम सुदर्शन नागवैर ॥  
 तिहि गज अरोहि रनरसरसिक चलिय महोदर १ परनपर ॥ ४ ॥

( दोहा )

त्रिसिरा १ पुनि अतिकाय तैंहँ, रथन चढे रविभास ॥  
 नर अंतक ४ सितैंहँ निडर, पकरि चढ्यो कर प्रास ॥ ५ ॥  
 देवांतक ५ तिम परिघट्ट, हंयों गहि हुसियार ॥  
 गदा महापार्श्व ६ हु गहि रु, उफन्यों तुमुल उदार ॥ ६ ॥

( सचरणागद्यम् )

१ अपने पिता रावण से त्रिसिरा ने कहा कि २ हे विजय का धर (रावण)  
 ३ ब्रह्मा की दी हुई शक्ति के बल से आप अभय होओ ॥ २ ॥ वर के कारण  
 हजार गधोंवाला रथ, इसी प्रकार घनुष बाण और ४ कवच अक्षय है सो  
 ५ अब आप तो विलास करो और पुत्र (मुक्त) को ६ भेजो सो युद्ध  
 के लिये जाता हूँ ॥ ३ ॥ ७ देवान्तक ८ नरान्तक ९ काका  
 १० राक्षसों के पति को मोद देकर ११ रावण के पुत्रों ने आशिष  
 और १२ भाइयों ने पूजन पाकर १३ अपने हाथों से १४ बंदरों को कूक करा-  
 ने को (हाथों से मलकर बंदरों की चिल्लाहट कराने को) १५ ऐरावत के कुल  
 के १६ नील मेघ की क्रान्तिवाले सुदर्शन नाम के अष्ट १७ हाथी पर चढ़-  
 कर १८ शत्रुओं पर चला ॥ ४ ॥ १९ सूर्य के समान क्रान्तिवाले २० स्वत रंग  
 के घोड़े पर २१ हाथ में भाला पकड़के चढ़ा ॥ ५ ॥ ६ ॥

असैं छुड़हूँ महावीर कव्यादन आस्फोटनै १ द्वेवेडित २ संक्रम ३ सिं  
हनाद ४ नसों भूतधात्रीको धुजावत कपिनके कटकमैं आय अष्टमी  
८ के दिन महारन रच्यो ॥

अरु परस्पर सख सैलके प्रहारकरि जोहूरदलनके दुर्गम सो-  
नितको सार्व मच्यो ॥

कितेक निसचर गाढैं गाढैं गहि गहि वानरहीसों वानरको  
मारत भये ॥

अरु कीसहू कितेक रथनसों १ रथ २ तुरंगनसों १ बाँजि २ क  
रीनसों १ मांतंग २ कौशांपनसों १ कव्याद २ चूरि डारत भये ॥ ७ ॥  
नरांतकनै प्रांससों सप्तसत ७०० वानर एकही प्रहार करि वेधि  
गिराये ॥

अरु कालरूप धारि प्रहारनके महापात दये तिनसों काँदिसी  
क कीसैं टिकन न पाये ॥

नरांतकके प्रासकों कपि लोष्टनको कोटिसँ जानि ताके स-  
मुख कौपिराजनै अंगद पठायो ताके भुजांतरमैं दसग्रीवके पुत्रनै  
प्रांस मास्यो ॥

सोहू बालिपुत्रके बज्रकल्प उरमैं छुवतही टुक करि डारयो ॥ ८ ॥

मस्तकमैं अंगदके प्रेतलको प्रहार परयो तासों भग्नपाँद स्फु-  
टितनेत्रनिष्क्रांतजिह्व होय नरांतकको तुरंग प्राणनतैं बिरही भयो ॥

१ राक्षस २ भुज ठोकने ३ गर्जना करने ४ चलने और ५ सिंहनाद करने से ६ भूमि को  
धुजाते हुए ७ पर्वत ८ रुधिर का = कीच मचा ९ घोड़ों से घोड़ों को १० हाथि-  
यों से हाथियों को ११ राक्षसों से १२ राक्षसों को चूर्ण कर दिया ॥ ७ ॥ १३ भा-  
ला से १४ भय से भागनेवाले १५ वानर नहीं ठहर सके, नरांतक के भाले को  
वानरों लपे १६ ढकलों [दिलों] को चूर्ण करनेवाला १७ लोष्ठभेदन [चावर, ढक्-  
ल फोड़ने का भारी काष्ठ] जानकर १८ सुग्रीव ने अंगद को भेजा १९ हृदय  
में २० भाला मारा २१ यज्ञ के समान हृदय में स्पर्श होते ही भाले के टुकड़े  
टुकड़े होगये ॥ ८ ॥ २२ थप्पड़ के प्रहार से २३ तूटे पगोंवाला २४ फूटे हुए  
नेत्रोंवाला २५ निकली हुई जीभवाला होकर २६ घोड़ा २७ सरगया

तबही क्रुपित होय क्रैव्यादराजके कुमारनै हू तारेयके मस्तक  
 पै मुष्टिको आघात दयो ॥  
 तासों सोनितको वमनकरि कछुकालमैं सबिस्मय संज्ञा पाय  
 अंगदनै नरनासनके भुजांतरमैं मुष्टि मारी ॥  
 तासों अचेत रत्नोराजकुमारके लिंगविग्रहनै भिन्न होय वेगही  
 स्थूल मूर्ति डारी ॥ ९ ॥  
 तबही कालकराल होय त्रिसिराशदेवांतकरमहोदरइन तीन  
 कर्बुरन वेढिकै अंगदपै एकही संग सखनको संघात डारयो ॥  
 अरु तारेयनै महोदरके गजकाँ मस्तकमैं प्रतलसों प्रहारयो ॥  
 ताहीको दंतनिकासि अंगदनै देवांतककै दई तासों रुधिरको  
 वमनकरि कछुकालमैं संज्ञापाई ॥  
 अरु तारेयकै परिघकी दई ता प्रहारकरि जानुनसों जँकि वा  
 लिंपुलनै अपनी मूर्ति आकासमें उडाई ॥ १० ॥  
 उडते अंगदके ललाटमैं त्रिसिरानै हू तीनश्वान दये ॥  
 ऐसेँ एक१सों तीन३लरतदेखि नील १ रु हनुमान २ ए उभय  
 अंगदकी सहाय भये ॥  
 नीलनै पर्वत चलायो सु तो त्रिसिरानै तीरन करि काटि डारयो ॥  
 अरु देवांतकनै मारुतिपै परिघ उठायो ताके सिरपै आजनेय२  
 नै उडिकै मुष्टिको आघात प्रहारयो ॥ ११ ॥

१रावण के पुत्र ने अंगद के मस्तक में रुधिर की उलटी करके आश्चर्य सहित  
 ३ चेत पाकर ४ नरान्तक के उर में मुक्ती मारी जिससे ५ लिंगशरीर ने  
 अलग होकर विद्वान्त के मत से कारण शरीर, लिंगशरीर और स्थूलशरीर  
 ये तीन प्रकार के शरीर मानते हैं, और पुराणवाले लिंग (सूक्ष्म) और स्थूल  
 दो शरीर ही मानते हैं जिनमें मृत्यु के समय स्थूल शरीर का सम्यन्ध जीव  
 से छूट जाता है और लिंगशरीर जन्मान्तर में जीव के साथ रहता है केवल  
 मुक्ति समय में लिंग शरीर का जीव से वियोग होता है इन दोनों शरीरों  
 को भौतिक शरीर कहते हैं स्थूलमूर्ति को भूमि पर डारी अर्थात् मृत्यु को  
 प्राप्त होगया ॥ १॥ दराजसों ने शेरकर समूह पटका २ अंगद ने १० थप्पड़ मारी  
 ११ उलटी १२ चेत पाया १३ शूटनों के बल गिरकर १४ हनुमान पर १५ हनुमान ने

तासों जिह्वा १ दंत २ नेत्र ३ निकसि परे ४ देवांत कर्ने ५ देह तज्यो ॥  
सो देखि त्रिसिरानै नीलके अंगमें अनेक आघात देकैं विसे-  
स जंग सज्यो ॥

वाही समय महोदरहू अन्य गजपै आरूढ होय नीलहीके अने-  
क आघात देत भयो ॥

अरु नीलहूने आपो सम्हारि एक १ बडो अंघ्रि उठाय महोदर  
के मस्तकपै डारि दयो ॥ १२ ॥

तासों मातंग सहित महोदरको मरयो देखि त्रिसिरानै बढिकै ब-  
जांगके विसेस बान लगाये ॥

अरु मारुतिनै अनेक तरु पर्वत चलाये तेहू तीरन करि काटि-  
गिराये ॥

त्रिसिराके रथके हय वैजांगने नखनसों फारि डारे तबही प्र-  
कोपसों त्रिसिरानै सक्ति चलाई ॥

सो गर्जना करि आवतीही पकरि आंजनेयनै उभय २ भित्तिक-  
रि गिराई ॥ १३ ॥

तबही त्रिसिरानै बजांगके वैच्छस्थलमें तरवारि दई ताहूकी सं-  
का करि त्रिसूदाके उरमें प्रतल दयो ॥

तासों अचेत होय निसांचर घूमिकै रंगस्थलमें गिरत भयो ॥  
गिरतेको खड्गलेकै बजांगने महानाद कीनों ॥

ताको न साहिसक्यो यातैं दसग्रीवकुमारहू उडिकै बजांगके मु-  
ष्टिको प्रहार दीनों ॥ १४ ॥

तबही महाकोप करि आंजनेयनै किरीट पकरि त्रिसिराके ती-  
नोंही उत्तमांग मंडेलाग्रसों छेदि डारे ॥

१ अपने आप को अथवा अपने पराक्रम को सम्हाल कर २  
पर्वत ॥ १२ ॥ ३ हाथी सहित ४ हनुमान के ५ हनुमान ने  
६ हनुमान ने ७ दो टुकड़े करके तोड़ डाली ॥ १३ ॥ ८ वक्षस्थल (हृदय) में  
९ जिस तलवार के फिर प्रहार के भय से त्रिशिरा के हृदय पर १० ध्वज  
मारी ११ युद्ध भूमि में ॥ १४ ॥ १२ खड्ग से काट डाले

सों देखि महापार्श्व नैहू ऐरावत पुंडरीकादि दिग्गजनको भया-  
वह सर्वायस गदाकों पकरि सहस्रन साखांमृग प्रहारे ॥

तबही कपिसाईल ऋषभनै आय महापार्श्व अटक्यो ताके उ-  
रमें निसाचरनै गदाकी दई ॥

तासों चिरकालमें सचेतनहोय महापार्श्व उरमें मुष्टि मारी जि-  
हिं आघात करि क्रव्यादनै मूर्छा लई ॥१५॥

दोहा ॥

महापार्श्व मूर्छित गिरत, ऋषभ गदा तस पाय ॥

लरतरहे कछुकाल अब, उठ्यो खलहु उफनाय ॥१६॥

ऋषभहिं छत मूर्छित बिरचि, अप्प गदा गहि एह ॥

जुर्यो रु कपि पुनि मोहं तजि, दोर्यो इत अतिदेह ॥ १७ ॥

गदा दुष्टकी बहुरि गहि, सोहि प्रहारयो सूर ॥

पुंहावि भिन्नमस्तक पर्यो, महापार्श्व अर्धमूर ॥

षट्पात

आय तबहि अतिकाय जुर्यो कपिसेन मथत जहँ ॥

अतिबल लखि अखिलेस कह्यो रावनसोदरकहँ ॥

को यह सहँस १००० तुरंग जुत स्यंदन थित गज्जत ॥

केतन राहु कलंक सत्थ सारथि चउ४सज्जत ॥

अठतीस ३८ तून सोभित उचित त्रि३नत चाप रविकिरन सरा ॥

१ पूर्वदिशाको धारण करनेवाला ऐरावत और अग्नि दिशाको धारण करनेवाला पुंडरीक आदि दिग्गजों को २ भय करनेवाला ३ सम्पूर्ण लोहे की बनी हुई ४ वानरों को मारे ५ वानरों में सिंह ६ महापार्श्व को रोका ७ बहुत समय में ८ राक्षस ने ॥ १५ ॥ ९ घाव से मूर्छित करके १० मूर्छा छोड़कर ११ अतिकाय (बड़े शरीरवाला) ॥ १६ ॥ १७ ॥ १२ भूमि पर १३ पाप का मूल ॥ १८ ॥ १४ रामचन्द्र ने उसको बहुत बलवान् देखकर १५ विभीषण से कहा १६ हजार घोड़ोंवाले रथ पर बैठा हुआ १७ राहु के चिन्हवाली काली ध्वजा, चार सारथि जिसके रथ को हांकते हैं, अठतीस जिसके भाथे (तरकस), नमेट्टण तीन धनुष, सूर्य की किरण समान बाण, चार हाथ की मोटी मूठें लगी हुई, दशदश हाथ लंबी दो तलवारें, गले में लाल रंग की माला और पर्वत के तीखे शिखर समान



चउ४हत्थ मुष्टि दस१०मित दु२असि अरुन माल पठ्वय प्रखर१९  
 सुनत विभीषन सयन जोरि अक्खिय इम विन्नति ॥  
 रावनसुत अधिवीर एह अतिकाय महामति ॥  
 धान्यमालिनी जठरजात रथ१गज२हय३गति वर ॥  
 दान१साम२नय३भेद४मंत्र५धनु६खग७धुरंधर ॥  
 भुज जास रहत लंका अभय जिहिँ सुर असुर अवध्य वर ॥  
 विधिदत्त कवच१रथ२अस्त्र३ बस सु यह करत कपि तप्त सरा२० ॥

दोहा

पासीपास१रु सकर्षवि२, मारि प्रदरं किय मोघ ॥  
 सीघ्र जतन प्रभु अनुसरहु, उडे जात कपि ओधें ॥ २१ ॥

( षट्पात )

मैद१कुमुद२बलिनील३द्विविद४तिम सरभ५कपीश्वर ॥  
 सुनत विभीषन कथित पञ्च५सम्मुह हुव दुद्धर ॥  
 तिनके गिरि१तरु२कट्टि कलह अतिकाय तुमुल किय ॥  
 कोउ न भयउ समत्थ लैन रावन अंगज जिय ॥  
 हतबलैन छोरि दुष्टहु हुलैसि बढि बुल्लिय प्रभुँडिग वचन ॥  
 नैन मरहु रंक व्यवसाय१बल२रक्खहु दुव२सुहि देहु रन ॥ २२ ॥  
 सुनि यह कटु मौमिति चाप टंकरि सर अचिय ॥

जिसका शरीर है यह कौन है ॥ १९ ॥ १ हाथ जोड़कर २ अधिक वीर  
 ३ मंदोदरी के ४ पेट से पैदा हुआ, गोड़े हाथियों को श्रेष्ठ चलानेवाला  
 ५ देवताओं से और दैत्यों से नहीं मार जाने का जिसको वर है और ६  
 ब्रह्मा के दिये हुए ७ अपने बाणों को बानरों से तृप्त करता है ॥ २० ॥ ८  
 वरुण के पाश और ९ इन्द्र के वज्र को जिसने अपने १० बाण मारकर ११  
 व्यर्थ कर दिये थे जिसको मारने का आप शीघ्र उपाय कीजिये १२ बानरों  
 के समूह उड़ेजाते हैं ॥ २१ ॥ १३ विभीषण का कहा हुआ सुनते ही १४ भयंकर  
 १५ रावण के पुत्र का जीव लेने को १६ निधियों को छोड़ कर १७ प्रसन्न होकर  
 १८ रामचन्द्र के पास जाकर बोला कि रंकों की तरह १९ मत मरो तुम दोनों  
 भाई २० उद्यम और चल रखते हो सो मुझे दो (दिखाओ) २१ लक्ष्मण ने धनुष  
 को २२ टंकारके

भये विचल अतिभीत जाहि सुनतहि कौशेप जिय ॥

कहिय पिक्खि अतिकाय बाल न मरहु अविचच्छेन ॥

काहि जगावहु काल वान मम अनल सञ्चवन ॥

सौमित्रि कहिय सूरत्वं सठ वचन मात्र न करह विदित ॥

करिअस्रस्रनिज जय करहु अर्थ न जानहु काल इत ॥२३॥

तव अतिकाय कलंव इकमुक्खिय लक्ष्मणपर ॥

अर्द्धचंद्र करि वाहि कट्टि डारिय रघुकुंजर ॥

पञ्चपविसिख पुनि प्रथित दये अतिकाय दुरासद ॥

पञ्चकपकरि ते पञ्चपवहुरि दिय कट्टि भित्तंद ॥

इकप्रंदर तानि लक्ष्मण असह दृढ अतिकाय ललाट दिय ॥

वै व्यथित कहिय व्यवसायवर कर सिंसु वृद्ध प्रहारकिय ॥२४॥

सर इकतीनसर पञ्चसत्त ७ इकसत्थ दये खल ॥

तीरन करि ते कट्टिदये लक्ष्मण विसेस बल ॥

तवहि इकसर तानि अपर दिन्नों लक्ष्मण उर ॥

सु द्रुत कहि सौमित्रि धरिय आग्नेय प्रंदर धुर ॥

खल मरम तकि मुक्खिय मुखेंग खलहु रौद्र प्रैतिभट तजिय ॥

ते अल लरिय विचहि वैहुल दग्ध दुहुन भूतल भजिय ॥२५॥

१ राजसों के जीव २ अतिकाय ने लक्ष्मण से कहा कि हे बालक ३ हे मुख किमलिये काल को जगाता है ४ अग्निरूपी मेरे बाणों का शत्रु बनकर मत मर, लक्ष्मण ने कहा कि हे मुख! केवल वचन से ही अपनी ५ वीरता प्रगट मत कर ६ मुझको बालक मत जान, इधर तेरा काल है ॥ २३ ॥ ७ बाण ८ रघुवंशियों में हाथी (अष्ट) ९ बाण १० प्रसिद्ध ११ दुष्ट अभिप्रायवाले अतिकाय ने १२ थोड़ा बोलनेवाले लक्ष्मण ने १३ तीर १४ व्याकुल होकर कहा कि तुम्हारा डबम १५ अष्ट है १६ तुम्हारे हाथ तो बालक के से हैं परन्तु प्रहार बड़ा किया ॥ २४ ॥ १७ दूसरा बाण लक्ष्मण के उर में दिया जिसको १८ शीघ्र निकाल कर लक्ष्मण ने १९ अग्नि का २० बाण २१ वह आकाश में गमन करनेवाला बाण छोड़ा जिसको २२ रोकनेवाला दुष्ट ने भी रौद्र अस्त्र छोड़ा २३ वहन लड़कर दोनों जलकर २४ भूमि का संवन तिगा (भूमि पर पड़गये) ॥ २५ ॥

अस्त्र तबहि ऐषीक सजव मुकिय रावनसुत ॥

ऐंद्र प्रयुजि अनंत दियउ खल अस्त्र मारि द्रुत ॥

आसिर किय जमअस्त्र सु करि वायव्य सेस हनि ॥

बेढि खलहि सरबुंद बिबिध बरख्यो नीरुंद वनि ॥

अतिकाय कवच ते सर परसि भिन्नभल्ल मुरि मुरि परे ॥

तहँ आय पवन सेसहिँ कहिय किम उपाय इतरहि करे ॥२६॥

कंकट याहि अभेद्य अग्न अप्पिय हँसासन ॥

ब्रह्म अस्त्र तुम तजहु हनन इहिँ जतन ओर नन ॥

सुनि सँमीर बच सेस अस्त्र सुहि सर आरोपिय ॥

भुव अयोस ग्रह कंपि दाह दिसदिस प्रचंड दिय ॥

तिहिँ पिदिख तजिय रावनतनय असि१ कुठार२हल३साक्ति४सर५ ॥

तिन्ह कटि विसिख अतिकाय तक पहुँचि मत्थ छेदिय प्रकरा॥२७॥

सुनि रावन करि सोक कहिय असो कोउ न अब ॥

सविभीषेन१सुग्रीव२राम३लक्ष्मण४हँनै जु सब ॥

अहो रामबल असह हमहु मन्न्यो नारायन ॥

जरेरहत जिहिँ आस अरर लंका द्वारयन ॥

अति सावधान रक्खस रहहु सीता रक्खहु जतन सह ॥

१ऐषीक अस्त्र विशेष अर्थात् रामचन्द्र ने काकरूप जयंत पर चलाया था वह अस्त्र२शीघ्र छोडा३इन्द्र अस्त्र की योजना करके४शेषावतार(लक्ष्मण) ने दुष्ट के अस्त्र को शीघ्र मारदिया५राक्षस नेदेवह वायु अस्त्र मेघ बनकर वर्षा,परन्तु वे वाण अतिकाय के कवच का स्पर्श करके७भालें लूटकर पीछे ही गिरगये वहाँ पवन ने आकर८लक्ष्मण से कहा कि९आपने दूसरे उपाय क्यों किये॥२६॥ इसको आगे ?? ब्रह्मा ने अभेद्य १० कवच दिया था जिसके काटने का और उपाय नहीं है, ब्रह्म अस्त्र ही छोड १२ पवन के ये वचन सुनकर लक्ष्मण ने १३ इससे परिश्रम मुक्त होकर भूतल के घर कांपने लगे और दशों दिशा में भयंकर अग्नि लगगई १४ विच्छेप करके ॥२७॥ १५ विभीषण सहित १६रावण ने कहा कि रामचन्द्र का बल आश्चर्य के योग्य और नहीं सहा जावे ऐसा है हमने अब उनको परमेश्वर माना है जिनके भय से लंका के१८दरवाजों के१७किंवाड़ जुड़े ही रहते हैं

प्रातः१ रु निसीर्थ२संध्या३समय कपिन परस्वह कति असह ॥ २८ ॥

देहा

यह कहि बाहिर आसिरन, गो रावन निजगैह ॥

सुत भ्रातन मृति चिंति सुचै, आन्यौ वहुरि अछेह ॥ २९ ॥

( पट्टपात् )

जनैक दीन निज जानि ज्वलन बढि बढिय इंद्रजित ॥

विलखहु तात न नैक मोहि जीवत अरिष्ट इत ॥

विष्णु१रुद्र२रवि३सर्क४साध्य५अंतंक६वैस्वानर७ ॥

को रक्खहि ममअग्ग सकल पिक्खहु अब संगर ॥

यह कहि अरोहि खरैरथ अतुल कढ्यो लरन दससिरकुमर ॥

सहस्रन अनेक वाहन सहित पुण्यजनहु हुव पिडिपर ॥ ३० ॥

गज१हय२रासभ३करभ४सर्प५विच्छिद्य६दृग्वंदसक७ ॥

वर्ध८सिंह९फेर१०वराह११स्वोपद१२सिखि१३हंसक१४

इत्यादिक वाहनन चले आरूढ निसाचर ॥

इनहिं आनि हुतभूमि सज्ज रक्खिय खल संगर ॥

ससुगंध१माल२घृत१जाल२सुभ हुतमुँक हुँत कंटक करे ॥

सरपत्र१सस्त्र२कलितैरु१समिधै२अयसुँक१पटलोहित१धरे ॥ ३१ ॥

१आधी रात २८ शहर से बाहर रहनेवाले राजसों को यह कहकर, मेरे हुए भाई और पुत्रों को याद करके अपार शोक किया ॥ २९ ॥ आने पिता को दीन जानकर अग्नि के समान बढ़कर इंद्रजित ने कहा ३० हे पिता कुछ विलाप मत करो मैं जीवित हूँ तब तक इधर ० अशुभ नहीं होवेगा ० इंद्र ६ गणदेवता ० यमराज १ १ अग्नि. ये मेरे सामने रामचन्द्र की कौन रक्षा कर सकेंगे १ २ मधे जुते हुए रथ पर चढ़कर १ ३ हजारों राजस अनेक पादों पर चढ़े हुए इसको पीछे हुए ॥ ३० ॥ १ ४ ऊँट १ ५ सर्प १ ६ घोड़ा १ ७ बिल्ली १ ८ बघरदा ( सिंहविशेष ) १ ९ स्थान २० मुक्ता अथवा वनपशु विशेष २१ मयूर २२ हंस, इत्यादिक वाहनों पर २३ चढ़कर राजस चले. इन सबको मुझ के लिये तैयार करके २४ होम करने की भूमि पर २५ युद्ध करने को रक्ख और सुगंधि, माला, घृत और जाल (काष्ठविशेष) २६ अग्नि में इन हुए इंद्रजित ने २७ होम और सरपत्र के स्थान में शस्त्र रख कर २८ वेदों का २९ होम और ३० लोहे का लूया बनाकर जाल बना धरे ॥ ३१ ॥

असित छाग गलशगहिय अनल पत्थरि सरपत्रन ॥

आहुति इक्कशहि लगत बढयो पावक प्रचंडपन ॥

अर्चि फिरिय अपसव्य गहयो आवत हवि उद्धहि ॥

ब्रह्मअस्त्र खल तवहि बंड हुत किय सहाय चहि ॥

ताहिके मंल करि जप अतुल मंत्रे कंकट१चाप२रथ३ ॥

तिनसहित बहुरि मंडन तुमुल पिहित चढयो खल गगनप्रथ ॥३२॥

तस सहाय खिल तमकि कढे जुज्झन क्रव्यादन ॥

नभतै खल तिन्ह कहिय होहु अरिसन हव्यादन ॥

कपिभय नैक न करहु छकहु जयरस सब मोछत ॥

सु सुनि निसाचर सकल रूपे कपि नासकरन रत ॥

नव९सत्त७पंच५कपि घननिनद कढे इक्कशहि वानकरि ॥

इहिं गति असेस कटकहिँ अडैर भयदित्रौ वपु वान भरि ॥ ३३ ॥

कपिन तजे गिरि कटि जंग किय अतुल सक्रजित ॥

दिय अडारह१८प्रदर गंधमादन१उर अंचित ॥

नलकै२दिय नव९वान मैद३उर सप्तक७मारिय ॥

भल्लुकप१४हिँ दस१०भेदि पंच५करि गज५हिँ प्रहारिय ॥

वपु नील६तीस३०घत्तिय बिसिख ब्रह्मदत्त वर अस्त्रवल ॥

सुग्रीव७ऋषभ८अंगद९द्विविद१०खंडितकिय अतिकोप खल ॥३४॥

फिर काले छाग ( वकरे ) का गला पकड़ कर सर-  
पत्रों के ऊपर डाल कर अग्नि में डाल दिया इस एक आहुति  
के लगते ही प्रचंड अग्नि बढा और दाहिनी ओर उवाला बढकर हवि को  
ऊपर ही अंठण करलिया उस समय इन्द्रजित् ने ब्रह्म अस्त्र को उसमें हो-  
मा और उसीके मंत्रों का जप किया जिससे मंत्रेहुए कवच धनुष और  
रथ उस अग्नि में से निकले तिन सहित भयंकर युद्ध करने को गुप्त होकर  
आकाश मार्ग में चढा ॥ ३२ ॥ बाकी के राक्षस क्रोध करके उसके सहायक  
हुए जिनसे दुष्ट (इन्द्रजित्) ने कहा कि शत्रु रूपी तुणों के अग्नि होजाओ  
? मेघनाद ने, इसप्रकार सम्पूर्ण २ सेना को ३ निर्भय मेघनाद ने वानरों के  
शरीरों में बाण भरकर भय दिया ॥३३॥ ४बाण५सुन्दर६रीछों के राजा जाम्ब  
वान के७बाण वाले(छुसेड़े)८ब्रह्मा के दिपेहुए श्रेष्ठ अस्त्र के बल से ॥ ३४ ॥

इत्यादिक भट अखिलकुणपशकतिकतिक मूढकरि ॥

सरश्रसिस्पदिसंशमूलभयद बहुबरसि अनखभरि ॥

सानुज रघुपति सीस आनि बरख्यो पुनि आसुग ॥

विविध वेध किय वीर जुत विस्मय भ्राताजुगर ॥

प्रेभु कहिय अहो लखन लखहु अस्त्र ब्रह्म दारुन असह ॥

हनि सबन मूढ करि तुमहमहि उदत जै हैं दुष्ट यह ॥३५॥

सहहु अज्ज सौमित्रि परख बिकांत शीरुरपन ॥

इतीकहत इंद्रजित घुमडि सरबुंद तजिय घन ॥

अगजंगमके ईस समर सानुज अचेत हुव ॥

अविभीषन श्रवजांगरधरनि सब मूढ गिरे घुव ॥

तव जय मनाय रावनतनय कंटक नैर प्रवेसकिय ॥

इत आर्जनेय श्रावन अनुज दुहुँ सरंग फिरि सोधदिय ॥३६॥

दोहा

दिनपंचम पलव खिल रहत, इम वासवजित एह ॥

सत्तसहिकोटिन ६७००००००० कपिन, गो मुख्यन हनि गेह ॥३७॥

( पट्टपात् )

उल्का कर गहि इतहि वीर बजांग श्रविभीषन ॥

१ कितनों को मुर्दे और कितनों को २ मूर्छित करके ३ कटारी ४ छोटे भाई सहित रामचन्द्र के ऊपर ५ बाण, ६ रामचन्द्र ने कहा कि हे लक्ष्मण देखो आश्चर्य करानेवाला ब्रह्मअस्त्र सहन करने योग्य नहीं है, अन्य सबको मारकर मुझको और तुमको मूर्छित करके यह दुष्ट अनज होकर जावेगा ॥ ३५ ॥ हे लक्ष्मण आज इस अस्त्र को सहन करो वीर और कायरों की यही परीक्षा है. चराचर के स्वामी युद्ध में छोटे भाई सहित अचेत होगये और विना विभीषण और हनुमान के सब मूर्छित होकर भूमि पर गिरगये ७ नगर में गया, इधर ८ हनुमान और विभीषण ने युद्ध भूमि में फिरकर सबका शोधन किया ॥ ३६ ॥ (अठारह दिनेष नेत्र के पल मारने की एक काष्ठा और दो काष्ठा का एक लव हेमचन्द्र के मत से होता है ऐसे) पांच लव दिन बाकी रहते इसप्रकार इंद्रजित सदसठकोड़ मुख्य वानरों को मारकर घर गया ॥ ३७ ॥ अंगारे अथवा जलते हुए काष्ठ तथा सुसाल

मृत१जीवन२सुधि करन फिरे रनअजिर महामन ॥

निसातिमिरविच निहि सकल मृत१मूढ२सम्हारे ॥

जांबवानढिग जाय यातु इम वचन उचारे ॥

भल्लुकअधीस तव असु भवुक गदित एह करि कर्णगत

मैं रच्छ कहिय असु खिल बिकल नैनन तोहि न लाखिसकत ३८

( दोहा )

जातैं सुप्रज अंजना पुनि कृतार्थ पवमान ॥

कहहु विभीषन सो ससुभ, मारुति जीवत वा न ॥ ३९ ॥

( पटपात )

कहिय विभीषन केम लंघि रघुनाथ१सलक्षन२ ॥

तजि अंगद१सुग्रीव२पवनसुतमाँहिँ प्रीति घन ॥

जंपिय यह सुनि जांबवान जो वह असु धारत ॥

तो कुणपहु सब जियत नतो जियतहु मृतही मत ॥

यह सुनत आय मारुति निकट पुच्छिय रिच्छहिँ परसिपय

तव कहिय वीर आवहु तुमहिँ विरचहु सवन विसल्लय१भय२॥४०॥

जावहु मारुति सर्जव लंघि गिरि तुंगे हिमालय ॥

अग्न कर्नकमय अद्रि अृपभ१, कइलास तारमय ॥

दोउन२विच है दीप्त इक्ष१औपधगिरि उत्तम ॥

(चिरागें) हाथों में लेकर हनुमान् और विभीषण मेरे जीवितों की सोध करने को रण के चौक में फिरे जाम्बवान के पास जाकर राजस (विभीषण) ने कहा कि हे रींछों के राजा! तेरे प्राण कुशल हैं? यह विभीषण का कहाहुआ सुनकर जांबवानने कहा कि मेरेकुछही प्राण बाकी होने से विकल हूं और नेग्रों से तुझको नहीं देखसक्ता ॥ ३८ ॥ जिस पुत्र के होने से अंजना अष्टसन्तानवाली हुई औरपवन भी कृतार्थ हुआ वह शुभ हनुमान जीवित है अथवा नहीं ॥३९॥ रामचन्द्र और लक्ष्मण को छोड़ कर हनुमान में तेरी अधिक प्रीति है ३ जाम्बवान ने कहा कि जो हनुमान जीवित है तो ये मरेहुए भी सब जीते हैं नहीं तो जीते हुए भी मेरे विचार से सब मरे हुए हैं जब हनुमान ने समीप आकर पग स्पर्श करके पूछा तब जांबवान ने कहा कि हे वीर सबको साल रहित और भय रहित करो ॥४०॥ ४ शीघ्र १ ऊँचापर्वत २ सोने का पर्वत है ३ चाँदी

तामैं औपध अखिल लेहु तिनमाँहि इतोसम ॥

संधानकरी१संजीवनी२खलि विसल्लयकरनी३विदित ॥

चौथी४सुवर्णकरनी४उचित इन्ह लहि आवत वेग इत ॥४१॥

इक गिरि तब आरोहि उडिय मारुति अंबरमग ॥

पैठि गयउ वह पुहबि भयउ कंपित जबकरि जग ॥

वहै रविमग हिमवान१लांघि लखि ब्रह्मकोसर २ बर ॥

रजतालैय३सक्रुगृह४रुद्रसरमोक्ष५पुण्यपर ॥

हयग्रीव६दरस करजोरि करि निजबल छेकत गैरगत ॥

ब्रह्मसर७लखिय जहँ नित्य बहु वैवस्वत किंकर रहता४२॥

वज्र८ वैश्रवन९निलय सूर्यप्रभ१०सूर्य निबंधन११॥

ब्रह्मासन१२ लख लखिय रुद्रधनुथान १३महामन ॥

निरखि भूवल्यनाभि१४गन सु नंदी१५गनेस१६गुह १७ ॥

बहु कन्याजुत विदित उमा१८सद्धत क्रीडासुह ॥

हिमवतसिला१९रुकइलास२०लखिकनककटकलखिकृपभ२१धर

(रूपे) का पर्वत है इन दोनों के बीच में औषधियों का पर्वत है उसमें सब औषधियाँ हैं जिनमें से तुम इतनी सी लेना कि एक तो सन्धानकरी (लगाते ही घाव को भर देनेवाली) दूजी संजीवनी (मरे हुएों को जिलानेवाली) तीसरी विशल्यकरणी (अंगों की पीड़ा दूर करनेवाली) और चौथी सुवर्णकरणी (घाव आदि से हुई विवर्णता को दूर करके अंग सुन्दर करनेवाली) इनको लेकर जल्दी आओ ॥ ४१ ॥ १ तब हनुमान एक पर्वत पर चढ़कर उड़ा वह पर्वत २ भूमि में घुसगया ३ सूर्य के मार्ग से हिमवान पर्वत को लांघ कर श्रेष्ठ ४ ब्रह्मकोश (स्थानविशेष) ५ रूपे का पर्वत ६ इन्द्र का घर ७ त्रिपुर के मारने को जिस स्थान पर महादेव ने बाण छोड़ा था उस पवित्र स्थान पर होकर ८ आकाश में गया ९ यमराज के सेवक रहते हैं उन को देखे ॥ ४२ ॥ फिर वज्र के अधिष्ठाता देवता रहते हैं उनको देखकर कुबेर का घर, सूर्य की कान्ति के समान कान्तिवाले सूर्यगणों के मिलने का स्थान, ब्रह्मास्त्र के अधिष्ठाता देवताओं के रहने का स्थान देखकर महादेव के पिनाक नामक धनुष रहने का स्थान और भृगुल का नाभिस्थान (प्राजापत्य स्थान) को देखा और नन्दीगण गणेश स्वामिकार्तिक और बहुत कन्या सहित पार्वती को क्रीड़ा करते देखा



इनदुहुँन२ बीच दीपित लखिय स्वसनंजात औषध सिखर ॥४३॥  
 अर्थी आवत लखि रु भये व्यवहित औषध सब ॥  
 रे गिरि दुष्ट उठाय तोहि लैहों अकिखिय तव ॥  
 करि गर्जन अतिकोप गिरि सु उप्पारि हत्थ गहि ॥  
 आयउ मारुति अतुल चपल निज कटक मज्झ चहि ॥  
 सुंघाय प्रभुहिँ सानुज सकपि किय समस्त सबबिधि कुसल ॥  
 पहुँचाय संग तस थान पुनि बाहुरि प्रभु भिँटिय प्रबला ॥४४॥  
 कहिय तबहि कपिराज अहो रावन नहि आवत ॥  
 उल्का गहि सब अडर पुरी प्रबिसहु जयपावत ॥  
 सहँसन उल्का सुनत पकरि कपि रिच्छ धसे पुर ॥  
 दूजी२बेरहु जुद्ध करे गढ१गृह२हय३सिंधुर४॥  
 जातु५हु सदार सहँसन जरे सत जोजन सुचि रव सुनिय ॥  
 रघुवरहु त्योंहि निजधनु करखि कौशाँप घरघर वान किया ॥४५॥  
 कुंभकरन सुत तबहि दुष्ट कुंभ१रु निकुंभ२दुव३॥  
 अपरँ अकंपन१अरु प्रजंघ२रूपाल्ल३धीर धुव ॥  
 जिम सोनिर्तदृग४जातु सुभट इत्यादि दसानन ॥  
 पठये बहुरि प्रकुप्पि घेर पावकं आकुल घन ॥  
 तिन आय रचिय प्रभुदलँ तुमुल तँहँ अपुव्व अंगद लरिया  
 तारेयँ काय अंतर तबहि गदा अकंपन घोर दिय ॥ ४६ ॥

१ हनुमान ने ॥ ४३ ॥ २ याचना करनेवाले को आता हुआ देखकर सब औषधियाँ गुप्त होगई ३ रामचन्द्र को छोटे भाई सहित वह जहाँ सुँघाकर वानरों सहित सबको कुशल किया, फिर उस शिखर को उसके स्थान पर पहुँचा कर पीछा आकर फिर रामचन्द्र से मिलता ॥ ४४ ॥ सुग्रीव ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि रावण युद्ध करने को बाहर नहीं आता इसलिये सब सुसाले (चिरागें) ले ले कर निर्भय होकर पुरी में घुस जाओ ४ राक्षस भी स्त्रियों सहित हजारों जल गये उस ५ अग्नि का शब्द सौ जोजन तक सुना ६ राक्षसों के घर घर में बाण करदिये ॥४५॥ दूसरा अकंपन ७ शोषिताल नामा राक्षस ८ अग्नि के घेरे से बहुत व्याकुल होकर ९ रामचन्द्र की सेना में भयंकर युद्ध १० अंगद के शरीर में ॥४६॥

तस प्रहार लहि चेत अद्रि डारिय इक अंगद ॥

कियउ अकंपन कुणप मारि कौणप असेस मद ॥

सोनितदृग तब असह दये अंगद विग्रह सर ॥

छुरछुरप्रनाराच अबच्छदंत ४८ बिपाट ५ वर ॥

बलिकर्ण ६ सिलीमुख ७ सल्लय ८ बहु ते सहि अंगद कुदितव

रथ १ चाप २ वान ३ तस तोरि रन सूर धरनि डारे ति सब ॥ ४९ ॥

ढब्बि तबहि असि ढल्ल रचिय सोनितलोचन रन ॥

तहँ मलंगि तोरिय छिन्निलिय असिहु बिचच्छन ॥

फलक तास तिहिँ फारि सूर मंडिय बरसंगर ॥

सु लखि अयोमय अरुनैन लिय घोर गदा कर ॥

ताकै प्रजंघ १ यूपाक्ष २ दुव २ दुव सहाय हरवल्ल वडि ॥

अंगद सहाय मैद १ २ द्विविद २ पव्वर्थ डारिय विजयपडि ॥ ४८ ॥

तब प्रजंघ तरवारि पकरि दोरयो अंगदपर ॥

अस्वकर्ण द्रुत इक्क हन्यो खल बपु वासवहर ॥

बलि मुठिय यह बाहु अबनि डारयो प्रजंघ असि ॥

खलहु मुठि तब खिज्जि हनी अंगद ललाट हसि ॥

कछुकाल सहि रु लहिचेत क्रम कपि प्रजंघ सिर कटिलिया

यूपाक्ष लखत भातुँज मरन रथसन कुद्वि कृपान लिय ॥ ४९ ॥

सचरणागदम्

तहाँ द्विविदनैँ यूपाक्षके उरमैँ प्रहारकरि ताकाँ दोहूँ करनसौँ  
गाढो गहिलयो ॥

१ पर्वत २ सम्पूर्ण राक्षसों का मद मास्कर अकंपन को ३ मुर्दा कर दिया ४ शोणिताक्ष ५ अंगद के शरीर में असह वाण दिये, "छुर से आगे लेकर शल्लय पर्यन्त वाणों के भेद हैं" ॥ ४७ ॥ ६ तरवार और ढाल को धाम (पकड़) कर ७ शोणिताक्ष ने युद्ध रचा ८ विचक्षण ९ अंगद ने कुद कर उस राक्षस की उस १० ढाल को फाड़कर ११ अष्ट युद्ध किया जिसको देखकर शोणिताक्ष ने १२ लोहे की बनी हुई १३ आगे बढ़कर ॥ ४८ ॥ १५ इन्द्र के पोते अंगद ने १४ अश्वकर्ण नामक वृक्ष की शाँघ उस दुष्ट के शरीर में दी १५ फिर १७ भतीजे का मरना देखकर १८ खिन्न लिया

तब भ्राताकोँ पकस्यो निहारि सोनिताक्षहू द्विविदके उरमें अ-  
नेक प्रहार करत भयो ॥

दूजी२वेर दुष्टनैँ गदा उठाई देखि द्विविदनैँ ताको बाहु मरोरि सो  
ही गदा लैकैँ दोहू२दुष्टनकैँ प्रचुर प्रहार मारे ॥

अरु लोहितनेत्रको मुख नखरनैँसाँ बिदारि ताके अंगद पुहवी  
पैँ पीसिडारे ॥ ५० ॥

द्विविदनैँ अैसेँ लोहितनेत्रकोँ हन्यो देखि मैदनैँ यूपान्नहू मारिलयो  
अरु अवसेस अनीक छिन्नभिन्नहोय कुंभ१निकुंभ२के सरनगयो ॥

भजी सेनाकोँ बिस्वासदैकैँ कुंभनैँ द्विविदकेँ एक१बान मारयो ॥  
तासाँ बिसेस बिहलहोय कपिकुंजरनैँ भूपति सम्हास्यो ॥ ५१ ॥

( दोहा )

मैदहु लखि भ्रातहिँ गिरत, दई सिला इक१डारि ॥

सोहु कुंभ तिच्छन सरन, दई सबेग बिदारि ॥ ५२ ॥

कुंभ दयो सर मैदउर, यहहु पस्यो अनचेत ॥

मातुल दुवश्लखि मूढ निज, अंगद कोप उपेत ॥ ५३ ॥

[ रौला ]

तबहि कुंभ सर तीन३पंच५नाराच प्रहारिय ॥

सहि अंगद बहुसैल डंकि२ रक्तससिर डारिय ॥

कट्टि गिरिन पुनि कुंभ बान अंगद भूअंतर ॥

दये ति सहि अंगदहु कुपि तरुसाल लियउ कर ॥ ५४ ॥

आवत छेदि वहैहु दयो हनि कुंभ सत्त७सर ॥

कुंभ विसिख सहि कलह भयउ अंगद अचेत भर ॥

१ बहुत २ शोणिताक्ष के मुख को ३ नखों से ४ भुजबंध  
॥ ५० ॥ ५ बाकी की ६ सेना ७ बानरों में हस्ति भूमि पर गिरगया ॥ ५१ ॥

८ इसप्रकार अपने दोनों मामों को ९ अचेत देखकर १० अंगद कोप स-  
हित हुआ ॥ ५२ ॥ १ छोटे बाण जो चलते समय दृष्टि नहीं आते २ कुदकर  
३ भौह के बीच में ॥ ५३ ॥ ४ कुंभ का बाण सह कर ५ युद्ध में

जांबवान मुख सुनत राम पठये सहाय जब ॥  
 तेहु रुके सहि तीर भयउ सुग्रीव अगग तब ॥ ५५ ॥  
 मुक्के गिरि तरु अमित कुंभ सब तेहु कष्टिदिय ॥  
 कुहि तवहि कपिराज कुंभ कोदंड टूककिय ॥  
 बलि सिराहि बहुवेर कह्यो अवसर विक्रम करि ॥  
 कुहि सुनत यह कुंभ भुजन सुग्रीव लयोभरि ॥ ५६ ॥  
 करिय मल्लरन कलुक बहुरि कपिराज महाबल ॥  
 अर्णवविच कुंभहि पछारि पिक्खिय ताको तल ॥  
 परत सिंधु जल उफनि बढ्यो दिसदिस थल बोरयो ॥  
 कुंभ चेतलहि कुहि जंग आय रु पुनि जोरयो ॥ ५७ ॥  
 कपिपतिउरै तँहँ कुंभ मुष्टि बज्रौपम मारिय ॥  
 तिहिँ प्रहार तस कवच तोरि बँपु मर्म विदारिय ॥  
 तब सुग्रीवहु तर्मकि कुंभउर मुष्टि पातकिय ॥  
 पापी तिहिँ तजि प्रान लोक अर्जित पँढतिलिय ॥ ५८ ॥  
 गहि निकुंभ तब परिघ चल्यो कपिपतिहिँ प्रचारत ॥  
 बदन फारि अतिबेग मत्त गोचर पर मारत ॥  
 परिघ उठावत पिक्खि धमकि अंबर<sup>१</sup>धर<sup>२</sup>धुज्जिय ॥  
 प्रखर सोहि खलपरिघ उमगि मारुति निज उरालिय ॥ ५९ ॥  
 लगगत अनिल बच्छै टूकटूकन वह तुष्टिय ॥  
 मल्लपि तवहि हनुमान दुष्ट उर मुष्टिघात दिय ॥  
 कलु खिन घुम्मि निकुंभ जाय पकरयो समीर<sup>३</sup>सुत ॥

१ जांबवान आदि २ अगणित ३ धनुष को तोड़ डाला ॥ ५६ ॥ ४ समुद्र में  
 ॥ ५७ ॥ ५ सुग्रीव के उर में ६ वज्र की जिसको उपमा लगे ऐसी ७ शरीर के  
 मर्मस्थान को विदारण कर दिया ८ क्रोध करके कुंभ के उर में मुष्टि मारी  
 जिससे उस पापी ने ९ जैसे पाप कर्म इकट्ठे किये थे तैसे ही लोक का  
 १० मार्ग लिया अथवा लोक जिस मार्ग जाते हैं उस मार्ग गया अर्थात् म-  
 र गया ॥ ५८ ॥ ११ जो दृष्टि में आवे उसी पर १२ तीखा १३ हनुमान ने ॥ ५९ ॥  
 १४ हनुमान के १५ हृदय में लगते ही १६ कूदकर १७ हनुमान को

मारुति तव पुनि मुष्टि दुष्ट उर अतुल हनी दुत ॥ ६० ॥

इहिं छत होय अचेत परत रक्खस गहि पीसिय ॥

कुदिकुद्वि तसकाय भिन्न मस्तक मरोरिलिय ॥

कौणप खटकुंभादि हनै इहिं गति नवमी ९ दिन ॥

सुनत धारि अतिसोक अधिक बिलप्यो रक्खसइन ॥ ६१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ  
वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ विवाहवेलाव-  
र्णनविषयकबृद्धनवंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपु-  
त्रविकुक्षि ७ कुलकलशजानकीजानिचर्यायामष्टम्या ८९९ दिनव-  
म्य ९ न्तरणावर्णनक्रव्यादमहोदर १ महापार्श्व २ सहितरावणापुत्र-  
त्रिशिरा १ ऽतिकाय २ देवान्तक ३ नरान्तक ४ मरणाइंद्रजिद्वम्हा  
स्त्रव्याकुलससेन्यराघव २ मोहनहनुमदौपधपर्वता ९९ नयनसर्वप्रत्यु-  
ज्जीवनकपिलङ्गादवदापननवमी ९ रणरात्रिप्रजङ्गा १ ऽकंपन २ यूपान्त  
३ शोणिताक्ष ४ सहितकौम्भकर्णिकुम्भ १ निकुम्भ २ निपतनं  
द्विपञ्चाशत्तमो ५२ मयूखः ॥ ५२ ॥ आदितश्चतुर्णवतितमः ॥ ९४ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

१ दुष्ट निकुंभ के उर में २ शीघ्र ॥ ६० ॥ ३ हस घाव से ४ कुंभ को आदि लेकर  
राक्षसों को नवमी के दिन मारे ५ राक्षसों का राजा (रावण) ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
चाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन विषय में  
सूर्यवंश को बढ़ानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि  
कुल के कलश जानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में अष्टमी के अंत तक  
के युद्धवर्णन में राक्षस महोदर, महापार्श्व सहित रावण के पुत्र त्रिशिरा  
अतिकाय देवान्तक नरान्तक का मरना, इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र से व्याकुल हो-  
कर सेना और राम लक्ष्मण का मूर्छित होना, हनुमान् का औपधि के पर्वत  
को लाना, मय का फिर जीवित होना, यानरों का लंका में अग्नि लगाना,  
नवमी के युद्ध में राक्षस प्रजंघ, अकम्पन, यूपान्त शोणितान्त सहित कुंभ-  
कर्ण के पुत्र कुंभ निकुंभ को मारने का यावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥  
और आदि से औरानवे मयूख हुए ॥ ६४ ॥

( षट्पात् )

सुनि मृत सोदर सुतन सावि कछु पुनि प्रकुप्पि सठ ॥  
 पिल्लयो तव खरपुत्र हनन मकराक्ष महाहठ ॥  
 करि प्रनाम धँकि कडिय दै सु लंकेस प्रदक्खिन ॥  
 चढि रथ हँकिय चंड दिसन मंडत रज दुर्दिन ॥  
 गिरिगय प्रतोद तस सूतकर ध्वजहु तुष्टि छोनियँ ढरयो ॥  
 हतसत्त्व हयहु जानुन जकिय यह कुंसोनहु न अदरयो ॥१॥

( दोहा )

यह कुसोन सु न अदरयो, अर्च्युत दल पुनि आय ॥  
 रच्यो सतत मकराक्ष रन, बान निकैर बरसाय ॥ २ ॥

( षट्पात् )

प्रहरन जातुन पाय भीत कपि कटक चलयो भाजि ॥  
 व्है तब राम हरोल संधै सत्रुन अटक्यो साजि ॥  
 देखि प्रभुहिँ तिहिँ दुष्ट कहिय दुरि दंडक कानन ॥  
 जब मारयो खरँ जनक अज प्रविसहु सुत आनन ॥  
 अभ्यस्त सख जो तव असह सोहि चलावहु सत्रुसिर ॥  
 प्रभुकहिय व्है न बैनन समरँ अखतजहु करि रनअंजिर ॥३॥  
 राम बचन मकराक्ष सुनत मुक्किय अनेक सर ॥  
 कोसलेस तिन्ह कट्टि अप्प मुक्किय खल उप्पर ॥

१ अपने भाई और पुत्रों को १ मरेहुए सुनकर २ खर के पुत्र मकराक्ष को  
 भेजा ४ क्रोधित होकर निकला ५ उसके साराथि के हाथ से ६ चाबक गिर-  
 गया ७ ध्वजा तूटकर भूमि पर गिर गई ८ पराक्रम रहित होकर घोड़े भी  
 घुटनों के बल गिर गये ९ इन अपशकुनों को भी नहीं माना ॥ १ ॥ १०  
 रामचन्द्र की सेना में आकर ११ निरंतर १२ बाणों का समूह वर्षाकर ॥ २ ॥  
 १४ राक्षसों के १३ शस्त्र पाकर १५ शत्रुओं के समूह को रोका १६ दंडक  
 वन में छिपकर १७ मेरे पिता खर को मारा था उसीके पुत्र के १८ मुख में  
 आज प्रवेश करो, जो तुम्हारे १९ अभ्यास कियेहुए असह शस्त्र हों वह ब-  
 लाओ २० रामचन्द्र ने कहा कि बचन से २१ युद्ध नहीं होता इस २२ युद्ध  
 के अलावे मैं युद्ध करके अस्त्र छोड़ ॥३॥

खलहु प्रंदर ते खंडि कियउ अद्रुत अतिसय करि ॥

तब प्रकुप्पि दै तीर हरिहु तस चाप लयो हरि ॥

पुनि मुक्कि अट्टनाराच प्रभु सूतशतुरग रथसंहारिय ॥

खरपुत्र तबहि सिवदंत खर धकि त्रिसूल निजकर धरिया ॥

वहहु कट्टि अखिलेस अधिक सोहिय रन अंगन ॥

मुट्टि बंधि मकराक्ष समुख दोरयो जब हठसन ॥

पावकअस्त्र प्रयोग बिरचि तब राम बानदिय ॥

अहं दसमी १० मधुअंसित लरत खरतनय प्रानलिय ॥

दससीस सुनत करि सोक हुंत पीसि रदन अतिसय कुपित ॥

हठि तैनय रामलक्ष्मनहनन जेठो<sup>१</sup> पिछिय इंद्रजित ॥५॥

बारिदरय तब सबिध ज्वलन किय हवन पुंब्ब जिम ॥

पैग्य अरुन धरि प्रकट तत्थ तियजनहु गये तिम ॥

सुचिहु पुंब्ब सम सकुन दये उठि अर्चि प्रदक्खिन ॥

चउ४हय रथ तब चट्टिय असह रावनकुमार इन ॥

किय बहुरि नैर बाहिर कटि रु रक्खस मंतन हव्यहुत ॥

पुनि पिहित होय आय रु पैरिग सर वरखत दसतुंडसुत ॥६॥

खल व्यवहित रहि खमग रघुपुं बेधे दुवरोपन ॥

१ उन तीरों को काटकर रामचन्द्र ने भी उसका धनुष काट दिया ४ महादेव का दिया हुआ ५ तीखा त्रिशूल हाथ में लिया ॥४॥ ६ रामचन्द्र उसको भी काटकर अग्नि अस्त्र का प्रयोग करके चैत्र यदि दशमी के दिन १० शीघ्र ११ दन्त पीसकर अत्यन्त कोप में होकर हठ करके राम लक्ष्मण को मारने के लिये १२ बड़े १३ पुत्र इंद्रजित को भेजा ॥५॥ तब १४ मेघनाद ने १५ अग्नि में १६ पहिले किया था उसी माफिक १७ होम किया १८ इंद्रजित लाल रंग की पाद्य धारण करके गया और इसी प्रकार स्त्रियां भी वहां पर गई १९ अग्नि ने भी पहले के स मान दहिनी और २० ज्वाला (भाल) उठाकर शकुन दिये २१ कुमरों का सूर्य २२ नगर के बाहर निकल कर २३ भंत्रों के साथ हव्य को होमा फिर २४ छिपकर बाणों की वर्षा करता हुआ २५ दशमुख का पुत्र (मेघनाद) रामचन्द्र की सेना पर २६ गिरा २७ उस दुष्ट ने २८ आकाशमार्ग में २९ गुप्त रहकर २९ राम लक्ष्मण को ३० बाणों से बेधे और अत्यन्त कोप से बंदर और रीछों को मारा

मारै रन तिम अमित कीस १ भल्लुक २ अतिकोपन ॥

लखन अखिख सु लखिय प्रभुहिँ सासन तव पाऊँ ॥

ब्रह्मअस्त्रकरि अवहि निखिल कव्याँद नसाऊँ ॥

प्रभु कहिय इक्क १ अपराधपर कुल रक्खस उचित न कैदन

इहिँ हननजतन करिहँ अपर रावनसुत बचिहँ न रन । ७ ।

प्रभु आसय यह पिकख स्वपुर घननादँ प्रबेसिय ॥

मायामय सीता बनाय निजरथ चढाय लिय ॥

खल तिहिँ राघव लखत हनन निकस्यो लंकासन ॥

सहँसन कपि तव समुख जुगे मारुतिमुख जुझन ॥

मैथिली लखत आनिल दुमन लग्गो सोचन कष्टलाहि ॥

तहँ दुष्ट हनन रघुवरतियहिँ गहिय खग कच तास गहि ॥ ८ ॥

रामराम वह रटिय मलिनपट १ वपु २ मायामय ॥

अनिलसुतहु तव असु डारि अखिखयरे निर्दय ॥

अबला यह किम याहि हनन तेरी मति होवत ॥

स्त्रीघातिन जे लोक रोक सहिहै तहँ रोवत ॥

इन्द्रजित कहिय हनि याहि अय जवकर लैहौँ सवन जिय

तियघात पाप हनि ताडका क्यों नहिँ चिंतन राम किय ॥ ९ ॥

१ लक्ष्मण ने यह देखकर रामचन्द्र से कहा कि आप की २ आज्ञा हावे तो ब्रह्मास्त्र से ३ सम्पूर्ण ४ राजासों का नाश कर दूँ, रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि एक के अपराध से सब कुल का नाश करना उचित नहीं इसके मारने का कोई दूसरा उपाय करेंगे ॥ ७ ॥ १ मेघनाद ने लंका में जाकर ६ हनुमान् आदि ७ सीता को देखकर हनुमान् उदास हुआ, विचारने लगा कि क्या किया जावे इतने में ही दुष्ट मेघनाद ने सीता के केस पकड़ कर खड़ा लिया ॥ ८ ॥ हनुमान् ने आसु डालकर कहा कि अरे निर्दय यह स्त्री है इसको मारने को तेरी बुद्धि कैसे होती है स्त्रियों के मारनेवालों के लिये जो लोक हैं तहाँ जाकर रोता हुआ कैद भुगतगा, इन्द्रजित् ने कहा कि इसको मारकर राघव ही तुम समय के जीव लूंगा और ताडका को मारने समय रामचन्द्र ने स्त्री मारने का पाप क्यों नहीं याद किया ॥ ९ ॥



कहि इस रावनकुमार धार सिंत असि उवाय धुव ॥

दै उपबीत उतार मारि भुवजा डारी भुव ॥

यह लखि घोर अनर्थ भीत प्रतिमुख कैपि भजिय ॥

मारुति तिनकहँ मोरि जुरन अग्रेसर गजिय ॥

सयँ निज उठाय महती सिला दससिरसुत सिर मुक्किय  
वह टरयो सरथ तब हनि इतरँ क्रव्यादँन छिति गोन किया ॥१०॥

कपिहंत लखि निज कटक जुरयो दुद्धर बांसवजित ॥

करि इकत निजँकोस अनिलअंगज अखिय इत ॥

जिहिँ निमित्तँ सब जुरत सती सीता सु हनी सठ ॥

सब यह प्रभुहिँ सुनाय हुकम सद्धु उद्धत हठ ॥

निज गुलँम सुभट समुझाय इस प्रभुडिग आयउ पोनेसुव ॥

इन्द्रजित गयउ उत हवनथल भल निकुंभिला नाम भुवा ॥११॥

दोहा

रावन तनय निकुंभिला, ज्वलन किन्न हुत जाय ॥

हव्य गिरत वह तुष्ट हुव, बहुविध अर्चि बढाय ॥१२॥

॥ षट्पात ॥

१ तीखे खड्ग को निश्चय ही उठाकर जनेऊ उतार दिया (एक कंधे पर तरदार मार कर शरीर को तिरछी दो चीर कर देने को जनेऊ उतारना कहते हैं) और २ भूमि से पैदा हुई (सीता) को भूमि पर डाल दी ३ बन्दर पीछे भागे उनको हनुमान ने उलट्टे मोड़ कर युद्ध करने को आगे होकर गर्जना की. ४ अपने हाथ में बड़ी शिला उठाकर ५ दूसरे ६ राक्षसों को मारकर ७ भूमि पर गई ॥ १० ॥ ८ बानरों से अपनी सेना को मरी देखकर ९ इन्द्रजित १० अपने बंदरों को इकट्ठा करके ११ हनुमान ने कहा कि जिसके १२ कारण सब लड़ते थे उस सीता को तो सुख इन्द्रजित ने भारडाली यह १३ रामचन्द्र को सुनाकर जैसा वे हुक्म दें तैसा करो इसप्रकार अपनी १४ सेना के वीरों को समझाकर १५ हनुमान रामचन्द्र के पास आया ॥ ११ ॥ और इन्द्रजित ने निकुंभिला नामक स्थान में जाकर अग्नि में होम किया सो होम का पदार्थ भीतर पड़ते ही बहुत प्रकार की ज्वाला बढ़ाकर वह अग्नि प्रसन्न हुआ ॥ १२ ॥

सुनि इत दोउरन समर जांबवानहिँ प्रभु जंपिय ॥  
 सबल इंद्रजित संग कलह हनुमान घोर किय ॥  
 पातैं भल्लुकईस देहु ताकैहँ सहाय द्रुत ॥  
 यह गय पच्छिम पोरिँ जत्थ हनुमान अरिन जुत ॥  
 करि मंत्र वह जु पैहिलैं कह्यो मिल्यो बज्रवर्षु बाहुरत ॥  
 अंजनातनय शिच्छन अधिपश्रभुडिग मिलिआये प्रनत ॥ १३ ॥

दोहा

प्रभुसौँ अक्खिय पोनसुत, सठ चढाय रथसत्थ ॥  
 सीता कैच गहि सक्राजितैं, अजँ हनी सु अनर्थ ॥ १४ ॥  
 हमबिब्हल देखतरहे, बने न बिपति बिदार ॥  
 माता मारी दुष्ट दैं, आसि उपवीतैं उतार ॥ १५ ॥

( षट्पात )

सुनत बज्र सिर पैरिग गिरे राघवँ भुव रोवत ॥  
 कपिवर सीतल सलिल लगे सिंचन श्रम खोवत ॥  
 इक्खिँ बिबस अग्रजहि किन्न लक्खन आलिंगन ॥  
 कहिय धर्म आगम प्रमेय निरख्यो सु हैहि नन ॥  
 होतो जु धर्म तो धर्मरत तुम यह व्यसन न पावते ॥  
 होतो अधर्म तो कुलसहित पापहिँ नरक पठावते ॥ १६ ॥

( दोहा )

१ हे रीछों के राजा! २ पश्चिम द्वार पर ३ ऊपर कहीं हुई सलाह करके ४ हनुमान पीछा आता हुआ मिला। ५ सीता के केश पकड़कर ६ इंद्रजित ने ७ आज मार डाली सो ८ अनर्थ हुआ ॥ १४ ॥ ९ तरवार की देकर १० जनेऊ उतार दी ॥ १५ ॥ ११ यह सुनते ही मानों मस्तक पर वज्र पड़ा १२ रामचन्द्र राते हुए भूमि पर गिर गये १३ ठंडे पानी से १४ बड़े भाई को बिबश देखकर लक्ष्मण ने उनको भुजों में भरलिये और कहा कि धर्म शास्त्र के प्रमाण से देखा सो धर्म है ही नहीं जो धर्म होता तो धर्म में प्रीति रखनेवाले आप यह दुःख नहीं पाते और जो संसार में अधर्म होता तो कुल के सहित पापी (राघव) को नरक

धर्म१ अधर्म२ उभैरन धुव, यह हठ जानी अज्ज ॥

प्रभु१ जासौं कंकट परे, सकुल दसानन२ अज्ज ॥ १७ ॥

भुगों विभव अधर्म रत१, विपति धर्म रत२ लैत ॥

अज्ज किये मोघ सु उभैर, खल सीता हनि खेत ॥ १८ ॥

धर्म हुतो जो सत्यमय१, ततो अनृतमय२ तात ॥

वखसि राज्य काढत बिपिन, बंध्यो क्यों न विघात ॥ १९ ॥

अग्रज मममत धर्म यह, सत्त७हि प्रकृति समर्थ ॥

तज्यो तुम सु राज्यहिं तजत, ओढ्यो व्यसन अनर्थ ॥ २० ॥

बासवजित डारी विपति, पुण्यरहित अघपूर ॥

उडि निहारहु अप्य अव, दास करत तिहिं दूर ॥ २१ ॥

इम नरलीला अनुसरत, उभयरभ्रात अकुलाय ॥

चउ४सचिवन संजुत चविय, इहाँ विभीषन आय ॥ २२ ॥

( पट्टपात )

अनुज अंक आकुलित बिबिख रघुवरहिं विभीषन ॥

कहिय सोक जिन करहु खलहिं जानहु मायाधन ॥

भजता ॥ १६ ॥ धर्म और अधर्म दोनों ही नहीं हैं यह आज निश्चय जानागया कि जिसमे हे प्रभु! आप तो सुख को काटकर “ कं सुखं कटतीति कडूटः ” पड़े हो और रावण आज कुल सहित है ॥ १७ ॥ दुष्ट इन्द्रजित् ने सीता को मारकर धर्म और अधर्म दोनों को आज झूठा कर दिया ॥ १८ ॥ सत्यमई जो धर्म होता तो पिता ने झूठमई (जिसको नहीं मिलता था उसको) राज्य देकर आप को वन में भेजने समय उसको क्यों नहीं मिटाया ॥ १९ ॥ हे भाई साहिब! मेरे विचार से सातों प्रकृति (राजा आदि राज्य के सात-अंगों) सहित अपने बड़े राज्य को छोड़ने के साथ ही धर्म को छोड़कर आप ने दुःख अनर्थ को धारण किया है ॥ २० ॥ इन्द्रजित् ने पुण्य से रहित पाप की भरीहुई विपत्ति डाली है उसको आप का सेवक दूर करता है सो उठकर देखो ॥ २१ ॥ इसप्रकार मनुष्यलीला करतहुए दोनों भाई अकुला रहे थे वहाँ अपने चारों मंत्रियों सहित विभीषण ने आकर कहा ॥ २२ ॥ छोटे भाई की गोदी में व्याकुल हुए रामचन्द्र को देखकर विभीषण ने कहा कि शोक मत करो इन्द्रजिन को मायाधन (माया ही है वन जिसके ऐसा) जानो-

सीताहिं न लखिसकत आनि मारन कितीक यह ॥

करि मोहित कपिकटक इष्ट सदन पहुँच्यो वह ॥

इक<sup>१</sup>चैत्य<sup>२</sup> जनन<sup>३</sup>होमन<sup>४</sup>उचित थिरनिकुंभिला जागथल ॥

रखित सु जातु महँसन रहसि बौसवजित गो तहँ प्रबल ॥२३॥

( दोहा )

जो अब होमहिं इद्रजित, बिनु प्रत्यहं बनाय ॥

तो अमरनँजुत अप्पतैं, जित्यो दुष्ट न जाय ॥ २४ ॥

खोजैं मोहित राम खिन, इम साया रचि एह ॥

होमकरन दुष्ट सु पिहित, गो निकुंभिला गेह ॥ २५ ॥

हवनतास पूरो न व्है, तोलों भैजहु तथ ॥

कर्मविगारन दुष्टको, सौमित्रिहिं हमसत्थ ॥ २६ ॥

( पदपाठ )

वत्त सुनत यह वीर लैद्युहि पठयो प्रभु लखन ॥

जांववान<sup>१</sup>हनुमान<sup>२</sup>भये संगहि रिपुभखन ॥

अंगद<sup>३</sup>रात्रनअनुज<sup>४</sup>जैवी कोटिन दलसंजुत ॥

गये जहाँ अतिगूढ सविधि होमत रावनसुत ॥

रच्छक तदीय बहु रात्रिचर देखत लखन वानदिय ॥

सर<sup>१</sup>सक्ति<sup>२</sup>कुंत<sup>३</sup>असि<sup>४</sup>तिनहु सजिक्रमिसँमुह घमसान किय<sup>२७</sup>

निज बल सीदत निरखि खिजि असमाप्त हवन खल ॥

यह सीता का देव भी नहीं सक्ता है मारना तो कतनी बड़ी बात है ? वानरों की सेना को इसप्रकार मोहित करके वह अपना प्रिय कार्य साधने को गया है ३ ऋत्विजों के होम करने का उचित यज्ञस्थान जिसका निकुंभिला नाम है ४ हजारों राजसों से रचा किया जाता है वहाँ पर प्रपल ५ इन्द्रजित् गया है ॥ २३ ॥ बिना बिघ्न के इन्द्रजित् होम बनालेगा तो वह दुष्ट ७ देवताओं सहित आप में नहीं जीतने में आवेगा ॥ २४ ॥ लगनाथ मूर्छित हुए रामचन्द्र को देखेंगे तब तक मैं होम कर लूंगा यह विचार कर ८ द्विषकर ॥ २५ ॥ १० लक्ष्मण को हमारे साथ भेजो ॥२६॥ ११ श्री य ही भेजा १२ वेगवान् कोड़ी सेना सहित उस होम की रक्षा करनेवाले राजसों को देखते हैं १३ सामने चलकर युद्ध किया ॥२७॥ १४ अपनी सेना को

उठि स्पंदन आरोहि चलयो सम्मुह जव चंचल ॥  
 मलपि तथ हनुमान जातु सहँसन मोरे जव ॥  
 निरखि ताहि धननाद तकि अकिखय सूतहिँ तव ॥  
 मारुति समीप लै रथ चलहु सारथि तँहँ लैगो सुनत ॥  
 सखहु अनेक मुझे ति सब हनुमानहु किय प्रेतल हत ॥२८॥  
 कंटकपुतहिँ कहिय पवनअंगज अभीतपन ॥  
 जो रावनसनजात रंग तो मोहि देहु रन ॥  
 जीवत अब जैहो न लरत आसुंगपुतहिँ लहि ॥  
 कुपि खलहु कोदंड चंड लिय हनन वाहि चढि ॥  
 लखि ताहि विभीषन लखनहिँ बडि सु दिखायउ होमवन  
 न्यग्रोध इक धननीलनिभं जँहँ सहव्य दीपित ज्वलन ॥२९॥

( दोहा )

कहिय विभीषन लखनहिँ, यह न्यग्रोध उदार ॥  
 यँहँ भूतनहित इंद्रजित अप्पत बँलि उपहार ॥ ३० ॥  
 बनि यातँहि अट्टवैपु, पी छँ लरत प्रचारि ॥  
 जाय न तँहँ धननाद जिम, रचहु अप्प तिम शरि ॥ ३१ ॥

( पदपाठ )

सुनत चाप सौमित्रि करखि आशुति टंकारिय ॥  
 रावन सुतसन शरि मंगि सायकें बहु मारिय ॥  
 तवहि विभीषन तँथ परयो धननाद दिडिपथ ॥

कांपती हुई देखकर यज्ञ को समाप्त किये बिना ही उठकर रथ पर चढ़कर  
 वेग में चंचल होकर चला अपने सारथि से कहा कि हनुमान के समीप रथ  
 लेचल ? अप्पड़ से उन शस्त्रों का नाश कर दिया ॥२८॥ २ कंटक (रावण)  
 के पुत्र से ३ पवन पुत्र (हनुमान) ने निर्भय होकर कहा कि तू रावण से ४  
 उत्पन्न है तो इस रंगभूमि में मुझे युद्ध दे (मुझ से युद्ध कर) ५ पवन के पुत्र  
 से लड़कर जीवित नहीं जावेगा. विभीषण ने ६ लक्ष्मण को ७ होम का वन  
 दिखाया वहां पर नीले मेघ के ९ सदृश एक ८ बड़ का वृक्ष है वहां पर १०  
 हव्य सहित ११ अग्नि प्रदीप्त हो रहा है ॥ २९ ॥ १२ बलि की सामग्री ॥३०॥  
 १३ शरीर को अट्टवैपु करके ॥ ३१ ॥ १४ कान तक खींचकर १५ बाण मारे

बुल्लयो तिहिं खल कुबचं दुष्ट हुव तूहि रामरथे ॥  
 उपज्योऽबद्धयोऽरु सिकख्योऽइहाँ घर हरिमंथक घोर घुन ॥  
 यहँ आय पाप पुत्रहिं हनन देत विरुयँ बनि अपसँउन ॥३१॥

( दोहा )

तातैं जाति१न वंस३तव, हित३न बंधुपन४होहि ॥  
 अरि बाने तू दससिर अनुजँ, मारयो चाहत मोहि ॥ ३२ ॥

( षट्पात् )

कहिय बिभीखन कुटिल दोख मोसिर किम डारत ॥  
 होत पापरत हेर्य प्रथित यह निर्गम पुकारत ॥  
 निलैय प्रज्वलित निरखि कढत को नहि हितकारक ॥  
 अब निज कृत फल उदित मुदित लखखन यह मारकै ॥  
 सुनि यह सुनाय घन खल सबन बुल्लयो जियत न जायहो ॥  
 'सौमित्रि कहिय बैनन स्वबल वदिहैं जबहि बतायहो ॥३४॥  
 वासवजितँ सुनि बहुत बिसिख लखखन उर बेधिय ॥  
 सिंहनाद करि सजवँ कँटुक वच पुनि प्रमुक्त किय ॥  
 खत्रबंधुँ खल राम मूढ भ्रातहिं लखिहैं मृत ॥  
 लखखन अक्खिय लज्ज रंच तव नाँहि कहाँ ऋत ॥  
 सठ छुद्र छोरि बानीसमर क्यों न दिखावत सस्त्रकरि ॥  
 इम अक्खि पंचपनाराच दिय कव्यादेन उर कोपभरि ॥३५॥

१६ तहां १७ मेघनाद क्री दीठ पड़ी १ खोटे वचन बोला २ रामचन्द्र को लानेवाला ३ घर रूपी चिणे का अंधंकर ४ गुण ५ नकटा होकर ६ अपशकुन देता है ॥ ३२ ॥ ७ हे रावण के छोटे भाई जो पाप में रत होता है वह छोड़ने योग्य (त्याज्य) होता है यह १० वेद ८ प्रसिद्ध कहता है १ घर को जलता हुआ देखकर अपना हित करनेवाला उसमें से कौन नहीं निकलता है २ मारनेवाले लक्ष्मण ने कहा कि वचनों से अपना बल घटाता है उसी भांति बतावेगा जब मानूंगा (जब तुझको वीर मानूंगा) ॥३४॥ १४ इन्द्रजित् ने यह सुनकर बाणों से शीघ्र कड़वाँ वचन बोला नीच क्षत्रिय दुष्ट और मूर्ख रामचन्द्र अपने भाई को मरा हुआ देखेंगे लक्ष्मण ने कहा कि मैं सत्य कहता हूँ कि तुझको कुछ भी लज्जा नहीं है हे नीच मूर्ख वचन का युक्त

इंद्रजितहु तव अनखि सेसवपु हनिय तीन३सर ॥

तव लक्ष्मन ज्याघात ध्वान परिय धरअंबर ॥

वासवजितको बदन जाहि सुनतहि विवर्ण हुव ॥

कहिय विभीषन सकुन भले अब खल गिरिहै भुव ॥

सुनि सेस बहुरि दिन भूरि सर खल हुव मूढ मुहूर्त मित ॥

लहि भान बहुरि रिपु लक्ष्मनहि जुज्झत बुल्लिय इंद्रजित॥३६॥

अगै सोदर उभयअवनि सरबंधि लटाये ॥

यहै स्मृति न तो अबहु चखिख मम प्रदर चलाये ॥

इम कहि लक्ष्मन अंग सप्त७मारे सठ सायक ॥

सतक१००विभीषन अंग दसक१०मारुति उर घायक ॥

लखि एह हसि रु लक्ष्मन कहिय रन असो भीरुहु रचत ॥

पुनि कटि कवच ताको प्रखर दिय बहु आसुग रारिरत ॥३७॥

तबहि इंद्रजित तमकि सेस कवचहु हुत कटिय ॥

दोउरन अति छत देह तदपि कोउ न लाँचि लटिय ॥

एकादसि दिन अस्त भयो इम लरत महाभर ॥

निसँ आगम नहिँ मुरिग जुनिग पुनि समर संधि सर ॥

निस लरत भयो द्वादसि१२दिवस तदपि मुरे नहि लरन तकि

ससचिव सिराहि रावनअनुज लख्यो यहहु रसबीर छकि॥३८॥

छोडकर १९राक्षस के डरमें ॥३५॥ २ लक्ष्मण के शरीर में ३ धनुष की, प्रत्येक के आघात से भूमि और आकाश को शब्द से पूर्ण कर दिया जिसके सुनते ही इंद्रजित का मुख पीका पड़ गया ४ बहुत बाण दिये ५ दो घड़ी तक हु-  
ष्ट मूर्च्छित होगया ॥ ३६ ॥ ६ पहिल दोनों सगे भाइयों को बाणों से बांध-  
कर ७ भूमि पर ८ गुड़ादिये (लुडका दिये) थे यह याद नहीं है तो अब भी  
मेरे चलाये हुए ९ बाणों का स्वाद चख १० बाण ११ हनुमान के डर में मारे १२  
ऐसा युद्ध तो कायर भी करते हैं १३ तीखे १४ बाण दिये ॥ ३७ ॥ दोनों के श-  
रीर बहुत १५ घाव युक्त होगये १६ तो भी १७ नमकर कोई १८ पीछा नहीं फि-  
रा १९ बड़े भार सहित एकादशी का दिन अस्त हुआ और २० रात्रि आ-  
जाने पर भी २१ नहीं मुड़े २२ अपने भंत्रियों सहित लक्ष्मण और इंद्रजि-  
त की प्रशंसा करके २३ विभीषण भी लड़ा ॥३८॥

भल्लुकपति निज भटन सहित मारे बहु रक्खस ॥

सेसहि पिठि चढाय लखो मारुति तिम लै जस ॥

खलहु विभीषन तजि रु बहुरि लखन सन जुजिभय ॥

दोउन २ दाव दिखाय हथलाघव अपुव किय ॥

सरलैन १ जुरन २ तक्कन ३ खिचन ४ छोरन ५ लग्नन ६ परसपर ॥

कोउ न निहारि इनको सकिय किय इम नर १ रक्खस २ समर ३ ११ ।

द्वादसि १ २ दिन पुनि अस्त भयउ हुव रति भयंकर ॥

रुधिर नदी जव जोर चली बढि विविध दिगंतर ॥

न तहँ पवन संचरिय नत्थि प्रजरिग तहँ पावक ॥

लोकन मंगल होहु बंदिय पुनि सदय स्वभावक ॥

सोमित्रि तबहि रिपु चउ ४ हयन हुलासि च्यारि ४ सायकहनै ॥

तस मूत मारि इक १ भल्ल करि दये विसिख खलकै घनै ॥ ४० ॥

रथि १ सारथि २ पन उभर्य २ बिरचि तब जुरिग इंद्रजित ॥

इहि अंतर बहु विसिख सेस पुनि हनिय सुरनहित ॥

खल तिनसौं हुव खिन्न लखि सु चउ ४ कीस चलाये ॥

रभस १ प्रमाथी २ सरभ ३ गंधमादन ४ इत आये ॥

इक १ इक १ प्रहारि इक १ इक १ तुरग मारि चउ ४ हि पटके धरनि ॥

रथ तोरि कियउ रक्खस पदग उगिगय इम तेरसि १ ३ तरनि ४ १ ।

तबहि इंद्रजित कहिय सत्य अप्पन क्रव्यादन ॥

मैं जावत पुरमज्भ अपरै स्यंदन चढि आवन ॥

१ जाम्बवान २ लक्ष्मण को पीठ पर चढाकर ३ हनुमान लड़ा ४ मनुष्य (लक्ष्मण)

और राजस ने ५ युद्ध किया ॥ ३९ ॥ ६ भयंकर राजा हुई ७ वेग के साथ ८ न तो बहा

पवन चल सका और ९ न अग्नि जला और दया के स्वभाव से लोकों ने १०

कहा कि मंगल होओ ११ लक्ष्मण ने १२ बाण मारे १३ बाण दिये ॥ ४० ॥ तब

रथिपन और सारथिपन १४ दोनों कार्य स्वयं आप करके इंद्रजित लड़ा १५

देवताओं का कल्याण करने के लिये १६ विकल १७ चार चानर १८ एक एक

घोड़े को एक एक ने मारा १९ इंद्रजित को पैदल कर दिया इस प्रकार अयो

दशी २० सूर्य उदय हुआ ॥ ४१ ॥ २१ अपने साथ के राजसों से इंद्रजित

ने कहा २२ दूसरे २३ रथ पर चढ कर आने के लिये मैं पुर में जाता हूँ



लोलों तुम इत लरहु बहन् देहु न सत्रुन बल ॥  
 यह कहि पतन जाय चढिग रथ हयन चलाचल ॥  
 आयउ बहोरि आहव अजिर सहँसन बानर संहरिय ॥  
 सौमिलि तबहि दै बान सिंत कार्मुक तस खंडन करिया ॥४२॥  
 अपर चाप खल गहिय सोहु कट्टिय रघुनंदन ॥  
 अरिउर आसुग पंचप्रदये अति प्रखर महामर्न ॥  
 सोन बमत संक्रजित इतर धनु पुनि कर भल्लिय ॥  
 बरखि अंजिहग बिंदु घात लखनबपु घल्लिय ॥  
 दुष्टके कट्टि ते सब प्रदर गमालुंज अहुत रचिय ॥  
 सबरिपुन खोजि त्रयउत्तरयश्विसिख दुर्तकरि इक १ इक १ देहदिय ४३  
 तदनंतर बहुतीर सक्रजितकै दिय लखन ॥  
 आये जे सब अडर प्रदर कट्टे परपखन ॥  
 बहुरि संक्रजित सूत मारि पटक्यो महिमंडल ॥  
 फिरनलगे आवत वांजि नेतोंबिनु विवहल ॥  
 ते हयहु करे घायल त्वरित तब प्रकुप्पि रावनतनय ॥  
 दस १० बान सेस उपधन दये व्है कुंचित ते हुब बिलैया ॥४४॥  
 लखन कवच अभेद्य मन्नि सरत्रय ललाट दिय ॥  
 तिन्ह लागत रघुबीर शृंगत्रय अंगिर सोभा लिय ॥

१ पुर में जाकर २ चबल धाड़ों के रथ पर चड़ा ३ युद्ध के अखाड़े में  
 आया ४ लक्ष्मण ने तीखे बाण देकर इन्द्रजित् का ५ धनुष काट डाला  
 ॥ ४२ ॥ ८ बड़े मनस्वी लक्ष्मण ने ७ अत्यन्त तीखे ६ बाण इन्द्रजित् के  
 उर में दिये जिससे ९ रुविर उगलने हुए १० इन्द्रजित् ने ११ दूमरा धनुष  
 हाथ में लिया १२ सीधे बाणों से लक्ष्मण के १३ शरीर में १४ उन तीरों को का  
 टकर १५ रामचन्द्र के छोटे भाई लक्ष्मण ने १६ तीन तीन बाण १७ शीघ्रता कर  
 के ॥ ४३ ॥ शत्रुओं के बाण अपनी ओर आये तिनको १८ निर्भयता से १९ बाण  
 काट डाले फिर २० इन्द्रजित् के सारथि को भूमि पर पटका २१ निर्वाहक  
 के बिना २२ घोड़े २३ गोलाकार ( गोलकुंडा ) फिरने लगे २४  
 लक्ष्मण के समीप में दिये २५ कुंठित ( मोटा ) होकर २६ नाश हो गया  
 ॥ ४४ ॥ २७ तीन शिखरवाले पर्वत की शोभा को धारण की

वासवाजितके बदन पंच५सर सेस प्रहारे ॥

वान पितृव्यके बदन तीन३बासवजित मारे ॥

सबकपिन मारि इक१इक१विसिख जुलुम किन्न पुरुदूतजित ॥

तैंहँ कुप्पि चउ४हि खलके त्वरित हने बिभीखन हय विहित ॥४५॥

जव रथ सन इंद्रजित कुहि इक१संगि धारि कर ॥

तक्कि पितृव्यके अंग निसित सुक्को सु निसाचर ॥

सो आवत सौमित्रि करी सत१००टूक सरन करि ॥

पंच५विभीखन प्रदर दये खल उर अमर्ष भारि ॥

जमदर्त वान तापर जबहि जोरयो सत्वर इंद्रजित ॥

स्वप्नमें धनदं दिय वान सो ज्यौ जुत किय लखन अजिता४६॥

द्वीजत१अजित२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

चले दुहुँन२के वान मिलि रु सत १००टूक बिचहि हुव ॥

उभय२मोर्धे लखि सेस अस्त्र बारुन धारिय धुव ॥

खल किय रौद्र २ प्रयोग सांत बारुन किय ताकैंहँ ॥

आसिरै तव आग्नेय१ त्वरित मुक्कयो प्रदीप्त तैंहँ ॥

पजन्य१बिरच राघव पबल दृष्ट प्रयुक्त निवारि दिय ॥

तव जातुँ अस्त्र आसुर२ तमकि करखि वान संग्रामकिय ॥४७॥

आसुरैसरके अंग कढे धनुतैं असि १ मुद्गर२॥

संगि ३कुठार४त्रिसूल५गदा६कूटं७रु खरै तोमर ८॥

१ इंद्रजित् के मुख पर काका (विभीषण) के मुख पर इंद्रजित् ने तीन तीर मारे ३ बाण ४ इंद्रजित् ने ॥ ४५ ॥ ५ सांग (सम्पूर्ण लोहे की बनी हुई शक्ति) ६ अपने चचा के शरीर में ताक कर ७ तीक्ष्ण छोड़ी ८ यमराज का दिया हुआ बाण ९ शीघ्र १० कुवेर ने स्वप्न में बाण दिया था वह लक्ष्मण ने ११ प्रत्येका सहित किया ॥ ४६ ॥ १२ दोनों को व्यर्थ देखकर १३ लक्ष्मण ने १४ वरुण अस्त्र को धारण किया १५ इंद्रजित् ने रुद्र अस्त्र का प्रयोग किया जिसको वरुणास्त्र ने मिटा दिया तब १६ राजस ने अग्नि अस्त्र छोड़ा जिस पर लक्ष्मण ने इंद्र अस्त्र छोड़कर १७ इंद्रजित् के प्रयोग किये हुए अस्त्र को मिटा दिया १८ राजस ने आसुर अस्त्र से बाण खींच कर काध से युक्त किया ॥ ४७ ॥ १९ आसुर अस्त्र के बाण के अंग से २० घण्ट २१ तीखे भाले

इत्यादिक लखि आत सेस मुक्किय माहेश्वर २॥

यासौं वह खल अस्त्र ज्वलित रुक्कयो रन सत्वर ॥

गंधर्व१देव२पितर३रु गरुड४विद्याधर५चारन६बहुत ॥

ऋषि७नाग८सिद्ध९किन्नर१०रसिकदेखन छाये गगन द्रुत ॥ ४८ ॥

तब लखन इक१तीर ज्वलन सन्निभ कर लिन्नौं ॥

अग्नौ जिहिं तैं इंद्र कलह दानव जय किन्नौं ॥

ऐंद्र१अस्त्र आरोपि चवियं तिहिं करखि चलावत ॥

सत्यसंधं जो राम धर्मपथ अचल धर्ममत ॥

इम अक्खि अचि गुन आकरन श्रीलखन मुक्कयो सु सरा ॥

सक्रजित मत्थ कुंडल सुभग कट्टि गिरायउ पुहवि परा ४९ ॥

( दोहा )

गिरत इंद्रजित गगनतैं, बरखे कुसुम बिसेस ॥

बिचरहु बिज्वर मुनि१बिबुध२, अभय गिरौं हुव एस ॥ ५० ॥

हरखे मर्कट१रिच्छ२होरि३, विविध मिटाय बिखाद ॥

इम मधुमेचक मदनदिन१३, हन्यौं सेस घननाद ॥ ५१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयः प्राशौ वीतिहोत्र

१ लक्ष्मण ने शिव अस्त्र छोड़ा २ शीघ्र ३ शीघ्र आकाश में जागये ॥ ४८ ॥

४ अग्नि के सदृश ५ उस बाण को खींचकर चलाते समय कहा कि जो रामचन्द्र धर्म के मार्ग में हैं और धर्म में उनका मत अचल है और सत्य प्रतिज्ञावाले हैं तो वह बाण व्यर्थ नहीं जावे ७ प्रत्यंचा को एकान पर्यन्त खींचकर लक्ष्मण ने वह बाण छोड़ा जिसने कुंडल सहित ८ इंद्रजित के मस्तक को काटकर भूमि पर गिरा दिया ॥ ४९ ॥ १० आकाश से ११ युद्धों की चर्चा हुई और निर्भय १४ वाणी (आकाशवाणी) हुई कि मुनि और १५ देवता १२ पीड़ा रहित होकर फिरो ॥ ५० ॥ १५ लंगूर (काले सुख के चानर) रींछ और चानर नाना प्रकार की खेद को मिटाकर इस प्रकार १६ चैत्र यदि १७ कामदेव की तिथि (ज्योतिष के मत से प्रत्येक तिथि के स्वामी देवताओं को माने जिनमें त्रयोदशी का स्वामी कामदेव है) त्रयोदशी के दिन १८ लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा ॥ ५१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे प्राश में अग्निवंशी चहु-

वसुधेश्वरवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ विवाहबेलावर्णनाविप-  
यिकविवस्वद्वंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्षवाकु ६ पट्टपुत्रवि-  
कुत्ति ७ कुलकलशवैदेहीवल्लभचरित्रे श्रीरामदशमी १० रणामक-  
राक्षमारणकादशी ११ दिनमेघनादयोधनमायानिर्मितमैथिलीवि-  
दारणाश्रुततदुदन्तप्रभुपरिदेवनरावणिनिकुम्भिलाहवनविरचनसौ-  
मित्रितद्विध्वंसनवीरद्वयसङ्गरविधानद्वादशी १२ दिनपुनारणाविस्त-  
रणशेषावतारत्रयोदशी १३ सङ्ग्रामशक्रजिन्निपातनं त्रयःपञ्चाशत्त-  
मो ५३ मयूखः ॥ ५३ ॥ आदितः पञ्चनवतितमः ॥ ९१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

( षट्पात् )

मरत इंद्रजित कतिक गये लंका भजि रक्खस ॥

गये कतिक दुरि उदधि छिपे अदिन कति दुर्दिस ॥

लै रावनसुत सीस विदित हनुमान विभीखन ॥

इत्यादिक सब सेस संग आये दल अप्पन ॥

श्रीराम अगग डारयो सु सिर प्रभु लाखि सुंघिय सेस सिर ॥

वानर सुसेन बुल्लिय रु कहिय करि बिसल्लय इन्ह न करि चिर ॥

सुनि सुसेन दिय नस्य सेस आदिक सब वानर ॥

वाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन विषय में  
सूर्यवंश के गढ़ानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुत्ति  
के कुल के कलश जानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में दशमी के युद्ध  
में श्रीरामचन्द्र का मकराक्ष को मारना, एकादशी के दिन मेघनाद से युद्ध  
होना, माया की रचीहुई जानकी का मारना, वह वृत्तान्त सुनकर रामचन्द्र  
का विलाप करना, रावण के पुत्र (मेघनाद) का निकुंभिला में यज्ञ करना,  
लक्ष्मण का उस यज्ञ को नाश करना, दोनों वीरों का संग्राम करना, द्वाद-  
शी के दिन फिर राण विस्तार करना, त्रयोदशी के संग्राम में लक्ष्मण का  
इन्द्रजित् के मारने का त्रेपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५३ ॥ और आदि से  
पचानवे मयूख हुए ॥ ६५ ॥

१ लक्ष्मण के साथ २ लक्ष्मण के मस्तक को सुंघा (यह पूर्ण प्रेम करने का ल-  
क्षण है) ३ सुपेण नामक वानर को बुलाकर कहा कि ५ देरी नहीं करके इ-  
नको ४ शाल रहित कर ॥ १ ॥ ६ नासिका

रामचंद्रवर्णन ] तृतीयराशि—चतुःपञ्चाशमयुग ( ६११ )

तव निज दल जय तेनत अखिल हुव स्वस्थं सरीरन ॥

इत सचिवन सुतनास आय रावनसन अखिय ॥

सठ विलपि बहु जनकसुता मारन मानस किय ॥

ले असि असोकवनिका चलिय मंदोदरि जुत सवन सह ॥

ढिगजात पिक्खि कट्टन सिरहिं वरज्यो सचिव सुपार्थ महाश

( दोहा )

सचिवनके वरजैं मुररि, बैठो परिखंद आय ॥

मेरे निजभट कपिन पर, बलैं खिल सज्ज बनाय ॥ ३ ॥

( पदपात )

मधुमेधक सिवदिवंस १४ कव्यो खिल बल लंकासन ॥

लहि लंकेस निदेस सजव जुद्धो कपि संघर्ष ॥

पदिसैं १ घन २ सुग ३ पर्स ४ परिघ ५ सर ६ खग ७ परस्व ८ ॥

सकंति ९ कुंते १० छुरिका ११ त्रिसूल १२ अंकुस १३ गदा १४ दि अंधा ॥

चउं १ शीति हेति १ लगे चलन किन्न तुमुलैं रक्खस कपिन ॥

तहैं बढत जोर उतको अतुल लिय भजि राघव सरन इना १५

तव आजानु अरैति राम टंकारि चाप लिय ॥

लाधैव करि लक्खैन कलंव सनुन सिर मुक्किय ॥

१ अपनी सेना में विजय का फैलाने हुए २ नैरोग्य शरीरोंवाले हुए ३ मंत्रियों ने पुत्र का नाश रावण से कहा ४ सठ रावण ने बहुत विलाप करके ५ जानकी को मारने का ६ मन किया ७ तरवार लेकर ८ सुपार्थ नामा मंत्री ने रावण को मना किया ॥ १ ॥ ६ सभा में आकर बैठा १० पाकी के सबको बुलाकर ॥ ११ ॥ १२ चतुर्दशी १३ चतुर्दशी के स्वामी महादेव हैं के दिन पाकी ही मेना लेता से निकली और १४ रावण की आज्ञा लेकर १५ जानकी के समक्ष में गुड़ किया १६ कटारी १७ विविदिपाल (गोकुल) १८ परमी १९ याति ११ भाला २० छुरी आदि २१ नीचे गिरने लगे २२ पारशीति (मुक्त वश आदि १ अशक्त वश आदि २ मुक्तमुक्त भाला आदि ३ पन्ध्रमुक्त पाण आदि ४ ने २३ शस्त्र चलने लगे २४ राजम और जानकी ने भयंकर युद्ध किया २५ २६ गुरुओं मर केले हुए इय हैं जिनके मेने रामचन्द्र ने बहुत को टंकार के लिये २७ शोभा हाते २८ जानकी २९ पाण शस्त्रों पर पीछे

कांचनमय धनुकोटि भ्रमत आलातचक्र जिम ॥

देखी जातुन एह अंग इतरन दीस्यो तिम ॥

प्रभु प्रेरि अस्त्र गांधर्व पुनि जँहँ तँहँ अप्पहि अप्प हुव ॥

क्रव्याद व्यथित लग्गे कहन यह राघव यह राम धुव ॥५॥

गजन हनत यह राम रथन रघुवर यह कट्ट ॥

अस्वन सूदत एह एह पतिन दुत दट्ट ॥

जिम भक्तनहिय जँथतत्थ भासत परमेश्वर ॥

इम दसरथसुत आजि लख्यो आसिर<sup>३</sup> आसिर पर ॥

दुव लक्ख<sup>२</sup> ००००० पैदग गजधृति सहँस<sup>१</sup> १८०००,

सहँस चउदह<sup>१</sup> १४००० साँदिगन ॥

स्यंदनी अयुत<sup>१</sup> १०००० राघव हनेँ तिहिँदिन अष्टमभागसन ॥६॥

( दोहा )

भजि कँबुर लंका दुरे, कपि दल हुव जयकार ॥

असित चउदसि<sup>१</sup> १४मास मँधु, किय रन इम भयकार ॥ ७ ॥

( पादाकुलकम् )

बुलि राम हनुमान<sup>१</sup> विभीषन<sup>२</sup>, मैद<sup>३</sup> द्विविद<sup>४</sup> सुग्रीव<sup>५</sup> महामन<sup>६</sup> ॥

जाँववान<sup>७</sup> जुत कहिय अस्त्र बल, भँवपै<sup>१</sup> कै मो पैश्यह है भल ॥८॥

१ सुवर्ण के बने हुए धनुष के गोशे २ अग्नि के अंगारे के चक्र समान फिरने लगे ३ राजसों ने इसी आलातचक्र को देखा ४ दूसरा अंग नहीं दीखा. फिर रामचन्द्र गांधर्व अस्त्र छोड़कर जहाँ तहाँ ५ आप ही आप होगये जिससे ६ व्याकुल होकर ७ राजस कहने लगे कि निश्चय ही यह राघव, यह रामचन्द्र है ॥ ५ ॥ ८ मारते हैं ९ पैदलों को शीघ्र दयाते हैं, जिसप्रकार भक्तों के हृदय में १० जहाँ तहाँ परमेश्वर ही दीखते हैं तिसप्रकार ११ राजस राजस पर १२ युद्ध में दशरथ के पुत्र (रामचन्द्र) दीखे १३ पैदल १४ घोड़ों पर चढ़नेवाले १५ रथों पर चढ़नेवाले १६ दिवस का आठवाँ भाग बाकी रहते इतनों को रामचन्द्र ने मारे ॥ ६ ॥ १७ राजस भागकर लंका में छिपगये १८ चैत्र मास १९ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन इसप्रकार भयंकर युद्ध किया ॥ ७ ॥ रामचन्द्र ने इनसे कहा कि यह अष्ट अस्त्र २० महादेव के पास है या मेरे ही पास है ॥ ८ ॥

रामचंद्रवर्णन ] तृतीयराशि—चतुःपञ्चाशमयूख ( १७१ )

रात्रिचरी लग्नी इत शेवन, किय अनुचित रावन कुल खोवन ॥  
सुमिरिसुमिरि हंत पति सुतबंधुन, अधिक बिलपि परी दुख अंधुन  
( दोहा )

दिवस चउदसि १४ दुव दलन, रौद्र भई इम रारि ॥  
प्रात अमा ३० दिन जातुपति, निकस्यो समय निहारि ॥ १० ॥  
निजकुल नारिन रुदन सुनि, नकिंख बहुत निस्वास ॥  
कटि रंदच्छद रंदनकरि, भो रावन जमभांस ॥ ११ ॥  
महापार्श्व १ बुल्लयो अपर, अपर महोदर २ तत्थ ॥  
विरूपाक्ष ३ पुनि बुल्लिकै, सज्ज्यो लरन समत्थ ॥ १२ ॥  
( षट्पात् )

स्यंदन सज्जिग नियुत १०००००—

नाग सज्जिग नियुत त्रय ३०००००० ॥

सडिकोटि ६०००००००००वर बाँह तिते खर ६०००००००००—

तरल तथाभय ६०००००००० ॥

असंख्यात पाँइक भये दससिर ढिग हाजरि ॥

खासा स्यंदन मूत तबहि लायो सँत्वर करि ॥

इक सहस्र १००० जास कानकै कलस रतन थंभ अष्टक ८ तुरग ॥

तिहिँ रथ अरोहि लंकेस तब मिल दल हंकिय राममग ॥ १३ ॥

( मुक्तादाम )

१ राक्षसियां रोने लगिं २ मरेहुए ३ विलाप करके ४ दुःख रूपी कुआँ में गिरिं ॥ १ ॥  
५ दोनों सेनाओं में इसप्रकार ६ भयंकर युद्ध हुआ ७ अमावास्या के दिन प्रभात  
ही ८ राक्षसों का पति (रावण) ॥ १० ॥ ९ बहुत निस्वास डालकर ११ दंतों से १०  
ओठों को काटकर (यह विशेष क्रोध का लक्षण है) १२ यमराज की सी  
क्रान्तिवाला हुआ ॥ १० ॥ १३ दूसरे महापार्श्व को बुलाया १४ दूसरे महो  
दर को ॥ ११ ॥ १५ रथ समे १६ हाथी १७ श्रेष्ठ बाहन १८ चपल १९ ऊँठ  
२० असंख्य पैदल २१ सारथि रावण के खासा रथ को २२ शीघ्रता करके  
लाया जिसके २३ स्वर्ण के हजार कदश २४ रत्नों के जड़ेहुए खंभे और आ-  
ठ २५ घोड़े जुतेहुए थे ॥ १३ ॥

चल्यो अब रावन लै चतुरंग, बजे बहु काहलै १ संख २ मृदंग ३ ॥  
 सुचामर १ छत्र २ विराजत सीस, बढ्यो प्रलयानल ज्यों भुजबीस २०  
 मही हुव बोधितरुच्छद कपि, चिंके बनि जंगम १ थावर २ चंपि ॥  
 भये सिर सेस उदंबर पक्र, मुरे किंठि १ कच्छप २ लगि मचक्रा १५।  
 बढ्यो करि फैल समुद्रन नीर, गतप्रभ भानु भयो तम भीर ॥  
 भये तहँ रावनकोँ अपसोन, भरयो रवं घोर सकुंतन भोन ॥ १६ ॥  
 गिर्यो ध्वज गिद्ध सिंघा किय सोर, तुरंग उठे गिरि व्है हततोर ॥  
 फुरे खल बाहु १ लोचन २ सव्यँ, भई सिर लोहितबुडि अभव्य १७  
 परी पैबिसी उलका चहुँ ४ पास, किलक्किय बायसँ १ गिद्ध २ कुभास  
 बनै दस १० ही मुख तास विवर्णा, फिस्थो स्वर बोलनमँ कटुकर्ण १८  
 दसानन ए न गिनै उतपात, घनै छकसौँ जुरि मंडिय घात ॥  
 त्वरँ करि तीरनपै तजि तीर, करे कपि सैवरँतूल समीर ॥ १९ ॥  
 भजी लखि स्वीयँ चमू कपिराज, सुसेनहिँ रक्खिय गुल्मसँमाज ॥

१ चार प्रकार की ( रथ घोड़े हाथी और पैदल ) से  
 ना को लेकर २ कलह ( युद्ध ) संबन्धी बाजे बजे ३ प्रलय की अ-  
 ग्नि के समान रावण चढा ॥ १४ ॥ उस समय भूमि कंपाद्यमान होकर ४  
 पीपल वृक्ष के पत्ते के समान होगई (पीपल का पत्ता हिलता बहुत है  
 इसीसे इस वृक्ष का नाम चलदल है) दबने के कारण जड़ औ चैतन्य ५ अ-  
 पने स्थानों से हटने (डुलने) लगे और शेषनाग के मस्तक पकेहुए ६ ऊपर  
 वृक्ष के फल के समान होगये ७ वराह ॥ १५ ॥ अन्धेरे की  
 भीड़ से सूर्य ८ क्रान्ति रहित होगया ९ अपशकुन हुए गिद्ध  
 पक्षियों ने अथवा सामान्य पक्षियों ने १० घोर शब्द से रावण के स्थान को  
 भरदिया ॥ १६ ॥ ध्वजा पर गिद्ध गिरा और ११ स्यालणी ने शब्द किया १२  
 रावण के वासयाहु और लोचन फरकनेलगे और मस्तक पर १३ अमंगलिक  
 रुधिर की वर्षा हुई ॥ १७ ॥ १४ वज्र के समान चारों ओर अंगारे गिरे  
 और १५ काकपक्षि और गिद्ध बुरी तरह से चीखने लगे और रावण के दश  
 ही मुख १६ फीके पड़गये और रावण का स्वर बोलने में १७ कटुकर्ण (कानों  
 को कड़वा लगे ऐसा) होगया ॥ १८ ॥ १८ शीघ्रता करके १९ समलवृक्ष की  
 कई पर्वन के सामने उड़ती है इसप्रकार वानरों को करदिये ॥ १९ ॥ २०  
 अपनी सेना को भागी हुई देखकर २१ रक्षा के अर्थ फौज थी जिसमें सुषेण



उठाय बड़े द्रुमकों कर अण्ण, दये डंग रावन अण्ण सदण्ण ॥२०॥  
 निहारि कपीसहि सम्मुह जात, बड़े बहु संगहि जुत्थप व्रात ॥  
 रची अति उग्र हरीस्वर रारि, महाबल जातु लये बहु मारि ॥२१॥  
 सिला १ गिरि २ गुल्म ३ हने ४ क १ संग, भयो खलको दल विव्हल भंग ॥  
 विरूपटगाख्य यहै लाखि बीर, भयो बढि क्रंदत जातुन भीर ॥२२॥  
 कपीश्वरकों निजनाम सुनाय, तज्यो रथ कुहि चढयो गज आय ॥  
 पलावत थंभि स्वकीयन सूर, कियो कपिराज हियो सरपूर ॥२३॥  
 तहाँ रविपुत्तहु लै तरु सत्थ, मलंगि हन्यो खलके गजमत्थ ॥  
 धुक्यो धनु १ मात्र कसी तिहिं घाय, परयो करि क्रंदन कपहिं पाय ॥२४॥  
 भयो गजकों तजि सम्मुह दुष्ट, लये कर खग १ रु खेट २ रुष्ट ॥  
 कपीश्वरकों करि तर्जन तत्थ, सवेग जुरयो रैनकोविद सत्था ॥२५॥  
 सिला इक मुक्किय वहाँ कपिराज, टरयो लखि ताकहँ पिक्ख सुवाज ॥  
 कपीश्वरको दिय खग प्रहार, मुंहत न भो यह चेतन धार ॥२६॥  
 सचेतन वहै तदनंतर उठि, हनी दृढ रैखसके उर मुठि ॥  
 निसाचरहू धँकि है पुनि खग, करयो कपि दसन काय अलग ॥२७॥  
 कपीस दयो तलघाँत बहोरि, दयो खल टारि सु पै हुँत दोरि ॥  
 दई पुनि बानरके उर मुठि, दयो खल संखँ कपी तल रुठि ॥२८॥

कों रखकर सुग्रीव ने अपने हाथ में बड़ा वृक्ष लेकर १ घमंड के साथ रावण के सामने २ पैंड (कुदम) दिये ॥ २० ॥ ३ जुत्थपों के समूह बड़े ४ कपीश्वर ने बड़ी उग्र लड़ाई रची ५ बलवान् बहुत राक्षसों को मारलिये ॥२१॥  
 ६ वृक्षों के टूटों (शाखा रहित वृक्षों) में ७ विरूपाक्ष ने ८ रोते कूकते हुए राक्षसों की सहाय पर ॥ २२ ॥ ९ अपने १० भागेहुयों को रोककर उस वीर ने सुग्रीव के हृदय को बाणों से ११ पूर्ण कर दिया ॥२३॥ तहाँ १२ सुग्रीव ने भी उस वाक्य में वह १४ हाथी एक धनुष जितना १५ झुक गया फिर फिर धूज कर १६ कूक करके गिरा ॥ २४ ॥ १६ कांध करके १७ ढाल तरवार ली १८ सुग्रीव को धमका कर वह १९ युद्ध के पंडित (सुग्रीव) के साथ जुटा ॥ २५ ॥२० दो घड़ी पर्यन्त ॥ २६ ॥२१ जिस पीछे चेत पाकर २२ राक्षस के उर में २३ क्रोध करके २४ शरीर से कवच को अलग कर दिया ॥२७॥ २५ थपड़ अथवा चरण का आघात दिया २६ शीघ्र दौड़कर ढाल दिया २७ दुष्ट (विरूपाक्ष) के २८ ललाट

कपीश्वरके तलको लहि घात, भयो बमितोहित दुष्ट निपात ॥  
 अमावसिके दिन वानरभूप, हन्यो पहिलें इम नेत्रबिरूप ॥२९॥  
 दसानन तास बिनास निहारि, महोदर पिळ्ळिये तत्थ प्रचारि ॥  
 प्लवंग अनेक हनै जिहिं जाय, कपीसहि भो पुनि स्वीय सहाय ३०  
 दइ गिरितुल्य सिला इहिं डारि, महोदर कट्टिय वानन मारि ॥  
 हन्यो कपि सालमहीरुह कोपि, विदारिदयो वपुहूँ नख रोपि ३१  
 गिरयो परिघायुध रक्खसकेर, सु लै कपि बाजि हने घनघेर ॥  
 तवै तजि चंक्रु मत्त मलंगि, महोदर लिन्न गदा रनरंगि ॥ ३२ ॥  
 कपीस्वरपै किय तास प्रहार, दई कपिनै परिघायुध मार ॥  
 गदा १ परिघायुध २ ते मिलि मग्ग, उभै २ हि गिरे बनि टूक अलग्ग ३३  
 मिट्यो गिनि आयुध राघवमित्र, अयोग्य लख्यो इक हेम विचित्र  
 अयोमय भूतलतें सु उठाय, महोदरपै द्रुत दिन्न चलाय ॥ ३४ ॥  
 द्वितीय २ गदा गहि रक्खस तत्थ, हनी हाठि आवत मूसलमत्थ ॥  
 उभै २ मिलि सत्त्र भये पुनि खगड, नियुद्ध रच्यो तब दोउन २ चंड ३५  
 परस्पर मंडि चपेट प्रहार, गिरे दुव २ मूर्छित ह्वै कछुवार ॥  
 उठे पुनि चेतन पाय उदग्ग, लये खिजि रक्खस खेटक १ खग्ग २ ३६  
 कपीसहु तेहि गिरे भुवै हेरि, उठाय जुरयो सु महोदर घेरि ॥  
 महोदरके करवालहिं टारि, लयो असिसौं खलसीस उतारि ३७

की हड्डी पर वानर ने थप्पड़ मारी ? रुधिर की उलटी कर-  
 के २ गिरगया ३ वानरों के राजा ( सुग्रीव ) ने इसप्रकार ४ विरूपाक्ष  
 को मारा ॥ २९ ॥ ५ महोदर को भेजा ६ जिसने जाकर अनेक वानरों  
 को मारे ॥ ३० ॥ ७ शालवृक्ष मारा और ८ शरीर को नखों से विदीर्ण क-  
 रदिया ॥ ३१ ॥ ९ शस्त्र विशेष १० रथ को छोड़ कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ रामच-  
 न्द्र के मित्र (सुग्रीव) ने अपने आयुध को मिटाहुआ जान कर सोने के बि-  
 चामवाले लोहे के मूसल को भूमि से उठा कर महोदर पर शीघ्र चला दिया  
 ॥ ३४ ॥ १२ दोनों ने भयंकर बाहुयुद्ध रचा ॥ ३५ ॥ १३ उदग्र (जुंघे उठेहुए मस्तक  
 वाले अर्थात् अनम्र) राक्षस ने क्रोध करके १४ ढाल तरवार ली ॥ ३६ ॥ १५  
 भूमि पर गिरे हुए उन्ही शस्त्रों को हेरकर १६ खड्ग को बचाकर १७ तरवार

मरयो लखि याहि भजे मनुजाद, महादिकपार्थ रच्यो रनवाद ॥  
 अनी थितही जित अंगदकेर, जुर्यो तित रक्खस दै घन घेर ३८  
 वलीभुख भूरि हैनै तजि वान, सज्यो तव वालितनै घममान ॥  
 लयो परिघायुध इक्क उठाय, दई खलकै सु छक्यो घनघाय ॥ ३९ ॥  
 दसाननको भँट होय अचेत, गिर्यो रथतैं धुकिं सूत समेत ॥  
 सिला पुनि अंगद इक्क प्रहारि, दये खलकै रथ १ बाह २ विदारि ॥ ४० ॥  
 मुहरतैं अंत सचेतन दुष्ट, दये सर अंगद १ कै बहुरुष्ट ॥  
 दये त्रय ३ भलुकनायक ४ वच्छै, गवाक्ष ३ सरीर दये बहु दच्छै ॥ ४१ ॥  
 जुव्यो तव वालितनै जवै जोरि, लयो परिघायुध तास भँभोरि ॥  
 दुरदृष्टन मुक्किय ताहि भ्रमाय, दयो खल चाप सबान गिराय ४२  
 गिर्यो धनु संगहि मस्तक भ्रान, दई बहुर्यो दलकी खल कान ॥  
 कर्यो खल कुपि परस्वध वार, सु टारिगयो कपिराजकुमार ४३  
 वली तदनंतर अंगद रुट्टि, हनी दृढ रक्खसके उर मुट्टि ॥  
 महाखलकै सु लगी पविर्मान, पश्यो हियफट्टि भयो गतप्रान ४४  
 दसाननसो लखि कुपि दुरुहै, जुर्यो लहि दुहर वानर जूह ॥  
 दिसा विदिसा करि स्यंदनै नाद, वली बढि अंग रच्यो रनवाद ॥ ४५ ॥  
 कर्यो खल तामें अस्त्र प्रयोग, घने कपि भस्म भये तजि छोर्गै ॥  
 सदयो न मुँ अस्त्र भजे खिल कीम, रची तँहँ जुझनै लखन रीस ४६

सैं दुष्ट का मस्तक उतारलिया ॥ ३७ ॥ १ मनुष्यों को खानेवाले (राक्षस)  
 भाग २ महाशब्द है आदि में जिसके ऐसा पार्थ अर्थात् महापार्थ ३  
 जहाँ पर अंगद की सेना की अर्णी खड़ी थी उधर जाकर लड़ा ॥ ३८ ॥ ४  
 बहुत ५ वानरों को मारा ६ अंगद ने युद्ध किया ॥ ३९ ॥ रावण का ७ उम  
 राव ८ भड़े खाना हुआ सारथि सहित ९ बाँड़े नारडाले ॥ ४० ॥ १० दो बर्हा  
 पीछे चेत पाकर ११ कोथ करके १२ जाम्बवान के १३ हृदय में १४ चतुर ने ॥ ४१ ॥  
 १५ वेग जादकर ॥ ४२ ॥ १६ मस्तक को कवच टोपा १७ परसी का चार किया  
 ॥ ४३ ॥ १८ वज्र के समान ॥ ४४ ॥ १९ कटिताई में नर्कना में आये ऐसा  
 रावण वानरों के दुर्घपे समूह में जुड़ा २० रथ का शब्द करके ॥ ४५ ॥ २१  
 तमोगुणी अस्त्र अथवा सर्प अस्त्र छोड़ा २२ उतसाह छोड़कर २३ यह अस्त्र  
 सहा नहीं गया जिससे बाकी के वानर भाग गये वहाँ पर २४ युद्ध करने

दयो खल छाये कलंबन जाल, गिरायउ कटि सु पै सुरसाल ॥  
 समीप लये तदनंतर राम, धनै सर मुक्कि जुरयो जयकाम ॥४८॥  
 प्रभू खलके सर भल्लन छेदि, दये निजसत्रु समूहन खेदि ॥  
 परिक्रमि मंडल दक्खिन श्वामर, परस्पर जुटिय रावन शरामर ॥४८॥  
 भयो नभ तीरन संकुलि मोघ, अखंड प्रसार बढ्यो तमओघ ॥  
 गयो चरमाचल लंघि पतंग, जथापि तथापि मच्यो इम जंग ॥४९॥  
 तहाँ खल सर्व अयोमय तीर, हनै प्रभु गोधि धनै हमगीर ॥  
 तऊ बिधुरा न भजी करतार, प्रयुजिय रौद्र महास्त्र प्रसार ॥५०॥  
 महीप सरासन कोटि मिलाय, अभेद्य तनुत दये खलकाय ॥  
 मुधा करि डंस पितामह दत्त, गये भुव भेदि दसानन गत्त ॥५१॥  
 करयो पुनि राघव अस्त्रप्रयोग, भरे खल गोधि सरोरग भोग ॥  
 इतेबिच रावन अस्त्र निवारि, सज्यो सर आसुरअस्त्र सुरारि ॥५२॥  
 तज्यो तँहँ तीर अनेक प्रकार, कढे धनुतँ बल अस्त्रकरार ॥  
 शृगाल शतरच्छु शनखायुध शतुंड, रु गिद्ध शसिचान ५ अहीमुख दंष्ट्रु ड ५३

को लक्ष्मण ने क्रोध किया ॥ ४९ ॥ ? दृष्ट को बाणों की जाल से छा  
 दिया देवताओं के शाल (रावण) ने जिस पीछे रामचन्द्र को समीप लिये  
 ॥४७॥३ अपने शत्रुओं के समूहों को निकाल (हांक) दिये ४ गोलाकार फिरकर  
 ॥४८॥ तीरों में भरकर आकाश मिथ्या होगया अर्थात् आकाश नहीं रहा  
 और अखंड फैलाव के साथ अंधरे का समूह बढ़ा यद्यपि सूर्य अस्ताचल  
 को लांघ गया तद्यपि इसप्रकार युद्ध मचारहा ॥ ४९ ॥ सब लोहे के बने हुए  
 बाण रामचन्द्र के ललाट में मारे तो भी रामचन्द्र ने व्याकुलता नहीं पाई  
 और रौद्र अस्त्र का प्रयोग किया ॥ ५० ॥ रामचन्द्र ने धनुष के दोनों गोशों  
 को मिलाकर अभेद्य कवचवाले रावण के शरीर में बाण दिये सो ब्रह्मा के  
 दिये हुए कवच को पृथा करके दशानन के शरीर को भेदकर भूमि में गये  
 ॥ ५१ ॥ फिर रामचन्द्र ने अस्त्र का प्रयोग करके बाणों रूपी सर्पों के फणों  
 से रावण के ललाट को भरदिया इतने में देवताओं के अरि रावण ने उस  
 अस्त्र को मिटाकर आसुर अस्त्र सका ॥ ५२ ॥ उस धनुष से कराल अस्त्र  
 निकले जिनमें कितने ही गौदड़ बवेरा (सिंह विशेष) सिंह गिद्ध बाज  
 (शिकरा नामक पक्षि विशेष) सर्प के मुख धारण करनेवाले समूह ॥ ५३ ॥

धरैँ मुख व्याघ्रन१कोकन८केक, छुटे इस आसुर मंत्रअनेक ॥  
 तज्यो ज्वलनास्त्र तबैँ रघुराज, कढे इततैँहु घनेँ वर बाज ॥५४॥  
 दिवाकर१अग्नि२ससी३चपला४ऽऽदि, धरैँ मुखघोर छुटे नभछादि॥  
 दयो तिन्ह आसुर अस्त्र निवारि, रची अनखाय दसानन रागि५५  
 तज्यो मयनिर्भित अस्त्र निसाट, घनेँ पुनि अस्त्र कढे बहुघाट ॥  
 तिसूल१गदा२असि३पाटिस४प्रास५, भयानकहुँ प्रलयानल भास५६  
 तज्यो प्रभु वहाँ सुरगायक अस्त्र, करे खलके ति मुधा सबसस्त्र  
 अनंतर अस्त्र तज्यो खल ओर, जु पै प्रभु खंडिय बानन जोर५७  
 कियो तब रावन दुस्सह कर्म, दये दस१०बान महाप्रभु मर्म ॥  
 व्यथा तिनतैँ न लही रघुवीर, दये खलकै पुनि दुद्धर तीर ॥५८॥  
 इतेविच लखन दै सर सत्त१, हरयो खलकेतु१नृमस्तक तत्त ॥  
 हन्योँ पुनि सारथि२दै इक१तीर, रु दै सर्पंच५हरयो धनु वीर५९  
 विभीखन तत्थ लये रचि रारि, गदाकरि अग्रजके हयमारि ॥  
 धँप्यो रथ छोरि बिनाहयधक्कि, तजी खल संगि विभीखन तक्कि६०  
 विभीखन मारक जानि प्रवीन, सु कट्टिय लखन दै सरतीन३॥  
 रची मयकी वसु८घंटन जुत्त, धरी कर सक्ति तहाँ खल धुत्त॥६१॥

और कितने ही भेड़िया व्याघ्र शृगालों के मुख करके छूट तब रामचन्द्र ने अग्नि अस्त्र छोड़ा सो इधर से भी श्रेष्ठ पाँवोंवाले बाण निकले१४। सूर्य अग्नि चन्द्र विजुली आदि घोर मुख धारण करके आकाश को छादित करके क्रुद्ध१क्रोध करके रावण ने युद्ध रचा ॥ ५५ ॥ रात्रिचर (रावण) ने मय के रचे हुए अस्त्र को छोड़ा जिससे बहुत भाँति के बहुत अस्त्र कढे२प्रलय की अग्नि की क्रान्ति के समान ॥ ५६ ॥ वहाँ रामचन्द्र ने गधर्य अस्त्र छोड़ा जिसने दुष्ट के तिन शत्रुओं को वृथा कर दिये जिस पीछे रावण ने अन्य अस्त्र छोड़ा ॥ ५७ ॥ ३रामचन्द्र के मर्म स्थान में मारे जिनसे रामचन्द्र ने पीड़ा नहीं पाई ४दुर्द्धर्ष (जिनका अनादर नहीं होसके ऐसे) बाण दिये ५ध्वजा को काट डाला. देरावण की ध्वजा में मनुष्य के मस्तक का चिन्ह था जिसको काट डाला ७दौड़ा रथ छोड़कर ॥ ६० ॥ ८विभीषण को मारनेवाली जानकर लक्ष्मण ने उस मांग (शस्त्र विशेष) को काट डाली ९धूर्त ने ॥ ६१ ॥

निजानुज रच्छक सेसहिँ जानि, तजो तिनपै खल तकि रू तानि॥  
 सदंसन लक्खनको उरफारि, गई तडिता जिम बहल बारि॥६२॥  
 प्रभ भुव जात सु भंजिय संगि, मिटी इम टारतहू असुं मंगि ॥  
 परे भुव लक्खन प्रानन पेलि, किधौँ लहि जेठ प्रभंजन कैलि॥६३॥  
 गिरयो अनुजातहिँ पिक्खि विहाल, महाप्रभु भीरु भये कछुकाल  
 मुहूर्त अनंतर छोरि विखाद, कह्यो सबसौं ब हनौं मनुजाद॥६४॥  
 चढो कपिश भल्लुक २ अदिन मत्थ, मुरादिक होहु विमानन सत्थ॥  
 लगावहु दिट्ठि चउदह १४ लोक, रचो रविसूत तुरंगन रोक ॥६५॥  
 मनावहु स्वस्ति सबै मुनिशसिद्ध, लहो दसकंध वपा गल गिद्ध ॥  
 धरो अवधान चराचर सज्ज, लखो मम रामपनौं सब अज्ज ॥६६॥  
 यहै कहि दै सर रावन अंग, कियो तस देह सु सेह सरंग ॥  
 परे प्रभुकै पुनि लक्खन दिट्ठि, सुसेनहिँ बुल्लि कह्यो नृपनिट्ठि॥६७॥  
 यहै खलपातित सोवत सेम, कहा जयआस भई अब एस ॥

अपने छोटेभाई की रक्षा करनेवाला लक्ष्मण को जानकर वह शक्ति उन पर छोड़ी सो कवच सहित लक्ष्मण का उर फाड़कर जैसे बिजुली बादल को निवारण करने जाती है तैसे गई भूमि पर गिरते हुए लक्ष्मण ने उस शक्ति को तोड़ डाली इस प्रकार उसको बचाते बचाते रेणु की चाहना करके मिटी, जिस प्रकार जेठ मास में ३ पके के ल वृक्ष गिरें तिस प्रकार लक्ष्मण प्राण को हटाकर गिरे ॥६३॥ ४ छोटेभाई को गिरा हुआ देखकर रामचन्द्र विवहल हुए और कुछ समय कायर होगये ६ दो घड़ी पीछे विपाद को छोड़ कर सब से कहा कि ७ अब राक्षस को मारता हूँ ॥ ६४ ॥ वानर और रीछ तो पर्वतों पर चढ़ जाओ और देवता आदि विमानों पर चढो, चौदह लोकवाले इधर देखो और सूर्य का सारथि भी सूर्य को युद्ध दिखाने के लिये घोड़ों को रोको ॥ ६५ ॥ मुनि और सिद्ध लोग कल्याण मनाओ, रावण की मज्जा (गूद) को गिद्ध गल ले आओ, चर और अचर सभी मनोयोग (वांछित) को प्राप्त होओ और आज मेरा रामचन्द्रपन देखो ॥ ६६ ॥ यह कहकर बाण देकर रावण के शरीर को सहली (सल्लु) के समान कर दिया, फिर जब लक्ष्मण रामचन्द्र की दृष्टि में आये तब सुपेण नामक वंदर को बुलाकर कठिनाई से कहा ॥ ६७ ॥ दुष्ट का पटका हुआ यह लक्ष्मण सोता है सो अब ऐसा होने पर जय

न जीवनतैँ रनतैँ रहित आज, विदेहसुताहु अबै किहिँ काज ॥६८॥  
 सुसेन कह्यो न मरे प्रभु सेस, बनी मुखआकृति पंकज बेस ॥  
 प्रभाघन बिग्रह नैन प्रसन्न, बहै नहिँ एरिस ओज विपन्न ॥६९॥  
 सुसेन बली प्रभुसों इम बुद्धि, कही पुनि मारुँतिसों हित खुल्लि ॥  
 बतायउ भल्लुँकनायक तोहि, सजीवन आनहु पब्यसोहि ॥७०॥  
 यहै सुनिकै पुनि गो हनुमान, लयो पुनि अद्रि जरी अनजानि ॥  
 त्रिश्वर महाबल ताकँहँ तुलि, फलंगिगयो रनमैं हियफुल्लि ॥७१॥  
 सुसेन जरी सब ते पहिचानि, दयो द्रुत नस्यहि सेसहि आनि ॥  
 उठे इहिँ सोवतसे जगि सेस, बुलाय मिले अरही अखिलेस ॥७२॥  
 चहौँ नहिँ लक्ष्मन तोबिनु प्रान, बदी यह राघव प्रेम विधान ॥  
 कही तब लक्ष्मन चिंतहु बैन, लयो पन राज्य विभीषन दैन ॥७३॥  
 करो वह सत्य यहै सुनि राम, कियो पुनि रावन बाननँ धाम ॥  
 दसाननहू रथ ओर अरोहि, छल्यो प्रभु सम्मुह जुझत छोहि ॥७४॥  
 रथी खल १ ज्यौँ प्रभुश्र्यौँ पदचार, बदे समता नहिँ देवन बार ॥  
 बिचारि यहै पुरुहूत बलीय, समातलि वहाँ पठयो रथ स्वीय ॥७५॥  
 हरेहय जोरि त्वराकरि आय, लये रथ मातलि राम चढाय ॥

की क्या आशा है सीता भी अब किस काम की है ॥ ६८ ॥ मुख की आकृति कमल के समान बनी हुई है शरीर भी बहुत कान्तिवाला है और नेत्र प्रसन्न हैं प्राणबल जिन का नाश होजाता है वे ईदृश (ऐसे) चिन्ह धारण नहीं करते ॥६९॥ हनुमान् से कहा १ जाम्बवान ने तुझे बताया था उसी संजीवन पर्वत को लाओ ॥७०॥ ३जड़ी को नहीं जानसका तब पर्वत को ही उठालिया और तीन बार उस पर्वत को हाथ में तोलकर मलंग लगाकर युद्धभूमि में प्रसन्न होकर आया ॥ ७१ ॥ सुपेख वानर ने उस जड़ी को पहिचान कर लक्ष्मण को शीघ्र आकर नाक में सुँघाई ४ शीघ्र ही सब के स्वामी रामचन्द्र लक्ष्मण को बुलाकर मिले ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ १ रावण को बाणों का घर बनादिया २ क्रोध करके ॥ ७४ ॥ रावण रथ पर और रामचन्द्र पैदल होने से देवताओं ने कहा कि रथ के बिना बराबरी नहीं है, बलवान इन्द्र ने यह विचार कर मातलि नामक अपने सारथि सहित अपना रथ भेजा ॥ ७५ ॥ वह मातलि हरे रंग के घोड़ों को जोत कर शीघ्रता करके आया और

अभेद्य तनुत्र१रु सक्ति२रु चाप३, इते पठये ति लये धरि आप७६  
 परिक्रमि स्पंदन बंदन किन्न, चढे पुनि राम सरासन लिन्न ॥  
 रच्यो समतारन द्वैरथ नाम, रहे नभ देव भने जय राम ॥ ७७ ॥  
 जिते खल अस्त्र तजे रुपि रंग, भये प्रभु अस्त्रनतैं सब भंग ॥  
 तज्यो जब रंखस रंखस अस्त्र, अनेक कढे अहि आकृति सस्त्र ७८  
 तज्यो तब पासुपतस्त्र नरेस, करे सरपन्नग मोय असेस ॥  
 लखे खल अप्पन अस्त्र असार, दये प्रभु विग्रह बान हजार ७९  
 हने बहु मातलिके जय हेतु, विदारिय बासवैं स्पंदन केतु ॥  
 हरी छविके पुनि बेधि तुरंग, जुख्यो घन घोर दसानन जंग ॥ ८० ॥  
 रह्यो बुध१रोहिनिहैं तहैं आय, जुख्यो ग्रह आर१विसाख२हैं जाय ॥  
 लियैं ढिग रुंड१रु धूमलकेतु२, हतप्रभ भानु लख्यो खयहेतु ॥ ८१ ॥  
 बढ्यो लखि दुष्टहि यौ बहु ब्रात, अचानक घोर मचे उतपात ॥  
 भयो भुव कंप डरे सबभूत, ढिगे बन१पव्वय२रतृच्छ विधूत ॥ ८२ ॥  
 तहाँ गहि दुष्ट महाखय मूल, तज्यो वसु८घंटन जुत त्रिसूल ॥

रामचन्द्र को रथ पर चढ़ा लिया, इन्द्र ने अभेद्य कवच, शक्ति और धनुष भे-  
 जे वे भी समर्थ रामचन्द्र ने धारण किये ॥ ७६ ॥ रथ के परिक्रमा करके न-  
 मस्कार किया? दोनों रथवाले कहलाकर बराबरी का युद्ध करने लगे ॥ ७७ ॥  
 रराक्षस ने राक्षस अस्त्र छोड़ा जिससे अनेक सर्प की आकृति के शस्त्र नि-  
 कले ॥ ७८ ॥ रामचन्द्र ने पाशुपत अस्त्र छोड़ा जिसने रावण के सर्पाकार  
 सब बाणों को व्यर्थ कर दिया रावण ने अपने बाणों को सार रहित देखकर  
 रामचन्द्र के शरीर में हजार बाण दिये ७९ ॥ इन्द्र के रथ की ध्वजा को  
 काट डाली ॥ ८० ॥ रामचन्द्र रूपी चन्द्रमा को रावण रूपी राहु से प्रसाह आ-  
 देखकर चन्द्रमा के अतिप्रिय रोहिणी नक्षत्र पर बुध नामक ग्रह आगया  
 (ज्योतिष के मत से बुध का रोहिणी नक्षत्र पर आना भयंकर समझा जा-  
 ता है) और इक्ष्वाकु वंशियों के सदा शुभकारी विशाखा नक्षत्र पर मंगल  
 ग्रह आगया (यह भी उत्पात का सूचक है) राहु और केतु को समीप लिये  
 हुए सूर्य नाश का कारण होकर क्रान्ति हीन दीखने लगा ॥ ८१ ॥ इसप्रका-  
 र रावण को प्रचल हुआ देखकर एकाएक भयंकर उत्पातों के समूह मच-  
 गये भूकंप होने लगा और सब प्राणी डरने लगे विशेष धुने जाकर घन पर्वत  
 और वृक्ष ढिगने लगे ॥ ८२ ॥ दुष्ट रावण ने नाश के मूल आठ घंटावाले



तजे प्रभु तापर वानजितेक, त्रिंशसीस करे छुवि भस्म तितेक ॥८३॥  
 तजी तब बासवसंगि छितीस, कियो वह खंडित तास त्रिंसीस ॥  
 हनै खल स्यंदनके बलि बाजि, अरे धकि राघव दुस्सह आजि ८४  
 दये खल गोधि तथा त्रयश्रोपै, बडे दसकंधहिं खेदशरु कोपर ॥  
 तजे खल वान हजारन तत्थ, सुरे नहिं राघव तोहु समत्थ ॥८५॥  
 कह्यो प्रभु रावनसौं हगजोरि, भयो हतविक्रम तू तिय चोरि ॥  
 अहम्मति भार बढ्यो तव आहि, त्वराकरि दूरकरों अब ताहि ८६  
 अनेक हरी जिहि काज निलज्ज, सु लै परनारिनके सुख अज्ज ॥  
 यहै कहि मारि हजारन तीर, कस्यो तितऊ दसकंध सरीर ॥८७॥  
 पश्यो रथपै छकि दुष्ट अचेत गयो रथलै तजि सारथि खेत ॥  
 गयो जब रावनको वह मोहै, कह्यो तव सारथिसौं छकि छोहै ८८  
 अरे सठ मोकहैं कार्तै जानि, तज्यो रनतैं करि मो जसहानि ॥  
 कहैनहिं जोलंगि वे जयकार, त्वराकरि तोलग लैचलि त्वारि ८९  
 कही तव सारथि हेदसकंध, बढ्यो तव बिग्रह मोह प्रबंध ॥  
 थके हयहू श्रमधर्म समेत, टस्यो इहिं कारन मैं तजि खेत ९०  
 यहै सुनि रावन ताकहैं तुष्ट, दयो करको इकभूखन दुष्ट ॥  
 सु सारथि रावनको रथमोरि, बडे जव आयउ जंग बहोरि ॥९१॥  
 अगस्त्य महामुनि ताहि अनेहैं, कही रघुनाथहिं आय रु एह ॥

त्रिशूल को छोड़ा उस पर रामचन्द्र ने जितन बाण छोड़े तिनने त्रिशूल ने  
 भस्म करदिये ॥ ८३ ॥ तब रामचन्द्र ने इन्द्र की शक्ति छांडी उसने त्रिशूल  
 को काटा फिर दृष्ट के रथ के घोड़ों को मारे इसप्रकार रामचन्द्र संग्राम में  
 दुस्सह होकर अड़े ॥ ८४ ॥ रावण के १ ललाट में तीन २ बाण दिये ॥ ८५ ॥  
 ३ तेरे अहंता का भार बढ़गया है सो शीघ्र ही दूर करता हूं ॥ ८६ ॥ ४ आज  
 वह सुख भोग यह कहकर हजारों तीर मार कर रावण के शरीर को ५ चा-  
 लनी के समान करदिया ॥ ८७ ॥ ६ मूर्छा ७ क्रोध में छूककर ॥ ८८ ॥ ८ कायर  
 जानकर ९ जब तक शत्रु अपनी जय हुई नहीं कहै तब तक १० शीघ्रता कर-  
 के ११ पीछा लेचल ॥ ८९ ॥ १२ तुम्हारे शरीर में मूर्छा का प्रबन्ध बढ़गया था  
 ॥ ९० ॥ १३ प्रसन्न होकर दृष्ट रावण ने उस सारथि को १४ हाथ का भूषण दिया  
 १५ बड़े वेग से ॥ ९१ ॥ १६ उसी समय में अगस्त्य मुनि ने आकर रामचन्द्र से कहा

त्रिंशवार दिनेसहृदै जपिलेहु, सपूजन अर्घ्य अनुत्तम देहु ॥ ९२ ॥

हाँ तुमही लाहिहो जय राम, दसाननकों हनिहो रनधाम ॥

अगस्त्य गये प्रभुसों कहि एह, सुही सब सद्विय राम सनेह ॥ ९३ ॥

त्रिंश्याचमि व्है सुचि लै निज चाप, लगे खलकों अब वेधन आप ॥

कहीं तँहँ मातलिसों प्रभु भव्य, चलो खलको रथ लै अपसव्य ॥ ९४ ॥

सुही करि रावन अंतिक आय, दयो प्रभुकों सु समीप दिखाय ॥

इते विच कौतुक धारि उमंग, जुरे सब पिक्खन द्वैरथ जंग ॥ ९५ ॥

पर्यो खलके रथ अस्त्रै अभव्य, प्रभंजनचक्र भये अपसव्य ॥

चलै जिहिँ मारग रक्खसराय, चलै तित गिद्धनके समुदाय ॥ ९६ ॥

भई भुव दीप्तगिरी उलकापहु, थके चलते रन जातुन बाहु ॥

दिवाकरके सितलोहितपीत, मयूख लखे खल अंग परीत ॥ ९७ ॥

भज्यो भुव कंप दसानन पास, सिवा किलकी तस पिठि कुभास

बह्यो प्रतिकूल रजोमय वात, विनाँ घन भो तडिता पविरे पात ॥ ९८ ॥

वढयो तम घोर दिसा विदिसान, गिरी लरि सारिकिका रथथान ॥ ९९ ॥

कि तीन बेर आदित्य हृदय नामक स्तोत्र को जप करके पूजा के साथ अनु-

त्तम (न उत्तमोऽस्मात् स अनुत्तमः) को अर्घ्य दो ॥ ९२ ॥ तीन बार आचम-

न लेकर पवित्र होकर अपना धनुष लेकर मातलि से रामचन्द्र ने १ योग्य

वचन कहे कि रावण के रथ को २ दहिना लेकर चलो ॥ ९४ ॥ ३ रावण के

समीप आकर ४ दोनों रथों का युद्ध देखने को यहाँ लक्षणा से दोनों राथि-

यों का युद्ध जानना चाहिये ॥ ९५ ॥ रावण के रथ पर अमंगलिक ५ रुधिर

की वर्षा हुई और ६ वायु गोटे (वधूलिंग) दहिनी ओर को हुए और जिस

जिस मार्ग रावण चला तिस तिस मार्ग उसके साथ गिद्धों के समूह चले

॥ ९६ ॥ लंका की भूमि जलती हुई दिखाई देने लगी और आकाश से अग्नि

के अंगारे गिरे युद्ध में राजसों के भुज शस्त्र चलाते हुए धकगये रावण के

शरीर के चारों ओर सूर्य के किरण स्वेत लाल और पीले रंग के दिखाई

देने लगे ॥ ९७ ॥ रावण के समीप की भूमि कांपने लगी और उसकी पी-

ठ पीछे अमंगलिक अथवा बुरी तरह से स्थालणी चाखने लगी और धूलि

के साथ सामने का पवन चलने लगा बिना यादल मिलुली और बज्र पड़ने

लगे ॥ ९८ ॥ मैना पक्षि परस्पर लड़ कर रावण के रथ पर गिरे घोड़ों के

कटी चिनगी हयलिंगप्रदेस १४, भरे हयनेत्रन अश्रु विसेस १५। १९।  
 अनेक कुसोन भये इम ताहि, भये सुभ राघवको जय चाहि ॥  
 जुरयोहि तथापि दसानन जंग, इतैं प्रभु जुज्झिय धारि उमंग १००  
 दयो लखि दोउन २यों रनदाव, भज्यो कपि १ जातुँ २न चित्रितं भाव ॥  
 धनैं सर दुष्ट तजे तब घुम्मि, गिरे रथकै लगि ते मुरि भुम्मि १०१  
 तहाँ इक १ आसुग दै रघुराय, दयो तस केतन कटि गिराय ॥  
 दये प्रभु अस्वनकै खल बान, लगे जिम फूल गिरे हतपान १०२।  
 दये पुनि बान हजारन दुष्ट, तजे तिनपैं इतैं प्रभु तुष्ट ॥  
 भयो तिनतैं नभ कुटिम भास, कहौ नहिँ नैकरहयो अवकास १०३  
 अनंतर दोउन २ तकि अमान, परस्पर बाजिनकै दिय बान ॥  
 रचे पुनि दोउन २ दै रथ काव, गंता १५५ गत २ मंडल ३ बाथि ४ न दाव १०४  
 समीप मिले पुनि द्वै २ रथ आजि, भिरे धुरसौं १ धुर २ बाजिन १ बाजि २  
 तहाँ प्रभु रक्खस अस्वन अंग, दये सर बाजि मुरे रथसंग १०५।  
 दये तँह मातलिकै सर दुष्ट, चलयो नहिँ सो रु भये प्रभु रुष्ट ॥  
 कलंब हजारन दै छितिराय, दई खलकी हुत पिडि फिराय १०६

( तिराय १ फिराय २ अन्त्यानुप्रासः १ )

अयोध्या १ गदा २ वरखयो मुरि सोहु, त्रिलोक अधीस बढे धकि तोहु

लिंग से अग्नि की चिनगारी निकली और नत्रों से बहुत आंसू गिरे ॥ ६१ ॥ खोटे शकुन हुए ३ तो भी ॥ १०० ॥ वानर और ४ राक्षस ९ चित्राम के से होगये ॥ १०१ ॥ १ पाण ७ रावण की ध्वजा को काट कर गिरा दी ८ पाण रहित होकर उलटे गिर गये ॥ १०२ ॥ ९ प्रसन्न होकर पाण छोड़े उन बाणों से आकाश घर की शोभा धारण करने लगा जिसमें कुछ भी अवकाश नहीं रहा ॥ १०३ ॥ इस पीछे प्रमाण रहित (अमाव) दोनों ने दोनों रथों का चक्कर (गोलकुंडा) लगाया, आने जाना पीछा आना गोलाकार फिरना इन मोर्चों से दाव दिये ॥ १०४ ॥ १० उस युद्ध में दोनों रथ समीप मिल गये ॥ १०५ ॥ मातलि (इन्द्र का सारथि) चलायमान नहीं हुआ और रामचन्द्र क्रोधित हुए भूपति रामचन्द्र ने हजारों बाण देकर दुष्ट रावण की शीघ्र पीठ फिरा दी ॥ १०६ ॥ ११ मूसल. तीनों लोक के स्वामी (रामचन्द्र) हों भी क्रोध में पूर्ण होकर आगे बढ़े दोनों ओर से बाणों के समूह बहे जिनके वेग से सानों

वहे दुवर्घाँ सन बानन बात, छुहे तिनके जव सागर साता १०७।  
 डरे अतलादिनके बसवान, करयो रबिरौचि प्रकासन हान ॥  
 तहाँसुर१ओ सुरगायक२सिद्ध३, मिले पुनि जच्छ४रु चारन५इह१०८  
 महोदर ६ किन्नर७गुह्यक८जूह, लगे कहिये लखि जुद्ध दुरूह ॥  
 रहो कुसली द्विज१धनु२न ग्राम, दसाननकों अब जितत राम१०९  
 यनों अवमर्द भयो यह घोर, अहो रन एरिस भो नहि ओर ॥  
 ख१सागर२तुल्य३ख१सागर२जेम, यहै रन या रन तुल्यहि एम११०  
 रहे कहते इम पिकखत रंग, जुरे पुनि द्वै२रचि द्वै२रयजंग ॥  
 तहां इक१दै सर सर्वअधीस, लयो इक१कटि दसानन सीस १११  
 महीसिर आत बिलंबहु आस, न पै सिर और प्ररोहत तास ॥  
 इका१ऽऽधिक कटिय यौ सत१०१मत्थ, तऊ न मरयो हुव नूतन तत्थ  
 निरर्थक जानि स्ववानन वार, कियो तब यौ रघुनाथ बिचार ॥  
 सुबाहु१ कबंध२ खरा३ऽऽदिक ओघ, हनै जाँतैस पिडि०सरमोघ  
 कही तहँ मातलि यौ हित खुलि, रहे प्रभु कडिता१प्रखहि भुलि  
 सुन्यौ इम मातलि उक्त समत्थ, वहै सरबद्ध रियो प्रमुहत्थ ११४

समुद्र चोभित होगये ॥ १०७ ॥ १ सूर्य की कान्ति को मिटादी देवता और ग-  
 न्धर्वश्यलनिर्मल ॥ १०८ ॥ वडे सर्प समूह कहने लगे कि यह युद्ध कठिना-  
 ई से तर्कना में आवे ऐसा है, ब्राह्मण और गडकों के समूह कुशल रहो रा-  
 मचन्द्र अब रावण को जीतते हैं ॥ १०९ ॥ यह बहुत पीड़ाकारी युद्ध हुआ  
 ऐसा भयंकर और आश्चर्य करनिवाला कोई दूसरा युद्ध नहीं हुआ जैसे  
 आकाश और समुद्र के समान आकाश और समुद्र ही हैं इनके जैसा दूसरा  
 कोई पदार्थ नहीं, तैसे ही इस युद्ध के समान यही युद्ध है युद्ध को देखकर वे  
 तो इसप्रकार कहते रहे और इधर फिर रथ (लक्षणा से रथी) युद्ध में जुड़े सब  
 के स्वामी रामचन्द्र ने रावण का एक मस्तक काटलिया ॥ १११ ॥ उस मस्तक  
 के भूमि पर आने में तो विलम्ब हुआ परन्तु उसके दूसरा मस्तक उगने में  
 विलम्ब नहीं हुआ इसप्रकार एक सौ एक मस्तक रामचन्द्र ने काटे तो इ-  
 नवीन मस्तक होते गये और रावण नहीं मरा ॥ ११२ ॥ अपने बाणों का  
 बार (प्रहार) करना निरर्थक जानकर दसमूह को बाणों से मारे वेही व्यर्थ कैसे  
 हुए ॥ ११३ ॥ उस समय इंद्र के साराथि मातलि ने हित के साथ कहा कि  
 महाराज ब्रह्मास्त्र को आप क्यों भूल रहे हो मातलि का कहना सुनकर उ-  
 स बलवान् ब्रह्मास्त्र को रामचन्द्र ने हाथ में लिया ॥ ११४ ॥

रच्यो विधिनेँ जु पुरंदर काज, बली पवमान?वसैँ जिहिँ बाज ॥  
 रहैँ रवि?अग्नि?उभैँफल जास, गुरुत्व सुमेरु?रु अंग अकास ॥११५॥  
 दयो वनमैँ पहिलैँ जु अगस्त्य, लयो प्रभु अस्त्र सु अंतकपस्त्य ॥  
 प्रकासत पुंखन कांचन काम, लसैँ उरगासन पत्र ललाम ॥११६॥  
 सु लैँ श्रुतिसूचित मंत्र समेत, धरयो गुनपैँ अरिनास निकेत ॥  
 कसीसि लयो श्रुतिमूल लगाय, भज्यो तहँ छोनिय जंगम भाय ॥  
 समाधि छुटी सहसा सिवकेर, बराहप जानु जके तिहिँ बेर ॥  
 अचानक उडिय ओझकि सेस, कपाल नम्यो मचक्यो कमठेस ॥  
 दिसागज दीन फिरे अमखात, उलटिय आतुर सागरसात ॥  
 दयो खलके उरमैँ सु अभंग, गयो हियभेदि रु रामनिखंग ॥११९॥  
 गिरे खलके करतैँ सर?चाप?, परयो अरराय तज्यो असु आप ॥  
 जितैँतित भज्जिग रक्खसैँ सेस, लई पहिली निजरोचि दिनेस ॥  
 वजे सुरदुंदुभि?दिव्यसरीर?, सबैँ जग स्वस्थभयो तजि पीर ॥  
 भये मुनि?देव?रु चारन?तुष्ट, अमादिन राम हन्यौँ इम दुष्ट ॥१२१॥  
इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

जिस अस्त्र को ब्रह्मा ने इन्द्र के लिये बनाया था जिसके पांखों में बलवान् पवन बसता है और जिसके दोनों कलों में सूर्य और अग्नि रहते हैं जिसका भारी पन सुमेरु पर्वत के समान और शरीर आकाश के समान है ॥ ११५ ॥ यमराज के घर के समान उस अस्त्र को रामचन्द्र ने लिया जिसकी पांखों पर सोने का चित्राम, गरुड़ की सुन्दर पांखों को प्रकाश करते हुए का ॥ ११६ ॥ वेद के कहेहुए मंत्रों सहित शत्रु के नाश के घर रूपी बाण को प्रत्यंघा पर धरा और खींचकर कान के मूल तक लिया उस समय भूमि चलायमान होगई ॥ ११७ ॥ अचानक भूमि को उठानेवाला बराह छुटनों के बल गिर गया. शेषनाग चौक उठा और फणों का समूह नमगया. कमठ भी मचक गया ॥ ११८ ॥ दिशाओं के हाथी रवह बाण रावण का हृदय भेदन करके पीछा रामचन्द्र के भाये में चला गया ॥ ११९ ॥ अरराट शब्द करके (यह गिरने के शब्द का अनुकरण है) बलवान् प्राण को छोड़ दिया रेबाकी के राक्षस? सूर्य ने अपनी पहिले की क्रान्ति पीछी ली ॥ १२० ॥ ५ अमावास्या के दिन ॥ १२१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

वीतिहोत्रवसुधेश्वरवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ विवाहवेला  
 वर्णनविषयकविवस्वद्वंशविवर्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६  
 प्रथमपुत्रविकुत्ति ७ कुलकलशवैदेहीवल्लभचरित्रे रामचतुर्दशी १४  
 दिनखिलबहुलकर्बुरनिपातनश्रुततद्वधतद्वधूविलापरावणादर्श ३०  
 दिनरणाविरचनसुग्रीवविरूपाक्ष १ महोदर २ बिध्वंसनतरियमहापा  
 र्श्व १ प्राणहरणादशग्रीवशक्तिशीर्गालक्ष्मणाशूरशय्याशयनसमुज्जीवि  
 तत्त्वानुजरघुराजगतप्रत्यागतलङ्केश्वरदलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४  
 मयूखः ॥ ५४ ॥ आदितः पश्यावतितमः ॥ ९६ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( दोहा )

अनसुं गिरयो लाखि अग्रजहिं, बहु किय रुदन विलाप ॥  
 बुल्ले सु सुनि बिभीखनहिं, अतिहित राघव आप ॥ १ ॥  
 वीर समुख जुरि होत व्यसु, सोक उचित गिनि सो न ॥  
 सदा जई कोउ न सुन्यौ, भयश्रव्यरहित त्रिभोन ॥ २ ॥  
 कहिय बिभीखन जिहिं करे, नम्र असुरसुरनाग ॥  
 अप्प हन्यौ प्रभु ताहि अक, दैन रह्यो खिल दांग ॥ ३ ॥

वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढ़ानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के प्रथम पुत्र विकुत्तिकुल के कलश जानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में रामचन्द्र के चतुर्दशी के दिन बाकी के बहुत राजाओं को मारना, उनका माराजाना सुनकर और उनकी स्त्रियों का विलाप सुनकर अमावास्या के दिन रावण का युद्ध रचना, सुग्रीव का विरूपाक्ष महोदर को मारना, अंगद का महापार्श्व को मारना, रावण की शक्ति से चीण होकर लक्ष्मण का शूरशय्या में सोना, अपने छोटे भाई के जीवित होने पर रामचन्द्र का जाकर पीछे आये हुए रावण को मारने का चौपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५४ ॥ और आदि से छयानवे मयूख हुए ॥ २ बड़े भाई को १ बिना प्राण गिरा हुआ देखकर ॥ १ ॥ वीरलोग सम्मुख जुड़ कर बिना प्राण होते हैं उनका शोक करना उचित नहीं है सदैव जीतनेवाला किसीको नहीं सुना और तीनों लोकों में भय और नाश से रहित कोई नहीं है ॥ २ ॥ उसको उदाग देना (दग्ध करना) उपाकी है ॥ ३ ॥

राम कह्यो रिपुता कहत, मरन अवधि जगमाहि ॥

ज्यौं तव त्यों मम बंधुजन, अब रावन प्रिय आहि ॥ ४ ॥

( षट्पात् )

सुनत कुणप दससीस पतन लंका अंतहपुर ॥

बिलपत नारिनद्वंद अखिल आये कठि आतुर ॥

द्रुत पुर उत्तरद्वार होय रनभुव धव हेरत ॥

सुख सुमिरत पति संग खुलेकेसन सुर्म खेरत ॥

लोहत बिहाल तोरत अलक सुतो लखि मानद समर ॥

महिला अचेत मयजो प्रमुख परी सकल तस देहपर ॥ ५ ॥

( दोहा )

मंदोदरि व्याकुल अमित, अखिख तिय अवतंस ॥

सीतासन मोमै सदा, बढत रूपगुन २ वंस ३६ ॥ ६ ॥

तदपि अनंगाऽऽयत तै, मोहित वीसरि मोहि ॥

हठि बरजत सीता हरी, तास मिल्यो फल तोहि ॥ ७ ॥

पुष्पक दिव्य विमान पर, धव हमजुत चढि धीर ॥

रचते नंदन १ चैत्ररथ २, विहरन १ क्रीडन २ वीर ॥ ८ ॥

सो अज्जहि वित्तो समय, सोये तुम रनसैन ॥

रामचन्द्रने कहा कि जब तक जीवित रहै तभी तक संसार में शत्रुता कहते हैं मेरे पीछे यह रावण जैसा तेरा भाई है तैसा ही मेरा भी प्रिय है ॥ ४ ॥ १ मराहुआ २ जनाने में ३ समूह ४ सब ५ शीघ्र ६ रणभूमि में पति को हेरती हुई ७ पति के संग सुख भोगे थे उन को स्मरण करती हुई ८ मस्तक पर फूलों की रचना होरही थी जिनको बिखेरती हुई ९ मान देनेवाले अपने पति को १० युद्ध में सोयाहुआ देखकर ११ मंदोदरी (मय की पुत्री) १२ आदि १३ स्त्रियां अचेत होकर रावण के शरीर पर गिरीं ॥ ५ ॥ १४ स्त्रियों की मुकुट ॥ ६ ॥ १५ तो भी १६ काम के वशीभूत होकर भूल से अथवा सीता में १७ मोहित होकर ॥ ७ ॥ १८ इन्द्र के नन्दनवन रूपी अशोकवन में २० विहार और २१ चैत्ररथ (अशोकवन में रावण के क्रीड़ा करने का चैत्ररथ नामक स्थान था) में क्रीड़ा करते थे ॥ ८ ॥ वह समय तुम्हारे रणशय्या में शयन करने से २१ आज ही बीत गया

अर्क किरन प्रविसे अभय, अज्जहि लंका अैन ॥ ९ ॥  
 भोक्ता त्रिभुवन भोगके, जेता जमके जंग ॥  
 स्वप्न किधौ यह सत्य है, राम हनै तुम रंग ॥ १० ॥  
 पवनहु हमको ललि १ परसि २, रंक अदंड रह्यो न ॥  
 ते बाहिर निकसी तरुनि, क्यों तिहिं रोध कखो न ॥ ११ ॥

( षट्पात )

बिलपत इम अति विकल भई उरलग्गि अचेतन ॥  
 इतर सउत्तिन तिहिं उठाय बहुदिय संबोधन ॥  
 निकट बिभीखन बुल्लि चित्त राघव अखिय इत ॥  
 अग्रज तिय विसवासि देहु पावक तिहिं दीपित ॥  
 सुनि कहिय बिभीखन रामसन यह अधर्मरत दुष्ट अति ॥  
 निजहृत्थं याहि संस्कृत करन मेरी होत न नैक मति ॥ १२ ॥

( दोहा )

बुल्ले राम बिभीखनहिं, दुष्ट जदपि दसमत्थ ॥  
 तदपि सख परि पूत तनु, अब भ्रम छंडहु अत्थ ॥ १३ ॥  
 तव कर करि संस्कार तै, याको बढिहै अर्घ ॥  
 जिततित तेरो जाय है, बहुजस कबुरवर्घ ॥ १४ ॥

( षट्पात )

और आज ही लंका के घर में निर्भय होकर सूर्य के किरण घुसे ॥ ९ ॥ तो  
 नों लोक के भोगों को भोगनेवाले और युद्ध में यमराज को जीतनेवाले  
 तुमको युद्ध में रामचन्द्र ने मारे सो यह सत्य है अथवा स्वप्न है ॥ १० ॥  
 हमको देखकर और स्पर्श करके दीन के समान पवन भी दंड पाये बिना  
 नहीं रहा वे ही स्त्रियां बाहर निकले आई हैं जिनको तुमने क्यों नहीं रोक  
 ॥ ११ ॥ दूसरी सोकों ने मंदोदरी को उठाकर बहुत समझाई १ बुलाकर  
 रामचन्द्र ने कहा कि तुम्हारे बड़े भाई की स्त्री को विस्वास देकर रावण  
 को २ अग्नि दो ३ मेरे हाथ से रावण के संस्कार करने में मेरी मति नहीं हो-  
 ती ॥ १२ ॥ तो भी शस्त्रों के पड़ने से उसका शरीर ४ पवित्र होगया है ॥ १३ ॥  
 तेरे हाथ के संस्कार से रावण का ५ आग्रह बढ़ेगा और ६ हे राक्षसों में  
 सिंह (बिभीषण) सब दिशाओं में तेरा यश जावेगा ॥ १४ ॥



सु सुनि विभीषन सजव आय दसकंधर आलय ॥

अग्निहोत्र ताको उठाय लै बहु चंदन चय ॥

अग्रज बधु पट आतसेय पहिराय अशुधर ॥

काढयो दै निज कंध पुरटनिर्मित नृजानपर ॥

कर्बुरी वृंद रोवत बिकल गये बिलप्पत पिठि तस ॥

लखि प्रयत देस निगमोक्त करि दाह्यो सोदर ससिदस ॥

प्रथम आज्य १ दधि २ पूर्ण सुभग सुककरि किय सेचन ॥

ऊरुन १ कंडन २ पयन १ सकट २ धरि तास रीतिसन ॥

जथास्थान अरणी १ अयोग्र २ दारव अमल ३ धरि ॥

पसु पवित्र हनि तत्थ अनुस्तरणी २ घृत जुत करि ॥

लाजा ३ बिखेरि दै पुनि दहन ४ जल निमज्जि ५ पट अल्ल ६ जुत ॥

तिल १ दर्भ २ मिलित दै तिहिँ उदक ७ सद्यि सब निगमोक्तनुत १६

( दोहा )

मंदोदरि आदिक सबन, अनुनय पुब्ब पठाय ॥

वै पहुँच्यो रघुनाथ ढिग, सच्चो रक्खसराय ॥ १७ ॥

शीघ्र रावण के घर में आकर उसका अग्निहोत्र उठाकर चन्दन काष्ठ का समूह लेकर घड़े भाई के शरीर को रेशमी वस्त्र पहना कर स्पर्श की रची हुई पालकी (नरयान) पर बिठाकर रोतेहुए (विभीषण) ने अपना कन्धा देकर निकाला राक्षसियों के समूह विलाप करते हुए उसके पीछे गये पवित्र स्थल देखकर वेद में कही रीति के अनुसार सगे भाई (विभीषण) ने रावण को दग्ध किया ॥ १५ ॥ प्रथम घृत और दही से सुवे को भरकर सीचा. जांघां ( जंघा ) पर ऊंखल ( ऊंलली ) और पगों पर गाडा (छकड़ा) रक्खा फिर शास्त्र में लिखे अनुसार अरणी मूशल उत्तरारणी पात्र यथास्थान पर धरे और एक पवित्र पशु को मारकर उस की मज्जा के साथ घृत मिलाकर रावण के मुख में दिया और भूमि पर अक्षत बिखेर कर अग्नि देकर जल में गोता लगाकर आले वस्त्रों से निल और डाम से मिलाहुआ जल देकर वेद के कथनानुसार स्तुति योग्य कार्य किया ॥ १६ ॥ १ विनय पूर्वक ॥ १७ ॥

मातलिसौँ कहि सकरथ, त्रिदिव पठायो राम ॥

बुल्ले पुनि प्रभु बुल्लिकैँ, लखन अनुज ललाम ॥ १८ ॥

बेग बिभीखनकै करहु, अब लंका अभिसेक ॥

सुनि लखन दै कनकघट, पठये प्लवग अनेक ॥ १९ ॥

जे लाये भरि सिंधुजल, इम लंकापुर आय ॥

अप्पनकर अभिषेक किय, लखन हित तस लाय ॥ २० ॥

अव्य बिभीखनकी भई, नजरि निछावरि रततथ ॥

सब जातुन मन्न्याँ सु पहु, सो प्रभु भक्ति समतथ ॥ २१ ॥

( पट्टपात )

बहुरि राम मारुति बुलाय जंपिय हुत जावहु ॥

सीताकोँ जयशकुसलसञ्जुवलसहित सुनावहु ॥

तव हनुमान असोकबनी आय रु यह अक्खिय ॥

सुनि मुद गङ्गदवानि जननि चिरकाँरि उत्तर दिय ॥

जैसो प्रमोद तै मम कियउ तैसो तव किहिविधि करौँ ॥

अयश्लोक राज्य तनसो लगत भक्त तोहि को सुख भरोँ ॥ २२ ॥

( दोहा )

मारुति तव किन्नी अरज, है यह रीझ बिसेस ॥

तोमैँ सुत मम प्रीति यह, दीजै अंब निदेस ॥ २३ ॥

सांधु कहयो तव पवनसुत, सीता अधिक सिराहि ॥

मारुति अक्खिय रक्खसी, को तव अप्रिय आहि ॥ २४ ॥

इन्द्र के सारथी मातलि को कहकर रामचन्द्र ने इन्द्र का रथ पीछा स्वर्ग में भेजा फिर लक्ष्मण को बुलाकर बोले ॥ १८ ॥ १ सोना के घड़े देकर २ अनेक वानरों को भेजे ॥ १९ ॥ ३ अपने हाथ से ॥ २० ॥ सब ४ राज-सौँ ने उस (बिभीषण) को अपना स्वामी माना ॥ २१ ॥ फिर रामचन्द्र ने हनुमान को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाओ ५ अशोकवाटिका में ७ बहुत देरी से उत्तर दिया ॥ २२ ॥ ६ हे माता आप यह आज्ञा दो तुझमें मेरी पुत्र की सी प्रीति है ॥ २३ ॥ १० तू अष्ट है यह कहकर ॥ २४ ॥

तो कैंहँ कोन डरावती, कोन कथित करती ना॥

तिनकोँ अब मारौ त्वरित प्रहरि नखरँ बपुपीन ॥ २५ ॥

जननि कह्यो परतंत्र जे, हेलेन तिनको है ना॥

अप्रिय कछु किय पुब्बँ अब, बंदिँ करत मम बैन॥ २६ ॥

मारुति अक्खिय जात मैँ, सौँपहु कछु संदेस ॥

कह्यो जननि पतिकोँ लग्यौँ, अब आसँय दृढ एस ॥ २७ ॥

पट्पात

सुनि मारुति प्रभु निकट आनि अक्खिय अँवासय॥

बुल्लि विभीखन तबहि दुँतहि रामहु निदेसँ दिया॥

सीता सिरजुतँ न्हाय दिव्य अँबरँ १ भूखन २ धरि ॥

दिव्यगंध ३ अचुलिँत अत्थँ आवैँ सु जलनकरि ॥

कव्याँदराज सुनि जाय तब करन जोरि विन्नति करिया॥

न्हाय रु निचोलँ १ भूखन पहरि चढहु यानँ प्रभु हुकम दिया ॥ २८ ॥

दोहा

सो सुनि कर्बुरराजसौँ, सीता कहिय स्वकाँम ॥

मंजनपुँबहि मोहि मुख, रम्यँ दिखावहु राम ॥ २९ ॥

पट्पात

कहिय विभीखन जननि करहु राघव अक्खिय जिमा॥

सु सुनि सती पतिभक्त किन्न निज धवँ निदेस तिम ॥

हनुमान ने सीता से कहा कि तुम को कौनसी राजसी डराती थी और ? कहा नहीं करती थी उनके ३ पुष्ट शरीर को २ नखों का प्रहार करके मार डालें ॥ २५ ॥ सीता माता ने कहा कि ये ४ परतंत्र थीं इससे इनका ५ दोष नहीं है ५ पहिले इन्हों ने अप्रिय किया था अब ७ नमस्कार करके मेरा कहा करती हैं ॥ २६ ॥ मेरा दृढ अभिप्राय यही है कि पति (रामचन्द्र) को शीघ्र देखें ॥ २७ ॥ १. सीता माता का आशय १० शीघ्र ही ११ आज्ञा दी १२ माथा न्हाकर १३ वस्त्र १४ अनुलेप करके १५ यहाँ आवे १६ राजसराज विभीषण १७ वस्त्र १८ पालखी पर चढ़ कर ॥ २८ ॥ १९ अपना मनोरथ कहा कि २० स्नान करने से पहिले ही मुझे रामचन्द्र का २१ सुन्दर मुख दिखाओ ॥ २९ ॥ २२ अपने पति की आज्ञा थी वैसा किया

सिरजुत न्हाय सुगंधवसन<sup>२</sup> भूखन<sup>३</sup>धरि सुंदर ॥  
 सिबिका चढि हुव संग गयो लै तथ निसाचर ॥  
 अखिलेस पास किन्नी अरज आई जननी अत्थही ॥  
 सुनताहि अमर्ष<sup>१</sup>हर्ष<sup>२</sup>रु दया<sup>३</sup>प्रविसे प्रभु हिय सत्थही ॥ ३० ॥  
 राम बिभीखनसौं कह्यो, हे ममभक्त उदार ॥  
 ममढिग आनहु मैथिली, सजव उक्त अनुसार ॥ ३१ ॥

( पट्टपात )

सु सुनि बिभीखन दर करनलग्गो कपि<sup>१</sup>जातुरन ॥  
 प्रेरे अग्गहि वेत्तपानि कंचुकि गरिष्ठगुन ॥  
 सबन दटावन सँद सिंधुउलटनसम भो जँह ॥  
 राम जातुराजहि निवारि इम किय निदेस तँह ॥  
 कव्याद<sup>१</sup> अचछ<sup>२</sup>मर्कट<sup>३</sup>रु कपि<sup>४</sup> ए सब जानहु अप्पनै ॥  
 आनहु निसंक छितिजा इहाँ करहुन सब क्लेसित घनै ॥ ३२ ॥

( दोहा )

मैख<sup>१</sup> विपत्ति<sup>२</sup> उपर्यम<sup>३</sup> सँमर<sup>४</sup>, अरु आपत्ति<sup>५</sup>अनेहै ॥  
 पंचक<sup>६</sup>दोखहि परिहरत, अवलौ पिकखन एह ॥ ३३ ॥  
 जु सुनि बिभीखन जानकी, आनी सबबिच अत्थ ॥  
 नम्म सलज्ज रही निराखि, स्वप्रेभुमुख हितसत्थ ॥ ३४ ॥

( पट्टपात )

१ पालखी में चढ़ी जिसके साथ होकर विभीषण रामचन्द्र के पास ले गया और अरज की कि सीतामाता यहाँ ही आ गई है यह यह सुनते ही रामचन्द्र के उरमें क्रोध, हर्ष और दया साथ ही ३ बुझै सीता को मेरे ६ कहने अनुसार ५ शीघ्रलाओ ७ राक्षसों को दूर करने लगा ८ हाथों में बेत लिये ९ १० बड़े गुणवान् नाजर अथवा जनाने सेवकों को आगे भेज दिये थे १० शब्द ११ रामचन्द्र ने राक्षसराज विभीषण को मना किया १२ राक्षस १३ सीता को १४ सब को दुखी मत करो ॥ ३२ ॥ १५ यज्ञ में मरण समय में १६ विवाह में १७ युद्ध में और १८ आपदा के १९ समय में इन पांच जगह २० स्त्री को देखने का दोष नहीं है ॥ ३३ ॥ २१ अपने पति का मुख ॥ ३४ ॥

जदपि रही पंद्रह<sup>१</sup>विहाय अवसिष्ठ कलासी ॥  
 तदपि दैन जग कैहँ प्रतीति ताकैहँ प्रभु त्रासी ॥  
 बुल्ले इम इक<sup>१</sup>बरस रही सीता रावन घर ॥  
 टरिवेको वह हो न दुष्ट दर्पकको किंकर ॥  
 लग्गो कलंक रघुवंस कैहँ सो मेढ्यो तिहिँ हनि समर ॥  
 यह बज्र परत जननी दृगन निकसि चले अश्रुन निकर ॥

दोहा

रोवत लखि प्रभु पुनि कहिय, कुटिल भौंह अतिकुद्ध ॥  
 अपजस मेटन काज यह, जित्यो मैं खल जुद्ध ॥ ३६ ॥  
 आवनमैं अपबाइही, तू नहि कारन तत्थ ॥  
 दृग दूखत ज्यौं दीप त्यौं, जाहु मनोरथ जत्थ ॥ ३७ ॥

( सौरठा )

निलय पराये नारि, विनु निजबांधव जो बसी ॥  
 चित्त सनेह बिचारि, को पटुजन तामैं करत ॥ ३८ ॥  
 जातैं अब द्रुत जाहु, दिसादस<sup>१</sup>हि तोकाँ दई ॥  
 बलि उछीसक बाहु, मिलैं न अंगदरम्य मम ॥ ३९ ॥  
 लखन<sup>१</sup>गेह ललाम, भलो गेह वा भरत<sup>२</sup>को ॥

यद्यपि चन्द्रमा पन्द्रह कला को छोड़कर एक कला के साथ अत्यन्त क्षीण होजा  
 ता है इसी प्रकार जानकी भी अपने पतिव्रत धर्म के पालन में क्षीण होगई  
 थी तद्यपि संसार को विश्वास कराने के लिये रामचन्द्र ने उसको त्रासदिया  
 १ कामदेव का सेवक<sup>२</sup> उस रावण को युद्ध में मारकर ३ आंसुओं का समूह ४ ५  
 ४ भौंहें टेढ़ी करके ६ मेरे यहां आने में निन्दा ही कारण है (निन्दा मेटने को  
 यहां आया हूं) हे सीता तेरे कारण नहीं आया हूं जैसे नेत्र दूखते समय दी-  
 पक को रखना अच्छा नहीं लगता तैसे ही तेरा रखना भी मुझे अच्छा नहीं  
 लगता इसलिये जहां तेरी इच्छा होवे वहां जा ॥ ३७ ॥ ५ पराये घर में संव  
 धियों के बिना ६ कौन चतुर मनुष्य उसमें स्नेह रखने का अपने चित्त में  
 विचार करेगा अर्थात् कोई नहीं ॥ ३८ ॥ इस कारण से अब तू शीघ्र जा फिर  
 भुजयंघ से शोभायमान मेरे भुज का उसीसा (तकिया) नहीं मिलेगा ॥ ३९ ॥  
 लक्ष्मण का सुन्दर घर अथवा भरत का घर तेरे रहने को अच्छा है अथवा

वाकपिपति३ अभिराम, अथवा भजहु नरादइन ४ ॥ ४० ॥

( मुक्तादाम )

विदेहसुता मुनि ए कटु बैन, धनी सकुची रु चले जलनैन॥  
 कह्यो यह घोर कहो निजनाथ, जथा नृ गवाँर गवाँरिय साथ४१  
 डिग्यो कबहु मम मानस नाहिँ पतिब्रत सौँहँ करौँ सबमाँहिँ ॥  
 कुनारिन चिंति न फेरहु पिठि, रहैँ पतिमाँहिँ सुनारिन दिट्ठि ॥४२॥  
 भयो गहतैँ खल पुहलसंग, उहाँ परतंत्र हुतो मम अंग॥  
 न मै अपराध सुतो किय दुष्ट, हुतो बस चित तहाँ तुम इष्ट ॥४३॥  
 सदा सबदेह स्वतंत्र न आँहिँ, कहा तियजोर जहाँ पति नाँहिँ ॥  
 समौ वितई रहतैँ तुमसंग, छिपैँ नहिँ नैक निसर्गज रंग ॥ ४४ ॥  
 परीहि तथापि न मो पहिचानि, रु जाँतिहिसौँ कुबधू लियमानि॥  
 भई भुवसौँ मिस लै मिथिलैँस, सुव्रतनमैँहि रही सिसुवेस ॥४५॥  
 हजारनमैँ विधिसौँ गहि हत्थ, अयोग्य करो न धनी बनि अत्थ ॥  
 दयो ममसील समस्त विसारि, तजौँ तनु तो अब अग्नि प्रजारि४६  
 कह्यो पुनि लखनसौँ जगदंब, करो चित देवर काष्टकदंब ॥

सुग्रीव का घर अच्छा है अथवा विभीषण के घर का सेवन कर ॥ ४० ॥  
 जानकी ने ये कड़वे वचन सुनकर बहुत विलाप किया और लज्जित हुई और  
 अपने पति से कहा कि यह घोर वार्ता जैसे ग्रामीण (मूर्ख मनुष्य) ग्रामीण  
 (छोटे ग्राम में रहनेवाली) स्त्री को कहै तैसे आप कहते हो ॥ ४१ ॥ १ मन.  
 सयके सामने पतिव्रत का रसोगन करती हूँ, हे रामचन्द्र खोटी स्त्रियों के च-  
 रित्रों को स्मरण करके मुझसे पीठ मत फेरो श्रेष्ठ स्त्रियों की दृष्टि सदैव पति  
 में ही रहती है ॥४२॥ दुष्ट रावण के शरीर का संग मुझको पकड़ते समय  
 ही हुआ था जिस समय मेरा शरीर पराधीन था उसमें मेरा अपराध न-  
 हीं वह तो दुष्ट रावण ने स्पर्श किया था परन्तु मेरा चित्त तो आप में ही  
 इष्टरूप से वास करता था ॥ ४३ ॥ स्वतंत्र नहीं है, ५ आपके साथ रहते ४ वर्ष  
 कीतगये स्वभाव से उत्पन्न हुआ रंग छिपा नहीं रहता ॥४४॥ ७ जन्म से ही  
 मुझको खोटी स्त्री मानली मिथिला के पति का मिस लेकर भूमि से पैदा  
 हुई और बचपन से ही श्रेष्ठ व्रतधारियों में रही ॥ ४५ ॥ ९ यहाँ पर मेरा जो  
 सब शील आप भूल गये तो अग्नि जलाकर शरीर छोड़ूंगी ॥४६॥ सीतामाता  
 ने लक्ष्मण से कहा कि हे देवर काष्ट का समूह इकट्ठा करके चिता बनादो

करौ मम भस्म हुतासन इष्ट, सुही इहिँ आमय औपध सिष्ट ४७  
 रहौ न वृथा अपवादहि पाय, तजी पतिकी मग और न जाय ॥  
 लखे प्रभुको सुनिकै यह सेस, कह्यो प्रभुहु सुनि सैन निदेसा ४८  
 रची तब सेस चिता अनुरूप, प्रदक्षिण माँत करे रघुभूप ॥  
 अधोमुख दीप्त चिता ढिग जाय, प्रनाम करयो द्विज १ देवन २ पाय ४९  
 कह्यो करजोरि उपबुध और, मुखो नन राघवसौँ हिय मोर ॥  
 रु कायक १ वाचक २ मानस ३ वान, कदापि भयो पतिसौँ हितहान ५०  
 हुतासन रक्खहु तो तुम सक्खि, यहै कहि देह दयो बिचरक्खि ॥  
 लगे ढिगिवे तँहँ अंडकटाह, कुलाचल कंपि डरे दिगनाह ॥ ५१ ॥  
 गयो द्रुत हारव फुटि त्रिश्लोक, परे नर १ नाग २ सुरा ३ सुर ४ सोक ॥  
 भये प्रभु दुर्मन इक्क १ मुहूर्त, भये द्दगपंकजहु जलपूरत ॥ ५२ ॥  
 महेश १ विरंचि २ रु इंद्र ३ कुबेर ४, कृतांत ५ रु अप्पति ६ पाय सुबेर ॥  
 बिमानन वैठि तहाँ सब आय, कही इम राघवसौँ हितलाय ॥ ५३ ॥  
 प्रभू सब संसृतके तुम धाम, न अप्पहिँ मानव मन्नहु राम ॥

मुझ को अग्नि ही प्रिय है इसकारण से भस्म कर दो इसरोग की यही  
 श्रेष्ठ औपधि है ॥ ४७ ॥ मिथ्या निन्दा पाकर नहीं रहूंगी पति की छोड़ी हुई  
 दूसरे मार्ग नहीं जाती, यह सुनके लक्ष्मण ने रामचन्द्र की ओर देखा सो  
 रामचन्द्र ने भी इसारे से आज्ञा देदी ॥ ४८ ॥ १ जैसी सीता के लिये होनी  
 चाहिये ऐसी २ सीता माता ने रामचन्द्र की प्रदक्षिणा करके ३ नीचा मुख किये  
 जलती हुई चिता के पास जाकर ॥ ४९ ॥ अग्नि की ओर हाथ जोड़ कर क-  
 हा कि मेरा हृदय रामचन्द्र से नहीं मुड़ा शरीर से वचन से और मन से  
 किसी समय में पति से हित की हानि हुई होवे तो ॥ ५० ॥ हे अग्नि ! तुम  
 साक्षि रखना, यह कहकर अपना शरीर उस अग्नि के बीच में रख दिया  
 ब्रह्मांड ढिगने लगा कुलाचल (जो पर्वत भूमि के परिधि लगाये हुये हैं वे)  
 धूजकर दिशाओं के हाथी ढिग गये ॥ ५१ ॥ शीघ्र हाहाकार शब्द फूट गया  
 देवता और असुरों के शोक पड़ गया “रामचन्द्र का भक्त विभीषण राज-  
 सों का राजा हाँ गया इस कारण असुरों को भी शोक हुआ” और दो व-  
 डी तक रामचन्द्र भी उदास रहे और कमल समान नेत्र जल से पूर्ण होगये  
 ॥ ५२ ॥ ४ यमराज ५ वरुण, श्रेष्ठ समय पाकर ॥ ५३ ॥ सब संसार के आप घर  
 हो हे रामचन्द्र आप अपने को मनुष्य मत मानो और

विदेहसुता कमला अवतार, तजो जिन ताकँहँ हे भवतार ॥५४॥  
 भये नर रावनके बधकाज, फल्यो सब देवन इष्ट सु आज ॥  
 नरत्वहिँ राम तथापि न छोरि, रहे तिन अगग खरे करजोरि ५५  
 इतेबिच देह हुतासन धारि, स्वअंक विदेहसुता बइठारि ॥  
 कह्यो रघुनाथ सती यह लेहु, वृथा अभिसाप न याकँहँ देहु ५६  
 मुहूर्त यहै सुनिकैँ करि ध्यान, प्रसन्न कह्यो रघुनाथ प्रमान ॥  
 करी दुवरदोख मिटावन एह, विदेहसुता अब है ममगेह ॥५७॥  
 हुतो खल रावनको बल नाँहि, कुदिष्टि सकैँ करि जानकिमाँहि  
 सुपै सुनि अक्खिय संकर तत्थ, यहै रघुनाथ पिता तव अत्थ ५८  
 विमान समारहि पिकखन आय, परो तुम भ्रात उभैरतस पाय ॥  
 करी सुहि राघव नम्प्र निसंक, उभैरहि लये अजके सुत अंक ॥  
 कह्यो सुतसाँ हनि रावन दुष्ट, करो पुरजाय सबै अब तुष्ट ॥  
 सुपुत्र हमै वह तैँ दिय स्वर्ग, बढो तव भूमि १ प्रजारधन ३ बर्ग ६०  
 दिवायउ देवननैँ बन तोहि, हमै अब जानिपरी जिम जोहि ॥

सीता लक्ष्मी का अवतार है सो हे संसारका उद्धार करनेवाले उसको मत छोड़ो  
 ॥ ५४ ॥ तो भी रामचन्द्र मनुष्यपन को नहीं छोड़कर उन देवताओं के साम-  
 ने हाथ जोड़ कर खड़े रहे ॥ ५५ ॥ अग्नि ने शरीर धारण करके जानकी को  
 अपनी गोदि में बिठाकर रामचन्द्र से कहा कि इस पतिव्रता को लो और  
 इसको मिथ्या दोष मत दो ॥ ५६ ॥ यह सुनकर दो घड़ी तक ध्यान करके  
 रामचन्द्र ने प्रसन्न होकर अग्नि से कहा कि तुम्हारा कहना प्रामाणिक है  
 एक तो यह कि रामचन्द्र बहुत कामी है और दूसरा यह कि संसारिक व्य-  
 वहारों को नहीं जानते इन दोनों दोषों को मिटाने के लिये हमने इसका  
 त्याग किया था अब जानकी मेरे घर में है ॥ ५७ ॥ जानकी में खोटी दृष्टि  
 करसके ऐसा रावण का बल नहीं था, यही बात वहाँ पर महादेव ने कही  
 और कहा कि हे रामचन्द्र यह तुम्हारे पिता (दशरथ) भी यहीं पर हैं ॥ ५८ ॥  
 विमान पर चढ़कर देखने को आये हैं तुम दोनों भाई इनके पगों में पड़ो अज  
 के पुत्र (दशरथ) ने दोनों को गोदी में लेलिये ॥ ५९ ॥ अपने पुर में जाकर  
 सभ को प्रसन्न करो, हे पुत्र तुमने हमका वह स्वर्ग दिया है इससे हम आ-  
 शीर्वाद देते हैं कि तुम्हारे भूमि प्रजा और धन का समूह बढ़े ॥ ६० ॥ तुमका  
 देवताओं ने बनवास दिवाया था सो जो वार्ता जैसे थी वह हमको अब जान



सञ्जलि नम्र कह्यो तब राम, सपी तुम के कय जा तब धाम ६१  
 सु सापहु मोघकरो हित सत्थ, तथास्तु कह्यो अजके सुत तत्थ  
 विदेहसुतासन अखिय बैन, न पावहु पुत्रि स्वसुद्धि अचैन ॥६२॥  
 ससेस समस्तन यौं हिय लाय, गयो दसस्पंदन देवनि काय ॥  
 कह्यो तब राघवसौं सुरराज, अमोघ हमैं लखिबो तव आज ६३  
 कछु बर लेहु कह्यो बर तत्थ, सबै मृत मोर जिवावहु सत्थ ॥  
 तहाँ मृत भल्लुक १ मर्कट २ कीस ३, समस्त जिवाय दये सुरैस ६४  
 कह्यो पुनि देवन जावहु धाम, निहारहु भ्रात १ प्रसू २ निज राम ॥  
 गये कहि यौं सुरै स्वीय निकाय, नमैं तिनको हितसौं रघुराय ६५  
 रहे इम वहाँ निस तीन ३ बहोरि, बिभीखन प्राँन कही करजोरि ॥  
 अबै प्रभु धारहु चामर १ छत्र २, सबै नृपचिन्ह लहो सकलत्र ६६  
 कह्यो प्रभु हंत बिना भरतेन, सुहावत भूखन १ अंबर २ वे न ॥  
 सु आनहु पुष्पक बेग विमान, करैं हम कौसलदेस प्रयान ॥६७॥  
 करयो सब तैं मम दुर्लभ काज, रहो सुख भुगत कर्बुरराज ॥  
 यहै सुनि पुष्पक हाजर किन्न, बिभीखनको पुनि सासनं दिन्न ६८  
 लरे कपि १ रिच्छ २ सबै मम काज, इन्है पटै १ रत्न २ न पूजहु आज ॥  
 बिभीखन सो सुनि मंजुल मित्र, करे सब अर्चित चित्रबिचित्र ६९

पड़ी है तब रामचन्द्र ने हाथ जोड़कर नम्रता से कहा कि आपने मेरे व-  
 नवास जाते समय अयोध्या में कैकेई को आप दिया था ॥ ६१ ॥ उस साप  
 को हित के साथ मिथ्या करो, नहाँ पर दशरथ ने कहा कि ऐसा ही हो-  
 वेगा फिर सीता से दशरथ ने कहा कि हे पुत्रि! तू अपनी शुद्धता में कोई  
 खेद मत पा, अर्थात् तू शुद्ध ही है ॥६२॥ लक्ष्मण सहित दशरथ स्वर्ग को ग-  
 ये इन्द्र ने रामचन्द्र से कहा कि तुम्हारा हमको देखना आज खाली नहीं जा-  
 ना चाहिये ॥ ६३ ॥ मेरे साथ वाले मरे हुए हैं उनको जिवा दो इन्द्र ने जि-  
 वा दिये ॥ ६४ ॥ देवताओं ने कहा कि हे रामचन्द्र अपने घर जाकर भाई  
 और माता को देखो देवता अपने घर गये ॥ ६५ ॥ बल पूर्वक निवेदन किया  
 (खींचकर अरज की) स्त्री सहित । ६६ । रामचन्द्र ने कहा कि भरत के वि-  
 ना ये सब खेदकारी हैं भूषण वस्त्र और वे (चामर छत्र) नहीं सुहाते । ६७ ।  
 ९हे राजसों का राजा आज्ञा दी ॥६८॥ वस्त्र सुन्दर मित्र ने पूजित किये ६९।

चले पुनि राघव बठि बिमान, दिखावत जानकि को सब थान ॥  
 लगे पुनि सिख समस्त नैन, कह्यो तिन वहाँ चलि है प्रभुअन ७०  
 सबै प्रभु को लखि है अभिसेक, बने पुनि आवन गेह विवेक ॥  
 सुही किय स्वीकृत राम सिराहि, चढाय लये सब पुष्पक चाहि ७१  
 दिखावत संगर १ मग २ असेस, बिदेह सुता लहि हं किय देस ॥  
 विमान सु पुष्पक हंस उपेत, पताकित दिव्य उड्यो छवि देत ७२  
 कपीश्वर के पुर के ढिग जात, कह्यो प्रभुसौं हसिकै जग मात ॥  
 प्लवंगन केहु कैलत्र असेस, चलै मम संग ममांसय एस ॥ ७३ ॥  
 गये तब राघव बानर दंग, लये सकलैत्र सबै कपिसंग ॥  
 चउत्थि ४ निसा रहि वहाँ रघुराय, चले पुनि पुष्पक सर्व चढाय ७४

### पादाकुलकम्

ऋष्यमूक १ पंपा २ पंडित रुख, जातु कबंध १ विराध २ नास मुख ॥  
 जे जे कर्म बने जब आवत, ते सीता कहै सबहि दिखावत ॥ ७५ ॥  
 पहुँचे चैत बिसद पंचमि ५ दिन, भरद्वाज आश्रम राघव इन ॥  
 पुच्छिय करि बंदन मुनिसौं पंडु, सजननि भरत २ कुसल पुर अक्खहु ७६  
 भरद्वाज अक्खिय कुसली सब, पै अति दुक्ख भरत पावत अब ॥  
 जटिल १ मलिन २ कूस ३ रामहि चाहत, पुच्छि पांडु का राज्य निवाहत ७७  
 दरसन देहु जाय तिहि सँवर, वर कछु लेहु मोहुसौं रघुवर ॥  
 प्रभु तब कविन अभीष्ट असन चाहि, मंग्यो वर मुनिसौं असै कहि ७८

१ सबको विदा करने लगे २ अयोध्या में चलेगे ७० ३ पीछे अपने घरों को आने का विचार ४ रामचन्द्र ने स्वीकार किया और रुचि पूर्वक सबको पुष्पक विमान पर चढालिया ॥ ७१ ॥ ५ युद्ध के स्थल और मार्ग दिखाते हुए ६ हंस सहित ७ ध्वजाओं सहित ॥ ७२ ॥ ८ सीता ने ९ बानरों की सब १० स्त्रियाँ भी मेरे साथ चले ऐसा ११ मेरा अभिप्राय है ॥ ७३ ॥ १२ बानरों के पुर (किष्किन्धा) में १३ स्त्रियों सहित बानरों को ॥ ७४ ॥ १४ मार्ग की ओर १५ राक्षस १६ आदि ॥ ७५ ॥ चैत्र १ सुदि पंचमी के दिन १८ रघुवंशियों के सूर्य भरद्वाज मुनि के आश्रम पर पहुँचे १९ राजा रामचन्द्र ने २० माता सहित ७६ ११ जटा रखाये हुए २२ दुर्बल २३ रामचन्द्र की पादुका से पूछ पूछ कर राज्य कार्यको नियाहते हैं ७७ १४ शीघ्र जाकर १५ बानरों के इच्छानुसार २६ भोजन

दोहा

स्वर्गतारुन सम फलःकुसुमै२, मैं जावत जिहिं मगगै ॥

पादप धारहु १होहु पुनि, अदि मधुश्रवरअगग ॥७९॥

कहि तथास्तु तब मुनि करयो, पढ़ति बन फलपीन ॥

लंबमान साकेतलग, चोरो जोजन तीन ॥८०॥

पूरन अब्द चउदहम४१४, इहिं आश्रमहुव आत ॥

पठयो मारुति अगग प्रभु, भेटन माता१भ्रातर ॥ ८१ ॥

चैत बिसद प्रतिपद१दिवस, किय रावन संस्कारै ॥

किय अभिसिक्त बिभीषनहिं, दूजे२दिवस उदार ॥ ८२ ॥

( सोरठा )

जब सीता लैजाय, दससिरधरी असोकवन ॥

तब देवन तँहँ आय, जननीहित पाँयस दयो ॥ ८३ ॥

लगी न ताकँहँ लैन, कहि पति विनु उपवासै क्रम ॥

बिबुधन तब हित बैन, कह्यो असन याको करहु ॥ ८४ ॥

तँस१रु भूख२ए तोहि, व्यापै नहिं यातँ बहुरि ॥

सती खाय तब सोहि, वैलि अनसनै कहुचो बरस१ ॥८५॥

मांगा ॥ ७८ ॥ १ स्वर्ग के वृत्तों के समान फल और २ फूल हम जाते हैं जिस ३ मार्ग के ४ वृत्त धारण करें और आगे के पर्वत ५ सहित के बहानेवाले होजावें ॥ ७९ ॥ ६ मार्ग के वनको फलों से पुष्ट कर दिया ७ लंबाई में ८ अयोध्या तक और चौड़ाई में तीन जोजन (चारह कोश) ॥ ८० ॥ चौदहवां ९ वर्ष पूरा हुआ उसी दिन रामचन्द्र भरमाज्ञ के इस आश्रम से आये इसी कारण से (भरत ने कहा था कि चौदह वर्ष बीत जाने पर भी आप नहीं आवोगे तो मैं जलजाऊंगा) १० हनुमान को आगे भेजा ॥ ८१ ॥ चैत्र सुदि एकम के दिन को रावण का ११ अग्नि संस्कार (दण्ड) और दूज के दिन बिभीषण का १२ राज्याभिषेक किया ॥ ८२ ॥ जब रावण ने सीता को लेजाकर असोक वन में रखी तब देवताओं ने आकर १३ सीता को पीने के लिये १४ दूध दिया ॥ ८३ ॥ सो नहीं लेकर सीता ने कहा कि पति के बिना १५ निराहार रहूंगी १६ देवताओं ने हित के वचन कहे कि इसका १७ भोजन कर जिससे तुझको ॥ ८४ ॥ १८ तृपा और भूख नहीं लगे तब सीता ने उसको खाकर १९ फिर २० निराहार वह वर्ष निकाला ॥ ८५ ॥

तीजे ३ दिन प्रभु ताहि, मिले परखि पावक विमल ॥  
 चलि चउत्थि ४ दिन चाहि, किष्किधा कट्टी रजनि ॥ ८६ ॥  
 सुग्रीवादि असेस, नारिन जुत लै संग निज ॥  
 अहं पंचमि ५ अखिलेस, भरद्वाज मुनि भिँटये ॥ ८७ ॥  
 मानव बपु हनुमान, अगग सुनावन आगमहि ॥  
 पुर्वहि विरचि प्रयान, गुह आलय पहिले गये ॥ ८८ ॥  
 सुख किय कुसल सुनाय, शृंगवेरपति संकरै ॥  
 गगन रामजस गाय, उडयो बहुरि सुत अनलको ॥ ८९ ॥

(षट्पात्)

रामतीर्थ १ कपि लंघि सरित बालुकिनी २ संजुत ॥  
 बरूथिनी ३ पुनि गोमती ४ रु सालवन ५ लंघि द्रुत ॥  
 नंदिग्राम ६ जु इक्क १ कोस साकेतनगर सन ॥  
 भरत भिँटि तहँ जाय कहयो सब वृत्त बन्यो बन ॥  
 वह धरत अजिन १ कासायपट २ कंद फलासन ३ जतिन व्रत ४ ॥  
 सुनि अग्रजाति आगम गिरयो इक १ मुहूर्त मुँद मोहगत ॥ ९० ॥  
 पुनि लहि चेतन भरत विरचि मारुति आलिंगन ॥  
 अखिय दैहँ तोहि धेनु इकलख १०००० पयोधन ॥  
 सत १०० ग्राम रु सोलह १६ सुरूप कन्या गुनसुंदर ॥  
 कहि परंतु तू कोन सुर १ कि असुर २ कि नर ३ किन्नर ४ ॥

१ अग्नि में २ सबको ३ पंचमी के दिन ४ भरद्वाज से मिले ॥ ८७ ॥ ५ मनुष्य का शरीर करके रामचन्द्र का आगम सुनाने के लिये रामचन्द्र से ६ पहिले गमन करके प्रथम गुह के ७ घर (शृंगवेरपुर) में गया ॥ ८८ ॥ ८ शंकर के अवतार (हनुमान) ने ९ आकाश मार्ग में १० पवन का पुत्र उड़ा ॥ ८९ ॥  
 ११ नदी १२ अयोध्या से एक कोश पर नन्दीग्राम में जाकर भरत से मिला और १३ वन में जो वृत्तान्त बना वह सब कहा वह (भरत) १४ मृगचर्म १५ भगवा वस्त्र धारण किये कंद फल का १६ भोजन करनेवाला १७ यतियों के व्रत को रखनेवाला १८ बड़े भाई का आना सुनके १९ हर्ष की सूझा में दो घड़ा तक भूमि पर गिर गये ॥ ९० ॥ २० हनुमान से २१ मिल २२ दूध ही है धन जिनके ऐसी एक लक्ष गौ २३ देवता है किशो

हुव किम अरुण्य सीताहरण किम दसकंधर नास किय ॥  
सह आदिग्रंत हनुमान सुनि कथा राम जयमय कहिय ॥९१॥

( दोहा )

छट्ठी<sup>१</sup>दवासर कलिह प्रभु, मिलिहै तुमसौं आय ॥  
सुनत एह सत्रुघ्नसौं, भरत कह्यो हितभाय ॥ ९२ ॥  
शृंगारहु प्रासाद<sup>२</sup> पुर<sup>२</sup>, समुख चलहु दलसँजि ॥  
सत्रुघ्न सु सद्यो हुकम, अतिघन हरख उपजि ॥ ९३ ॥  
लगि जनैतति साकेत लग, चल्लिय मिलि चतुरंग ॥  
जीवत पलवल भेक<sup>३</sup> जिम, सुचि पहिले जलसंग ॥ ९४ ॥

( षटपात् )

कौसल्यादिक जननि त्रय<sup>४</sup>हि चढि चलिय नृजानन ॥  
सहित भरत<sup>१</sup> सत्रुघ्न<sup>२</sup> पाय नूतन<sup>३</sup> जिम श्रानन ॥  
सम्भुह<sup>४</sup> इम इत सेन चलिय सम्भेद<sup>५</sup> अपुव्व चहि ॥  
उततैं हैंकिय अर्पे<sup>६</sup> व्योम पुष्पक विमान बहि ॥  
मगविच मिलाप छठे<sup>७</sup>दिवस आतन सह जननिन भयो ॥  
साकेतनगर<sup>८</sup> बासिन सुखद अरक<sup>९</sup> महानिस<sup>१०</sup> उगगयो ॥९५॥

( दोहा )

जयाँउचित बंदन जननि, मिलि भ्रातन दुख मेटि ॥  
सँविभीषन<sup>१</sup> कपिपति<sup>२</sup> सवन, भरत मिल्यो उर भेटि ॥९६॥

१वन में सीता कैसे हरी गई ॥ ९१ ॥ २कल छठ के दिन ॥ ९२ ॥ ३ महल और पुर को सिणगारो ४ सेना सभकर ॥ ९३ ॥ अयोध्या तक मनुष्यों की ५ पंक्ति लग गई और चतुरंगिणी सेना चली अयोध्या के लिये रामचन्द्र का यह आना ६ छोटे तालाबों में रहनेवाले ७ मैदनों को ८ आषाढ मास की प्रथम धृष्टि के जलसंग के समान हुआ ॥ ९४ ॥ ९ पालखियों में १० नवीन प्राण पाया होवे जिस प्रकार ११ अपूर्व हर्ष चाह कर १२ रामचन्द्र चले १३ आकाश में १४ अयोध्या पुरवासियों को सुख देनेवाला मानो १५ प्रलय के पीछे का १५ मूर्ध उदय हुआ १७ माताओं को उचित रीति से नमस्कार करके १८ विभीषण सहित १९ सुग्रीव आदि सब से ॥ ९६ ॥

माता तीनन३ मुदितमन, नंतिजुत करत प्रनाम ॥

लाये उर विसवासलहि, रुंचिर सलकखन१ राम२ ॥ ९७॥

प्रभु अगँ ते पावरी, धरी भरत सुभ धोय ॥

कह्यो राज्य निज अब करहु, हमरे पति१ गति२ होय ॥ ९८॥

विरहदीन लखि भरतकोँ, अतिकृस मलिन अधीर ॥

सविभीखन१ कपिपति२ सवन, नयन छल्यो बढि नीर ९९॥

अनुज भरत१ सत्रुघ्न२ उभर, अखिलईस धरि अंक ॥

आये नंदिग्राम अब, राम निवाजत रंक ॥ १०० ॥

सिक्ख तहाँसन पुष्पकहिं, दिन्नी प्रभु निजथान ॥

कहतहि वह अलकाँ गयो, बित्तंद निलैय बिमान ॥ १०१॥

ढढ नमि बंदी देवरन, सीता सस्सुन पाय ॥

लज्जा१ मुद२ नंतिजुत लगी, लिन्नी उन उरलाय ॥ १०२॥

स्वीय पुरोहित जीवसमँ, अल्लमालिका जानि ॥

बंदे राम वसिष्ठ बिभुँ, लिय आसिख मुदमानि ॥ १०३ ॥

( षट्पात् )

कपिनारिन सनमानि कपिन१ रिच्छन२स्वार्गत करि ॥

लिय बधाय साकेतँ भरत सम्मदँ अतीवभरि ॥

रहि सकुसल तिहिँ रँति प्रात निर्गमोक्त सद्धि उरु ॥

१ नम्रता सहित प्रणाम करके २ लक्ष्मण सहित ३ सुन्दर रामचन्द्र को माताओं ने हृदय से लगा लिये ॥ ९७ ॥ रामचन्द्र ने चित्रकूट में भरत को दी थी ४ वे पावद्विधें धोकर भरत ने रामचन्द्र के आगे रक्खी ॥ ९८ ॥ ५ दुर्बल ॥ ९९ ॥ ६ दोनों को ७ गोदी में बिठा कर, रामचन्द्र दोनों को दान करते हुए आये ॥ १०० ॥ वहाँ से ही ८ पुष्पक विमान को रामचन्द्र ने अपने स्थान (कुबेर के पास) जाने की विदा दी १० कुबेर की राजधानी ११ कुबेर के १२ स्थान में गया ॥ १०१ ॥ १३ नम्रता सहित ॥ १०२ ॥ १४ बृहस्पति के समान अपने पुरोहित १५ प्रभु वसिष्ठ को उनकी स्त्री १६ अल्लमाला सहित रामचन्द्र ने नमस्कार किया ॥ १०३ ॥ १७ आये हुए का आदर करके १८ अयोध्या में भरत ने बधा कर लिये अत्यन्त १९ हर्ष में भरकर २० उस रात्रि को रहे और प्रभात ही २१ वेदोक्त बहुत कार्य करके

सप्तमि७दिन अभिसेक कियउ प्रभुके वसिष्ठ गुरु ॥

तँहँ सब नदीन१सिंधुन२सँलिल कपि लाये भरि कनकंघट  
आभिसिक्त राम बैठे उचित भद्रासन गुन खुलि खटक ॥ १०४ ॥

दोहा

आये नंदीग्रामतँ, रथ बैठे तव राम ॥

हंके सारथिभरथ द्वय, लाघव विहित ललाम ॥ १०५ ॥

निभीखन१रु लकखन२दुहुन२, ढोरे चामर पोन ॥

छत्र लयो सत्रुघ्न कर, भर्म रुचिर छविभोन ॥ १०६ ॥

नाम सत्रुजय नागर्पर, बैठायो कपिभूप ॥

नव हजार ९००० हत्थिन चढे, प्लवगन ओ नररूपा ॥ १०७ ॥

आये पुर साकेत इम, छट्ठीदिन रघुनाथ ॥

पठये कपि लावन तवहि, पाथोनिधि मुख पाथ ॥ १०८ ॥

षट्पात्

जांववान१ हनुमान२ बेगदरसी३रु ऋषभ ४ इन ॥

सरितँ पंचसत ५०० सँलिल कियउ हाजरि सँवैन खिन ॥

कपि सुसेन१ पुनि ऋषभ२ गवय३रु नल४५४हुँत ॥

पूरव १ दक्खिन २ आदि जँलधि सँवर लाये नुत ॥

आभिसिक्त भद्रविष्टरँ उपरि बैठे इम सप्तमि७दिवस ॥

जातुप१कपीसँ१ किन्नै चमर लियउ छत्र सत्रुघ्न तस ॥ १०९ ॥

१ जल १ सोने के घड़े भर लाये ३ अभिषेक कराकर छह ही गुणों (सन्धि विग्रह यान संस्था आसन और दैधीभाव) को खोलकर (प्रकाश करके) सिंहासन पर बैठा भरत ने सारथी होकरके ५ शीघ्रता सहित ६ सुन्दर ४ घोड़े हाँके ७ स्वर्ण का रचाहुआ सुन्दरता का घर ८ हाथी पर ९ सुग्रीव को भिठाया १० वानर ॥ १०७ ॥ इसप्रकार ?? अयोध्या में आये १२ समुद्र आदि का १३ जल लाने के लिये वानरों को भेजे ॥ १०८ ॥ १४ नदियों का १५ जल १६ स्नान करने के लिये क्षणभर में १७ शीघ्र १८ समुद्रों के स्तुति योग्य १९ जल लाये २० भद्रासन पर बैठे २१ विभीषण और २२ सुग्रीव ने





देनलगे जुवराजपन, हठि प्रभु लखन हेत ॥

तिहिँ लयाँ न तब भरतही, अप्प्यो विजय उपेत ॥११६॥

अश्वमेधमख१दस१०करे, पुंडरीक२बहुवेर ॥

इतरहु सत्र अनेक किय, जयरोधक किय जेर ॥ ११७ ॥

पसुनकेहु प्रभु न्याय किय, पुनि कहूँ सुनि अपवाद ॥

बिपिन निकासी जानकी, गुर्वी रहित प्रमाद ॥ ११८ ॥

जिहिँ बलमकभवसुनि उटज, रहि रु जनैँ दुव२पुत्त ॥

पैठिगई भुव समयपर, जननि पतिव्रत जुत्त ॥११९॥

पुरजुत रामहु अवधिपर, धाम लगे जब जान ॥

जातुप प्रभुपैहँ आयलिय, तब श्रीरंग विमान ॥ १२० ॥

कोटितीन३००००००००गंधर्व रन, भरत६०हनेँ बिनु बिघन ॥

मधुसुत लवणाँहिँ मारि किय, मथुरानगर अरिधन ॥१२१॥

( षट्पात )

सुतदुव२दुव२सबकैहि रामअंगैँ हुय कुस६११लव६१२॥

तक्षक६११पुष्कर६१२भरत तैनय उपजे धरनीधव ॥

सुत सुबाहु६११अरु सूरसेन६१२सत्रुघ्नकेर जिम ॥

१ लक्ष्मण को युवराज पद देनेलगे सो उनने नहीं लिया तब विजय सहित वह युवराज पद भरत का दिया ॥११६॥ अश्वमेध यज्ञ दश किये और पुंडरीक यज्ञ बहुत बार किये और भी यज्ञ किया अपनी विजय के रोकनेवाले शत्रुओं को अधिकार (काबू में करके दबालिये) में किये ॥ ११७ ॥ रामचन्द्र ने पशुओं के भी न्याय किये फिर कहीं पर अपनी निन्दा सुन कर सीता को वन में निकाल दी जो गर्भवती और प्रमाद से रहित थी ॥ ११८ ॥ वाल्मीकि सुनि की पर्यकुटी में रहकर हो पुत्र जने और सीता माता पतिव्रत धर्म के साथ सजय पर भूमि में पैठगई ॥ ११९ ॥ जब राम अपने धाम (स्वर्ग में) जानेलगे तब रामचों के पति (विभीषण) ने पवित्र विमान लिया ॥ १२० ॥ १ लवणाक्षर को २ शत्रुघ्न ने मथुरा नगर बसाया ॥ १२१ ॥ ३ रामचन्द्र के पुत्र ४ भरत के पुत्र ५ भूपति हुए अथवा वसुदेव चहुवान को सम्बोधन करके कुंडक राजा का नडवल नामक पुरोहित

प्रकटे अंगद६१।१चित्रकेतु६१।१लक्ष्मणनतनूज तिम ॥

इमं रामचरित नङ्गल बरनि दुल्लह नृप वसुदेव६८प्रति ॥

रघुनाथ पुत्र पट्टेस कुस६१वंस कहनं लग्गो सुमति॥१२२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशो  
वीतिहोत्रचतुर्भुजकुलकथने वसुदेव६८वेला६८।१ विवाहवेलावर्ण-  
नविषयकविवस्वद्वंशविवर्द्धकवैवस्वत ५ मनुतनुजनुरिक्ष्वाकु६पट्टप-  
पुत्रविकुत्ति ७ जननोज्ज्वालकश्रीजानकीजानिचरित्रे संस्कारित-  
दशग्रीवसमभिषिक्तविभीषणसमनुनीतपरीक्षितसीतासमुज्जीवित-  
अमृतस्वयोधसरत्नोराजसखीकलवगादिपरिकरसहितश्रीरामसा-  
केताऽऽगमनसमभिषिक्तप्रभुसुग्रीवादिस्वस्वपस्त्यप्रस्थापनसमनु-  
ष्ठितराज्यकोशलोपेतश्रीरघुनाथस्वधामाऽऽरोहणपञ्चपञ्चाशत्तमो  
५५ मयूखः ॥ ५५ ॥ आदितः सप्तनवतितमः ॥ ९७ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( षट्पात )

कुसुत अतिथि६२तदीय निष६३रु तस नल६४ताकै नभ६५॥

कहता है ? लक्ष्मण के पुत्र २ इसप्रकार नङ्गल पुरोहित रामचरित्र वर्णन  
करके दुल्लह वसुदेव बहुवान से रामचन्द्र के पाटवी पुत्र कुश का वंश  
कहने लगा ॥ १२२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशिमें अग्निवंशी बहु-  
वान वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में  
सूर्यवंश को बहानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकु-  
त्ति के कुल को उज्ज्वल करनेवाले श्रीजानकी के पाति (रामचन्द्र) के चरित्र  
में रावण का अग्निसंस्कार करके लंका के राज्य का अभिषेक पायेहुए  
विभीषण से लाईहुई और परीक्षा की हुई सीता का फिर जीवित होना,  
अपने योधों का जीवित होना, राक्षसराज और स्त्रियों सहित वानरों की  
परगह सहित श्रीरामचन्द्र का अयोध्या आना, अभिषेक हुए रामचन्द्र का  
सुग्रीव आदि को अपने अपने घरों को भेजना, सुखपूर्वक राज्य करके अयो-  
ध्या सहित रामचन्द्र के स्वर्ग जाने का पञ्चपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५५॥  
और आदि से सप्तानके मयूख हुए ॥ ९७ ॥

चट्टवाणवंशवर्णन ] तृतीयराशि—पद्मपञ्चाशमधूल ( १००७ )

पुंडरीक६६ तस तास क्षेमधन्वा६७ हुव सुप्रभ॥

देवानीक६८ तदीय अहीनगु६९ नाम तास सुव॥

ताकै रुरु७० तस पारियात्र७१ बल७२ तस तस सल७३ हुव ॥

तस उत्क७४ वज्रनाभाख्य७५ तस तस रंखन७६ व्युषिताश्व७७ तस ॥

विश्वसह७८ तास प्रकल्यो तनय सहिरण्यनाभ७९ सुप्रज सुंजसा१॥

नृप हिरण्यनाभसन योग लिय याज्ञवल्क्य मुनि ॥

सुत हिरण्यनाभभव पुष्प८० ध्रुवसंधि८१ तास मुनि ॥

तास सुदर्शन८२ अग्निवर्ण८३ ताकै सुत जानहु ॥

ताकै सीधग८४ मरु८५ तदीय तर्दुदंत प्रमानहु ॥

सुकलापग्राम संस्थित अवहु कठिन जोगसाधन करहिं ॥

कलिग्रंत बहुरि कृतजुगं लगत यासों रविकुल विंथरहिं२

मरुकै तनय सुसंधि८६ तास आमर्ष८७ भयो सुत ॥

सहस्वान८८ अंगज तदीय बल१ नीति २ धर्म जुत ॥

ताकै विश्रुतवान८९ तास तनुजात वृद्धबल ९० ॥

जो भारत गनसाहिं हन्यो अभिमन्यु अकर्मल ॥

हुव तास वृहत्क्षत्र९१ सु तनय तास उरुक्षय९२ वीरवर ॥

तस वंस९३ नाम प्रकटे तनुज ताकै व्यूह९४ प्रभुत्व पर ॥३॥

व्यूह तनय प्रतिव्योम९५ तास तनुजात दिवाकर ९६ ॥

ताकै हुव सहदेव९७ तास वृहदश्व९८ धर्मधर ॥

ताकै नैय१ जय२ अतुल भयउ सुत नाम अश्वरथ९९ ॥

प्रतीताश्व१०० तस पुत्र तनुजतस हुव प्रतीक १०१ अथ ॥

१ श्रेष्ठ कर्मान्तवाला २ पुत्र ३ वज्रनाभ नामक ४ श्रेष्ठ सन्तानवाला  
॥ १ ॥ ५ हिरण्यनाभ से ६ हिरण्यनाभ का पुत्र ७ उसके ८ उसका वृत्तान्त  
८ वह अब भी कलाप ग्राम में स्थित कठिन योग साधता है कलियुग  
के अन्त में फिर १० सत्वगुण लगेगा तब इसी (मरु) से सूर्यवंश ? फैलेगा ॥ २ ॥  
१२ पुत्र १३ पुत्र १४ पुत्र १५ पाप रहित १६ पुत्र १७ परम प्रसुतावाला ॥ ३ ॥ १८ नीति और १९ विजय में अमाप

मरुदेव १०२ तास विक्रम सहित सु नक्षत्र १०३ तस तस तनय ॥

किन्नर १०४ सु गौड अर्जुन\*दमन करन गोग चहुवान जया॥१॥

( पादाकुलकम् )

किन्नर+अंगजअंतरिक्ष १०५ हुव, तास सुवर्ण १०६ तास अमित १०७ सुव

तस वृहद्राज १०८ तास धर्मी १०९ सुत, तास कृतंजय ११० बाक्य, तास भुत

सुबोदन ११२ ताकै तस राहुल ११३, तस प्रसेनजित ११४ हुव गुनवाहुल

क्षुद्रक ११५ तास तास कुंडक ११६ यह, विद्यमान तव स्वसुर महामह ॥

यासागरसन अतुलरत्न दुवर, तनय सुरथ ११७ १ तनय विला ११७ २ हुवा ॥

जो वसुदेव ६८ रावरी दुलहनि, होवहु यह रानिन चूडामनि ॥ ७ ॥

इस विकुक्षि ७ १ अन्वय तुम जानहु, अबनिमि ७ २ अन्वय प्रथित प्रमानहु

निमि ७ ३ इक्वाकु ६ तनूजं धर्म हित, मख आरंभिय अर्द्ध सहस्र १०० मित

करन लग्यो गुरुको होता जब, कहिय वसिष्ठ स्वर्ग जेहो अब ॥

वरख पंचसत ५०० मित मख रचित हैं, पहिलें इन्द्र बुलायो मोक हैं ॥

वह मख करि पूरन दुते औहो, विधिजुत पुनि तब सर्वहु बनैहो ॥

यह कहि गये वसिष्ठ सुरालय, नृपहि विलंब रुच्यो न रुच्योनय ॥

गोतम मुनि बुलवाय सर्व किय, दिवसं व करि गुरु आय सापदिय

मन्थ्यो इतर मोहि तजि जातैं, होहु विदेह भूप निमि तातैं ॥ ११ ॥

नृप हो सुप्त सुनो न सु वानी, पुनि जगि इतरन कथित प्रमानी ॥

\*अर्जुन गौड़ का दमन करनेवाला और गोग चहुवाण का विजय करनेवाला किन्नर हुआ ॥ १॥ पुत्र १ पुत्र २ स्तुति योग्य ५ १३ बहुत गुणवान् क्षुद्रक के कुंडक हुआ सो हे वसुदेव चहुवाण यह तुम्हारा स्वसुर वर्तमान है ५ १६ इस समुद्र से पुत्री ७ राणियों का अस्तक मणि होओ ७ इस प्रकार विकुक्षि का ८ वंश जानो ६ अम प्रसिद्ध निमि का वंश कहता हूं ७ इक्वाकु के पुत्र निमि ने धर्म के लिये हजार ११ वर्ष तक ११ यज्ञ करने का आरंभ किया ॥ ८ ॥ ६ ॥ इन्द्र का यज्ञ पूरा करके १३ शीघ्र आऊंगा १४ तेरा यज्ञ कराऊंगा १५ स्वर्ग में गये १६ राजा निमि को इतना विलंब करना नहीं रुचा और यह १७ नीति रची ॥ १६ ॥ १८ यज्ञ किया फिर स्वर्ग का १९ यज्ञ करके वसिष्ठ ने आकर आप दिया कि मुझको छोड़कर दूसरे को गुरु मान लिया इससे हे राजा निमि

चहुवाणवंशे निमिवर्णन ] तृतीयराशि—वटपञ्चाशमयूख (१००९)

कहिय साप पूछैं बिनु मोकों, दयो सु मैहु देत अब तोकों ॥१२॥  
 तव उपधनहु गिरहु मम तैंसैं, निमिनिज देह तज्यो कहि अैंसैं ॥  
 इतैं सत्वर तजि काय वसिष्ठहु, मित्राश्वरुनर तेज प्रबिसे पहुँ ॥१३॥  
 कोउक समय उर्वसी अछरि, पिकखत तिनको सुकैं गयो परि ॥  
 लही वसिष्ठ अपर तनु तासों, इत रक्ख्यो निमिअंग क्रियासों ॥१४॥  
 तैलसुगंधि आदि उपचारन, बिगरन जो न दयो द्विज बारन ॥  
 मुर मखभाग लैन आये जैंहैं, ऋत्विज गोतम आदि कही तैंहैं ॥१५॥  
 दैनलगे निमिकों बपु निर्जर, बुल्लयो अब न लहों वसुधावर ॥  
 यह वर देहु रहाँ सब लोचन, सुनिदेवन दिन्नौं सुप्रीतिसन ॥१६॥  
 नैनन रहन लग्यो निमि ७ जबतैं, उन्मीलन १ रु निमीलन २ तवतैं  
 अरणी विच तस तदनु कलेवर, मथ्यो मुनिन तासों हुव सिसुवर १७  
 बरनैं तास नाम त्रय ३ विप्रन, सुनहु तेहु वसुदेव ६८ धराधन ॥  
 जननहेतुकरिजनक ८ कहायउ, आव्हयमिथिल ८ मथनकरिपायउ १८  
 तनुज विदेहकर बैदेह ८ सु, ताकै सुत हुव नाम उदारसु ९ ॥

तू बिना देह हो जा ॥ ११ ॥ उस समय राजा सोया हुआ था सो  
 वह वाणी नहीं सुनी फिर जगकर दूसरों के कहने से प्रमाण किया  
 और निमि ने वसिष्ठ से कहा कि सुभक्त पूछे बिना तुमने आप दिया इसका-  
 रण वही आप मैं तुझको देता हूँ ॥ १२ ॥ तेरा १ शरीर भी मेरे समान गिर  
 जाओ, २ इधर वसिष्ठ भी शीघ्र शरीर छोड़कर रहे राजा वसुदेव ॥ १३ ॥ ४ वीर्य  
 गिरपड़ा जिससे वसिष्ठ ने दूसरा शरीर लिया और इधर राजा निमि का मृ-  
 तक शरीर क्रिया से रक्खा ॥ १४ ॥ चिकित्सा (इलाज) से रोकके ब्राह्मणों  
 ने नहीं विगड़ने दिया देवता जब यज्ञ में भाग लेने आये तब गोतम आदि  
 ऋत्विजों ने कहा ॥ १५ ॥ जब निमि को देवता शरीर देने लगे तब राजा (नि-  
 मि) ने कहा कि अब शरीर तो नहीं लेना चाहता परन्तु यह वर दो कि स  
 पके नेत्रों में रहा करूँ ॥ १६ ॥ जबसे निमि नेत्रों में रहने लगा तभी से नेत्रों  
 का खुलना और बन्ध होना होने लगा जिसपीछे मुनियों ने निमि के शरीर  
 को अरणी में मथा जिससे श्रेष्ठ बालक उत्पन्न हुआ ॥ १७ ॥ ब्राह्मणों ने उस  
 बालक के तीन नाम दिये वे नाम हे राजा वसुदेव आप मुनो जन्म लेने (सृष्टि  
 क्रम के विरुद्ध जन्म लेने) के कारण "जनक" कहाया और शरीर मथने से हुआ  
 इससे "मिथिल" नाम हुआ ॥ १८ ॥ और विदेह के पुत्र होने से "वैदेह" क-

तास नंदिवर्धन१० सुकेतु११तस, ताकै देवरात१२ उज्जल जस१९  
( पञ्चटिका )

हुव तनय तास वृहदुक्थ१३नाम, तस पुत्र महावर्य१४ सु ललाम ॥  
तस सुधृति१५तास हुव धृष्टकेतु१६, हर्यश्व१७तास जय१८धर्म८हेतु२०  
तस मरु१८प्रतिबंधक१९तास पुत्त, कृतिरथ२०तदीय बल१वीर्य२जुत  
तस देवमीढ२१तस बिबुध२२जानि सुत तास महाधृति२३नाम मानि२१  
कृतिरात२४तास तस मूर्धरोम२५, तस स्वर्णरोम२६ कृतसंनुहोम  
हुव तास न्हस्वरोमा२७नृपाल, सुव दुव२तदीय हुव बलाबिसाल२२  
प्रहिलोसीरध्वज२८११गुनगरीय, अनुजातकुसध्वज२८२पुनिद्वितीय  
सीरध्वज२८१२सुतहितकरनसर्ल, कुखनतहोहलकरिसहकलत्र२३  
कन्या सीतासेन कडिय तत्थ, सीता२९हि नाम तस दिय समत्थ॥  
कन्या सु जनक रक्खी लढाय, जो पानि गही रघुनाथ जाय२४  
रु कुसध्वजकै हुव भानुमान २९, सुत तास तस युम्नाऽभिधान३०  
सुचि३१तास ऊर्जबह३२तास जानि, सेनध्वज३३तस तस कुसि३४प्रमानि  
तस रंजन३५ऋतुजित३६ नाम तास, सुत तस अरिष्टनेमी३७सुभास  
ताकै सतायु३८वैरिन बलीय, तस सुत सुपार्थ३९संजय४०तदीय२६

( दोहा )

संजयकै क्षेमावि४१ हुव, तास अनेना४२ पुत्र ॥

तास मीनरथ४३ सत्यरथि४४, ताकै निगमतनु४५ ॥ २७ ॥

( षट्पात )

वीतहव्य४५ तस तनय तास उपगुरु४६ सुत जानहु ॥

तस अधसर्व४७ रु तस सुभास४८ सुश्रुत४९तस मानहु ॥

कहलाया ॥ १६ ॥ ? पुत्र २ सुन्दर३ जय और धर्म का कारण ॥ २० ॥ ४उ-  
सके ॥ २१ ॥ ५ शत्रुओं का होम करनेवाला ॥ २२ ॥ ६ गुणों में भारी ७ उ-  
सका छोटा भाई, जब राजा शीरध्वज पुत्र होने के अर्थ ८ यज्ञ करता था  
सो हल से १० स्त्री सहित ११ पृथ्वी को खोदना था तब ? ? हल की चउ (चू) से  
कन्या निकली जिसका नाम ही सीता दिया ? २ जिस से रामचन्द्र ने विवाह  
किया ॥ २४ ॥ २५ ॥ ३ युम्न नामक ? ४ उसके ॥ २६ ॥ १६ वेद का रक्षक (कवच)

जय५० ताकै तस बिजय५१ तास ऋत५२ ताकै सुतनय ५३ ॥  
बलि ताकै हुव बीतभव्य५४ ताकै धृति५५ दुर्जय ॥  
बहुलाश्व५६ तास कृति५७ तास सुत यह बिदेह बंसहु भयो ॥  
रविवंस वरनि रविवंसगुरु इम नड्डल आसिख दयो ॥ २८ ॥

( दोहा )

किन्नर गोग सहाय सुनि, बुल्लयो दुल्लह६८ बीर ॥  
तज्यो वपुहि सत्रुघ्न नृप, अगग उरुक्षय भीर ॥ २९ ॥  
वरनै नड्डलविप्र इम, रामरचित१रविवंस २ ॥  
सुनहु राम नृप दै श्रवन, अब सुचिकुल अवतंस ॥ ३० ॥  
कुंडकनृप११६ वसुदेव६८ कहैं, बेला६८११ इम सु विवाहि ॥  
सिखदई सनमानसह, नव नव प्रीति निवाहि ॥ ३१ ॥  
सुंदर दासी इक सहैंस १०००, हय वरै पंचहजार५००० ॥

सुरभी अयुत १०००० रु गज सहैंस १००० दायज दिन्न उदार ॥ ३२ ॥

( षट्पात् )

बहुरि कहिय तुमरो बिदर्भ जो लिय प्रद्योतन ॥  
मारयो भूपति भीम६५ करहिं तासहु उपाय घन ॥  
नृपके सालक सुरथ कुमर तत्थहु बिसेसकरि ॥  
संधा होन सहाय ले रु दिय सिख नेह भरि ॥

१ पुनि २ सूर्य वंश के गुरु नड्डल ने सूर्य का वर्णन करके वसुदेव चहुवाण को आशीर्वाद दिया ॥ २८ ॥ सूर्यवंशी राजा किन्नर ने गोग चहुवाण की सहायता की सो सुन कर दुल्लह वसुदेव चहुवाण बोला कि आगे सूर्यवंशी राजा उरुक्षय की सहायता में चहुवाण शत्रुघ्न ने शरीर छोड़ा है अर्थात् इसीप्रकार परस्पर सहायता होती आई है ॥ २९ ॥ रामचन्द्र की रचना का और सूर्य वंश का वर्णन इसप्रकार नड्डल नामक ब्राह्मण ने किया, हे चहुवाणों के मुकुट रावरज्जा रामसिंह अब अग्नि वंश का वर्णन सुनो ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३ अष्ट ४ गौवं. फिर कहा कि प्रद्योतन नामक राजा ने तुम्हारा बिदर्भ नामक देश लेलिया था और राजा भीम को मार डाला था इसका भी उपाय करेग वसुदेव के शाले और कुंडक के पुत्र सुरथ कुमर ने सहाय करने की विशेष प्रतिज्ञा लेकर सीख दी

आये निकेत दुलही २ दुलह १ मच्यो हरख मिहिकावतिय  
 निगमोक्त पथिक वसुदेव ६८ नृप बलकरि भुग्गी वसुमतिय ३३  
 इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयः राशौ वीति  
 होत्रवसुधेश्वरवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ विवाहवेलाव-  
 र्णनविषयकविवस्वदंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६  
 षट्पपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशश्रीजानकीजानिजननसमु-  
 द्वेशननिमि ७ वंशवर्णनसमुपयतवसुदेव ६८ बेला ६८।२ युग्म २  
 मिहिकावतीगमनं षट्पञ्चाशत्तमोऽप्यसूखः ॥ ५६ ॥ आदितोऽ  
 वनवतितमः ॥ ९८ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा)

( षट्पात् )

प्रद्योतनके वंश नंदिवर्द्धन राजा हुव ॥  
 मारि ताहि सिंसुनागभूप लिन्नी मार्गध भुव ॥  
 इहि अंतर वसुदेव ६८ सुरथ सालक निज संजुत ॥  
 बहुरि अमल बित्थरि विदर्भदेस सु लिन्नो दुत ॥  
 यह सुनत चढ्यो सिंसुनाग इत भोजकटहि संगर भयो ॥  
 विनुमत्थजुज्झि वसुदेव ६८ नृप सुजसरक्खि सुरपुर गयो ॥ १ ॥  
 ( दोहा )

अपने घर मिहिकावती नामक पुर में वेद के कहेहुए मार्ग में चलनेवाले ने  
 भूमि को मल पूर्वक भोगी ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चतुर्वाण्य  
 वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश  
 को पढ़ानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल-  
 कलश श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के वंश का कथन और निमि के वंश  
 का वर्णन, विवाह करके वसुदेव और बेला का जोड़ा सहित मिहिकावती  
 जाने का छप्पनवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५६ ॥ और आदि से अठानवे म-  
 यूख हुए ॥ ९८ ॥

१ मगध देश की भूमि अपने २ शाला सुरथ सहित ३ शीघ्र विदर्भ देश को ले-  
 कर अपना अधिकार फैलाया यह सुनकर इधर से ४ सिंसुनाग नामक रा-  
 जा लड़ा सो ५ भोजकट नामक नगर में ही युद्ध हुआ ॥ १ ॥



सुमित्रवंशे रठोरकूर्मवंशोत्पत्ति तृतीयराशि-सप्तपञ्चाशमयुल (१०१३)

लिन्नौ इम सिमुनाग लरि, बेलि विदर्भ तिहिंवेर ॥

रह्यो राज्य मिहिकावती, चहुवानन कुलकेर ॥ २ ॥

बेद तर्क बसु८६४मित बरस, गतकलिजुग हुव जत्थ ॥

नांक गयो बसुदेव६८नृप, तिलतिल व्है रन तत्थ ॥ ३ ॥

बेला६८११मैं बसुदेव६८सौं, स्यामदेव६९सुत जाँत ॥

दान१कृपानै२प्रवीन दढ, अडैर किति अवदाँत ॥ ४ ॥

( पञ्चमिका )

उज्जैनभूप प्रामार नंद, पञ्चा६८१२तस तनया गुन अमंद ॥

आनीविवाहिवह स्यामदेव६९, करगहि मनौं कि रति१कामदेव ॥ ५ ॥

हरिदास७०भयो ताकै गंभीर, बानैतै धर्म१नयै२दच्छ वीर ॥

सूकरथलपति रति नामधेय, जिन दिनन रह्यो चालुक अजेय ॥ ६ ॥

बुद्धितौ तस रजनी७०१२गुनउदार, हरिदास७०ब्याहि किय कंठहार

तस पुत्र महीधर७१हुव प्रवीन, जगके समस्त गुन जिहिं अधीन ॥ ७ ॥

( दोहा )

इत सुमित्र साँकेतनृप, तज्यो जोगबल देह ॥

विश्वराज१कूरम२प्रमुख, हुव बहु सुत तस गेह ॥ ८ ॥

विश्वराजकोही विदित, अपरै२विश्ववर नाम ॥

जाके सुतके पुत्रसौं, कुल रठोर ललाँम ॥ ९ ॥

कूर्म विश्ववरको अनुजै, जासौं कूरम बंस ॥

शिशुनाग ने विदर्भ दश१फिरलेलिया ॥ २ ॥ कलियुग के आठ सौ चौसठ वर्ष

गये जहाँ पर ३ स्वर्ग गया ॥ ३ ॥ ४ जन्म ५ खड्ग (वीरता) में ६ निर्भय७उज्ज-

ल कीर्तिवाला ॥ ४-॥ ८ नन्द नामक ९ काशदेव ने रति को आनी ऐसे

॥ ५ ॥ १० गंभीर ११बाणविद्या, धर्म और १२ नीति में १३ चतुर, शूकर-

क्षेत्र का राजा १४ रति नामक. सोलंखी उन दिनों में किसीसे नहीं जीतने

में आयें ऐसे थे ॥ ६ ॥ उसकी १५ पुत्री १६ गले का हार किया ॥ ७ ॥ इ-

धर १७ अयोध्या में सुमित्र नामक राजा ने योगबल से शरीर छोड़ा जि-

सके विश्वराज और कूरम १८ आदि बहुत पुत्र हुए ॥ ८ ॥ विश्वराज का १९

दूसरा नाम विश्ववर हुआ जिसके पोते से २० सुन्दर राठोड़ों का कुल उत्पन्न

हुआ ॥ ९ ॥ विश्ववर के २१छोटे भाई कूरम से कूर्म वंश हुआ सो ही कूर्म

वजिहै सुहि कछवाह बलि, याके सुतके अंस ॥ १० ॥

विश्वराज कूरम प्रमुख, भजे लरि गतभाग ॥

इनको पुर साँकेत हू, छिन्निलयो सिसुनांग ॥ ११ ॥

कछुकछु भुव पाई दुहुनर, अंतरवेदी आय ॥

कन्या हुव या कुम्भकै, सुरसा७१। गुनन निकाय ॥ १२ ॥

आयो ताहि विवाहि यह, सुपहु महीधर७१सूर ॥

स्वसुर कूर्म दायज दयो, पृथुल नेह बसुं पूर ॥ १३ ॥

कत्सवाध हुव कूर्मकै, तासों कुल कछवाह ॥

विश्वराजके पुत्र हुव, मलयराज नरनाह ॥ १४ ॥

राष्ट्रेश्वर सिव तुष्ट किय, मलयराज तपसिद्ध ॥

जिनके घर ताके तनय, राष्ट्रकूट हुव ईद ॥ १५ ॥

तासों कुल रठोई यह, जानहु संभरराम ॥

सुरसा७१। सहित महीधर७१हु, उत जस किय उद्दाम ॥ १६ ॥

भयो महीधरकै तनय, वामदेव७२अभिधान ॥

वज्र रिपुन सुरतरु कविन, आहव१दान२अमान ॥ १७ ॥

के पुत्र से फिर कछवाहा वंश बजेगा ॥ १० ॥ विश्वराज और कूर्म १ आदि लड़कर बिना चेत भागे और इनका २ अयोध्यापुर ३ शिशुनाग नामक राजा ने छिनलिया ॥ ११ ॥ ५ अन्तर्वेद में आकर (हरिद्वार से लेकर प्रयाग तक की भूमि को अन्तर्वेद कहते हैं) इन दोनों (विश्वराज और कूर्म) ने कुछ कुछ ४ भूमि पाई ६ इसी कूर्म के ७ गुणों की घर ॥ १२ ॥ ८ अष्ट राजा ९ यह नेह से १० धन से पूर्ण ॥ १३ ॥ इसी कूर्म के ११ कत्सवाध नामक पुत्र हुआ जिससे कछवाहा कुल कहलाया और विश्वराज के मलयराज नामक पुत्र राजा हुआ ॥ १४ ॥ मलयराज ने १२ राष्ट्रेश्वर महादेव का तप करके प्रसन्न किया (जोधपुर की ख्यात में राष्ट्रशेना कुलदेवी के नाम से राष्ट्रकूट वंश प्रसिद्ध होना लिखा है) जिनके घर से राष्ट्रशेना नामक १३ कान्तिमान् पुत्र हुआ ॥ १५ ॥ १५ हे चहुवाण रामसिंह! इसी राष्ट्रशेना से १४ राठोड़ों का कुल हुआ जानो ११ निरंकुश ॥ १६ ॥ १७ वामदेव नामवाला हुआ सो शत्रुओं के लिये यज्ञ, कवियों के लिये १८ कल्पवृक्ष १९ युद्ध में और दान में २० अमाप (प्रमाण रहित) ॥ १७ ॥

चहुवाणवंशवर्णन ] तृतीयराशि—सप्तपञ्चाशमयूव ( १०१५ )

चित्रराज प्रतिहार नृप, विंशस्थलपुर थान ॥

तास सुता राका ७२१२\*रमनि, पग्न्यों यह चहुवान ॥१८॥

पौरानिक हरि\*सूत कहैं, द्रव्यकोटि जिहि दत्त ॥

श्रीधर ७३सुत ताके भयो, रनधितरनैरअनुरक्त ॥ १९ ॥

[ पट्पात ]

मिच्छराज तिन दिनन नूह ईरानधरावर ॥

जितन अज्जाउत्त बढयो अतिवल दल दुहर ॥

अटक लांघि इतआत अज्जभूपहु यह सुनि सब ॥

जुरिगं जाय पंजाव तुमुल मच्चिग कराल तब ॥

परिभूत भज्यो प्रत्यंतपति दल स्वर्पाय निज अयुतदस १००००० ॥

रन अज्जनृपहु बहुतहि रहे सुनहु तास नाम १रुसजस २१२०१

होदा

क्षत्रौजा १सिसुनांग कुल, संभव आयो काम ॥

बंगराज रविवंसभव, अंगद २पुनि अभिराम ॥२१॥

पट्पात

मालवपति प्रामार परयो ईश्वर ३ अभिधानके ॥

रविकुलभव आनर्तराज नरनाह प्रतानक ४ ॥

चंद्रवंस अर्बंतस चंद्रमनि ५ कांसमीरपति ॥

\*सुन्दर स्त्री ॥ १८ ॥ जिस वामदेव ने हरिभूत नामक ४ चारण को करोड़ रुपयों का धन दिया २ दान में ३ अनुरक्त ॥ १९ ॥ ४ म्लेच्छों का राजा ईरान की भूमि का ५ पति नूह नामक उन दिनों में हुआ सो दूर्ध्व सेना लेकर ७ आर्यावर्त को ६ विजय करने को चढ़ा ८ अटक नदी को लांघ कर इधर आता है यह पार्ता ९ आर्य राजाओं ने सुनी सो १० इकट्ठे होकर सबों ने पंजाव में भयंकर युद्ध किया तहां १२ म्लेच्छ देश का पनि (नूह) ११ पराजित हुआ (द्वारा) और अपनी एक लक्ष सेना का १३ नाश कराया उस युद्ध में आर्य राजा भी बहुत मारेगये जिनके नाम और भुवश है रावराजा रामसिंह सुनी ॥ २० ॥ १४ शिशुनाग नामक राजा के वंश में १५ जन्म लेनेवाला १६ सूर्यवंश में उत्पन्न होनेवाला १७ सुन्दर ॥ २१ ॥ १८ ईश्वर नामवाला १९ प्रतानक नामवाला आनर्त देश का राजा २० चन्द्रवंशियों का मुकुट

( १०१६ )

वंशभास्कर

[ चहुवाणवंशवर्णन

रैवत मनुकुलजात परघो मरु राज महारति६॥

लाहोरभूप मदनेस७ पुनि बाहुजकुलसंभव परघो ॥

ससिबंसि सल८हु पेसोरपति कलह काय तिलतिल परघो ॥२२॥

बामदेव९ चहुवान परघो करनाट नरेश्वर ॥

चित्रसेन१० नेपालराज रविकुलभव दुद्धर ॥

कंकटसेन११ कलिगराज ससिकुल उज्जालक ॥

तस बंसहि रनधीर१२ देस कुंतल परिपालक ॥

सूकरनरैस पृथुदेव१३ पुनि चालुक्यान्वय उद्धरन ॥

ताँवर नरैस कौसंबिपति पांडवकुलभव संवरन१४ ॥ २३ ॥

( दोहा )

नंती कूरमभूपको, परघो बीर बुधसेन १४ ॥

इत्यादिक इस अगसत११०, आपे काम धरेन ॥ २४ ॥

जुद्ध भयो अतिघोर जिम, नृप तस सुनहु निर्दान ॥

भूपगये सत्र भीमकौं, मारनहित सुलतान ॥ २५ ॥

( पट्टपात )

भीमनाम तिन दिनन हुतो सुलतान महीपति ॥

अर्कजनन अंगौर मैलिन तकी तिहिं दुर्मति ॥

दै मिच्छनपहँ दूत भनी इतउत हितभावहिं ॥

१मनु के कुल में उत्पन्न हुआ २ब्रह्मा के हाथों से पैदा हुए क्षत्रिय कुल में जन्म लेनेवाला (क्षत्रियों के मुख्य पांच वंश माने गये हैं अर्थात् सूर्यवंश १ चन्द्रवंश २ मनुवंश ३ बाहुजवंश ४ और ५ अग्निवंश) सल नामक ३ चन्द्रवंशी राजा ४ युद्ध में अपने शरीर को तिल तिल के समान करके गिरा ॥ २२ ॥ ५ कुन्तल देश की पालना करनेवाला ६ सूकर क्षेत्र का राजा ७ सोलंखी वंश का उद्धार करनेवाला ९ कौसांबी पुर का संवरण नामक पांडववंशी ८ ताँवर राजा ॥ २३ ॥ राजा कूरम का १० पोता ११ राजा काम आये ॥ २४ ॥ जिसप्रकार यह घोर युद्ध हुआ है राजा रामसिंह उसका १२ कारण सुना कि १३ भीम को मारने को सब राजा सुलतान में गये ॥ २५ ॥ १४ सूर्यवंश का १५ अंगारा (जलानेवाले) उस १६ नीच ने १७ खोटी बुद्धि ताकी १८ स्नेहों के पास दूत भेजकर कहलाया कि हमारा और तुम्हारा दोनों का

चहुवाण बंशवर्णन ] तृतीयराशि—सप्तपञ्चाशमयूग ( १०१७ )

लेहु आनि लाहोर अद्द अद्द सु अपनावहिं ॥

वहै संग दुवर्हि मदसेन हनि पुहवि बंदि दुवर् पारि हैं ॥

अप्पनौ अटकतट लग अमल आवहु सहज उतारिहैं ॥ २६ ॥

( दोहा )

सुता इक्क १ मदसेनकै, अतुल रूप १ गुन २ आहि ॥

अर्द्ध महीजुत आइइत, तुम पावहु किन ताहि ॥ २७ ॥

( षट्पात )

लागि सुनत इहिं लोभ सजव चलिय जवनेस्वर ॥

सुनि सुबत्त मदसेन दये बंधुन घर कगगर ॥

चढिग बंगर्पति स्वसुर १ चढिग मातुलि २ अवंतिपति ॥

वलिं उनके इम बहुत मिले पंजाब महामति ॥

लाहोर पहुँचि घेग लगत कैद पकरि भीमहिं करिय ॥

जियलख १००००० संति १ सुक्किये जवन प्रचुर भूप तिहिं रन परिय २८

जनक वामदेव ७२ जब सुन्यो श्रीधर ७३ मृत संगर ॥

मिहिकावति पुरनाहै भयो तव अप्प छत्रधर ॥

रविकुलसंभव बंगराज अंगद तलुजा सो ॥

परन्यो प्रतिभा ७३ १ नाम अधिप लखवन अनुजा सो ॥

हित चाहो तो यहां आकर लाहोर को ललो सो हथ और तुम आधा आधा अपना लेवेंगे, दोनों साथ होकर लाहोर के राजा मदसेन को मारकर १ भूमि का दो बंट करलेवेंगे २ अटक नदी उतार देंगे ॥ २६ ॥ ३ रूप और गुण में जिसकी बराबर कोई नहीं ऐसी है सो हथर आकर ४ आधी भूमि सहित तुम ५ क्यों नहीं लेते हो ॥ २७ ॥ ६ शीघ्र चला ७ वह वार्ता मदसेन ने सुनकर अपने सम्बन्धियों को कागज (पत्र) दिये ८ बंगाला का पति मदसेन का ससुरा और उज्जीय का पति मदसेन का मामा ९ फिर उन सम्बन्धियों के सम्बन्धी भी आये १० नृह को बुलाया था उस भीम को पकड़ कर कैद करलिया और लाख जीवों के ११ बदले में (लक्ष घवनों को मारकर) घवन (नृह) को १२ छोड़ा, वहां पर राजा भी १३ बहुत काम आये (मरे) १४ श्रीधर चहुवाण ने जब अपने १५ पिता वामदेव को युद्ध में मरा सुना तब मिहिकावती पुर का १६ पति हुआ १७ सूर्यवंशी १८ अंगद की पुत्री को, जो राजा लक्ष्मण की १९ छोटी बहिन थी

तामाँहिं भूप श्रीधर७३तनय गंगाधर७४नामक भयो ॥

उत्तानदेव चालुकसुता प्रभा७४।१परनि जिहिं जस लयो ॥ २९ ॥

( दोहा )

दिष्टं जोर तिनही दिनन, कनकसेन रठोर ॥

कान्यकुब्ज पत्तन लयो, जत्थ रह्यो बरजोर ॥ ३० ॥

पादाकुलकम्

बसुं इकअब्ज१०००००००००००दयो गंगाधर७४,

कीनै आढ्य कविःन बिबुधं२न घर ॥

वीस२०वेर बदीनारायन, जाय भूप पोखे उतके जर्न ॥३१॥

धर्मअवधि कलिकाल कर्ण धुवं, महादेव७५ताके तनूज हुव ॥

लोकसेन कूरमकी तनुजा, लक्ष्मीसेन कुमरकी अनुजा ॥ ३२ ॥

रंभा७५।१नाम लोक अभिरामाँ, व्याही महादेव७५ वह बामाँ ॥

अश्वमेधमखे पुनि आरंभिय, दै भटसंग तुरंग छोरिदिय ॥ ३३ ॥

पैसठि६५ नृपन विजय तिन पायो, इमहय फिरत मगधभुव आयो ॥

तँह दर्मक सिसुनागवंसभव, पाटलिपुत्र नगर धरनीधर्व ॥ ३४ ॥

जिहिं अतिबल मंडलपति दुर्जय, हंकि सुभट पकरायलयो हय ॥

इतके बीर परे रनअंकुरं, मिहिकावती कतिक आये मुरि ॥३५॥

१पुत्र२भाग्य के बल से३कान्यकुब्ज(कन्नोज)नामक पुर को लिया वहाँ बलवान् होकर रहा ॥३०॥ गंगाधर चहुवाण ने एक५अर्ब४धन दिया जिससे कवियों के और ७ पण्डितों के घर ६ धनवान होगये ढाँढर के मनुष्यों का पालन किया ॥३१॥ गंगाधर के धर्म की ९ सीमा और कलियुग १० का निश्चय ही कर्ण, महादेव नामक ११ पुत्र हुआ १२ पुत्री ॥ ३२ ॥ १३ संसार भर में मनोहर १४ स्त्री १५ यज्ञ ॥ ३३ ॥ १६ पैसठ राजाओं से जिसने विजय पाया और इसप्रकार वह घोड़ा फिरता हुआ मगधदेश की भूमि में आया वहाँ पर शिशुनाग नामक राजा के वंश में जन्म लेनेवाला दर्मक नामक १७ पटना का १८ राजा ॥ ३४ ॥ १९ मंडलीक "चतुर्योजनपर्यन्तमधिकारो नृपस्य च ॥ यो राजा तच्छतगुणः स एव मण्डलेश्वरः ॥" (सोलह कोशवर्गात्मक भूमि जिसके अधिकार में होवे वह नृप तथा राजा कहलाता है इससे सौ गुणी भूमि जिसके अधिकार में होवे वह मंडलेश्वर है) २० युद्ध में

[ चहुवाणवंशवर्णन ] तृतीयराशि—सप्तपञ्चाशमयूख (१०१९)

पिल्लयो सुनत कटक बंधु भूपति, माग्घो सब दर्भक उद्धतमति ॥  
 सो सुनि जाय रघ्यो नृप संगर, चरनन डारि लंज्जमय लंगर ३६  
 खगन बहु दर्भक दल खायो, रन बिनुसिर दुवर्जामे रचायो ॥  
 मृत सुनि निजनायक रनमानी, रचि सहगमन गई दिगरानी ३७  
 ( दोहा )

रंभा ७५।१ अरु रंभा लरी, महादेव ७५ धव काज ॥  
 बुल्ली पुब्बहि मै बरयो, आई तू जरि आज ॥ ३८ ॥  
 सुरपति तिन्ह यह रारि सुनि, वासक दोउनर बंधि ॥  
 भूपहि रक्खयो पिल भनि, सघन नेह गुनसंधि ॥ ३९ ॥  
 भयो तनय सारंगधर ७६, महादेव ७५ नृपकेर ॥  
 द्वारकेस हरिके दरस, किन्नै जिहिं बहुबेर ॥ ४० ॥  
 कर्णउज्ज सुध्वज नृपति, रठोरन अवतंस ॥  
 कर्मध्वज हुव तसतनय, जिहिं करि कमधजवंस ॥ ४१ ॥  
 स्वसा तास सुध्वज सुता, ललिता ७६।१ नाम ललाम ॥  
 सो व्याहिय सारंगधर ७६, रमनी गुन अभिराम ॥ ४२ ॥  
 मानसिंह ७७ ताकै तनय, ललिता औरैस जात ॥  
 भजि स्वधर्म जो नृप भयो, खलन खंडि भुव ख्यात ॥ ४३ ॥

खंडे होकर ॥ ३५ ॥ यह सुनकर राजा महादेव ने फिर सेना भेजी उसको  
 भी दर्भक नामक पटना के चंचल बुद्धि राजा ने मारली १५ गों में लज्जा के लं  
 गर डालकर ॥ ३६ ॥ २६० पहर तक बिना मस्तक बुद्ध किया, बुद्ध में मानी  
 अपने पति को मराहुआ सुनकर रानी सती होकर पति पास गई ॥ ३७ ॥ रा  
 नी का नाम रंभा था वह और रंभा अप्सरा ये दोनों महादेव पति के लि  
 ये परस्पर लड़ीं और रंभा अप्सरा ने कहा कि तू तो जलकर आज आई  
 है और मैंने पहिले ही बर लिया था ॥ ३८ ॥ इन दोनों की लड़ाई सुनकर  
 इन्द्र ने दोनों के घर बांधकर राजा को मित्र कहकर ३६६ के बहुत गुण जो  
 डकर ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४ कन्नोज में सुध्वज नामक राजा राठोड़ों का मुकुट  
 था उसके कर्मध्वज नामक पुत्र हुआ जिसके नाम से राठोड़ कमधज कह  
 लाये ॥ ४१ ॥ उस कर्मध्वज की बहिन और सुध्वज की पुत्री को सारंगध  
 र ने व्याही वह स्त्री गुणों में मनोहर थी ॥ ४२ ॥ ललिता के ५४४ से हुआ ६४  
 मि पर प्रसिद्ध हुआ ॥ ४३ ॥

लेहु आनि लाहोर अद्द अद्द सु अपनावहिं ॥

वहै संग दुवरहि मदसेन हनि पुहवि बंदि दुवर पारि हैं ॥  
अप्पनौ अटकतट लग अमल आवहु सहज उतारि हैं ॥ २६ ॥

( दोहा )

सुता इक्क १ मदसेनकै, अतुल रूप १ गुन २ आहि ॥

अद्द महीजुत आइइत, तुम पावहु किन ताहि ॥ २७ ॥

( षट्पात )

लागि सुनत इहिं लोभ सजव चलिय जवनेस्वर ॥

सुनि सुबत्त मदसेन दये बंधुन घर कगगर ॥

चढिग बंगर्पति स्वसुर १ चढिग मातुलि २ अवन्तिपति ॥

वन्ति उनके इम बहुत मिले पंजाब महामति ॥

लाहोर पहुँचि घेग लगत कैइ पकरि भीमहिं करिय ॥

जियलकख १००००० सटि सुकिये जवन प्रबुर भूपतिहिं रन परिय २८

जनक वामदेव ७२ जव सुन्यो श्रीधर ७३ मृत संगर ॥

मिहिकावति पुरनाह भयो तव अप्प छत्रधर ॥

रविकुलसंभवं बंगराज अंगद तनुजा सो ॥

परन्यो प्रतिभा ७३ १ नाम अधिप लकखन अनुजा सो ॥

हित चाहो तो वहाँ आकर लाहोर को लेलो सो हथ और तुम आधा आ-  
धा अपना लेवेंगे, दोनों साथ होकर लाहोर के राजा मदसेन को मारकर  
१ भूमि का दो बंट करलेवेंगे २ अटक नदी उतार देंगे ॥ २६ ॥ ३ रूप  
और गुण में जिसकी बराबर कोई नहीं ऐसी है सो हथर आकर ४  
आधी भूमि सहित तुम ५ क्यों नहीं लेते हो ॥ २७ ॥ ६ शीघ्र चला ७  
वह बातों मदसेन ने सुनकर अपने सम्बन्धियों को कागज (पत्र) दिये  
८ बंगाला का पति मदसेन का ससुरा और उज्जीण का पति मदसेन का  
मामा ९ फिर उन सम्बन्धियों के सम्बन्धी भी आये १० नृह को बुलाया  
था उस भीम को पकड़ कर कैद करलिया और लाख जीवों के ११ बदले  
में (लक्ष यवनों को मारकर) यवन (नृह) को १२ छोड़ा, वहाँ पर राजा भी  
१३ बहुत काम आये (मरे) १४ श्रीधर चहुवाण ने जब अपने १५ पिता वाम-  
देव को युद्ध में मरा सुना तब मिहिकावती पुर का १६ पति हुआ १७ सूर्यवंशी  
१८ अंगद की पुत्री को, जो राजा लक्ष्मण की १९ छोटी बहिन थी





पिल्लयो सुनत कटक बंधु भूपति, माग्घो सब दर्भक उद्धतमति ॥  
 सो सुनि जाय रच्यो नृप संगर, चरनन डारि लंज्जमय लंगर ३६  
 खगगन बहु दर्भक दल खायो, रन बिनुसिर दुवरजामे रचायो ॥  
 मृत सुनि निजनायक रनमानी, रचि सहगमन गई ढिगरानी ३७  
 ( दोहा )

रंभा ७५।१ अरु रंभा लरी, महादेव ७५ धव काज ॥  
 बुल्ली पुब्बहि मै बरयो, आई तू जरि आज ॥ ३८ ॥  
 सुरपति तिन्ह यह शरि सुनि, बासक दोउनर बंधि ॥  
 भूपहि रक्खयो मिल भनि, सघन नेह गुनसंधि ॥ ३९ ॥  
 भयो तनय सारंगधर ७६, महादेव ७५ नृपकेर ॥  
 द्वारकेस हरिके दरस, किन्नै जिहिं बहुबेर ॥ ४० ॥  
 करणउज्ज सुध्वज नृपति, रठोरन अवतंस ॥  
 कर्मध्वज हुव तसतनय, जिहिं करि कमधजवंस ॥ ४१ ॥  
 स्वसा तास सुध्वज सुता, ललिता ७६।१ नाम ललाम ॥  
 सो व्याहिय सारंगधर ७६, रमनी गुन अभिराम ॥ ४२ ॥  
 मानसिंह ७७ ताकै तनय, ललिता औरस जात ॥  
 भजि स्वधर्म जो नृप भयो, खलन खंडि भुव ख्यात ॥ ४३ ॥

खड़े होकर ॥ ३६ ॥ यह सुनकर राजा महादेव ने फिर सेना भेजी उसको  
 भी दर्भक नामक पटना के चंचल बुद्धि राजा ने मारली १ पगों में लज्जा के लं  
 गर डालकर ॥ ३६ ॥ २ दो पहर तक बिना मस्तक युद्ध किया, युद्ध में मानी  
 अपने पति को मराहुआ सुनकर रानी सती होकर पति पास गई ॥ ३७ ॥ रा  
 नी का नाम रंभा था वह और रंभा अप्सरा ये दोनों महादेव पति के लि  
 ये परस्पर लड़ीं और रंभा अप्सरा ने कहा कि तू तो जलकर आज आई  
 है और मैंने पहिले ही बर लिया था ॥ ३८ ॥ इन दोनों की लड़ाई सुनकर  
 इन्द्र ने दोनों के घर बांधकर राजा को मित्र कहकर रनेह के बहुत गुण जो  
 डकर ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४ कन्नोज में सुध्वज नामक राजा राठोड़ों का सुकुट  
 था उसके कर्मध्वज नामक पुत्र हुआ जिसके नाम से राठोड़ कमधज कह  
 लाये ॥ ४१ ॥ उस कर्मध्वज की बहिन और सुध्वज की पुत्री को सारंगध  
 र ने व्याही वह स्त्री गुणों में मनोहर थी ॥ ४२ ॥ ललिता के घर से हुआ भू  
 मि पर प्रसिद्ध हुआ ॥ ४३ ॥

रविअन्वय नेपाल नृप, दुर्गसेन की दोय ॥

सुता स्वयंबरतैं हरी, हठी स्वयंबर होय ॥ ४४ ॥

बंगराज रविदेव मुख, जिते सब नृप जंग ॥

अप्य परनि दुवश्चंगना, आयो निलय अभंग ॥ ४५ ॥

पहिली १ मन्था ७७ १ नाम पटु, धन्या ७७ १ अपरा धन्य ॥

निपुन रम्यौ बहुकाल नृप, इनजुत रसिक अनन्य ॥ ४६ ॥

मन्थामै नृप मान ७७ सौ, भयउ चक्रधर ७८ पुत्र ॥

अहित कडंगरको अनल, गोशद्विज २ धर्म ३ तबुत्र ॥ ४७ ॥

सूकरपति चालुक्यनृप, मल्लदेव तनया सु ॥

परनि राम राधा ७८ १ प्रिया, आयो निजगृह आसुं ॥ ४८ ॥

उपयमतैं चौथी ४ निसहि, राधा ७८ १ धारिय गर्भ ॥

नहिंतो कुल अजपालके, रहतो इक्ष्वाकु अभ ॥ ४९ ॥

[ पादाकुलकम् ]

कुल सिसुनाग नंदिवर्द्धन सुव, मागधराज महानंदी हुय ॥

दासीजठरज नंद भयो तस, सो यैह करन लगो सबको बस ५०

( षट्पात )

महापद्म उपटंक नंद मगधेश महाबल ॥

पाटलिपुत्र नरेश भयो तिन दिनन विजैफल ॥

परशुराम यह अपर लग्यो छत्रियकुल मारन ॥

१ सूर्यवंशी पुत्रियों को २ अपने मन से आपही पति हो

कर ॥ ४४ ॥ ३ बंगाले के राजा रविदेव को आदि देकर ४ आप दोनों

स्त्रियों को परण कर घर आया ॥ ४५ ॥ ५ अतुर ६ दूसरी ७ अद्वितीय रसिक ॥ ४६ ॥

८ शत्रुओं रूपी तुल (तुल) का अग्नि ९ कवच ॥ ४७ ॥ १० शीघ्र ॥ ४८ ॥ विवाह क-

रने से चौथी रात्रि में ही गर्भ धारण कर लिया नहीं तो अजयपाल के कुल

में एक भी बालक नहीं रहता ॥ ४९ ॥ शिशुनाग राजा के वंश में नंदिव-

र्द्धन का पुत्र महानंदी मगधदेश का राजा हुआ जिसके दासी के पेट से न-

न्द नामक पुत्र हुआ सो सब राजाओं को वंश में करने लगा ॥ ५० ॥ महाप-

द्म की पदवी (खिताब) वाला मगधदेश का स्वामी यह नन्द बड़ा बलवान

हुआ, वह पटना का राजा उन दिनों में विजय के फल को प्राप्त करने वाला

हुआ, छत्रियों के कुल को नाश करने के लिये मानों यह दूसरा ही परशुराम

कंटकविनु निजराज्य करन सब सल्लय निवारन ॥

रन कण्ठाउज्ज पहिलैं रचिय रत्नध्वज रठोर जैहैं ॥

बहुदिन लरयो रु सिरविनु बहुरि तीन३पहर किय जंगतहैं ॥ ५१ ॥

( दोहा )

वहै कबंध तस १०० गज हनै, रत्नध्वज रन रोर ॥

तातैं भजत कबंध पद, अद्यावधि रठोर ॥ ५२ ॥

( षट्पात् )

पुनि दसार्ण १ पंचाल २ सूरसेन ३ रु मरु ४ डाहल ५ ॥

सोरठ ६ रु गुज्जर ७ बिदर्भ ८ केरल ९ टक १० कुंतल ११ ॥

द्रविड १२ कलिंग १३ रु अंग १४ वंग १५ मैथिल १६ नेपालक १७

अधिप खोजि इत्यादि अखिल मारे उत्तालक ॥

अर्भक छिपाय नारिन दये भजिगये कै उब्बरे ॥

तिहिबेर नंद दासीतनय सब बाहुज इम संहरे ॥ ५३ ॥

( दोहा )

मल्लदेव १ चालुक्य नृप, विलिखराज २ प्रतिहार ॥

चीर्णराज ३ प्रसारपुनि, धीर चढे असिधार ॥ ५४ ॥

महासेन ४ नृप कूर महुँ, किन्नौ तिलतिल काय ॥

करत विजय करनाट इम, पत्ता नंद सु आय ॥ ५५ ॥

द्वै२दिन पहिलैं चक्रधर ७८, आयो परनि निकेत ॥

तीजे ३ दिन कंकन जुतहि, खिजि मंड्यो रनखेत ॥ ५६ ॥

हुआ अपने राज्य को निष्कंटक करने और सब साल मिटाने के अर्थ पहला युद्ध कन्नौज में रत्नध्वज नामक राठोड़ से रचा ॥ ५१ ॥ १ बिना मस्तक युद्ध में संयंकर होकर रत्नध्वज ने सौ हाथी मारे इसी कारण से २ अब तक राठोड़ कबन्ध पद को धारण करते हैं अर्थात् कबन्ध कहलाते हैं ॥ ५२ ॥ ३ इत्यादि देशों के राजाओं को खोजकर ५ विकराल होकर ४ सबको मारे और स्त्रियों ने ६ बालकों को छिपादिये वे बचे ७ कितनेक भाग गये वे बचे ॥ ५३ ॥ मल्लदेव नामक = सोलंखी राजा ९ पड़िहार १० तरवारों को धारण करके चढे ॥ ५४ ॥ ११ कछवाहा १२ शरीर को, इस प्रकार कर्णाट देश को विजय करता हुआ वह नन्द मिहकावती में आप-हुचा ॥ ५५ ॥ १३ अपने घर आया था ॥ ५६ ॥



शनकुमारशत्रुजि ७९ दुद्रवनं सप्तपञ्चाशत्तमो ५७ मयूखः ॥ ५७ ॥

आदितो नवनवतितमः ॥ ९९ ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( दोहा )

समय सत्रुजित ७९ मसवके, लखन द्रव्य लुटाय ॥

जातकर्म सब्यो सकल, रुद्र पुरोहित राय ॥

( पट्टपात )

सुतहिं अन्नप्राशन कराय अप्यो भटमंत्रि २न ॥

राधा ७८।१ करि सहगमन गई दिवें जहँ स्वकीय इन ॥

सत्रुजित ७९ सु इत सूर बढ्यो जिम मकरविभाकर ॥

सत्त्व १ सात्त्व २ पढि सकल दिप्यो जुब्बन लहि दुद्धर ॥

कैकेयराज रविकुल कलस जज्ञकेतु तनया जया ७९।१

परन्यो नरेस करनाटपति सतर्त पतिव्रतसंचर्या ॥ २ ॥

( दोहा )

कति मार्गंध याकौ कहत, इंदुबंस अवतंस

बसुधातल जिहँकरि बढ्यो, वसुधेश्वर भव बंस ॥ ३ ॥

( पट्टपात )

धर राधा के अन्त तक सन्तान की सूचना करना, महापद्म की पदवी धाले नन्द के निमित्त चक्रधर आदि क्षत्रियकुल का नाश होना, और कुमार शत्रुजित के जन्म होने का सत्सावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५७ ॥ और आदि से निम्नानवे मयूख हुए ॥ ९९ ॥

१ जन्म होने के समय २ राजा के रुद्र नामक पुरोहित ने जन्म समय का कार्य किया ॥ १ ॥ पुत्र को ३ अन्नप्राशन (जन्म समय से पाँचवें वा छठे मास में अथवा सातवें आठवें इनमें से किसी मास में बच्चे को प्रथम ही अन्न भक्षण कराया जावे उसको अन्नप्राशन कहते हैं) कराके ४ सौंपदिया राधासती होकर जहाँ अपना १ पति था वहाँ १ स्वर्ग में गई ७ मकर राशि का सूर्य बड़े इंसप्रकार बड़ा ८ निरन्तर पतिव्रत ९ संचय करनेवाली ॥ २ ॥ इस राधा को कितने ही १० भाट लोग चन्द्रवंश का मुकुट अर्थात् १ चन्द्रवंश में पैदा हुई कहते हैं जिससे १२ भूमि तल पर १३ चहुवान वंश बड़ा है ॥ ३ ॥

इकसत १०० अग्निष्टोम १ त्रिसत ३०० मख बाजिपेय २ क्रिय  
मख तिम चातुरमास ३ च्यारि सहस्र रु चउरासिय ४०८४ ॥

पुंडरीक ४ पंचास ५० जजे भूपाल सत्रुजित ॥

पौर्णमास ५ अरु दर्स ६ सदा बिरचे विधि संचित ॥

निगमोक्त सद्धि अप्पन निलय अग्निहोत्र धारन करयो ॥

सुत सावधान होतहि सुपहु बैखानस ब्रत अद्वयो ॥ ४ ॥

( दोहा )

तनय सत्रुजितकै भयो, हलधर ८० नाम गंहीर ॥

पितर १ देव २ द्विज ३ भक्तिपर, विदित दान १ रन २ वीर ॥ ५ ॥

लाहि जुब्बन हलधरकुमार, सब निजराज्य सम्हारि ॥

सत्रुजित ७९ हिं सम्मर्द दयो, सासन तस सिरधारि ॥ ६ ॥

( पढ़पात )

हलधरासिर अभिसेक बिरचि तब नृपति सत्रुजित ॥

पट्ट पंच ५ सिख अप्पि होय बंधुनकरि बंदित ॥

अग्निहोत्र लै संग सवन समुझाय आय १ शव्य २ ॥

जयो सहित बन जाय बस्यो बहु अर्द्ध वीर्तभय ॥

अष्टांग जोग सद्धि रु उभय २ भौतिक वपु छोरत भये ॥

गोरक्ष सिद्ध संगति सफल प्रकृति गंजि पारहि गये ॥ ७ ॥

१ यज्ञ. पचांस पुण्डरीक यज्ञ. इस प्रकार राजा शत्रुजित ने यज्ञ किये और पूर्ण-  
मासी और ४ अमावास्या का सदैव ही ५ वेदोक्त साधन करके अपने ६  
घर में अग्निहोत्र धारण किया और पुत्र के सावधान होते ही उस श्रेष्ठ रा-  
जा ने वानप्रस्थ व्रत को धारण किया ॥ ४ ॥ गंभीर ॥ ५ ॥ शत्रुजित की  
आज्ञा शिर पर धारण करके उसको हर्ष दिया ॥ ६ ॥ सिंहासन देकर, ओ-  
मद खरच समझाकर, स्त्री सहित बहुत वर्षों तक निर्भय होकर बसा और  
योग के आठ अङ्ग हैं जिनको साधन करके दोनों भौतिक (स्थूल शरीर और  
लिङ्गशरीर को भौतिक शरीर कहते हैं) शरीरों को छोड़ा अर्थात् मुक्त हो-  
गया क्योंकि लिङ्गशरीर मुक्ति में ही जीव से जुदा होता है प्रकृति (जगत्  
का कारण जिससे जन्म मरण होता है) को लोपकर पार (मुक्त) होगया ॥ ७ ॥

यमहिं१जिति लिय नियमरजिति तिहिं आसन३सद्विय ॥  
 ताहि जिति लहि प्रानरोध४कुंभक निश्चल किय ॥  
 प्रत्याहार५हिं जिति करन मोरे बिखयन सन ॥  
 बहुरि धारणा६सद्वि कियउ चपलउ स्वतंत्र मन॥  
 एकत्र धरि सु करि ध्यान७जय बहुरि समाहित८तँहँ बनेँ॥  
 अव्यय स्वरूपमय ते उभय२भूदेवन सत्तम भनेँ ॥ ८ ॥

( दोहा )

तजे समय अवसान तिन, इमहि उपेक्षित अंग ॥  
 निर्विकल्प मैं भो नही, पुनि व्युत्थान प्रसंग ॥९॥  
 हलधर८०सुनि किय जाय तँहँ, हुत पावक सन दाह ॥  
 कर्म विमुक्तनको हु किय, रक्षिख सनातन राह ॥ १० ॥

योगशास्त्र में योग के यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि ये आठ अंग हैं और प्रत्येक अङ्ग एक दूसरे के पीछे सिद्ध होते हैं तदनुसार उन दोनों स्त्रीपुरुषों ने यम (हिंसा न करना सत्य बोलना चोरी न करना ब्रह्मचर्य रखना विषयों का त्याग करना इसी प्रकार कुछ भी संग्रह न करना) को जीतकर नियम (शुद्धि रखना संतोष रखना तप करना वेदादि का पढ़ाना संव कर्मों को परमात्मा में अर्पण करना) लिया और फिर नियम को जीतकर आसन (जिससे बहुत काल तक सुख पूर्वक स्थिर रहा जाय) को साधा फिर आसन को भी जीतकर प्राणायाम (श्वास प्रश्वास की गति को रोकना) को प्राप्त होकर कुंभक (वायु को उदर में स्थिर करना) को दृढ़ किया फिर प्रत्याहार (जिसमें चित्त और इन्द्रियाँ अपने विषय को त्याग कर शान्त अवस्था को प्राप्त होजाती हैं) को जीतकर इन्द्रियों को विषयों से फेरी और फिर धारणा (चित्त को नाभि आदि स्थानों में स्थिर करना) को साध कर चपल मन को भी वश में किया फिर एकाग्रता धारण करके ध्यान (नाभि आदि स्थानों में जो ध्येय का ज्ञान होता है) को भी जीतकर समाधि (जिसमें ध्यान का संस्कार मात्र रहजावे और स्वरूप शून्य के समान होजावे) स्थित हुए इसप्रकार परमात्मा में लीन होनेवाले उन दोनों को ब्राह्मणों ने भी अत्यन्त श्रेष्ठ कहे ॥ ८ ॥ उन्होंने ने अन्त समय में उदासीन भाव से शरीर छोड़े और निर्विकल्प योग में होने के कारण जीव को फिर स्वतन्त्र कर्म करने का प्रसङ्ग नहीं हुआ अर्थात् फिर जन्म नहीं हुआ मोक्ष होगया ॥ ९ ॥ १ होम करके २ अग्नि में दाह किया ३ कर्मों से छूट गये थे



## सोरठा

ससिकुल द्रविड नरेस, संभुसुता चित्रांगदा ८०१२ ॥

वय१गुन२रूप३विसेस, हलधर ८०कर ताको गहिय ॥११॥

माघ अमौ जिहिं भूप, रवि उपराग प्रयोग गत ॥

उचित पात्र अनुरूप, द्विजन खर्व १०००००००००००० हाटक दयो

हलधर निर्भय हितु, ज्यौं तनय चित्रांगदा ॥

बधुवाह जयहितु, ज्यौं मणिपुर चित्रांगदा ॥ १३ ॥

उचित तास अभिधान, द्विजन महाधन्वा ८१दयो ॥

नय१जय२धर्म३निधान, भयो यहहु बिख्यात भुव ॥ १४ ॥

ससिकुल उत्तम सूर, नृप कलिंग सासन करत ॥

पटुताकी गुन पूर, सुता उमा ८११परन्यौं सुं पहु ॥ १५ ॥

## पटूपात

चंद्रायन प्रामार नगर उज्जैन भूप इत ॥

गंगा न्हावन गयउ जई ऊखर सूकर जित ॥

कछु बासर रहि न्हाय दान नाना प्रकार करि ॥

मुख्य घट्ट खटद्वेर श्राद्ध किन्नैं बिधि अनुसरि ॥

सत्तमी७वेर जावत तहाँ रोक्यो मग दुस्सलकुमर ॥

तुम गये छद्दिन कहि मुक्कली अज्ज हमहु जावत अडर १६

जिनका भी कर्म किया ॥ १० ॥ १ चन्द्रवंशी द्रविड देश के राजा संभु की पुत्री ॥ ११ ॥ माघ मास की २ अमावास्या के ३ सूर्य ग्रहण पर प्रयाग में जाकर ४ पात्र के सदृश (जैसा पात्र था वैसा) दान दिया ५ सोने की मोहरें (शाखों में सौलह मासों की स्वर्ण संज्ञा है) दीं ॥ १२ ॥ भयराहित हलधर से चित्रांगदा ने ऐसा पुत्र जना जैसा मणिपुर में अर्जुन से चित्रांगदा ने बधुवाहन को जना था ॥ १३ ॥ ६ नाम ॥ १४ ॥ ७ वह राजा ॥ १५ ॥ ऊखर क्षेत्र का जीतने वाला "रेणुका गूकर; काशी काली कालौ बडेश्वरौ ॥ कालिञ्जरो महाकाल ऊखरा नव मुक्तिदाः" इति बराहपुराणे ॥ उज्जैन का राजा चंद्रायण ८ जिधर सूकर (सोरमजी) है उधर गंगा न्हाने को गया ९ उस मुख्य घाट सोरमजी पर छे बेर जा कर श्राद्ध किये और सातवीं बेर जाते समय सूकर क्षेत्र के स्वामी दुस्सलकुमर ने रोका कि तुम तो आगे छः बेर गये हो आज सोरमघाट पर निर्भय हम जावेंगे

## दोहा

चन्द्रायन अक्खिय गई, सामग्री मम तत्थ ॥

बिनु गयँ न तातँ बनँ, अटक देहु नन अत्थ ॥ १७ ॥

पहुँचे दुस्सलके प्रथम, न्हान १ दान २ उपहार ॥

पिठिँ गये प्रामारके, बुल्ले ते अविचार ॥ १८ ॥

मालवेंद्र आवत इहाँ, दुतँ तुम जावहु दूर ॥

भुम्मि हमारी उन भनी, कितहै मालव कूर ॥ १९ ॥

## पादाकुलकम्

मन्नी नहि प्रामार सिपाहन, जुज्झे तब उतके रच्छक जन

मालवके सायुध सब मारे, कुँट्टि इतर हतमान निकारे ॥ २० ॥

इत दुस्सल रोकी असवारी, उन मिलि प्रमुख बनी सु उचारी

जिते गये तिँ हने अप्पन जन, किय उपहार श्राद्धके कनकना ॥ २१ ॥

## षट्पात

स्वीय सिपाहन मरन सुनत कुप्प्यो चंद्रायन ॥

बरज्यो दुस्सल बहुत मोरि तँदपि न लिन्नोँ मन ॥

बाजिनँकी तब बुगग उठी दुहुँ २ ओर अचानक ॥

मिलि चालुक १ प्रामार २ ओर बज्जत रन आनकेँ ॥

विनुसीस कुमार दुस्सल प्रबल फारि अनीकनँ उप्फन्योँ ॥

संग्राम मिलत प्रामारसुत हत्थी चउ ४ संजुत हन्योँ ॥ २२ ॥

१ सामग्री २ पीछे से ॥ १८ ॥ ३ तुम शीघ्र दूर चले जाओ ४ दुस्सल के मनुष्यों ने कहा कि यह शूश्रि हमारी है मालव मूर्ख किधर है ॥ १९ ॥ सोलखी ५ शस्त्रधारी थे उनको मारलिये और दूसरों को ६ पीटकर निकाल दिये ॥ २० ॥ इधर दुस्सल कुमार ने मालवा के राजा चन्द्रायण की सवारी को रोक दी उधर चन्द्रायण के मनुष्य पीट खाकर गये थे जिन्होंने सामने मिलकर चन्द्रायण से कहा कि ७ तेरे ८ श्राद्ध की सामग्री को चिखेर दी ॥ २१ ॥ ९ अपने सिपाहियों का मरना सुनकर १० तो भी अपना मन नहीं मोड़ा तब ११ घोड़ों की बाग उठी (युद्ध के लिये घोड़े दौड़ाये) १२ युद्ध के नगारे बजते समय १३ सेना को फाड़कर चार हाथियों सहित चन्द्रायण को मारलिया ॥ २२ ॥

दोहा

क्षेमदेव चालुक कुमर, विनुसिर दुस्सल वीर ॥

चउ४गज अरु चंद्रायन सु, हनि रु परस्यो हमगीर ॥ २३ ॥

अविबाहित हो यह कुमर, अपज सूरवतंस ॥

ताहि मन्नि दुस्सल पितर, पुज्जत चालुक वंस ॥ २४ ॥

पदपात

कुमर मरन सुनि क्षेमदेव चतुरंग लज्ज करि ॥

वसु८सुत मोत्कलभानु आदि अप्पन हरोल धरि ॥

खिल प्रमार दल हनन चलयो पद्दर गंगातट ॥

सुनि यह मालव सेन अखिल भग्गो बट उब्बट ॥

उज्जैन मयाधर नृपननृप चंद्रायन गद्विय चढ्यो ॥

चालुक१प्रमार २ वंसन बिदित वैर असह तंवतैं बढ्यो ॥ २५ ॥

( दोहा )

मल्लिनाग मुनिराज इत, लहि अपमान बिसेस ॥

सुत अष्टक८ जुत संहस्यो, महापद्म मगधेस ॥ २६ ॥

सूद्र बरन ते जनक१ सुत८, नव९हि नासकरि नंद ॥

दुर्मद लखि दें साप हुत, किय चाणक्य निकंद ॥ २७ ॥

( पादाकुलकम् )

क्षेमदेव सोलंखी का दुस्सल नामक कुमर विना मस्तक चार हाथी और चन्द्रायण को मारकर खड़ा हुआ। २३। विना विवाहा और विना संतान वीरों का मुकुट था जिसको दुस्सल नामक पितर मानकर सोलंखी वंश अब तक पूजते हैं। २४। चतुरंगसेना तैयार करके मोकल और भानु आदि आठ पुत्रों को आगे करके पवार की बाकी की सेना को मारने के लिये सीधा गंगा किनारे पर चला उप्रवट (विना मार्ग) उज्जैन में राजाओं के राजा चन्द्रायन की गद्दी पर मयाधर बैठा ॥ २५ ॥ इधर चाणक्य मुनि ने अपमान पाकर सम्पूर्ण आठ पुत्रों सहित मगध देश के राजा महापद्म (नन्द) को मारा ॥ २६ ॥ वे पिता पुत्र सब शूद्र वर्ण (नन्द, दासी के पेट से पैदा हुआ था इससे सब शूद्र थे) के और नव ही नन्द नाम के थे। चाणक्य मुनि ने नाश किया ॥ २७ ॥

कुल सिमुनाग महानंदी सुत, चंद्रगुप्त किन्नौ नृपताजुत ॥  
 बिरचि ग्रंथ चाणक्य नीतिमय, जाय पढाय कियो मुनि दुर्जय २८  
 अगौ नंदसचिव सकटालहिं, कूप ग्रंथ डारयो लहि कालहिं ॥  
 सत १०० हि हुते सकटालकेर सुत, सबहि गर्त गेरे पितृसंजुत ॥ २९ ॥  
 परे कूप प्रतिदिन ते पालहिं, इक १ जलघट इक १ सक्तुसरावहिं ॥  
 तनयन सन सकटाल कछो तब, सक्तु इते करि नन बचिहैं सब ३०  
 अटके नंद अहेलन अप्पन, प्रतिफल याको ताहि समप्पन ॥  
 होउ समर्थ सक्तु सुहि खावहु, असन बिहीन ओर मरिजावहु ॥ ३१ ॥  
 सु तिहिं समर्थ कछो पुत्रन जब, खानलग्यो सकटाल सक्तु तब ॥  
 याके लखत बिकलढिग अप्पन, सत १०० हि तनूज मरे लंघनसन ३२  
 कछु अब्दन अंतर बिच पारयो, बहुरि नंद सकटाल निकास्यो ॥  
 कायस्थ सु सकटाल कजाकी, कढ्यो मारि पुत्रन एकाकी ॥ ३३ ॥  
 नृपकिन्नौ पुनिसचिव सोहि नत, तासनास अवसर कैहैं तक्रत ॥

शिमुनाग राजा के वंश में महानन्दी नामक राजा के नन्द नामक पुत्र हुआ वह पटना का राजा हुआ जिसको पुत्रों सहित मारकर चन्द्रगुप्त को चाणक्य ने राजा बनाया और चाणक्य नाम का नीति का ग्रन्थ बनाकर उसको पढाकर दुर्जय बनाया ॥ २८ ॥ जिसकी आगे सविस्तर कथा कहते हैं कि आगे नन्द के सकटाल नामक कायस्थ जाति का एक मंत्री था जिसको एक ग्रन्थ (बिना पानी के) कूप में डालदिया, इस सकटाल के सौ पुत्र थे जिन सबको पिता सहित खड्गे में डालदिये ॥ २९ ॥ उन कूप में गिरेहुओं को उनके पालन के लिये जल का एक घड़ा और सक्तू का सरावा (मृत्तिका पात्र विशेष) नन्द देता था तब सकटाल कायस्थ ने अपने पुत्रों से कहा कि इतने से सक्तू (सातू) से सब जने नहीं बचेंगे ॥ ३० ॥ बिना अपराध अपने को नन्द ने कैद किया है इसका बदला उसको देने के लिये जो समर्थ होवे वही यह सक्तू खाओ और बिना भोजन के अन्य सब मरजाओ ॥ ३१ ॥ उन पुत्रों ने उसी (सकटाल) को बदला देने के समर्थ कहा सौ ही पुत्र लंघन करने से मरगये ॥ ३२ ॥ कुछ वर्ष बीच में देकर नन्द ने उस सकटाल को उस कूप से निकाला वह छली अथवा होशियार सकटाल कायस्थ पुत्रों को मारकर अकेला निकला ॥ ३३ ॥ नञ्ज जानकर नन्द ने उसीको कामदार किया वह नन्द का नाश करने का समय देखता रहा, जब मरेहुए पुत्र याद

अंगज मृत सुमिरन जिम आवैं, सकटालहिं तिम नृप न सुहावैं ॥ ३४ ॥  
 नंदहि नासकरन कछु हेरन, फिरैं विपिन लै मिस हयफेरन ॥  
 कबहु लखे चाणक्य बिहारत, दर्भमूल खनि तक्रहिं डारत ॥ ३५ ॥  
 करहु कहा सकटाल कह्यो जहँ, मुनि कौटिल्य दयो उत्तर तहँ ॥  
 है इहिंमग व्याहन मै जावत, अटक्यो कुस चुभि चरन दुखावत ॥ ३६ ॥  
 तरुबैद्यक बिच यह दिन्नी कहि, मिटै दर्भनिजमूल तक्र लहि ॥  
 चुभि पय मोहि लग्न च्युत किन्नौ, दर्भन मूल तक्र इम दिन्नौ ॥ ३७ ॥  
 साचिव कह्यो न पढे तिहिं होते, तो तुम दर्भ कहाकरि खोते ॥  
 विप्र कह्यो मै मुनि बच्छायन, करि अभिचार मिटातो कुसवन ॥ ३८ ॥  
 सु मुनि मंत्र सकटाल बिचार्यो, जिहिं बदलो कुससाँहुन टार्यो ॥  
 सो नरको हेलन नन सहिहैं, दुतहि सपुत्र नंदको दहि हैं ॥ ३९ ॥  
 यह आलोचि विप्र प्रति बुल्लयो, श्राद्धकरन आसय नृप खुल्लयो ॥  
 अधिकृत होहु तहाँ चलि अप्पहि, मुनिहि संग लै गौ सु यह कहि ४० ॥  
 श्राद्ध करन लग्यो सु नंद जहँ, तहँ कायस्थ लैगयो तिनकहँ ॥  
 पात्र कहि रु बैठारे आसन, रद १ नख २ कपिस धरत बच्छायन ४१ ॥

आवे तब सकटाल को वह राजा नहीं सुहावै ॥ ३४ ॥ वन में घोड़ा फेरने के मिस से फिरै सो कभी फिरतेहुए ने डाम के मूल को खोदकर उसकी जड़ में छाछ (गोरस) डालतेहुए चाणक्य मुनि को देखा ॥ ३५ ॥ चाणक्य मुनि ने उत्तर दिया ॥ ३६ ॥ वृक्ष सम्बन्धी वैद्यक ग्रन्थों में यह लिखा है कि डाम की जड़ में छाछ डालने से वह मिटजाता है २ विवाह से च्युत कर दिया अर्थात् विवाह नहीं होने पाया इसकारण से येने डाम की जड़ में छाछ दिया है ॥ ३७ ॥ जब सकटाल ने कहा कि तुम इतने नहीं पढ़े होते तो डाम का नाश कैसे करते तब उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं वात्स्यायन नामक मुनि हूँ सो ३ मारण मोहन आदि मंत्र तन्त्र (मंत्र तन्त्र के मारण मोहन उच्चारण में वात्स्यायन मुनि प्रसिद्ध थे और इस कार्य के आचार्य थे) से डाम के वन को मिटादेता ॥ ३८ ॥ ४ वह मनुष्य का अपराध सहन नहीं करेगा सो नन्द को पुत्रों सहित शीघ्र ही भस्म करेगा ॥ ३९ ॥ ५ विचार करके, ६ वहाँ बलके आप अधिकारी होओ ॥ ४० ॥ ७ वह नन्द १० वात्स्यायन (चाणक्य) के ८ दन्त और नख ९ पीछे थे ॥ ४१ ॥

केस कपिल इम नंद निहारे, कहि अपात्र मुनि बेग विडारे ॥  
 खुलि सिखा मुनि तब लिन्नो पन, करौ ससुत नंदहिं गतजीवन ४२  
 वंधौ बहुरि सिखा मेरी जब, कहि इम हुत अविचार करयो तब ॥  
 नंदहि नाम तस सुतनेन धारे, इम नव नंद चणकसुत मारे ४३  
 महानंदि सिसुनाग पुव्व हुव, चंद्रगुप्त हो तस प्रवीन सुव ॥  
 ताहि कुसुमपुर तखत चढायो, नंदमंत्रि रक्खस निकसायो ४४  
 विपकन्या भेजी जब रक्खस, टारी सुहु पहिचानि रूप तस ॥  
 पर्वतराज ताहि करि मारयो, बच्छायन पुनि मंत्र बिचारयो ४५  
 सचिव होय रक्खस वह याकै, तो न चंद्रगुप्तहिं अरि ताकै ॥  
 यह बिचारि मुनि सुहि बुलवायो, भनि सपथरु भय तास भगायो ४६

केस भी देखकर अपात्र कहकर चाणक्य को निकाल दिया तब अपनी  
 चोटी को खोलकर चाणक्य मुनि ने नियम लिया कि नन्द को पुत्रों सहित  
 मारुंगा ॥ ४२ ॥ मंत्र जंत्र किया, उस नन्द के आठ पुत्रों के नाम भी नन्द ही  
 थे इस प्रकार चणक ब्राह्मण के पुत्र (चाणक्य) ने नव नन्द मारे ॥ ४३ ॥ शिशु-  
 नाग नामक राजा के वंश में महानन्द नामक राजा हुआ जिसके बुद्धिमान  
 चन्द्रगुप्त नामक पुत्र था [किसी किसी के मत से महानन्द के सुनन्दा ना-  
 मक स्त्री के पेट से "नन्द" और मुरा नामक शूद्रा स्त्री के पेट से मौर्य नाम  
 क पुत्र हुआ और इस मौर्य का पुत्र चन्द्रगुप्त हुआ इसीसे मौर्य वंश निक-  
 ला है जिसको पटना की गद्दी पर बिठाया और राजस नामक एक ब्राह्म-  
 ण नन्द का मंत्री था जिसको निकलवा दिया ॥ ४४ ॥ उस राजस ने चन्द्र-  
 गुप्त को मंत्रि के अर्थ एक विपकन्या [सुद्वारा जिस नाटक में एक प्रकार की  
 स्त्रियां लिखी हैं कि जिनके साथ प्रथम संभोग करनेवाला पुरुष मरजाता  
 है] भेजी परन्तु उसका रूप पहिचान कर चाणक्य ने उसको डाल दी और  
 उसी विपकन्या से पर्वतराज को [नन्द को मारने के लिये चन्द्रगुप्त की स-  
 हायता पर नेपाल के राजा को आधा राज्य देने का नियम करके चा-  
 णक्य चढालाया था उसके पास वह विपकन्या चणक्य ने चन्द्रगुप्त की  
 ओर से भेट भेज दी जिसके साथ भोग करने से पर्वतराज मर गया और  
 चन्द्रगुप्त को आधा राज्य नहीं देना पड़ा] मारा फिर वात्स्यायन [चाणक्य]  
 ने सलाह विचारी कि ॥ ४५ ॥ वह राजस चन्द्रगुप्त का मंत्री होजावे तो उ-  
 सके कोई शत्रु नहीं रहे यह विचार कर चाणक्य मुनि ने उस राजस को  
 बुलाया और सोमन करके उसका भय भगाया ॥ ४६ ॥

मलयकेतु नृपकै यह रक्खस, जाय सचिव भो हो प्रकटित जस॥  
 सु ईम बुद्धि मुनिवर हिय लायो, मंत्री रक्खस नाम बनायो॥४७॥  
 सकटालहु लै बैर नंद सन, कासी गयो तजन निज उपघन॥  
 चंद्रगुप्त१रक्खस२हुव हितमय, मगधें तिन्हें दै मल्लिनाग गय४८  
 बच्छायन वे नंद९हनैं जब, पंद्रहसत१५००कलिबर्ष गये तब॥  
 चंद्रगुप्तकहैं नीति परायन, करि स्वच्छंद गये बच्छायन ॥४९॥

( दोहा )

गनित प्रबंधनमैं हु यह, तवसों हुव संकेत ॥  
 नंद कहैं नव९जानियत, इम तिहिं अर्थ उपेत ॥५०॥  
 कामतंत्र१चाणक्य पुनि, नीतितंत्र चाणक्य२ ॥  
 न्यायभाष्य३इत्यादि मुनि, बिरचे इतर असक्य ॥ ५१ ॥  
 देवदत्त८२सुत इत भयो, महाधन्व नृपकेर ॥  
 जुब करी नहि देर जिहिं, दैन करी नहि देर ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ  
 बीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने दृष्टप्राशिताऽन्नपुत्रराधा ७८।१ ज्वलन  
 स्नानकरणाशत्रुजि ७९ जया ७९।२ अग्निष्टोमाऽऽदिप्रभूतसत्राऽनु-  
 धानसाधितगार्हस्थ्यगृहीतवैखानसव्रतसमनुष्ठितयोगतद्वम्पाति१देह

वह राक्षस मलय केतु नामक ( जो पर्वतराज का पुत्र था ) नेपाल के राजा के पास  
 जाकर उस का सचिव होगया था जिसको १ इस प्रकार बुलाकरा १२ नन्द से वै  
 र लेकर ३ शरीर ४ मगध का राज्य चन्द्रगुप्त को देकर चाणक्य मुनि भोगया ४८  
 ५ चाणक्य ने उन नन्दों को मारे जब कलियुग के पन्द्रह सौ वर्ष गये थे देवदत्त  
 करके चाणक्य गये ॥४९॥ ज्योतिष के गणित के ग्रन्थों में जय से यह स-  
 ज्जेत हुआ है कि नन्द के कहने से नव माने जाते हैं सो नन्द शब्द इस अर्थ  
 सहित हुआ ॥५०॥ उस चाणक्य ने कामशास्त्र (वात्स्यायन कामसूत्र के नाम  
 से) और चाणक्यनीति के नाम से नीतिशास्त्र किये और न्यायशास्त्र पर  
 भाष्य इत्यादि और भी दूसरों से नहीं होसके ऐसे किये ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
 वाण वंशवर्णन में पुत्र का अन्नप्राशन देखकर राधा का अग्निस्नान करना  
 (जलना) शत्रुजित् और जया का अग्निष्टोम आदि बहुत यज्ञों का अनुष्ठान

चहुधाणवंशवर्णन ] तृतीयराशि—एकोनषष्टिमयूख ( १०३३ )

त्यजनहलधर ८० चित्राङ्गदा १ विवहनतीर्थराजखर्वसुवर्णादानम-  
हाधन्वो ८१ मा ८१।२ परिणायनप्रामारराजचन्द्रायणा १ चालुक्य-  
राजकुमारदुःशल २ शूकरक्षेत्रसमिन्निपतन्निपातितनव ९ नन्द  
महामुनिमल्लिनागकुसुमपुरस्कन्धावारमगधराज्यचन्द्रगुप्तायत्ती-  
करणाचण्डासिराजमहाधन्वकुमारदेवदत्तो ८२ द्रवनमष्टपञ्चाश-  
तमो ५० मयूखः ॥ ५८ ॥ आदितः शततमः ॥ १०० ॥

( प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा )

( षट्पात )

देवदत्त चउसष्टि ६४ कला कोविदे उदारमति ॥

जनके अनंतर एह भयो करनाट महीपति ॥

गंगाजमुनामज्जक मुकुट पुर थान कुम्भ पह ॥

अमरसेन सुहि अमृतसेन नाम रु अजसेनहु ॥

अभिधान तीनजाके विदित तनया कुसुमा ८२।१ नाम तस

चहुवानराज परन्यौ रुचिर जग प्रसारि बितरन सुजस ॥ १ ॥

( दोहा )

आनंदध्वज भूप इत, कान्यकुब्ज रक्षोर ॥

भूतल इक उदार भो, करे मितपंच ओर ॥ २ ॥

करना, और गृहस्थ धर्म का साधन करके वानप्रस्थव्रत में योग का अनुष्ठान  
करके उन स्त्री पुरुष का शरीर छोड़ना, हलधर का चित्राङ्गदा से विवाह क  
रके प्रयाग में एक खर्व मोहरों का देना, महाधन्वा का उमा से विवाह करना,  
पँवार राजा चन्द्रायण और चालुक्य राजकुमार दुःशल को शूकरक्षेत्र (सो-  
रमघाट) के युद्ध में गिरना, नव नन्दों का नाश करके चाणक्य मुनि का पट-  
ना की राजधानी चन्द्रगुप्त के वंश में करना, चहुवानराजा महाधन्वा के कु-  
मार देवदत्त के जन्म होने का अष्टावक्रवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५८ ॥ और  
आदि से सौ १०० मयूख हुए ॥

१ चौसठ कला में पंडित २ पिता के ३ पीछे ४ कछवाहा राजा ५ जिसके तीन  
नाम प्रसिद्ध हैं ६ सुन्दर ७ दान से यश फैलाकर ॥ १ ॥ ८ कन्नोज में आनंद-  
ध्वज राठोड़ दूसरों को ९ कृपण करके भूमितल पर एक ही उदार हुआ



पौराणिक चारन सुकवि, उग्रश्रवकुल अर्क ॥

वीततमा पूजे सबिधि, तिनसो नृप सुनि तर्क ॥ ३ ॥

सत१००सासन गज इक१सत१००, हय वर तरल हजार१००० ॥

कोटि१०००००००कनक सत१००किंकरी, दये इतेक उदार ॥४॥

विप्र१सूत२सांगध३विबुध४, सबहिं अजाचक श्रील ॥

करे भूप जिहिं मौज करि, कृपनन मुख जरि कील ॥५॥

देवदत्तकै पुत्र हुव, दामोदर८३नर ईस ॥

करि जिहिं भक्ति प्रसन्न किय, गिरिजा सहित गिरीसा ॥६॥

पुष्करनाम त्रिगर्तपति, भूप भानुकुल भूत ॥

सुगुणा८३१तस तनया सँची, परनी तिहिं पुरुहूत ॥ ७ ॥

पट्टपात

करि उपयमँ मुरि मग्ग देस चल्लत दामोदर८३ ॥

जंबुमार्गवन आय भानु उपरकतँ अमौ पर ॥

तँहँ पुर पट्टनि नाम सरित चम्मलि तँहँ दंपति ॥

दँत अयुत१००००गोदान सहित नानाविधि संहति ॥

दुलहनि उँपेत क्रीडत दुलह नानावन१उपवन२नदि३न ॥

इक१अब्द अंत मिहिकावतिय इम पत्तो चहुवान ईन ॥८॥

१ पुराण की वृत्ति को धारण करनेवाले अथवा पुराण जाननेवाले रोमहर्षण सूत के वंशवाले चारण अष्ट कवि उग्रश्रवा नामक सूत के वंश के. २ सूर्य. वीततमा से ३ न्यायशास्त्र सुनके उनको पूजा और ४ सौ उदक ग्राम एक सौ हाथी ५ चंचल अष्ट हजार घोड़े ६ सोने की करोड़ मोहरें ७ सौ दासियें उस उदार ने वीततमा को दिये ॥ ४ ॥ ८ ब्राह्मण ९ चारण १० भाट और ११ पंडित सभी को याचक करके उसने १३ दान (रीक्त) से सबको १२ धनवान् करके कृपणों के मुख में कील जड़ दी ॥५॥ १४ पार्वती सहित १५ महादेव को प्रसन्न किये ॥ ६ ॥ १६ जालंधर देश का पति (सुशर्मा का देश) १७ हुआ १८ इन्द्राणी को १९ उस इन्द्र ने परनी ॥ ७ ॥ २० विवाह करके २१ अमावास्या के दिन २२ सूर्य ग्रहण पर २३ चामल नदी है जहाँ पर २४ स्त्रीपुरुष ने जोड़े से दश हजार गौयें सहित नानाप्रकार के २५ इकठ्ठे २६ दान दिये २७ सहित २८ चहुवाणों का राजा तथा सूर्य ॥ ८ ॥

कासीनाथ ८४ प्रबुद्ध भयो दामोदरकै सुत ॥

धीर वीर नय १ धर्म २ विनय ३ विक्रम ४ विद्या ५ जुत ॥

अपि राज्य भर याहि समय अवसर दामोदर ॥

गयो विपिन तजि गेह हृदय अविर्त चिंते हेर ॥

प्रभु सिव प्रसन्न अवसानपर दुर्लभ ताहि समीप्य दिय ॥

चहुवानराज सुगुणा सहित नियत वास कैलास किय ॥ ९

दोहा

नंदध्वज रहोर नृप, सोही संबर नंद ॥

कण्ठांउज्ज तिहिकाल भो, मति १ बल २ दान ३ अमंद ॥ १० ॥

भव्य सुता तस भावती ८४१, नृपवर कासीनाथ ८४॥

परनि करे कवि प्रचुर धन, पूरै जिम धनपाथ ॥ ११ ॥

षट्पात्

परनि बाहुरत बेर आय ऊखर कालंजर ॥

सुरभी विपिन सँहस १००० दई विधुवार अमापर ॥

तीरथराज प्रयाग जाय बहुबेर दान किय ॥

गंगाद्वार पधारि रजत मुद्रा अर्बुद १०००००००० दिय ॥

करि जंग विजय सँसिकुल कलस कुंतलपति श्रीधर हन्यौ

बलमैं प्रचंड यह नृप विदित भीम अंपर भूतल मन्यौ ॥

दोहा

इम भूपति कुंतल अधिप, श्रीधरकौ रन मारि ॥

दुहितौ तस आनी दया ८११, निज सुतहित निर्धारि ॥ १३ ॥

१ पंडित २ राज्य का भार ३ वन में ४ निरंतर ५ महादेव का चिन्तन किया ६ अन्त में शिव ने ७ अपनी समीपता (मुक्ति) दी ८ निश्चय ॥ ९ ॥ ९ उसीका नाम शम्बर नंद भी था १० कन्नोज पर ॥ १० ॥ ११ सुन्दर १२ बहुत धनवान् कर दिये जैसे मेघ १३ जल से पूर्ण करै तैसे ॥ ११ ॥ १४ कालंजर नामक ऊपर क्षेत्र में १५ गौवं १६ सोमोती (सोमवारवाली) अमावास्या पर १७ चाँदी के रुपये १८ चंद्र वंशियों के मुकुट १९ कामगिरि से लेकर द्वारका तक के प्रांत को कुन्तल कहते हैं २० दूसरा ही भीमसेन कहा गया ॥ १२ ॥ २१ कुन्तल देश के राजा २२ उसकी पुत्री को अपने पुत्र के लिये लाया ॥ १३ ॥

( षट्पात )

कासीनाथ८४तनूज भयो कोविद लीलाधर८५ ॥

दया८५।१ताहि परिनाय लयो उपराम दयापर ॥

सुतहिं अपि कर्णाट गयो भूपति वदरीबन ॥

देह तज्यो भजि जोग गह्यो सत१चित२आनंद३पन ॥

धरनी भुजंग लीलाधर८५सु भुम्मि विदित विक्रम भयो ॥

जिहिं कोक नाम बंदीजनहिं दोय अयुत२००००हाटक दयो१४

( दोहा )

तंत्रन विच बिनु तोल, हाटक संख्या होय तँह ॥

कोविद जानहु कोल, सोलह१६ मास सुवर्ण प्रति ॥१५॥

हितमय सुरतरु होय, विप्रहु सनमाने बहुत ॥

दिय सासन सतदोय२००, पंडु पंडित श्रीकंठकहँ ॥१६॥

( दोहा )

लीलाधर८५कै सुत भयो, धरनीधर८६अभिधान ॥

नीति१पढ्यो द्विज नंदसौ, सलसौ वेद२सुजान ॥१७॥

( षट्पात )

श्रीधर सुत मदसेन सुपहु लीलाधर सालक ॥

जनक बैर इत जानि चढ्यो कुंतलभुवंपालक ॥

चहुवानहु चतुरंग सज्जि भेल्यो वह सम्मुख ॥

जामिप१सालक२जुगल२रच्यो संगर अर्जुन रुख ॥

१पुत्र२पण्डित२परम दया धारण करके विरक्त होगया ४ सच्चिदानन्दपन (ब्रह्मस्वरूप)लिया५भूमि रूपी वेश्या का पति६कोक नामक भाट को७सोने की मोहरें दीं ॥१४॥ ८शास्त्रों में जहां बिना तोल स्वर्ण की संख्या होवे तहां पंडितों का नियम सोलह मापा सुवर्ण का जानो ॥१५॥ ९कल्पवृक्ष होकर १०उदक ग्राम ११चतुर ॥१६॥ १२धरनीधर नामवाला ॥ १७ ॥ १३लीलाधर का शाला १४पिता का बैर जानकर कुन्तल देश की भूमि को १५पालन करने वाला चढा १६बहिनाई और शाला दोनों १७अर्जुन की शांति

तजि देह दुवर्हि पंते त्रिदिव कावेरी उपकंठ भुव ॥  
धरि छत्र भयो धरनीधर ८६ सु धरनीधव करनाट धुव ॥ १८ ॥  
( दोहा )

लीलाधर ८५ मृत सुनि लघुहि, चंदन निचित कराय ॥  
देह होमि पहुँची दया ८५ १, जहँ बल्लभ तहँ जाय ॥ १९ ॥  
धरनीधर ८६ गो भुम्मिधव, पुष्कर धोवन पाप ॥  
तहँ उततैं आनर्तपति, पहुँच्यो न्हान प्रताप ॥ २० ॥  
बाहुलमासं निबाहि विधि, दै तहँ लखन दम्भ ॥  
मोदसाहित दुवर्नृप मिले, करि द्विज दुख निकम्भ ॥ २१ ॥  
नृप प्रताप ससिकुलकलस, स्वीय सुता संवध ॥  
करि संगहि चल्लहु कह्यो, व्याहहु सीघ्र सुसंध ॥ २२ ॥

( षट्पात )

धरनीधर ८६ सुहि कहिय अथ आये तीरथ हित ॥  
सुहद १ बंधुर्नहि संग मंत्रि १ भूट २ वर्ग तथा मित ॥  
जातैं आलस्य जाय व्याह करिहैं विधि संजुत ॥  
अखिय सु सुनि प्रताप नियंत ससिकुल जानहु नुंत ॥  
जाके सहाय लहि जय दुलभ भुगत तुम करनाटभुव ॥  
न बिलंब करहु चितहु नृपति द्रुत अरिघाट १ रु बाल २ दुव २ २ ३ ॥  
तनुजा सम्मति अग्रा सुंग आनर्त धराधर ॥

कावेरी नदी के ३ समीप भूमि में युद्ध रचकर २ स्वर्ग में १ पहुँच  
४ भूमिपति ॥ १८ ॥ ५ शीघ्र ६ चन्दन काष्ठ को इकट्ठा कराकर ७ जहाँ  
प्यारा था तहाँ ॥ १९ ॥ प्रताप नामक ८ द्वारका देश का पति स्नान करने  
को गया ॥ २० ॥ ९ कार्तिक मास में १० रुपये ॥ २१ ॥ ११ चन्द्रकुल का  
कलश प्रताप नामक राजा ने १२ अपनी पुत्री का सम्बन्ध करके कहा १३  
हे श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाले ॥ २२ ॥ १४ यहाँ १५ मित्र १६ उमराव भी १७ कम है इस कारण  
से १८ घर जाकर १९ निश्चय ही चन्द्रवंश को २० स्तुतियोग्य जानो, इसी वंश की  
सहायता से दुर्लभ जय लेकर २१ अरिघाट नामक मामा ने और बाल ना-  
मक भांजे ने सहायता की थी सो शीघ्र याद करो ॥ २३ ॥ आनर्त देश के राजा

व्याही नृप विक्रमहिं भयो सहदेव तत्र भव ॥

इंद्रप्रस्थ भुव छिन्नि जाहि कुरुपति निकासि दिय ॥

तव मातुल अरिघाट ताहि करनाट भूप किय ॥

मारयो सुनाभ हैहयमुकुट पुनि जनपद पुंड्रक लयो ॥

मातुल सहाय हरिसेन सुत बालहु तिम देहहि दयो ॥ २४ ॥

( दोहा )

यह प्रताप आनर्तपति, सब उदंत सुनवाय ॥

कुल निज जो आसान किय, दिय सो प्रकट दिखाय ॥ २५ ॥

बह निमित्त लै उच्चरिय, क्यों तहँ व्याहन देर ॥

रिस पचाय धरनीधर ८६हु, बुल्लयो सुनि तिहिं बेर ॥ २६ ॥

हन्यौ जयद्वलनै जवहि, नृप कृतवर्मा ४५नाम ॥

सल नामक तस स्वसुर सन, कछु न सरयो तब काम २७

छिन्नि जयद्वलनै लयो, हमसौं पुंड्रक देस ॥

जानहु इत उपकार जो, आनहु तो घर एस ॥ २८ ॥

सुनि सिटाय आनर्तपति, कछो बन्प्यौ सुहि अच्छ ॥

अकरनसौं अल्पहिं करन, कहत भलो नयदच्छ ॥ २९ ॥

सुंग ने सम्मति नामक पुत्री को विक्रम चहुवान को विवाही थी, जिससे सहदेव का १ जन्म हुआ २ तब मामा ३ हैहय कुल के मुकुट सुनाभ को मारकर पुंड्रक ४ देश लिया और हरिसेन के पुत्र बाल ने भी मामा (गोग चहुवाण) की सहाय पर तिल तिल समान कट कर शरीर किया है ॥ २४ ॥ ५ वृत्तान्त सुनाकर ६ अपने कुल ने जो चहुवाणों पर उपकार किये थे वे प्रकट करके दिखादिधे ॥ २५ ॥ ७ वह कारण बताकर कह ॥ २६ ॥ कृतवर्मा चहुवान को जयद्वल ने मारा तब कृतवर्मा का स्वसुर सल नामक चन्द्रवंशी था जिससे कुछ कार्य नहीं सरा ॥ २७ ॥ जयद्वल ने हमारा पुंड्रक देश छीनलिया सो तुम हम पर उपकार किया चाहते हो तो वह पीछा हमको दिलाओ ॥ २८ ॥ आनर्त देश के राजा ने कहा कि जो कुछ हम से बना सो ही अच्छा है कुछ नहीं करनेवाले से न्यून करनेवाले को नीतिचतुर भला कहते हैं ॥ २९ ॥

पट्टपात्

तहैं धरनीधर८६नृपति स्वीय मंत्रिन समुभायो ॥

इन जिम किय उपकार अबहु अवसर तिम आयो ॥

जदपि अल्प दलै संग तदपि अप्पन प्रच्छन्न न॥

चलहु विवाहन वेग सु सुनि किय ग्रहन रूच्यर्पन ॥

निज स्वसुर संग प्रस्थान करि तनया सुखमा८६।१नाम तस॥

परन्यौ बढाय उच्छव प्रथित रह्यो अमित दुहुँरओररसा३०।

दोहा

आयो नृप चहुवान इम, सुखमा८६।१परनि सुरूप ॥

मख किय अग्निष्टोम दस१०, जिहिं पुनि हाटक जूप ॥३१॥

होताआदिकद्विजनहित, लखख१०००००लखख१०००००दियदम्भ॥

पौरानिके वंसहु प्रचुर, किय पूजित जस कम्म ॥३२॥

धरनीधरकै सुत भयो, रन दुस्सह रमनेस८७॥

नृप कबंधे संवर सुता, उदिता८७।१परन्यौ एस ॥३३॥

अध्वर ज्योतिष्टोम इक१, किन्नौ नृप चहुवान ॥

दये सूत वसुमित्रको, सासन सठि६० सुजान ॥३४॥

पट्टपात्

नृप चालुक्य कुमारपाल इत विजयपाल सुत ॥

भयो जैनमत लीन नीच तजि धर्म निर्गम नुत ॥

उत्कल जनपद अवधि अमल किन्नौ जिहिं अप्पन

१ अपने मंत्रियों ने सेना साथ में कमती है तो भी आपन ३ छिपे हुए नहीं हैं ४ बृलह (बाँद) पन ग्रहण किया ५ गमन करके ६ प्रसिद्ध अपार रस (सेह) रहा ॥ ३० ॥ ८ स्वर्ण का खंभा खड़ा करके ॥ ३१ ॥ ९ होम करनेवाले ब्राह्मणों को १० रुपये दिये ११ चारणवंशी को भी यश के लिये बहुत पूजा ॥ ३२ ॥ सम्बर नामक १२ राठोड़ की पुत्री ॥ ३३ ॥ १३ यज्ञ १४ वसुमित्र नामा चारण को १५ साठ ग्राम उदक दिये ॥ ३४ ॥ १७ स्तुतियोग्य १८ वेद को छोड़कर १९ उड़ीसा देश की सीमा तक अपना अमल कर लिया.

सठ्ठि६०बरस वय इत सु भयो रमनेस८७\*धराधन ॥

उपज्यो न\*\*तदपि ताकौ तनय पन लिय तब कारि सिव प्रनुत ॥

रावरे भेट सिर सम करौ संकर प्रभु जो देहु सुता ॥३५॥

दोहा

दैवजोग पन लेत यह, तनय उपाज्जिय तास ॥

वाल छपाकर जिम बढिय, दिन प्रति भगवतदास८८ ॥३६॥

छन्नै नृप संधा लई, जानी इक १ न जाहि ॥

पुनि बुल्लयो अचलेस प्रभु, अर्बुद गिरि सिव आहि ॥३७॥

तिनके दरसन काज मै, जावत सत्वर जत्थ ॥

इक अप्पन कुल जन्मभुव १, तित्थर बिदित पुनि तत्थ ॥३८॥

पट्टपात्

इम कहि नृप रमसेन ८७ सचिव सामंत रक्खि तहँ ॥

सेना कछु लै संग गयो अर्बुद गिरीस जहँ ॥

सिव पूजन किय पुब्बं भक्ति १ उच्छव २ श्रद्धा ३ जुत ॥

पुनि तहँ तीरथ बहुत हुते तिन बिच न्हायो नुत ॥

अभिधान सुकवि तिनके कहत बंदन करि अति नम्र बनि ॥

एकाग्र श्रवन धारहु नृपति रामसिंह चहुवान मनि ॥३९॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ

\*राजा(भूमि ही है धन जिसके)\*\*तो भी उसके पुत्र नहीं हुआ? शिव से बहुत नम्र होकर यह प्रण लिया कि रहे महादेव सुभे पुत्र दो तो मैं आपके मस्तक भेट करूँ ॥३५॥ ३ द्वितीया के चन्द्र समान बढा ॥३६॥ यह ४ प्रतिज्ञा राजा ने ली थी ५ है ॥ ३७ ॥ जहाँ पर १ शीघ्र जाता हूँ, वह आवूँ एक तो अपने कुल की जन्मभूमि (चहुवान वहाँ पर ही उत्पन्न हुआ था इससे) है फिर वह प्रसिद्ध ७ तीर्थ भी है ॥ ३८ ॥ कामदार और ८ वमराओं को राजधानी में रखकर ९ आवूँ पर्वतराज पर गया वहाँ १० प्रथम महादेव का पूजन किया ११ स्तुतियाँ गयी १२ उन तीर्थों के नाम ग्रन्थकर्ता (भूर्यमल्ल) कहते हैं सो १३ हे रामसिंह, एकाग्र होकर सुनो ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में देवदत्त का कुसुमा से विवाह करना, कन्नोज के राजा

वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने देवदत्त ८२कुसुमा ८२।१ परिणयन  
कान्यकुब्जनरेशाऽऽनन्दध्वजपौराणिकवीततमःपूजनादिवितरणा  
वर्द्धनचाहुवाणानरेन्द्रदामोदर ८३सुगुणा ८३।१पाणिग्रहणाकाशीनाथ  
८४भावती ८४।१विवह्नकुंतलराजश्रीधरमारणात्तत्तनयलीलाधर  
८५श्रीधरसुतोदयो ८५।१ पयमनकुमारधरणीधर ८६ज्जवनकुंतल  
राजमदनेशचाहुवाणलीलाधर ८५निपातनधरणीधर ८६सुखमा ८६  
१पाणिपीडन दश१०यज्ञानुष्ठानकुमाररमणेशो ८७हमनतद्रूच्यकव  
न्धशाम्बरसुतोदिता ८७।१ परिणयनचालुक्यकुमारपालजैनमतधार  
णाकृतशिवशीर्षोर्पणासन्धदृष्टतनुजभगवद्दास ८८मुखरमणेशाऽर्जुनप्र  
स्थानमेकोनषष्ठितमो ५९ मयूखः ॥५९॥ आदितएकोत्तरशततमः

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

अर्जुन नाग वसिष्ठसौं, कहि अगैं गिरि लाय ॥

नागतीर्थनिजनाम करि, प्रकट कह्यो मुद पाय ॥१॥

अगैं सुत विधवा द्विजां, जन्पौं गोतमी जाय ॥

भद्व सितं पंचमिदिवस, नागतिथि बिच न्हाय ॥२॥

आनन्दध्वज का वीततमानामक चारण को पूजन करके दान से बढ़ाना, चहुवा  
ण राजा दामोदर का सुगुणा से विवाह करना, काशीनाथ का भावती से  
विवाह करना, कुन्तल के राजा श्रीधर को मार कर काशीनाथ के पुत्र ली-  
लाधर का श्रीधर की सुता उदया से विवाह करना, कुमार धरनीधर का  
जन्म, कुन्तल देश के राजा मदसेन का चहुवाण लीलाधर को मारना,  
धरणीधर का सुखमा से विवाह करना, दश यज्ञ का अनुष्ठान करना, कुमार  
रमणेश का जन्म, उसका दुल्लह होकर राठोड़ सम्बर की पुत्री उदिता से  
विवाह करना, सोलंखी कुमारपाल का जैनमत धारण करना, महादेव के  
मस्तक भेद करने की प्रतिज्ञा करके भगवतदास पुत्र को देख कर रमणेश के  
आबू पर जाने का उनसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥५९॥ और आदि से एकसौ  
एक मयूख हुए ॥१०१॥

१ अर्जुन नामा सर्प ने नन्दी पर्वत को लाकर वसिष्ठ से कहकर नागतीर्थ अ-  
पने नामसे प्रकट किया ॥ १ ॥ वहां एक विधवा और बूढ़ी २ गोतमी नाम-  
क ब्राह्मणी ने ४ नागतीर्थ में आदवा ३ सुदि पंचमी के दिन स्नान करके



लगी मरन वह गोतमी, बिधवा गर्भ निहारि ॥

\*नभवानी कहि तीर्थ फल, दित्री तब सु निवारि ॥३॥

### पञ्चाटिका

मुनिवर वसिष्ठको कुंडर-जत्थ, करि श्राद्ध भूप किय-न्हान तत्थ  
अगँ जँहँ नारद मुनिहु न्हाय, सबसौं सु अधिक बरन्यो सुभाय  
देवी अरुंधती-जुत वसिष्ठ, पूजे नरेस तहँ धर्मनिष्ठ ॥

पुनि भद्रकर्ण-न्हद-भूप पत्त, करि न्हान श्राद्ध करि दान दत्त ॥५॥

तत्थहु पवित्र सिवलिङ्ग आहि, विधिसौं किय अर्चित प्रनमि ताहि

हुव भद्रकर्ण सिबगन जु अग, तानै सु तीर्थ विरच्यो सुमग

सिवकै असुरनकै भयउ जुद्ध, बढि तत्थ लरयो यह गन प्रबुद्ध

जहँ असुचि नाम दानव चलाय, गुह-बीरभद्र-मुखँ दिय भजाय

तहँ भद्रकर्ण मार्यो सु दुष्ट, बर मंगि कह्यो व्है संभु तुष्ट ॥

गन अक्खिय मै अर्बुद अगेस, प्रभुलिङ्ग सहित न्हद किय सुवेस

गिरिजा-जुत निवसँहु तहँ समत्थ, हर कहिय सदा मम वास तत्थ

जहँ माघ चउदसि-असित जाय, न्हावै सु रहै ममलोक आय

केदार तीर्थ-पुनि न्हाय आप, गंगा-सरस्वति-के मिलाप ॥

किय अर्चन-तर्पन-श्राद्ध-कर्म, भूदेवन अर्पिय भूमि भर्म ॥१०॥

रविवांसी भूप अजपाल अग, पूछ्यो वसिष्ठ सन कर्म मग ॥

किहिं पुण्यजोरममराज्य-आहि, महिषी-सुतर-आदिहुहुकममाहि

पुनि कहिय सूद्र हो अग राय, रानीहु सबराणी हो सभाय ॥

तुम दुव-रहि छुधित दुर्भिक्षकाल, भुव भ्रमत गये अर्बुद विहाल

पुत्र जना ॥ २ ॥ \* आकाश वाणी न ॥ ३ ॥ ÷ जहाँ पर × स्नान ॥ ४ ॥ १

एहुंचा २ दिया ॥ ५ ॥ ३ है ४ पूजित किया ५ अष्ट मार्ग से ॥ ६ ॥ ६ पंडित

७ आदि ॥ ८ ॥ < शिव ने प्रसन्न होकर कहा ९ अर्बुद नामा पर्वतराज पर

१० आके लिंग सहित एक दह (जलाशय) किय है ॥ ८ ॥ ११ पार्वती सहित

वहाँ १२ वास करो १३ माघ यदि चवदस के दिन जाकर ॥ ११ १४ ब्राह्म-

णों को १५ दिया १६ सुवर्ण ॥ १० ॥ किस पुण्य के जोर से मुझे यह राज्य

मिला १७ है १८ राणी पुत्र आदि सब मेरे हुकुम में हैं ॥ ११ ॥ वसिष्ठ ने

कहा कि हेराजा तू पहिले शूद्र था १९ भूखे-६० आबू पर गये ॥ १२ ॥

जैहँ कंजसरोवर लखि प्रवीन, तुम न्हानशर्पन२रू. पान३कीन ॥  
 विक्रय हित पंकज तोरि राज, आने तुम दंपति असन काज २३  
 जब बारिजात निवसथै विके न, भूखे तब सोये तुम धरेन ॥  
 निसमाँहि ईस केदार थान, जान्यो तुम जागर१वाद्य२गान३ ॥ १४ ॥  
 सिंवरति समय हो वह समथ, लै कंज गये तब तुमहु तथ ॥  
 कोउ कंज लग्यो मगमाँहि लैन, कहि तुमहि तीन३पल रजत देन २५  
 तिय कहिय लेहु पति अब न तारै, उपवास भयो सहजहि सुँढार ॥  
 सिव सीस कंज देहैं चढाय, उपवास एह नहि विफल जाय ॥ १६ ॥  
 सुहि मन्नि रु पूजे तब गिरीसँ, तिहिँ रति जगे दुव२हे महीस ॥  
 वह पुण्य पाय हुव भूप आय, तब तिय दसार्ण नृपजाँ सुकाय २७  
 अजपाल सु सुहि अर्बुदहु पतै, किन्नाँ पुनि सुँहि ब्रत भक्तिरत्न ॥  
 अभिसिक्त पुल सिर करि नृपाल, तजि राज्य वस्यो तँहँ सर्वकाल २८  
 ब्रत कृष्णचतुर्दसि १४माघमास, यह सद्धि लहत सिवलोक वास ॥  
 तँहँ चाहवान रमनेस ८७जाय, सब विधि उपेतँ सद्धयो सुभाय १९  
 अगँ जजाति पूछे पुलस्त्य, वरन्योँ तिन अर्बुद पुण्य पस्त्य ॥  
 गंगा१सरस्वति२संग रूप, केदार३तथ सुनि कहिय भूप ॥ २० ॥  
 केदार सुनत हिमैवान माँहि, ताँहि कडी गंगाहु आँहि ॥  
 त्योही तजि प्लक्षद्वीप थान, निकसी सरस्वती हे सुजान ॥ २१ ॥

१ कमलों का तालाब देख कर २ बेचने के लिये ३ कमल तोड़ कर तुम ४  
 स्त्री पुरुष ५ भोजन के लिये लाये ॥ १३ ॥ जब वे ६ कमल ७ ग्राम में नहीं  
 पिके तब ८ हे राजा तुन भूखे सो रहे ९ जागरण जाना ॥ १४ ॥ वह १०  
 शिवरात्रि का समय था ११ तीन पल चाँदी देकर वे कमल तुमसे कोई ले-  
 नेलगा ॥ १५ ॥ १२ अब चाँदी मत लो १३ सहज में ही श्रेष्ठ उपवास हो ग-  
 या है ॥ १६ ॥ १४ महादेव का पूजन किया १५ तेरी स्त्री सुन्दर शरीर वा-  
 ली दशार्ण देश के राजा की पुत्री हुई ॥ १७ ॥ १६ जाकर १७ वही शिवरात्रि  
 का व्रत किया १८ भक्ति में रत होकर १९ पुत्र के अभिषेक करके ॥ १८ ॥  
 २० सय विधि सहित ॥ १९ ॥ आगे गयानि राजा ने पुलस्त्य मुनि से पूछा  
 उन्होंने आबू को पुण्य का २० घर वर्णन किया ॥ २० ॥ २१ राजा ने कहा कि  
 केदार तो हिमालय पर्वत में है ॥ २१ ॥

गंगा तु पुण्वसोपर पड्ड, दूजीशुव पच्छिमसिंधु निड्ड ॥  
 केदार सहित ए सरित दोयं, अर्बुद किम निवसतं इक होया ॥२१॥  
 बोले पुलस्त्य इम समयपाय, ब्रह्मादि जुरे सब मेरु आय ॥  
 गंगा१प्रयाग२मुख तीर्थ सर्व, धरि देह गये महिमा अखर्व ॥२३॥  
 मघवां विरंचिसौं जोरि हत्थ, पूछे समस्त जुगधर्म सत्थ ॥

विधि कहियं जुगत्रय३पुण्य बास,

कलिमाँहिँ कह्यो सब तीर्थ नास ॥ २४ ॥

यह सुनत कंपि तीरथ असेस बुल्ले अगम्य कलिकै जु देस ॥  
 सो देहु अप्प हमको प्रसस्त, कलिमाँहि तहाँ रहिहैं समस्ता ॥२५॥  
 अर्बुद तब अखिय कंजजात, तँहँ सब स्वअंस करि रहहु ताता ॥  
 कलिको बल अर्बुदपर चलै न, वह करहु जाय सब तीर्थ अनै ॥२६॥  
 आश्रय सु पाय तीरथ असेस, तबसौंहि रहत अर्बुद नगेस ॥  
 गंगा१रु सरस्वती२इहिँ निदान, नहिँ द्वैरहिँ उहाँ सब तीर्थ थाना ॥२७॥  
 मंक्रणकनाम हुव बिप्र अगग, अर्बुद तप सद्यो जिहिँ उदग ॥  
 चुभिदर्भ इक१दिन कर प्रवेस, सौं कर सु कढ्यो नहि रुधिर लेस ॥२८॥  
 सो देखत अप्पहिँ जानि सिद्ध, नचचन लगो सु मुनि मोदबिद्ध ॥  
 तपके प्रभाव तस संग एस, अवनीहुँ लगी नचचन असेस ॥२९॥  
 पठये तब देवन सिव प्रसस्त, तिन भस्म निकास्यो खनि स्वहस्त ॥

गंगा तौ ? पूर्व समुद्र में पैठी और सरस्वती नदी पश्चिम समुद्र में नाश हुई. ३ ये दोनों नदियें शामिल होकर आबू पर कैसे निवास करती हैं ? ४ आदि सब तीर्थ ५ इन्द्र ने ६ ब्रह्मा से हाथ जोड़कर ७ सब युगों के धर्म पूछे ८ सम्पूर्ण तीर्थ धूजकर ९ जिस देश में कलियुग नहीं जासके तिस देश को हम बताओ वहाँ जाकर हम सब कलियुग में रहेंगे ? १० ब्रह्मा ने आबू को बताया कि वहाँ तुम सब ? अपने अपने अंशों से जाकर रहो ? ११ उसको सब तीर्थ अपना घर बनाओ ॥२६॥ १२ आबू पर्वतराज पर रहते हैं १३ इसकारण से गंगा और सरस्वती वहाँ पर हैं १४ ये दोनों ही नहीं किन्तु सभी तीर्थों का वहाँ स्थान है ॥२७॥ १५ उदग्र तप साधा उसके हाथ में एक दिन डाँभ चुभ गया १६ उस हाथ से लेश मात्र भी रुधिर नहीं निकला ॥२८॥ १७ उसके साथ सम्पूर्ण भूमि भी नचने लगी १८ देवताओं ने शिव को मंगल (शुभ) करने को

तिहि देखि भयो लज्जित सु विप्र, सिव जानि परचो तिन पयन छिप्र ३०  
सिव कहिय न नचहु इष्ट लेहु, मुनि कहिय ईस बर एह देहु ॥  
अर्बुदगै तीर्थ केदार आय, गंगासरस्वतीरसंग न्हाय ॥ ३१ ॥  
मख राजसूय १ हयमेध २ पुण्य, पावै सु मनुज गुन अमित पुण्य ॥  
संकर तथास्तु कहि भूप राम, करि तीर्थ महाफल तब जगाम ॥ ३२ ॥  
तहँ न्हाय भूप विधिजुत प्रवीन, पुनि कोटीस्वरसिव दरस कीन ॥  
द्विज कोटि १००००००० अगग दक्षिण निकेत ॥

आये अचलेस्वर दरस हेत ॥ ३३ ॥

मैं पुँव लखों लहि सिव प्रसाद, इभ सबन परस्पर हुव विवाद ॥  
प्रत्येक भक्ति लाखि तब विसेस, सबके समक्ष प्रकटे महेस ॥ ३४ ॥  
बर दैन लगे जब मुनिन रुद्र, उन कहिय सुनहु करुना समुद्र ॥  
तब कोटि रूप यहँ एकलिंग, प्रकटहु मित्रीकृत एकपिंग ॥ ३५ ॥  
जाके लखैहि मनुजन सु पुण्य, वहै तब दरसनफल कोटि पुण्य ॥  
सिव कहि तथास्तु वनि लिंगरूप, स्फुट हुँव कोटीस्वरनाम भूप ३६  
तिन्ह पुजि रूप तीर्थ ६ सु जगाम, सौभाग्य रूप देत जु सुधाम ॥  
अगँ इक सूद्री रूपहीन, तरुफल निमित्त तहँ गमन कीन ॥ ३७ ॥  
सो भ्रमत माघ सित तीज ३ काल, गिरि निर्भर माँहि गिरी विहाल  
तहँ गिरतमौत्र हुव दिव्य देह, सुरराज लखी जहँ आय एह ॥ ३८ ॥

भेजे उन्होंने तप करताहुआ वह ब्राह्मण भस्मी में दूढ़ गया था जिसको  
अपने हाथ से खोदकर निकाला १ शीघ्र ॥ ३० ॥ २ तुझको जो वांछित  
होवे सो ले ३ आवू पर गये हुए ॥ ३१ ॥ राजसूय ४ यज्ञ और ५ अश्वमेध  
का पुण्य ६ वह मनुष्य पावे ७ हे रावराजा रामसिंह ! शिव उसको ८  
ऐसा ही होवे यह कह कर ९ गये ॥ ३३ ॥ १० दक्षिण दिशा के स्थान में  
॥ ३३ ॥ उन ब्राह्मणों में ११ मैं पहिले देखूँ मैं पहिले देखूँ यह विवाद पड़ा  
उन सबकी १२ एक एक की भक्ति देखकर सबके १३ सामने महादेव प्रकट  
हुए ॥ ३४ ॥ १४ हे कुवेर से १५ मित्रता करनेवाले आपके करोड़ स्वरूप  
इस एक ही लिंग में प्रकट करो ॥ ३५ ॥ १६ स्पष्ट ॥ ३६ ॥ १७ गया १८ वृत्तों के  
फल लेने को वहाँ गई ॥ ३७ ॥ १९ माघ सुदि तीज को बिबहल होकर पर्वत  
के २० झरने में गिर गई २१ वहाँ गिरते ही दिव्य शरीरवाली होगई जिसको

सब हेतु पुच्छि दै अंगसंगै, वर लेहु कह्यो जो मन उमंग ॥  
 तिहिं कहियइहाँ इहिं दिन जु न्हाय, सुरप्रिय सुहोय लहि दिव्यकाय ॥ ३६ ॥  
 लै मोहि चलहु वर अपरै एस, लैगो तथास्तु कहि तिहिं सुरेस ॥  
 अर्बुदसौं इम वपु १ रूप २ श्रेय, अच्छरि भई सु वपु नामधेय ॥ ४० ॥  
 अर्थावधि तिहिं दिन न्हाय तत्थ, सो सौं भ्रात सुररमनि सत्थ ॥  
 तैं रूपतीर्थ ढिग पुव्व देस, अति दिग्घ उपलभ्य है गनेस ॥ ४१ ॥  
 इक तिलक रुक्म १ गजमुख समीप, इहिं तल अथाह इक विल १ महीप  
 जब स्वर्ग गयो बलि असुरराय, सुर १ संक्र २ दुरे जित तित पलाय ॥ ४२ ॥  
 तब अदिति जाय तिहिं विवर मज्झ, तप करत भई हरिहित असज्ज  
 हरि तुष्ट वसे तस गर्भ आय, लिय जन्म माघसित तीज ३ पाय ॥ ४३ ॥  
 तिहिं कारन ईतर न तैं विसेस, हुव रूपतीर्थ ६ अति पुण्य देस ॥  
 सित स्वच्छ अदिति तप विवर माँहि, इक संख रूप वर उपल १ आँहि ॥ ४४ ॥  
 जल जास पान करि तिलक जुत, बँझाहु वृद्ध पावत सुपुत ॥  
 यह रूपतीर्थ ६ महिमा अमानै, रमनेस करिय तैं न्हाय दान ॥ ४५ ॥  
 पुनि अंबरीष आश्रम ७ पधारि, किय विधि समस्त तैं पुण्यकारि  
 जैं अंबरीष इक विष्णु तैर्ष, अनसनंत पसदिय अयुत १०००० वर्ष ४६  
 वैं इंद्र लगे वर दैन विष्णु, सो नृप लयो न तिन्ह जानि जिण्ड ॥  
 खिजि इंद तबहि लिय वज्र हत्थ, तदपि सु डर्यो न हरिभक्त तत्थ ४७

---

इन्द्र ने आकर देखा ॥ ३८ ॥ १ सब कारण पूछकर उससे आलिङ्गन करके कहा  
 २ देवताओं को प्रिय ॥ ३९ ॥ ३ दूसरा वह वपु ४ नामक अप्सरा हुई ॥ ४० ॥ ५  
 अब तक ६ देवताओं की स्त्रियों के साथ संध्या को साथ आती है ७  
 पत्थर का बना हुआ गणेश है ॥ ४१ ॥ ८ छिन्नरुह (वृक्ष विशेष) ९ इन्द्र  
 १० भागकर उस विवर में छिपे थे ॥ ४२ ॥ ११ असह १२ विष्णु ने प्रसन्न  
 होकर अदिति के गर्भ में वास किया और माघ सुदि तीज को जन्म लि-  
 या ॥ ४३ ॥ इस कारण से वह १३ अन्य तीर्थों से विशेष है अदिति ने जिस  
 १४ विवर में तप किया था वहाँ स्वच्छ और १५ स्वेत (पत्थर का शीत) है  
 ॥ ४४ ॥ १६ आँख और बूढ़ी स्त्री भी पुत्र पाती है १७ अमाप ॥ ४५ ॥ विष्णु  
 के दर्शनों की १८ इच्छावाले ने २० निराहार ॥ ४६ ॥ विष्णु २१ इन्द्र का स्वरूप  
 करके पर देने लगे २२ उनको इन्द्र जानकर ॥ ४७ ॥

निजरूप गह्वो जब श्रीनिवास, ऐरावत नागहु गरुड आस ॥  
 बंदनकरि चरनन नत बिसेस, तब सांख्य१ जोग२ मंगे नरेस ॥४८॥  
 सबकाजक्रियाजोग३हुतृतीय३, पुनिहरिनिवास४आश्रमस्वकीय ॥  
 जहँ विष्णु बसे दै इष्ट च्यारि४, तहँ भूप सबिधिपूजे मुरारि ॥४९॥  
 सिद्धेश्वर संकर८ नृप बहोरि, जाय रु किय अर्चित पानि जोरि॥  
 अगँ विश्वावसुनाम सिद्ध, सिव अर्थ घोरतप किय प्रसिद्ध ॥५०॥  
 व्है तुष्ट कहिय हर लेहु इष्ट, बुल्लयो वह मै किय लिंग सिष्ट ॥  
 वांछित बिचारि नर छुवहिं याहि, तुम व्है प्रसन्न सुहि देहु ताहि५१  
 अंगीकृत किय तब अंधकारि, पुजिय सु लिंग नृप तहँ पधारि ॥  
 सुक्रेश्वर९ अर्चन बहुरि कीन, जहँ मृतसंजीवनि सुक्र लीन ॥५२॥  
 रन अग्ग सुरासुर हुव दुरुहँ, जहँ सुरन हनँ बहु असुर जूहँ ॥  
 उसनँ तब अर्बुदअद्रि आय, सिवलिंग तहाँ सुंदर बनाय ॥५३॥  
 तिहिं नित्य पुजि किय तप दुरंत, आये सिव हायनँ सहँस१०००अंत॥  
 परि पयन सुक्र किय अरज एहु, संजीवनि विद्या दुलभ देहु ॥५४॥  
 मम रचित लिंग पूजै सु एस, संकल्प सिद्ध व्है तस असेसँ ॥  
 अरु कुंड यहै सुचि सलिलवानँ, नर व्है अपाप करि अत्र न्हाय५५  
 दै सोहि ईस दिय बधुं छिपाय, नृप किय तहँ अर्चन१न्हाय२जाय  
 पुनिगयमणिकर्णिक१०तीर्थतत्थ, मुनिबालखिल्लकृतकुंडजत्थ५६  
 अगँ पुलिंद तिय इक्क आस, मणिकर्णिकाहि अभिधान जास ॥

१विष्णु ने जब अपना रूपधारण किया और ऐरावत भी गरुड रहोगया तब २  
 ज्ञाना॥४८॥कर्मकांड में वृत्ति का लगा रहना और विष्णु के घर में अपना निवास  
 करना ये चार वर मांगे सो देकर विष्णु ने भी वहीं (आबू पर)४ वास कि-  
 या ॥ ४९ ॥ ५ पूजन किया हाथ जोड़कर ॥ ५० ॥ ६ प्रसन्न ७ श्रेष्ठ ॥५१॥  
 ८ महादेव ने ८ स्वीकार किया १० जहाँ पर शुकाचार्य ने मृतसंजीवनी  
 विद्या पाई थी ॥ २५ ॥ ११ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १२ असुरों का  
 समूह १३ शुकाचार्य १४ आबू पर्वत पर आकर ॥५३॥ १५ दूर है अंत जिसका  
 ऐसा व्रत किया १६ हजार वर्ष पीछे ॥ ५४ ॥ १७ सब १८ पवित्र १९ जल-  
 वाले में स्नान करके ॥ ५५ ॥ २० अन्तर्धान होगये २१ बालखिल्य नामक  
 मुनिगों का कियाहुआ ॥ ५६ ॥ २२ जिसका नाम मणिकर्णिका था

कुटिलाविरूपआकृतिकराल, वनभ्रमततृसितजलहितविहाल ॥५७॥  
 मद्यान्ह समयरविग्रहन होत, तिहिं कुंड पैठि दिय सलिलगोता ॥  
 ततकाल भई अतिदिव्यदेह, आई जलबाहिर निकसिएह ॥५८॥  
 तहँवालखिल्ल्यछत्रयुत६००००मुनीस, आराधततपकरिलोर्कईस ॥  
 तसँ पतिहु तदनु वालक उपेत, आयो पुलिंद वह बिदल चेत ५९  
 पुच्छी पुलिंद बरवपुं भई सु, मम तिय इत आई कित गर्ई सु ॥  
 सो सुनत कह्यो इहिं कुंड न्हाय, मैं नाथ लयो यह रूप पाय ॥६०॥  
 जल ससुत धस्यो यह सुनत जाव, रवि तावै तज्यो तनग्रस्तभाव ॥  
 सुंदर भयो न ताको सरीर, मरिगो पुलिंद तव व्है अधीर ॥६१॥  
 मणिकर्णिका सुलखि चिति<sup>१</sup> बनाय, जरिवेहि लगी तस संग जाय ॥  
 तव मुनिन यहै बरजी निहोरि, सु सती रही न पतिसंग छोरि ॥६२॥  
 तव मुनिन तास करि दिव्यकाय, दिनों पुलिंद तपबल जियाय ॥  
 किन्नों तस पुतहु दिव्यदेह, अक्रिय पुलिंद प्रति वचन ॥६३॥  
 तू अगग विस्वजित नाम भूप, रमनी<sup>२</sup> सुत<sup>३</sup> जुत हो दिव्यरूप ॥  
 बौसर इक<sup>४</sup> तीन<sup>५</sup> हि चढि विमान, दिवै जानलगे तुम देहवान ॥६४॥  
 मुनि संख मिले मगविच विरक्त, तिन्ह लंघि यान लव अगगपत ॥  
 परि अबहि नारि सुत सहित पाप, सठ व्याध होहु दिय संख साप ॥६५॥  
 तैं कहिय कहहु उद्धार काल, मुनि कहिय भ्रमत वनवन विहाल ॥  
 मरिहै तू अर्बुद अद्रि जाय, पुनि वालखिल्ल्य दैहैं जियाय ॥६६॥

१ जल में गोता लगाया ॥ ५८ ॥ २ विष्णु भगवान् की आराधना करने हैं

३ मणिकर्णिका का पति भी ४ जिस पीछे ५ वालक सहित आया ॥ ५९ ॥

६ अष्ट शरीरवाली होगई थी जिससे पूछा ॥ ६० ॥ ७ पुत्र सहित ८ जय यह

भीतर बुझा ९ तब सूर्यग्रहण मिटचुका था इसकारण से पुलिन्द का शरीर

सुन्दर नहीं हुआ ॥ ६१ ॥ १० गिरा बनाकर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ मुनियों ने पु-

लिन्द से कहा कि ११ स्त्री और पुत्र सहित दिव्य रूपवाले थे १२ एक दिन १३

स्वर्ग जाने लगे १४ देह सहित [स्थूल शरीर से स्वर्ग में जाना दुर्लभ मा-

नाजाता है] ॥ ६४ ॥ १५ विरक्त १६ शंख नामक मुनि मार्ग में मिले उन-

को लोपकर तू आगे १७ गया ॥ ६५ ॥ ६६ ॥



जब लेहु साप उधार जानि, वरनी सु बालखिल्लयन बखानि ॥  
 वर बैनलगे मणिकर्णिकाहिं, बुझी सती सु यह कुंड आहिं ६७  
 सो रूपांत होय मम नाब धारि, वर मुनिन छोहि दिन्नों विचारि  
 आयो विमान इहिं बीच तत्थ, लैगो पुलिंद<sup>१</sup> सुत<sup>२</sup> नारि<sup>३</sup> सत्थ<sup>४</sup> ६८  
 विख्यात तीर्थ मणिकर्णिका<sup>१०</sup> सु<sup>११</sup> कुरुक्षेत्र<sup>१२</sup> हितु फल त्रि<sup>१३</sup> गुन तासु ॥  
 पुनि पंगुतीर्थ<sup>११</sup> रमनेस पत्त, करि पान<sup>१</sup> न्दान<sup>२</sup> बहुदान<sup>३</sup> तत्त<sup>४</sup> ६९  
 हुव इक द्विज भार्गव पंगु दीन, बंधुन तज्यो सु कहि सत्त्वहीन ॥  
 तब जाय विप्र अर्बुद अगेस<sup>१</sup>, सिवलिंग थप्पि किय तप विसेस<sup>७०</sup>  
 नित्यहि सिव पूजन निरंत एह, आहार लेत छुटे<sup>६</sup> अनेह ॥  
 सिव हुव प्रसन्न गिरिजा समेत, अक्खिय द्विज मंगहु हित उपेत<sup>७१</sup>  
 द्विज कहिय रहो पैह<sup>१</sup> हेतु<sup>२</sup> पाय<sup>२</sup>, मम नाम तीर्थ यह प्रकट जाय  
 स्वीकृत किय संकर विप्र बानि, रमनेस पुण्य किय तत्थ आनि<sup>७२</sup>  
 पुनि नर्कतीर्थ<sup>१२</sup> पहुँच्यो धरेस<sup>१</sup>, अगैं जहँ चित्रांगद नरेस ॥  
 अति मलिन दुष्ट खेलत सिकार, हेरयो इक निर्भर<sup>१</sup> विसद बार<sup>७३</sup>  
 प्रविश्यो सु पिपासा विकल तत्थ, ततकाल नर्क पकरयो समत्थ  
 जमदूत गये लौ मरत जाहि, जमराज कह्यो दुत तजहु पाहि ७४  
 मैं तप किय अर्बुद दोनि माहिं, पाको तिहिं निर्भर मरन आहिं ॥  
 मैं नरकनाथ वह तीर्थ कीन, इस कहि छुराय जम ताहि दीन ७५  
 सो गो विमानचढि सुरनथान, चहुवान तत्थ किय न्दान<sup>१</sup> दान<sup>२</sup> ॥  
 पहुँच्यो वराह न्दव<sup>१</sup> ३ वहुरि राय, जहँ नर कदापि दुर्गति न जाय ७६ ॥

१ यह कुंड है सो १६ अमेरे नाम से २ प्रसिद्ध होवे ६८ ३ कुरुक्षेत्र से जिसका तिगु  
 ना फल है ११ ४ पांगला [चरणों से हीन] ५ पराक्रम हीन कहकर ६ आत्रु पर्वतरा  
 ज पर ॥ ७० ॥ ७ नित्युक ८ समय [यहां लक्षणा से छठे दिन जानना चाहिये] ९ पा-  
 र्वती सहित १० हित सहित ॥ ७१ ॥ ११ कारण पाकर १२ स्वीकार ॥ ७२ ॥  
 १३ राजा रमनेस चहुवाण १४ भ्रमना १५ स्वच्छ जल का ॥ ७३ ॥ १६ प्या-  
 स से व्याकुल हुआ १७ मगर ने उसको तुरत पकड़ लिया १८ शीघ्र छोड़दे  
 ॥ ७४ ॥ आत्रु की १९ खाद्री (दरार) में मैंने तप किया था उसी भ्रमने में  
 इसका मरण हुआ है ॥ ७५ ॥ २० वहां पर मनुष्य कभी दुर्गति को नहीं



आनी बराह अवनी उठाय,तिहिं थपि कहयो रहि अचल काय॥  
 भूँ कहिय रहहु मम पिछि नाहँ, तिय नेह तबहि बुल्ले बराह॥७७॥  
 अर्बुदगिरि है इक सर सुढार, बसिहौं तहाँहि तव कथितकार॥  
 इम कहि रु बसे अर्बुद बराह,अति पुण्य भयो वह न्हद अथाह॥७८॥  
 तँहँ सद्धि भूप बेदोक्त राह, पहुँच्यो प्रभास तीर्थ१४हु सचाह॥  
 सहि दच्छ प्रजापति दत्त साप,संसि जँहँ प्रभा लही सिव प्रताप॥७९॥  
 अगँ बनि दुल्लह रजनिईस, व्याही दच्छसुता सत्तबीस२७॥  
 ससितँदपि रोहिनीसौं प्रसन्न,पितु सरन सोति तब खिल२६प्रपन्न॥८०॥  
 सुनि दच्छ कुपित दिय घोर साप, तू चंद्र लेहु खयरोग ताप॥  
 तब विकल चंद्र लाहि घोर खैनँ,सद्धिय तप अर्बुदअद्रि अँनँ॥८१॥  
 तँहँ जाहि अयुत१००००हौंयन बिताय, ईसांन तुष्ट दिय दरस आय॥  
 किय इंदु अरज वर दैन काल, जगदीस व्याधि मेटहु जटालँ॥८२॥  
 बलि तीर्थ यहै मम तप बिपाप, न्हद ख्यात होहु अघहर दुरापँ॥  
 सिव कहिय तोहि खय दिय जुदँछ, पच्छँमुघटि जावहु बढहु पच्छ॥८३॥  
 तव अंग प्रभाँ हुव अत्र तात, यह होहु प्रभासहि खेत्र ख्यात॥  
 लाहि चंद्रग्रहन१पुनि चंद्रवार२, यह श्राद्ध गयाफल दैन हारा॥८४॥  
 सिव गुप्त भये करि इम निदेस, तँहँ जाय कृत्य सब किय नरेस॥  
 पुंड्रोदक१पतीरथ बहुरि पत्त, किय पान१न्धान२बहुदान३तत्त॥८५॥

जाते ॥ ७६॥ २भूमि को ३ भूमि ने बराह से कहा कि४ हे पति मेरी पीठ पर  
 रहो ॥ ७७ ॥ ५ सुन्दर तालाव ६ तेरा कहा करनेवाला ॥ ७८ ॥ दत्त प्रजा-  
 पति का ७ दियाहुआ आप सहन करके ८ चन्द्रमा ने पीछी अपनी ९ क्रान्ति शि-  
 व के प्रताप से ली ॥ ७९ ॥ १० चन्द्रमा ने दुल्लह बनकर दत्त की सत्ताईस  
 पुत्रियां विवाही थीं ११ तोभी चन्द्रमा रोहिणी से ही प्रसन्न था तब बाकी  
 की छब्बीस ही अपने पिता के शरण १२ आईं ॥ ८० ॥ १३ क्षयरोग लेकर  
 आबू पर्वत के १४ स्थान पर तप साधा ॥ ८१ ॥ दश हजार १५ वर्ष  
 धिताकर शिव ने १६ प्रसन्न होकर १८ हे जटाधारी जगदीश यह १७ रोग  
 मेरी ॥ ८२ ॥ १९ पुनि २० दुर्लभ २१ दत्त ने जो क्षयरोग दिया है वह एक २२  
 पक्ष में घट जावेगा और एक पक्ष में बढेगा ॥ ८३ ॥ तेरे शरीर की २३ क्रान्ति  
 यहां पर हुई है- ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

पुंड्रोदक द्विज हुव पूर्वकाल, आई न ताहि विद्या नृपाल ॥  
 गुरु जाहि पढावत हारिहारि, बालिस कहि दिन्नो हुत बिडारि ८६  
 अर्बुदगिरि दुर्मन तवहि आय, जरिवे लग्यो सु पावक जराय ॥  
 सो आय गिरा कह्यो सनेह, दीनों बर पंडित होहु एह ॥ ८७ ॥  
 तीर्थहु यह धारहु नाम तोर, जग बिदित मिटावहु पापजोर ॥  
 सब कृत्य सद्धि रमनेस तत्थ, पहुँच्यो श्रीमाता १६ देवि जत्थ ॥ ८८ ॥  
 कृतजुगमैं बाष्कलि असुरराय, दुर्जेय भयो सिव बर सहाय ॥  
 निर्जर समस्त दीनैं निकारि, आये ते अर्बुद अभय धारि ॥ ८९ ॥  
 खनि गुप्त विवरं तप तत्र कीन, सब हुव श्रीमाता भक्ति लीन ॥  
 वह विवर कहावत देवखात, प्रभु करत महापापन निपात ॥ ९० ॥  
 तप सहँस १००० अर्बुद किय सुरन तत्थ, श्रीमाता प्रकटी तब समत्थ  
 पठवाय दूत सुनि सुरन पीर, बुल्ल्यो तहँ बाष्कलि लरन बीर ९१  
 श्रीमाता लखतहि जड भयो सु, दल इतर जित्ति देवन लयो सु ॥  
 सिव बर प्रभाव न हन्यो सु दुष्ट, देवी जड कीनों पापपुष्ट ॥ ९२ ॥  
 पुनि सुरन अरज किय यह सँदप्प, न डिगैं इम अर्बुद रहहु अप्प ॥  
 जगदंब कह्यो मोछत डिगैं न, तब सुरन जाय किय स्वस्व अँन ९३  
 इत अब अघवाँन १० पुण्यवान २, जन सर्व लगे अर्बुदहि जान ॥  
 श्रीमाता दरसन प्रकट पाय, सब बसनलगे निर्जरनिकाय ॥ ९४ ॥

१मूर्ख कहकर २शीघ्र ३निकाल दिया ४अग्नि जलाकर ५सरस्वती ने आकर उस  
 को अग्नि से निकाला ॥ रमनेस चहुवाण ने वहाँ सब कार्य करके सत्ययुग में  
 ६बाष्कलि नामक असुरों का राजा ७शिव के वर के प्रताप से किसीसे नहीं  
 जीतने में आये ऐसा हुआ जिसने स्वर्ग से सब देवताओं को निकाल दिये  
 थे ९ आबू पर आये ॥ ८६ ॥ गुप्त १० गुफा खोदकर ११ बड़े पापों का नाश  
 करता है ॥ ९० ॥ देवताओं ने तहाँ हजार १२ वर्ष तप किया १३  
 देवताओं की पीड़ा सुनकर दूत भेजकर १४बीर बाष्कलि दैत्य को लड़ने को  
 बुलाया ॥ ९१ ॥ १५ दूसरी सेना को देवताओं ने जीत ली ॥ ९२ ॥ १६घमंड  
 सहित होकर यहाँ से नहीं डिग सके इस प्रकार आप आबू पर रहो १७ देव-  
 ताओं ने अपने घर पीछे बनाये ॥ ९३ ॥ १८ पापी और पुण्यवान सभी आ-  
 बू पर जाने लगे १९ देवताओं का समुदाय बसने लगा ॥ ९४ ॥

मिटितीर्थन१नरकन२केर मग्ग, सुर इष्टं थके मख सुख समग्ग॥  
 अमरनं तब अर्बुद बहुरि आय, देवी प्रति बिन्नति किय हिताय ॥ ९५ ॥  
 लखि तोहि सबहि सुरलोक जात, अब उचित इहाँ रहियो न मात ॥  
 असो उपाय करि चलहु आप, जिम डिगसकै न बाष्कलि सपाप  
 सुनि तत्थ पादुकां थप्पि स्वीय, जड रक्खि तिमहि बाष्कलि बलीय  
 देवी प्रयानकिय स्वीय लोक, किय कृत्य भूपं तत्थहु विसोक ॥ ९७ ॥  
 पुनि सुक्क तीर्थ १७ चहुवान जाय, किय न्हान दान हिय भक्ति लाय ॥  
 अगँ इक समिल रजकं दच्छं, लायो नृप वस्त्रन करन स्वच्छ ॥ ९८ ॥  
 इक सँकुनि गयो लै तिन्ह उठाय, डारे सब नीलीकुंडं जाय ॥  
 रजकहु लागि सँत्वर पिठ्ठि तास, नीलीगत देखे मलिन बाँस ॥ ९९ ॥  
 तिन्ह लै रु आय भरि खँरन भार, सँकुटुंब सु भज्जन भो तयार ॥  
 इक कोर सुताँ तहँ कहिय आय, क्यों भजहु सुनहु इनको उपाय १००  
 ममभ्रात १ मै २ रु मम जनक ३ मात ४, देखहु तुम बपु करि हैं वदार्त ॥  
 अर्बुद इक पल्वल जल उपेतं, सब वस्तु होत जिहिँ संग स्वेत १०१  
 धावकँ सुनि तिहिँ जल वस्त्र धोय, हुँलस्यो करि स्वच्छ सु अभय होय  
 नृप अग्ग निवेदे कहि निदान, प्रत्यक्ष जाय नृप लिय प्रमान १०२ ॥  
 दै सुतहिँ राज्य तप सद्धि तत्थ, सँकुटुंब गयो दिवँ वह समत्थ ॥

इससे तीर्थों के और नरकों के मार्ग मिटगये और जब देवताओं का प्रिय यज्ञ का सुख था सो मिटने लगा तब देवताओं ने आकर इहित के अर्थ विनती की अपनी ४ पावड़ियों स्थापन करके बलवान् बाष्कलि को जड़ रखकर देवी ने अपने लोक में गमन किया वहाँ पर ६ राजा रमनेस चहुवाण ने कृत्य किया ॥ ९७ ॥ ७ चतुर ८ घोबी हुआ सो ॥ ९८ ॥ एक ९ पत्नी उन वस्त्रों को ले गया सबको १० नील के कुंड में जाकर डाला दिये ११ घोबी ने भी १२ शीघ्र उस पत्नी के पीछे लगकर नील में गये हुए १३ वस्त्रों को मलीन देखे ॥ ९९ ॥ १४ गधों पर भरकर १५ भागने को तैयार हुआ १६ एक घोवर की पुत्री ने कहा ॥ १०० ॥ १७ पिता १८ उज्ज्वल शरीरवाले हैं १९ तालाव २० जल सहित है ॥ १०१ ॥ २१ घोबी ने सुनकर २२ हर्षयुक्त हुआ २३ वस्त्र उज्ज्वल होने का कारण कहकर वस्त्र राजा के भेट किये और राजा ने भी जाकर प्रत्यक्ष प्रमाण लिया ॥ १०२ ॥ २४ स्वर्ग में गया ॥ १०३ ॥

चहुवाणवंशे अर्धदमाहात्म्य] तृतीयराशि—षष्ठिमयूख (१०५३)

तहँ न्हाय श्राद्ध करि नृप प्रवीन, कात्पायनि देवी १८ दरस कीन १०३  
जहँ सुंभ पराजित सुरन अगग, दिन्नौ वर दुर्गाहित उदंग ॥  
हनि असुर गुफा विच किन्न बास, आराधन किय रमनेस तास १०४  
तदनंतर कपिला तीर्थ १९ जाय, सद्दी नरेस सब विधि सुभाय ॥  
अगगै हुव सुप्रभनाम भूप, अविरत मृगयारत व्याध रूप ॥ १०५ ॥  
वाकै मन इतर न भोग इष्ट, दइता इक हिंसा लहि कुदिष्ट ॥  
पापी प्रचंड धनु बान धार, सो कबहु गयो अर्धद सिकार ॥ १०६ ॥  
निजसिसुहि पिवावत पय नरेस, देखी इक एनी साँनुदेस ॥  
करिताहि बिह खल पल्लै कज, सिसुपर बहोरि किय बानसज १०७  
परि भुम्भि मृगी वह तजत प्रान, बुल्ली लखि सिसुपर जुरत बान ॥  
छत्ताधेनू तू सिर धरत छत्र, यह कोन धर्म सिसु हनन अत्र ॥ १०८ ॥  
अर्भकै तन खात न पख अधीन, है अवहि मरयो यह मो बिहीन ॥  
तकि दीनहि मारत दुष्ट तोहु, हत्यामय निर्दय व्याघ्र होहु ॥ १०९ ॥  
यह सुनत परयो तस पयन आय, बुल्लयो सु देहु अवधि हु बताय ॥  
वह बुल्ली कपिली धेनु अथ, मिलिहैं तबवैहैं नृप समथ ॥ ११० ॥  
एनी सु गई मरि अखि एह, हुत व्याघ्र भयो नृप तजि स्वदेह ॥  
खल गो अनीकै अपनौहि खाय, अवसेसैं बचे निज दंगै आय १११  
सो रहत पसुन खावत सदाहि, इकदिन मिली सु कपिलाहि याहि

१. शुंभासुर से हारे हुए देवताओं ने दुर्गा को २ उदग्र वर दिया था ॥ १०४ ॥ ३ जिस पीछे ४ निरन्तर ५ शिकार में रत ॥ १०५ ॥ उसके मन में ६ दूसरा को ई भोग ७ प्रिय नहीं था ८ खोटे भाग्य से एक हिंसा ही ९ प्रिय थी ॥ १०६ ॥ १० उस राजा ने ११ पर्वत के शिखर पर बचे को दूध पिलाती हुई एक १२ हरिणी को देखी १३ मांस के लिये उसको बाण से बेधकर उसके १४ बचे पर बाण सज्जित किया ॥ १०७ ॥ १५ हे अधम क्षत्रिय ॥ १०८ ॥ १६ यह वच्चा तूण नहीं खाता केवल दूध ही पीता है वह मेरे बिना अब भी मरा हुआ ही है ॥ १०९ ॥ १७ साप छूटने की अवधि बता १८ यहाँ पर कपिला नामक गौ मिलेगी तब तू समर्थ राजा होवेगा ॥ ११० ॥ वह १९ हरिणी यह कहकर मर गई २० वह दुष्ट अपनी ही सेना को खा गया २१ बाकी बचे जो २२ पुर में आये ॥ १११ ॥

द्वीपीहुलखत करि दुसह गज्ज, हत्थल प्रसारिहुव हनन सज्ज ११२  
 कटकट बजाय दंतन कराल, फुल्लाय सटा लिय उद्ध फाल ॥  
 लांगूल छत्रकरि सिर निसंक, तंडयो प्रसारि नख बज्रटंक ११३  
 तहँ कहिय धेनु मम बाल बच्छ, दूर्बादि प्रास परिचय अदच्छ ॥  
 पय ताहि पिवावन सिक्ख देहु, अँहौं पुनि जानहु सत्य एहु ११४  
 मन्नै न व्याघ्र गिनि विपति बैन, लग्गी तब सुरभी सपथ लैन ॥  
 प्रतिभय द्विजहत्या आदि पाप, ते मोहि अनागम देहु ताप ११५  
 सुनि सपथ बग्घ दिय सिक्ख ताहि, व्रज निज गई सु संधा निवाहि  
 तरुँक धपाय तँहँ निठ्ठि रक्खि, आत्मीय सखिन तस त्रान अक्खि ११६  
 रोकीहु साधुं तिनतँ रुकी न, आई सु बग्घपहँ पन अधीन ॥  
 द्वीपीहुँ देखि आनी दयाहि, अक्खिय तू भगिनी धन्य आहि ११७  
 व्रत अत निवाहि आई बहोरि, छलि मोहि गयँ देतो न छोरि ॥  
 अब जाहु बहिनि निर्भय निक्काय, पोखहु जामेयहिँ छीर पाय ११८  
 यह कहत बग्घ धरि दिव्य अंग, सो भो नरेस कँपिला प्रसंग ॥  
 सब भूतँ कहि रुसत्यहिँ सिराहि, तव को अभीष्टँ नृप कहिय ताहि ११९

वह व्याघ्र मारने को तैयार हुआ. जब गर्दन ऊपर के केशों को फुलाकर ऊपर उड़ा और पूँछ का अपने मस्तक पर छत्र करके वज्रटंक के समान नखों को फैलाकर गर्जा ॥ ११३ ॥ तब गऊ ने कहा कि मेरा बछड़ा दूध आदि घास खाने के अभ्यास में चतुर नहीं है जिसको दूध पिलाने की सीख दे मैं पीछी आजाऊँगी यह सत्य जानो ॥ ११४ ॥ उस धनु के विपत्ति के वचन (विपत्ति में झूठ बोला ही करते हैं) जानकर व्याघ्र ने नहीं माने तब वह गऊ सोगन करने लगी कि मैं पीछी नहीं आऊँ तो ब्रह्महत्या आदि का मुझे भय होवे ॥ ११५ ॥ व्याघ्र ने उसको सीख दी. अपनी गो शाला में प्रतिज्ञा निवाह कर गई १ बछे को २ अपनी सखियों को उस बछड़े की ३ रक्षा करने को कहकर ॥ ११६ ॥ वह ४ उत्तम कुल में उत्पन्न रोकीहुई भी नहीं रुकी ५ व्याघ्र को भी देखकर दया आ गई और कहा कि हे बहिनि तू धन्य है ॥ ११७ ॥ व्रत को ६ सत्य निवाह कर ७ अपने घर जा और ८ भाणेश को ९ दूध पाकर पोख ॥ ११८ ॥ १० कँपिला गऊ के प्रसंग से ११ धीता हुआ वृत्तान्त कहकर उस गो के सत्य की प्रशंसा करके कहा कि तुझे क्या १२ वांछित है सो कह ॥ ११९ ॥

बहुधाश्वशेअर्बुदमाहात्म्य] तृतीयराशि—षष्टिमयूख (१०५५)

जंपो वह जलबिनु प्रान जाय, आनहु नरेस जिहिं तिहिं उपाय॥  
तब भूप भुम्भितल मारि तीर, निर्मल तिहिं पायो कट्टि नीर॥२०॥  
अखिय तहैं बपु धरि धर्म आय, सुरभी बर मंगहु जो सुहाय ॥  
बुल्लो सु तीर्थ यह बानबोरि, अघहोरि होहु ममनाम धारि ॥२१॥  
धर्म सु बर दिनों हित निधान, बलि तहैं अनेक आये विमान ॥  
सुप्रभ१नरेस सुरभी२समेत, पुनि गोपि१गोप२गोकुल३उपेत१२२॥  
तिनमाहिं बैठि बनि दिव्य बेस, अच्युतपद पहुँचे ते असेस॥  
तबतैं सुभ कपिलातीर्थ१६तत्थ, सबतीर्थनको प्रतिभटसमत्य१२३॥  
तहैंकरि नृपश्राद्ध१रुन्धान२दान३, पुनि अग्नितीर्थ२०बिरचियप्रयान॥  
कुक्कुरहुतैं जो रहि अपकास, अमरनैं जहैं लखो श्राद्धयास ॥२४॥  
अतिसय अघोर पहिले अनेहैं, बरख्यो नहि वारह१२अब्द मेह॥  
रहि सिंधुसेसैं जिततित निवान हुव छार सुकि बिटपिन बितान१२५॥  
निस्सेस क्रिया मखयाँदि नष्ट, कूकन जन लग्गे ताप कष्ट॥  
पुनि कौसिकेकोँ ओदैन मिल्योन, भूखे तब पहुँचे स्वपच भोन॥२६॥  
तासों मृत मंडैल पैलल पाय, आहुति तदीयें दिय उँटज आय ॥  
प्रपित्त छुवत आहुति असुद्ध, मधवाँपर मानस किन्न क्रुद्ध ॥२७॥  
दुष्ट सक बरख्यो न बारि, दिय तब अमेध्य मोमाँहि डारि ॥

गौ ने कहा कि ॥ १२० ॥ वहाँ पर १ धर्मराज ने शरीर धारण करके आ-  
कर कहा कि हे ३ गौ जो तुझे सुहावे सो वर मांग तब वह बोली कि ४  
बाण मारकर जो यह जल निकाला है यह ५ पापों को हरण करनेवाला  
मेरे नाम का तीर्थ हावे ॥ १२१ ॥ ६ पुनि वहाँ अनेक विमान आये जिनमें  
श्रेष्ठ क्रान्तिवाला राजा गौ सहित ७ गौवाँ के कुल सहित ॥ १२२ ॥ ८  
विष्णु के पद को पहुँचे ९ सामना करनेवाला ॥ १२३ ॥ १० गमन ११ कुत्ते को  
होम करने के कारण १२ देवताओं को १३ अग्नि मिला था ॥ १२४ ॥ १४ सर्व  
भक्षी पहिले समय में १५ वर्ष १६ जलाशयों में समुद्र ही बाकी रहे १७ वृत्तों  
के फैलाव भी भस्म होगये ॥ १२५ ॥ क्रिया खूट जाने से १८ यज्ञ आदि ना-  
श होगये १९ कौशिक (विश्वामित्र) को २० अन्न नहीं मिला तब २१ चाँडा-  
ल के घर गये ॥ १२६ ॥ उससे मरेहुए २२ कुत्ते का २३ मांस लेकर अपनी २४  
पर्णकुटी में आकर २५ उसीकी आहुति दी २६ अग्नि ने २७ इन्द्र पर २८ जन

मुनिकों न दोस पुरहूत मंद, फैलायो तैं जग मृत्युफंद ॥ १२८ ॥  
 सुख मन्नि नीच भखि तू असुख, मैतो त्रिलोक रहिहौं न मुख ॥  
 यह कहि कृसानु समिद्यों असेस, लोकन रह्यो न संसर्ग लेस ॥ १२९ ॥  
 अब विकल इंद्र अमरन उपेत, हेरन कृसानु निजवृत्तिहेत ॥  
 अर्बुद तिन्ह हेरयो एक अन्हि, विरुदायो नुतिकरि तत्थ बन्हि ॥ १३० ॥  
 सुनि प्रनति श्रमित सब सुरन जानि, बुल्ल्यो कृसानु रहि पिहितबानि  
 तैं इंद्र अदय नहिं दृष्टि किन्न, मोविच अमेध्य तब मुनिन दिन्न ॥ १३१ ॥  
 सुनि इंद्र कहयो देवापि १ नाम, जेठो प्रतीपसुत धर्मधाम ॥  
 तपकरत वहै अरु अनुज तास, अवनौ लहि संतनु २ भूप आस ॥ १३२ ॥  
 प्रतिलोम धर्मपथ इक्खि एस, दिन्नौ न घनन बुड्न निदेस ॥  
 तुम गुप्त भये जो इहिं निदान, तो चलहु कथित करिहैं प्रमान ॥ १३३ ॥  
 इम इक्खि पुष्करावर्त अध्र, भेजे ति भुम्मि बरखे अदध्र ॥  
 जिहिं निज्झर अर्बुद अंगप्रदेस, प्रकट्यो कृसानु नैंत लखि सुरेस ॥ १३४ ॥  
 तबतैं सु अग्नितीर्थ २० हि कहात, जैंहैं होत महापापन निपात ॥  
 रमनेस सद्धि तैंहैं उचित रीति, पिंडारक तीरथ २१ गो सप्रोति ॥ १३५ ॥

॥ में क्रोध किया ॥ १२७ ॥ १ हे मूर्ख २ इन्द्र ॥ १२८ ॥ ३ हे मूर्ख मैं इस  
 त्रिलोकी में नहीं रहूंगा ४ अग्नि सब जगह से खिंचकर इकट्ठा होगया  
 और लोकों में उस का लेशमात्र भी संग नहीं रहा ॥ १२९ ॥ देवताओं  
 सहित इन्द्र विकल हुआ और अपनी ६ जीविका (यज्ञ ही देवताओं की  
 जीविका है) के अर्थ एक दिन उन्होंने आवू पर आकर हे राजा स्तुति  
 करके अग्नि को विरुदाया (उसका उत्साह बढ़ाया) ॥ १३० ॥ देवताओं को  
 श्रम युक्त जानकर गुस्सरहकर अग्नि बोला ७ निर्दय होकर ८ अशुद्ध  
 ॥ १३१ ॥ इन्द्र ने कहा कि देवापि नामक राजा का प्रतीप नामक बड़ा पुत्र  
 जो धर्म का धाम है वह तो तप करता है और उसका छोटा भाई शान्तनु  
 उसकी श्रुति लेकर राजा होगया है ॥ १३२ ॥ सो धर्म के मार्ग में यह उ-  
 लटा लोभ देखकर मेघों को वर्षा करने को आज्ञानहीं दी और तुम जो इ-  
 सी (वर्षा नहीं होने के) कारण से गुप्त होगये हो तो चलो तुम्हारा  
 कहना करेंगे ॥ १३३ ॥ इसप्रकार कहकर पुष्करावर्त नामक मेघ को भे-  
 जा सो वह ९ बहुत वर्षा आवू १० पर्वत के जिस झरने में ११ इन्द्र को १२ नष्ट  
 देखकर अग्नि प्रकट हुआ ॥ १३४ ॥ १३ नाश ॥ ३३५ ॥



बहुबाणवंशे अर्बुदमाहात्म्य] तृतीयराशि—षष्ठिमयूख (१०५७)

सिवसौ अभिष्ट लहि मंगि जत्थ, सो तीर्थ कह्यो अघहर संमत्थ ॥  
हुव अगग मूढ द्विज मंकिनाम, लिन्नै जिहिं तर्गोक दुवरललामा १३६।  
बंधे उभैरहि इक १२ज्जु बंध, उरभे कहूँ कुदत करम कंध ॥  
उक्यो सु अचानक भोलि भुल्लि, भिचिकंठ मरे दुवरबच्छ भुल्लि ॥  
लाखि मंकि दुमन उपराम लाय, अर्बुद तप सखिय तबहि आय  
इक निज्भर न्हाय रु सुबचेत, बहु अब्द बिताये दम उपेत १३८  
तपकरत लख्यो सिव कबहु ताहि, चिंतित बरमंगहु कहिय चाहि  
द्विज बुल्लयो द्वैरबर मोहि देहु, गन मोहि करहु निज इक एहु १३९।  
दूजोर यह निर्भर तीर्थ सोहु, पिंडाकरनामक विदित होहु ॥  
इच्छित दुवरदै हुव पिहित ईस, जँहँ जाय कृत्य सब किय महीस १४०  
पहुँच्यो पुनि कनखलन्हदरप्रदेस, जँहँ दैत होत अकख्य असेस  
नृप इक अगग हुव सुमतिनाम, अर्बुद वह आयो पुण्यकाम १४१  
उपरक्त भानु लाखि तीर्थ अन, हेमँ सु बहु लायो द्विजन दैन ॥  
सो कनखल जलविच कनक सर्व, परिगो नृप न्हावत समय पर्व १४२  
सु मिल्यो न जदपि खोज्यो बिसेस, दै ओर दान गृह गो नरेस  
अब्दन बिताय रविग्रहन पाय, वह नृप पुनि कनखल न्हाय १४३  
सुमिरैत हुव अगग जु हेम हानि, ततकाल कह्यो इम व्योम बानि  
सुन कनक नष्ट जानहु सुजान, प्रत्युत बढिजावत अपमान १४४  
या तीर्थमाँहि महिमा यहैहि, व्है बँसु जु नष्ट अक्षय सु व्हैहि ॥

१ वर २ सुन्दर दो बछड़े (गौ के बच्चे) ॥ १३६ ॥ दोनों को एक ३ रस्सी में बांध दिये वे  
कूदते हुए कहीं ४ ऊँट के कंधे में उलझ गये सो जब यकायक ५ ऊँट उठा तब  
कंठ दबकर वे बछड़े मर गये ॥ १३७ ॥ ६ विरक्त होगया ७ एक भरने में  
स्नान करके ८ बहुत वर्ष बिताये ९ इन्द्रियों को रोक कर ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १०  
शिव गुप्त होगये ॥ १४० ॥ ११ जहाँ का दिया हुआ सब १२ अक्षय होता है  
॥ १४१ ॥ १३ सूर्यग्रहण देख कर १४ स्वर्ण ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ आगे सोना खोया  
गया था उसको १५ याद किया १६ आकाशवाणी ने कहा १७ उलटा बढता  
जाता है ॥ १४४ ॥ इसमें जो १८ धन नाश होता है वह अक्षय होजाता है



सोच्यो परंतु तू गिरत हेम, अक्षय भयो न वह द्रव्य एम ॥१४५॥  
 भो कोटिगुनित अब कहिलेहु, अवनीस हिरायो सुनत एहु ॥  
 निकस्यो सु पुरट निगँदित प्रमान, सब द्विजन दयो नृप सावधान ॥१४६॥  
 तिहिं पुण्य धनद हुव नृप अधीन, दिनप्रति बहु इच्छित पुरट दीन  
 तबतैं भुव कनखलतीर्थ २२ रूपात, चहुवान दये तैं हैं बसुनं ब्रातें ॥१४७॥  
 पुनि चक्रतीर्थ २३ पहुँच्यो नरस, किय न्हाय श्राद्ध १ बितरनं २ बिसेस  
 जिहिं तीर्थ अगग हरिबपुं पखारि, निजचक्रतज्यो सब दैत्य मारि ॥१४८॥  
 हरि अंगसंग करि वह सु तीर्थ, मानुस न्हद २४ गो नृप तत्थ होय  
 जैं न्हाय पुण्य परिचित अखब, नैरजोनि लहत पसु पच्छि सर्व ॥१४९॥  
 अगँ मृग व्याधन बेढेमान, प्रविसे तदीयें जल विकल प्रान ॥  
 ततकाल भये नर ते कुरंगें, पुच्छे पुनि मृगयुन लहि प्रसंग ॥१५०॥  
 तुम देहु गये मृग कित बताय, उन कहिय भये नर अत्थ आय ॥  
 तजि एनभाव १ अरु एनभावें २, पूरुष हम पूरुष न्हद प्रभाव १५१  
 नभाव १ प्रभाव २ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

यह सुनत व्याध सर १ चाप २ डारि, प्रविसे समस्त तस बिमल बारि  
 धरि सुद्धभाव तैं पाप धोय, हिंसाधेन निकसे सिद्ध होय ॥१५२॥  
 यह लखि प्रभाव तैं भीत आय, रज डारि सु मुंद्यो देवरायें ॥  
 अष्टमि ८ तथापि बुध ४ वार सत्थ, पसु १ पच्छि २ तैं नैरजाय जत्थ १५३

परन्तु सोना गिरा उसकी तू ने चिन्ता की थी इससे वह धन अक्षय नहीं  
 हुआ ॥ १४५ ॥ १ सोना २ ऊपर कहे प्रमाण से कहा ॥ १४६ ॥ ३ कुंघेर उ  
 स राजा के अधीन होगया ४ धन के ५ समूह दिये ॥ १४७ ॥ ६ दान ७ विष्णु  
 ने स्नान करके ॥ १४८ ॥ ८ विष्णु के शरीर का स्पर्श होने से वह ९ जल  
 १० परिचय सहित ११ मनुष्य योनि पाते हैं ॥ १४९ ॥ शिकारियों के १२  
 घेरें हुए मृग व्याकुल होकर उस १३ न्हद के जल में घुसे वे १४ मृग तुरन्त  
 मनुष्य होगये १५ शिकारियों ने पूछा ॥ १५० ॥ १६ मृगपन को और १७  
 पापभाव को छोड़कर १८ मानुष न्हद के प्रभाव से हम १९ पुरुष होगये हैं  
 ॥ १५१ ॥ २० निर्मल जल में घुसे २१ हिंसा ही है धन जैनके ऐसे वे शि-  
 कारी सिद्ध होकर निकले ॥ १५२ ॥ २२ इन्द्र ने न्हद को धूल डालकर भर  
 दिया २३ मनुष्य होने को तहां जाते हैं ॥ १५३ ॥

तैंहँ व्है रु तीर्थ रक्तानुबंध, सदन बिधेय पहुँच्यो सुसंध ॥  
 इक इंद्रसेन नृप अगग आसँ, तिय मंजु सुनंदा नाम तास १५४  
 आसा जित किन्नी जिहिँ असेस, आसा जित किन्नी जिहिँ असेस  
 बलि लै बहु सत्रुन वसुन ब्रात, बलि लै बहु सत्रुन वसुन ब्रात १५५  
 मुरख्यो सु लयो गहि जंगमग, मुरख्यो सु लयो अब दंगमग ॥  
 तैंहँ अगग सुनंदा पास चार, पठ्यो नृप निर्दय कपटकार १५६  
 अरु अखिखय रानी निकट जाय मम मृत्यु देहु ताकैंहँ सुनाय ॥  
 निश्चित जोइच्छहिँ मरन नारि, तो देहुनर्म अखिखरुनिवारि ॥ १५७ ॥  
 सुनि दूत जाय रानी समीप, बुल्लयो सु अग्नि मारयो महीप ॥  
 कटुवचन बज्र यह परत कान, पुढल तजि निकसे त्वरित प्रान १५८  
 तदनंतरै भूपहु तथ आय, सोच्यो सुनि रानी त्यक्तकाय ॥  
 भो मलिन रंग ततकाल भूप, बँपुपैँ दुवच्छाया हुव बिरूप १५९  
 दुर्मन अतेज दुर्गंधि देह, आपन्न दसा नृप एह एह ॥  
 विप्रनबुलाय करि बहु बिलाप, पुच्छिय उपाय जिहिँ जाय पाप ॥ १६० ॥  
 अब तीर्थ बताये द्विजन ताहि, चल्लयो सुनि हत्या हेय चाहि ॥  
 बाराणासी सुपहिलै जंगम, करिन्हान दान दिय दिव्य धाम ॥ १६१ ॥

१ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाला रमनेस बहुवान वहाँ गया २हुआ सुन्दर स्त्री ॥ १४ ॥ वसरा  
 जा ने सप्तदिशाओं को विजय की और आ (आ समन्तात् अर्थात् सम्पूर्ण) शा  
 (लक्ष्मी) को जीतकर उस लक्ष्मी से सप्त दिशाओं को अशेष (शून्य) कर दी खिरा  
 ज में अथवा उस बलवान ने बहुत शत्रुओं से धन का समूह लेकर बलि (पुनि) बहु  
 त शत्रु वसु (राजा)ओं के समूहों को साथ लिया अर्थात् बहुत शत्रु राजाओं  
 के समूह को अपने आश्रित बनाकर सेवा में साथ लिये ॥ १५५ ॥ इस रा-  
 जा से जो मुरझकर रहा उसको युद्ध में पकड़ लिया और अथ पीछा  
 फिरकर उस इन्द्रसेन राजा ने अपने पुर का मार्ग लिया, उस निर्दय  
 और कपट करनेवाले ने अपनी स्त्री सुनन्दा के पास हलकारे को  
 भेजा ॥ १५६ ॥ उससे कहा कि रानी के पास जाकर मेरा मरना सुना  
 देना वह स्त्री जो निश्चय ही मरना चाहै तो यह कहकर उसको रोके देगा  
 कि मैं तो हसी करता हूँ ॥ १५७ ॥ ४ शरीर को छोड़कर ॥ १५८ ॥ ५ जिल्ल  
 पीछे ६ राणी का शरीर छोड़ना सुनकर ७ शरीर पर ॥ १५९ ॥ इससे आपत्ति  
 की दशा में ॥ १६० ॥ ९ हत्या छूटने की चाहना से पहले काशी १० गया

तत्थहि कपालमोचन जु छेत्र, अब्रह्महृत्यं हुव जँहँ त्रिनेत्र ॥  
 तँहँकियविधेयथिरचिरंतथापि, छायाद्वितीय२नमिटीतदापि ॥१६२॥  
 इम सोमतीर्थ२ पुष्कर३ प्रभास४, कुरुखेत५अमरकंटक६ सुभास  
 कनखल७दमजंगल८एकहंस९, पंचनद१०परिप्लव११सुप्रसंसा१६३॥  
 जिम पत्तं विरूपाक्ष१२हु जनेर्स, बालि रुद्रकोटि१३अघहर बिसेस  
 बिरचतइत्यादिकतीर्थबंर, हायनैइमवीतेइकहजार१००० ॥१६४॥  
 आयो पुनि अर्बुद इंद्रसेन, आयतेनै१ तीर्थ२ परसे अनेनै ॥  
 विधिक्रम गयो सुरक्तानुबंध२५, गेरयोस्वदेहतसजलकुगंध ॥१६५॥  
 सो हुव सुगंध तँहँ कढत न्हाय, छाया द्वितीय२ मिटि तेजछाय ॥  
 सब दान तत्थ दै इंद्रसेन, अति मुदित चलयो निज गृह अनेनै१६६  
 रक्तानुबंधकी तजत सीम, भो पुनि कुगंध द्विरच्छाय भीमै ॥  
 आयो तिहिँ तीरथ बहुरि एह, भो तबहि पुँब्बजिम दिव्यदेह ॥१६७॥  
 तीरथ प्रभाव यह नृप विचौरि, प्रबिस्स्यो चिता सु पार्वक प्रजारि  
 वपु भस्महोत आयो विमान, सिवलोक गयो चढि नृप सुजान ॥१६८॥  
 नारदमुनि लखि नृप मुक्ति एस, रक्तानुबंध बरन्यौ बिसेस ॥  
 अनुबद्धै करै नर विषयरक्त, रक्तानुबंध२५इम भुव प्रसक्त ॥१६९॥  
 जँहँ श्राद्धहोत गयँसिर समान, दैरुद्रलोक गति न्हान१दान२ ॥

॥ १७० ॥

जहां पर१शिव६ब्रह्म हत्या से छूटे थे४यहुत समयतक उचित कार्य किये५तो  
 भी दूसरी छाया नहीं मिटी॥१६२॥ ६अष्ट प्रशंसा वाले॥१६३॥ ७गया८ राजा  
 ९पुनि१०समय११वर्ष॥१६४॥ १२तीर्थों के ठहरने का स्थान (आबू) को१३निर्दोषी  
 होने के अर्थ परसा॥१६५॥ १४निर्दोषी होकर॥१६६॥ रक्तानुबंध तीर्थ की सीमा  
 से बाहर निकलते ही१५भयंकर छाया और दुर्गन्धवाला शरीर होगया१६  
 पहिले निर्मल देह होगया था वैसा ही फिर होगया ॥ १६७ ॥ १७ विचार  
 के १८ अग्नि जलाकर ॥ १६८ ॥ जो मनुष्य विषय में आसक्त होकर १९ दोष  
 परपादन करें वेभी इस तीर्थ में प्राप्ति रखें तो उनको वांछित फल देता है  
 इसकारण से भूमि पर बह रक्तानुबंध२०प्रसिद्ध है॥१६९॥ २१ गया के समान

तिम उचित सद्धि रमनेस तत्त.सु महादिबिनायक २६ धाम पत्त॥  
 पहिलैं उद्वर्तन लेप पाय, सिसु इक्क १ रच्यो गिरिजा सुकाय ॥ १७१ ॥  
 अभिरूप बनैं तस सर्वअंग, अवसेस रह्यो सिसु उत्तमंग॥  
 लेपहु रह्यो न तब गुह बुलाय, अक्खिय सुत अप्पहु लेप लाय ॥ १७२ ॥  
 सिर याको जिहिं करि होय सिद्ध, यह पूर्ण बनैं तव भ्रात इद्ध॥  
 पायो न लेप गुह आस पास, तब जोर्यो गजसिर कट्टि तास ॥ १७३ ॥  
 सो बाल सिवा किन्नौं सजीव, उठ्यो सु धारि बपु छवि अतीव  
 चउ ४ हस्व त्रि ३ बिस्तृत सप्त ७ रक्त लि ३ गभीर छ ६ उन्नत वपु विभक्त १ ७४  
 मित पंच ५ सुच्छम रु पंच ५ दिग्घ, सय जोरि कुमार बुल्लयो सु सिग्घ ॥

महाशब्द है आदि में जिसके ऐसा विनायक ( महाविनायक )  
 पहुँचा. उद्वदन (शरीर सुगन्धित करने का लेप) के लेप से पार्वती ने  
 एक सुन्दर बालक रचा ॥ १७१ ॥ उस बालक के सब अंग सुन्दर बने प-  
 रन्तु मस्तक बाकी रहा और वह लेप खुदगया तब स्वामिकार्ति-  
 क को बुलाकर कहा कि हे पुत्र! फिर लेप लादे ॥ १७२ ॥ जिससे इसका  
 मस्तक बनजावे और तेरा यह दीप्तिमान् भाई पूर्ण होजावे, गुह को स-  
 मीप में लेप नहीं मिला तब हाथी का मस्तक काटकर उसके चिपका दिया  
 ॥ १७३ ॥ पार्वती ने उस बालक को सजीव करदिया सो शरीर की अ-  
 स्त्यन्त छवि को धारण करके वह उठा “ अब आगे पुरुष के शुभ लक्षण य-  
 ताते हैं ” लिङ्ग, पीठ, ग्रीवा और जंघा ये चार अङ्ग ह्रस्व (छोटे); और  
 छाती, ललाट और यदन (चहरा) ये तीन अङ्ग विस्तृत (विस्तारवाले या-  
 नी चौड़े ) और नेत्रों के अन्त (कोपे), पादतल (पगतली), हाथ, तालु, नीचे  
 का ओठ, जिह्वा, नख, ये सात अङ्ग रक्तवर्ण (लाल रंग) के, और नाभि,  
 शब्द, सत्त्व (स्वभाव अथवा पराक्रम) ये तीन गंभीर (गहरे); और छा-  
 ती, कक्षा (शरीर का मध्यभाग) नख, नासिका, मुख कृकादिका (घेदू गला  
 और शिर की सन्धि) ये छै अङ्ग उन्नत (ऊँचे), और सब शरीर परा-  
 धर बंटे हुए अर्थात् आंख, कान, हाथ, स्तन, नितम्ब, जंघा, पग, ये सब  
 निश्चय करके बराबर के, यह नहीं कि एक ओर का छोटा और एक ओर  
 का मोटा होवे ॥ १७४ ॥ दन्त, अंगुलियों के पर्व (पेरवे) केश, त्वचा (चर्म)  
 नख, ये पञ्च सूक्ष्म (पतले) और हनु (ठोड़ी), मेत्र, भुजा, नासिका, दोनों  
 स्तनों के बीच का मध्यभाग ये पाँच अङ्ग जिसके दीर्घ (लंबे) हैं “ ये पु-  
 रुष के शुभलक्षण कहें इस प्रकारण को विशेष देखना होवे तो सासुदिन

जननी तुम अप्पहु जो निदेस, सिरधारि सोहि सद्धौ असेसा ॥ १७५ ॥

पर्वतजा लै सिसु ईस पास, अक्खिय उदंत जिम पुत्र आस ॥

ईसानकहियसिरमहत १ आहि, बपुनायकत्व २ सबगुननिबाहि ॥ १७६ ॥

अभिधा महाविनायक उपेत, व्हैहैं यह चिंतितसिद्धिहेत ॥

अधिकारमुखपुनिअप्पिईस, इभतुंडकरघोनिजगनअधीस ॥ १७७ ॥

अरि निखिल विघ्न किन्नै अधीन, सब पुव्व दयो पूजन प्रवीन ॥

इम लंबउदर सहिमा अपार, हुव विघ्ननिघ्न सुखकरनहार ॥ १७८ ॥

तिहिंसखउमादियस्वधिति १ तल, अरुअसनअर्थमोदक १ अमत्र २ ॥

इहिगंधवनकभुवभेदिआय, खिरिखिरिगिरेतितसरेगाखाय ॥ १७९ ॥

सहसा दिपाय अमरत्व सिष्ट, इभमुखकै बाहन हुव सु इष्ट ॥

इमहूगनेसप्रकटनप्रतीति, रुदसम १० पुरानविचअन्यरीति ॥ १८० ॥

तहैं संभुसुक्र भव एकदंत, यहैं इम सु भेद कल्पन अनंत ॥

सु महाविनायक मूर्ति सुद्ध, प्रकटित अगअर्बुद हे प्रबुद्ध ॥ १८१ ॥

शास्त्र में अथवा धाराहीसंहिता नामक ज्योतिष के ग्रन्थ में सविस्तर है सो

वहां देखो। वह कुमार हाथ जोड़कर शीघ्र बोला कि हे माता तुम

जो आज्ञा करो सो ही मस्तक पर धरकर सब करूं ॥ १७५ ॥ उस बालक को

पार्वती शिव के पास ले गई और जिसप्रकार बालक हुआ वह

वृत्तान्त कहा, महादेव ने कहा कि इस का माथा बड़ा है और

शरीर से भी नायक (प्रधान) पन का निर्वाह करेगा इससे ॥ १७६ ॥ १ म-

हाविनायक नाम सहित इसको चिन्तवन करने से सिद्धि देनेवाला होवेगा

२ गजानन को ३ गणों का स्वामी किया ॥ १७७ ॥ और अधीश (शिव) ने

सम्पूर्ण विघ्नों का उसको शत्रु बनाया सब से पहिले पूजन दिया, इ-

सप्रकार गणेश की अपार महिमा है वह विघ्नों का नाश और सुख

करनेवाला हुआ ॥ १७८ ॥ पार्वती ने कुठार का शस्त्र दिया और भोजन

के लिये लड्डू और पात्र दिया, इस लड्डू की गन्ध से भूमि को फोड़ कर

चूहा आधा ४ लड्डू के कण खाये ॥ १७९ ॥ अचानक अष्ट देवता-

पन को प्रकाशमान करके गजानन के प्रिय वाहन हुआ, इसप्रकार

भी गणेश की उत्पत्ति विरवास दायक है, और दशम ( ब्रह्मवैवर्त ) पुराण

में गणेश की उत्पत्ति और प्रकार से लिखी है ॥ १८० ॥ तहां पर गणेश

का जन्म महादेव के वीर्य से है सो इसप्रकार कल्पों के भेद से अनेक कथा

हैं सो महाविनायक की मूर्ति हे पंडित रामसिंह आबू पर्वत पर

चक्रवाणवशे अर्बुदसाहाय्य ] तृतीयराशि—षष्ठिमयूख (१०६३)

निकटहि तस कुंडहु बिमलनीर, बिधि तँहँ निबाहि रमनेस बीर  
पाथेश्वर २७ संकर धाम पंत, निजभर जल न्हाय रु देय दत्त १८२  
अगँ मुनि देवल सदन श्रेय, पतनी हुव पाथा नामधेय ॥

बंभा सु चहत संतति बिसेस, तप तपिण आनि अर्बुद प्रदेस १८३  
अनसन लखि हायन सहेस १००० उद्ध, सिवलिंग कढ्यो भुवभेदिसुद्ध  
बुल्लिय तदनंतर गंगनवानि, यह लिंग पुजि दृढभक्ति आनि १८४  
अबतै पाथेश्वरनाम अत्थ, संज्ञा तव गहि हैं सिव समत्थ ॥

पाथा सु अर्चि निगदितै प्रमान, सत १०० पुत्र लहे सब गुन सुजान १८५  
निर्भर जँहँ सीतल बिमल नीर, बिधि तँहँ निबाहि रमनेस बीर  
पुनि कृष्ण तीर्थ २८ किन्नो प्रयान,

किय न्हान १ श्राद्ध २ जप ३ होम ४ दान ५ ॥ १८६ ॥

अगँ चतुरानन मोहनिष्ट, हरिसौं इम अखिख मै गँरिष्ट ॥  
तोसेहु बनाये जिहिं कितेक, असो समर्थ मै दुहिनँ एक ॥ १८७ ॥  
हसि बिष्णु कह्यो मम सर्गमोहिं, अंबुजभवं तोसे बहुत औहिं ॥  
किय रन बिरंचि यह सुनत कुँपि, हायनँ हजार १००० दृढरोखरुपि  
तँहँ दुहुन २बीच लखि होत जुद्ध, भुव भेदि गयो इक लिंग उँद्ध ॥  
आकासगिरौ हुव तिहिं अनेहँ, अनुचित रन व्यर्थ न करहु एह १८९  
यह दिव्यलिंग तस पाय अंत, मुरै सु होय तुमबिच महँत ॥

अजँ जाहु उँद्ध हरि जाहु हिँडँ, पाताल बिष्णु यह सुनि पइठ १९०

प्रकट हुई ॥ १८१ ॥ १ गया २ करने के जल से ३ दान दिया ॥ १८२ ॥

देवल मुनि के ४ घर में ५ पाथा नामवाली स्त्री हुई वह ६ वन्ध्या (पाँक)

पी ॥ १८३ ॥ ७ उपवास ८ हजार वर्ष से उपरान्त ९ जिस पीछे १०

आकाशवाणी ॥ १८४ ॥ १ तेरा नाम ग्रहण करेगा २ कहने के अनुसार

॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १३ ब्रह्मा ने भूल से १४ बिष्णु से कहा कि मैं १५ यज्ञा हूँ १६

ब्रह्मा ॥ १८७ ॥ १७ मेरी सृष्टि में १८ कमल से उत्पन्न होनेवाले (ब्रह्मा) १९ हैं २०

ब्रह्मा ने युद्ध किया २१ क्रोध करके २२ वर्ष ॥ १८८ ॥ २३ भूमि को फाँड़कर

एक लिंग २४ ऊपर को गया उस २५ समय में २६ आकाशवाणी हुई ॥ १८९ ॥

इस लिंग को अंत लेकर पीछा आवेगा वही तुमसे २७ बड़ा माना जावेगा

२८ ब्रह्मा २९ ऊपर को जाओ और, बिष्णु ३० नीचे जाओ ३१ बिष्णु पाताल

विक्रमे बिल सत्त७हि लिंग बिद्ध, अंध जानलगे प्रभु वेद ईद ॥  
 कालाग्निरुद्र तँहँ किय प्रकास, अर्चिन तँचि हरि छवि कृष्ण आस ॥  
 महिमा दिखाय तस पाय मोह, छिति पिछि आय केसव सछोह ॥  
 वेदोक्त सूक्त जपि निर्विकार, वह लिंग पुजि किय नुत उदार ॥  
 बिधि उद्धं चढे अति बिरचिताय, जिहि अंत तदपि पिकरयो न जाय ॥  
 जँहँ इक सुममाला कंज जात, इक्खी क्रकचँछदमय सु आत ॥  
 पुच्छिय सँज हे अर्ज कित प्रयान, सुनि कहिय लखन लिंगावसान ॥  
 स्रज कहिय मैहु तजि लिंग सीस, आवत चिरंतरतँ लोकईस ॥  
 उतरत जुग कोटिन हुव अतीत, पायो न तदपि छितितल पुनीत ॥  
 जो जनइक १ तावकँ हंस जात, तोलों सत १०० जो जन मै बितात ॥  
 मम वेग जंदपि यह तदपि मग्ग, आयतपँन धारत अग्ग अग्ग ॥  
 मोरहु मैराल यह मंत्र पाय, तुम अंत कहहु मौ कँहँ बताय १९६ ॥  
 सुनि मुरि बिरिचि स्रज संग लाय, तँहँ आयस हँस १००० ढायन बिताय ॥  
 छलि कहिय लहयो हम लिंग छेह, अति दूर सु प्रत्यय स्रजहि एह ॥  
 अच्युत कहयो किन लहयो सु अंत, न लहयो हि कहयो यह सुनि अनंत ॥  
 सिव कुपित तत्थ दिय बिधिहि साप, तव पूजक पै हँ नरक ताप ॥

मँ घुसे ॥ १६० ॥ १ लिंग से बंधे हुए २ वेद से वृद्धि पाये हुए विष्णु भगवान् नीचे जाने लगे वहाँ शिव ने काल अग्नि का प्रकाश किया उसकी ३ ज्वाला से ४ तपकर विष्णु का रंग ५ रयाम होगया ॥ १९१ ॥ ६ भूमि की पीठ पर ७ वेद के कहे हुए मंत्रों से ८ स्तुति की ॥ १९२ ॥ समृद्धिमान् ब्रह्मा उस लिंग के ९ ऊपर चढे १० ब्रह्मा ने एक १० पुष्पों की माला देखी जो ११ रक्त की के पुष्पों से शोभायमान थी ॥ १६३ ॥ उस १३ माला ने पूछा कि हे १४ ब्रह्मा कहाँ जाते हो १५ इस लिंग का अन्त देखने को १६ अत्यन्त चिर काल से आती हूँ ॥ १९४ ॥ क्रोहों जुग १७ बीत गये तो भी १८ भूमि तल नहीं पाया, हे ब्रह्मा १९ तुम्हारा वेग एक जो जन जाने का है ॥ १९५ ॥ २० आगे से आगे लगे पन को धारण करता है २१ तुम्हारे माहन हंस को पीछा मोड़ दो २२ मुझ को साखी बताकर कह देना कि मैं लिंग का अन्त देख आया ॥ १६६ ॥ २३ झल करके कहा, यह माला इसका २४ विश्वास करानेवाला (मुबूत) है ॥ १६७ ॥ २५ विष्णु ने कहा कि मैंने तो अन्त नहीं पाया २६ ब्रह्मा को महाव्रिषने आप दिया कि तुमको २७ पूजनेवाले नरक पावेंगे ॥ १६८ ॥



\*केतक सुम सूचित सखिखःकूर, दुष्ट सु अवहम सन रहहु दूर॥  
हरिसौहु कहिय सब लेहु+सिष्ट, उन कहिय लिंग यह ×अल्प इष्ट  
तब लिंग अल्पतम करि त्रिशनेन, बुल्लिय मुकुंद सन मधुर वैन ॥  
थप्पहु इहिं लिंगहि मेध्यै थान, पूजहु दामोदर विधि प्रमान ॥२००॥  
दुति तुवभं कृष्णा मम तेजईद्व, बजिहो अव कृष्णाहि ख्यातिबद्ध ॥  
हर पिहित भयै थप्यो हिताय, लिंग सु गिरिअर्बुद कृष्णालाय ॥२०१॥  
निजभर इकअंतिक तस निवास, इम कृष्णातीर्थ २८भुव बिदित आस  
जन लिंग लखैं वह न्हाय जत्थ, सबतीर्थ पुण्य सु लहैं समत्थ ॥२०२॥  
क्रम बिहित सद्धि तहैं उचित काल, पहुँच्यो मामुन्हद २९तब नृपाल  
मुद्रलमुनि अगौं जहैं महंत, सद्धिय तप दुस्सह परम संत ॥ २०३ ॥  
इयलखि सुरेस बनि त्रासवान, बलि तहैं सँदूत पठ्यो बिमान ॥  
बुल्ल्यो सु तजहु मुनि कष्ट भौत, लहैं स्वर्ग चलहु सुरपति बुलात  
उन कहिय पुँव गुन १ दोस २ अखिख, रुचि है तो चलिहैं चाह रखिख ॥

तब दूत कहिय गुन १ दोस २ तास,

नंदनमुखें उपवन १ सुख निवास ॥ २०५ ॥

नानाप्रकार बैर जल निधान, बीनाहि १ ताल २ बापि ३ न विधान २ ॥

आलस १ तस २ भूख न आँति ४ आहि ३,

सौलह १६ संवत्सर बय ४ सदाहि ॥ २०६ ॥

\*केतकी के पुष्प ने - झूठी साची दी है सो यह दुष्ट हमसे दूर रहे (इसीका रख से केतकी का पुष्प पूजा में नहीं रक्खा जाता और ब्रह्मा की मूर्ति पूजा नहीं जाती) विष्णु से कहा कि + अष्टवरमांगो × यह लिंग छोटा हो जाये यही प्रिय है ॥ १९६ ॥ महादेव लिंग १ बहुत छोटा करके २ विष्णु से बोले ३ पवित्र स्थान दो ४ हे धिगु ॥ २०० ॥ मेरे तेज से १ दग्ध होकर ५ तुम्हारी कान्ति रयाम होगई है सो अष कृष्ण नाम से ही प्रसिद्ध होओगे ७ गुप्त ॥ २०१ ॥ एक भरने के ८ पास ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ १ इन्द्र १० दूत सहित ११ कष्ट का समूह छोड़ दो १२ शीघ्र स्वर्ग में चलो ॥ २०४ ॥ मुद्रल मुनि ने कहा कि तुम १३ पहिले स्वर्ग के गुण दोष कहो १४ नन्दन को जादि लेकर वहाँ बाग हैं ॥ २०५ ॥ १५ अष्टजलाशय १६ ईंटों से बन्धे हुए कुए १७ मार्ति (पीड़ा) १८ सौलह वर्ष की सदैव अवस्था रहती है ॥ २०६ ॥



गंधर्व१अच्छरि२न॥मंजु गीत५, नाना विमान वाहन६॥पुनीत॥  
कामदे१धेनु२॥७पीयूख पान८, हिंसा१न धर्म२निद्रा३न हान४॥९॥  
जब पुण्य रहत जँहें वित्तिजाय, पावत नृपत्व१तब अवनि आय॥  
असुरहु निज अवसर बैलउपेत, दिवँ छिन्नि निर्जरन कट्टिदेता॥२०॥  
तिन कहिय पुण्यखय होत तहिँ, मामुन्हद२९ मेहि त्वं पुनहिँ ॥

जवतँ मामुन्हद रुपात जत्थ, चहुवान जाय किय उचित तत्थ२०९  
पुनि निकट चंडिकाश्रम३०पधारि,सद्धिय बिधेयँ श्रुतिवच सम्हारि  
पहिलै विधिँ साँ वर मैहिष पाय,हुव त्रि३भुवनपति देवन हटाय२१०  
मिलि अमरँ तवहि गुरँमंत्र मानि, अर्बुद लगे ति तपकरन आनि।  
पढि साकितमंत्र पूजन पुनीत, आराधत होयन चउ४अंतीत॥२११॥  
तिन अगग मास खट६पुनि विताय,हुव दीप ११हेति वह प्रकट आय  
जिम जिम वह कोला वढिग जत्थ,तिम वढिग अमर्त्यन ओज तत्थ  
इहिँ क्रम ६छमासलग वढिअनेजँ,त्रिदसनहुवद्वँदस १२तँपनतेज॥  
वाचस्पति तव करि भुव पवित्र,विधि उचित राचिय मंडल विचित्र  
साक्तेयँ मंत्र जपि विदित सिष्ट,पुनि किय सु तेज मंडल प्रबिष्ट  
एकत्र तेज तँहँ सवन आय, कन्या इक प्रकटी रम्म्य काय

\*सुन्दर\*\*पावित्र१कल्पवृक्ष२कामधेनु३अमृत पीने के लिये.जब तक पुण्य रहता है तब तक ये भोगते हैं और पुण्य बीतजाता है तब४भूमि पर आकर राजापन अपना५समय आने पर६बल सहित असुर लोग७स्वर्ग को छीन कर८देवताओं को निकाल देते हैं॥२०॥मुनि ने कहा कि स्वर्ग में पुण्य का क्षय होजाता है तो पाते हैं स्वर्ग की अपेक्षा मामुन्हँद में सुख अधिक है इससे हम स्वर्ग जाना नहीं चाहते सो तुम हमको लेने यहां फिर मत आना अर्थात् अमुं(इस)न्दद पर पुनः ( फिर ) द्वि ( निश्चै करके ) त्वं ( तू ) मा ( मत ) एहि ( आव ) ॥ २०९ ॥ १२ कर्तव्य कर्म १३ वेद के वचनों को सम्हाल कर १४ अग्ना से १५ महिषासुर वर पाकर ॥ २०१० ॥ १६ देवताओं ने १७ वृहस्पति की सलाह मान कर १८ आबू पर्वत पर, आराधना करते चार १९ वर्ष २० बिता कर॥२१॥दीपक की २१ ज्वाला (लोय) में वह (देवी) प्रकट हुई २२ ज्वाला यही त्यों ही २३ देवताओं का तेज यदा २४ अमल २५ देवताओं का २६ बारह सूर्यों के समान तेज होगया२७ वृहस्पति ने॥ २१३ ॥ २८ शक्ति सम्बन्धी मन्त्र जपकर उस तेज को उस मंडल में प्रवेश किया

चहुवाणवशेअर्बुदमाहात्म्य ] तृतीयराशि—पष्टिमयूख ( १०६७ )

सब सुरन सुबंदी आदिसक्ति, भाखे स्तव बहु विध प्रकटि भक्ति ॥  
 त्रिदसनपट १ भूखन २ सख ३ ताहि, सब अप्पिकहिष जयजय सिराहि  
 बाहन मृगेंद्र हुव हव्यवाहं, लेखन इम पायो सक्ति लाह ॥  
 अंवा प्रसन्न किय हुकम एहु, लखि उचितइष्ट सिर मंगिलेहु २१६  
 तिन कहिय दये हम महिष तारि, माता तुम ताकहं लेहु मारि ॥  
 दुर्गा निदेस दिय हित दिखाय, अब जाहु अमर निजनिजनिर्काय २१७  
 निर्भीत रहहु संदेह नाहिं, मै हनिहौं दुष्टहिं काल माहिं ॥  
 देवन इम अक्खिरुसिक्खदिन्न, कात्यायनि अर्बुदबास किन्न २१८  
 सब तीर्थ विचरि नारद सुजान, पुनि कबहु त्रिविष्टप किय प्रयान  
 सनमानि महिष पुच्छिय असेस, देख्योहु चित्त कहु भूपदेस २१९  
 मुनि कहिय सर्वलोकन महान, नगअर्बुद जानहु सुखनिधान ॥  
 कन्या इक पिकखी तहं सुकाय, प्रमदां न विस्व तस रूप पाय २२०  
 इक्खतहि भयो मै स्मर अधीर, इतकों भजिआयो विकल वीर  
 अब सत्यलोक जैहौं उदार, मिटिहै न उहाँ बिनु मार मार २२१  
 दानव मुनि पठये तत्थ दूत, अर्बुदगिरि पिकख्यो तिन्ह अभूत ॥  
 दस १० जो जन लंबित रम्यदेस, विसतार पंच ५ जो जन सुवेस ॥ २२२ ॥  
 उंचिछूत इतोहि भूस्वर्ग अच्छ, हुत दूत गये तहं कथनदच्छ ॥  
 तिन कहिय त्रिदिवं चलहु हितोय, क्यौं सहहु देवि तपकष्ट काय २२३

उन सब देवताओं का तेज एकत्रित होकर सुंदर शरीरवाली एक कन्या प्रकट हुई ॥ २१४ ॥ उस आदिशक्ति से देवताओं ने नमस्कार करके १ स्तोत्र कहे २ देवताओं ने ॥ २१५ ॥ ३ सिंह का स्वरूप करके ४ अग्नि वाहन हुआ ५ देवताओं ने इस प्रकार शक्ति का लाभ पाया ६ मुख्य प्रिय होवे सो मांगो ॥ २१६ ॥ महिषासुर ने हमको ७ निकाल दिष्ट ८ हे देवताओं अपने अपने ९ घर जाओ ॥ २१७ ॥ १० कुछ समय में ११ देवी ॥ १२ ॥ नारद मुनि सब तीर्थों में फिर कर कभी १२ स्वर्ग में गये १३ आदर करके महिषासुर ने सब पूछा १४ आश्चर्यदायक वस्तु भूमि पर देखी है ॥ २१९ ॥ १५ पर्वत, संसार में उसके जैसी रूपवान् कोई १६ स्त्री नहीं है ॥ २२० ॥ उसको देखते ही मैं १७ कामदेव से अधीर होगया १८ कामदेव की मारी ॥ २२१ ॥ १९ अविद्यमान (जो इस समय उतना नहीं है) ॥ २२२ ॥ २० ऊंचा पांच योजन २१ भूमि का स्वर्ग २२ शीघ्र २३ कहने में चतुर २४ स्वर्ग में चल २५ हित के लिये

बुल्लो न सिवा तँहँ मुनिन व्रात, खलके दूतन प्रति कहिय ख्यात॥  
 वरचूढ़ महिष मारन बिचार, सद्धत इम अंबा तप सुढार ॥२२४॥  
 दूतन डरि अक्खिय सुहि उदंत, आसुर सुनि कुप्यो चहत अंत ॥  
 बलि दूत बिचच्छन नाम बुल्लि, खल अनुचित आसय कहिय खुल्लि  
 तिहिँ लैन बिचच्छन जाहु तत्थ, सजि साम १ भेद २ बितरन ३ समत्थ॥  
 तिन विराचि दंड ४ कचगहि प्रतर्जि, आनहु तिहिँ सासन धर्म अर्जि  
 बुल्ल्यो सु जाय खल तिम बहोरि, जुँ दयो बिडारि रिस नैन जोरि  
 सुहि जाय बिचच्छन अक्खि सर्व, आन्योँ कुपाय महिषहिँ अखर्व  
 स्पंदन त्रिलकख ३००००० हुव संग सज्ज,

गज इक्कलकख १००००० जीमूत गज्ज ॥

हयतीसलकख ३०००००० हं किय गहीर, वानैत अमित पाँइक्कवीर २२८  
 कंपात धरनि डुंगेर डिगात, वनि आयो दानव प्रलय बाँत ॥  
 गरदायँ कटकँ अर्बुद गिरीस, सह सचिव अप्प गो तास सीस २२९  
 दुर्गा समाधि थित जिहिँ प्रदेस, अक्खिय बिनमँत्र तँहँ जाय एस ॥  
 जग अतुल भीरुँ तव रूप जानि, मैँ आयो उपैयम उचित मानि  
 गंधर्व व्याँहँ सह जोरि गंठि, सुख भुग्गि मोहि भैँजि प्रीत सँठि॥  
 तिय सहँस सठि ६००००० सम गेह तास, वनि करहु पट्टरानी विलास

१ देवी नहीं बोली तब २ सुनियों के समूह ने दूत से कहा  
 ३ वर से बड़े हुए महिषासुर को मारने के विचार से ४ देवी अष्टतप करती  
 है ॥ २२४ ॥ ५ वृत्तान्त ६ विचक्षण नामक दूत को बुलाकर ॥ २२५ ॥ ७ दा-  
 न, ८ धमकाकर बाल पकड़ कर, हे आज्ञा के धर्म को ९ संचय करनेवा-  
 ले दूत ॥ २२६ ॥ देवी ने क्रोध के नेत्रों से देखकर १० उसको ११ निकाल  
 दिया ॥ २२७ ॥ १२ रथ १३ मेघ के समान गर्जना करनेवाले १४ पैदल ॥ २२८ ॥  
 १५ पर्वतों को डिगाते हुए १६ प्रलय के पवन के समान होकर १७ सेना से  
 आवू पर्वत राज को १८ घेरकर मंत्री के साथ आप पर्वत के मस्तक पर गया  
 १९ विशेष नम्र होकर बोला २० हे सुन्दर स्त्री २१ विवाह ॥ २३० ॥ २२ वर  
 कन्या परस्पर प्रसन्न होकर विवाह करलेवें उसको गन्धर्व विवाह कहते हैं  
 २३ मुझको सेवन करके २४ प्रीति के बदले में सुख भोग ॥ २३१ ॥

दुर्गा तथापि उत्तर द्यो न, गो तव समीप खल सीघ्र गोन ॥  
 तव सुमिरि सिंह अंबा अरोहि, छित्तरं भजि जावहु कहिय छोहि २३२  
 बेठन जब लग्गो रोकि बट्टे, अंबा हसी सु तव अट्टअट्ट ॥  
 सन्नद्ध वीर तिहिं हास संग, लखन कढे रु लिय रन मलंग २३३  
 दुर्गा इम तिनप्रति दिय निदेस, उद्धत खल दानव हनहु एस ॥  
 तिन गनन सुनत सासन तमंकि, हनि दुष्ट सचिव किय तुमुल हंकि  
 बल तव अधित्यका बुद्धि दुष्ट, रन घोर रच्यो रहि गनन रुष्ट ॥  
 तव सक्ति कहिय नहि बल त्वदीय, विधिको वर जानहु कछु बलीय  
 महिमा तदीय ब्रह्मंड मध्य, विनु नौरि भयो खल तू अवध्य ॥  
 देवी सर इम कहि अठ दिन्न, लँघु चउ४करि चउ४हय मारि दिन्न  
 किय कुंशाप सूत दै इक१कलंव, पुनि कट्टिय इक१करि ध्वज प्रलंब  
 तिम प्रदर दोय १८ हनि उदर तास, दुष्ट सु किय मूर्छित जिय दुँरास  
 पुनि बान दये खल लहि प्रबोध, कात्योपनीहु किय तवहि क्रोध  
 दै इक१छुरप्र जनु कालदंड, खलको कौदंड सु किय दुखंड ॥  
 असि१खेटक२लौ तव महिष अण्ण, दोर्यो खल सम्मुह अतुल दण्ण  
 देवी तस मुक्किय बान दोय२, असि१चर्म२गिरे भुव खंडहोय २३९  
 तव ब्रह्मअस्त्र१जपि असुर तत्थ, सँक्रोध तज्यो तन इक१समत्थ

१ तोभी २ शीघ्र ३ क्रोध करके ॥ २३२ ॥ ४ मार्ग रोककर जब ४ घेरने लगा  
 तब देवी ५ अट्टाट्ट करके (उच्चस्वर से) हसी उस हास्य से ७ सके हुए लाखों  
 यीर निकले ॥ २३३ ॥ उन गणों ने आज्ञा सुनकर ८ क्रोध करके महिषासुर  
 के मंत्री को मारकर ९ भयूर युद्ध किया ॥ २३४ ॥ तब सेना को १० पर्यंत के  
 ऊपर बुलाकर ११ क्रोध से १२ यह तेरा बल नहीं है १३ ब्रह्मा के वर को  
 बलवान् जान ॥ २३५ ॥ १४ उस वर की महिमा ब्रह्मांड में है उससे तू १५ बि-  
 ना स्त्री के अन्यो से अवध्य हुआ है स्त्री से अवध्य नहीं हुआ है यह कह  
 कर १६ बाण १७ शीघ्रता से ॥ २३६ ॥ एक १८ बाण देकर सारथी को १९  
 मुर्दा (मृतक) कर दिया २० दो बाण २१ खोदी आज्ञावाले को ॥ २३७ ॥  
 दुष्ट ने २२ चेत पाकर २३ देवी ने भी मानों कालदंड के समान २४ छुरपा के  
 आकारवाला बाण देकर २५ धनुष के दो टुकड़े कर दिये ॥ २३८ ॥ २६ बाल  
 २७ घमंड से ॥ २३९ ॥ २८ क्रोध सहित एक तिनका लेकर छोड़ा है राजा

आलिंगनादितिन्हकियस्वअर्थ,सिवतदपि टरे द्विजंगिनि समर्थ२५७  
 जो सुद्धभाव सिवको न जानि, तहँ मुनिन सापदिय कोप तानि॥  
 अर्बुद अचलेस्वर लिंग एस, हुँत गिरहु टूक व्है भूपदेस ॥ २५८  
 लग्गे यह अक्खंत गिरन लोक, साकंप भुम्मि हुव सबन सोक॥  
 दै जान लग्गे पब्बय दरार, देवन गन पहुँचे हुँहिन द्वार ॥ २५९ ॥  
 अर्ज कहिय चलहु मो जुत असेस, मिलि तुष्ट करहु कोपित महेस ॥  
 जोलों त लोक व्है प्रलय जाय, और चलहु करै तोलों उपाय ॥ २६० ॥  
 ब्रह्मादि अमर तब सब बिहाल, करि सर्ग सोक आये कृपाल ॥  
 अचलेश्वर नुँति कर व्है अधीन, कछुकाल कहि सिव तुष्टकीन २६१  
 बुल्लये हर मोमन निर्विकार, दिय साप तदपि बिप्रन उदार॥  
 मम लिंग छुँयो लिय तदपि मौन, कामाँतुर रोकी स्वकिय क्यौन २६२  
 मै दहन बालखिल्लयन समर्थ, पै बिप्र हनै व्है बेद व्यर्थ॥  
 तुम अब उपाय यह करहु त्रस्त, मम लिंग अमर अर्चहु समस्त २६३  
 तब लिंग विष्णु १ धातौ २ समेत, पूज्यो सब देवन हित उपेत॥  
 मुनि बालखिल्लय मुख उचित मानि, अर्चन हुव लिंगहि तँदनु आनि  
 पुनि कहि सत १०० रुद्रक जप प्रसिद्ध, उतपात लग्गे तब मिटन ईद्ध  
 तँहँ लिंग बहुरि थप्पिय त्रि३ नैन, देवन पुनि लग्गे इष्ट दैन २६५  
 तब सुनत कहिय यह लिंग तोर, दलिहै प्रभु छुवतहि पाप दोर २६६

१ बालखिल्लय मुनियों को समर्थ जानकर शिव उन स्त्रियों से टल गये ॥ २५७ ॥ शिव के २ उस शुद्धभाव को नहीं जानकर ३ शीघ्र गिरजाओं ॥ २५८ ॥ ४ यह कहते ही ५ भूमि घुजने लगी ६ देवता ब्रह्मा के द्वार पर गये ॥ २५९ ॥ ७ ब्रह्मा ने कहा ८ कोप किये हुए महादेव को ९ प्रसन्न करो १० शीघ्र चलो ॥ २६० ॥ ११ सृष्टि का शोक करके १२ स्तुति करके १३ शिव को प्रसन्न किये १४ स्त्रियों ने मेरे लिङ्ग का स्पर्श किया तब तक मैं मौन रहा उन मुनियों ने १५ काम से आतुर हुई १६ अपनी स्त्रियों को क्यों नहीं रोकी ॥ २६१ ॥ हे देवताओं तुम सब मेरे लिङ्ग की १७ पूजा करो ॥ २६२ ॥ १८ ब्रह्मा १९ हित सहित २० आदि २१ जिस पीछे शिवलिङ्ग का पूजन होने लगा है ॥ २६३ ॥ २२ बड़े हुए उत्पात मिटने लगे २३ महादेव ने ॥ २६४ ॥ पापों के २४ फैलाव का नाश करेगा

मख<sup>१</sup>दान<sup>२</sup>आदि सब होय मोघ, उद्धरिहै पापिन सतत ओघ २६६  
 मत इक रुचै तबतो महेस, इहि ठंकै पविकरि इंद्र एस ॥  
 स्वीकृत सुहि किन्नी हर समथ, तब ठंक्यो पवि करि लिंग तथ  
 सो वज्र तदपि लहि लिंग संग, कर छुवत करत भव पाप भंग ॥  
 जो तँहँ तँपस्य सिवरति जाय, नैवेद्य नये जवमय चढाय ॥२६८॥  
 सो बहुरि जन्म न लहै सुजान, बलि तँहँ द्विजभोजन जव विधान  
 जवजिहि प्रमान द्विज उदर जाय, पूरुख तितेहि जुग स्वर्ग पाय २६९  
 जवसँतू दानहु उचित जतथ, सब पुण्य निर्दोषनतै समथ ॥  
 पापी इक अगै भीख पत्त, इक<sup>१</sup>कुँडव सँक्तु किन्नै इकत्त ॥२७०॥  
 कुँष्टादि रोग बहु तास काय, खल इम सक्यो न वह सक्तु खाय ॥  
 अचलेसलिंग ढिग जल निवान, बिनु भक्ति न्हाय तँहँ वह विमान  
 करि सक्तु गंठि उपधानँ कूर, परिगो वह निद्रा पाप पूर ॥  
 घृत गंध खोजि मग सुंघि घेर्यै, सक्तुन तिन्ह लैगो सारमेय २७२  
 वह पुण्य सक्तुभवं हुव अछेह, जगि दुष्ट लख्यो निज दिव्यदेह ॥  
 उपज्यो विरमय करि अति अनंद, मरिगो सु अंतुल लहि हर्ष मंद २७३  
 नृप सो विदर्भ हुव भीम नाम, लीनों जातिस्मर वपु ललाम ॥

१ व्यर्थ होकर यह लिंग पापियों के समूहों का २ नि-  
 रन्तर उडार करेगा ॥ २६६ ॥ हे महादेव आपके मत में रुचै तो इस लिंग को  
 इंद्र ३ वज्र से ठंकदेव ४ स्वीकार किया ॥ २६७ ॥ वज्र है ५ तोभी लिं-  
 ग के संग से ६ संसार के पापों को नाश करता है ७ ऋगुण मास में ८  
 नवीन जवों का नैवेद्य चढावें ॥ २६८ ॥ ९ पुनि १० जितनी गिनती के जब  
 ब्राह्मणों के पेट में जायें ॥ २६९ ॥ ११ जवों के सातू का दान भी जहां पर उ-  
 चित है, पुण्यों के सब १२ कारणों से यह बलवान है, एक पापी आगे भीख  
 मांगता हुआ वहां पूजा १३ चारमुष्टि अथवा दो पस्सी (वत्सीस तोला भर  
 वस्तु को कुंडव कहते हैं) भर १४ सक्तु उसने इकट्ठा किया ॥ २७० ॥ उसके शरीर  
 में १५ कोड आदि रोग थे इससे वह सातू नहीं खा सका १६ बिना ज्ञान ॥ २७१ ॥  
 सातू की गांठ को १७ उसीसा (तकिया) बनाकर १८ जिसकी गन्ध आती थी  
 उसको सोधकर १९ कुत्ता ले गया ॥ २७२ ॥ २० सातू से पैदा होनेवाला  
 २१ अत्यन्त हर्ष से वह मूर्ख मर गया ॥ २७३ ॥ २२ वह कुट्टी विदर्भ देश का भीम  
 नामक राजा हुआ २३ पूर्व जन्म को स्मरण करनेवाले ने सुन्दर शरीर पाया

दमयंतिजनकं जिह्वं नृप उदार, सुमिरयो सु पूर्वभव पुण्य सार२७४  
 अर्बुद प्रति फग्गुन सतत आय, सद्धत भयो सु सिवव्रत सुहाय ॥  
 उपवास१निसा जागर२उपेत, सो जवन सक्तु हाटक समेत२७५  
 दै द्विजन बहुरि पसु१पच्छि२पुष्ट, तँहँ करतभयो सब सक्तु तुष्ट ॥  
 यहलखिगालवमुनिप्रमुखआय, पुच्छ्योनृपविस्मयसवनपाय २७६  
 तव सक्ति अर्वा१निधन२देन ताम, कहि सकतुदान तँहँ कोन काम ॥  
 नृपकथिते पूर्वभव सुनि निदान,सब सकतु दैनलग्गो सुजान२७७  
 असेँ अचलेश्वर तत्थ आहि, चिंतिय तिन गंगा मिलनचाहि ॥  
 गिरिजाहु न जानै जिम प्रगूढ, रचि जन्हुसुता बिच प्रीतिरूढ२७८  
 आक्खिय नंदीमुख गनन एह, इक कुंड सुजल विरचहु अछेह ॥  
 करिहौं तप जलविच कतिक काल,बहुजाहु रचहु ताँतें विसाल२७९  
 सुनि गनन रच्यो तँहँ कुंड स्वच्छ,हुँत सिवें प्रविष्ट हुव कपटदच्छ ॥  
 करि तप मिस गंगा भोगकाम,जलमग्न भये हर अष्ट८जाम२८०  
 गिरिजा भय संकित गुप्तवास, लग्गे ति<sup>३</sup> करन गंगा विलास ॥  
 सिवचिंतित गंगा तँहँ सुभाय,अनुभूतें सुरत सुख कियउ आय२८१  
 सुनि नारद कोउक काल माँहि, निरखे तँहँ आय रु रुद्र नाँहि ॥  
 करि जोगध्यान तवलखि त्रिकाल,जल देखे गंगारत जटालें२८२

दमयंती (नलकी स्त्री) का १ पिता उस राजा ने २ पूर्व जन्म के पुण्य को याद करके ॥ २७४ ॥ आयू पर कालगुन महीने में ३ निरन्तर आकर ४ जागरण सहित ५ स्वर्ण सहित जब का सक्तु ॥ २७५ ॥ ६ ताजे मोटे करके ७ सक्तु से प्रसन्न किये = आदि आकर राजा से पूछा ॥ २७६ ॥ कि तेरी शक्ति ९, भूमि और धन देने की है १० तहाँ सक्तु देने का क्या काम है? राजा का कहाहुआ १२ पूर्वजन्म का १३ कारण सुनकर ॥ २७७ ॥ १४ अचलेश्वर नामक शिव तहाँ हैं उन्होंने गंगा से मिलना चाहा १५ पार्वती नहीं जाने ऐसे १६ बहुत गुत १७ गंगा में प्रसिद्ध प्रीति रचकर ॥ २७८ ॥ नन्दी को? = आदि लेकर गणों से कहा ॥ २७९ ॥ २१ कपट करने में चतुर २० महादेव उस कुंड में १९ शीघ्र बुसे २२ गंगा से भोग करने की कामना से तप का मिस करके २३ आठों पहर ॥ २८० ॥ २४ पार्वती के भय से २५ ते (शिव) २६ अनुभव करके ॥ २८१ ॥ २७ शिव को गंगा में स्नान देखे ॥ २८२ ॥



बहुवाणवशे अर्जुनमाहात्म्य ] तृतीयराशि—पष्ठिमयूख (१०७५)

दुर्गासन सो सब कहि उदंत, स्वच्छंद गये अजसूनु संत ॥  
 त्रिनयन गंगारत सुनत ताम्र, गिरिजाहु कुंड अंतर जंगम ॥२८३॥  
 जब कुपित उमाको आत जानि, बुल्ले गंगाप्रति सिव सुवानि ॥  
 जान्हवि तू याके समुख जाय, नुति विरचि लेहु जिमतिम मनाय  
 मन कुद नतो यह तोहि मोहि, छिप्राहि कछु दैहैं साप छोहि ॥  
 तब गंगा सम्मुह जाय तास, करजोरि कह्यो करि नुति प्रकास ॥  
 दुर्गा मैं जानी तब निदेसै, मनरलै रु बुलाई यहँ महेस ॥  
 जो मैं तब सम्मत जानती न, आती न इहाँ तो व्हे अधीन ॥२८६॥  
 यह सुनत दया गिरिजाहु आनि, जौन्हवि सन अखिख्य दीन जानि  
 भैगिनी इक कैपटी गर्भ टारि, वर ओर लेहु इच्छित विचारि ॥२८७॥  
 तब देवनदी करि प्रनति ताहि, सयँ जोरि कह्यो बहुविधि सिराहि ॥  
 मैं जदपि देवि दुर्भग अमत्र, कथनीय तदपि तब पतिकलत्र ॥२८८॥  
 यामैं प्रसाद तुम करहु एहु, दैयितहिँ इकदिन तो मोहि देहु ॥  
 मधुसूक्त चउदसि १४ युनिसेँ माँहि, अप्पहु त्रिनैन १ इक १ इष्टे आँहि  
 इहिँ कुंड रमे मोसंग ईसँ, उत्तम सु होहु तीर्थन अधीस २ ॥  
 यामाँहि सदा अव मम निवास, सुनिद्वै २ वर दुर्गा दिप सँहास २९०  
 मिलिकै गंगासन मोदमान, थिर ताहि करी तिहिँ कुंडथान ॥  
 ईसँहिँ लखि लज्जित गँउरि एह, गहि लाई गर्जित स्वीयँ गेह २९१

१ पार्वती से सब २ वृत्तान्त कह कर ३ स्वतंत्र चिहार करनेवाले ४ ब्रह्मा  
 के पुत्र (नारद) ५ शिव को गंगा में रत सुनकर ६ तहाँ पार्वती भी कुंड  
 में उ गई ॥ २८३ ॥ ८ हे गंगा ९ स्तुति करके ॥ २८४ ॥ १० शीघ्र ही ११ स्तुति  
 करके ॥ २८५ ॥ १२ मैंने जाना कि तेरी आज्ञा लेकर महादेव ने मुझे बुलाई  
 है ॥ २८६ ॥ १३ पार्वती को दया आकर १४ दीन जानकर गंगा से कहा कि १५ हे य  
 हिन १६ पति (महादेव) से गर्भ रहने के वर को छोड़कर अन्य जो वर तुझ  
 को वांछित हों वे सो ले ॥ २८७ ॥ १७ गंगा ने नम्रता करके १८ हाथ जोड़ कर १९  
 दुहाग (दुर्भाग्य) का पात्र हूँ तो भी तेरे पति की २० स्त्री कहलाती हूँ ॥ २८८ ॥  
 २१ प्रसन्नता कर कि वर्ष भर में एक दिन तो २२ पति मुझे दै २३ चंद्र सु-  
 दि चतुर्दशी को २४ दिनरात शिव मुझे दै यही मुझे २५ प्रिय है ॥ २८९ ॥ २६ शि-  
 व २७ हास्यपूर्वक ॥ २९० ॥ २८ शिव को लज्जित देखकर २९ पार्वती ३० अपने घर में



जवतैं सिव गंगाकुंड३३जत्थ, सद्धिय विधेय तँहँ प्रीतिसत्थ ॥  
 पुनिनृपकामेस्वरलिंग३४पत्त, त्र्यंबकहिँपुज्जिकियबिहिततत्त ॥२९२॥  
 पहिलैं जब दर्पक संभु पुट्टि, लगि लोल दये सब रोप रुट्टि ॥  
 गंगाधर कासी१तव जगाम, करिसंग तदपि छोरेन काम ॥२९३॥  
 इहिँ क्रम प्रयाग२केदार३आय, नैमिस४रु भद्रकर्णक५निर्काय ॥  
 पुनि जंबुमार्ग६पुष्कर७प्रभास८, दमजंगल९आये सिव उदास२९४  
 गोकर्ण१०रु गंगाद्वार११गैल, बलि पत्त बटेस्वर१२चलिय बैल ॥  
 गयसिर१२इम भजिभाजि तीर्थ ग्राम, त्रिनयन रंमर देख्यो संग ताम  
 अर्बुद जब आये श्रमित आप, पहुँच्यो तँहँ धँनु करि सज्ज्य चाप ॥  
 उपविष्ट अवनि दे जानुँ एक१, संधाय विसिखँ अँच्यो सटेक२९६  
 त्रिनयन जब जान्यो यह तजैन, नासन तव खोल्यो गोधिनैन ॥  
 तासौ कडि पावँक जाय ताहि, द्रुत भस्म कस्यो यह सस्त्र दाहि२९७  
 पतिकौ रति यो तव जानि प्लुष्ट, तपकारि अखंड किय ईस तुष्ट ॥  
 हायैन हजार१०००वित्त महेस, बुल्ले रति मंगहु वर विसेसा२९८  
 भाखिय रति मोपति भस्म भान, वपु अक्षत उठहु सधनु१बान ॥  
 तव ताहि दयो वर यह त्रिनैन, उठ्यो जगि सोवत मनहु मैना२९९  
 कर धनु १ सर २ लहि निज रूप १ काय २,  
 परिगो उठि लज्जित संभु पाय ॥

१ गया २ महादेव को पूज कर ॥ २९२ ॥ ३ कामदेव  
 ने शिव के पीछे लगकर क्रोध करके ४ चपल ५ पाण दि  
 ये ६ शिव ७ काशी गये ८ तोभी कामदेव ने साथ नहीं छोडा ॥ २९३ ॥  
 ९ स्थान ॥ २९४ ॥ १० शिव का वाहन ११ गया तीर्थ १२ तीर्थों के समूहों में १३ शिव  
 ने कामदेव को तहाँ भी साथ ही देखा ॥ २९५ ॥ १४ पुष्पधनु (कामदेव) ने  
 धनुष सज्ज करके १५ भूमि के आसन पर एक १६ घुटना देकर १७ पाण को  
 सन्धान करके खँचा ॥ २९६ ॥ १८ शिव ने जाना कि १९ ललाट का (ती-  
 मरा) नेत्र खोला २० अग्नि निकलकर ॥ २९७ ॥ २१ दग्ध जानकर २२ वर्ष  
 ॥ २९८ ॥ रति ने कहा कि मेरा पति भस्म २३ प्रतीत होता है सो २४ चत  
 रही शरीर होकर धनुष पाण सहित उठै २५ कामदेव मानों सोकर उठा  
 होवे ऐस उठा ॥ २९९ ॥

सिव तब निदेस दिय प्रीति संग, अधिकार भजहु निज जाहु \*अंग  
 \*स्मर तहँ बनाय सिवलिङ्ग सुख, प्रभु प्रीति अर्थ थप्यो+प्रबुद्ध ॥  
 इम तहँ कामेस्वर ३४ ख्यात ईस, मन लाय तेहु पूजे महीस ॥ ३०१ ॥  
 इक श्वेर लह्यो जरि काम अंग, आग्रह बस दूजै भो अनंग ॥  
 पुनि मार्कंडेयाश्रम ३५ नृपाल, किय सब विधेय लाखि देस काल ॥  
 अगँ मृकंड मुनिकै अलुद्ध, सुत हुव मार्कंडेयाख्य सुद्ध ॥  
 बालक सो हायन पंच ५ बेस, देख्यो अभ्यागत इक द्विजेस ॥ ३०३ ॥  
 सामुद्रिक जानत हो जु सर्व, अर्भक निहारि सुहस्यो अखर्व ॥  
 अखिय मृकंड किम हसन आस, तब अतिथि कह्यो सब हेतु तास ॥ ३०४ ॥  
 सामुद्रिक मैं हों मैं सुजान, अर्भक तव देख्यो रूपवान ॥  
 लच्छन पाके बपु वे लखात, जिन तैं अजरी १५ मर होय जात ॥ ३०५ ॥  
 किय इक कुलच्छन विधि कुभास, मरिहै सि सु तातैं छट्ठ मास ॥  
 द्विज गो सु यहै कहि ईष्ट देस, सोचे मृकंड लहि दुख विसेस ॥ ३०६ ॥  
 अखिय मुनि बालक सों उंदत, सबको अभिवादन करहु संत ॥  
 धी धारि सोहि सबको सुधाम, पट्टे बाल करन लग्यो प्रनाम ॥ ३०७ ॥  
 इक समय सप्त ऋषि तत्थ आय, परिगो सु बाल तिन्ह प्रनमि पाय  
 तिन्ह कहिय होहु दीर्घायु तात, पुनि चलन लग्यो रहि रैंति प्रात ॥ ३०८ ॥

\* हर्ष के साथ अथवा सम्वाधन अर्थ में हे कामदेव. \*\* कामदेव ने+पंडित ?  
 इस कारण वह कामेश्वर प्रसिद्ध हुआ. कामदेव ने एक बेर जलकर पीछा  
 शरीर लिया परन्तु २६ ठ के वश होकर दूसरी बेर जलकर अङ्गरहित हुआ.  
 ३ निर्लोभ ४ मार्कंडेय नामक पुत्र हुआ ५ पांच वर्ष की अवस्था में. वह अ-  
 भ्यागत ६ सामुद्रिक शास्त्र जानता था जो ७ बालक को देखकर ८ बहुत  
 हसा ९ हसना क्यों हुआ ॥ ३०४ ॥ १० अष्ट जाननेवाला ११ तुम्हारे घा-  
 लक को रूपवान देखा १२ इसके शरीर पर वे लक्षण दीखने हैं कि जिनसे  
 १३ जरा (बुढ़ापा) रहित और १४ अमर हो जाये ॥ ३०५ ॥ १५ ब्रह्मा ने १६  
 खोटी प्रान्तिवाला एक कुलच्छन कर दिया है जिससे यह बालक १७ अय-  
 से छठे महीने मर जावेगा १८ जहाँ अपनी इच्छा थी वहाँ गया ॥ ३०६ ॥  
 मृकंड मुनि ने बालक से यह १९ वृत्तान्त कहकर कहा कि हे सन्त तु सब  
 को २० प्रणाम किया कर २१ इस बात को बुद्धि में धारण करके २२ चतुर  
 बालक ॥ ३०७ ॥ २३ रात्रि वहाँ रहकर प्रभात को जाने लगे ॥ ३०८ ॥

धरि ताहि अंगिरा जोगध्यान, पंचम<sup>५</sup>दिन जान्यौं सिसु अप्रान॥  
 कहि सबनदयो तिन्ह लखि त्रिकाल, बुल्ले तुम जावहु बहुत बाल३०९  
 छिप्रहि तस आयो आयु छेह, दिनच्यारि४कहि तजिहैं सु देह ॥  
 सप्त७हि मुनि मुनि करि बाल सोक, लै ताहि गये तव सत्यलोक३१०  
 सप्त७न प्रनाम किय प्रथम सुद्ध, पुनि कियउ बाल बंदन प्रबुद्ध॥  
 बहुजीवन आसिख दिय विरंचि, मुनि बैठे ते हिय अमृत सिंचि३११  
 विधि पुच्छिय आगमं हेतु बत्त, तिन प्रनति पुब्ब किय अरज तत्त॥  
 यह सिसु मृकंड द्विजको अनाथ, सोवैं सु कालके उदर साथ३१२  
 हम भुल्लि कहयो चिरजीवि होहु, सुरज्येष्ठ अर्प किय हुकमसोहु॥  
 मिथ्यापन तातैं निज मिटाय, पोतैंक बचैं सु करिये उपाय३१३  
 मुनि दुहिनैं कहिय अब तजहु सोक, लहिहैं यह जीवन ज्यौं त्रिलोक  
 इक१कल्प आयु इम तिहि दिवाय, पहुँचायो पोतैं सु निजनिकाय३१४  
 द्विजसौं हुव मार्कण्डेय दच्छ, अर्बुदं तप सद्धिय सतत अच्छ ॥  
 जिहि आश्रम नृप रमनेस जाय, करि सब विधेय किय पूतकाय३१५  
 उद्दालक थप्पिय लिंग३६एक, बलि तत्थ गयो नृप सह विवेक॥

उनमें से अंगिरा ने योगध्यान से जाना कि आज से पांचवें दिन यह बालक  
 १ मरजावेगा २ भूत, वर्तमान और भविष्यत् के ज्ञानवाले ने अन्य ऋषियों से  
 कहा कि तुमने तो बालक को बहुत जीवी होने का आशीर्वाद दिया है ३०९।  
 और इसकी आयु का छेह तो ३ शोध ही आगया ॥ ३१० ॥ ४ ब्रह्मा ने उस  
 बालक को बहुत जीने का आशीर्वाद दिया जिसको सुनकर सप्तऋषि अपने  
 हृदय को माना अमृत से सींचकर बैठे ॥ ३११ ॥ ब्रह्मा ने ५ आने का ६  
 कारण पूछा ७ नम्रता पूर्वक ॥ ३१२ ॥ ८ हे ब्रह्मा ९ आपने भी वही आज्ञा  
 की है १० बालक बचै सो उपाय करो ॥ ३१३ ॥ ११ ब्रह्मा ने कहा कि अब  
 शोक छोड़ दो जैसे तीन लोक आयु लेते हैं तैसे ही यह लेवेगा (शास्त्रों में  
 त्रिहृष्य नैमित्तिक और महा ये तीन प्रकार का प्रलय माना है इनमें मनुष्यों  
 का जीवन मरण तो नित्य प्रलय है और तीनों लोकों का मिटजाना नैमित्तिक  
 प्रलय है और सम्पूर्ण ब्रह्मांड का नाश होकर प्रकृति रूप होजाने को महाप्रलय कहते हैं सो यहां त्रिलोकी के समान आयु कहने से प्रलयान्त  
 अर्थात् एक कल्प की आयु होना कहा) १२ बालक को अपने घर पहुँचाया  
 ॥ ३१४ ॥ १३ चतुर १४ आहू पर्वत पर १५ निरन्तर १६ शरीर को पवित्र

रुचिसौ तँहँ संकर पुज्जि राय, तिम सिद्धलिंग ३७ पहुँच्यो हिताय  
 सिद्धन वह थप्पिय परम सुद्ध, पूज्यो सु भूप विधि जुत प्रबुद्ध ॥  
 तस निकट कुंड इक विमल तोर्य, हितकरि तँहँ न्हायो प्रनत होय  
 रमनेस गयो गजद्रह ३८ वहोरि, जँहँ न्हाय १ दान २ किय प्रीति जोरि ॥  
 अगँ सब दिग्गज व्है इकत्त, तप किय ऐरावत प्रमुख तत्त ॥ ३१८ ॥  
 पुनि देवखात ३६ भूपति पधारि, किय न्हाय १ दान २ अति पुण्यकारि  
 खोद्यो सब देवन पुण्य खातँ, जँहँ व्है तदनंतर अगग जात ॥ ३१९ ॥  
 श्रीकंठलिंग इक अगग सुद्ध, व्यासावतार थप्पिय प्रबुद्ध ॥  
 अध सप्त ७ भवजँ व्है जँहँ अतीतँ, पुज्जिय वह व्यासेस्वर ४० पुनीत  
 बलि पत्त गोतमाश्रम ४१ प्रवीर, धी सुद्ध करे तँहँ उचित धीर ॥  
 अर्बुद मुनि गोतम अगग आय, सिवहित किय दुस्सह तप सुभाय  
 बहु अर्बुद कष्ट इम सहत विप्र, छिति भैदि कढ्यो इक लिंग छिप्र  
 दिय गुंप्तगिरा तँहँ यह निदेस, आराधहु मुनिवर लिंग एस ॥ ३२२ ॥  
 अकिखय मुनि सो सुनि भक्ति आस, ठुँपकेतु करहु यँहँ सततँ वास  
 किन्नी सुहि स्वीकृतँ व्योमकेस, अधिपति तँहँ सच्चिय विधि असेस  
 प्रतिभा १ तँहँ गोतमकी हु पुण्य, अर्चतँ जिहिँ पावत फल अगुण्य ॥  
 सुभ विमल कुंड २ ताकै समीप, मज्जनँ सुख तत्थहु किय समीप  
 व्है श्राद्ध गयाफल दैनहार, इम इंदुग्रहनँ बिच फल अपार ॥  
 अरु देत तत्थ जो तिल उमाहि, तिलसंख्या हायनँ स्वर्ग ताहि ३२५  
 रमनेस सबै करि प्रीति रत्त, पुनि कुलसंतारन ४२ तीर्थ पत्त ॥

क्रिया ॥ ३१९ ॥ ३२९ ॥ १ पंडित ने २ निर्मल जल ॥ ३१७ ॥ ३ ऐरावत  
 आदि ने ॥ ३१८ ॥ ४ पवित्र खड्ग ॥ ३१९ ॥ ५ सात जन्मों के पाप जहाँ  
 धीतते हैं ॥ ३२० ॥ ७ बुद्धि को लुब्ध करके ॥ ३२१ ॥ ८ वर्ष ९ अग्नि को भे-  
 द कर १० शीघ्र ११ आकाशवाणी ने यह आज्ञा की ॥ ३२२ ॥ १२ हे महा  
 देव १३ निरन्तर वास करो १४ स्वीकार की १५ महादेव ने १६ राजा रमने-  
 स चहुवान ने ॥ ३२३ ॥ १७ छूर्ति १८ पूजते हैं वे १९ स्नान आदि ॥ ३२४ ॥  
 २० चन्द्रग्रहण में स्नान करने से २१ जितने तिल हों उतने वर्ष स्वर्ग में वा-  
 स करता है ॥ ३२५ ॥

जैहँ न्हान बनै जो पुण्यतोय, इकबीस२१ पुरुख उदार होया॥३२६॥  
 इक भो अप्रस्तुतनाम अगग, महिपाल सु लग्गो पाप मगग ॥  
 नहिँ पढन दान २ जप ३ जजन ४ नीति ५, परधन कौं जिमतिम लैन प्रीति  
 विप्रादि बरन ललनै बुलाय, रखै तिन लोछुप नीचराय ॥  
 इकनिस दिय पितरन स्वप्न याहि, चंडाल न डारहु नरक चाहि ३२८  
 सुख स्वर्ग लयो हम करि सुकर्म, वह क्यों बै बिगारन भजि अधर्म ॥  
 यह सुनत भूप हिय बोध आय, प्रातहि जगि रोयो कष्टपाय ॥ ३२९ ॥  
 अखिखय बुलाय विप्रन उदँत, मम पितरन वहै किम दिवँ महंत ॥  
 द्विज मुनिन कहिय है यह दुराप, पापिष्ट करयो तैं सततँ पाप ३३०  
 करि तीर्थ पूँत वहै सह कलत्र, सुभ करहु तँदनु पितृमेध सत्र ॥  
 जो सुनत चलयो तीर्थन जनेसैं, द्रुत न्हाय परसि सब पुण्यदेस ३३१  
 आयो पुनि अर्बुद तजि अधर्म, किय कुल संतारन उचित कर्म ॥  
 ततकाल बिमानन बैठि तास, सब पितर करत हुव स्वर्गबास ३३२  
 निजदेह सहित सोहू नरेस, अमरालय गो लाहि पुण्यएस ॥  
 रमनेस तत्थ चहुवानराय, विधि श्राद्ध दान २ मुख सब बनाय ३३३  
 पुनि रामतीर्थ ४३ पहुँच्यो पुनीत, पहुँ सदन भो तँहँ विहित प्रीत ॥  
 अर्जुन जदुवंसी भूप अगग, आत्रेयदँत लै वर उदगग ॥ ३३४ ॥  
 पुनि धेनु अर्थ जमदग्नि मारि, गो खल लगाय निजवंस गारि ॥  
 मुनि नारि रेनुका राम माय, सहै गोन करयो सार्धौ सुभाय ३३५

१ पवित्र जल में २ राजा ३ स्त्रियों को बुलाकर ४ कामी, उसको ५ अथ क्यों मिटाता है ६ ज्ञान आकर ७ स्वप्न का वृत्तान्त कहा कि हे महन्तो मेरे पितरों को ८ स्वर्ग कैसे मिले ९ दुर्लभ है १० तुने निरंतर पापकर्म किया है ॥ ३२० ॥  
 ११ पवित्र होकर १२ स्त्री सहित शुभ कार्य करके १३ जिस पीछे पितृमेध नामक १४ यज्ञ कर १५ नरेस ॥ ३३१ ॥ १६ कुल का उद्धार करने को १७ तुरन्त ॥ ३३२ ॥ १८ स्वर्ग में गया ॥ ३३३ ॥ १९ राजा रमनेस २० दत्तात्रेय से वर लेकर ॥ ३३४ ॥ २१ गौ के अर्थ जमदग्नि मुनि को मारकर २२ परशुराम की माता २४ पतिव्रता के स्वभाव से २३ पति के साथ जल गई ॥ ३३५ ॥

पुनि राम आय अर्बुद महंत, सखिय तप सिवाहित पुनत संत ॥  
 सत१०० अर्बुद जात व्है सिव पूसन्न, पुच्छिय मुनि क्योँ यँहँ तप पुपन्न  
 सुनि राम कहिय मैं अरि असेस, मारोँ सु अस्त्र अप्पहु महेस ॥  
 तव दिन्न पासुपत अस्त्र ताहि, इतरहुँ सिव अखिय दित उमाहि ३३७  
 इहिँ अस्त्र जोर तू व्है अजेय, सत्रुन हनि सबहु इष्ट श्रेय ॥  
 पुनि तव आश्रम ढिग यह निपान, सुभ रामतीर्थ ४३ वजिहै सुजान ३३८  
 मिलि अत्य पुण्यमा १५ उर्ज मास, जे आढ करै सुनि पुण्य जास ॥  
 पितृमेध सत्रफल मनुज पाय, जे व्है अजेय स्वर्लोक जाय ॥ ३३९ ॥  
 करि रामतीर्थ ४३ सब विहित काज, गो कोटि तीर्थ ४४ कर्णाट राज ॥  
 त्रयकोटिलखपंचास ३५ ००००००० जुक्त, एअज्जछेलसवतीर्थ उक्त  
 पुहवो जब होवत कलि प्रचार, भजिजात तीर्थ तव पापभार ॥  
 ठहरै नहिँ कलि जुग च्यारि ४ ठाम, पुढकर १ अरु अर्बुद २ पुण्य धाम ३४१  
 कुरुखेत्र ३ तथा कासी ४ प्रदेश, लगै न इहाँ कलिकाल लेस ॥  
 तव अर्धकोटि ५०००००० कासी रहंत,  
 कुरुखेत्र कोटि इक १०००००० तथि कहंत ॥ ३४२ ॥  
 त्यों निवसत पुढकर कोटि १००००० तथि,  
 अर्बुद पुनि जावत कोटि १०००००० इत्य, ॥  
 थित ते रहंत जिहिँ पुण्यथान, सो कोटि तीर्थ ४४ कहिये सुजान ३४३  
 करि तँहँ विधेय फल कोटि पुण्य, पहुँच्यो नृप चंद्रोद्देद ४५ पुण्य ॥  
 पहिलैं संसि १ दिन करै २ सैन पाय, हरि राहु सीस कटिय हिताय ३४४  
 गहिकै पन दोउन २ कग्न ग्राम, यह जानि विधुतुंद सज्ज आस ॥

विशेष नम्र होकर सीस चर्प गये शिव ने प्रसन्न होकर पूछा किहे मुनि तप  
 में क्यों लगा है ॥ ३३९ ॥ ३ परशुराम ने कहा कि मैं ४ सय शत्रुओं को  
 मारें ५ और सी ॥ ३३७ ॥ ५ अपना श्रेष्ठ प्रिय कार्य सोधना ७ जला-  
 शय ॥ ३३८ ॥ ८ कार्तिक मास की पूर्णमासी के दिन ९ यज्ञ का ॥ ३३९ ॥  
 १० चन्द्रमा और १ सूर्य की सैन से विष्णु ने देवताओं के हित के लिये रा-  
 हु का भस्मक काटा था ॥ ३४४ ॥ जब चन्द्र सूर्य का प्रास करने का प्रण ले-  
 का १२ राहु सज्ज १३ हुआ

लै कछु उद्धर्तन लेप पानि, उपजावहु अंगैज जत्न आनि ॥३६२॥  
 रचिहै जिम जैसो रूपवान, सुत तैसो व्हैहैं अति सुजान ॥  
 औरैससों जामैं गुन अपुब्ब, पूजा बह लहिहै सबन पुब्ब ॥२६३॥  
 मृडै इम अनेक कहि लिय मनाय, लाये निकाय सुत हरख लाय ॥  
 तबतैं बह तुंगै रु तीर्थ धाम, नगपर ईसानीसिखर ४६नाम ॥३६४॥  
 तहैं द्विजन् पुज्जि मिहिकावतीस, आयो सु ब्रह्मपद ४७लै असीस ॥  
 पहिलैं पधारि अर्बुद प्रजसैं, अचलेस दरसहित सुरै असेस ॥३६५॥  
 सुरै मुनिन २सबन तहैं नाय सीस, अकिखय विरंचि सनहे अधीस ॥  
 जासों अकंष्ट व्है मुक्ति जाय, उपदिष्टै करहु असो उपाय ॥ ३६६॥  
 बिधि<sup>१५</sup> सोप्यो बह सुनि सह बिवेक, अर्बुदपर अप्पन चरन एक ॥  
 अरु कहिय छुवहु याकों उदार, हे बिनु प्रयास गति दैनहार ३६७॥  
 अध्वरै १ व्रत २ दान ३ रु जप ४ अनंत, मम अंग्रि गिनहु तिनतैं महंत  
 अंचै इहिं पुण्णाम उज्जभास, बहुरि न लहैं सु जन गर्भवास ३६८  
 व्हैहैं सित १ कृतं जुग २ मिति विहीन, लोहितैं १ त्रेता जुग २ अमिति लीन ३  
 पीवैल १ पुनिद्वापर २ लघुप्रमान ३ भौ असितैं १ कलि २ रु अति अल्पमान  
 करि श्रवन वचन यह दुहिन कोहि, सबहुव कृतार्थ पय पुज्जि सोहि ॥  
 तबतैं सु ब्रह्मपद तीर्थ ४८ तत्त, रमनेसहु पुज्जिय भावरत्त ॥ ३७० ॥

दिन होवेगा १ उवटन का लेप हाथ में लेकर २ पुत्र उपजा ॥ ३६२ ॥ ३  
 उदर से पैदा होनेवाले से भी उसमें अपूर्व गुण होवेंगे और सब से ४ प-  
 हिले पूजा लेवेगा ॥ ३६३ ॥ ५ महादेव इस प्रकार अनेक बातें कहकर ६  
 अपने घर लाये ७ ऊंचों ८ पर्वत पर ॥ ३६४ ॥ ९ मिहिकावती पुर का स्वा-  
 मी रमनेश चहुवाण १० ब्रह्मा ११ सब देवता ॥ ६५ ॥ १२ ब्रह्मा से कहा कि हे  
 स्वामी १३ बिना कष्ट किये ही जिससे मुक्ति होजावे ऐसा १४ उपदेश करो  
 ॥ ३६६ ॥ यह सुनकर विचार के साथ १५ ब्रह्मा ने आनू पर अपना एक च-  
 रण रोपा ॥ ३६७ ॥ १६ यज्ञ, इन सबसे मेरे १७ चरण को बड़ा जानो १९  
 क्रांतिक की पुर्णिमासी को इसका १८ पूजन करै ॥ ३६८ ॥ यह चरण २०  
 सत्ययुग में श्वेत रंग का और २१ प्रमाण रहित होवेगा, त्रेतायुग में २२ ला-  
 ल रंग और २३ प्रमाणवाला, द्वापर में २४ पीला रंग और छोटे प्रमाणवाला,  
 कलियुग में २५ श्याम २६ कान्ति और बहुत अल्प २७ जान पड़ेगा ॥ ३६९ ॥  
 २८ ब्रह्मा का यह वचन सुनकर उस पग को पूज कर सब २९ कृतकार्य हो-



चहुवाणवंशे अर्बुदमाहात्म्य] तृतीयांश—चण्डिमयूख (१०८५)

॥ बसुधैस त्रिपुष्कर ४८ गो बहोरि, जँहँ किय विधेय हिय प्रेम जोरि  
 पहिलैं बसिष्ठ के मुख पुनीत, आये ब्रह्मादिक सुर अभीत ॥ ३७१ ॥  
 विधि पन लिय अर्बुद रहहि जावँ, हम संध्या पुष्कर करहि ताव ॥  
 चाँवि इम बिरँचि पुष्कर चलंत, अटके बसिष्ठ कहि यह उदंत ॥  
 तुम चिरँ करि अँहो जाय तत्र, अंतिसय समीप मख कर्म अत्र  
 तातैं यह पुष्कर बुल्लि तीन ३, प्रभु करहु नित्य संध्या अवीन ३७३  
 बुल्ले तब दुर्मन लखि बसिष्ठ, पुष्करहि ज्येष्ठ १ मध्य २ रु कनिष्ठ ३  
 तबतैं गिरि अर्बुद जानि ताँहि, चहुवान त्रि ३ पुष्कर ४८ पत्त चाहि  
 सावित्रीकुंड ४६ हु तस समीप, मुद सह विधेय किय तँहँ महीप ॥  
 किय तदनु रुद्रहृद ५० विधि विसस, हनि अंधकँ न्हाये जँहँ महेस  
 पुनि पत्त गुहेस्वर ५१ पुण्यस्थान, जँहँ लिंग गुहँ विद्य राजमान ॥  
 सिद्धन जो थपिय अग्न सुद्ध, पुज्यो सु भक्त भूपति प्रबुद्ध ॥ ३७६ ॥  
 अविमुक्त विपिन ५२ पुनि जाय आप, बहु सब विधेय सद्विय अपाप  
 जब अग्न नहुष हुव स्वर्ग ईस, तब आय सँची अर्बुद गिरिस ॥ ३७७ ॥  
 अवि मुक्त विपिन करि तप उदार, पुनि इंद लखो लहि दुख धार  
 तब वर पुलोमजौ दिन्न ताहि, अविमुक्त होहु जन पुजि जाहि ॥ ३७८ ॥  
 भर्ता विमुक्त मैं लहिय जेस, पावहु अससँ नर १ नारि २ लेस ॥  
 वन सोहु पूजि अविमुक्त नाम, दुर्गा महेश्वर ५३ नृप जगाम ॥ ३७९ ॥

गये ॥ ३७० ॥ \* चहुवाण १ पाचत्र २ देवता निर्भय हांकर ॥ ३७१ ॥ ३  
 ब्रह्मा ने नियम लिया कि ४ क्षयतक हम आयु पर रहेंगे ५ तबतक संध्या  
 पुष्कर में करेंगे यह ६ कहकर ७ ब्रह्मा पुष्कर जाने लगे जिनको बहुकुलान्त  
 कहकर बसिष्ठ ने रोका ॥ ३७२ ॥ ९ देरी करके आओंग और यज्ञ का काम  
 १० अत्यन्त समीप है इस कारण से तीनों पुष्करों को यहाँ ११ बुलाकर स-  
 न्ध्या करेंगे ॥ ३७३ ॥ बसिष्ठ को उदास देखकर तीनों पुष्करों को आयु पर  
 बुलालिये १२ पुष्कर को ॥ ३७४ ॥ १३ अन्धक असुर को मारकर ॥ ३७५ ॥  
 १४ पवित्रस्थान १५ गुफा में १६ शोभायमान ॥ ३७६ ॥ १७ अविमुक्त चर  
 १८ आगे जब नहुष १९ स्वर्ग का स्वामी (इन्द्र) होगया था तब २० इन्द्राणी  
 ने ॥ ३७७ ॥ २१ इन्द्राणी ने उस वन को वर दिया कि इसका पूजन करके मनुष्य  
 २२ मुक्त होजाओ २३ कूटद्वपति को मैंने प्राण्य इसी प्रकार २४ सब २५ गया



थप्यो जु लिंग नृप धुंधुमार, पुज्यो सु सद्धि सबविधि प्रकार ॥  
 पुनि जाय महौजसन्हद ५४ प्रवीन, करिन्हान १ आद्वस्तप ३ दान ४ कीर्ति  
 हनि वृत्त इंद भो छवि बिहीन, लहि घोर ब्रह्महत्या मलीन ॥  
 तब जीव कस्यो करि तीर्थ सक्र, निज तेज लहहु अटि अवनिक्र  
 तब तीर्थ करत अर्बुद पधारि, न्हायो सु महौजसन्हद बलारि ॥  
 छिप्राहि कुभा १ रु दुर्गंध २ छोरि, बासँव स्वकांति पाई बहोरि ॥ ३८२ ॥  
 तँहँ न्हाय रु जंबूतीर्थ ५५ आय, सद्धिय बिधेय पढ़ति सुभाय ॥  
 निमि हुव विदेह अगँ नरेस, आयो सु वृद्ध अर्बुद प्रदेस ॥ ३८३ ॥  
 सुनि ताहि गये मुनिजनहु सर्व, एकल भये गिरिवर अखर्व ॥  
 तिनमँ मुनि लोमस भक्ति जुत, तीर्थन प्रभाव वरन्यो बहुत ॥ ३८४ ॥  
 बुल्लयो सु सुनत भूपति विदेह, सठ मै न तीर्थ परसे सनेह ॥  
 अब रूढ़ भयो जरठुत्वं आय, व्है कौनरीति सब तीर्थ हाया ॥ ३८५ ॥  
 सो सुनि मुनि लोमस सदैय सुद्ध, सब तीर्थ बुलाये अद्रि उँद ॥  
 अक्खिय निमिसौ पुनि बचन एह, होवहु न दुखित न्हावहु विदेह  
 जे तीर्थ जंबूदीप माँहि, एकत्र करे ते अत्थ आँहि ॥  
 न्हायो प्रसन्न यह सुनि नरेस, तबतँ सु तीर्थ अर्बुद प्रदेस ॥ ३८७ ॥  
 ततकाल दैन निमिकौ प्रतीति, तँहँ उगगो जंबू तँरु सुरीति ॥  
 तबतँ सु जंबूतीर्थहि ५५ कहात, तँहँ न्हाय २ दान २ किय खूब ख्यात ॥  
 पुनि गंगाद्वार ५६ हु भूप पत्त, करि ध्यान १ न्हान २ बहु दान ३ दत्त  
 अचलेस बुलाई जाहि अगग, मँदाकिनी सु तँहँ सर्ग मर्ग ॥ ३८९ ॥

१ वृत्रासुर को मारकर २ वृहस्पति ने कहा ३ प्रमि  
 चक्र पर फिरकर ॥ ३८१ ॥ ४ बल दैत्य का शत्रु (इन्द्र) ५ शी-  
 घ्र ही ६ खोटी कान्ति ७ इन्द्र ने फिर अपनी कान्ति पाई ॥ ३८२ ॥ उचित  
 ८ मार्ग साधकर ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ अब १० बुढ़ापा ९ सवार होगया ॥ ३८५ ॥  
 ११ क्या सहित १२ आबू पर्वत के ऊपर सब तीर्थों को बुलाये ॥ ३८६ ॥  
 १३ यहाँ पर हैं ॥ ३८७ ॥ १४ जंबू का वृक्ष उगा ॥ ३८८ ॥ १५ गंगा को १६ संगम  
 करने के १७ मार्ग से अचलेश्वर ने पहिले बुलाई थी ॥ ३८९ ॥

आयो कंठेस्वर५७ बहुरि आप, देवी उमा जु थप्पिय दुंराप ॥  
 सो लिंग पुज्जि मन१ काय२ सुद्ध, पहुँच्यो गंगेस्वर५८ पुनि प्रबुद्ध  
 अग्गै उमा१ रु गंगा२ अखर्व, सौभाग्य होइ थप्पिय सगर्व ॥  
 बुद्धी यह१ मै वह२ मै विसेस, उपज्योहि परस्पर वाद एस ३९१  
 हिमगिरिजा अक्खियणै न होहि, सिवलिंग मिलै जिहि अधिक सोहि ॥  
 लग्गी तव खोजन लिंग नब्बय, भूधरजा पायो प्रथम भब्बय ३९२  
 बुद्धिय मिलि मंगहु वामदेव, इच्छित तिहि जे उभय२ एव ॥  
 व्है लिंग विदित यह पापहार, अप्पहु अभीष्ट सो इक १ उदार ॥  
 प्रमदा सउत्तिभव दुक्खपाय, अँचै इहि लिंगहि पूनत आय ॥  
 सौभाग्य१ पुत्र पावै सु अँचै, अप्पहु द्वितीय२वर एह सँचै ॥ ३९४  
 जँपियँ तथास्तु भूतस जत्थ, तवतै कंठेस्वर५७ विदित तत्थ ॥  
 आये बहोरि सुरसरित अँनै, ताकेहु इष्ट वखसे त्रि३नैन ॥ ३९५ ॥  
 तवतै कंठेस्वर ढिगाहि तत्थ, पूकटे गंगेस्वर५८ हू समत्थ ॥  
 करि पूजन तँहँ नृप सुद्धकाय, अर्चन किय कोटीलिंग५९ आय ॥  
 इत्यादि तीर्थ अर्बुद असेस, नमि भक्ति सुद्ध परसे नरेस ॥  
 सुवरनै जिम सोलह१६ ताव सुद्ध, इम दिव्यदेह व्है नृप अलुँद ॥  
 अब श्रीअचलेश्वर८० धाम आय, पूजन बहोरि किय मोद पाय  
 अर्बुद पवित्र१ थिर२ होन अग्ग, मुनिवर वसिष्ठ तप किय सुमग्ग  
 सत१०० अर्द्धतपे फल असन पाय, पुनि द्वै सत२०० जीरन पन्नखाय ॥

१ पार्वती ने खुर्लन लिंग को स्थापन किया था उसको पूजा ३ मुहाग में कौ-  
 न बडी है इस बात की होइ स्थापी ॥ ३६१ ॥ २ पार्वती ने कहा १ नवी-  
 न लिंग हेरने लगी सो कान्तिमान लिंग ३ पार्वती को मिला ॥ ३६२ ॥ ७  
 जब महादेव ने मिलकर कहा कि मांग तव पार्वती ने दो चाँदित मांगे  
 ॥ ३६३ ॥ सोक से ९ पैदा हुए दुख को पाकर जो ८ वी ११ नम्रता से  
 इस लिंग को १० पूजे १२ तुरन्त (शीघ्र) १३ तुरन्त ॥ ३९४ ॥ १४ कहा १५ स्थान  
 पर आये जिसको भी महादेव ने वर दिया था ॥ ३९५ ॥ ३६६ ॥ १६ सोलह  
 बार तपाने से जैसे सोना शुद्ध (कुनण) होजाता है तैसे १७ निलोभी राजा  
 रमनेस दिव्यदेह होगया ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ सो १८ वर्ष तक फल भोजन कि-  
 या १९ मूले पत्ते खाये

सतपंच५००पानकियजलहिस्वच्छ, हायनहजार१०००पुनिपोनभच्छ  
 सहि पंच५अग्नि१आतप१अनेहँ, हेमंत२सलिल२बरखा३बिगेहँ३  
 किन्नोँ तव दारुन दमि स्वकाय, ईसाँन भयेतव प्रकट आय४००  
 तँहँ लिंग कढ्यो भुव भेदि तूगाँ, दिन्नोँ निदेस पुनि प्रीति पूर्ण  
 बर ईष्ट चित्त तव सो बसिष्ट, निस्संसय मंगहु धर्मनिष्ट ४०१  
 द्विज तबहि कह्यो परि ज्योँ हुँ दंड, इहिँ लिंग वास मंडहु अखंड  
 पुनि ईसँ कह्यो अब यँहँ सदाहि, बसिहोँ बसिष्ट तव हित निवाहि  
 ईसँ असितँ चउहसि१४कोउ आय, तव कृत नुँति पढिहँ प्रनत ताय  
 थिर सुख मदीयँ लहिहँ सु थान, धरिहँ न जन्म पुनि सावधान  
 मम लिंग कढ्यो अचलहिँ बिदारि, अचलेसनाम भजिहँ अधारि  
 चलिँहँ न छाँह याकी कदापि, थिर ईस दयो इम लिंग थापि  
 इस मास चउहसि१४असित आय, त्योँही तपस्य गततिथि१४सुभाय  
 जो श्राद्धकरँ तहँ भक्ति जोरि, बसिवो सु गर्भ न लहँ बहोरि४०५  
 रहिकँ दिस दक्खिन जँहँ जटाँल, पूजँ जु पुण्यनक्षत्र काल ॥  
 तस पितर तृप्ति पावँ अनंत, हयमेध सत्रफल सो लहंत ॥४०६॥  
 वह लिंग पञ्चअमृतनँ न्हाय, जन धन्य लहँ सिवलोक जाय ॥  
 पुनि अँद प्रदक्खिन१अरु प्रनाम२, करि ताहि लहँ नर सर्व काम

हजार वर्ष तक१पवन भक्षण किया२ग्रीष्मऋतु के४समय३पंच अग्नि सही  
 (पाँच जगह गोलाकार अग्नि लगाकर बीच में बैठकर तपने को पंचाग्नि तप  
 कहते हैं) हेमन्त ऋतु में जल में बैठकर तप किया और वर्षा में५विना घर रहा ६  
 शिव प्रकट हुए ७ शीघ्र, हे ९ धर्म की निष्ठावाले बसिष्ठ तुम्हारे चित्त में  
 जो ८ प्रिय होवे वह मांग ॥४०१॥ १० काष्ठ के दंड के समान पड़कर११ शि  
 व ने फिर कहा ॥ ४०२ ॥ ११ आश्विन१३ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को१४तुम्हा  
 री की हुई स्तुति को नम्र होकर १५ मेरा स्थान पावेगा ॥ ४०३ ॥ १६ पर्वत  
 को फौड़कर१७पापों को हरण करनेवाला१८ इसकी छाया कभी नहीं डि  
 गेगी ॥ ४०४ ॥ इसीप्रकार १९ फाल्गुन यदि चतुर्दशी को ॥५०५॥ २० महा  
 देव को पुण्य नक्षत्र में लिंग के दक्षिण दिशा में रहकर पूजें २१ अश्वमेध य  
 ज्ञ का फल लेता है ॥ ४०६ ॥ २२ पंचाश्रुत (दूध, दही, घृत, खाँड और स  
 हत) से स्नाम कराकर २३ आधी प्रदाक्षणा (शिव लिंग के पूरी प्रदक्षिणा  
 नहीं देते) और नमस्कार करके सय समय में शिवलोक लेते हैं ॥ ४०७ ॥

चहुवाणवंशे अर्बुदमाहात्म्य ] तृतीयराशि—षष्ठिमण्डल (१०८९)

अग्गै अचलेस्वर निकट आय, किन्नौ सुकं पच्छी निज कुलाय॥  
पानी हित आवैं सुक सु पास, तब अर्द्ध प्रदक्षिण होय तास ४०८  
किन्नौ न जदपि मति पुब्ब कर्म, सिव तदधि ताहि दिय अतुल समै॥  
पच्छी मर्या सु जब काल पाय, वह भो तब भूपति बेणु आय ४०९  
सो सुमिरि पूर्वभवं वत्त सर्व, आयो नृप अर्बुद नति अखर्व ॥

पूजे न ईस धरि चित्त चाह, लग्गो सु प्रदक्षिण कहि लाहा ४१०।  
पुनि जैनन तत्थ पुच्छिय महीस, अर्चत तू विधिजुत क्यों न ईस॥  
नहिं करत श्राद्ध १ जण २ दान ३ न्हान, ४ दृढदेत प्रदक्षिण कहि निदान  
अक्षिणय तव पुण्य जुं हुव अखर्व, लग्गे तिं प्रदक्षिण करन सर्व॥  
अैसे अचलेस्वर ६ २ जहँ उदार, धरनीसँ गयो तहँ भक्ति धारा ४१२।  
भैव पूजि प्रदक्षिण करि सुभाइ, किन्नौ करार चित्तैन कराइ॥  
प्रभु भेट कट्टि सिर करि प्रबुद्ध, सिवलोक गयो नृप सत्थ सुद्ध ४१३  
अग्गै जजाति अर्बुद प्रभाव, पुच्छिय पुलस्त्य मुनि सन सचाव ॥  
अक्षिणय मुनि सो क्रमसद्धि आप, पहुँच्यो नरेस सिवद्विग बिपाप ४१४

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वी-  
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने समष्टिताऽर्बुदाचलसर्वतीर्थकर्णाटरां

१ सुवा (तोता) पक्षी ने २ घुरसाला बनाया ॥ ४०८ ॥ आधी प्रदक्षिणा का  
यह कार्य उसने ३ बुद्धि पूर्वक नहीं किया था तोभी शिव ने उसको अतुल  
४ सुख दिया, वह पक्षी मरे पीछे वेणु नामक राजा हुआ ५ पूर्वजन्म की  
सब वार्ता याद करके ६ बहुत नम्रता के साथ आवू पर आया ७ शिव का  
पूजन तो नहीं किया ॥ ४०९ ॥ ८ मनुष्यों ने पूछा कि हे राजा तू विधि  
पूर्वक महादेव को क्यों नहीं ९ पूजता १० किसकारण से प्रदक्षिणा ही दे-  
ता है ॥ ४११ ॥ ११ जो बड़ा पुण्य पहिले हुआ था वह कहा १२ वे पूछनेवाले  
भी १३ भूपति रमनेस चहुवाण ॥ ४१२ ॥ १४ महादेव को पूजकर १५ मस्तक  
भेट करने का करार किया था उसको याद किया ॥ ४१३ ॥ आगे यथाति रा-  
जा ने पुलस्त्य मुनि से आवू का प्रभाव पूछा था और मुनि ने कहा था व-  
ह क्रम साधकर १६ पाप रहित होकर राजा रमनेस शिव के पास गया ॥ ४१४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण वंशवर्णन में तीर्थों के समष्टि (समूह) रूप आवू पर कर्णाट देश के

जरमणेश ८७ श्रीमदचलेश्वरार्थशीर्षार्पणं षष्ठितमो ६० मयूखः ॥ ६० ॥

आदितो द्व्युत्तरशततमः ॥ १०२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सिवहिं अपि रमनेस ८७ सिर, लहुं पत्तो सिवलोक ॥

मध्यो सुनत मिहकावती, सबन अपूरव सोक ॥ १ ॥

प्रेतकर्म सब सद्धि पुनि, भट १ सचिव २ न अतिभास ॥

धर्यो तखत तव उदय धर, दिनकर भगवतदास ॥ २ ॥

षट्पात्

भगवतदास नरेस भयो करनाट धराधर ॥

सख १ साख २ पडि सकल प्रथित लिन्नो उदारपन ॥

मथुरापति जहव महीप वसुसेन महाबल ॥

तनया बिंदा ८८ १ तास एह परन्यो गुन उज्जल ॥

इक १ वाजपेय १ दुव २ मख चयन २ कुंडपाय २ दुव २ जिहिं करे ॥

हाटक समपि सूतन सहित भूदेवन आलर्य भरे ॥ ३ ॥

प्रतिष्ठानपुर भयउ सातवाहन नरेस इत ॥

कुंतल रंठ अधीस पाय सँसि बंस प्रतिष्ठित ॥

सर्ववर्म अभिधान सचिव जाके गुनसागर ॥

हिज गुनाढ्य तिनदिनन भयो कवि विबुध धुरंधर ॥

राजा रमणेश का श्रीमान् अचलेश्वर के अर्थ मस्तक भेट करने का साठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६० ॥ और आदि से एक सौ दो मयूख हुए ॥ १०२ ॥ १ शीघ्र गया ॥ १ ॥ २ उदयगिरि रूपी तखत पर ३ भगवतदास रूपी सूर्य को धरा ॥ २ ॥ ४ राजा ५ प्रसिद्ध ६ सोमयज्ञ की ७ यज्ञ विशेष = स्वर्ण से ९ चारणों सहित १० ब्राह्मणों के ११ घर भर दिये ॥ ३ ॥ १२ पुरुरवा की राजधानी जो अब विदूर के नाम से प्रसिद्ध है, कुन्तल देश के १३ राष्ट्र (राज्य) का स्वामी १४ चन्द्रवंश को प्राप्त होकर १५ जिसके गुणों का समुद्र सर्ववर्म १५ नामक मंत्री था उन दिनों में १७ गुणाढ्य नामक ब्राह्मण १८ पंडितों में मुख्य.

बहुवाणवंशे सातवाहन ] तृतीयराशि—एकपष्ठिमयूख (१०९१)

जीवते व्यास अवलौं न जो तो तिनको अवतार तिहिं ॥  
कहते परंतु अति आयुकारि कविजसहारयो दोस किहिं ॥ ४ ॥  
( दोहा )

सब पढि साख गुनाढ्य सो, प्रतिष्ठान पुर पत्त ॥  
ताजि कोकिल जिम अन्यतरु, अंब होत अनुरत्त ॥ ५ ॥  
मिलत सातवाहन मुदित, पाटव लाखि गुन पूर ॥  
सुकविगुनाढ्य<sup>१</sup> हु किय सचिव, सर्ववर्म<sup>२</sup> सम सूर ॥ ६ ॥  
पहिलैं या नृपको पिता, विदित भयो रन बीर ॥  
द्वीपिकर्ण<sup>१</sup> सतकर्ण<sup>२</sup> दुव, धरे नाम जिहिं धीर ॥ ७ ॥  
तास सातवाहन तनय, मति<sup>१</sup> नय<sup>२</sup> विजय<sup>३</sup> महंत ४ ॥  
पै न अमरवानी पढ्यो, हानि रही यह हंत ॥ ८ ॥  
सात नाम धनपतिसखा, जो मृगर्षति हुव जँच्छ ॥  
तानैं सत १०० कर्णहिं तनय, दिन्नों जो मतिदच्छ ॥ ९ ॥  
( पटपात )

प्रतिष्ठानपुर प्रथित सातवाहन नृप सो यह ॥  
विलसत सुख निज बिभव सर्ववर्म<sup>१</sup> रु गुणाढ्य<sup>२</sup> सह ॥  
कबहु सुरभि ऋतु काल जाय रानिन संजुत वन ॥

१ इस समय वेदव्यास जीवित थे नहीं तो यह गुणाढ्य व्यास का अवतार कहलाता परन्तु व्यास की आयु अधिक होने के कारण गुणाढ्य इस यश को हार गया सो किसको दोष है ॥ ४ ॥ कोयल पक्षी जैसे अन्य वृक्षों को छोड़कर आम्र पर जाता है तैसे गुणाढ्य भी सब शास्त्र पढ़कर अन्य राजाओं को छोड़कर सातवाहन के प्रतिष्ठान पुर में गया ॥ ५ ॥ २ चतुर और गुणों में पूर्ण देखकर गुणाढ्य को सर्ववर्म के समान मंत्री बनाया ॥ ६ ॥ ७ ॥ इस शतकर्ण का सातवाहन नामक ३ पुत्र बुद्धि नीति और विजय में ४ सबसे बड़ा हुआ परन्तु ६ खेद का विषय है कि ५ संस्कृत नहीं पढ़ा सो यह हानि रही ॥ ८ ॥ सात नामक ९ वृक्ष ७ कुबेर का सखा था सो शाप के कारण ८ सिंह होगया उसने शतकर्ण को यह १० चतुर बुद्धिवाला पुत्र दिया ॥ ९ ॥ ११ प्रसिद्ध १२ वसन्त ऋतु के समय में राणियों सहित वन में जाकर

मंजुल बापी मज्झ करन लग्गो जलक्रीडन॥

जिम बहु करेनु अंतर अजित केलि मत्तवारन करत ॥  
सो इम जनीन छिरकत सलिल रब्धो अटकि चिरकाल रत ॥२०॥  
( शुद्धप्राकृतभाषा गीई )

तह विणहुसत्तिदुहिआ एका राणी कहीअ रायाणं ॥  
मंसिअ मोअएहिं कम्पिज्जइ मइहु सीअलत्तण्णो ॥ २१ ॥

गीर्वाणभाषा उपजाति:

श्रुत्वा तयोक्तं त्वरया चिकीर्षुर्मां मोदकैस्ताडय मानदेति ॥  
आनीय सद्योभवलङ्घुकांस्तैरताडयत्स स्वरसन्धिमूढः ॥२२॥  
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

( पादाकुलकम् )

इम पतनी रुचि जानि अनारत, पतिको पिकिख मोदकन मारत  
बुल्ली तव रानी सु हीनबल, क्यों लडुन मारहु बपु कोमल ॥२३॥

सुन्दर बावड़ी में जलक्रीड़ा करनेलगा जैसे बहुत हथ  
नियों में विजय पायाहुआ मस्त हाथी क्रीड़ा करे तैसे स्त्रियों  
में जल छिड़कता हुआ बहुत समय तक प्रीति पूर्वक वहां रहा  
॥ १० ॥ भाषानुवाद ॥ वहां विष्णुशक्ति की पुत्री एक राणी ने  
राजा से कहा कि मेरा शरीर शीत से कांपता है इससे मेरे पर जल मत  
छिड़को ॥ ११ ॥ जलक्रीड़ा में पानी की मार से घबराई हुई राणी ने कहा  
हे मान देनेवाले मुझे “ मोदकैः ताडय ” इसका अन्वय होता है “ उदकैः  
मा ताडय ” अर्थात् पानी से मत पीटो. यह सुनकर प्यारी के कहने को  
शीघ्र करने की इच्छावाले व्याकरण की स्वरसन्धि के जानने में मूर्ख (स्व-  
रसन्धि को नहीं जाननेवाले) उस राजा ने “ मोदकैः ताडय ” इसका अर्थ ल  
ड्डुओं से पीटो ऐसा समझ कर तुरत के बनेहुए लड्डू लाकर उनसे उस रा  
णीको पीटी, यहां स्वरसन्धि यह है कि मा शब्द का आकार और उदक  
शब्द का उकार मिलकर ओकार होने से मोदक शब्द हुआ है ॥ १२ ॥ इ-  
सप्रकार स्त्री की रुचि जानकर मारने लगा सो पति को निरंतर लड्डू-  
ओं से मारताहुआ देखकर राणी बोली कि कोमल शरीर को लड्डूओं से

संस्कृत अनुवाद ॥ तत्र विष्णुशक्तिदुहिता एका राज्ञी अकथयत् राजानम् ॥ नो सिअ मोदकैः कम्पये  
मया खलु शीतलक्ष्यतः ॥ १॥

बहुवाणवंशोसातबाहन ] तृतीयराशि—एकपट्टिमयूख (१०२३)  
 मैं अकिखय छिरकहु तुम मोहि न, यह सरलहु समुझे तुम आहि न  
 जिम मा१सव्द रु उदक२सव्द जुरि, मोदक होत सु बोधरह्यो मुरि१४  
 पुहबीसन इतनों अजानपन, धूरि करत जस चूरि धराधन ॥  
 सुनि यह लज्जित बहुत सिटायो, आलय सातबाहन सु आयो१५  
 तजि तब भोग नृपति नृपताके, करि पछितावन अमरगिराके ॥  
 दुमन रहैं कितहु न चित दोरैं, निज भट१सचिवशु जदपिनिहो रैं  
 सो गुनाढ्य इम नृपहिं बिर्मन सुनि, पुच्छन लग्यो सर्ववर्महिं पुनि  
 सर्ववर्म तब हेतु सुनायो, भूपहिं अब न मूढपन भायो ॥ १७ ॥  
 पटु रानी याकै इक पंडित, वाकी सुनि लिय सोक अखंडित ॥  
 यह सुनि पुनि नृप ढिग दुव२आये, सांत्वन बैन गुनाढ्य सुनाये ॥  
 अवनीपति न दयो कछु उत्तर, बुल्लयो सर्ववर्म तब पटुबर ॥  
 अधिपति मोहि स्वप्न इक आयो, दिव्य पुरुष सितकमल दिखायो  
 तरुनी दिव्य कढी इक तासौं, सितपट धरत अतुल सुखमासौं ॥  
 सय तस पुस्तक१ बीन२ सुहावन, प्रविसी मुख सु रावरे पावन२०

क्यों मारते हो ॥ १३ ॥ मैंने कहा था कि तुम मुझे जल से मत छिड़को सो  
 आश्चर्य है कि यह सीधा संस्कृत भी तुम नहीं समझे जैसे “ मा ”  
 शब्द और “ उदक ” शब्द मिलकर स्वर सन्धि होने से मोदक शब्द होता  
 है सो नहीं समझे ॥ १४ ॥ १ राजाओं को २ हे राजा ३ अपने भ-  
 वन में आया ॥ १५ ॥ ४ राजापन के भोग छोड़कर ५ संस्कृत नहीं पढ़ने  
 का पश्चात्ताप करने लगा ॥ १६ ॥ इसप्रकार राजा को ६ उदास सुनकर  
 गुणाढ्य ने सर्ववर्मा से पूछा तब सर्ववर्मा ने कारण सुनाया कि अब  
 सुख रहना राजा को अच्छा नहीं लगता ॥ १७ ॥ ७ चतुर ८ समझा-  
 ने के वचन ॥ १८ ॥ भूपति ने कुछ उत्तर नहीं दिया तब अष्ट चतुर सर्व  
 वर्मा बोला कि हे राजा एक दिव्य पुरुष ने स्वेत कमल दिखाया ॥ १९ ॥  
 इस कमल से एक स्त्री निकली जो अत्यन्त परमशोभा (ये दोनों एकार्थ  
 बाची शब्द अत्यन्त के बोधक हैं अर्थात् जहाँ अतिशय अर्थ जनाना होवे  
 वहाँ एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है) के साथ स्वेत व-  
 स्त्रों को धारण कियेहुई थी उसके हाथ में पुस्तक और बीणा थी वह  
 आपके पवित्र मुख में घुस गई ॥ २० ॥



मैं प्रभु ताहि भारती मानी, अति उत्तम विद्या जिहि आनी ॥  
 जो सुनि नृप अखिय गुनाढ्यजित, पढि कतिकालं होत नर पंडित  
 सुनि गुनाढ्य कवि कहिय प्रीति सन, विद्याको मुख प्रथम श्रव्या करन  
 वारह १२ वरस पढत तिहि चित्ते, जो छंदमैहि मोलों प्रभु जितै २२  
 सर्ववर्म अखिय तैंहैं धीसन, उचित इतो काल न अवनिसन ॥  
 मैं पढाइ प्रभुको खटदमासन, संगत करों सव्द अनुसासन ॥ २३ ॥  
 कह्यो गुनाढ्य सुनत यह सकुध, विरैचैं जो तू नृपहि छंदमैं बुध  
 तो प्राकृत १ देशीय गिरा २ जुत, देवगिरा ३ कहिवोहि तजों द्रुत  
 सर्ववर्म तव कह्यो प्रसन्न सन, पूरन जो न करों लिन्नो पन ॥  
 तव पादुका गुनाढ्य लहों तो, वारह १२ हायन स्वसिर बहों तो  
 यह संधा दुव २ करि गृह आये, जंपित होन हेतु उपजाये, ॥  
 सर्ववर्म हठ संग कही सो, सोक डारि चुभि चित्त रही सो ॥ २६ ॥  
 संधा दुष्कर कही नारिसन, अबला कह्यो वैनैं किम अप्पन ॥  
 करैं प्रसाद देव विधि कोहूं, सिद्ध होय संधा तव सोहू ॥ २७ ॥  
 स्वामिकुमार इष्ट तव स्वामी, करहु प्रसन्न तिन्हैं पनकामी ॥  
 सर्ववर्म लैंकैं तव अनसन, घोर कस्यो तप पाइ कष्ट घन ॥ २८ ॥

१ सरस्वती २ कितने समय में पढ़कर मनुष्य पंडित होसक्ता है ३ जो छंद में व्याकरण पढ़ादेवें वही मुक्तसे विजय पावे अर्थात् उससे मैं हारा बुद्धिपूर्वक शर्मवर्म बोला कि इतना समय राजाओं के लिये उचित नहीं ४ शब्दों के अर्थ और अन्वय जानने में कुशल करदूं कांक्षित होकर गुणाक ने कहा कि तू राजा को छै महीनों में पंडित बनादेवें तो प्राकृत और देशभाषा के साथ संस्कृत पोलना ही छोड़ दूं ॥ २४ ॥ शर्मवर्म ने हठ करके कहा कि मैंने जो प्रण लिया है इसको पूरा नहीं करूं तो हे गुणाक तेरी पायबिड़ियाँ लेकर बारह वर्ष तक मस्तक पर रखूँ ॥ २५ ॥ यह प्रतिज्ञा करके दोनों घर आये ३ अपने कथन को सत्य करने के कारण ४ राजा कर ॥ २६ ॥ वह कठिन प्रतिज्ञा शर्मवर्म ने अपनी स्त्री से कही स्त्री ने कहा कि यह अपने से कैसे होसक्ता है, किसी प्रकार देवता कृपा की तब यह प्रतिज्ञा सिद्ध होसक्ती है ॥ २७ ॥ हे पति ह्यामिकार्तिक तुम्हारा इष्ट है जिनका प्रण पूर्ण करने की कामना से प्रसन्न करो ८ उपवास काहे

तदपि दुराप जानि अति तस्तक, कष्टन वह लग्गो निज मस्तक॥  
 मासनमैं हि ताहि खट्ठमातर, तुष्टभये भक्तन दुख कातर॥२९॥  
 स्कंद कह्यो मो सिखि कलापसन, कढ्यो सरन कालाप व्याकरन॥  
 सो निजभूपहिं जाइ सिखावहु, पन करि सत्य उचित फल पावहु  
 सूत्र सहज इम अक्खि सिखाये, भये पिहित पुनि भक्तन भाये॥  
 दुर्गम सर्ववर्म मति दीसी, त्रिदस प्रसाद करैं न कितीसी ॥३१॥  
 प्रमुदित आय नरेस पढायो, बानी त्रितय ३गुनाढ्य विहायो ॥  
 मोद सातवाहन नृप मान्यो, जन्म सफल व्है पंडित जान्यो ॥३२॥  
 रानी जिहिं यह रंग रचायो, पंडित तिहिं महिखीपन पायो ॥  
 कोउक समय काम कोतूहल, बिक्खी नहिं रसअंध सुदुर्बल॥३३॥  
 कपर प्रयुक्त कर्तरी कीनी, दइता मृदुल तनू तजि दीनी ॥  
 सतकर्ण तनूजें महामति, भयो सातवाहन इम भूपति ॥३४॥  
 तीन ३गुनाढ्य विहाई, पटुपिसंल्ल भाखा पुनि पाई ॥

॥ २८ ॥ तोभी अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करना अथवा स्वामिकुमार के दर्शन  
 ने दुर्लभ जानकर भय से कांपता हुआ अपना मस्तक काटने लगा  
 क के दुःख से कायर होनेवाले स्वामिकार्तिक ( शिव के ज्येष्ठ पुत्र )  
 वल्ल हुए ॥ २९ ॥ स्वामिकुमार ने कहा कि मेरे मयूर (स्वामिका-  
 क का वाहन मयूर है) के १ पांखों से ॥ ३० ॥ २ अन्तर्धान होगये ३  
 चार में नहीं आवे ऐसी देवता का प्रसन्न होना क्या नहीं करता अ-  
 त सबकुछ करसक्ता है॥३१॥ ४गुणाढ्य ने तीनों भाषा (प्राकृत, देशभाषा  
 र संस्कृत) का बोलना छोड़दिया ॥ ३२ ॥ जिस राणी ने राजा सा-  
 वाहन के संस्कृत का रंग लगाया था उसने पदरानीपन पाया का-  
 तीड़ा के रस में अंधे हुए राजा ने उस राणी की दुर्बलता को नहीं  
 ना अर्थात् वह बहुत ही दुर्बल थी सो नहीं देखकर ॥ ३३ ॥ रति समय  
 कपाल में कर्तरी का प्रयोग किया, अर्थात् प्रीति से सीमंत (केशपा-  
 के अग्रभाग में चिटी अंगुलि से प्रहार किया (यह कर्तरी तीन प्रकार  
 है जिसका विशेष वृत्तान्त देखना होतौ मुंबई के निर्णयसागर छापा खा-  
 में छपेहुए वात्स्यायन प्रणीत कामसूत्र के पृष्ठ १५३ में देखो) जिससे उ-  
 कोमल प्यारी स्त्री ने शरीर छोड़दिया ५ सतकर्ण का पुत्र ॥ ३४ ॥  
 तीनों भाषा का बोलना छोड़दिया ७ पैशाची भाषा

\*काणभूति क्रव्याद मित्र चहि, भयो पिसाच कुबेर साप लहि ३५  
दोहा

धनद दास इक जच्छ हो, सुप्रतीक अभिधान ॥  
थूलसिरा क्रव्याद जिहि, सखा करयो असमान ॥ ३६ ॥  
नरबाहन तब सापदिय, संगति नीच निहारि ॥  
संत्वर होहु पिसाच सठ, धी अनुचित अवधारि ॥ ३७ ॥  
काणभूति नामक भयो, तब पिसल्ल वह जच्छ ॥  
विंध्यवासिनी विपिन जो, मिल्यो गुनाढ्य समच्छ ॥ ३८ ॥  
गृह सकुटुम्ब गुनाढ्य तजि, बीतराग तहँ आई ॥  
काणभूतिसौं इक कथा, ललित सुनी मन लाइ ॥ ३९ ॥  
जो विद्याधर सप्तमय, अग उमा प्रति ईसैं ॥  
बरनी सो सुंदर कथा, किन्नी श्रवन कवीस ॥ ४० ॥  
पन जबतैं पूरन करयो, सर्ववर्म मतिमूर ॥  
मूक भयो तबतैं दुमन, कवि गुनाढ्य जिम कूर ॥ ४१ ॥  
काणभूतिके संग करि, अब सु विंध्यवाँनि आई ॥  
बुध पैसाची बानिमैं, बैद भो मौन बिहाइ ॥ ४२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कथासप्तविद्याधरमय जो, मुकवि गुंफि पैसाची

\*काण भूति नामक राक्षस को मित्र पाकर १ कुबेर का सेवक सुप्रतीक ३  
एक २ यक्ष था जिसने थूलशिरा नामक ४ राक्षस को अपना सखा बनाया  
उसके ५ समान नहीं था (राक्षस और मनुष्य में समता नहीं हो सकती) ६  
ने ७ शीघ्र अनुचित ८ बुद्धि को ९ धारण करके ॥ ३७ ॥ वह यक्ष  
नामक १० पिसाच हुआ सो विंध्यवासिनी ११ वन में गुणाढ्य से १२  
घरू मिला ॥ ३८ ॥ १३ विरक्त होकर जहाँ वह पिसाच था वहाँ आया  
१४ पार्यती को १५ शिव ने कहा था सो उस पिसाच (काणभूति) ने  
की वह गुणाढ्य ने सुनी ॥ ४० ॥ १६ मौन रखनेवाला १७ उदास होकर  
गाढ्य कवि १८ मूर्ख के समान होगया ॥ ४१ ॥ १९ विन्ध्याचल के वन  
आकर वह २० पंडित मौन छोड़कर पैसाची भाषा में २१ वक्ता  
नेवाला हुआ ॥ ४२ ॥ २२ सात विद्याधरों की कथा २४ पैसाची भाषा में २५

सत्तलकख ७०००००मित ग्रंथ सुहायो, वृहत्कथा अभिधान बनायो  
 विबुध पढाइ उभैरहि छात्र वर, इक गुनदेव१ नंदिदेव२ अपर ॥  
 ग्रंथसहित ले पुनि छात्रन कहैं, गो कवि भूप सातवाहन पैं ४४  
 अप्प प्रतिष्ठितपुर बाहिर रहि, नृप ढिग पठये छात्र यहै कहि ॥  
 जाहुग्रन्थ भूपहिं यह अप्पहु, कहहु ख्याति याकी थिर थप्पहु ४५  
 यहै गुनाढ्य रच्यो अति उत्तम, रक्खहु भूपति ग्रन्थ मनोरम ॥  
 नंदिदेव१ गुनदेव२ यहै सुनि, पहुँचि नृपालंय सोहि कही पुनि ४६  
 नृप सुनि कस्यो पिसाची नीरस, तातैं आदर कोन करैं तस ॥  
 उभय२सिस्य गुरुढिग तव आये, कह्यो अँव यामैं ठहराये ४७  
 तव कवि सोचि इक्क गिरि ऊपर, विरच्यो आँयत बैन्हिकुंड वर ॥  
 पार्वकैं करि तामाँहि प्रज्वलित, होमन किय प्रारंभ सूरन हिता ४८  
 इक१ इक१ पत्र उच्चस्वर पढि पढि, अग्गहिं दैनलगो आग्रह चढि  
 सुनैं छात्र दुव२सजल नैन जुत, निर्मितैं ग्रंथ गुनाढ्य करैं हुत ४९  
 होमन पत्र पढ्यो पहिलो जव, सुनि ध्वनि तास पसु१ रु पच्छी२ सब  
 वा बनकैं इकत व्है आये, सुनिवे संतैं वृत्त सुहाये ॥ ५० ॥  
 भुल्ले खान१ पान२ भय३ भोग४ न, मृग१ खग२ लगो सुनन इक्क मन ॥  
 प्रथम उमाँ प्रति कही पुराँरी१, कवि तिम सक्ति सु रोचकैं डारी ५१

१ वृहत्कथा नामक ग्रन्थ बनाया ॥ ४३ ॥ २ उस पंडित ने श्रेष्ठ  
 दो शिष्यों को पढाया ३ दूसरा ४ शिष्यों को ॥ ४४ ॥ ५ जिसप्रकार यह  
 ग्रन्थ बना वह ख्यात कहकर अथवा राजा से कहना कि इस ग्रन्थ को स्थि-  
 र करके इसको प्रसिद्ध करो ॥ ४५ ॥ ६ सुन्दर ७ राजभवन में ॥ ४६ ॥ गुरु  
 से कहा कि राजा ने इस ग्रन्थ में पैशाचीभाषा नीरस होने का दोष लगाया  
 है ॥ ४७ ॥ ८ पर्वत पर ११ अग्नि का २ चौड़ा कुंड रचा जिसमें १२ अग्नि लगाकर  
 १३ देवताओं के अर्थ होम प्रारंभ किया ॥ ४८ ॥ उस ग्रन्थ के एक एक पत्र को  
 कंचे स्वर से पढ़ पढ़ कर १५ हठ पर चढाहुआ १४ अग्नि में डालने लगा १५  
 दोनों शिष्य नेत्रों में जल भरकर १७ अपने बनाये हुए ग्रन्थ को गुणाढ्य होम-  
 ने लगा १८ होम करने के लिये पहला पत्र पढ़ा जव १९ शब्द सुनकर २० मुहा-  
 वने ध्वनि को २१ निरंतर सुनने के लिये ॥ ५० ॥ २२ पार्वती से २३ महादेव ने  
 पहले कही थी इसीप्रकार कवि (गुणाढ्य) ने २४ रुचिकारी शक्ति उसमें रक्खी

पुनि विद्याधर चरित अपूरब३, क्यों नहिँ कान परै सु सुनै सब ॥  
 लैन लगो अंगिहु प्रसन्न जिहिँ, अतिकृस भये मृगादि सुनत तिहिँ  
 कछुक सातबाहनके हुव गर्द, पुच्छिय वैद्य बुलाइ हेतु १ हदर ॥  
 भूपति अतिकृस मृगपल चकिखय, इर्म यह रोग चिकिच्छक अकिखय  
 त्वरित बुलाइ बांधिक पुच्छे तव, उन अकिखयवन पसु अतिकृस सब  
 गिरि उप्पर इक सिद्ध महामन, करत होम पढिपढि कछु पत्रना ५४।  
 सुनत ताहि खग १ मृगर २ जुरि सारे, विचरन १ खान २ रु पान ३ बिसारे  
 सूको मिलत हमै पैल यातै, बधिकन मुख यह सुनि नृप बातै ५५।  
 सत्वरै उठि तिहिँ सैल सिधायो, पलन होमकरत वह पायो ॥

हुतभुँक कथा छलकख ६००००० करी हुतै,

नृप पाई खिल लकख १००००० रही नुतै ॥ ५६ ॥

नरबाहन दत्तको चरित वर, जामै कहयो गुनाढ्य सु धीधरै ॥  
 सो अवसेस रहत नृप पैतो, परि पायन मंग्यो वह ततो ॥ ५७ ॥  
 जब गुनाढ्य बानी पहिचानी, पैसाची तव रम्यै प्रमानी ॥  
 कहयो गुनाढ्य अब न पछितावहु, जुगर मम छात्रै संग लैजावहु  
 नव्यै कथा एर तुमहिँ सुनैहैं, पैसाची मज्झहु रस पैहैं ॥  
 नंदिदेव १ गुनेदेव २ दये तव, नृपके संग रु सेसै कथा ३ सब ॥ ५९ ॥  
 इम गृह सातबाहन सु आयो, कथन वहै पुँहवी प्रकटायो ॥

हे ॥ ५१ ॥ १ विद्याधरों (देवयोनि विशेष) का २ अग्नि भी प्रसन्नता से लेने-  
 लगा इस ग्रंथ को सुनने से खाना पीना छोड़ देने के कारण मृग आदि ३ इ-  
 र्भल होगये ॥ ५२ ॥ सातबाहन राजा के कुछ ४ रोग होगया था जिसका ५  
 कारण वैद्यों से पूछा ६ हे राजा आपने दुबले ७ मृगों का मांस खाया है ८ इ-  
 सकारण से यह रोग हुआ है. यह ९ वैद्यों ने कहा ॥ ५३ ॥ १० शिकारियों को  
 बुलाकर पूछा ११ मांस १२ शीघ्र उठकर उस १३ पर्वत पर गया १४ अग्नि में  
 १५ होमदी १६ याकी एक लव १७ स्तुति योग्य रही १८ श्रेष्ठ बुद्धि को धारण  
 करनेवाले ने १९ पहुंचा २० पैसाची भाषा को २१ सुन्दर मानी २२ मेरे दोनों  
 शिष्यों को २३ यह नवीन कथा २४ बाकी कथा भी सब राजा को दी २५ इस  
 कथा को पृथ्वी में.

देह गुनाढ्य जोगबल डारयो, बिदित सुजसनिज अतुलं विचारयो ६०  
भगवतदास ८८ वली इम भूपति, किन्नो राज्य धर्म १ नय १ संगति  
उपज्यो कृष्णदास ८९ सुत याकै, जुद्ध १ रु दान २ रहे नंव जाकै ६१  
( दोहा )

धीरपाल उतकलधरा, नृपचालुक पटुनीति ॥

ताकै गुन आकर सुता, प्रथित नाम करि प्रीति ८९।१।६२।  
कृष्णदास ८९ सौ तब करन, सु नृप तास संबंध ॥

दूत पठावतभो सुदित, सुनि बर सूर सुसंध, ॥ ६३ ॥

( पट्टपात )

चालुक नृपके चार आइ पत्तनं मिहिकावति ॥

सचिवनसौ मिलि सजव कहयो आसय करि सम्मति ॥

तिम नृप भगवतदास ८९ जाइ सचिवन संबोध्यो ॥

कृष्णदास ८९ प्रभुको कुमार सो उन बर सोध्यो ॥

करनाटराज सो सुनि कहयो धीरपाल नास्तिक निपट ॥

इम कुल स्वसीस वेदन बहत बहत तुल्य संबंध बट ॥ ६४ ॥

( दोहा )

इम सुनि किय सचिवन अरज, कन्या मतसैन काम ॥

सो पतिकुलकी रीति सब, अनुसरिहै अभिराम ॥ ६५ ॥

प्रसिद्ध की २ तुलना रहित यश फैलाया ॥ ६० ॥ ३ नवीन ही  
रहे ॥ ६१ ॥ ४ उड़ीसा देश की भूमि का राजा ५ नीति में चतुर ६ गुणों  
की खान ७ प्रसिद्ध ॥ ६३ ॥ ८ भेष्ट प्रतिज्ञावाला ॥ ६३ ॥ सोलंखी राजा  
के ९ हलकारे १० मिहिकावती पुर में आये ११ शीघ्र १२ कामदारों ने भ-  
गवतदास नामक राजा को १३ समझाया कि १४ हे स्वामी आपके कुमार  
कृष्णदास को सोलंखियों ने बर तलाश किया है १५ धीरपाल सोलंखी अ-  
त्यन्त नास्तिक (ईश्वर को नहीं माननेवाले जैनमत में) है और हमारे कुल  
में १६ अपने मस्तक पर वेदों को धारण करते हैं सो समान मार्ग में ही सं-  
बंधीपन प्राप्त होता है ॥ ६४ ॥ कन्या के मत १८ से कोई काम नहीं है वह  
पति के कुल की १९ सुन्दर रीति के साथ चलेगी ॥ ६५ ॥

जैनभाव उनकै जदपि, तदपि सुद्ध संतान ॥

जनन छोरि पिकखहु जनन, प्रभु यह करहु प्रमान ॥ ६६ ॥

सचिवनके ए बैन सुनि, किन्नी नृप स्वीकार ॥

पठयो चालुक भूप पुर, करन विवाह कुमार ॥ ६७ ॥

धीरपाल तव धरनिधव, विधि सब सज्ज बनाइ ॥

कुमर कृष्णदास ८९ हिं कुमरि, प्रीति ८९ १ दई परिनाइ ६८

बुधन १ कविन २ दै यह विविध, स्वापतेय गुन सूरि ॥

आयो आलस्य परनि इम, पुहबीतल जस पूरि ॥ ६९ ॥

कृष्णदासकै हू कुमर, सूर भयो सिवदास ९० ॥

वालवंधिहिं गुनवृद्ध जिहिं, पायो स्वमति प्रकास ॥ ७० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयः श्लोकः  
तत्र चण्डासिवंशवर्णने भगवद्दास ८८ विंदा ८८ १ विवह नयज्ञाऽनुष्ठान  
सातवाहनविद्याप्रापणशर्ववर्ममानवर्द्धनत्यक्तसंस्कृतादिभाषात्रय ३  
समभ्यस्तपैशाचीकगुणाढ्यवृहत्कथानिर्माणज्ञाततदनादरतत्स्व-  
कृतिद्वयवाहवदनसातवाहनखिललक्षकथाप्रतिष्ठापनचण्डासिरा  
जभगवद्दासकुमारकृष्णदास ८९ प्रीति ८९ १ परिणयनतत्कुमरशिवदा  
सो ९० ह्रमनमेकषष्ठितमो मयूखः ॥ ६१ ॥ आदितस्युत्तरशततमः ॥

२ तो भी सन्तान तो शुद्ध है १ मनुष्यों को छोड़कर ४ कुल को देखो ॥ ६६ ॥

॥ ६७ ॥ ५ भूपति ने ॥ ६८ ॥ १ पंडितों को ७ धन ८ गुणों में पंडित ९ अपने घर  
आया १० भूमि तल को पथ से पूर्ण करके ॥ ६९ ॥ वालक १ १ अवस्था में ही उस  
गुणों में वृद्ध ने अपना बुद्धि का प्रकाश पाया ॥ ७० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
वाण वंशवर्णन में भगवत्तदास विन्दा का विवाह, और यज्ञ का अनुष्ठान,  
सातवाहन राजा को विद्या प्राप्त होना, शर्ववर्म का मान बढ़ाना, संस्कृत आ-  
दि तीनों भाषाओं का छोड़कर पैशाची भाषा का अभ्यास करके गुणाढ्य  
का वृहत्कथा पनाना, और उसका अनादर जानकर उस अपने किये ग्रन्थ  
को अग्नि में होमना, यात्री की एक लक्ष कथा को सातवाहन का स्थापन कर-  
ना, चहुवाण राजा भगवत्तदास के कुमार कृष्णदास का प्रीति नामक स्त्री से  
विवाह करना, इसके शिवदास कुमार का जन्म होने का इकसठवां मयूख  
समाप्त हुआ ॥ ६१ ॥ और आदि से एक सौ तीन मयूख हुए ॥ १०१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पात्

सूर सातबाहन नरेस कुंतल अधीस इत ॥

अखिल अजभुंव जिति दई ओदैक जितहीतित ॥

वलवाननको बैर सुन्यौ पचतो न सदाही ॥

काहुक पिसुन कही सु सुनत दुस्सह दढ साही ॥

नृपकासिनाथ श्रीधर नृपहिं सँमर दब्बि जित सँहरयो ॥

गो बैरलैन मदसेन पुनि जामिप जुत जुज्झि सु परयो ॥१॥

सातबाहनहु कहिय गयो उततैं लीलाधर ॥

श्रीधर१अरु मदसेन२उभय३इततैं वसुधावर ॥

इक१बैर उनमाँहिं रहत अप्पन अब यातैं ॥

व्याजसहित बाहुरत चलहु चहुवान निपातैं ॥

बल अतुल सज्जि इम अक्खि बल धन भद्वधन घाँटसौं ॥

दरकुंच जाय मंडिग दुसह कुंतल रन करनाँटसौं ॥२॥

सचरणागद्यम्

कुन्तलराज मदसेनके बैर पर लक्ष सात७०००००बाहिनीसौं

सातबाहननै कालरूप काल काकोदरलौं कुण्डल करि मिहि

कावती बेढिलई ॥

अरु कुमार कृष्णदास सहित भूपाल भगवदासहू देह व्यर्थ

१ आर्यावर्त की सब भूमि जीतकर २ आतंक ३ किसी चुगल ने कही सो,  
४ युद्ध में दयाकर ५ मारा ६ बाहिनीसौं सहित ॥ १ ॥ ७ भूपति ८ सुद (मूल  
धन की वृद्धि, कला) सहित ९ मारें १० सेना ११ उस बलवान् ने १२ भा-  
द्रपद के मेघ के १३ अधिक रूप से १४ यहां कुन्तल ने कर्णाट से युद्ध रचा  
लिखा है सो लक्षणा से कुन्तल देश के राजा ने कर्णाट देश के राजा से  
युद्ध रचा ऐसा जानना चाहिये ॥ २ ॥ १५ सेवा १६ काले सर्प के समान १७  
घेरा डालकर मिहिकावती पुरी को १८ घेर ली १९ यदि युद्ध में मरना नहीं  
हुआ तो यह देह व्यर्थ जावेगा इस शोक को छोड़कर



जाइवेको सोक तजि कुंकुमी कर्पट करि घोरन सहित पुस्तोरन

खुलाइ अनी उठाइवेकी आज्ञा दई ॥

दोहू २ दलनके मिलिवेमैं अनेक पुद्गल १ प्रानन २ को बि-

छुरिबो भयो ॥

अरु द्विगुसमासके सूत्रके समान कितेक कातरन संख्याही

देखिवेको विवेक लयो ॥ ३ ॥

कुलटाके अंपांगलों बीरनके भुजदण्ड प्रहारके प्रस्तार रचनलगे ॥

अरु भीरुनकी भौमिनीके सौभाग्यसमेत शरदीके ससिके स-

मान सूरनके सुजस बचनलगे ॥

तहाँ राजकुमार कृष्णदासनैं कुंतलराजके सेनानी सत्रुजित

सौ जाइ प्रानबाजी लंगाई ॥

अरु जीवाँके टंकारकरि सँमरकी सोभा शनागराजके नैन २ जो-

गिनीनकी निद्रा ३ जुत संकरकी समाधि ४ जगाई ॥ ४ ॥

एक मुहूर्तके आहवमैं सत्रुजितके प्रानतो चहुवानके बानकों

अभ्युत्थान दैकैं महामार्गके पथिक भये ॥

अरु कृष्णदासनैं दाहिनीदिसा बाँजी बढाइ सातबाहनके सचिव-

१ केसरिया २ वस्त्र ३ घोड़ों पर चढकर ४ पुर के दरवाजे खुलाकर सेना को

आगे बढ़ने की आज्ञा दी ५ अनेक शरीरों से प्राण चिखुड़े और कितने ही

७ कायरों ने ६ द्विगु समास के सूत्र (संख्यापूर्वो द्विगुः) के समान संख्या

देखने का ही विवेक लिया अर्थात् द्विगु समास के सूत्र ने जैसे मुख्य कर-

के संख्या को ग्रहण किया है ऐसे कायरों ने युद्ध करने का कार्य छोड़कर

सुभटों की संख्या करने का ही कार्य किया ॥ ३ ॥ कुलटा नायिका के ९ क-

टाच के समान वीरों के भुजदंड शस्त्र प्रहार के १० विस्तार रचने लगे और

११ कायरों की १२ स्त्रियों के सुहाग के सहित १३ शरद पूर्णिमा के १४

चन्द्रमा के समान वीरों के यश बाकी रहने लगे १५ सेनापति १६ धनुष की

प्रत्यक्षा के टंकार से १७ युद्ध की शोभा १८ शेषनाग के नेत्रों ने योगनियों

(देवी की दासियों) की निद्रा सहित महादेव की समाधि जगाई ॥ ४ ॥

१६ दो घोड़ी के २० युद्ध में २१ ताजीम देकर (उठकर) बड़े मार्ग (परलोक

मार्ग) के २२ पन्थी (मार्ग चलनेवाले) हुए २३ घोड़ा बढाकर २४ मंत्री.

राज सर्ववर्माकै कलंब दये॥

देखतही मंत्रीनैं याकों समुखभेलि बुधनकी बुद्धिसी सितं  
सक्ति चलाइ मूर्खनके मानलौं कुमारको तुरंग गिरायो ॥

तोहू पाइक होय बाननकी बुद्धि तैं मंत्रीकों मोह दैकैं सत्रुके सामंत  
सिंहगुप्तके समीप आयो ॥ ५ ॥

तहाँ सिंहगुप्तनैं स्वर्गके सोपानसो मंडलाग्रमारि कर्णाटराज  
के कुमारकों सुरराजको सभ्यकीनौं॥

अरु चंडासिराज भगवदासनैं पंचपगज तेरह १३ तुरंग पंचसत  
५०० पाइक मारि कुंतलराजपैं दावदीनौं ॥

तहाँसातबाहनकेसामंतसंभुदेवनैंराजापैंअचानकआयप्रहारकरयो॥

तासौं छिन्नमस्तकभो तथापि चहुवाननैं पचावन ५५ अरौतिनके  
प्रानसहित तिनकी गँजगामिनिनको गुनगोरिको गै बो हरयो ॥ ६ ॥

असैं मिहिकावती रनजीति कुंतलराज सातबाहनतो प्रतिष्ठा-  
नपुर प्रविष्टभयो ॥

अरु बिंदा ८८ १ तथा प्रीति ८९ १ इन दोउन २ सहगमनकरि आप  
आपके स्वामिनको लोक लयो ॥

बाल बयमैं ही चंडासिवंसके अवतंस सिवदास ९० नैं कर्णाट  
की गद्दी पाइ छत्रधरयो ॥

अरु ससिवंसी चेदिराज दृढमित्रकी कन्या चंद्रकला ९० १ कौं

१ वाण २ पंडितों की बुद्धि के समान ३ तीक्ष्ण बरछी चलाई जि-  
सने मूर्खों के ४ मान सहस्र कुमर के घोड़े को गिरा दिया ५ पैदल होकर  
६ मूछा देकर ७ उमर व ॥ ५ ॥ ८ स्वर्ग के जीना (सीढ़ी) के समान ९ ख-  
ज्र मारकर इन्द्र का १० सभासद बनाया अर्थात् स्वर्ग भेजा दिया ११ चहुवाण रा-  
जा १२ मस्तक कट गया १३ शत्रुओं के प्राण सहित उनकी १४ हाथी की चाल  
के समान चलनेवाली स्त्रियों का गुणगोरि के गीतों का १५ गाना मिटाया (सु-  
हागण स्त्रियें ही गुनगोरि के गीत गाती हैं) ॥ ६ ॥ १६ प्रवेश हुआ १७ सती हो  
कर (जहाँ कहीं सती होना लिखा जावे उसका अभिप्राय पति के साथ अग्नि में  
जलना जानना चाहिये) १८ चहुवाणवंश के मुकुट १९ चन्द्रवंश २० चन्दरी के राजा

बिवाहि राजधर्म विदितकरयो ॥ ७ ॥

( दोहा )

सत७ करे चउमास सव, इकः इकः उकथैः रु यामः ॥

द्विजन भूरि हाटक दयो, नृप सिवदासः० सुनाम ॥ ८ ॥

कुमर भूप सिवदासके, पटु उपज्यो हरिपूर्ण ११ ॥

पीछै यह भुवपालभो, चंड अरिन करि चूर्ण ॥ ९ ॥

इत चालुक प्रद्युम्नसुत, इंद्रद्युम्न नरेस ॥

वैष्णाव व्है किन्ना सुबुध, दूर जैन उपदेस ॥ १० ॥

( षट्पात )

इंद्रद्युम्नहि देस भयो वैष्णाव सब उत्तम ॥

स्वप्नमाँहि जगदीस मिलै जाकोँ जाग्रत सम ॥

मूरति स्वीय बताइ कह्यो विरचहु मम मंदिर ॥

जगि प्रातहि नृप जाइ स्वप्नगत चिन्ह लखे थिर ॥

मूरति कढाइ खुदवाइ भुव नियति भक्ति चालुक नच्यो ॥

पूरवसमुद्र उपकंठ पर रम्य पृथुल मंदिर रच्यो ॥ ११ ॥

( दोहा )

पुण्यधाम चउ४मै प्रथित, जानत आस्तिक जाहि ॥

पधराये तँहँ विष्णुप्रभु, विधि दोक्त निवाहि ॥ १२ ॥

जाके बैपु परसे जलहि, करे संकुष्ट अकुष्ट ॥

१ चातुर्मास्य यज्ञ २ महाव्रत नामक यज्ञ करके ३ आप्तोर्याम नामक यज्ञ विशेष ४ सुवर्ण दिया ॥ ८ ॥ ५ चतुर ६ भयंकर शत्रुओं का ॥ ९ ॥ ७ श्रेष्ठ पंडित ने ॥ १० ॥ ८ जगतेहुए को मिले जैसे ९ अपनी मूर्ति को बता करके कि असुक स्थान पर है १० स्वप्न में जो चिन्ह देखे थे वही वहाँ जाकर देखे ११ नियम पूर्वक भक्ति करके १२ पूर्वसमुद्र के समीप (किनारे) मोटा और १३ सुन्दर मन्दिर रचा ॥ ११ ॥ जिसको १४ वेद मत माननेवाले लोग १५ पवित्र चार धामों (बद्रीनाथ १ द्वारका २ रामेश्वर ३ जगदीश ४) में १५ प्रसिद्ध मानते हैं वहाँ १७ वेद की कहीहुई विधि को निभाकर विष्णु भगवान् को पधराये ॥ १२ ॥ उनके १८ शरीर से स्पर्श हुए जल से इंद्रद्युम्न राजा का शरीर १९ कोढ़ सहित था सो २० कोढ़ रहित

भये दुलभ ता भूपसौं, त्रि३गुननाथ इम तुष्ट ॥ १३ ॥

जगदीस१ रु बलभद्र२ जहँ, जाँमि सुभद्रा२जुत्त ॥

करे प्रतिष्ठित सांति करि, रहि संतत हरि उत्त ॥ १४ ॥

( षट्पात् )

जो चालुक्यँ कुमारपाल किय पुष्ट जैनमत ॥

इन्द्रद्युम्न नरेस ग्रंथ तेसर्व करे गतँ ॥

छपनकँ जननँ बुलाय दयो तुलसी चरनोदकँ ॥

जैन जनितँ जिततितहि असह पाई भजि ओदक ॥

करि द्विजन मान बहु दान करि श्रुति अनुसरि प्रद्युम्न सुँव

बुद्धत अथाह वैष्णव धरम इम चालुक अवलंबँ हुव ॥ १५ ॥

पुहवीपति हरिपूर्णा११ उचित नयँ१ धर्म२ पढयो इत ॥

कूरमनृप सूरमय सुता चम्पा९११हित संहितँ ॥

परन्याँ वह बहुवान कस्यो इक मख अग्निपुतँ१ ॥

इक१बिरचि अतिरौत्र११हव्यँ समुचित महँघ हुत ॥

याकँ तनूज चम्पा९११उदर देवीदास९२दुँरूह हुव ॥

हरिपूर्णा९१जुजिँ कुन्तल समर भूप बस्यो पुनि स्वर्गभुव ॥ १६ ॥

दोहा

कुन्तल सन करनाटकै, बढिगो विसम विरोध ॥

वै तिम तिम सुमिरन हृदय, जिम जिम गज्जै जोध ॥ १७ ॥

होगया और १ सत, रज, तम तीनों गुणों के स्वामी उस राजा से इसप्र-

कार २ प्रसन्न हुए ॥ १३ ॥ श्रीकृष्ण को, बलदेव और ३ वहिन सुभद्रा

सहित स्थापित किये वहाँ विष्णु भगवान् ४ निरन्तर रहते हैं ॥ १४ ॥ कु-

मारपाल ५ सोलंखी ने जैनमत को पुष्ट किया था उन ग्रन्थों को इन्द्रद्युम्न

ने ६ समाप्त (नाश) कर दिये और ७ श्वेताम्बरी (जैनमत के साधु) - लो-

गों को बुलाकर उनको तुलसी और विष्णु का ९ चरणामृत १० जैन से

उत्पन्न हुए लोगों ने ११ त्रास पाई १२ वेद के पीछे चला १३ प्रद्युम्न का त्रपु १४

सहारा ॥ १५ ॥ १५ नीति १६ हित सहित १७ अग्निष्टोम यज्ञ १८ यज्ञ विशेष १९

होमने के पदार्थ २० महंगे होमे २१ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा २२ कुन्तल

देश के युद्ध में लड़कर स्वर्ग को प्राप्त होकर वहाँ बसा ॥ १६ ॥ १७ ॥

हरिपूर्णाहु यातैं हठी, कहन बैर अकाल ॥  
 कुन्तलपति सन रंग रुपि, सोयो रन अरिसाल ॥ १८ ॥  
 नृपति सातबाहन तनय, कुन्तलपति वसुमित्र ॥  
 हरिपूरन जानैं हन्यौ, करि रन चक्रन चित्र ॥ १९ ॥

षट्पात

बलवानन सन बैर निठि कहत बीरहु नर ॥  
 चहुवाननकी दोरै रहैं अबिरत कुन्तलपर ॥  
 देबीदास ९२ उदार भयो करनाट महीपति ॥  
 हरि जदुकुल मरहट्ट सुता परन्यौ यह कीरति ९२ ॥  
 हुव कर्मचंद्र ९३ ताकैं तनय सो रविकुल सिंधुल सुता ॥  
 सोरठ आय परन्यौ सुपहु जया ९३ ॥ नाम सब गुन जुता ॥ २० ॥

दोहा

उत नरेस वसुमित्र सुत, कुन्तलपति दृढसेन ॥  
 अज्जमहीमैं इक १ भो, जासौं अपर जुरेन ॥ २१ ॥

पादाकुलकम् ॥

नेत्ती सुं नृप सातबाहनको, धरा १ कटकैं २ आंकर पति धन ३ को ॥  
 चरमैं १ उदैय २ बिच आंन चलावन, रक्खैं हौंस बढैं जिम रावन २ ॥  
 तप्यो न सातबाहनहू तैसो, यह दृढसेन सक्ति तपैं ३ असो ॥  
 गंजैन ताहि कोन रन गज्जैं, भेजा भचकि सुनत अरि भज्जैं २ ॥

दोहा

१ विना समय बैर लेने से ॥ १७ ॥ २ सेनाओं में आश्चर्य उत्पन्न कराके ॥ १९ ॥  
 ३ दौड़ (धावा मारना) ४ निरन्तर ५ कुन्तल देश पर, यदुवंशी श्रीकृष्ण  
 के वंश में ६ महाराष्ट्र देश के राजा की ७ सूर्यवंशी ॥ ८ ॥ ८ आर्या-  
 वर्त की भूमि में एक ही हुआ जिससे कोई ९ अन्य युद्ध में नहीं जुड़ा  
 ॥ २१ ॥ ११ वह. सातबाहन राजा का १० पोता १२ सेना १३ खान १४  
 जो अस्ताचल और १५ उदयाचल के बीच में १६ आण चलाने के लिये रा-  
 वण के समान इच्छा रक्खैं ॥ २२ ॥ १७ प्रभुशक्ति, उत्साहशक्ति और मन्त्र-  
 शक्ति इन तीनों शक्तियों में १८ इसको जीतने के लिये गर्जना कर ऐसा कौन

कर्मचंद्र ९३ पट्टप कुमर, सह नृप देवीदास ९३ ॥  
 सहस्र असी ८००० निज सेनसौ, लरनगयो रनलांस ॥ २४ ॥  
 देवीदास ९२ स्वपुत्रकै, लगो करन अभिषेक ॥  
 कर्मचन्द्र मन्त्री न सो, करी अग्न कुल्लटेक ॥ २५ ॥  
 कर्मचन्द्र ९३ को तब कुमर, रामदास ९४ अभिधान ॥  
 तार्त ९२ तनय ९३ दोउन २ तखत, बाल धरयो सविधान ॥ २६ ॥

षट्पात

पिता १ पुत्र २ बहुवान बीर कुलवैर बहोरन ॥  
 कुन्तल हंकिय कटक रटक इकटक रन रोरेन ॥  
 सुनत भूप ददसेन अनख नख १ सिख २ उफनायो ॥  
 सत्तलकख ७०००००००० करि संग चण्ड चतुरंग चलायो ॥  
 कुन्तल अधीसके भट कलह बहुवानन मारे बहुत ॥  
 पै अति अर्बुडि सिंधुन सुसत हुव असिपावक उभय २ हुत ॥ २७ ॥  
 बहुत १ बहुत २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥  
 भगवतदास १ रु कृष्णदास २ जुज्जे अपूर्व जिम ॥  
 देवीदास १ रु कर्मचन्द्र २ अरि अभित मारि इम ॥  
 व्है मंदर ददसेन सेन करि करि पयसागर ॥

मनुष्य है ॥ २३ ॥ १ पाटवी कुमर २ युद्ध में नृत्य करने को अथवा कीड़ा करने को ॥ २४ ॥ ३ अपने पुत्र के ४ युद्ध नहीं तजने की अपने कुल की पहिले की टेक (हठ) करी ॥ २५ ॥ ५ नाम ६ पिता और पुत्र दोनों की गद्दी पर बालक घाते की विधि पूर्वक रक्खा ॥ २५ ॥ अपने कुल का वैर पीछा लेनेको ६ निरन्तर १० भयंकर ८ टक्कर लेनेको ७ कुन्तल देश को सेना सहित चले ११ क्रोध १२ चार प्रकार (रथ, हाथी, घोड़े, पैदल) की सेना को १३ युद्ध में बहुत मारे परन्तु अत्यन्त १४ अनावृष्टि में समुद्र सूख जायें ऐसे खड्ग रूपी १५ अग्नि में दोनों सेना १६ होम होगई ॥ २७ ॥ १७ अभद्रपद और समभद्रपद दो प्रकार के पदों से अन्त्यानुपास होते हैं जिनका लक्ष्य लक्षण प्रथमराशि में कर आये हैं उनमें से समभद्रपद से अन्त्यानुपास आते हैं वहाँ पर मूल में ऐसा लिखा हुआ है १= अपूर्व लड़े १६ अमाप शत्रु मारे और २० भन्दराचल के समान होकर ददसेन की सेना को २ जीरसागर करके

तिल तिल खग्नं तुष्टि वसे सुरलोक बीरवर ॥

विदा१रु प्रीति२जस सुनि विहित कीर्ति१जया२सहगोन किय  
दढसेन तनय हरिसेन इत प्रतिष्ठान गहिय गहिय ॥ २८ ॥

( दोहा )

रामदास९४ नरनाह इत, करत राज्य करनाट ॥

भवनरूप वामन१ भजत, बलि रनरूप विराट२ ॥ २९ ॥

भुव निदर्भपति भीमकी, सुता पद्मिनी९४१ सूर ॥

ससिकुलभव संकेतपुर, परन्यौ पाटवपूर ॥ ३० ॥

देवदत्त१ विप्रहिं दये, सासन नवति९०संमह ॥

पंद्रह१५ जय२ पौराणिकहिं, गहि काव्यन रस गंढ ॥ ३१ ॥

दिय चारन धनदेव३काँ, द्वि२अयुत२०००० हाटक दम्भ ॥

निज पुरुखन जस काव्यसुनि, कुंतल सन रन कम्म ॥ ३२ ॥

नृप सत्रुघ्न४३ अनेहतै, सूतकुलहिं हुव साप ॥

पाई भववृख चारि पुनि, छिज्जत चारन छाप ॥ ३३ ॥

आर्यमित्र लहि हर हुकम, पंडु तव विदित प्रसंसं ॥

बासुकि तनया व्याहिकै, बाढयो पुनि निज वंस ॥ ३४ ॥

रचि है अष्टम८ राशिमें, निजकुल सो सनिदान ॥

१ खड्गों से तूटकर २ उचित यश सुनकर राजा देवीदास के साथ विन्दा और  
र प्रीति, और कर्मचन्द्र कुमार के साथ कीर्ति और जया नामक स्त्रियां सती  
हुई ३ प्रतिष्ठान पुर की गद्दी पर बैठा ॥ २८ ॥ अपने घर में ४ बावन (ठिंगने)  
रूप को ५ पुनि ६ युद्ध में विराट स्वरूप को धारण करता है ॥ २९ ॥ ७ पुर  
विशेष ८ पूर्ण चतुर ॥ ३० ॥ ९ उदक ग्राम १० समृद्धिवाले ११ जय ना-  
मक धारण को १२ काव्य का दृढ रसग्रहण करके ॥ ३१ ॥ १३ सोने की मो-  
हरें १४ कुन्तल देश में युद्धकार्य किया था उसका कार्य सुनकर ॥ ३२ ॥ १५  
समय से १६ लोमहर्षण नामक सूत के कुल को आप हुआ था सो १७ म-  
हादेव के वृषभ को चराकर १८ छिजतेहुओं ने चारण पदवी पाई ॥ ३३ ॥ आ-  
र्यमित्र नामक सूत ने शिव की आज्ञा लेकर १९ चतुर और २० प्रशंसा यो-  
ग्य २१ वासुकि नाग की अवरी नामक कन्या को व्याहकर फिर अपने वं-  
श को बढ़ाया ॥ ३४ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि पुराण वृत्ति को

पौरानिक चारनपदहिं, जिम यह भजत सुजान ॥ ३५ ॥

रामदास९४कविता रसिक, कर्मचन्द्र९३जसकान्न ॥

सुनि चाहै कुन्तल समर, छकि रसबीर अछन्न ॥ ३६ ॥

भूपति भगवतदास८८सौं, इक१सिवदास९विहाय ॥

कुन्तल रन सर्वहि कटे, जैनक बैर धक जाय ॥ ३७ ॥

रामदास९४कै हुव कुमार, महानंद९५वय वाल ॥

संछैं बैर नरेस हिय, करैं जतन करि काल ॥ ३८ ॥

नृपति रामदास९४हु निडर, करि सुत पासन कर्म ॥

होय राहु हरिसेनकै, धकि लग्गो कहि धर्म ॥ ३९ ॥

षट्पात

अनी च्यारि४करि अप्प रहैं अरि विभव विगारत ॥

दब्बत कुन्तलदेस निखिल हेलकर्म निवारत ॥

द्वैरधाँको संभव न बैर मन्नै न संधिमुख४ ॥

यातँ विग्रह१एक रुडि मंडिय रावन रुख ॥

इम वित्ति अट्टन्हायन गये कोप अतुल हरिसेन किय ॥

वौरको मुलक करनाट कछु लागि साहस पुनि दब्बालिय ॥ ४० ॥

दोहा

कुन्तलपति लरिवो चहैं, चहैं दाव चहुवान ॥

धारण करनेवाले (सूत) जिसप्रकार चारणपद को धारण करते हैं उस हमारे कुल को कारण सहित अष्टमराशि में कहेंगे ॥ ३९ ॥ १ कानों में २ कुन्तलदेश के युद्ध का ३ प्रसिद्ध वीर रस ॥ ३३ ॥ ४ छोडकर ५ पिता का पैर लेने के क्रोध में जाकर ॥ ३७ ॥ राजा का बैर हृदय में ६ सालता (युभता) है इससे शत्रु के काल का यत्न करता है ॥ ३८ ॥ पुत्र का ७ अन्नप्राशन संस्कार (बालक को प्रथम ही अन्न खिलाने का कार्य) करके ८ क्रोध करके बैर लेना अपना धर्म कहकर राहु होकर लगा ॥ ३९ ॥ ९ अपनी सेना के चार भाग करके १० सम्पूर्ण ११ खेती के कार्य को मिटाकर १२ दोनों ओर मिला-वट रखना तो संभव नहीं और सन्धि १३ आदि उपाय बैर लेने की अवस्था में माने नहीं जाते इसकारण से रावण की भांति हठ करके विग्रह ही ठाना १४ आठ वर्ष पीत गये १५ इस तरफ का ॥ ४० ॥ ४१ ॥



अरि मिहिकावति उप्परहि, पुनि किय कुप्पि प्रयान ॥४१॥

लैन रामदासहु लाख्यो, जब अरि निजपुर जात ॥

आय जुरयो तब अङ्गुमै, धलि अचानक घात ॥ ४२ ॥

पट्टपात्

रामदास ९४ नरराज भूप हरिसेन सेन भट ॥

जिम सिचान खरकोन बहुत किन्नै बट उब्बट ॥

बहु सत्रुन रन व्याह दई अच्छरि नव दुलहनि ॥

तनु तजि अप्पहु त्रिदिव बस्यो सुरराज सभ्य बनि ॥

निज वैर लैन चाह्यो नृपति विधिजोग सु उलटो बढ्यो ॥

करनाटईस दारुन कलह चाहि टेक धारन चढ्यो ॥ ४३ ॥

दोहा

रामदास ९४ कौं मारि रन, सत्रु प्रबल हरिसेन ॥

गज्जि महानंद ९५ हिं गहन, धायो सजव धरेन ॥ ४४ ॥

जान्यो सात्रव मूल जव, रंचहु भुम्मि रहै न ॥

मैं तिमकरि कुंतल सुराँ, चाहौं निस १ दिन २ चैन ॥ ४५ ॥

पट्टपात्

मन्नि नियंत यह मंत्र प्रबल हं किय कुंतलपति ॥

रिपु आवन १ नृप मरन २ सुन्यो पत्तन मिहिकावति ॥

अग्नि कुलहिं करनाट अखि बदलि रु दिय उत्तर ॥

१ मार्ग में ॥ ४२ ॥ रामदास चहुवान ने हरिसेन की सेना के वीरों को जैसे शि-  
करा पक्षी ३ तीतर पक्षियों को बिखेर देता है तैसे मार्ग और ४ बिना  
मार्ग बिखेर दिये ५ शरीर छोड़कर ६ आप भी ७ इन्द्र का सभासद हो-  
कर स्वर्ग में बसा ८ तरवारों की धारों पर चढ़ा अर्थात् कट गया ॥ ४३ ॥ ९  
शीघ्र १० नृपति ॥ ४४ ॥ भूमि पर शत्रु का ११ मूल (जड़) कुछ भी नहीं रहै ऐ-  
सा करके मैं १२ कुंतल देश को पीछा जाऊं ॥ ४५ ॥ १३ निश्चय यह सलाह  
मानकर १४ मिहिकावती पुरी में १५ जब अग्नि कुलवाले (चहुवाणाँ) को क-  
र्नाट देश ने नेत्र बदल कर (क्रोध से) उत्तर दिया तब हित करनेवाले राज्य

लौले वित्त पलायं अंग पलटे हित अवसर ॥

पद्मिनी तवहि ले पुत्र निज भजि विदर्भ पीहर गई ॥

इम दिष्ट जोग मिहिकावती प्रतिष्ठान पतनी भई ॥४६॥

दोहा

लछमन वाला सीमलारि, रामदास नरराय ॥

परयो जुजिऊ छटोदपुरुष, कुंतल रन तजि काय ॥४७॥

हरिसेनहु दरकुंचकरि, गरद बिछावत गैन ॥

मिहिकावति करि निज अमल, लख्यो बाल असु लैन ४८

महानंद जब नहिँ मिल्यो, तब तहँ सेन सम्हारि ॥

पकरन अरि संकेतपुर, रचन बिचारी रारि ॥४९॥

प्रतिष्ठान प्रति आय पुनि, दिय अगगहि लिपिदूत ॥

देहु भीम दौहित्र कै, रन मंडहु रजपूत ॥५०॥

पुत्र करन १ जुत भीम २ पंडु, सुनि यह भो रन सज्ज ॥

बलवाननको बुझिकै, करे उचित सब कज्ज ॥५१॥

पुत्रसहित तब पद्मिनी ९४।१, निजपीहर १ कुल २ नास ॥

निरखि छन्न कटि निखसी, उत्तर दिस धरि आस ॥५२॥

जावत कलिजुग छ ६ सत ६०० जुत, हायन इकहजार १०००

महानंद तजि इम महा, आयो चम्मलिवार ॥ ५३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ वीति-

के अंग थे वे भी समय पर पलटगये और १ घन ले ले कर २ भागगये ३ भाग्य के योग से मिहिकावती पुरी प्रतिष्ठानपुर की ४ स्त्री हुई ॥ ४६ ॥  
५ आकाश में ॥ ४७ ॥ महानन्द नामक पालक का प्रमाण लेना चाहा ॥ ४८ ॥  
॥ ४९ ॥ ७ पत्र दिया कि हे भीम तुम्हारे दौहित्र (महानन्द) को हमें दे दो = अथवा रजपूतों के साथ युद्ध करो ॥ ५० ॥ ९ राजा १० उचित कार्य किये ॥ ५१ ॥ पद्मिनी अपने पीहर के ११ कुल का नाश होता देखकर उत्तर दिशा की ओर १२ आश करके चली ॥ ५२ ॥ कलिजुग के सौलह सौ १३ वर्ष जाते समय महानन्द इस प्रकार अपनी भूसि (कर्णादेश) को छोड़कर १४ चम्मल नदी के इस पार आया ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चतुः

होत्रचण्डासिबंशवर्णने कुन्तलराज सातबाहन चहुवाणराजकुमार  
 कृष्णदास ८९ सहितभूपालभगवदास ८८ मारणाप्रीति ८६।१ सहि-  
 तविन्दा ८८।१ सहगमनकर्णाटराजशिवदास ९० चंद्रकला ९०।१  
 परिणयनयज्ञानुष्ठानकुमारहरिपूर्ण ९१ द्रवनोत्कलपतिचालुक्यरा-  
 ङिन्द्रद्युम्नश्रीजगदीशमन्दिरप्रतिष्ठापनहरिपूर्ण ९१ चम्पा ९१।१  
 विवहनकुमारदेवीदास ९२ जननकुन्तलराजराणाहरिपूर्णवीरशय्या-  
 शयनदेवीदास ९२ कीर्ति ९२।१ कर्मचन्द्र ९३ जया ९३।१ पाणि-  
 ग्रहणकुमाररामदास ९४ प्रादुर्भवनसपुत्रकर्मचन्द्र ९४ नरेशदेवी-  
 दास ९२ दृढसेनसमित्तनुत्यजनजयो ९३।१ पेतकीर्ति ९२।१ पाव-  
 कस्नानहरिषेणकुन्तलच्छत्रधारणरामदास ९४ पद्मिनी ९४।३ परिण-  
 यनसमनुभूतकाव्यरसकविजनशासनवितरणपौराणिकचारणप-  
 रंप्रापणसूचनकर्णाटराजकुमारमहानन्द ९५ द्रवनहरिसेनरामदास  
 ९४ मारणमिहिकावतीस्वगेहसमानयनसपुत्रपद्मिनी ९४।१ सङ्केत-  
 रपलायनहरिषेणविदर्भराजभीमलासनश्रुतैतद्विग्रहसपरिकरसपु-

राण वंशवर्णन में कुन्तलदेश के राजा सातबाहन का राजकुमार कृष्ण-  
 दास सहित राजा भगवतदास को मारना, प्रीति सहित विन्दा नामक दोनों  
 सास बहू का सती होना, कर्णाटदेश के राजा शिवदास का चन्द्रकला को  
 व्याहना, यज्ञ का अनुष्ठान करना, कुमार हरिपूर्ण का जन्म, उत्कलदेश  
 के पति चालुक्यराज इन्द्रद्युम्न का श्रीजगदीश के मन्दिर की प्रतिष्ठा करना,  
 हरिपूर्ण का चम्पा से विवाह करना, कुमार देवीदास का जन्म, कुन्तलदेश  
 के राजा के युद्ध में हरिपूर्ण का वीरशय्या में सोना, देवीदास का कीर्ति से  
 और कर्मचन्द्र का जया से विवाह होना, कुमार रामदास का जन्म, पुत्र सहित  
 कर्मचन्द्र और राजा देवीदास का दृढसेन के युद्ध में शरीर छोड़ना, जया स-  
 हित कीर्ति नामक दोनों सास बहू का सती होना, हरिसेन का कुन्तल के  
 छत्र को धारण करना, रामदास का पद्मिनी से विवाह करना, काव्यरस का  
 अनुभव करके कविलोगों को उदकग्राम देना, पुराण की वृत्ति धारण कर-  
 नेवाले सूतों को चारण पद प्राप्त होने की सूचना, कर्णाटदेश के राजा के  
 महानन्द कुमार का जन्म, हरिसेन का रामदास को मारना, अपने घर मि-  
 हिकावती से पुत्र को लाकर पद्मावती का संकेतपुर भागना, हरिषेण का  
 विदर्भदेश के राजा भीम को आस देना; यह विग्रह सुनकर अपनी परगह

त्रपद्मिन्युदीचीप्रस्थानचर्मरवतीसमुल्लङ्घनं द्विषष्टितमो ६२ मयूखः  
॥ ६२ ॥ आदितश्चतुररुत्तरशततमः ॥ १० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

( षट्पात् )

स्वामिधर्मरत रहिय सुभट नृप संग पंचसत ५०० ॥

इक्क<sup>१</sup>वनिकै कायत्थ इक्क<sup>१</sup> दुवर सचिव मंत्रमत ॥

द्रविड बिप्र बुध दोय<sup>२</sup> सूत संकर<sup>३</sup> तृतीय<sup>३</sup> तिम ॥

बंदीजन बलभद्र<sup>१</sup> इक्क<sup>१</sup> मागंध प्रसेन<sup>१</sup> इम ॥

धावर खनिर्त<sup>१</sup> धात्री<sup>२</sup> सहित सबदास<sup>१</sup> रु सुधांतजन २ ॥

दुवर<sup>२</sup> द्वास्थ<sup>२</sup> इक्क<sup>१</sup> नापित<sup>३</sup> इते छायापम लग्गे चलन ॥ १ ॥

( दोहा )

नये सुभट रक्खे ईतर, सल<sup>१</sup> सकर<sup>१</sup> टरन भरि साज ॥

इम नृप चम्मालि उत्तरिग, लै जननी<sup>१</sup> भुवलाज<sup>२</sup> ॥ २ ॥

( षट्पात् )

टोडापुर तिनदिनन तपै पांडवकुल तोमर ॥

इद्रसेन अभिधान सुन्यो यह वृत्त प्रीति पर ॥

पत्र समुख पठवाय महानंद<sup>१</sup> हि बुलाय घर ॥

रुमा<sup>१</sup> नाम तनया स्वकीय<sup>१</sup> दिन्नी विवाहि वर ॥

पुत्र सहित पद्मिनीका उत्तरदिशा में गमन करना, और चामल नदी को लांघने का बासठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ और आदि से एकसौ चार १०४ मयूख हुए ॥

स्वामिधर्म में १ प्रीति रखनेवाले २ वनिया ३ द्रविडवंश के दो ब्राह्मण ४ पंडित और तीसरा पंडित संकर नामक ५ चारण ६ प्रातःकाल में स्तुतिपाठ करके राजाओं को जगानेवाले भाट ७ वंशावली लिखनेवाले बड़वा भाट ८ खोदने की वृत्ति करनेवाला (बेलदार) अथवा खोदने के आयुध (कुदाली) धाऊ (धाय का पति) ९ धाय सहित १० जनाने लोग ११ दो द्वारपाल १२ नाई इतने १३ छाया की उपमा रखनेवाले अर्थात् शरीर के साथ छाया चलती है ऐसे साथ चलनेलगे ॥ १ ॥ १४ दूसरे १५ ऊटों पर और १६ कड़ों में सामान भर कर १७ चामल नदी को उतर ॥ २ ॥ १८ तब जाति के चित्रि १९ नामवाले, यह २० वृत्तान्त सुना २१ रुमा नामक अपनी

सकुटुंब नृपहिँ रक्खयो सहित बरख सत्त७करि करि विनय  
चहुवानराज तत्थहि लयो बालापन१तजि तरुन बय२ ॥३॥

( दोहा )

जामातहिँ अद्दी अवनि, लग्गो तोवर दैन ॥

स्वसुर ग्रास अनुचित समुझि, लुब्धयो नहिँ नृप लैन ॥४॥

( षट्पात् )

निस इक१ सोचत नृपहिँ स्वप्न दिन्नो साकंभरि ॥

करि रन बिंदन कदन सदन यह लेहु अमल करि ॥

गोधि तिलक सिंदूर पुत्र पिक्खहु जब प्रातहि ॥

सजि आवहु तब सेन अवनि पावहु हुँत आतहि ॥

नृप जगि स्वप्न सुमिरन निर्यत रत्त तिलक हेरत रहै ॥

बिंदन बिडारि उतकी अवनि चाहुवान भुग्नन चहै ॥ ५ ॥

( दोहा )

नागज तिलक ललाट निज, जगि इकदिन नृप जानि ॥

तकि साकंभरि इष्ट तब, प्रत्यय लिन्न प्रमानि ॥ ६ ॥

षट्पात्

जननी पँहँ नृप जाय स्वप्न कारन सुनाय सब ॥

दल रक्खन कछु द्रव्य तनय मंगिय विनीत तब ॥

मुद्रा प्रयुतं १०००००० प्रमेय कंठभूखन माता दिय ॥

पुत्री को १ युवा अवस्था ॥ ३ ॥ २ जमाई को आधी ३ भूमि ४ लोभ नहीं किया ॥ ४ ॥ ५ शाकंभरी देवी ने स्वप्न दिया युद्ध में ६ विन्दा जाति के क्षत्रियों का नाश करके ७ इस घर (सांभर) में अधिकार करलै और हे पुत्र ८ जब प्रभात में उठते ही अपने द ललाट में सिन्दूर का तिलक देखै तब सेना सभ कर आना सो आते ही १० शीघ्र भूमि पावेगा ११ निश्चय ही १२ लाल तिलक १३ निकाल कर ॥ ५ ॥ १४ सिन्दूर का १५ शाकंभरी देवी को इष्ट जानकर यह १६ सुवृत पाया ॥ ६ ॥ महानन्द ने १७ माता के पास जाकर १८ सेना रखने को १९ बहुत नम्र होकर पुत्र ने धन मांगा २० दश लक्ष रुपयों के समान प्रमाण रखनेवाला २१ गले का भूषण माता ने

च्यारि अयुत ४०००० चतुरंग कलह चहुवान सज्ज किय ॥  
 वंवन बजाय धरि सक्ति बल रारि लैन विंदन रटक ॥  
 उफनाय विजयदसमी १० दिवस महानंद हं किय कटक ॥ ७ ॥

### पादाकुलकम्

साकंभरी सक्ति जनपद जहँ, राज्य करै रजपूत विंद तहँ ॥  
 नरवाहन अभिधान नरेस्वर, बजै वह संभर अवनवीर ॥ ८ ॥  
 जो अन्वय चाक्षुष ६ मनुजायो, सो तहँ धारत छत्र सुनायो ॥  
 कुंच नृपति तापै इम किन्नौ, लरन बेग बीरन पन लिन्नौ ॥ ९ ॥

### दोहा

साकंभरि व्रत करि सुपहुँ, रहि टोडा नवधरत ॥  
 सबह १७ हायन वय समय, मन रन रंगिय मत्त ॥ १० ॥

### सारङ्गः ॥

चल्लयो महानंदलै बाहिनी चंड, बढे पताका छये मत्त बेतंड ॥  
 आदित्य ढंकयो मच्यो खेह अंधार, काली लगी संगही बुल्लि जैकार  
 यौ कुश्चपै कुश्च मंडे महानंद ६५, डारयोहि साकंभरी देसपै फंद ॥  
 पिछी चमू सम्मुही विंद भूपाल, किन्नी सबै टूक सो व्है प्रलैकाल  
 जान्यो न चोहानकाँ रोकनौ सत्थै, राजा गजरूढभो विंदही तत्थै ॥  
 आयो सु हत्थीघंटा संग आरोपि, कच्छी महानंदहू नकखये कोपि

दिया १ सेना २ नगारे बजाकर ३ देवी का बल धारण करके युद्ध में बाँदा  
 चात्रियों से ४ टकर लेने को ५ महानन्द की सेना चली ॥ ७ ॥ साकंभरी  
 देवी का ६ देश है जहाँ पर ७ बाँदा पदवीवाले ८ नरवाहन नाम-  
 क ९ सांभर का भूपति ॥ ८ ॥ चाक्षुष मनु से ११ उत्पन्न हुए १० वंश में  
 छत्र धारण करता हुआ सुना ॥ ९ ॥ १२ राजा १३ सब हर्ष की अवस्था में  
 ॥ १० ॥ १४ भयंकर सेना लेकर चला १५ ध्वजायें बढ़ाकर मस्त १६ हाथियों  
 को छाया १७ सूर्य ढंक गया १८ जय हो ऐसा शब्द करके कालिका साथ  
 हुई ॥ ११ ॥ १९ सांभर देश पर २० सेना साम्हने २१ भेजी ॥ ११ ॥ २२ जो साथ  
 साम्हने भेजा था वह चोहान को रोकने में समर्थ नहीं ऐसा जानकर २३ हा-  
 थों पर चढ़कर २४ तहाँ पर २५ हाथियों की घटा साथ में करके बान्दों का रा-  
 जा ही आया तब महानन्द ने २६ घोड़े डाले (शत्रु की सेना के सामने दौड़ाये.)

चंडी रिभाते मिले बिंदु चोहान<sup>२</sup>, दंडी मनौ फगगके चञ्चरी दान॥  
 ताली खुली ईसकी रीसकी रारि, नैबेलगी सेसके सीसकी बारि  
 खैबेलगी जुगिनी टूक के टारि, गैबेलगी डाकिनी प्रेतकाँ गारि॥  
 कट्टै कलावा खुलै के करीकंध, तुट्टै उडै राति के बीति के बंध<sup>१५</sup>  
 भेजाकट्टै खुप्परी उच्छटै भिन्न, खुल्लै दहीसौरज्याँ गगरी खिन्न  
 बज्जै मनौ प्रातकी झल्लरी तेग, गज्जै घनेँ बैरकाँ बाहुरै बेग॥<sup>१६</sup>  
 पीवै भैर साकिनी अस्त्रसाँ टोप, जीवै भजै भीरु के अँजुनी ओप॥  
 झूलै करी अंत्रके हिंदुलाँ प्रेत, खिल्लै भरी हेतसाँ खेचरी खेत॥<sup>१७</sup>  
 जैपाल वहाँ बिंदु भूपालको पुत्तै, आयो रिसायो महानंदके हुत्तै॥  
 तापै भयो भूपके हत्थको वार, जैपालको वहाँ पस्थो मत्थ चोषफार  
 चडाँसिको बंस जुज्जे महाकाल, मारयो महानंदयाँ बिंदु भूलपा॥  
 फेरी तहाँ संगही जिति चोहान, साकंभरी देसमें अप्पनी आन<sup>१९</sup>  
 ( दोहा )

नरबाहन<sup>१</sup> मारयो नृपति, सुत जयपाल<sup>२</sup> समेत ॥

साकंभरि जनपंद सकल, पायो विजय उपेत<sup>३</sup> ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

साकंभरि मंदिर<sup>१</sup> अति सुंदर, बनवायो नूतन धरनी<sup>२</sup> बर ॥

देवी को १ प्रसन्न करते हुए, फाल्गुन मास में मेहर (पुरुषों का  
 नृत्य विशेष) खेलनेवाले २ डांडिये देवें जैसे तरवारों के प्रहार करते हुए वि-  
 न्दे और चहुवाण मिले जिससे शिव की ३ समाधि खुल गई और शेषना-  
 ग के मस्तकों की ५ बाढ़ ४ नमने लगी ॥ १४ ॥ ६ गाने लगी ७ गाली  
 ८ हाथियों के कन्धे, पंथ (तंग आदि) तूटकर रीते होकर कितने ही ९ घो-  
 डे उडते हैं ॥ १५ ॥ गागर फूटकर १० मक्खन निकले ऐसे ॥ १६ ॥ टोप में  
 ११ रुधिर भरकर, कितने ही १२ कायर १३ गौवों के समान भागकर जीते  
 हैं १४ हाथियों की आँतों के १५ हिंडोले बनाकर प्रेत झूलते हैं १६  
 प्रसन्न होती हैं ॥ १७ ॥ १७ पुत्र को धरकर महानन्द को १८ होम करने आया  
 ॥ १८ ॥ १९ चहुवाण वंशी ॥ १९ ॥ २०  
 ॥ २० ॥ २२ साकंभरि का २२

विजय १ साहित पाया

बैलि साकंभरनगर बसायो, गढ संभर सब जग जो गायो ॥२१॥  
 ए उभयरहि जीरन उद्वारे, सकल बिंद संगर संहारे ॥  
 साकम्भर पहिले उष्मासह, संस्कृतबानि सिद्ध जो पद यह ॥२२॥  
 सो प्राकृत परि व्है साअंभर, सोही अपभ्रंस परि सम्भर ॥  
 जापुरके आवत जग ठायो, चहुवानन सम्भर पद पायो ॥२३॥  
 महानंद९५जो पुर इम लैकै, किन्नौं अमल प्रजा सुख दैकै ॥  
 सवित्री१६ रानी२टोडा सन, पाय अवनि बुल्ली निज पत्तन ॥२४॥

( दोहा )

सो निज अज्जू संगही, पितुसन दायज पाय ॥  
 रुमानगर पहुँचो रुमा९५१, सबलै वसु समुदाय ॥ २५ ॥  
 सुनि प्रसन्न तोवरै सुपहु, सुत निज दिन्नौ संग ॥  
 रानी इम संभरनगर, पत्नी पति रसरंग ॥ २६ ॥

मनोहरम्

चकखुँस मनूके कुलके जे बिंद छलिय,  
 सबही रन मारि आन फेरी निज छंद यौ ॥  
 साकम्भरी इष्ट करि सक्ति व्रत साध्यो वेद,

महानन्द ने बनवाया? फिर सांभर नगर बसाया ॥ २१ ॥ कितनों का मत है कि साकंभरी देवी का मंदिर और सांभर नगर प्राचीन थे जिनका जीर्णोद्धार किया और सब विदा क्षत्रियों को युद्ध में मारे. गर्भी सहित हो-वे उसको संस्कृत में साकंभर कहते हैं इसकारण से संस्कृत भाषा में यह सिद्ध हुआ शब्द है ॥ २२ ॥ प्राकृत भाषा में पड़कर वही शब्द 'साअंभर' हुआ और वही शब्द अपभ्रंस भाषा में संभर प्रसिद्ध हुआ. उस पुर के आने से चहुवाणों ने प्रसिद्ध संभर पद पाया अर्थात् चहुवाण भी संभर संभरी-क कहलाने लगे ॥ २३ ॥ रमाता और राणी को भूमि पाकर टोडा से अपने पुर में बुलाई ॥ २४ ॥ इवह रुमा नामक राणी पिता से दहेज पाकर सास के साथ ही धन का समूह लेकर संभर पुर गई ॥ २५ ॥ तत्वर राजा ने ५ गई ॥ २६ ॥ चचाक्षुष मनु के वंश के सब बिन्दा क्षत्रियों को रण में मारकर अपनी स्व-तंत्र आण फेरी. साकंभरी देवी को अपना इष्ट करके फैलाया, जैन आदि नीच मत को मिटाया जिसके सुनने से कुन्तल देश के राजा ने भी आस पाया



धर्म विथरायो मेटि छुद्रमत मंद यौ ॥

कुन्तल नरेस हु सुनै तैं त्रासपायो जाहि,

दूरकीनै देसके असेस दुख१दंद२यौ ॥

छोरि करनाट चम्मलीके वार आवतही,

रानी रुमा१५१पाई रुमा२पाई महानंद यौ ॥ २७ ॥

षट्पात

नृप बिदर्भ पति करन१सुनत आयो पुर सम्भर ॥

इंद्रसेन२तोमर अधीस टोडापति दुद्धर ॥

इक१मातुल२इक१स्वसुर१मिले जामिज१जामात२हिं ॥

समय प्राय अभिसिक्त नृपन किन्नौ नृप गातहिं ॥

द्विजवरन दम्भ लखन दये नियत पाय जनपद नयो ॥

इम महानंद१५संभर सहर भद्रासन राजत भयो ॥ २८ ॥

दोहा

भुम्मिगई पुनि भूपतिन, आवत निट्टि अगार ॥

संग रहत लग्गी सदा, वसुधेश्वर कुल वार ॥ २९ ॥

करन१इंद्रसेन२हु कतिक, मासन रहि अति मोद ॥

नृप आये निज निज निलय, करत भीत चउ४कोदै ॥ ३० ॥

महानंदकै हुव तनय, विष्णुदास१६अधिवीर ॥

(कुन्तल देशवालों ने चहुवाणों को मारकर कर्णाट देश छीन लिया था इससे उनको भय हुआ कि चहुवाण प्रबल हुए हैं तो हमसे पीछा यदला ले-  
बेंगे) १ सम्पूर्ण दुःख भूख तिस आदि २ चम्मल नदी के इस पार आते ही महा-  
नन्द ने इसप्रकार रुमा नामक राणी और रुमा (सांभर) नामक पुरी को पा-  
ई ॥ २७ ॥ तैवरों का पति चिदर्भ देश का राजा करण तो मामा और टोडा  
का राजा इन्द्रसेन स्वसुरा सांभर में जाकर भाणोज और जमाई से मिले  
और समय पाकर राजा महानन्द के शरीर पर अभिषेक किया ३ रूपये ४ नि-  
अ ही नया देश पाकर सिंहासन पर शोभायमान हुआ ॥ २८ ॥ गई हुई भू-  
मि राजाओं के घर में फिर कठिनाई से आती है परन्तु चहुवाण कुल के  
द्वार पर यह साध ही लगी रहती है ॥ २९ ॥ ४ चारों दिशाओं में भय उप-  
जाते हुए अपने अपने घर आये ॥ ३० ॥ शत्रुओं की भूमि दबाने और

परपक्ष्वन दब्बन पुहवि, निज कुल रक्खन नीर ॥ ३१ ॥

दिग्घसेन नृप तिन दिनन, धरत छत्र मरुधाम ॥

जो गोहिल लवभव जनन, जस खट्टत वसुजाम ॥ ३२ ॥

रैवतमनुके वंस सब, दै पहिलैं निज दाव ॥

लिन्नी मरुभुव गोहिलन, अति राजस उपनाव ॥ ३३ ॥

दिग्घसेन तनया बिदित, निपुन सुभद्रा १६।१ नाम ॥

बिष्णुदास १६कौ व्याह करि, दई गुनन उद्दाम ॥ ३४ ॥

( षट्पात )

महाराज १७माहिपाल सूर हुव बिष्णुदास १६सुत ॥

धर्मचतुर नय २धीर जुद्धपंडित बितरन २जुत ॥

नृप प्रमार गांधारदेस अनुबिंद वंसभव ॥

चंद्रदेव अभिधान दुसह सालव अटवी देव ॥

सासिप्रभा १७।१ नाम ताकी सुता संभरपति लायो परनि ॥

ताकै उदार उपज्यो तनय देवादास १८कुमारमनि ॥ ३५ ॥

[ दोहा ]

भानुवंस सोरठभुव, नंदध्वज नरनाह ॥

इंदुमती १८।१ तस अंगजा, लायो नृप वयलाह ॥ ३६ ॥

[ षट्पात ]

देवादास तनूज धरनिधव अमरसिंह १९हुव ॥

बडगुर्जर लववंस भूप श्रीधर देसाणा भुव ॥

अपने कुल का पराक्रम बढ़ाने में विशेष वीर हुआ ॥ ३१ ॥ दीर्घसेन राजा मारवाड़ का छत्र धारण करके लव से पैदा हुए वंश में गोहिल पदवी वाला क्षत्री आठों पहर यश पैदा करता है ॥ ३२ ॥ रैवत मनु के वंशवालों पर दाव देकर रजोगुण के उफाण में मारवाड़ की भूमि गोहिलों ने ली ॥ ३३ ॥ १ गुणों में निरंकुश ॥ ३४ ॥ २ दान सहित ३ कन्धार देश में अनुबिन्द के वंश में ४ उत्पन्न हुआ ५ शत्रुओं की वन का दुसह अग्नि ॥ ३५ ॥ ६ पुत्री ॥ ३६ ॥ ७ भूपति ८ बडगुर्जर पदवी के क्षत्रिय ९ दशार्ण देश का राजा (विन्ध्याचल के पूर्व और दक्षिण प्रान्त को दशार्ण कहते हैं)

नाम मंजुला९९।१तास सुता आकृति१गुन२सुंदरि ॥

चित्तउदधि चहुवान वीर संभर लायो वरि ॥

हुव तास बास सत्रुन हरन गंगादास१००सुभास सुत ॥

जहव प्रसक्त तनया रमा१००।१पुरवयान परन्यौ प्रनुत ॥३७॥

[ दोहा ]

गंगादास तनूज हुव, मानसिंह१०१मतिमान ॥

नृपजहवकौ श्रीनगर, व्याहयो यह सुविधान ॥३८॥

सुता त्रिलोचनकी सुघर, नववय जमुना१०१नाम२॥

दंपति२सुख विलसे दुलभ, क्रीडन जिम रति१काम२॥३९॥

[ षट्पान् ]

मानसिंह१०१सुत सूर विदित प्रकल्यो विश्वंभर१०२ ॥

मूलदेव कछवाह सुता स्यामा१०२।१व्याहयो वर ॥

जाय कच्छ बुगलान अंडर दुलहनि यह आनी ॥

मथुरादास१०३महीप तनय ताकौ हुव दानी ॥

द्वारका भूप जयदेवकी सुता यह परन्यौ सुमति१०३।१ ॥

भाखिये कौन अन्वयभव सु ग्रंथन बिच पाई न गति ॥४०॥

दोहा

जाको कुल१न लिख्यो लिख्यो, नगर२जनक३अरु नाम४

किम हम तहँ कैलिपत लिखैं, जानैं धर्महिं जाम ॥ ४१ ॥

१स्वरूप से और गुण से सुन्दर २समुद्र के समान चित्तवाला चहुवाण परण लाया जिसके शत्रुओं का पास हरनेवाला ३ श्रेष्ठ क्रान्तिवाला गंगादास नामक पुत्र हुआ ४ विशेष स्तुतियोग्य ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ५ सुवह (श्रेष्ठ घड़नावाली अथवा बुद्धिमान्) ६ नवीन अवस्थावाली ७ स्त्री पुरुष ने जोड़ा से सुख विलसे और जैसे रति के साथ ८ कामदेव क्रीड़ा करे तैसे क्रीड़ा करी ९ बुगलान पुर में जाकर १० निर्भय ११ इसका जन्म किस वंश में था जिसकी गति ग्रंथों में नहीं पाई ॥ ४० ॥ ग्रंथों में इस कन्या का नाम, इस के पिता और पुर का नाम तो १२ लिखा है परन्तु कुल नहीं लिखा तब ग्रन्थकर्ता (सूर्यगुप्त) कहते हैं कि हम मन से ही १३ कल्पना करके कैसे लिखें १४ जहाँ धर्म का जानते हैं तहाँ भूठ कैसे लिखें ॥ ४१ ॥

विवत्थल अलराज नृप, प्रतप्यो इत प्रतिहार ॥  
 सुत पचीस२५ताकै भये, जंग सवहि जुझार ॥ ४२ ॥  
 हंसराज तिनमैं बडो, सो जहव दढ दंस ॥  
 मृगयामैं अप्रज हन्यो, गिन्यो पितर तस बंस ॥ ४३ ॥  
 सुमतिहु मथुरादास१०३सन, उपजायो सुत एक ॥  
 सबन द्वारकादास१०४सो, बरन्यो बिहित बिबेक ॥ ४४ ॥  
 जीवापुर दिनकर जनन, बीरसेन नरनाह ॥  
 तास सुता पद्मावती१०४१लायो यह बरि व्याह ॥ ४५ ॥  
 तनय द्वारकादास१०४कै, हुव नृप माधवदास१०५ ॥  
 कलि सत्रुन चूरन करन, अर्थिन पूरन आस ॥ ४६ ॥  
 मदनपुरी जहव नृपति, संसिकुल भूखन सूर ॥  
 तास सुता चन्द्रावती१०५१, परन्यो नृप गुन पूर ॥ ४७ ॥  
 सुत हुव माधवदासकै, मूरन मुकुट सुदास १०६ ॥  
 गंज्यो तिहिं दंतालगढ, बैरिन दै बनवास ॥ ४८ ॥  
 नृप चालुक हरनाथकी, सुता सुप्रभा१०६१नाम ॥  
 संभरपति परन्यो सुमति, धन्वंतरिपुर धाम ॥ ४९ ॥  
 इत चालुक मोहन नृपति, सूकर१ उत्कल२नाह ॥  
 पूरवधर पट्टनि पुरी, रची सिल्पमत राह ॥ ५० ॥

पादाकुलकम् ॥

भयो महीप राजमोहन सुत, तनय तीन३ताकै हुव नयनुत ॥  
 जेठो महाकर्ण१खंडन जस, बीरभानु २सुरकर्ण३अनुज तस ५१ ॥  
 बीरभानु१पाई पट्टनि भुव, जाकै कुल भाला१चालुक हुव ॥

१वीर(युद्ध करनेवाले) ॥ ४२ ॥ २दढ कवचवाला ३शिकार में ४बिना सन्तान मरा  
 जिस को उसके वंशवाले पितर मानते हैं ॥ ४३ ॥ ५उचित ज्ञानवाला ॥ ४४ ॥  
 ६ लूर्यवंशी ॥ ४५ ॥ ७ युद्ध में ८ याचकों की ॥ ४६ ॥ ९ मैनपुरी में १०  
 चन्द्रवंश का भूषण ॥ ४७ ॥ ११वीरों का मुकुट ॥ ४८ ॥ १२काशीपुर ॥ ४९ ॥  
 उत्कल देश का १३पति ॥ ५० ॥ यश १४पैदा करनेवाला ॥ ४१ ॥ १५पाटणपुर  
 की भूमि १६ भाला पदवीवाले सोलंखी हुए

सुरकर्ण २ हिं किल राजनगर दिय, अन्वयतास भुरटिया २ अक्खिय ५२  
महाकर्ण १ उत्कल १ निवास तजि, रहन लगो सूकरगंगा भँजि ॥  
नृप सुदास १०६ संभरपतिकै इत, सुत दस १० भये बीररस वंदित ५३  
( षट्पात् )

बीरभद्र १०७ १ अरुकासिनाथ १०७ २ मधुसूदन १०७ ३ वामन १०७ ४  
बलि मुरारि १०७ ५ बाराह १०७ ६ हृषीकेश १०७ ७ हुउदारमन ॥  
केसव १०७ ८ पुनि बलभद्र १०७ ९ कमलनयन १०७ १० हु सर्वानुज ॥  
ए १० सुदास अंगभव भये आजानुबाहु भुज ॥  
जान्यौ न सकल अनुजन जनन बीरभद्र १०७ १ अग्रज बली ॥  
रुक्मिणी १०७ १ व्याहि लायो रसिक कुल जहव पंकज कली ५४  
दोहा

सेनपाल नृपकी सुता, जो कंबलपुर जाय ॥  
गृह आनी यह पानि गाहि, रानी संभरराय ॥ ५५ ॥  
संभरकी करनाटसौं, अवनी चोथे ४ अंस ॥  
सो अब बढत सुदाससौं, वसुधेश्वरके वंस ॥ ५६ ॥

[ षट्पात् ]

बीरभद्र सुत भयउ धारि गोपाल १०८ धर्मधुर ॥  
सल चालुक तनया पृथा १०८ १ सुपरन्यौ कौंकनपुर ॥  
नृप गोपाल तनूज भयो गोविंददास १०९ पुनि ॥  
सो तोवर संकर सुता सुपरन्यौ समता सुनि ॥

अभिधान जास राधा १०८ १ बिदित हुव सुपुत्र तामैं कुमर ॥

मानिक्यराज ११० नामक सुमति कैलि जिहिं लिन्नौ सबनकर ५७

१ उसका वंश २ सोरम घाट पर गंगा का सेवन करके ५३ १ सबसे छोटा ४ सुदास  
के पुत्र ५ इनमें छोटे पुत्रों का वंश कितना चला और कहाँ रहा सो नहीं जाना  
६ यादबों के वंश रूपी कमल की कली ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कर्णाट देश से सांभर  
की ७ भूमि चौथी पांती थी सो ८ चहुवाण वंश में सुदास से बढने लगी  
॥ ५६ ॥ ९ अपने समान (बराबरीवाला) सुनकर १० युद्ध में जिसने सबसे खि-  
राज लिया ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ  
 बीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने महानन्द ९५टोडेश्वरतोमरकन्यारुमा  
 ९५।१ परिणायनसमवगतशाकम्भरीस्वप्रहृतविन्दशाकम्भरनगर-  
 स्कन्धावारस्थापनशक्तिमन्दिर१तत्पुर२जीर्णोद्धारणाविष्णुदास ६६  
 सुभद्रा९६।१महाराज९७शशिप्रभा १७।१ रेवादासे९८न्दुमत्य९८।१  
 अमरसिंह९९वज्जुला९९।१गङ्गादास१००रुमा१००।१मानसिंह१०१  
 यमुना१०१।१विश्वम्भर१०२श्यामा १०२।१ मथुरादास१०३सुप्रति  
 १०३।१द्वारकादास१०४पद्मावती१०४।१माधवदास१०५चन्द्रावती  
 १०५।१सुदास१०६सुप्रभा १०६।१समुद्रहनसुदासराजकुमारवीरभद्र  
 १०७।१दिदशको१०७वनतज्ज्यायोवीरभद्र १०७ रुक्मिणी १०७।१  
 गोपाल१०८पृथा१०८।१गोविन्ददास १०९राघो१०९।१पयमनतन्मा-  
 णिक्यराज११०समुद्रवनं त्रिषष्टि६३तमो मयूखः॥ ६३ ॥

आदितः पञ्चोत्तरशततमः ॥ १०५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पादाकुलकम्

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-  
 वाण वंशवर्णन में महानन्द का टोडा के पति तँवर की कन्या रुमा से वि-  
 वाह करना, साकम्भरी देवी का स्वप्न में श्रेष्ठ रीति से जनाये हुए विन्दा  
 क्षत्रियों को मारकर सांभर नगर में राजधानी स्थापन करना, और शक्ति  
 के मन्दिर और उसके पुर का जीर्णोद्धार करना, विष्णुदास का सुभद्रा को  
 महाराज का शशिप्रभा को रेवादास का इन्दुमती को अमरसिंह का वज्जुला  
 को गंगादास का रुमा को मानसिंह का यमुना को विश्वम्भर का श्यामा को  
 मथुरादास का सुप्रति को द्वारकादास का पद्मावती को माधवदास का चन्द्रा-  
 वती को सुदास का सुप्रभा को विवाहना, और सुदास के वीरभद्र आदि-  
 दश कुमरों का जन्म होना, जिनमें श्रेष्ठ वीरभद्र का रुक्मिणी को गोपाल  
 का पृथा को गोविन्ददास का राघो को विवाहना, उससे माणिक्यराज का  
 जन्म होने का तिरसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६३ ॥ और आदि से एक  
 सौ पांच मयूख हुए ॥ १०५ ॥

नृप गोविंददास १०९कौ हुव सुत, जो माणिक्यराज ११० सब गुन जुत ॥  
 एकछत्र प्रतप्यो संभर यह, अधिपति भयो मंडलेस्वर यह ॥ १ ॥  
 भरयह १स्वरयह २अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

[ दोहा ]

इत नृप गोकुलराजसौं, छुट्टो सूकर देस ॥  
 लथो जोरकरि जह्वन, गयो निकसि तव एस ॥ २ ॥  
 सो चालुक दक्खिन अवांनि, धरि बिदुर्भ निज धाम ॥  
 जदुन दरित निवस्यो जहाँ, गंजि लये कछु ग्राम ॥ ३ ॥

[ एकांत्यानुप्रासिनी ]

( रोला )

इत संभर मानिक्यराज ११० भो अविर्त दानी ॥  
 बढती भुमि सुदास पहुहु जिहिँ अधिक बढानी ॥  
 लये विजैपुर १देवदुर्ग २ऊखापुर ३धानी ४ ॥  
 चंदावारी ५बहुरि लुट्टि निज अमल लगानी ॥ ४ ॥  
 सत्तलपुर ६अरु नागनैर ७जिते जुरि मानी ॥  
 ब्रधननगर ८वलमी ९समेत सिवपुर १०सिंहानी ११ ॥  
 जयतारन १२जालोर १३दुर्ग सुजर्भति १४सिखरानी १५ ॥  
 पेल १६तिजारा १७सुकताल १८मेरट १९बुगलानी २० ॥ ५ ॥  
 पानीपथ २१अजमेर २२जील २३अब्बू २४घरआनी ॥  
 धरनीधर २५संचोर २६सीम निज आन फिरानी ॥  
 पव्वागढ २७किरनाल २८दुर्ग रत्ता २९रजधानी ॥  
 सिंगाना ३०कानौड ३१मैम ३२वाँद ३३रु भीयानी ३४ ॥ ६ ॥  
 अंतीला ३५अर नारनोल ३६जज्भर ३७तिरभानी ३८ ॥

१ चार योजन भूमि पर राज करनेवाले को राजा कहते हैं और ऐसे सौ राजा जिसके आधीन हों उसको मंडलेश्वर कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ ३ दक्षिण की भूमि में ३ यादवों से डरा हुआ ॥ ३ ॥ ४ निरन्तर दान देनेवाला हुआ ५ देवगढ़ ६ नगर विशेष ७ जैतारण ८ सोजत ॥ ५ ॥ ९ अरु

खरसिंदूर३९अरु सामरेन४०चरखी४१चिकलानी४२ ॥

पट्टालय४३कुरुखेत४४सीम छिति सर्व छुरानी ॥

इत पव्वयसर४५डिडवान४६पर आन भगानी ॥ ७ ॥

नारायनपुर४७जुव्वनैर४८दब्बे इत दानी ॥

फर्गी४९कालख५०पटल५१भाक५२लागि चाक५३लवानी५४ ॥

टोडा५५डग्गी५६नगर५७टौक५८बरवाड५९बुधानी६० ॥

लोचनपुर६१दुन्नी६२वडोद६३घट्टी६४घरआनी ॥ ८ ॥

गढबयान६५हिंडोनि६६दुर्ग ब्रजग्रंत बखानी ॥

इत खट्ट६७हिंसार६८चंग६९जंगल लग जानी ॥

रेवाडी७०जाजव७१अटेर७२अव स्वीय कहानी ॥

इत्यादिक नृप नगर१दुर्ग२जित्त्यो जुरि मानी ॥ ९ ॥

सत्त७गुनी करनाटसौहु अवनी अधिकानी ॥

यौ सम्भर मानिक्यराज११०बंधी रजधानी ॥

मारे जद्व १ गहिरवार २ गोहिल ३ मडानी४ ॥

चालुक५तोमर६सुकवार७मेहर८मुलतानी ॥ १० ॥

वडगुज्जर९चंदेल१०चाच११सैगर१२धर आनी ॥

जित्त्यो रन इतनै नरेस करि तुष्ट मृडानी ॥

मथुरापति जद्व मुखुंद तेनया जगजानी ॥

हेमा११०१नाम सु चाहुवान परनी पटरानी ॥ ११ ॥

आनी वह संभरनिकेत ईन्द्र कि इन्द्रानी ॥

पंच५करे मख कुण्डपाय५चउ४चैनन४विधानी ॥

सौत्रामणि१मै सहस१०००भार किय घृत कीलानी ॥

१भूमि२शत्रुओं की आण को भगादी ॥ ६ ॥ ७ ॥ ३जोबनेर४फागी५नैणसा ना-

मक ग्राम ॥ ८ ॥ ६ रेगिस्तान (थळी) तक ७ अपनी कहलाने लगी ॥ ६ ॥

८ भूमि ९ गहरवाल पदवी के चात्रियों की जाति विशेष ॥ १० ॥ १० देवी को

प्रसन्न करके ११ पुत्री ॥ ११ ॥ १२ इन्द्र इन्द्रानी को आने तैसे चतुर्वाण ने उस

हेमा को अपने १३ घर में आनी १४ सोमयज्ञ १५ यज्ञ विशेष १६ तोल दि-

शेष १७ अग्नि की ज्वाला में



साकम्भरि मनश्चचनरसुद्ध सेई सुररानी ॥ १२ ॥

अट्टदिसानै भागधेय अप्पी चउअनी ॥

अैसी भूतल प्रबल आन मच्ची चहुवांनी ॥

पिन्नों गड्डुरि १ सारदूल २ इक १ घट्टै पानी ॥

जे हत्थन धरते कमान तिन्ह कंठ गिरानी ॥ १३ ॥

कतिकन भौहन बिछुरि मुच्छ चिबुकन चिपकानी ॥

कर जिनके तजते न मुट्टि तिन मत्थ गहानी ॥

जिन मानी ग्रीखम अनेहं निज गेह हिमानी ॥

तिन भूपनकी तपंत जेठ सम्भर थिति जानी ॥ १४ ॥

सिंघनके १ देखे न देस २ मेघनके १ पानी २ ॥

रक्खी यह मानिक्यराज १०करि सत्य कहानी ॥

किन्नों संगर समरसिंह निज दल सेनानी ॥

द्वै सत २०० सासन द्विजन अर्थ दिन्नै दिन दानी ॥ १५ ॥

पौराणिक प्रद्युम्नकाज दस १०सौं घडवानी ११ ॥

चारन केसवको वडोदरमधुको छगानी २ ॥

वंदीजन मेघरु मुरारिकिन्नै धनमानी ॥

वसुधा वाला सबन छोरि नृप हत्थ बिकानी ॥ १६ ॥

१ देवी को २ खिराज ३ एक रुपये में से चार आने (चतुर्थांश) ४ चहुवान की ५ भेड़ और सिंह ने एक घाट पर पानी पिया ६ जो हाथों में धनुष धारण करते थे उनके गले में डाल दिया ॥ १३ ॥ कितनों की मूर्छे भौंहों से उलटी मुड़कर ७ ठोड़ी से चिपक गई अर्थात् मूर्छे नीची होगई (मूर्छ नीची कर लेना पराजय का लक्षण है) जिनके हाथ खड्ग की ८ मूँठ नहीं छोड़ते थे उन्होंने खड्ग मस्तक पर रख लिया जिन राजाओं ने माणिक्यराज के ९ समय को ग्रीष्म ऋतु जानी उनके घर में १० सीतलता रही और जिन राजाओं ने जाना कि ग्रीष्म क्या है उनके लिये ११ चहुवान की स्थिति ज्येष्ठमास के सूर्य समान रही ॥ १४ ॥ अपनी सेना का १२ सेनापति १३ ब्राह्मणों को दो सी १४ उदक ग्राम दिये ॥ १५ ॥ प्रद्युम्न नामक १५ चारण को १६ दश ग्रामों के साथ घडवानी नगर दिया १७ छगानी नामक ग्राम दिया १८ भाट १९ भूमि रूपी स्त्री सबको छोड़कर माणिक्यराज के ही हाथ में बेची गई अर्थात् इसकी माल ली हुई होगई ॥ १६ ॥

अज्जानी१अज्जी सुहाग लज्जी तुरकानी ॥

को गंजें चहुवान वंस बह्वी यह बानी ॥

सहसबाहु अर्जुन समान जग आन प्रमानी ॥

मित्रन१ठानी अचल अद्वि२सञ्जुन१घर हानी२ ॥ १७ ॥

कलियुगकी मानी अनेक वैतैं पलटानी ॥

द्वापर१त्रेता२कृत३कथाहि सब्वन सुमिरानी ॥

राज्य करत मानिक्यराज संभर सुखधानी ॥

बसुधेस्वर१पैतीस३५वंस अगैं डग आनी ॥ १८ ॥

पादाकुलकम्

इम मानिक्यराज११०सम्भरपति, तप्यो सबन सिर मिहिरं महामति  
प्रभुपन विस्वविजित करि पायो, सु पुनि विस्वपति११२नाम कहायो  
दोहा

पाडव सक सर नाग नभ, जामल२०८५तिम कलिजात॥

पुरसंभर मानिक्य११०पहुँ, विदित करी जस बात ॥२०॥

सोरठा

हेमामैं हनुमान११११२, प्रथम विश्वपतिसौं भयो ॥

पुनि सुग्रीव१११२सुजान, ए२सोदर प्रकटे उभय२ ॥२१॥

दोहा

लई जैनक अवनी सु लखि, मन अनिच्छ हनुमान११११२

खेहैं निज भुज खँटिकैं, चिंती यह चहुवान ॥२२॥

१ आर्यावर्त की भूमि ने सुहाग २संचय किया और २ तुर्किस्थान की भूमि लज्जित हुई (नृह आदि के हमले आर्यावर्त पर पाहिले हांचुके थे इससे तुरकानी का लज्जित होना लिखागया) ४ चहुवान वंश को कौन जीतसक्ता है ॥ १७ ॥ ५ यार्ते ६ सत्ययुग की कथा सबको याद कराई ७ चहुवाण ने पैतीस वंश के आगे ८ पैड दिया (चधियों के छत्तीस वंश माने जाते हैं) ॥ १८ ॥ ९ सूर्य १० संसार को जीतकर युधिष्ठिर के सम्वत के और ११ कलियुग के दो हजार पचीस वर्ष जातेहुए १२राजा मानिक्यराज ॥ २० ॥ १३सहोदर (सगेभाई) ॥ २१ ॥ १४पिता की लीहुई भूमि को देखकर उसकी १५प्या नहीं करके हनुमान ने विचारकिया कि अपने सुजों की १६उपार्जन

पिता जबहि जुवराजपद, लग्गो याकँहँ दें॥

कुमर नट्यो तब अरज करि, नये देस लरि लैन ॥२३॥

षट्पात्

किय हनुमान१११कुमार प्रनत यह अरज पिता प्रति ॥

सिद्धखदेहु प्रभु सुतहिँ सदा छत्रन रन संगति ॥

राजकुल१रु मृगराज२बसत सुहि देस बिचारत॥

मिलै छिति न तब मोहि असन अप्पहु लखि आरत ॥

निज जनक धाम पावत निखिल विनु श्रम यह पछति बहत ॥

नव भव गहँ न भूपन तनय किमहु पुत्र ताहि न कहत २४

दोहा

सोदर मम सुग्रीव यह, भुगहु संभर भोग ॥

पृथक देस हम पायहँ, जय१नय२समुदयं जोग ॥२५॥

षट्पात्

सु सुनि विस्वपति११०सुपहु खंध थप्पलि सिराहि खिन॥

जंपियँ दलँ लौजाहु यह हु मन्त्री न कुमर ईन ॥

जननी निज जँहोनि इक्क१अप्पिय मनिभूखन ॥

सो लहि मातुलँ निलँय अप्प पत्तो मधुपत्तन ॥

भूपति मुकुंद सुत रुक्मरथ धरत छल मथुरा नगर ॥

जँह जाइ बंदि भूखन वह रु कटक नँव्य रक्खिवय कुमर॥२६॥

को दुई भूमि भोगेंगे ॥ २२ ॥ २३ ॥ १ विशेष नम्र होकर क्षत्रियों के सदैव युद्ध हीरसंगम है ३ सिंह ४ सुभे अन्य जगह भूमि नहीं मिले तब ५ पीडित जामकर आप भोजन दीजिये ६ अपने पिता का घर ७ सभी पाते हैं यह विना परिश्रम के ८ मार्ग में चलना है परन्तु राजाओं के पुत्र क्षीत भूमि नहीं खें उनको ९ किसी प्रकार से पुत्र नहीं कहते ॥ २४ ॥ विजय और नीति के १० श्रेष्ठ उदय के योग से ॥ २५ ॥ ११ कहा कि १२ निज लोका सो १३ कुमरों के सूर्य ने यह भी नहीं माना १४ कुमर की माता जानकी ने १५ माणियों का एक भूषण दिया १६ मामा के १७ घर १८ मथुरा पुरी में गया १९ नवीन सेना रक्खी ॥ २६ ॥

दोहा

मधुपुरतैं हनुमान१११इम, सज्जे अतुल सिपाह ॥

प्राचीदिस चलिवो प्रथम, रुच्यो कुमारहिं राह ॥ २७ ॥

षट्पात्

सूकरैः गंगान्हाइ पिंड समुचित प्रयाग२ करि ॥

कासी३सद्धि विधेय गया४ भूदेव भर्म भरि ॥

अवनी पिक्खन अगग चित्त जगदीस५अवधि किया ॥

निज दूतन तैं आय कुसुमपुर सुद्धि निवेदिय ॥

जैं राज्य करत रविकुल चटुल सो सचिवन रुठो रहत ॥

परदार संग गहि जारपन बट७ उब्वट२ उद्धत बहत ॥ २८ ॥

सोरठा

तातैं छ६ प्रकृति तास, अधिप करयो चाहत ईतर ॥

चढयो कुमार इहिं चासैं, कुसुमदंग संगर करन ॥ २९ ॥

षट्पात्

हांकि कटक हनुमान कुसुमपत्तन प्रयान किय ॥

चटुल सज्जि चतुरंग दाव सुनतहि सम्मुह दिय ॥

जुद्ध भयउ दुव२जाम परे नर१तुरंग२हजारन ॥

पै संचिवादिक पलटि कह्यो कुभरहिं दुख कारन ॥

विसवासि सवन करि चटुल बध जित्ति कुसुमपत्तन लयो ॥

तैं स्वीय राजधानी बिरचि मोद जनकै१भ्रातरहिं दयो ॥ ३० ॥

१ पूर्वदिशा में ॥ २७ ॥ २ सोरमघाट पर ३ ब्राह्मणों को सोना से पूर्ण कर-  
के अगली ४ भूमि देखने के लिये जगदीश तक जाने का विचार किया ५  
पटना की ६ खबर सुनाई ७ चटुल नामक सूर्यवंशी राजा वहां राज्य करता  
है ८ पराई स्त्रियों के साथ ९ अनग्रहोकर चलता है ॥ २८ ॥ राज्य की स्था-  
प्रकृति हैं जिनमें राजा को छोड़कर बाकी की है १० प्रकृति ११ दूसरा रा-  
जा करना चाहती हैं १२ इस खबर पर १३ पटना में युद्ध करने को कुमार  
बढ़ा ॥ २९ ॥ १४ दो पहर तक युद्ध हुआ परंतु १५ मंत्री आदि में चटुल से  
पलट कर हनुमान कुमार को अपने दुःख का कारण कहा १६ पटना पुर को  
जीत लिया १७ अपनी १८ पिता

( दोहा )

लौ पुरपाटलिपुत्र इम, हुव भूपति हनुमान११११॥

पायो सम्मंद विश्वपति, विक्खि सुतहि बलवान ॥ ३१ ॥

( पादाकुलकम् )

श्रवन रामें नरनाह धरहु सब, चहुवाननकुल भेद फटत अवा॥  
 वंसपुरुखें जे प्रथम गिनाये, तिनकै इक१इक१पुत्रहि पाये ॥३२॥  
 काहूकै न होय दूजो२सुत, यहहु असंभव गिनहु नरननुत॥  
 प्रमति साप रखैं जो कारन, इक१कैहु व्है तब विस्तार न॥३३॥  
 तो तेरह१३अजपाल तनय किम, तनय तीन३भटदलनकैहु तिमा॥  
 पुनि इकबीस२१अनंगराज सुंव, दसक१०सुदासकैहु कैसैंहुव ३४  
 प्रमति कह्यो अंतर कछु पैहो, जब चहुवान बहुत बढि जैहो ॥  
 बहुत प्रजा कतिकनकै ताँतैं, चहिये सोहु सुनी नहिं यातैं॥३५॥  
 काहूको न चलयो कुल१जानहु, अल्पहु बढ्यो काहुको मानहु॥  
 अबलौ बंस रह्यो नहिजिनको, लोभिनें कर्यो अनादरतिनको३६  
 कारन द्वै२कविबुद्धि विचारै, व्है ते भागध जनन निकारे॥

१पटना को लेकर२हर्ष पाया३देख कर४हे राजारामसिंह! सुनो५पहिले पीढ़ियें  
 गिनाई उनमें एक एक ही पुत्र होना पायाजाता है६हे मनुष्यों में स्तुतियोग्य  
 रामसिंह ! किसीके भी दूसरा पुत्र नहीं हुआ यद्७नहीं मानने योग्य है८  
 प्रमति ने पाहिले श्राप दिया था वह जो सन्तान नहीं बढने का कारण मा-  
 ना जावे तो एक के भी ९ सन्तान का विस्तार नहीं होना चाहिये ॥ ३३ ॥  
 १० पुत्र ॥ ३४ ॥ ११ इसकारण से कितनों के बहुत सन्तान चाहिये सो भी  
 नहीं हुए ॥ ३५ ॥ अथ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपनी सम्मति लिखते हैं कि कि-  
 सीका तो वंश चला ही नहीं और किसीका वंश कम बढा उनका अनादर  
 करके १२ लोभी १३ बड़वा भाटों ने उनके नाम अपनी पुस्तकों से निकाल  
 दिये इसकारण से ऊपर की पीढ़ियों में एक एक ही पुत्र होना पाया जाता  
 है. (ग्रन्थकर्ता ने बड़वा भाटों की पुस्तकों पर पूर्ण विश्वास करलिया इसीका-  
 रण से इस ग्रन्थ के इतिहास में सम्बन्धों में और पीढ़ियों के नामों में भूलें  
 रही हैं सो हम दिग्दर्शन न्याय से कहीं कहीं दिखाते जावेंगे और इस टी-  
 का की पूर्वपीठिका लिखेंगे वहां पर भी इस विषय में हम अपनी सम्मति

इत हनुमान कुसुमपुर लिन्नो, कुमर राज्य पूरवधर किन्नो ॥ ३७ ॥  
 ते चहुवान तास कुल जाये, ते पूरविया प्रथम कहाये ॥  
 कुसुमदंग ताहीके अन्वये, भयो विक्रमादित्य बीतिभये ॥ ३८ ॥  
 चंद्रावती जास हुव रानी, वैजलदेव तास हुव मानो ॥  
 जो नृप सकल सास्त्र पारंगत, विस्मरि मंगलमै न लिख्यो वत ॥  
 ताके तनय श्रीहराधर हुव, जिहिं सिंसु लखि उपदेस धारि धुव ॥  
 सुगम व्याकरण छंदि सुहायो, ग्रंथ प्रबोधचंद्रिका गायो ॥ ४० ॥  
 असो वैजलदेव भयो पंडु, विस्तर ताके वंस लह्यो बहु ॥  
 पूरवियाहु भेद बहु पावै, नृप सुनिये ते सुकवि गिनवै ॥ ४१ ॥  
 आल१बील२सागर३आसावर४, अरु तोगी५पप्पडिया६आमर७ ॥  
 असिमेरी८भाकर९सावरिया१०, है इंग११रु जडेचक१२हरिया१३  
 नम्मसवाल१४भंगसिक, नामक, समरांचक, समरूप, सुधामक ॥  
 मुकराना१८भावड१९तिम मानहु, यो पुनि गोगसेन२०उर आनहु४३  
 सामवाल२१तोसीना२२संभर, बहुरि गुरावा२३धामनेच२४वर ॥

लिखेंगे परन्तु यहां इतना लिख देना अवश्य समझते हैं कि बड़वा भाटों की पोथियों में दो सौ वर्ष इधर के नाम और संवत तो सही मिलते हैं और आगे के नामों में और संवतों में गड़बड़ है सो तीन सौ वर्ष तक तो फिर भी कुछ सही और कुछ गलत मिलते हैं परन्तु पन्द्रह सौ के शतक से आगे के तो निरे मनउपंग लिखे हुए हैं इसका कारण यह मालूम होता है कि बड़वा भाटों में वंशावली लिखने की पहिले प्रथा ही नहीं थी और जो प्रथा थी तो बीच में छोड़ बैठे और पन्द्रह सौ के शतक में अथवा इससे भी कुछ पीछे वंशावली लिखना प्रारंभ करके अपने पुस्तकों को प्रामाणिक करने के लिये कल्पित नाम और कल्पित संवत लिखकर पूर्वापर संगति मिला दी है इसीसे इतिहासकर्ताओं ने भूलें खाई हैं ? पटना में उसीके २ वंश में ॥ ३८ ॥ ३ सब शास्त्रों का जाननेवाला हुआ जिसको ४ भूलकर ५ मंगलाचरण में नहीं लिखा ॥ ३९ ॥ उस हरधरा धुव को ६ वालक जानकर उसको पढ़ाने के अर्थ ७ निश्चय ही सुगम व्याकरण ८ छंदिकर प्रबोधचन्द्रिका नाम ग्रंथ बनाया ॥ ४० ॥ ८ राजा हुआ जिसके वंश ने बहुत १० विस्तार पाया ११ ग्रन्थकर्ता (मूर्धमल्ल गिनाते हैं ॥ ४१ ॥ १२ अष्ट धामवाल १३ चहुवान,

मारु२५मंत्री२६भवर२७महामन, हव्वासी२८दानिक२९अरातिहन  
कलेचा३०रु बग्गड३१इत्यादिक, वंसभेद तिनमें गन बादिक ॥  
पूरबिया१इतहू कछु पाये, राने सुभट जे सुनहु सुहाये ॥ ४५ ॥

[ दोहा ]

वेदला१रु कोठारिया२, बहुरि पालसोली३हु ॥

पूरबिया चहुवान ए, करहु श्रवन खिलकी हु ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीयशराशौ बीति-  
होत्रचण्डासिवंशवर्णने च्युतराज्यचालुक्यगोकुलराजविदर्भनिवस-  
नकृतदिग्विजयमाणिक्यराज ११० यादवीहेमा ११०१२ परिणयन  
सत्रदानादिसमनुष्ठानराजकुमारहनुमत् ११११२ सुग्रीव ११११२ स-  
मुद्रवनत्यक्तशाकम्भरज्येष्ठकुमारमागधराज्यसमासादनपूर्वपुरुषस-  
न्तानाऽभावशङ्कासमाधानहनुमत्सन्ततिचाहुवाणपौर्विकपदप्रापणौ-  
कलिंश३१तद्भेदप्रकटनं चतुःषष्टितमो६४मयूखः ॥ ६४ ॥

आदितः षडुत्तरशततमः ॥ १०६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

१ शत्रुओं को मारनेवाले ॥ ४४ ॥ २ उदयपुर के महाराणा के  
उमराव ॥ ४५ ॥ वेदला, कोठारिया और पारसोली नामक ग्रामों के पति  
पूरबिया चोहान हैं और ३ बाकी रहे जिनकी भी कथा सुनो ॥ ४६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण-  
वंश वर्णन में गोकुलपाल सोलंखी का राज्य छूटकर विदर्भदेश में बसना,  
माणिक्यराज का दिग्विजय करके यादवी हेमा से विवाह करना, और  
यज्ञ और दान आदि का अनुष्ठान करना, राजकुमार हनुमान् और सुग्री-  
व का जन्म, बड़े कुमार हनुमान् का सांभर को छोड़कर मगधदेश के राज्य  
को प्राप्त करना, पूर्वपुरुषों में सन्तान के अभाव की शंका का समाधान क-  
रना, हनुमान् के वंश के चहुवाणों को पूरबिया चहुवाणों की पदवी प्राप्त  
होना और उनके इकतीस भेद प्रकट होने का चौसठवां मयूख समाप्त हुआ  
॥ १४ ॥ और आदि से एक सौ छे मयूख हुए ॥ १०६ ॥

चतुर्वाणवशवर्णन ] तृतीयराशि—पञ्चषष्टिमयूख (१११३)

विश्वपतिहु ११२ सुग्रीव १११ कै, करि सम्भर अभिसेक ॥  
वास कियउ वारानसी, विधिसह सद्धि विवेक १ ॥ १ ॥  
तिनदिवसन लग्गो मिटन, दंपति २ विपिन प्रयान ॥  
बैखानस ३ आश्रम कठिन, हेरै कलि तस हान ॥ २ ॥

[ षटपात् ]

सुनहु राम नरनाह अहो दारुन कलि आगम ॥  
धर्म घटत घटि सकल होत प्रतिकूल समागम ॥  
याके प्रथम १ सहस्र १००० लोभ दुस्सह जोरयो जग ॥  
मग रक्खन व्यय मेटि नृपन जलकरि तोरे मग ॥  
जिम कन्हअग गजनैरतजि मिजल पंच ५ करि निजनयर ॥  
पहुंचे सु वत्त सुपनन परिग हुव दुर्गम उद्यानधर ॥ ३ ॥

[ दोहा ]

दुवसहस्र २००० कलिके बरस, वित्तत होय निसेस ॥  
चलि कृतघ्न १ चोर २ न चलन, बरतयो बास विसेस ॥ ४ ॥  
नियतहु छो रै कबहु जड, पै पल १ अन्न २ तजै न ॥  
काम १ क्रोध २ मद ३ मोह ४ करि, इक चहै निज अैन ॥ ५ ॥

१ सांभर के राज्य का अभिषेक करके २ काशीवास किया ॥ १ ॥ उन दिनों से ३ स्त्रीपुरुष का जोड़ा से तप करने को ४ वन में जाना मिटने लगा ५ वा-  
नप्रस्थ आश्रम कठिन है जिसको कलियुग नाश करना चाहता है ॥ २ ॥  
६ आश्चर्यकारक कलियुग का आना ७ सब. इस कलियुग के प्रथम हजार  
१००० वर्ष जाने पर संसार ने दुस्सह लोभ जोड़ा और राजाओं ने मार्ग (स-  
ड़क) की रक्षा के खर्च मिटाकर परस्पर जलकर अथवा वर्षा के जल से मार्-  
ग को तोड़ दिया. जिसप्रकार आगे हस्तिनापुर को छोड़कर श्रीकृष्ण पांच  
मंजिल में अपने नगर (द्वारका) पहुंचे थे वह वार्ता तो स्वप्न की सी होगई  
क्योंकि रस्ता टूटजाने से वन की भूमि दुर्गम होगई ॥ ३ ॥ कलियुग के पूरे  
दो हजार वर्ष बीतजाने पर कृतघ्न (किये हुए उपकार को न माननेवाले) और  
चोरों का चलन चला जिससे विशेष आस बरता ॥ ४ ॥ कभी मूर्खलोग  
नित्यकर्मों को (संध्यावंदनादिकों को) भी छोड़देते हैं परंतु मांस खाना नहीं  
छोड़ते और काम, क्रोध, मद, मोह करके एक अपने ही घर को चाहते हैं



कलि सहस्र १००० तीजों लगत, रुद्धो दंपतिरगोन ॥

पापसमय रचिकै रहैं, वैखानस विधि कोन ॥ ६ ॥

पुंज सुता विमला ११११ परनि, बडगुजरि सिवदंग ॥

संभरनृप सुग्रीव ११११ इत, भुगी अवनि अभंग ॥ ७ ॥

[ षट्पात् ]

नृपसुग्रीव तनूज भयो अंगद ११२ अजेय कलि ॥

सो कलिपुर जहव सुमित्र तनया विंभावालि ११३१ ॥

आयो परनि उदार गेह सद्यो श्रुति संगति ॥

तनय केसरी ११३१ तास भयो संभरपुर भूपति ॥

अयंक प्रमार दसपुर नृपति तनया कमला ११३१ नाम तस

परन्याँ नरेस हुव तास पटु सुत जयंत ११४ खट्टन सुजस ॥ ८ ॥

( दोहा )

नृप चालुक बडवानगर, संकरदास सुमंत ॥

सीता ११४१ तस तनया सती, परन्याँ भूप जयंत ॥ ९ ॥

चालुक गोकुलराजके, कुल इत गोकुलपाल ॥

पच्छो आय विदर्भसौं, सूकरलिय अरिसाल ॥ १० ॥

( षट्पात् )

नृप जयंतकै तनय भयो जगदीस ११५ महाबल ॥

सो परन्याँ जहोनि दुर्ग रनथंभ सज्जि दल ॥

नृप रनधीर सुता रु नाम रंभा ११५१ गुन आगर ॥

जिहिं जाठरं जयराम ११६, सूनू प्रकट्यो सतिसागर ॥

परन्याँ सु भूप गोपालपुर गहिरवार सत्तल सुता ॥

रुक्मिणी ११६१ नाम पतिभक्तिरत सील १ रूप २ वय ३ संजुता ॥ ११ ॥

॥ ९ ॥ १ स्त्रीपुरुष का वन में जाना भी रुक गया २ वानप्रस्थ विधि को रच कर इस पाप समय में कौन रहै ॥ ६ ॥ ३ शिवगढ़ ॥ ७ ॥ ४ युद्ध में अजेय ५ वेद का साथ ६ मंदसौर पुर का पति ७ पुत्री ८ चतुर ९ यश पैदा करने वाला ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १० पेट से ११ पुत्र ॥ ११ ॥

( दोहा )

विजयराम११७ जयरामकै, नृप हुव संभरनाह ॥

जिहिं तोवर जदुनाथकी, वरी सुता विधिव्याह ॥ १२ ॥

प्रभा११७१ नाम पायो प्रथित, रानी जिहिं सुभरूप ॥

तामैं नृपसौं कृष्ण११८ सुत, भो संभरकुलभूप ॥ १३ ॥

( पट्टपात् )

भूप कृष्ण११८ चहुवान भयो नय१ धर्म२ धुरंधर ॥

नृप गिरधर प्रामार सुता परन्यौ यह संभर ॥

लच्छी११८१ नाम ललाम तास जाठर समुद्र हुव ॥

रत्न भूपजितजुद्ध१९ धीर चहुवान अर्क ध्रुव ॥

राधिका११९१ नाम परन्यौ रासिक सो चालुक अर्जुन सुता

पुर कटकनाम किय व्याह पहु नारि लहिय कुलतियनुता ॥

[ दोहा ]

राधामैं जितजुद्धसौं, प्रकट्यो सुभग कुमार ॥

गोवर्द्धन१२० अभिधान जो, हुव संभर रखवार ॥ १५ ॥

[ पट्टपात् ]

भीमसुता जहोनि दया१२०१ परन्यौ गोवर्द्धन१२० ॥

ताकै हुव मोहन१२१ तनूज आलस१ प्रमाद२ पन ॥

नृप गोहिल हल्लूक सुता विजया१२११ परन्यौ यह ॥

ताकै गिरधर१२२ तनय भयो महिपाल महामह ॥

सैंगर प्रताप बंधूनगर कर तराज्य रविकुल तरानि ॥

गुरता१२२१ तदीय तनयौ सुंदर परन्यौ यह चहुवानमनि१६

दोहा

१ सांभर पुर का पति १२१ २ प्रसिद्ध ॥ १३ ॥ ३ चहुवान ४ चहुवान ५  
 चहुवाणों का स्वर्ग ६ कुल में और स्त्रियों में स्तुति योग्य ॥ १४ ॥ ७ नाम ८  
 सांभर पुर की रक्षा करनेवाला हुआ ॥ १५ ॥ ९ पुत्र १० बड़ा तेजस्वी ११ स्वर्ग  
 कुल का स्वर्ग १२ सती १३ पुत्री १४ सुवह ॥ १६ ॥

पांडव सक नभ अद्रि जिन २४७०, करि कलि अब्द अतीत ॥  
 गिरिधर १२२ सद्धी जोग गति, पुत्रहिं दै भुव प्रीत ॥ १७ ॥  
 इत उज्जैन नरसको, गोरिल कुमर प्रमार ॥  
 मारयो अप्रज गोहिलन, कारन सहज सिकार ॥ १८ ॥

### षट्पात्

यह प्रमार गौरिल कुमार शतसेन भूप सुत ॥  
 कढ्यो लखन निजदेस करन अलसन प्रवृत्तिजुत ॥  
 नगर नाम गुग्गैर हुतो व्यय १ आय २ सम्हारन ॥  
 एकाकी दिन इक बाँजि फेरत पत्तो बन ॥  
 मदसेन नगर भदोरपति नृप गोहिल कछु सत्थ सह ॥  
 बाराह पिठि निधरकं बहत आयो फैंकत तुरंग तह ॥ १९ ॥  
 सूकर गौरिल अगग आत ठँहो रह्यो सु थकि ॥  
 कह्यो कुमर परकीय धाम न करहु विरोध धकि ॥  
 सूकर अब हम सरन पुहँवि सीमा प्रामारन ॥  
 हनहिं याहि नहि हमहु करहिं पालन लखि कारन ॥  
 मदसेन अप्प छोरहु प्रसँभ जग गोहिल रक्खहु सुजस ॥  
 भदोरभूप तँदपि न रुक्यो मारयो तोमँर पिठि तस ॥ २० ॥  
 बहत कुंत गौरिल कुमार भपटाय तुरंगम ॥  
 अंस भारि तरवारि कस्यो मदसेन अजंगम ॥

युधिष्ठिर के सम्वत् के दो हजार चार सौ सत्तर वर्ष जाते  
 और वही कलियुग के वर्ष १ धिताकर ॥ १७ ॥ २ बिना सन्तान ॥ १८ ॥  
 ३ आलसी मनुष्यों को उद्यम में लगाने के अर्थ निकला ४ खर्च ५ आमद  
 सम्हालने के लिये ६ अकेला ७ घोड़ा फेरने को धन में ८ गया ९ सूवर  
 के पीछे १० निरशंक दौड़ाता हुआ ११ घोड़े को भपटाकर आया ॥ १९ ॥ वह  
 सूवर १२ गौरिल कुमार के सामने आकर थककर १३ खड़ा होगया १४ पराये घर में  
 १५ यह भूमि भी प्रामारों की सीमा में है १६ हे मदसेन आप इस सूवर को  
 मारने का हठ छोड़ दो १७ भदोर का राजा तोभी नहीं रुका और उस सूवर  
 के पीछे पर १८ भाला मारा ॥ २० ॥ १९ भाला बहते ही २० कन्धे पर तरवार मार

गोहिलके सामंत मारि असिबर याको सिर ॥

तोख्यो तदपि कुमार रुंड हनि भुंड लख्यो चिर ॥

अप्रज सु मख्यो संगर असह प्रामारन मन्ख्यो पितर ॥

जंतुन निमित्त इम बैर जग उठे कलि मेटत इतर ॥ २१ ॥

[ दोहा ]

लगि प्रामारन १ गोहिलन २, बहु पीढिन यह बैर ॥

उज्जैन १ रु भदोर २ ए, नियत लरे दुवर २ नैर ॥

नृप गोहिलको इत तनय, उदयराम १ २ ३ अभिधान ॥

प्रतप्यो संभर उदय पर, चंडधर्म चहुवान ॥ २३ ॥

चंद्रसेन रविकुल कलस, इत गोतम उपटंक ॥

राज्य करत नृप रामपुर, सत्रुन डारत संक ॥ २४ ॥

भानुमती १ २ ३ १ ताकी सुता, परन्यो संभर २ राय ॥

आलस इम अंकुस भयो, सबन प्रमाद नसाय ॥ २५ ॥

करवाये जिहि बुद्धि करि, अदिन ३ उप्पर अन्न ॥

निज बलसो त्रि ३ गुने नृपन, पायो विजय प्रसन्न ॥ २६ ॥

बसुंधा भुग्गी नीति बल, उद्यम करि चहुवान ॥

पायो सफल द्वितीय २ पुनि, उद्यम १ २ ३ यह अभिधान ॥ २७ ॥

भानुमती १ २ ३ १ बपु भस्म किय, स्वामि कलेवर संग ॥

भो उद्यम १ २ ३ सुत नृप भरत १ २ ४, जित्यो बहु अरि जंग ॥ २८ ॥

( षट्पात )

वर्तुलपुर रविवंस बैस उपटंक महीपति ॥

कर जड़ (मृतक) कर दिया १ उमरावों ने २ तरवार मारकर गौरिल का मस्तक

तोड़ दिया ३ बहुत देर तक ४ बिना सन्तान युद्ध में मरा ॥ २१ ॥ ५ नित्य

(सदैव) दोनों नगर लड़े (यहां लक्षणा से दोनों नगरोंवालों का लड़ना जानना चाहिये) ॥ २२ ॥ ७ उदय गिरि पर ८ सूर्यरूपी ॥ २३ ॥ ९ गोतम प-

दवीवाला ॥ २४ ॥ १० संभर का राजा १ १ आलस्य रूपी हाथी का अंकुश हु-

आ ॥ २५ ॥ १ २ पर्वतों के ऊपर ॥ २६ ॥ १ ३ भूमि को नीति के बल से भोगी

१ ४ उद्यम नाम पाया ॥ २७ ॥ २ ८ ॥ १ ५ गोलकुंडा नामक नगर में सूर्यवंशी १ बैस

रुद्रसेन अभिधान नाम तनया तस कीरति १२४१ ॥

संभर भरत १२४ सुबुद्धि सती परनी वह सुंदरि ॥

ताकै अर्जुन १२५ तनय धीर प्रकट्यो स्वधर्म धरि ॥

नृप करन विनाफर जदुर्जननछवर मऊपुर पति सुता ॥

जूथिका १२५१ नाम परन्यौ उचित नृप सुनारि नारिननुता १२९

( पादाकुलकम् )

जयत्पाल प्रतिहार भूप सन, विंक्षल छिन्यौ इत विंदन ॥

तत्थ मस्यो न गयो जुरि तासौ, इत आयो भजि स्वीय ईलासौ ३०

मरु जनपद पतन मंडोउर, धरत छत्र नृप गोहिल कुलधुर ॥

लखि खिन रंति पैठि तासौ लरि, कट्टि सवन निज अमल लयो करि

गोहिल खिल भजिगय जयतारन, पुनि इम मरु पायो प्रतिहारन ॥

सम्भर इत अर्जुन नृपकै सुत, नाम सत्रुजित १२६ भो वीरननुत ३२

चालुक भीम सुता सो सम्भर, कनकप्रभा १२६१ परन्यौ पुर ककर ॥

सोमदत्त १२७ भो नृप ताको सुत,

जरी सु कनकप्रभा १२६१ पति वपुर्जुत ॥ ३३ ॥

दोहा

सैंगर नृप सिवराजकी, तनया नंदा १२७१ नाम ॥

अब्धपुर सु संभर अधिप, यह परन्यौ अभिराम ॥ ३४ ॥

सस्मू जिम नंदा १२७१ सती, किय पतिजुत हुत काय ॥

तिनको सुत दुखंत १२८ तँहँ, हुव प्रभु खगँ सहाय ॥ ३५ ॥

पदवीवाले क्षत्रिय ? विनाफर नामक २ यदुवंशी ३ छवड़ा और म-  
ऊ के पति की पुत्री ४ स्त्रियों में स्तुतियोग्य ॥ १९ ॥ जयत्पाल प्रतिहार से  
५ विंदा जाति के क्षत्रियों ने विंक्षल छीन लिया ६ अपनी भूमि से  
भागकर इधर आया ॥ ३० ॥ ७ मारवाड़ देश में ८ मंडोवर पुर में ९  
रात्रि का १० समय देखकर ॥ ३१ ॥ गोहिल सब भागकर ११ जैतारण च-  
लेगये और मारवाड़ पडिहारों ने पाया १२ वीरों में स्तुतियोग्य ॥ ३२ ॥ १३  
बहुवान १४ पति के शरीर के साथ जली ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ पति के साथ  
शरीर को १५ होमदिया १६ खड्ग की सहायता से ॥ ३५ ॥

षट्पात

बिंदभूप बलिराज सुता ललिता १२८ कालंजर ॥  
 परन्यो यह दुखखंत १२८ भीम १२९ तस सुत हुव सम्भर ॥  
 तोमर भूप तिलोकचन्द्र तनया चंद्रावलि १२९ ॥  
 व्याह्यो यह मगवीच मारि रवि १३० सिसि २ कुल सम्मलि ॥  
 सुनि अतुल रूप तोवर सुता बैस अमर १ जद्व करन २ ॥  
 कन्या सुलैन हनि भीम १२९ कैहँ रन दोउ २ न पायो मरन ३६

दोहा

परन्यो भीम १२९ सु इम प्रिया, मगविच दुवश्नृप मारि ॥  
 ताकै हुव लखन १३० तनय, रदखन नव नव रारि ॥ ३७ ॥  
 सो प्रमार बसुरथ सुता, रमा १३० १ नाम हितरंग ॥  
 परन्यो जिहि अवसान पर, स्वर्ग कह्यो पति संग ॥ ३८ ॥  
 लखन सुत सम्भर लस्यो, परसुराम १३१ छितिपाल ॥  
 सो जद्व अर्जुन सुता श्री १३१ १ परन्यो रिपुसाल ॥ ३९ ॥  
 परसुराम अवसान पर, श्रीहु करयो पति सत्थ ॥  
 सुत याको रघुराम १३२ सो, तव भूपति हुव तत्थ ॥ ४० ॥

षट्पात

परसुरामको पुत मूढ रघुराम १३२ प्रमादी ॥  
 बग्ज्यो जिन दै बोध बन्यो तिनको प्रतिबादी ॥  
 रति १ दिवस २ आराधि कापिसायन गुरु किन्नो ॥  
 इंद्रिय सुख भँजि इक देस भारहु तजि दिन्नो ॥

१ पुत्री २ अमर नामक बैस जाति का लुत्री और ३ यादव करण, भीम को मार कर कन्या लेने आये थे सो दोनों मारे गये ४ लक्ष्मण नामक पुत्र ५ गुह्य को नवीन रखनेवाला ॥ ३७ ॥ ६ अन्त समय में पति के साथ स्वर्ग गई ७ शो-भायमान हुआ ८ भूपति ॥ ३८ ॥ ९ परशुराम के अन्त समय पर ॥ ४० ॥ १० जिन्होंने शिक्षा देकर बुरे कामों से उसको रोका उन्हींका उलटा ११ चिरा-धी होगया १२ रात्रिदिन १३ मदिरा सेवन करके उसीको गुरु बनाया १४ केवल इन्द्रियों के सुख का सेवन करके देशभर (राज्यकार्य) को छोड़ दिया

सुद्धांत छोरि निकस्यो न सठ भ्रमि कुलपदति भुल्लयो ॥  
 तिहिं लखि अचेत जिततित तकत दाव दुसह दोहिनं दयो ॥४१॥  
 जयतपाल नृप जनन बढ्यो मरु अमल बिथारन ॥  
 पुष्कर लग जिन दिनन पुहवि छाई प्रतिहारन ॥  
 दुदर दिस दिस दोरि लुट्टि परधन जे लावत ॥  
 पावत जोहि प्रमत्त छिप्र छिति तास छुरावत ॥  
 उनमाहिं नाम मंगल अडर प्रातिहार मारोट पति ॥  
 तिहिं आय नैरं सम्भर तबहि गरदायउ परिवेखें गति ॥४२॥  
 लगी भरत सन घटन विस्वपति छिति जु बढाई ॥  
 रहत जात रघुराम अट्टलजोजन अपनाई ॥  
 ताकाँ मंगल तक्कि सहर घेरयो साकम्भर ॥  
 जलमुक्कत आयुधन समर किन्नौ खटध्वारै ॥  
 करि दल्ल दिवस सत्तम७करयो पुर प्रवेस मंगल सजव ॥  
 न मरयो गयो सुरघुराम नृप भज्यो तजि अंजित विभव ४३  
 दोहा

निंदित निंदा आधुनिक, मागधलोक लिखै न ॥

जो कुपुत्र पुब्बहु भये, तो हम जानै हैं न ॥४४॥

वह सूर्य १ जनाने को छोड़कर बाहर नहीं निकला और भ्रम में पड़कर अपने  
 कुल के २ मार्ग को भूल गया ३ शत्रुओं ने दाव दिया ॥ ४१ ॥ जयतपाल  
 पट्टिहार का ४ वंश ५ मारवाड़ में अधिकार बढ़ाने को निकला ६ भूमि  
 को दबाली ७ जिनको उन्मत्त अथवा आलसी देखें उसीकी भूमि ८ शी-  
 घ छुडाले, जैसे सूर्य चन्द्रमा के चारों ओर १० परिधि (कुंडली) फिरजाती  
 है तैसे १ सांभर नगर को मंगल नामक पट्टिहार ने घेर लिया ॥ ४२ ॥ वि-  
 श्वपति ने ११ भूमि बढ़ाई थी वह भरत से घटने लगी १२ सांभर को १३  
 बाण आदि यंत्र से चलनेवाले आयुधों से छे १४ दिन युद्ध किया और सा-  
 तवें दिन हल्ला करके १५ शीघ्र सांभर में घुसा १६ अपने संचित किये विभव  
 को छोड़कर भागा ॥ ४३ ॥ इस समय के बड़वाभाट निन्दनीय पुरुष की  
 निन्दा नहीं लिखते इसकारण से पहिले भी जो कोई कुपुत्र हुआ होगा तो  
 उसको हम ने नहीं जाना ॥ ४४ ॥

बुरे भले सब बंसमें, होत राम नरनाह ॥

पै बिनु जानै काहुपर, रखन अब न राह ॥४५॥

कानि चहै नहि काहुकी, सुकबि कहै इक सत्य ॥

भनिदैबो दुष्टहि भलो, बहैबो सद्विजहत्य ॥४६॥

काव्य कथित रघुरामकी, जानी यह जड ताहि ॥

मंगलके प्रविसत कुमति, चलयो निकसि असु चाहि ॥४७॥

बिधुकुल तोवर ब्रध्नपुर, नृप हो अर्जुन नाम ॥

दुहिता तस परन्यो दया १३२१, राजा यह रघुराम १३२१४८॥

लरि मंगल संभर लयो, तब सो भजि भजि त्रास ॥

स्वसुर गेह गो संगभरि, आतुर सह रनवास ॥४९॥

स्वसुर ग्राम आधार सठ, कट्यो आउसकाल ॥

तज्यो न आसव देस तजि, चहुवानन तजि चाल ॥ ५० ॥

ब्रध्नपुरहि रघुराजके, समरसिंह १३३हुव पुत ॥

तज्यो जनक मग जिहि तदपि, करै राज्य अब कुत्र ॥५१॥

[ षटपात् ]

स्वायंभुव मनु जनन गौड उपटंक त्रिविक्रम ॥

जो भुगै करहाटनैर निवसथ सप्तक ७सम ॥

ताकी तनया विंदुमती १३३१ परन्यो यह संभर ॥

हे राजा रामसिंह विना जाने किसी पर दोष रखना अष्ट पुरुषों का मार्ग नहीं है ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि मैं किसीकी शंका (अथ) नहीं रखता केवल सत्य ही कहता हूँ क्योंकि जो अधम (नीच) हुए हैं उनका नीचपन कह देना अच्छा है परन्तु असत्य कहना तो ब्रह्महत्या के पाप भोगने के समान है रघुराम की यह मूर्खता बड़वा भाटों से नहीं मिली काव्यग्रन्थों में मिली है प्राण की चाहना करके निकल भागा २ चन्द्रवंशी ३ त्वर ४ नगरविशेष ५ पुत्री ॥ ४६ ॥ स्वसुर के घर में रहकर भी अपना समय मदिरा में बिताया और देश छोड़कर भी मदिरा नहीं छोड़ी ॥ ५० ॥ समरसिंह ने अपने पिता के कुमार्ग छोड़ दिये थे तो भी राज्य कहाँ करे अर्थात् राज्य करने को जगह नहीं रही ॥ ५१ ॥ स्वायंभुव मनु के ९ वंश में गौड पदवीवाले विक्रम नामक त्रिजि ७ सात ग्रामों के साथ ८ यह चोहान



भूमी विनु को भूप देत दुहिता दरिद्रघर ॥

तामाहिं भयो अरिउडु तपन समरसिंहकै वीर सुत ॥

मानिक्यराज १३४ अभिधानधर जो बालहि गुन सर्व जुत ५२

दोहा

अर्जुन तोमर अप्पये, जामातहिं दस १० गाम ॥

तत्थहि खोयो आयु तिहिं, राज्य हीन रघुराम ॥ ५३ ॥

षट्पात

समरसिंह बय तहँ सम्हारि उपर्याम विरचि इम ॥

तनय पाय कुलतंतु जतन भुव काज रचे जिम ॥

सुपहु राम तिम सुनहु दोर मंडिय भुव कारन ॥

लिय मारवं धर लुट्टि परिय ओदकै प्रतिहारन ॥

सतसत्त ७०० पदगै साँदी तिसत ३०० धीर वीर भट संग धरि

बहुबेर नैर सम्भरै बिभव लायो संभरै लूटकरि ॥ ५४ ॥

समरसिंह इकसमय घेरि सम्भरपुर गोधन ॥

बंधि धनिक बहु बँनिक चलयो प्रेरत निज जोधन ॥

मंगल सुत प्रतिहार नाम नाहर जिहिं जाहिर ॥

सो तिसहँस ३००० दल सज्जि लग्यो बाहर कढि वाहिर ॥

अँवमर्द जुद्ध मिलि दल उभय २ कोस तीन ३ उप्पर कर्यो ॥

चहुवान मारि नाहर सचमुँ पहर जुज्झि अप्पहु परयो ॥ ५५ ॥

दोहा

१ पुत्री २ तारों रूपी शत्रुओं पर ३ सूर्य रूपी माणिक्यराज ४ नाम को धारण करनेवाला ५ जमाई को ६ विवाह ७ कुल का सहारा रूप (कुलभर में एक ही पुत्र था इससे कुलतन्तु कहा गया) ८ हे श्रेष्ठ राजा रामसिंह सुनो ९ दौड़ा दौड़ना (धाड़ा डालना) १० मारवाड़ की भूमि को ११ आस पड़ी १२ पैदल १३ घोड़ों के सवार १४ साँभरपुर के बिभव को १५ चहुवान लूटलाया ॥ ५४ ॥ १६ धनवान १७ वनियों को १८ अपने लोगों की सहायता और शत्रुओं का पीछा करने को देशभाषा में बाहर कहते हैं १९ दोनों सेनाओं ने मिलकर घेड़ाकारी युद्ध किया २० नाहर चहुवाण की सेना को मारकर २१ आप भी

मंगल पुर्तहिं मारि इम, समरसिंह १३३ बिनु सीस ॥

पारि प्रहरं अंतर परयो, त्रानव ९३ भट हय तीस ३० ॥ ५६ ॥

ही पीहर करहाटकी, बिंदुमती १३३ १ सुत सत्य ॥

जरन बिलंब सहयो न जिहिं, तज्यो सुनत वपु तत्थ ॥ ५७ ॥

पादाकुलकम् ॥

मंडोवर प्रतिहार भूप इत, अनुपमपाल व्याह बहुं अर्जित ॥

जो इक १ ग्रामपतिहु तनुजा दिय, लगिहठ न न करि परनिसोहुलिय

नवनव नारि अनारत चाहिय, बालिस त्रिसत पचास ३५० विवाहिय

तदपि इक १ जयसिंह भयो सुवं, अरु इक १ चंद्रवती तनयोहुवा ५१

अमरचंद्र मथुरा पति जहव, ताहि दई यह धन्वधरौधव ॥

तवतै जटुन पाल पद पायो, प्रतिहारन पद रान कहायो ॥ ६० ॥

सोमानिक्यराज १३४ इत संभर, पुर करहाट रहयो मातुल घर ॥

जिहिं बालहिं उद्यम बर जान्यो, सख १ साख २ जुग २ पढन प्रमान्यो

इति श्री बंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ

वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने कृतसुताभिषेकमाणिक्यराज ११० का

शीनिवसनशाकम्भराधिराजसुग्रीव १११ विमला १११ १ इन्द्र ११२ विं

ध्यावली ११२ १ केशरी ११३ कमला ११३ १ जयन्त ११४ सीता

गिरा ॥ ५५ ॥ इसप्रकार मंगल प्रतिहार के १ पुत्र को मारकर २ एक प-

हर पीछे पड़ा ३ करहाट पुर के पति की पुत्री ४ जलकर पति के साथ जा-

ने में विलम्ब होता था सो सहन नहीं किया और पति का मरना सुनते ही

शरीर छोड़ दिया ॥ ५७ ॥ ५ वहुत विवाह इकट्ठे किये १ पुत्री ७ इनकार नहीं

किया ॥ ५८ ॥ ८ निरंतर नवीन नवीन स्त्रियें चाही ९ उस मूर्ख ने साढ़ा

तीन सौ स्त्रियें विवाही तोभी जयसिंह नामक एक ही १० पुत्र हुआ ११ पुत्री

॥ ५९ ॥ १२ नारदाइ के पति ने मथुरा के राजा यादव अमरचन्द्र को परणा-

ई जब से १३ यादवों ने पाल पद और प्रतिहारों ने राणा पद पाया ॥ ६० ॥

१४ चहुवान १५ सांझा के घर में ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवा-

णवंशवर्णन में पुत्र के अभिषेक करके माणिक्यराज का काशी में वास

करना, सांभर के राजा सुग्रीव-विमला, अंगद-विंध्यावली, केशरी-कमला

११४१२ वंशसमसनचालुक्यगोवलपालपुनःशूकरराज्यानुष्ठानजाय-  
 न्तिजगदीश ११५ रम्भा ११५१२ जयराम ११६ रुक्मिणी ११६१२  
 विजयराम प्रभा, कृष्णा ११८ लक्ष्मी ११८१२ जितयुद्ध ११९ रा-  
 धिका ११९१२ गोवर्धन १२० दया १२०१२ मोहन १२१ बिजया १२  
 १२ गिरधर १२२ सुरता १२२१२ जननपरम्पराकथनपुत्रदत्तराज्य-  
 गिरधरयोगसाधनप्रामारगौरिल १ गोभिलवंशमदसेन १ मिथोमर-  
 णाऽवन्ती १ भद्रपुर २ तद्वैरवर्धनगौरिधर्युद्धयराम १२३ भानुमती-  
 १२३१२ भरत १२४ कीर्त्य १२४१२ अर्जुन १२५ यथिका १२५१२ न्त-  
 सन्ततिसूचनत्यक्तविन्दाक्रान्तविम्बस्थलप्रतिहारजयत्पालपुनर्मरु-  
 ज्यसमासादनगोभिलजयतारणपुरपलायनशाकम्भरराडाऽऽर्जुनि-  
 शत्रुजित १२६ कनकप्रभा १२६१२ सोमदत्त १२७ नन्दा १२७१२ दुःखन्त  
 १२८ ललिता १२८१२ अन्तवंशवर्णनहतवैसामर १ यादवकर्ण २ दौ-  
 क्खन्तिभीम १२९ चन्द्रावली १२६१२ परिणयनतत्सन्ततिलक्ष्मणा  
 १३० रमा १३०१२ परशुराम १३१ श्री १३११२ रघुराम १३२ दया  
 १३२१२ कुलपारम्पर्यकथनप्रतिहारमङ्गलशाकम्भरस्वीकरणरघुरा

जयन्त सीता के वंश का संक्षेप से कहना, चालुक्य गोवलपाल का फिर  
 शूकर क्षेत्र पर राज्यानुष्ठान होना, जयन्त का पुत्र जगदीश-रम्भा जयराम  
 रुक्मिणी-विजयराम-प्रभा कृष्ण-लक्ष्मी जितयुद्ध-राधिका गोवर्धन-दया मो-  
 हन-बिजया गिरधर-सुरता के वंश की परम्परा का कथन, पुत्र को राज्य दे-  
 कर गिरधर का योग साधना, पँवार गौरिल और गोभिल वंशी मदसेन का  
 परस्पर माराजाना और उज्जयिणी भद्रपुर में उस वैर का बढ़ना, गौरिधर  
 उद्धयराम-भानुमती भरत-कीर्ति अर्जुन-यथिका के अन्त तक सन्तान की  
 सूचना विन्दाक्रान्त से विम्बस्थल छूटकर प्रतिहार जयत्पाल को फिर मा-  
 रवाड़ राज्य का प्राप्त होना, गोभिलों का जैतारण पुर को भागना, सांभर  
 के राजा अर्जुन के पुत्र शत्रुजित-कनकप्रभा सोमदत्त-नन्दा दुःखन्त-ललिता  
 के अन्त तक वंश का वर्णन, बंस अमर और यादव करण का माराजाना,  
 दुःखन्त के पुत्र भीम का चन्द्रावलि से विवाह करना उसकी सन्तान ल-  
 क्ष्मण रमा परशुराम-श्री रघुराम, दया के कुल की परंपरा को कथन, मंगल प्र-  
 तिहार का सांभर को लेना, रघुराम का ब्रध्नपुर (भाणपुरा अथवा यधनोर)

मन्मथनपुरपत्नीयनरघुरामिसमरसिंहो १३१ द्रवनतद्विन्दुमती १३३ १ पा  
शिग्रहणामाणिक्यराज १२४ जन्मलुण्टितप्रतिहारदेशहतमाङ्गलिना  
हरसमरसिंहशाकम्भरसमरणातच्छूवणमात्रविन्दुमतीवर्ष्मविहान-  
प्रातिहाराऽनुपमपालकन्याचन्द्रवतीयादवाऽमरचन्द्रविवहनमाणि  
क्यराज १३४ शास्त्र १ शास्त्रा २ ध्ययनपारम्भणं पञ्चषष्टितमोमयूखः ६५

आदितः सप्तोत्तरशततमः ॥ १०७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

[ षट्पात् ]

बालपेन मानिक्यराज १३४ विद्या सब सद्धिय ॥

पाटवै १ समर २ मंगल सकल कृतकृत्य सस्त्र किय ॥

वय जुववन लाहि वीर रम्पों सृगयों कति वासर ॥

भुजन भेटि शृगराज चीरि डारे वल दुदर ॥

कोलार्न थकाय पकरे पदगं वनलुलायें मुठ्ठिन हनें ॥

सुनि सुनि तेंदीय पोरुख असह प्रातिहार व्याकुल वनें ॥ १४

दोहा

गौडन पुरजन १ वंधुजन २, दये वरजि दे ताव ॥

भागना, रघुराम के पुत्र समरसिंह का जन्म होना, उसका विन्दुमती से वि-  
वाह होना, और माणिक्यराज का जन्म होना, प्रतिहार के देश को लूटना,  
मंगल के पुत्र नाहर प्रतिहार को मारकर समरसिंह का सांभर के युद्ध में  
मारा जाना, इसके सुनते ही विन्दुमती का शरीर झोंडना, प्रतिहार अनुप-  
मपाल की कन्या चन्द्रावती का यादव अमरचन्द्र से विवाह होना, माणि-  
क्यराज के शास्त्र और शास्त्र के अध्ययन करने का पैंसठवां मयूख समाप्त  
हुया ॥ ६५ ॥ और आदि से एक सौ सात मयूख हुए ॥ १०७ ॥

१ बालकपन में चतुर २ युद्ध में धीठ ३ कृतार्थ ४ शिकार ५ कितने दिन ० सिंहों से वा-  
हुयुद्ध करके मयूरों को थकाकर पैदल ने १० जंगली भैंसों (आरणे भैंसों) को सु-  
कियों से मारे ११ उसका असह पराक्रम सुनकर मंडावर के प्रतिहार चप्रिय  
जिन्होंने चट्टवाणों से सांभर ज़ीन लिया था वे व्याकुल हुए कि यह सांभर  
पीछा लेवेगा ॥ १ ॥ माणिक्यराज के ननसाल के गोड़े चप्रियों ने अपने  
पुर के लोगों को और धान्यय लोगों को साथ देकर मना करदिये कि हम

सुमिरावहु इहिं बैर नन, जामिज ज्वलन स्वभाव ॥ २ ॥

बंधि प्रबंध करोल बहु, दये स्वसासुत संग ॥

प्रचुर रचायो तिन पटुन, रस आखेटक रंग ॥ ३ ॥

नाहर जिम हत्थन हनै, गंजि नाहरन ग्राम ॥

अक्खिय जग याको अपर, नाहरराज १३४हु नाम ॥ ४ ॥

[ षट्पात् ]

इक दिवस चहुवान तुरग आरूढ बिखम वन ॥

एकाकी अतिदूर गयो मृगयारस सदन ॥

रहि पद्धति दुवररति अद्रि अर्बुद तीजे ३ दिन ॥

मारत मत्त मइंद अप्प पहुँच्यो सम्भर इन ॥

तँहँ ताहि अधिक लगिय छुहा हयजुत भोजन ध्येयहुव ॥

उत्तरयो तबहि हनि कोल इक सुभ ईशानी सिखर भुवा ॥ ५ ॥

अप्प उचित कछु रक्खि सेसँ तुरगहिं खवाय पल ॥

संध्यावंदन सद्धि पितर १ सुर २ मुनिन ३ अप्पि जल ॥

पावकसिद्ध सु पलल करयो सुचि मूलप्रोत करि ॥

वैश्वदेव विधि विरचि खानलग्गो द्रोनैन भरि ॥

पिठिसौं हत्थ कढि अग्न इक ओढ्यो काहुक मूल्य हित ॥

का बैर याद मत करना क्योंकि भाणेज का स्वभाव अग्नि के समान है ॥ २ ॥ यह प्रबन्ध करके शिकार खिलानेवाले (शिकार की खबर देनेवाले) लोगों को पहिन के पुत्र की साथ करदिये जिन चतुरों ने शिकार का बहुत रंग लगादिया ॥ ३ ॥ जैसे सिंह अन्य पशुओं को मारता है इसप्रकार हाथों से सिंहों के समूह मारे इसकारण से इसका दूसरा नाम लोक में नाहरराज कहा गया ॥ ४ ॥ घोड़े पर चढ़ाहुआ अकेला शिकार करने गया सो मार्ग में दो रात्रि रहकर तीजे दिन आवू पर्वत पर सिंहों को मारता आयू पर चहुवाणों का राजा गया १ जुधा २ कर्तव्य ३ सुवर को मारकर ४ आयू पर ईशानी शिखर है उसकी भूमि पर प्रधाकी का मांस घोड़े को खिलाकर ५ अग्नि पर भुनाहुआ मांस जो मूल में पिरोकर अग्नि पर सेका गया उससे वैश्वदेव (अन्न से होम, बलिदान, अतिथिभोजन करने को वैश्वदेव कर्म कहते हैं) करके ७ दूना (वृक्ष के पत्रों से घनायाहुआ पात्र) में भरकर खाने लगा

चहुवान वीर देखैं विनुहि दिय निसंक वाकों उचित ॥६॥  
 पुनि पुनि हत्थ कढ्यो सु दयो पुनि पुनि ताको पैल ॥  
 अद्द असन किय अप्प बंदि इम अद्द महाबल ॥  
 निकस्यो कर पुनि निरखि मुट्ठि तापर खिजि मारिय ॥  
 ईसानी तब तुष्ट आय अगग रु उच्चारिय ॥  
 कळु मंगि मंगि चहुवान बर सोहु सुनि न बंदन करयो ॥  
 मन्नी न ताहि सहसा सकति प्रत्यय लहि पायन परयो ॥  
 इम अक्खिय मानिक्यराज करजोरि उँमा प्रति ॥  
 श्रुति पढति सन कवहु माइ मामक डिगैं न मति ॥  
 अरु तव भक्ति उदार देहु ए वर दुवरदासहि ॥  
 सुनि तथास्तु कहि सकित बदिय तव अरिहु विनासहि ॥  
 पायहिँ स्वकीय कुल राज्य पुनि किति पुहवि पूरित करहि ॥  
 तनयहु प्रवीर दस १० पाय तू वसुधेस्वरकुल विथरहि ॥८॥

### पादाकुलकम्

भई पिहित इम अक्खि भवानी, मातुलगृह आयो यह मानी ॥  
 संकरदास रायपुर स्वामी, गोहिलकुल भुगैं दस १० ग्रामी ॥ ९ ॥  
 सुता तास आव्हयकरि स्यामी १३४१, वह सम्भर परनी अभिरामा ॥  
 अब चहुवान ब्रध्नपुर आयो, बहु तोमर नृप मोद बढायो ॥१०॥  
 अर्जुन तनय नरस चक्रधर, सनमान्योँ जामिज सुत सम्भर ॥  
 अक्खिय भुम्मि उपाय करहु अब, सेना गम भजिहै सहाय सब ॥११॥

सूला (कवाब) लेने के लिये ॥६॥ १ मांस २ आधा मांस तो आपने खाया और आधा बांट दिया जिस पीछे भी मांस लेने को फिर हाथ निकला जिस पर क्रोध करके मुझी मारी तब देवी प्रसन्न हुई ३ नमस्कार नहीं किया क्योंकि अचानक उसको शक्ति नहीं मानी परन्तु खूबन लेकर फिर पैरों में पड़ा ॥ ७ ॥ ४ देवी ने कहा कि हे माता वेदमार्ग से मेरी बुद्धि कभी नहीं डिगै ऐसे ही होओ यह कहकर देवी ने कहा कि तेरे शत्रु भी मासंगी अपनी राज्य कीर्ति से भूमि को पूर्ण करेगा ५ पुत्र भी चहुवाण के कुल को फैलावेगा ८ गुप्त ६ मामा के घर १० श्यामा नामवाली ११ चहुवान ने ॥ ६ ॥ १० ॥ अर्जुन के पुत्र चक्रधर ने भाण्डव के पुत्र का सम्मान किया और कहा कि अब भूमि लेने का उपाय करो मेरी सब सेना तुम्हारी सहाय करेगी ॥ ११ ॥

दया कही सुतसुत भुव दब्बहु, गुन बहु पाय वृथा जिन गब्बहु ॥  
 पुत्रक कै वीरन गति पावहु, कै साकम्भर भूप कहावहु ॥१२॥  
 समरसिंह मारयो मंगलसुत, निर्जरलोक गयो अप्पहु नुत ॥  
 जनत तनूज छत्रिया जाको, तुम अब लाल कुमावहु ताको ॥१३॥  
 चिरतैं गूढ रोकि हम रक्खी, उचित निहारि अज्ज यह अक्खी ॥  
 सूकरे १ सिंह २ हनैं हि न सरिहैं, प्रतिहारन गंजे कल परिहैं ॥१४॥  
 वय तव लग्यो सत्रहम १ उबच्छर, मंडहु बासुदेवसम मच्छर ॥  
 वंसहिं मच्छरीक जिहैं बज्जत, जो नहि बैरगयोकरि गज्जत १५  
 पितामही सासन इम पावत, नती कहिय बीर उफनावत ॥  
 जननी चिरकरि मोहि जनार्द, बेस बनन भ्रमि मोघ बिताई ॥१६॥  
 श्रीदुर्गा गत देस १ सुनायो, पिता हन्यो २ सु बैर अब पायो ॥  
 करिवा पोरुख अवधि मुज्झपर, नियति अधीन फलहिं पावत नर १७  
 इम निज पितामही सन अक्खिय, रनबुंध बीर बीर पुनि रक्खिय ॥

**दम्मे दुलक्ख ३००००० चक्रधरसौ लहि,**

दया नामक माणिक्यराज की दादी ने कहा कि हे पौत्र! तुम्हारी भूमि को दबाओ और वीरता के गुण पाकर वृथा गर्व मत करो. हे पुत्र! या तो वीरों की गति को पाओ (गुह्य करके मारे जाओ) अथवा सांभर का राजा कहाओ (सांभर पीछा लो) मंगल के पुत्र ने तुम्हारे पिता समरसिंह को मारा है वह स्तुतियोग्य देवलोक में गया है सो जिस कार्य के लिये छत्रिया स्त्रियों पुत्र जनती हैं हे लाल तू भी वह कार्य कर, अर्थात् पिता का बैर ले ॥ १३ ॥ इस वार्ता को हम ने बहुत समय से छिपा रक्खी थी आज वह कही है? सूवर २ प्रतिहारों को विजय करेगा जब चैन पड़ेगा ३ वर्ष ४ बासुदेव चहुवान ने श्रीकृष्ण के साथ मत्सरता की थी ऐसे करो (पराये उत्कर्ष को नहीं चाहकर अपना उत्कर्ष चाहने को मत्सरता कहते हैं) इसी कारण से चहुवाणों के वंश को मच्छरीक कहते हैं. वे चहुवान बैर को गयाहुआ जानकर गर्जना नहीं करते ५ दादी की आज्ञा वीर रस में उफनते हुए पोते ने कहा. ७ देरी से जनार्द इससे वनों में भ्रमकर आयु वृथा बिता दी ॥ १६ ॥ गयाहुआ देश तो देवी ने सुनाया. अवधि पर्यन्त पराक्रम करना मेरे हाथ है और मनुष्यों को फल भाग्य से मिलते हैं ॥ १७ ॥ युद्ध में पंडित उस वीर ने फिर वीरों को नौकर रक्खे ११ रुपये चक्रधर तैवर से लेकर सेना सजी ॥ १८ ॥

चक्र सज्यो अरिजन गंजन सहि ॥ १८ ॥

तोमरकेहु सुभट बहु टारे, प्रतिहारन सिर कटक प्रचारे ॥  
सत्तसहस्र ७००० सादी हुव सत्थै, वाहतजे न रुकैं विनुमत्थै ॥ १९ ॥

दोहा

चक्रधरहु चहुवान प्रति, भनिय ब्रध्नपुर भूप ॥

महानंदसौ तोमरन, किन्नी सौ गत कूप ॥ २० ॥

षट्पात

टोडापुर पति इन्द्रसेन अगगै नृप तोमर ॥

रुमा सुता परिनाय महानंदहिं रक्खयो घर ॥

नहितो सम्भरनैर रम्य लेतो सु कहाँ रहि ॥

विनु सहाय वसुधाहु गहत न सुनै विपाति गहि ॥

मानिक्यराज पहिले नृपति तस यह प्रत्युपकार किये ॥

टोडा १ रु विजैपुर २ ब्रध्नपुर ३ सिवपुर ४ मुख छिति छिन्निलिय

[ दोहा )

तुम अवनी इम तोमरन, अगग रहे अपनाय ॥

बलि मोहन छत ब्रध्नपुर, एह लयो हम आय ॥ २२ ॥

( षट्पात )

तव नामहु मानिक्यराज १३४ जामेयं तनय जगै ॥

गदतै रु वर दुर्गाहि तोहि अप्पिय अब्वूअग ॥

१ सेना चलाई २ घोड़ों के सवार ब्रध्नपुर के पति चक्रधर ने माणिक्यराज चहु-  
वान से कहा कि महानन्द के साथ तैवरों ने उपकार किया था वह सबकुछ  
में गया (जिसकी कथा आगे कहते हैं) ३ रुमा नामक अपनी पुत्री को परणा कर  
महानन्द चहुवान को अपने घर में रक्खा था ४ सुन्दर सांभरपुर ५ भूमि पीछे  
लेने नहीं सुना ६ पहिले माणिक्यराज हुआ था उसने इस उपकार के पलट  
में पीछा यह प्रत्युपकार किया ७ आदि ८ भूमि तैवरों से छीन ली ९ तैवरों  
की भूमि को तुम (चहुवाणों) ने आगे अपना ली थी ॥ २२ ॥ १० भाणोज का  
पुत्र ११ संसार १२ कहती है और १३ आय पर्वत पर तुमको दुर्गा ने वर भी  
दिया है इससे तुम भी वैसी मत तकना (वैसी मत करना) और हम ने तुम्हारे



तातैं वह जिन तकहु करहु मोघन उपकारहि ॥

करिहैं संभर कहिय अप्प सासन अनुसारहि ॥

विस्वपति लये टोडादि तैंहें संबंध सुं जीरन परयो ॥

जिम जनक १ जनक मातुल २ तिमहि किम अकांड संसय कस्यो

॥ सारङ्गः ॥

यों तोमराधीससों अक्खि चोहान, हंकी चमू भैद कादंबिनी मान  
खुल्ले करी धुज्जिवो दै धराकाज, बाजी चले भंपि ज्यों लावपैं बाज  
बैरीनकों बंटते विप्फुरे बीर, माये नही दंस ज्यों उप्फनैं छीर ॥  
छायो सबै खेहके मेहसों गैन, व्युत्थानवहै उग्घरे ईसके नैन ॥ २५ ॥  
डारी पुरानी करी खल्लरी ईस, चिंती नई बैलपैं बाहिबे बीस ॥  
चंडीहुनैं चक्खिबे बीर कालेज, आन्यों स्वयं सिंहमैं बेग आमेज  
लै लै लगे अप्पनैं अप्पनैं बाह, हेरंब १ ओ अग्गिभू २ बप्पकी राह  
वहैतीचली साकिनी पानपैं प्रीत, गैतीचली डाकिनी जुगिनी गीत  
प्रारब्धकों पुज्जिकैं पत्थरे प्रेत, चिंती वर्षा गिद्धनी चिलहनी चेत ॥  
सुंडीरकों सिक्खिबे पिक्खिबे सेन, वज्जी अकस्मातही नारदीबेन

साथ उपकार किया है उसको वृथा मत करना. चहुवान ने कहा कि आपकी  
आज्ञा के अनुसार ही करेंगे १ वह संबंध जीर्ण होगया था २ जैसे पिता हैं तैसे  
ही पिता का मामा हैं ऐसी अवस्था में आपने विना प्रकरण अथवा विना  
समय यह सन्देह क्यों किया ॥ २३ ॥ भाद्रपद की मेघमाला के समान सेना  
चली और भूमि को धुजाते हुए हाथी खुले और लवा पच्ची पर बाज जाता  
है उस वेग से घोड़े चले ॥ २४ ॥ जैसे उफनता हुआ दूध पात्र में नहीं स-  
माता तैसे वीरों के शरीर कवचों में नहीं समाये ३ आकाश ४ समाधि खुलकर  
शिव के नेत्र खुल गये ॥ २५ ॥ पुरानी ५ गजचर्म को डाल कर बैल पर नई चर्म  
लादने को शिव ने चाहा ६ वीरों के कलेजे चखने के लिये ७ सिंह पैं पलाण कि-  
या ॥ २६ ॥ अपने अपने वाहन ले ले कर गणेश और स्वामिकार्तिक पिता  
(महादेव) के पीछे लगे. रुधिर पीने पर साकिनी (देवी की दासियों) की प्रीति  
होती चली और डाकिनी व योगिनी (देवी की दासियों) गीत गाती चली  
॥ २७ ॥ भाग्य की प्रशंसा करके प्रेत (देवयोनि विशेष) फैले ८ मज्जा को ९ वीर-  
ता को सीखने और सेना को देखने को अचानक नारद की वीणा बजी ॥ २८ ॥

इत्यादिकों न्याँतिकें संभरी अगग, बाजीनकी औचिकें उप्परयो वगग  
 आये अरातीनके मगगमें नैर, चल्लयो तिन्हें लेतही बंधिकें बैर ॥  
 लै मेरभू१लैलयो अलहनावास२, श्रीनैर३त्यौ पुष्करारण्यके पास।  
 लै डिडुवानाँ४सरानाँ५रु मारोट६, किन्नौरुमानैरलौ वाहिनीकोट  
 पासौ अरी मगगमें जे जुरे जंग, टारयो तिन्हें त्राससौ स्वाससौ संग ॥  
 साकंभरी दंग यौ बिटियो वीर, धायो प्रतीहारहू सम्मुहो धीर ॥३१॥  
 सो मंगलाऽऽख्यानके पुत्तको पुत्त, हाको सुनै बैगही हंकियो हुत्त  
 बज्जे तहाँ द्वै२धरी रतिसौ बाढ, गज्जे उभै२ओरके जोरके गाढ ॥  
 होबेलगे लुत्थिपै लुत्थिसौ चित्र, मानौ घनैकालके बिच्छुरे मित्र  
 कोदंड टंकारिके सिंजनी कान, आनै मनौ केनके पुच्छिबे प्रान  
 हल्ले मही नागके भोगपै लोल, भुल्लै मनौ तीजनी मत्त हिंडोल ॥  
 ईकखै अरी लोह छाके कहाँ आप, डारै कहाँ प्रेतके कंठमें धाप  
 भारै गदा टोपके आनि उच्छाह, व्योकारके कूट ज्यौ लोहपै बाह ॥  
 गह्वै कहाँ हत्थलै हत्थके फंद, कह्वै करीदंत ज्यौ मालिनी कंद  
 रोकै बली एक१ही संकुले सत्थ, रेवा मनौ हैहयाधीसके हत्थ

१चहुवान२ घोड़ों की शशवृष्टों के जितने नगर मार्ग में आये ४ पुष्कर धन  
 के समीप५सांभर तक सेना का कोट कर दिया ॥ ३० ॥ ६शत्रु मार्ग में लड़े  
 ७श्वास का साथ छुड़ा दिया (मार डाले) ८सांभरपुर को ॥ ३१ ॥ मंगल नामक  
 राजा का पौत्र हाक सुनकर होम होने को शीघ्र ही चला. ६दो घड़ी रात  
 बाकी रहे तरवारों के बाढ बजे ॥ ३२ ॥ लोथ (मृतक शरीर) पर लोथ गिरकर  
 आश्चर्य होने लगा. १०धनुष को टंकार कर प्रत्यंचा को कान के समीप लाते  
 हैं सो मानों वह यह पूछने आती है कि किनके प्राण लाऊँ ॥ ३३ ॥ शेषनाग  
 के फणों पर (यहाँ सामान्य नाग शब्द के साथ भूमि का सम्बन्ध होने से  
 शेषनाग के अर्थ का बोध होता है) भूमि चंचल होकर हिलती है सो मानों  
 आवण सुदि तीज के उत्सव में भूला भूलनेवाली स्त्रियें हिण्डोले में भूल-  
 ती हैं ११देखते हैं १२लोहार के ऐरण पर घण पड़े जैसे १३हाथियों के दन्तों  
 को ऐसे निकालते हैं जैसे मालिन मूले आदि जमीकन्दों को निकाले १४मिले  
 हुए साथ को एक ही बलवान् इसप्रकार रोकलेता है कि जिसप्रकार नर्मदा  
 नदी के प्रवाह को जलपीड़ा करते हुए १५ सहस्रार्जुन ने अपने हाथों से  
 रोकलिया था.

दो रैं लगे पिठिके वेरमें दच्छ, ईसानज्यों अकपैं रच्छके पच्छ ३६  
सादीनके पाय के अकटैं सूर, चंपैं बली कन्ह ज्यों चंड चाणू॥  
केते चढैं केतुपैं टारिबे काय, जानों नटी मत्त ज्यों बंसपैं जाय  
बुल्लैं कटारीनतैं फटते बच्छ, रेजा मनौ दोहरे दारिबे दच्छ ॥

तक्राटतैं कै दही मथनीमाहिं, पारावती बानिकैं निब्वली नाहिं  
अच्छी वरच्छी लगैं सुंडिके आय, पच्छीसकी त्रोटि ज्यों पन्नगैं पाय  
छुट्टैं कहाँ देहतैं प्रानकी रोक, ज्यों भूप बैदेहतैं नारकी लोक ३९  
कंपे कहाँ भीरु कुल्लैं सुरे मग्ग, सिद्धी मनौ अट्टगाधेयके अग्ग॥  
बाराहकी दह्वीओ कुम्भकी पिठि२, नैबेलंगी भारतैं धारतैं निठि  
फुट्टैं करी उच्छटैं के महामत्त, गैगत्त१ठाँ ओर२वहै ओर१ठाँ गत्त२  
चोफारवहै भद्रजातीनके मत्थ, मुत्ती भरैं भाद्रके मेघ ज्यों तत्थ  
बाहित्थतैं निब्वसैं रत्तकी धार, ज्यों साँवरे सैलतैं गैरिकासार ॥  
जासौ डरैं भीरु तापैं किते जाय, गाधेयपैं ज्यों हरिश्चन्द्र भूराय॥

१ समय में चतुर२ कितनेक लोग पीठ पर लगकर दौड़ते हैं जैसे राजस के  
पक्ष में होकर महादेव सूर्य के पीछे दौड़ें थे (यह एक प्राचीन कथा है)। यो-  
हों के सवारों के पैर पकड़कर शूर झटकते हैं सो मानों बलदेव और श्रीकृ-  
ष्ण चंड और चाणूर मल्लों को झटकते हैं ३ श्वजा पर चढ़ते हैं ॥ ३७ ॥ ४ कटा-  
रियों से हृदय फटते हैं सो मानों चतुर लोग दोहरे रेजाँ (बछ विंशे) को  
घोरते हैं किधों दही की गागर में अन्यान दंड (रई) का शब्द होता है कि-  
धों बल पूर्वक कपोत की घोली होती है ॥ ३८ ॥ ५ हाथी की सुंड में बरछी  
लगती है सो मानों गरुड़ की चंचू में सर्प लटकता है ॥ ३९ ॥ ६ मार्ग से मुड़-  
कर कायर ऐसे कांपते हैं जैसे विश्वामित्र के आगे आठों सिद्धियों कांपें उनम-  
ने लगी ॥ ४० ॥ बाणों से हाथी फूटकर महावत उछटते हैं और हाथियों के  
अंग और के और जगह होजाते हैं अथवा हाथियों के शरीरों के स्थान में  
अन्य होजाते हैं और उन अन्यों के स्थान पर गात्र (सकट) जाखड़े होते  
हैं। भद्रजाति हाथियों के मस्तक चौफाड़ होकर भाद्रपद मास के मेघ के स-  
मान मोतियों का झड़ होता है ॥ ४१ ॥ हाथियों के ललाट के अधोभाग  
(पीतवान) से रुधिर की धारा निकलती है जैसे काले पर्वत से गैरों कार-  
स निकलता है उससे कितने ही कायर डरते हैं और कितने ही उस पर  
ऐसे जाते हैं जैसे विश्वामित्र पैं हरिश्चंद्र भूपति गया था ॥ ४२ ॥

रत्ती भई सैन द्वैरसोनके संग, रंगी मनौ राजसी वृत्तिके रंग ॥  
 अंगारको बिंबही कै परघो तुटि, मानिक्यको गंज कै बिगगरघो छुटि  
 पानीचढै केनपै केनके जाय, रिते भरै तालि ज्यों पालिकाँ पाय ॥  
 बाजीलगी प्रानकी मानकी बेर, चोहानकी आनकी को कहै देर ४४  
 केते करै लाघवी हत्यतै वार, भीजै नही अस्रहू सखकी धार ॥  
 मानिक्यके बानके पच्छके गान, बेतगढहै बकरी उत्तरै दान ४५  
 पत्री कटी सुगडमै जात यों पैठि, लीलै मनौ पन्नगी बालकाँ बैठि ॥  
 हथीनपै एक शहथी किते झारि, कुम्भारलौं कुम्भकाँ लेत उत्तारि  
 पाइकपै कै परै पीलुतै भंपि, पाठीनपै किलिकला चोट ज्यों चंपि ॥  
 ऊर्णायुकी फेटलौं सुगडके मारि, सदैव विना सखही रीझकी रारि ४७  
 बुकाँ कटै उच्छटै छोम संवड, बटै मनौ कुगडली फेनके बट ॥  
 काली बडे वीरके अंत्रही धारि, गिद्धीनसौं उच्चरै लेहु यों टारि ४८

दोनों सेना रुधिर के संग से लाल होगई सो मानों रजोगुण की वृत्ति के रंग में  
 रंगीगई है किधों अग्नि के अंगारों का बिम्ब तूटपड़ा है अथवा माणिक्य  
 मणि का समूह बिखरगया है ॥ ४३ ॥ कितने वीरों पर नीर (पराक्रम अथ-  
 वा) रूप चढता है और कितनों का नीर (लज्जा) जाता है जैसे बन्ध बंधा  
 रहने से तालाब भरे रहते हैं और बन्ध तूट जाने से रीते होजाते हैं १ चहु-  
 वाण की आण फिरने की देरी कौन कहै ॥ ४४ ॥ शीघ्रता के हाथ से नार  
 करते हैं सो दाख की धार के रुधिर भी नहीं लगता, माणिक्यराज चहुवान  
 के बाणों के पंखों के गान से हाथियों के दान(मद)उत्तरकर ब्रे बकरी के समान  
 होजाते हैं ॥ ४५ ॥ हाथियों की कटीहुई लुंड में बाण घुसते हैं सो मानों  
 सर्पिणी बच्चे को गिटती है (सर्पिणी अपने होते हुए बच्चों को गिटजाती है)  
 एक हाथ से तरवार मार कर जैसे कुम्हार बड़े को उतार लेता है तैसे कुं-  
 भस्थलों को उतार लेते हैं ॥ ४६ ॥ कितने ही हाथियों के ऊपर से  
 कूदकर पैदलों पर गिरते हैं सो मानों छोटी मच्छियों को किलकिला  
 पत्ती चोट करके दवालेता है, मीठा की फेट के समान कितने ही  
 मस्तक की टकर लगाकर ॥ ४७ ॥ २ बूकड (गुददे) कटते हैं और ३ ति-  
 ल्लियों (पेट के भीतर के काले रंग के मांस पिंडों) के समूह उछटते हैं सो  
 मानों अफ्रीमची अहिफेनु (अमल) की बट्टिमें बांटते हैं ४ बडे वीरों की आँतों

जुझारंकी मुच्छ भूसों करैं बत्त, बुल्लैं किंती बक्र तू मैं जिती मत्त॥  
 कोदंडकी जंघद्वैर्यों नमैं काल, मत्ती नटी लेत ज्यों फीलपै फाल॥१९॥  
 बुल्लंत ज्या प्रानकी गाहकी घत्ति, चल्लैं चटद्वैं घटीजंत्र ज्यों रत्ति॥  
 भिटैं नही रत्तहू वानके पच्छ, अच्छेगिनैं अद्वज्यों टारि बीभच्छ॥५०॥  
 बुल्लैं किते खगगं यों आकरेपान, गोविंदके अगग ज्यों भल्लरी गान॥  
 के छिछि छुट्टैं हबकैं घनैं घाय, धारा मनौं जावकी जंत्रकी जाय॥५१॥  
 बाजारमैं मत्त ज्यों साकिनी सत्थ, घल्लैं घनी घुम्मिकैं बीरसों बत्थ॥  
 लोटैं लगे इक्कपैं इक्क बेहोस, खोले मनौं दैवनैं मृत्युके कोस॥५२॥  
 वैखानसी वृत्ति लों के महाबीर, संघैं नही आयुहू कल्हिके सीर॥

चल्लैं गदा १ तोत्र २ कत्ती ३ छुरी ४ चक्र ५,

भारैं खरे खगगदके संब ज्यों सक ॥ ५३ ॥

के कर्तरी ७ ऊन ८ त्यों सूल ९ कटार १०,

पत्री ११ वरच्छी १२ इल्ली १३ निक्खसैं पार ॥

भेलैं कटे सीस यों उद्ध कामोरि, गैदा गहैं बाल ज्यों ओरकों टारि

को धारण करके ॥ ४८ ॥ वीरों की मूँछें भौंहों से बातें करती हैं कि तू कि-  
 तनी टेढी है अर्थात् कुछ टेढी नहीं है जैसी कि मैं मस्त होकर टेढी हूं। धनु-  
 ष की रेखाधी पर॥४९॥ प्राणों की ग्राहकी रखकर प्रत्यंचा बोलती है कि जैसे  
 रात्रि में अरहट चरराट शब्द करके चलता है, वाण इतने वेग से चलते हैं  
 कि अपने पंखों के रुधिर लगने ही नहीं देते हैं सो मानों नव ही रसों में  
 बीभत्स रस को छोड़कर बाकी के आठ रसों को उत्तम समझते हैं (रुधिर  
 लगने से बीभत्स रस होजाता है इससे रुधिर को लगने ही नहीं देते)॥५०॥  
 तरवार के तेज पाण लगने से शिविष्णु भगवान् के आगे ४ जावक के रंग से भरे  
 हुए जल के फूँहारे की धार जावे जैसे ॥ ५१ ॥ ५ मानों मृत्यु के खजामे खोल-  
 दिये हैं ॥ ५२ ॥ वानप्रस्थ वृत्ति के समान कल के सूर्य के लिये अपनी आयु  
 का संचय नहीं करते, वानप्रस्थ आश्रम वाले आगामी दिन के लिये किसी वस्तु  
 का संचय नहीं करते हैं ऐसे ही वीर लोक भी अपनी आयु आगामी दिन के  
 लिये नहीं रखते ॥ भाला ७ इन्द्र वज्र पटके जैसे ॥ ५३ ॥ दखइ विशेष ९ वाण १०  
 गुप्ती (शस्त्रविशेष) कटहुए मस्तकों को १ महादेव ऊपर ही भेलते हैं

भोरें लगैं हथ जो भीरुको मथ, डारैं बडे वेग ज्याँ दानको अथ  
 बेताल के सीसको मंडि व्यापार, बैचैं वपा संटिलै प्रेतकी लार ५५  
 अग्घेबढो सूर के ज्याँ कहैं एम, पछेलैगैं पाय त्याँ प्रानके प्रेम  
 चक्खैं बिनाँ वीरकाँ बच्छपैं बाढ, मज्जैं घनैं भोनको गेरतैं गाढ ५६  
 खालीकरैं प्रान के प्रानपैं खेलि, काली करैं तान के गानपैं केलि  
 लोटे करी कोहि कहैं कहौ सीस, हेरबकौ जोरिबे ज्याँ त्रिश्लोकीस  
 मथ्याँ गिरैं ढालके फूलकाँ दब्बि, चैक्यो रह्यो राहु ज्याँ चंदकाँ चब्बि  
 ठहरे रहे तदिनाँ सूर १ ओ सुतर, भा अप्पनी पिन्निख लोही पराभूत ५८  
 काबूतरी लोटके बक्करी कूद, सडैं किते के बनैं साकिनी सूद ॥  
 आघातकाँ पायके उब्वारैं बाह, राधेयके बानपैं पथकी राह ५९।  
 सिंधूनके संग ढक्का भनैं भीर, मंजीर वज्जैं मनौ दार मंजीर ॥  
 केते गिरेही उडैं तुल्लिकैं तेग, बिच्छी डसे बग्घ ज्याँ उच्छरैं बेग ६०  
 जुज्झारकाँ टारिबे अच्छरी आय, देखैं चले हथ लगैं कहौ दाय  
 दोरैं कहौ अगारैं इक १ पै दोय २, जोरैं कहौ प्रांचलैं हारिनी होय ६१

१ कायर का मस्तक दान के लिये २ धन को शीघ्र हाथ से डाल देते हैं ऐसे कितने ही बेताल (शिव के द्वारपाल) मस्तकों का व्यापार मांडकर इसके बदले में प्रेतों से मज्जा (गूद) लेते हैं ३ कितने ही शूर कहते हैं कि आगे को बढो ४ वीरों के हृदय पर तरवारों के बाढ चलाये बिना ही ५ झीड़ा ६ जैसे गणेश के धड़ पर लगाने को शिव काटे तैसे गिरे हुए हाथियों के कहीं मस्तक काटते हैं ॥ ५७ ॥ ढाल के चन्द्राकार फूलों को दबाकर मस्तक ऐसे गिरता है जैसे चन्द्रमा को दबाकर राहु क्रोध करता है अपनी क्रान्ति अथवा छाया को रुधिर में पराजित (मलिन हुई अथवा वीरों के पगों में) देखकर उस दिन सूर्य और साराथि (अरुण) खड़े हो रहे ॥ ५८ ॥ कबूतर के समान लोटते हैं और कितने ही बकरे के समान कूदते हैं और कितने ही साकिनियों के व्यंजन (भोजन की वस्तुएं) बनते हैं जैसे कर्ण के बाण से रथ भूमि में घुसकर अर्जुन बच गया था तैसे ही प्रहार पाकर बाहन बचते हैं ॥ ५९ ॥ सिन्धु राग के साथ सहायक होकर ढोल अथवा गंगारि बजते हैं और स्त्रियों के नूपुरों (चिड़ियों) के समान मंजीर (वाद्यविशेष) बजते हैं ७ वीरू के डसे हुए सिंह के समान ॥ ६० ॥ गले के हार के समान होकर ८ अंचल अथि (गंडजोड़ा)

चोरैं कहीं ओरसों सूरको चेत, होरैं कहीं जोरसों उप्फनैं हेत ॥  
 मोरैं कहीं ऊढ ज्यों बाँहसों बाँह, होरैं कहीं गूढ ज्यों कूपकी छाँह ६२  
 घालैं कहीं अंखिमें अंखि अट्ठीहि, भालैं कहीं हथसों दूर ठट्ठीहि  
 अट्ठीहि डारैं कहीं अप्पनी माल, गट्ठीहि डारैं मनो मोहके जाल ६३  
 यों यों विमानावैली बीर बैठारि, जैबेलगी नाककों नाकिनी नारि  
 साकं भरी मच्छरीयाँ जुख्यो जंग, खायो प्रतीहारको चक्र चो ४ अंग ६४  
 भाई हने रुद्र ११ ही बेनु बंसीय, सों धीरके पुत्र तीनों ३ प्रसंसीय ॥

काका उभै २ थाल के बंधु पंचास,

चालीससै ४००० बाहिनी ओर त्यांतास ॥ ६५ ॥

रक्खे इते त्यागमें मच्छरीरार्य, नीकै सुनों जो बन्यो वच्छरीन्याय  
 केतो बढो सौरसों चांद्र जो मान, आवैं नही काम सो अग्न अख्यान  
 ज्यों अब्द १ मै रुद्र ११ संख्यातिथी-हास, अग्नै घटी तीन ३ हूनि त्यवहै नास ॥

जोड़ती है ॥ ६१ ॥ दूसरी ओर से शूरो के चित्त को चोरती है और कहीं  
 उफने हुए स्नेह से निहोरती है १ विवाहे हुए के समान ॥ ६२ ॥ वीरों के नेत्रों  
 में अपने २ तुलें हुए नेत्र डालती है और अपने हाथों में तुली (तोली) हुई  
 माला को वीरों के गले में डालती है सो मानों मोह की दृढ़ जाल डालती  
 है ॥ ६३ ॥ २ विमानों की पंक्ति में वीरों को बिठाकर स्वर्ग की स्त्रियें स्वर्ग को  
 जाने लगीं. सांभरवाल और चहुवाण इस प्रकार जुड़े और प्रतिहार की चतुरंग  
 सेना को चहुवान खा गया ॥ ६४ ॥ ४ वेषु के वंशवालों को ५ प्रशंसा योग्य एक थाल  
 में शामिल भोजन करनेवाले पचास भाई ७ सेना ॥ ६५ ॥ ८ चहुवाणों के राजा  
 ने इतने त्याग में (संसार से त्याग दिये) रक्खे ९ यहां पर सम्वत्सरीन्याय  
 वन गया है सो श्रेष्ठ रीति से सुनो कि सौरवर्ष से चान्द्रवर्ष का मान (प्र-  
 माण) कितना ही बड़ा है (कल्प के वर्षों की गणना करने में सौरवर्षों से  
 चान्द्रवर्ष अधिक होते हैं. यथा सूर्य की एक संक्रान्ति के तीस अंश होते हैं  
 जिसमें चन्द्रमा की तिथियें कभी इकतीस कभी बत्तीस और कभी इससे  
 भी अधिक भोग जाती हैं सो धान्यराशि नाप के उदाहरण से अर्थात् धान्य  
 की राशि को सौ रुपये भर सेर से तोलोगे तो नाप में कम उतरैगी और  
 पचास रुपये भर नाप से तोलोगे तो अधिक उतरैगी इसी प्रकार सौरमान  
 से चान्द्रमान बड़ा है) सो यह तो आगे के आख्यान में काम नहीं आता



अग्रग पंचास५२पूरी पलैं दंस, औरैं चमू ताहुकों सठिमो अंस ॥  
 मानिक्य यौ चंद्रके मानसे मारि, डारे प्रतीहार संसारतैं टारि ॥  
 नामावली तासहू रामभूपाल, केती कहौं सर्वही संहरे काला६८।

[ षटपात ]

समरसिंह रन अग्रग हन्यौ मंगलसुत नाहर ॥

ताके ग्यारह११तनय धीर१सब मुख्यधुरंधर ॥

ताकै अनुज प्रताप२भीम३अर्जुन४हरिपलकखन६ ॥

वीरराज७रनधीर८कन्ह९संकर१०गोवर्द्धन११ ॥

ए भ्रात धीरकै अब तनय विक्रम१संभु२किसोर३त्रय३ ॥

पंचास५०और बंधव परे रतन१स्याम२ काका उभय३६९।

[ दोहा ]

भ्राता ग्यारह११तिथिभये, त्रय३घटिका तनुजात ॥

पलबावन५२हुव बंधु पुनि, विपल और भट द्रात ॥ ७० ॥

मच्छरीक रन अब्दमै, अरि करि अवस इतेक ॥

परन्तु सौरवर्ष में चन्द्रमा की तिथियें चय होकर वर्ष पूर्ण होता है वह सम्बत्सरी न्याय यहां मिलगया है सो लिखते हैं कि जैसे एक वर्ष में ग्यारह तिथि चय होती हैं और आगे तीन घड़ी वाचन पल का आस होता है और उस (पल) का साठवां अंश विपल के समान अन्य सेना भारी-गई सो जानो. इस उदाहरण को आगे स्पष्ट रीति से घटावेंगे ॥६७॥ इस-प्रकार माणिक्यराज चौहाण ने चान्द्रमान से मारकर प्रतिहारों को संसार से टालदिये जिनके नामों की पंक्ति हे रामसिंह राजा कहांतक कहुं काल ने सभी का संहार कर दिया आगे समरसिंह ने मंगल प्रतिहार के पुत्र नाहर को युद्ध में मारा था जिसके ग्यारह पुत्र हुए जिनमें बड़ा धीर२और धीर के छोटे भाई ॥ ६८ ॥ अब उस संवत्सरी न्याय को यहां पर घटाते हैं कि धीर सहित ग्यारह भाई तो वर्ष में तूटनेवाली तिथियें हुए और धीर के तीन पुत्र मारेगये वे तीन घड़ी हुए और एक थाल के भोजन करनेवाले पचास भाई और दो काका ने वाचन बान्धव (सम्बन्धी) वाचन पल हुए और अन्य वीरों का समूह मरा सो विपल हुए ॥ ७० ॥ चहुवाण के रण रूपी सम्बत् में इतने तूटे (तूटी तिथियों को अवस कहते हैं) हुए करके



सत्तह १७ हायन वय समय, विजय लब्धो सबिवेक ॥ ७१ ॥  
गगन बान हय पच्छ २७५० गत, जुगकलि हायन जत्थ ॥  
नाहर हनि नाहर सुतन, संभर लिय बलसत्थ ॥ ७२ ॥

[ षट्पात् ]

पुर साकंभर राज्य विश्वप्रति अग्न बढायउ ॥  
तासौ नाहरराज अधिक बिस्तृत अपनायउ ॥  
चक्रधरहिं द्विय कछुक क्रन १६ उपकार २ निवारन ॥  
लंघि नगर पिप्पाड आन न दये प्रतिहारन ॥

सलतीन ३०० तीन ३०० कोसन परिधिं अवनि भयो संभर अमल ॥  
मंडोवरैस जयसिंहसौ बलिवलिं लिय बलि दब्बि बल ॥ ७३ ॥

दोहा

पितामही १ अरु निज प्रिया २, ब्रध्ननगर सन बुलि ॥

नाहर १ ३४ इम स्यामा १ ३४ १ निरैत, मुग्गी भुव फलिफुलि ७४

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयशराशौ वीति-  
होत्रचण्डासिवंशवर्णने माणिक्यराजदेवीवरप्रापणागोभिलशंकरदा-  
समुताइयासा १ ३४ १ परिणयनब्रध्नपुरागमनव्यूढवाहिनीनाहररा-  
जरुमारणविरचनप्रतिहारमङ्गलवंशविध्वंसनप्राप्तविजयशाकम्भर-  
राज्यपुनःसमुद्धरणं षट्षष्टितमो ६६ मयूखः ॥ ६६ ॥

वर्ष की १ अं वस्था में ॥ ७१ ॥ ३ नाहर प्रतिहार के पुत्रों को मारकर २ माणिक्यराज  
(इसका दूसरा नाम नाहर था) ने बल पूर्वक सांभर को लिया ॥ ७२ ॥ ४ सांभरपुर  
के राज्य को ५ फैला हुआ ६ तीन तीन सौ कोस के घेरवाली ७ भूमि ८ मंडोवर के  
पति १ १ बल से ६ बारंथार १ ० दयाकर खिराज लिया ॥ ७३ ॥ १ २ दादी और राणी  
को १ ३ नियुक्त होकर ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चतु-  
वर्ण वंशवर्णन में माणिक्यराज को देवी का वर प्राप्त होना, गोभिल शंकर-  
रदास की पुत्री इयासा से विवाह करना, और ब्रध्नपुर में आकर व्यूह रच-  
ना सांभर अथवा यड़ी सेना से नाहरराज का सांभर में युद्ध करना, और  
मंगल प्रतिहार के वंश का नाश करना, और विजय पाकर सांभर के राज्य  
का फिर उद्धार करने का छःसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६६ ॥ और आदि

आदितोऽष्टोत्तरशततमः ॥ १०८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पटपात

लौ सम्भरपुर बहुरि भूप मानिक्यराज इम ॥

दब्बन लग्गो देस जोर उद्धत अर्जुन जिम ॥

त्रिसत३००कोस चोतर्फ आन कैरी भुव अप्पन ॥

ईतर नृपन कर लहि सु भयो थप्पन उत्थप्पन ॥

लोहाभिसार जाको सतत भूमिपतिन भीतिद भयो ॥

प्रतिसरद जुद्ध खेती पकरि लारिलरि जिहि इत्तो लयो ॥१॥

पादाकुलकम्

गंगाद्वार पार दिस उत्तर, धर्मागद तोमर धरनीवर ॥

प्रतपे नास श्रीनगर पैतन, सुता तास अनुजा हुव सत्तन ॥२॥

आसावरी१३४१नाम गुन उत्तम, रानी नृप परनी सु मनोरम ॥

सिंहपाल जद्वव तनया पुनि, सती नाम जयमा१३४३सुन्दर सुनि३

चंपैक नगरजाय बर जाही, तीजी३यह मांनिक्य विवाही ॥

भुव पंजाव आदि मनुकुलभव, नगर कोटकंगुर धरनीधैव ॥४॥

जल्हननाथ सुता अब जाकी, सीता१३४४नाम खानि सुखमाकी

पट्ट अनुसरि उपयैम विधि पुंथिय, यह परनी चहुवान चउथिय

तैंह कंगुर जावत मग अंतर, जिते मिलौन दये नृप संभर ॥

उनमें ग्राम१नगर२जे आये, ति सैंव तंवपत्तन खुदवाये ॥ ६ ॥

से एक सौ आठ मयूख हुए ॥ १०८ ॥

१ मर्जुन के समान उद्धत होकर दूसरे राजाओं से खिराज लेकर जिसका राज्य पूजन (आश्विन शुक्ला दशमी को राजा लोग शस्त्रपूजा करते हैं) राजाओं को अनिरन्तर भय देनेवाला हुआ प्रत्येक वर्ष की शरद ऋतु में युद्ध रूपी बेटी (हृषि) को पाकर ॥ १ ॥ २ नंबर राजा ८ पुर में सत्तन की छोटी बरिन ॥३॥ ३ चम्पकपुर (भागलपुर) १० मानिक्यराज ने ११ मनु के कुल में जन्मे हुए १२ नृपति १३ परम शोना की खान १४ विवाह की १५ पुथिय (पञ्चति की पुस्तक) पट्टा पोथी १६ मुकाम १७ चहुवान ने १८ वे सब तांवापत्रों में छपकर

विप्रः१सूत२मागध३बंदीजन४, धाम बखसि सब करे धराधन ॥  
 पहिलैं द्विजन१चारनन२पाई, इहिंक्रम लई सबन अधिकारि ॥७॥  
 लालित धाम जिन्ह जिन्ह जे जे लिय, रीति सु मंडि मागधन रक्खिय ।  
 रचि समांस वरनैं रविमल्लहु, पितरन अंहति सुनहु रामपहु ॥८॥  
 ( पटपात )

प्रथम१मिजल रामगढ१मिजल दूजी२पलसानौ २ ॥  
 इहिं क्रम लोहगल३रु गूढ४खेत५सिंगानो६ ॥  
 कालुंड७रु भीवानि८दहुरी९मैम१०सामरन११ ॥  
 बाँद१२रामपुर१३बहुरि प्रथितं खरसिंदू१४पत्तन ॥  
 दिय ए निकेतं चउदह १४ द्विजन सूतन अब अप्पिय समंद ॥  
 पहिलैं कलात१रम्माट२पुर रामराज३पुनि रामन्हद४ ॥९॥  
 सुकगुफा५रु सिंघाट६बहुरि पत्तन पट्टालय७ ॥  
 कुंडलिका८रु कुहार९जिमहि निवसैथ धानंजय१० ॥  
 रीवाँ११मच्छीवाट१२इक्क सतलंज धारजह ॥  
 कालेंदिय१३रु सतंदुसेव्य रुप्पड१४गढून१५सह ॥  
 दसपंच१५उचित ए चारनन दंग द्रव्य आकर दये ॥  
 नृपराज सुनहु मागधजनन अगौ पंच५हि अप्पिये ॥ १० ॥

[ दोहा ]

मार्दवपुर१जेजिम२महत, हितदुलतहट्टी३रु ॥  
 दाधिक४संतिल५ए दये, बखसि मागधन बीरु ॥ ११ ॥  
 पहिलो ठठिल अप्पयो, भट्टन पुनि भूपाल ॥

कलेश्वर१रु ज्वाला२नगर३, तिम चउत्थ४अनताल ॥१२॥

१ ब्राह्मण २ चारण ३ बड़वाभाट ४ स्तुतिपाठक भाटों को घरा दे दे कर ५  
 राजा बनादिये ॥७॥ ६ बड़वाभाटों ने सब लिख रक्खी है ७ उसको संक्षेप  
 से ८ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल भी कहते हैं राजा रामसिंह आप के पितरों का ९  
 दान सुनो ॥८॥ १० प्रसिद्ध ११ ये चौदह स्थान ब्राह्मणों को दिये १२ चारणों  
 को १३ मद सहित ॥९॥ १४ पुर १५ ग्राम १६ जहां पर सतलजनदी की एक  
 धारा है १७ शतहु नदी से सेवा जानेवाला १८ नगर १९ द्रव्यों की खान दिये

( षट्पात् ]

नवरु तीस३९इम मिजल करी नाहर१३४संभर सन ॥  
 पुर१वहु निवसथ२अल्प दये ते सब कवि१विबुध२न ॥  
 संप्रदान तिहिं समय विप्र तक्किय गंगाधर१ ॥  
 सहिय बुध श्रीकंठ२सांख्यआकरं द्विज संकर३ ॥  
 वेदांत उर्दधि त्र्यंबक४बिदित मंठ५सुकवि साहित्यमय ॥  
 गोविंद६भट्ट पट्ट जोगगति जैमिनिमत मूरति बिजय७१३॥

( दोहा )

दये प्रथम इतिमुख द्विजन, रीझि चउद्दह१४राय ॥  
 सिंसुपनसौं विद्या विभव, अप्प रह्यो अपनाय ॥ १४ ॥  
 सुपहुं अनी१बिच सूर जिम, सम बानी२बिच सूर ॥  
 कोस१व्याकरण२काव्य३करि, पढ्यो निर्गम४मतिपूर१५॥  
 हमको सुमिरन पुब्बही, नृप यह आयो नाहिं ॥  
 विरघाँनतो धर्मी१रु बुध२, लिखते मंगलमाहिं ॥१६॥  
 बुधजन देस विदेसके, सुनि मति१धर्म२प्रकास ॥  
 आश्रित हुव चहुवानके, विरचि रुमापुर बास ॥ १७ ॥  
 उपयमं कारन जात इम, मिजल धाम कछु मानि ॥  
 द्विजन इते भूपति दये, अतुल रीझ छक आनि ॥ १८ ॥

( षट्पात् )

संप्रदान सौतेयं सुनहु अब रामनरेस्वर ॥

१सुकाम२सांभर से ३ग्राम ४ पंडितों को उस समय के ५ दान विन्यास शास्त्र का पंडित ७ सांख्य शास्त्र की खान ८ वेदान्त शास्त्र का समुद्र ९ मीमांसा शास्त्र की मूर्ति ॥ १३ ॥ १० इत्यादि ब्राह्मणों को दिये ११ बालकपन से ही विद्या रूपी विभव को आप(माणिक्यराज)ने अपना लिया था ॥१४॥१२ वह श्रेष्ठ राजा १३ सेना के बीच में वीर था उसीके समान वाणी में शूर था १४ वेद ॥१५॥१५ पहिले स्मरण नहीं आया नहीं तो धर्मात्माओं में और पंडितों में १६ दोनों और १७ मंगलाचरण में लिखते ॥१६॥१८ सांभर में वास करके ॥१७॥१९ विवाह करने के लिये जाते समय २० सूतपुत्रों(चारणों)

चंडकोटि तिनदिनन अन्ह परपुरुख धुरंधर ॥

दिय पौराणिक कुलहिं साप अगैं अकृतव्रन ॥

आर्यमित तब वेहि विहित वंदे कुलवर्द्धन ॥

मुनि कहिय लहहु करितुष्ट मृड तिन कुल रक्षिय तिमहि करि ॥

प्रभुचरितमाहिं कहिहैं सु सब कछुक लेहु अब कन्नधरि ॥ १९ ॥

व्यास सिस्य हुव पंचपैल १ अरु वसंपायन २ ॥

मुनि जैमिनि ३रु सुमंतु ४ लोमहरखन ५ सिंछायन ॥

छात्र सूतकै छ ६ मुनि सुमति १ मित्रयु २ अकृतव्रन ३ ॥

जाको काश्यप ३यहहु अपर अभिधान पुरानन ॥

सावर्णि ४ सांसपायन ५ सुबुध अग्निवर्ष ६ ए सबभये ॥

उग्रश्रवा ७ हु सप्तम ७ स्वसुत सूत पठित ए सिक्खये ॥ २० ॥

( दोहा )

इम सत्त ७ न निजछात १ अरु, सुत २ नती ३ सिक्खयेहि ॥

जब गुरुकुलकी जीविका, भूसुर लेत भयेहि ॥ २१ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

उग्रश्रव आत्मज उपजे दुवर, पुण्यश्रवा १ बडे तिनमैं हुव ॥

मैं दानपात्र हमारे पुरुषा चंडकोटि नामक उन दिनों में धुरंधर थे "अथ आगे चारणों की कुछ कथा कहते हैं" लोमहर्षण वंश के सूत कुल को आगे अकृतव्रण (काश्यप) नामक मुनि ने आप दिया था तब आर्यमित्र नामक सूत ने अपने कुल की वृद्धि करने के अर्थ उन्हीं अकृतव्रण से नमस्कार किया सो सुनकर अकृतव्रण ने कहा कि महादेव को प्रसन्न करके रंशवृद्धि पाओ तब आर्यमित्र ने शिव को प्रसन्न करके अपने कुल को रक्खा वह सब चरित्र हे स्वामी रामसिंह आप के चरित्र में कहेंगे परन्तु कुछ यहां भी कहते हैं सो श्रवण करो ॥ १९ ॥ १ वेदव्यास के २ शिष्या के घर पांच शिष्य हुए ३ जिसका दूसरा नाम पुराणों में काश्यप है, ४ इन छे मुनियों के सिवाय अपना (लोमहर्षण का) पुत्र उग्रश्रवा ये सातों ही लोमहर्षण सूत से पढ़कर शिक्षित हुए ॥ २० ॥ इसप्रकार इन सातों ने भी अपने शिष्य, पुत्र और पौत्रों को पढ़ाये तब गुरुकुल (सूत पौराणिकों) की जीविका (पुराणादिक की कथा करने की जीविका) ब्राह्मणों ने ली ॥ २१ ॥ लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा के दो पुत्र हुए जिनमें बड़ा पुण्यश्रवा और छोटा सगा भाई

भद्रश्रवारसहोदर भ्राता, विद्या१तप२जुग२जुग२हि विधाता॥२२॥  
 पुण्यश्रवा सुता इक पाई, किय अगूढ जिहिं जोग कुमाई ॥  
 भद्रश्रवा लह्यो तनुज त्रय३, बडे तहाँ वसुमित्र१बीतभय ॥ २३ ॥  
 प्रभुभूमित्र२रु आर्यामित्र३पुनि, चतुर भये दिग्गज बुध सबचुनि॥  
 तर्क१सब्द२आदिक पृथु तंत्रन, मुख भिच्छुक किय दैकि निमंतन  
 हुव भूमित्र तिनहु बिच कोपन, उद्धत गह्यो ऊह आरोपन ॥  
 बाद१जल्प२वेतण्डा२कल्पक, ओक ओक दिय गोक अनल्पक२५  
 उग्रश्रव सुतता तिन्ह उज्झै, सम१दमा२ऽऽदि नैकन मति सुज्झै  
 बहु विप्रन इम मान बिगारे, रंक समर्थन पास पुकारे ॥ २६ ॥

भद्रश्रवा. विद्या और तप इन दोनों में ये दोनों ब्रह्मा के समान हुए ॥ २२ ॥  
 पुण्यश्रवा के एक पुत्री हुई जिसने प्रसिद्ध योग किया और भद्रश्रवा के ती-  
 न पुत्र हुए जिनमें बड़ा वसुमित्र निर्भय हुआ ॥ २३ ॥ हे प्रभु रामसिंह ! भू-  
 मित्र और आर्यामित्र ये दोनों सब में चुनेहुए दिग्गज (दिशाओं को जीतने  
 वाले अथवा दिशाओं के हाथियों के समान बडे) परिडित हुए जिन्होंको न्या-  
 यशास्त्र और व्याकरण आदि बडे शास्त्रों (वेदशास्त्रा विशेष)। “सर्गश्च प्रतिस-  
 र्गश्च मन्त्रनिर्णय एव च॥ देवतानां च संस्थानं तीर्थानां चैव वर्णनम् ॥ १ ॥ त-  
 थैवाश्रमधर्मश्च विप्रसंस्थानमेव च॥ संस्थानं चैव भूतानां यन्त्राणां चैव निर्णयः  
 ॥ २ ॥ उत्पत्तिर्विबुधानां च तरूणां कल्पसंज्ञितम् ॥ संस्थानं ज्योतिषां चैव  
 पुराणाख्यानमेव च ॥ ३ ॥ कोषस्य कथनं चैव वृत्तानां परिभाषणम् ॥ शौचा-  
 शौचस्य चाख्यानं नरकाणां च वर्णनम् ॥ ४ ॥ हरचक्रस्य चाख्यानं स्त्रीपुंसो-  
 श्रैव लक्षणम् ॥ राजधर्मो दानधर्मो युगधर्मस्तथैव च ॥ ५ ॥ व्यवहारः कथ्यते  
 च तथा चाध्यात्मवर्णनम् ॥ इत्यादिलक्षणैर्युक्तं तन्त्रमित्यभिधीयते ॥ ६ ॥ ने  
 मानों निमंत्रण देकर अपने मुख्य भिक्षुक बनालिया अर्थात् इन शास्त्रों ने  
 अपना सर्वस्व इन्हींको दिया ॥ २४ ॥ इनमें भूमित्र क्रोधी हुए जिन्होंने प्रग-  
 ल्भ होकर अपनी तकर्ना का आरोपण किया और बाद (यथार्थज्ञान के व-  
 चन को बाद कहते हैं) जल्प (अपने पक्ष को स्थापन करके परपक्ष को दूषण  
 युक्त ठहरानेवाले विजय के वचन को जल्प कहते हैं, यथोक्तोपपन्नश्छलः।  
 जातिनिग्रहस्थानसाधनोपालम्भो जल्पः) वितंडा (परपक्ष को स्थापन नहीं  
 होने देने को वितंडा कहते हैं) के रचनेवाले भूमित्र ने बड़ों बड़ों को घर घर  
 में रोकदिया ॥ २५ ॥ इन्होंने उग्रश्रवा के पुत्रपन को छोड़दिया अर्थात् उग्रश्रवा  
 जैसे शीलवान् और संतोषुणी ये ऐसे ये नहीं हुए और इनको समद्रम

कासी इक नृप खिन नवमा९९९वृत्ति, वैष्णवव्रतन पुरान सुनै धृति१८  
 जाको नाम—जान्यौ, पारायन श्रुति उचित प्रमान्यौ २७  
 काश्यप तनय छात्र पाठक जँहँ, काश्यप आदि मुनिहु श्रोता तँहँ  
 अटत अटत भूमित्रहु आये, लखि सु व्यास आसन रिसलाये २८  
 ऊँचो कर करि सूत कही यह, अहो बढत विप्रन अब आग्रह ॥  
 जिनसौं दुर्घट सास्त्र गये जब, पौरानिक जीवन जीवत अब ॥ २९ ॥  
 बक्ता तँहँ संकास यहै सुनि, कह्यो यह न तुमकोहि दर्ई मुनि ॥  
 विप्रहु कहे इहाँ अधिकारी, तुम जो वृत्ति भिन्न किम टारी ॥ ३० ॥  
 सुनि भूमित्र कह्यो धकि रे सठ, व्है परचौर बहुरि मंडँ हठ ॥  
 को गुरु मूढ रही जँहँ कच्ची, सुनि संकास सिटि न कहि सच्ची ॥ ३१ ॥  
 अकृतव्रन अवलौ सु पचाई, उर गुरु सुत सुतसुत सुधि आई ॥

आदि कुछ नहीं सूझा. बहुतसे दीन ब्राह्मण बलवानों (तपोबली और विद्या बलियों) से जाकर पुकारे ॥ २६ ॥ काशी में एक समय राजा वैष्णव व्रतों में स्थित होकर अठारह पुराणों की नवमी आवृत्ति (आठ बार पहिले सुन लिये थे अब नवमी बार सुनना प्रारंभ किया) सुनता था जिसका नाम ( ) था उसने पारायण सुनना उचित जाना ॥ २७ ॥ वहाँ पर काश्यप मुनि का पुत्र जो काश्यप का शिष्य भी था वह राजा को सुनानेवाला हुआ और काश्यप मुनि आदि सुननेवाले हुए वहाँ पर फिरते हुए भूमित्र आये जिन्होंने व्यासासन (कथा करने के आसन पर) काश्यप के पुत्र (संकास नामक मुनि) को देखकर क्रोध किया ॥ २८ ॥ ऊँचा हाथ करके भूमित्र नामक सूत ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि अब ब्राह्मणों का आग्रह बढ़ता है. जिन ब्राह्मणों से जब कठिनाई आनेवाले शास्त्र चलेगये तब पुराण सुनाने की (हमारी) वृत्ति से जीने लगे हैं ॥ २९ ॥ संकास नामक कथा करनेवाले ब्राह्मण ने कहा कि वेदव्यास मुनि ने पुराण वृत्ति केवल तुमको ही नहीं दी है ब्राह्मण भी इस कार्य के अधिकारी हैं फिर इस वृत्ति को तुम ने ही जुदी कैसे टाली है ॥ ३० ॥ भूमित्र ने क्रोध करके कहा कि अरे मूर्ख पराई वस्तु को चुरानेवाला होकर फिर हठ करता है, कौन मूर्ख तेरा गुरु है कि जिससे तेरी बुद्धि इसप्रकार कच्ची रह गई है, यह सुनकर संकास लज्जित हो गया और सच्ची बात पीछी नहीं कह सका ॥ ३१ ॥ अकृतव्रण (काश्यप) ने अब तक सहन किया और उर में अपने गुरु (लोमहर्षण) के पुत्र के दोहित्र का

निंदे इन्ह संकास गुरुहि जव, साप दयो दुस्सह कास्यप तव ३२  
 जे बिप्रन करि दया गिनै सम, ते व कहत कोउ न हमही हम ॥  
 कूर मूढ कहि मुनिन कुपाये, जाहु खयहिँ पौरानिकजाये ॥ ३३ ॥  
 वचन ब्रजू कास्यप यह डार्यो, सूतन जिततित मरन सम्हारयो ॥  
 आर्यमित्र यह सुनि आतुर अति, कास्यप पयन गिरे विनीत मति ३४  
 आकृतवन करुना द्रुत आनी, बुल्ले सजलनयन हित बानी ॥  
 उग्रश्रवा महामुनि अन्वय, जन्महिँ पाय धन्य तुम दुर्जय ॥ ३५ ॥  
 भूमित्रहिँ तरज्यो संकासहिँ, हमहु मूढ वरने करि हासहिँ ॥  
 कोप बढ्यो सहसा इहिँकारन, उचित दंड किम होय निवारन ३६  
 पै गोधूम कुसंगहिँ पावत, जंत्र घरट्ट कूमिहु पिसिजावत ॥  
 इम तुमपैहु भार यह आयो, मंजु एक शकरि कुलहिँ गुमायो ॥ ३७ ॥  
 पीछै हमहु बहुत पछिताये, करै कहा तव भ्रात कुपाये ॥  
 बहुद्विज मान हरे करि वादहिँ, पुनि वक्यो सु यैहँ आनि प्रमादहिँ ३८  
 राजसभा कानि न कछु रक्खी, अहि द्विजकोप जगाय रु अक्खी ॥  
 चित्त हमहु कछु रिस इम चाही, साप असह निकस्यो सहसाही ३९

स्मरण हुआ अर्थात् यह जाना कि यह भूमित्र हमारे गुरु के पुत्र (उग्रश्रवा) के दौहित्र हैं जिनने जब संकास के गुरु की निन्दा की तब काश्यप ने दुस्सह आप दिया ॥ ३२ ॥ ब्रह्माणे दया करके जिनको अपने समान (बराबरीवाले) माने हैं वे अब कहते हैं कि जो कुछ है सो हम ही हैं हमारे समान अन्य कोई नहीं है और मुनियों को मूर्ख कहकर क्रोध कराया है इसकारण पौराणिक (लोमहर्षण) के वंशवाले चय होजाओ ॥ ३३ ॥ लोमहर्षण के वंशवाले काश्यप के पगों में नम्र होकर गिरे तब आकृतव्रण ने शीघ्र करुणा लाकर नेत्रों में जल भरकर हित के वचन कहे कि हे दुर्जय (आर्यमित्र) महामुनि उग्रश्रवा के वंश में जन्म पाकर तुम धन्य हो ॥ ३५ ॥ भूमित्र ने संकास को धमकाया और हसी करके हम को भी मूर्ख कहा ॥ ३६ ॥ परन्तु गेहू के संग से कीड़े भी घरटी घंत्र में पिसिजाते हैं इसप्रकार इस आप का भार तुम पर भी आया है और एक ने अपराध करके मनोहर कुल का नाश कराया है ॥ ३७ ॥ उसने शास्त्रार्थ करके बहुत ब्राह्मणों के मान हरे थे ॥ ३८ ॥ राजसभा की शंका भी कुछ नहीं रक्खी सर्प रूपी ब्राह्मण के क्रोध



कथित सु विप्रन मोघ होय कब, उरग गयो रु रही लेखा अब॥  
 कुप्पि रु गुरुकुल पाप कुमायो, अवभावी असौ सुधि आयो॥४०॥  
 तुम द्रुत जाहु अद्रितुहिनाचल, आराधहु भव भक्ति अनर्गल ॥  
 वृखसेवन हर तुमहिँ बतैहैं, द्रुत वृख तुष्ट वृद्धि वर दैहैं ॥ ४१ ॥  
 ताके वर अन्वय बढिहैं तव, भव करिहैं हरिहैं चिंता भव ॥  
 यासौँ हमहु प्रसन्न अनाग्रह, उक्तमिटहु गुरु वंस रहहु यह ॥४२॥  
 वामुकिनागसुता अवरी बलि, दैहैं तुमहिँ रुद्र संसय दलि ॥  
 तनय होहिँ बीस रु सत१२०तामैं, इम बढिहैं गुरुवंस ईलामैं॥४३॥  
 साप असह इतरन संहारहिँ, तुमकोँ आर्यमित्र अब टारहिँ ॥  
 आर्यमित्र यह सुनि गृह आये, पुनि जिततित मृत कुल सुनिपाये  
 कास्पप कथित तवहि आतुर करि, सेये हर अकपटतप अनुसरि  
 देह उपरि बल्मक उपदेही, अर्जन लगी गही अति एही ॥ ४५ ॥  
 सदय उमा लाखि सिवहिँ सुनाई, रक्खहु प्रभु न यहै निदुराई ॥  
 प्रान लयैं बालहिँ कैसो पय, सूकैं खेत कहा धन संचय ॥ ४६ ॥

को जगाकर ९ यकायक॥ ३९ ॥ ब्राह्मणों का कहाहुआ वृथा नहीं होता इस-  
 कारण वह लोकोक्ति सत्य हुई कि सर्प तो निकल गया और लकीर बाकी  
 रह गई. क्रोध के वश गुरु के कुल का नाश करके हम ने भी यह पापकर्म  
 किया है परन्तु अब आगे के लिये यह स्मरण हुआ है कि ॥ ४० ॥ शीघ्र हि-  
 माचल पर्वत पर जाकर निरन्तर भक्ति से महादेव की आराधना करो वहाँ  
 महादेव तुमको बैल (महादेव का वाहन) की सेवा करना बतावेंगे वह वृषभ  
 प्रसन्न होकर शीघ्र ही तुम्हारे वंश के बढ़ने का वर देवेगा ॥ ४१ ॥ उसके व-  
 र से तुम्हारा वंश बढ़ेगा महादेव चिन्ता हरेगे और भव (कुशल) करेंगे इस  
 में दृढ़ छोड़कर हम भी प्रसन्न हैं कि हमारा कहाहुआ (आप) मिटजाओ  
 और हमारे गुरु का यह वंश बनारहो ॥ ४२ ॥ पुनि सन्देह मेटकर शिव  
 तुमको वासुकि नाग की अवरी नामक पुत्री देवेंगे पृथ्वी में ॥ ४३ ॥ हम-  
 रा आप औरों का नाश करेगा और हे आर्यमित्र तुमको बचादेवेंगे कुल का  
 मरना नुना ॥ ४४ ॥ आर्यमित्र ने कास्पप का कहना शीघ्र करके कपट र-  
 हित होकर महादेव का सेवन किया, जब देह के ऊपर उदेही दूसरी देह इ-  
 कट्टी करने लगी, यह गति होगई तब ॥ ४५ ॥ दया सहित पार्वती ने प्राण-  
 गये पीछे बालक को दूध पाना किस काम का है और स्तन सूखने पीछे मेघ

देव इष्ट भक्तहिं द्रुत दीजै, लय कुल होत रक्खि अब लीजै ॥  
 देखि दया सु कह्यो हर देवहु, सूत मदीय वृषभ यह सेवहु ॥४७॥  
 आर्यमित्र तब प्रीति परायन, हर वृष जंज्यो द्वै रु दस १२हायन ॥  
 भजी दिलीप नंदिनी जा भति, सूतहु भद्र भज्यो हित संगति ४८  
 संग रहे छाया सम नतिसन, वारह १२अवद चरायो वन वन ॥  
 वृष व्है तुष्ट दयो सूतहिं बर, तवकुल बढहु फुल्लि फलि बहुतर ४९  
 गिरिस दत्त अब धारि परिग्रह, सुगुन प्रजा तुम रचहु सक्ति सह ॥  
 करि हित मोहि चरावन कारन, चतुर भजहु उपपद अब चारन ५०  
 सु सुनि सूत आये वृष संगहि, कुलवर्द्धन हुव बर सु दयो कहि ॥  
 भक्ति प्रसन्न निदेस कस्यो भव, तिय बिनु किम बढिहै संतति तव ५१  
 सूत जाति निस्सेस मिटी सब, इक्क करहु आनर्त जाहु अब ॥  
 जो पृथुभूप तुमहिं दिय जनपद, है अतिपुण्य तीर्थ पावन हृदा ५२  
 छम मम लिंग जहाँ छवि पावत, सोमनाथ अभिधान कहावत ॥  
 तिहिं मंदिर वासुकि की तनया, अवरीनाम सती हत अनया ५३  
 उभय घटी निस रहत सु आवत, रचि हित पूजन मोहि रिभावत ॥  
 नटन १ गान २ आदिक करि नवनव, भनत प्रनमि पति उचित देहु भव  
 तहैं तू जाय भजहु बरि ताको, जनिहै वह कुल वढन प्रजाको ॥

का सीचना क्या है ॥४३॥ हे देव ! भक्त को वांछित वर शीघ्र दीजिये और  
 नाश होते कुल की रक्षा कीजिये, हे सूत मेरे वृषभ की सेवा कर २सेवन  
 किया ३वारह वर्ष पर्यन्त राजा दिलीप ने नन्दिनी नामक गऊ की सेवा की थी  
 उस भांति सूत (आर्यमित्र) ने वृषभ का हित सहित सेवन किया ४ नम्रता से  
 शिव की दीहुई परगह (परिजन) को धारण करके श्रेष्ठ गुणवाले सन्तान रचो  
 और मुझको हित के साथ चराने के कारण चारण उपपद धारण करो ५०  
 ५ महादेव ने आज्ञा की कि स्त्री के बिना तेरा वंश कैसे बढ़ेगा ५१ ॥ सूत जा-  
 ति तो सम्पूर्ण मिट गई इस कारण से एक हमारा कहना करके आनर्त दे-  
 श (द्वारका प्रान्त) में जा वह देश सूत [सूत कुल के आदि पुरुष] को रा-  
 जा पृथु ने दिया था ५२ ॥ वहाँ पर मेरा समर्थ लिंग शोभित है सोमनाथ  
 नामक कहलाता है देवासुकि नाग की पुत्री विपदा मिटाने वाली ७ नृत्य करने वाली न  
 वीन करके कहती है कि हे महादेव मेरे योग्य पति दे १ सेवन कर १० सन्तान

सो जातहि सिर धरि मम सासन, आदर तव करिहै तजि आसन  
अगौ सैन तुमरोहि देस वह, सरजहु प्रजा तहाँ रहि सुख सह ॥  
पौरानिक तव जपत पुरारे, स्वीय देस आनर्त सिधारे ॥ ५६ ॥  
तहँ तैसँहि पाय अवरी तिय, करि गेहाश्रम प्रजा प्रकट किय ॥

सत रु बीस १२० उपजे तिनके सुत,

जिनतैं चारन खरवि १२० भेदजुत ॥ ५७ ॥

तिनमैं नवम<sup>१</sup> भेद वैरोचन, जामैं हम सबही मिश्रणजन ॥  
हमरे पुव्वपुरूख कातरकटु, चण्डकोटि<sup>२</sup> तिनदिनन हुते पट्टा<sup>५८</sup>  
बुल्लत मिश्रित गुंफि छद्धानी, जिन्ह अभिधा<sup>३</sup> मिश्रन जगजानी  
प्रकटि वादें दिसदिस जय पायो, वादिविहण्डन विरुद कहायो<sup>५९</sup>  
है जिनकेहि नाम मिश्रन हम, वे तिहिँ समय हुते जयें उद्यम ॥  
पायो तिन नृपसौं पट्टालय, जु इतरैं<sup>४</sup> नृपन राज्य सम कृतजय<sup>६०</sup>  
इतरहुँ बहु चारन नृप आश्रित, है तिन्ह नाम सुनहु प्रभु करिहित  
संभुदेव<sup>२</sup> उद्धव<sup>३</sup> संकरखन<sup>४</sup>, कासीनाथ<sup>५</sup> अमर<sup>६</sup> विद्याधन ॥ ६१ ॥  
चन्द्रदेव<sup>७</sup> भास्कर<sup>८</sup> वाचस्पति<sup>९</sup>, देवीदास<sup>१०</sup> मुरारि<sup>११</sup> महामति ॥  
इत्यादिक पौरानिक सूरिनैं, दये धाम पन्द्रह<sup>१२</sup> पन्द्रह<sup>१३</sup> दिन ६२  
पुनि मागध हरिसेन<sup>१</sup> प्रभाकर<sup>२</sup>, ईश्वर<sup>३</sup> चन्द्र<sup>४</sup> विजय<sup>५</sup> गुनआकर ॥  
च्यारि<sup>६</sup> भट्ट धनदेव<sup>१</sup> देवमनि<sup>२</sup>, खेमपाल<sup>३</sup> भैरव<sup>४</sup> विद्याखनि ॥ ६३ ॥  
इनकों पुर पंच<sup>५</sup> रू चउ<sup>६</sup> अप्पिय, मिजलन इम कंगुर भुव माप्पिय

जनेगी ? उठकर ॥ ५५ ॥ २ पहिले से वह देश तुम्हारा ही है ३ महादेव के यह कहते ही वह पौराणिक (आर्यमित्र) अपने आनर्त देश में गया ॥ ५६ ॥ ऊपर कहे अनुसार ४ अवरी नामक स्त्री को पाकर ५ गृहस्थाश्रम करके सन्तान उत्पन्न की ॥ ५७ ॥ ग्रंथकर्ता [सूर्यनल्ल] एकटु बोलने में कायर ॥ ५८ ॥ ८ उहाँ भापा को मिली हुई ग्रंथकर बोलते थे इससे उनका नाम मिश्रण हुआ १० शास्त्रार्थ करके ११ वादिविहंडन ऐसी स्तुति कहाई (मिश्रणों को चारणों के पापक लोग वादिविहंडन कहते हैं) ॥ ५९ ॥ १२ उद्यम को जीतनेवाले १३ दूसरे राजाओं के राज्य की १४ और भी १५ पंडितों को १६ विद्या की खान ॥ ६३ ॥

दानसील असो कहूँ दीसैं, हितकरि तो वरनैं हसि दीसैं ॥ ६४ ॥

दोहा

पथे आये जे ग्राम१पुर२, मिजलन अवधि मुकाम ॥

तकि सहजहि मानिक्य ते, दिय दुल्लह धुर धाम ॥६५॥

सम्भर अहो उदारता, यह काके अनुरूप ॥

पट्टालयसे अप्पि पुर, भुव किय चारन भूप ॥ ६६ ॥

तदनु चढ्यो पुर तालसौं, दुल्लह करि बहु दान ॥

कंगुर जाय विवाह किय, चौथो४इम चहुवान ॥ ६७ ॥

मनुस्वायंभुव कुल खमनि, जल्हन भूपति जत्थ ॥

सीता१३४१४वरि ताकी सुता, अधिक दयो पुनि अर्था॥६८॥

वेवस्वत मनुवंस भव, तिन दिवसन लाहोर ॥

करत राज्य केदार नृप, जो उद्धत दल जोर ॥ ६९ ॥

जल्हनके लरि पुब्ब जिहिं, दब्बिलये दुवरदेस ॥

तस विन्नति जामातसौं, अब मानव किय एस ॥ ७० ॥

कर आब्दिक देनौं करयो, दुष्ट तदपि केदार ॥

छिति अप्पन बहु छिन्निलिय, उचित तुमहिं उपकार॥७१॥

[ पट्टपात ]

स्वसुर उक्त यह सुनत चढ्यो चहुवान पुरंदर ॥

ऐसा दानी कोई दीखें तो वर्णन करैं नहीं तो वर्णन करने में हसी दीखती है

॥ ६४ ॥ १ मार्ग में २ माणिक्यराज ने ॥ ६५ ॥ इस चोहाण की ३ आश्रय

देनेवाली उदारता है सो किसके४सहस्र हैं अर्थात् इस उदारता के समान

यही उदारता है ५ भूमि पर चारणों को राजा करदिये ॥ ६६ ॥ ६ जिस

पीछे ॥ ६७ ॥ स्वायंभू कुल का ७ सूर्य ८ धन दिया ॥ ६८ ॥ ९ सेना के यल

से उद्धत था किन्तु अपने यल से नहीं था ॥ ६९ ॥ उस केदार ने पहिले ल-

ड़ कर जल्हन राजा के दो देश जीतलिये थे जिनको पीछे लेदेने के अर्थ म-

नु वंशवाले जल्हन ने जमाई से विनती की ॥ ७० ॥ सालाना खिराज

देना किया तोभी दुष्ट केदार ने अपनी भूमि बिन ली जिसका तुमको उ-

पकार करना चाहिये ॥ ७१ ॥ १० सुमर का कहाहुआ ११ इन्द्र

बिंढि नगर लाहोर घोर मंडिय घन संगर ॥

केदारहिं करि जेर स्वसुर जनपद दुवरछिन्नै ॥

दुवरसिवाय लिखवाय च्यारि४कंगुर बस किन्नै ॥

दिन कछु तदीय अरि ओर दामि सिक्ख पाय सिर दिव घसतै ॥

नाहरनरेस संभरनगर लौ दुलहनि आयो लसतै ॥७२॥

त्रिसत३००विप्रबुध तत्थ तीस३०पंडित पौरानिक ॥

खट६मागधं चउ४भंड बिदित बिद्या बल बानिक ॥

तीनलक्ख३०००००पाइक लक्ख१०००००सु बिनीतै तुरंगम

मत्त सहस१०००मातंगै जानि पब्बय हुव जंगम ॥

ए जाहि सततै सेवत रहै बहै दुलभ जस बीतै भय ॥

मानिक्यराज लाहोर इम कंकनसह किन्नौ विजय ॥७३॥

[ दोहा ]

स्वीर्य स्वसुरकी सीममै, लग्गे अट्टमिलौन ॥

तिन संटै निवसंथ इतर, दैनकहे चहुवान ॥ ७४ ॥

न लयेते जल्हन नृपति, दै दायज सब द्रव्य ॥

करे बिदा बर१कन्यकार, भुव छुराय निज भव्य ॥ ७५ ॥

इम नृप संभर आयकै, कियउ राज्य दुख कहि ॥

धर्म अनुगै भुग्गी धरा, बैरीगन रुनु वैढि ॥७६॥

सौत्रामणि पंदह१५सैवन, बाजुपेयै मख बीस२० ॥

१ स्वसुरा के देश २ उस जल्हन के अन्य शत्रुओं को ३ दंड देकर ४ मस्तक से आकाश को घिसता हुआ (यह लोकोक्ति है कि विजय पाकर ऊपर को उठे हुए का मस्तक ऐसे जाता है कि जैसे मस्तक से ब्रह्मांड को घिसता हुआ जाता होवे) ५ सांभर नगर में ६ शोभायमान होता हुआ ७ ब्राह्मण जाति के पंडित ८ चारण जाति के पंडित ९ बड़वा भाट १० स्तुतिपाठ करनेवाले भाट ११ पैदल १२ शिखा पाये हुए घोड़े १३ हाथी मानों १४ चलते हुए पर्वत हैं ऐसे १५ निरन्तर १६ निर्भय होकर यश को धारण करता है १७ कंकण डोरडों सहित विजय किया १८ अपने संसुर की सीम में आठ १९ मुकाम हुए थे वे ग्राम दान करदिये जिनके बदले में दूसरे २० ग्राम चहुवाण ने देने कहे ॥ ७४ ॥ २१ राजा केदार से अपनी सुन्दर भूमि छुड़ाकर ॥ ७५ ॥ २२ धर्म के साथ २३ काटकर ॥ ७६ ॥ २४ यज्ञ २५ यज्ञविशेष

चहुवाणवंशवर्णन] तृतीयराशि—सप्तषष्टिमयूख (११७१)

च्यारि४वृहस्पति सब चयन, अष्टकरे अवनीस ॥ ७७ ॥

ईडरपति जयमल्ल१नृप, दसपुरपति रतधीर२ ॥

पद्मसेन३गुगैरपति, हंसीपति हम्मीर४ ॥ ७८ ॥

नीलकेतु५ग्वालेर नृप, पट्टनिपति हरपाल६ ॥

सुपहुँ इते रक्खे समर, नाहर काल कराल ॥ ७९ ॥

षट्पात

प्रकटे दस१०गुन पूर सूर मानिक्यराज सुत ॥

सुनहु मुहुकर्मा १३५१रु लाल१३५२हरिसिंह१३५३नीतिजुता ॥

सुत चउत्थ४सदूल१३५४पूर्णांराज१३५५सु हुव पंचम५ ॥

छडो६मौक्तिकराज१३५६अनुज निर्वान१३५७वीरभ्रम ॥

पुनिकृष्णाराज१३५८अष्टम८प्रथितलसनराज१३५९अतिबलनवम

सब लघु प्रबालराज१३५१०हु सुमति कथित एह अनुरीति क्रम८०

दोहा

प्रथम१द्वितीय२तृतीय३पुनि, चउम४पंचम५रु छड६ ॥

स्यामा औरस ए छडसुत, कीलाकरं अरिक्क ॥ ८१ ॥

उभय२जनै आसावरी, अष्टम८नवम९उदारा ॥

सीता सुत सप्तम७दसम१०, बाढन कुल विस्तार ॥ ८२ ॥

पादाकुलकम्

इत केदार पुनि सु कंगुर गय, लरिलरि थक्यो जिहि न लढो जय

जल्लहन प्रबल पाय चउ४जनपद, चहुवानन संबंध महामद ॥ ८३ ॥

१यज्ञविशेषरेराजा३मन्दसोर का पाति ॥ ७८ ॥ ४अष्ट राजा नाहर ने काल

के समान भयंकर होकर इतनों को ५ युद्ध में रक्खे (मारे) ॥ ७९ ॥ ६ भ्रम

रहित ७ प्रसिद्ध ८ पिछली रीति के क्रम से हुए ॥ ८० ॥ ९ स्यामा के

वर से शत्रुओं रूपी ११ काष्ठ के ऊपर १० अग्नि रूपी हुए ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

लाहौर का राजा केदार कागरे जाकर लड़ लड़ कर थक गया परन्तु जय

नहीं पाया क्योंकि राजा जल्लहन चार देश पाकर प्रबल होगया था और

चहुवाणों से सम्बन्ध होजाने के कारण मदयुक्त था ॥ ८३ ॥

भिरि तानै केदार भजायो, असुलोभी लाहोर सु आयो ॥  
जिहिं निज नैक कटन नन जान्यो, पर सहाय करि नास प्रमान्यो ८४  
दोहा

इक पत्तन मकदूनियो, इत जनपद यूनान ॥  
जवन सिकंदर नाम जैहँ, सूर भयो सुलतान ॥ ८५ ॥  
पुनि तिहिं संगर रूमपति, संहारि दारासाह ॥  
रूम तखत पायो रुचिर, दै सत्रुन उर दाह ॥ ८६ ॥  
नोसावा बेगम निपुन, अरु दुवस्तास वजीर ॥  
इक बली नास रु अपर, विदित अरस्तू वीर ॥ ८७ ॥

### षट्पात

अब शवलख रईरान आदि मंडल करि अप्पन ॥  
आयो गजनी अवधि थिरा हाकिम निज थप्पन ॥  
अटक लंघि तस इतहु अमल करिबो मन आयो ॥  
पावन आसय पत्र प्रथम लाहोर पठायो ॥  
अब आत हमहु केदार उत कैसी तुम चाहत कहहु ॥  
कै होहु अनुग आदाब करि रन के सज्जहु दह रहहु ॥ ८८ ॥  
दुमति स्यार केदार हुतो बिरचै यह चाहत ॥  
मिलै कबहु मृगराज करै पीलुहिं प्रतलाहत ॥  
हमहु चर्म शकछु हड्ड पल्ल ३ पूतिहु तब पावै ॥  
दलि जल्हन तस देस अखिल जिहिं बल अपनावै ॥

प्राण का लोभी उसने अपना नाक कटना नहीं जाना ॥ ८४ ॥ मकदूनिया नामक पुर यूनान देश में था जहाँ सिकंदर नामक यवन बहादुर ने बादशाह दाराशाह को युद्ध में मारकर रूम का सुन्दर तखत पाया ॥ ८५ ॥ उसके इनोसावा नामक चतुर बेगम (स्त्री) धीरे धीरे ॥ ८६ ॥ भूमि पर अटक नदी उतर कर लाहोर वालों का क्या अभिप्राय है इसको जानने के लिये उसे बक ॥ ८८ ॥ दुर्बुद्धि गी-दड़ राजा केदार पहिले से यही करना चाहता था कि जो कभी सिंह मिल जावे तो अपनी हाथल (थप्पड़) से हाथी को मारें उनमें से कुछ चमड़ी हड्डी मांस और दुर्गन्ध हमको भी मिले इस प्रकार उस बलवान के बल से

इम चित्ति सिकंदर पत्र वह जान्यौं सेवधि रंक जिम ॥

कन्या स्वकीय व्याहन कहि रुइत बुल्लिय जवनेस इम ८९

दोहा

इक्खहु कलि जुग घोर यह, रनदुल्लह नृपराम ॥

कन्या मिच्छहिं दैन करि, किय खल अनुचित काम ॥९०॥

सजातीयकै देस जो, सो जिहिं अधम सहयो न ॥

दुहिता जवनहु अत्थदै, भंड्यो कुलहि त्रिभोन ॥ ९१ ॥

षट्पात्

सहसा भिंटत सिंह करत जिम प्रनति कं पि खिखि ॥

द्विरदःलुलायदिसात लेह यागति अनेक लिखि ॥

दै कग्गर केदार सजव बुल्लयो सु सिकंदर ॥

अक्खी तुम इत आय करहु जल्हन हमरे कर ॥

तनया मदीय तो दै तुमहिं जाति सबहि करिहै जवन ॥

तुम सहि धरहु सब सिर तुजक भुग्गहिं हम कंगुर भवन ॥९२॥

करि आयउ दरकुंच सुनत दलै प्रबल सिकंदर ॥

जल्हन नृप यह जानि सुतरै पठयो पुरसम्भर ॥

इतरै नृपहु अनुकूल बिहित जानै ति बुलाये ॥

जल्हन को मारकर उसका देश हम ले लेंगे यह विचार कर सिकंदर के उस पत्र को जैसे रंक के हाथ धन लगै तैसे जानकर, अपनी कन्या को उसके साथ व्याह देना कहकर सिकंदर को इसप्रकार बुलाया ॥ ८९ ॥ हे रण के दुल्लह रावराजा रामसिंह इस घोर कलियुग को देखो कि स्लेच्छ (नीचजाति) को कन्या देना करके उस दुष्ट ने अनुचित कर्म किया ॥ ९० ॥ अपनी जातिवाले के वह देश था सो नहीं सहकर यवन के अर्थ पुत्री देकर तीनों लोकों में अपने कुल की निन्दा कराई ॥ ९१ ॥ सिंह के अचानक मिलजाने से जैसे लौमडी (लौंगती) धूजकर हाथी और भैंसों को बता देती है तैसे अनेक लेख लिखकर केदार ने पत्र देकर सिकंदर को शीघ्र बुलाया. जल्हन को हमारे हाथ में देदो तो मेरी पुत्री तुमको देकर हमारी सय जाति (चत्त्रियाँ) को यवन करदेवेंगे ? यह तुर्की शब्द है जिसका अर्थ दबदबा अधवा बंदोवस्त है ॥९२॥ २ प्रबल सेना के साथ सुतर सवार (खबर देनेवाला ऊँट का सवार) ४ अन्य राजा भी जो अपने अनुकूल थे उनमें से उचित समझे तिनको



सुनत मिच्छ\* संक्रमन इते सम्मलि चढि आये ॥

प्रद्वनिनरेस हरपालसुत करन१नाम जदुकुल तरनि+ ॥

तोमर+प्रताप२श्रीनैरपति चंदेरीपति चन्द्रमनि३ ॥ ९३ ॥

पब्बागढ छितिपाल गंगदेव४हु बडगुज्जर ॥

चंदाबारी अधिप चंद्रकुल कलस गदाधर५ ॥

भुजपति गोहिल अमर६भीम७सैंगर भरेहपति ॥

चाहिल गोकुल चन्द्र८सहित हंसीपति सम्मति ॥

मानिक्यराज९सम्भरमुकुट बैस अमर१०सिवगढ सुपहु ॥

चित्रांग११गोर सिंधुप चढे बिरचन रन इत्यादि बहु ॥ ९४ ॥

अटक लंघि इत जवन कटक हंकिय दरकुंचन ॥

ताजी तुरग त्रिलख३०००००लख पंचक५०००००पदाति गन ॥

प्रथम फेट मुलतानराज लिन्नी जयमंगल ॥

चढि धारन लरि चंड परयो तिलतिल करि अरिदल ॥

लाहोर तदनु पहुँचत जवन समुख जाय केदार सठ ॥

करि प्रनति भेट उपहार करि स्वीय निलय लायउ सहठ९५

दोहा

नैरकर पूषी जानि जिम, व्है नत लूम हलाय ॥

उदर दिखावत स्वान इम, हुव केदारहु हाय ॥ ९६ ॥

कन्या निज दिय मिच्छकहँ, सो तिहि रच्छक संग ॥

परनि पठाई रूमपुर, जवन सज्ज हुव जंग ॥ ९७ ॥

पटपात

\*मिच्छ का चलना सुनकर+यदुकुल का सूर्य+तैवर ॥ ९३ ॥ १ राजा रबैस जा-  
ति का क्षत्री ३ गोड ॥ ९४ ॥ ४ अटक नदी को लांघ कर ५ सेना ६ ताजी  
देश के उत्पन्न हुए ७ घोड़े ८ पैदल ९ जिस पीछे १० केदार नामक मूर्ख रा-  
जा ११ सामग्री भेट करके नम्रता सहित १२ हठ पूर्वक १३ अपने घर में  
लाया ॥ ९५ ॥ १४ जैसे मनुष्य के हाथ में १५ पुड़ी (रोटी) देखकर १६ नम्र  
होकर १७ पूछ को हिलाना हुआ १८ कुत्ता पेट दिखाता (पगों में पड़ता) है  
तैसे ही खेद का विषय है कि केदार होगया ॥ ९६ ॥ १९ सिकंदर ने अपने  
रज्जक साथ देकर ॥ ९७ ॥

कंगुरपर अब कटक सज्जि किय कुंच सिकंदर ॥

जल्हनके सहिमान भये सम्मुहसह सम्भर ॥

हुव आहव आरंभ लगे हर्यशगर्यरनरश्लोटन ॥

लारि दिनदिन छकि लोह रंति मुरै पटकोटन ॥

नाहर नरस जल्हन निलयं क्रमि निसीयं भोजन करै ॥

पुनि कछु अनेह लै सब नृपन उचित मंत्र तहँ अहरै ॥६८॥

दोहा

इक अमंत्र सब नृप असन, करि समंत्र कछुकाल ॥

सोवै सिविरन प्रात पुनि, जुझै रचि दल जाल ॥ ९९ ॥

अचलभानु प्रतिहार इक, सो जल्हन सामंत ॥

पहु मंगल कुल बैरपै, इच्छै सम्भर अंत ॥ १०० ॥

कुल जदव भूपति करन, चाहिल गोकुल चन्द्र ॥

सम्भर अगै संहरे, इनके रजनकर अतन्द्र ॥ १०१ ॥

सो चितत दोउ रन सिविर, प्रविसि छत्र प्रतिहार ॥

बुल्लयो अवसर बैरको, अब जिन टरहु उदार ॥

हरपाल शहम्मीर रहनि, भाखत तुमकाँ भीत ॥

तक्रहु भोजन संग तस, धिक नैय उभयर अधीत ॥ १०३ ॥

षट्पात

१ सेना २ चहुवान सहित ३ युद्ध प्रारंभ हुआ ४ घोड़े ५ हाथी  
गुड़ने लगे ६ दिन में शत्रुओं से छककर ७ रात्रि को ढेरों में आजावे ९  
माणिक्यराज चहुवान जल्हन के १० महलों में जाकर ११ आधीरात को १२ कुछ  
समय ॥ ९८ ॥ १३ एकपात्र में सब राजा सुलाह सहित सामिल १४ भोजन  
करके १५ मंत्र सहित १६ ढेरों में शयन करें ॥ ९९ ॥ १७ जल्हन का उमराव  
१८ राजा मंगल (मंडोवर के पड़िहार मंगल को चहुवाणों ने मारलिया था  
उस) के बैर में १९ माणिक्यराज चहुवाण को मारना चाहता था ॥ १०० ॥  
२० चाहिल जाति का क्षत्रिय इनके पिताओं को चहुवान ने आगे २१ निरा-  
लसी होकर मारा था ॥ १०१ ॥ उस बात को याद करके इन दोनों के ढेर  
में जाकर प्रतिहार अचलभानु ने कहा कि बैर लेने का यह समय है सो अब  
नहीं टलना चाहिये ॥ १०२ ॥ तुम दोनों के १३ नीति १३ पढ़ने को धिक्कार

अचलभानु प्रतिहार भेद पटकत इन अन्तरा ॥  
 चाहिल १ जहव २ चविये अबहि ताको नहिँ ओसर ॥  
 माँहि माँहिँ लरि मरन बुरो नयसूरि बतावत ॥  
 जब टरिहै यह जवन उचित यह तब उर आवत ॥  
 यह कंगुरेस बांधव अखिल आये हम मिच्छन लरै ॥  
 भीरकी बेर व्है अरि भनहु किम जल्हन अपकृत करै १०४

दोहा

सबल बहुरि नृप सम्भरी, जो किम दब्यो जाय ॥  
 जीतै पुनि अज्जन जवन, नीको सोहु न न्याय ॥१०५॥  
 अचलभानु तब उच्चरी, सिविरे रही तस सेन ॥  
 सबहु किन रजनी समय, तकि जल्हन गृह तेन ॥१०६॥  
 जवनेस हु यह जानिकै, मिलि तुमकोँ करि मिल ॥  
 लंघि अटक जैहँ लघुँहि, चुकहु यह सुहि चित्तै ॥१०७॥  
 अज्जन १ जवनन २ घोर इम, समर भयो दिन सत्त ॥  
 अचलभानु दिन अठम ८ हि, घल्ली खल यह धँत ॥१०८॥

षट्पात

दिन हिंदुन विपरीत बहुत प्रतिहार कही जब ॥  
 जहव १ चाहिल २ जुगल २ भये मारन तयार तब ॥  
 अहँ लरि सब अवनोपै रँति आये जल्हन घर ॥

है ॥ १०३ ॥ १ कहा २ बैर लेने का यह समय नहीं है ३ नीति के पंडित लोग साहोभाह लड़ने को बुरा कहते हैं ४ म्लेच्छ से लड़ने को ५ जल्हन का अपकार कैसे करें ॥ १०४ ॥ फिर यहां पर ६ चहुवाण सेना सहित है सो कैसे दबाया जा सकता है फिर चहुवाण को मार लेने से सिकंदर ७ आयों के घर (आर्यावर्त) को जीत लेवे सो भी उचित नहीं है ॥ १०५ ॥ ८ चहुवाण की सेना तो डेरों में रहती है और उसको जल्हन के घर में अकेला देख कर ९ रात्रि में क्यों नहीं मारते ॥ १०६ ॥ १० शीघ्र ही चला जावे ११ यह बू-कते हो सो आश्चर्य है ॥ १०७ ॥ १२ आयों में और यवनों में १३ घात ॥ १०८ ॥ १४ दिन में सब १५ राजा लड़कर १६ रात्रि को

इक थाल करि असन बैठि मंडिय रहस्य बर ॥

तैंह दग बचाय चहुवान उर दढ बल करन कटार दिया ॥

उठिय समाज भैचकि अखिल चूक चूक जिततित चविय १०९

छत लगगत चहुवान उलटि अरिमुख कर भारिय ॥

कृक समेत सिर तास मोरि प्रतिमुख इम मारिय ॥

चाहिल गोकुलचंद्र गदा पटकी तदनंतर ॥

अचलभानु प्रतिहार भयो सम्मलि कृपान कर ॥

सिर दुवराफिराय फोरे नृपहु गहि चाहिल प्रतिहार गैल ॥

सत अग तीस १३० तिनके सुभट प्रहर्त किन्न दैद प्रतल ११०

[ दोहा ]

सौधेन बिच हुव चूक सुनि, सबके बंधु सिपाह २ ॥

अंदर पैठे अँचि अँसि, रचत परस्पर बाह ॥ १११ ॥

[ षट्पात् ]

करन भ्रात जहव मुकुंद सम्मुह बढि आयउ ॥

नृप सालकें तोमर प्रताप हनि ताहि गिरायउ ॥

अंधकार निसअतुल भयो अप्पन पर भौन न ॥

सह जल्हन सब सुपहु परे गेहहि बिनु प्रानन ॥

चितांग गोरें गोहिल अमर तीजो तोमर चंद्रमानि ३ ॥

१ भोजन २ श्रेष्ठ सलाह करने लगे ३ यादव करण ४ राजाओं का समूह ५ भय से  
षकित होकर ६ कहा ॥ १०९ ॥ ७ घाव लगते ही ८ गला सहित मस्तक मरोड़  
(बल दे) कर ९ उलटे मुख (पीठ पीछे) १० गुरज ११ जिस पीछे १२ तरवार  
हाथ में लेकर शामिल हुआ. चाहिल और प्रतिहार इन दोनों के १३ गले  
(कंठ) पकड़ कर फिराकर राजा माणिक्यराज ने शिर फोड़दिये और इनके  
एक सौ तीस सुभटों को १५ थप्पड़ों की दे देकर १४ मार डाले १६ महलों में  
चूक हुआ सुनकर १७ तरवारें खींच कर ॥ १११ ॥ १८ माणिक्यराज के शाले  
ने १९ रात्रि के अत्यन्त अन्धेरे में २० अपने पराये का ज्ञान नहीं हुआ २१  
सब राजा घर में ही बिना प्राण होकर गिरे २२ गोड़

उव्वरि इतेहि भोननं भंजिग ईतर भूप पोडे अवनि ॥११

[ दोहा ]

बिनु भूपन अवसेस बल, रचै कहाँलग रारि ॥

आये आलये अप्पनै, ते चखाय तरवारि ॥ ११३ ॥

सिद्धहि जय जवनेसको, दिन्नो यह जगदीस ॥

अगौ आवन अहरयो, उमडि रूपपुर ईस ॥ ११४ ॥

[ षट्पात ]

केदारहि कंगुर दिवाय सुलतान सिकंदर ॥

किय सम्मुह दरकुंच धनी अजन जितन धर ॥

लघु दिल्लियपुर लंघि अग पूरबदिस आवत ॥

बहुरि अज्जनप बहुत भये अड्डे उफनावत ॥

स्फुरसेन प्रथम सैंगरनृपति कालंजरपति रोध के

इतरहु बुलाय ढिगके अधिप दुव २ अवसर ॥ ११५ ॥

कनउजपति वसुदेव २ भूप रठोर सज्ज ॥ ११६ ॥

दतियापति रनमल्ल ३ भंडे भूपति ॥ ११७ ॥

सूकरराज प्रताप ५ तोग ६ गुगैर म ॥ ११८ ॥

मथुरापति मधुपाल ७ कुपित ८ ॥ ११९ ॥

रन तुमुल मास इक १ लग रहयो दईध्व बिजय जवनन

इक संग नृपन पटके अरब भनि उपाय निष्फल भयो ॥ १२० ॥

दोहा

तिलतिल चढि धारन तवहि, समर भयो ॥ १२१ ॥

कालंजर जल चढि कै, निवस्यो त्रिदिव अनेन ॥ १२२ ॥

१ अपने घरों को भागे २ अन्य राजा भूमि पर सोगये (मारेगये) ॥ १२३ ॥

की सेना ३ अपने घर आये ॥ १२४ ॥ ४ वनावनाया (सीधा) ॥ १२५ ॥

६ आर्यों की भूमि जीतकर धनी (स्वामी) होने को ७ शीघ्र ८ ॥ १२६ ॥

भी समीप के राजाओं को बुलाकर १० रात्रि में सोती हुई सेना ११

मारा ॥ १२७ ॥ १२ नगर विशेष १३ सूकरक्षेत्र का राजा १४ घोर संयामो १५

साथ घोड़े उठाये ॥ १२८ ॥ १६ स्वर्ग में बास किया १७ पाप रहित ॥ १२९ ॥

चालुकराज प्रताप२पुनि, नृप गोतम रनमल्ल३ ॥

तोग४बिंद ए४रनतलपं, ठँहि सोये धरढल्लं ॥ ११८ ॥

[ षट्पात् ]

समरं परत फुरसेन करत उज्जल कालंजर ॥

इक्खिं समय नृप इतर घेर तजि तजि पत्ते घर ॥

मरत च्यारि४महिपाल हिंदु कोउ न अड्डो हुव ॥

अज्जनकी अबलां सु भिंठि मिच्छन चंपी भुव ॥

प्रत्यंतराजं जयमत्त पुनि दिन कछु अंतरवेद रहि ॥

तजि पुब्ब सरंनि तिब्बत तरफ चलयो पलटि दरकुंच चहि११९

पूरब जावत याहि लागे जब नटन नज्मी ॥

मुरारि गयो वह मिच्छ रठ्ठं तिब्बत तब रूमी ॥

दिन कितेक तिहिं देस रह्यो बिहरत मृगयारंत ॥

प्रचुर ऐन पुष्कलकं सरन बेधे बन संहत ॥

बल असह पुच्छि गणाकंन बहुरिजनपद चीन सु जातभे ॥

इत उतहु बैठि पोतंन उदधि दिस दिस सुगम दिखातभे१२०

[ दोहा ]

किते कहत दक्खिन दिसहु, पोतंन विरचि प्रयान ॥

गयो सिकंदर दूर लग, इक्खयो उदधि अमानं ॥ १२१ ॥

भयकारक अगौ भ्रमनं१, बहु जलसत्त्व२बिलोकि ॥

३ भूमि की ढाल थे सोरगिरकर १ रणशय्या में सोये ॥ ११८ ॥ ४ युद्ध में ५ समय देखकर ६ आयों की भूमि रूपी ७ स्त्री को म्लेच्छों ने मिलकर द-  
बाई ८ म्लेच्छ देश का राजा कुछ दिन ९ अन्तर्वेद (गंगायमुमा के बीच में रहा १० पूर्वदिशा के मार्ग को छोड़कर ॥ ११९ ॥ ११ ज्योतिषियों ने इ-  
सको पूर्व में जाने से मना किया तब १२ वह रूम का बादशाह मुरझ कर तिब्बत के १३ राज्य में गया १४ शिकार में रत होकर १५ बहुत १६ हरिण और १७ कस्तूरिये हरिणों (गन्धमुगों) को १८ ज्योतिषियों को फिर पूछ कर १९ चीन देश में गया २० नावों में बैठकर २१ समुद्र को सुगम दिखादिया ॥ १२० ॥ २२ नौकाओं में बैठकर गमन करके २३ अमाप (प्रमाण रहित) देखा ॥ १२१ ॥ २४ जल के भँवर (गोलाकार फिरना) २५ जल के जीव ॥ १२२ ॥

मग वह जान्यो कालमुख, रह्यो सबन तब रोकि ॥१२२॥

[ षटपात् ]

मुरतबेर नल इक्क१कांत अयमय बनवायो ॥

पारद जिहिं बिच पूरि प्रथित तिहिंठाम रुपायो ॥

सालभंजिका इक्क१रुचिर ताके सिर रक्खिय ॥

चरननसों भुजअंतकठिन कलजंत्र तत्थ किय ॥

जब आत निकट बाडवज्वलन वह रसेंद्र तब उच्छलत ॥

तसे जोर आनि जिम जिम लगत तिगतिम पुत्तलि कर हलत ॥१२३॥

[ दोहा ]

यह प्रबंध करि मिच्छ वह, चलि आयउ पुनि चीन ॥

सुनी खबर तहँ सदनकी, कलि रूसिन जिम कीन ॥१२४॥

[ सौराष्ट्री ]

( दोहा )

नोसावा जिहिं नाम, सो बेगम याकी पकरि ॥

धैकि लैगो निज धाम, मुलक रूसको मिच्छपति ॥१२५॥

सु सुनि सिकंदरसाह, सजवँ कुंच करि चीन सन ॥

रूस अटक नदि राह, गंजन आरि बल जुतगयो ॥१२६॥

रूसी बहु हनि रारि, देस जरि करि छार दुत ॥

पीछे फिरते समय? लोहे का मनोहर नल बनवाकर उसमें २ पारा भर दिया वह ३ प्रसिद्ध नल वहाँ पर रुपवा दिया उसके ऊपर एक ५ सुन्दर ४ पुतली रख दी ६ कल यंत्र लगा दिया (कल का यन्त्र कहने का प्रयोजन यह है कि आप से आप चलने वाला यन्त्र) ७ बड़वाग्नि जब समीप आवे तब वह ८ पारा उफनता है ९ उस (पारे का) जोर ज्यों ज्यों लगे त्यों त्यों उस पुतली का हाथ हिलता है वह यह जनाता है कि इधर कोई मत आओ ॥ १२३ ॥ लसियों ने रूम में जाकर ११ युद्ध किया वह अपने १० घर की खबर सुनी ॥ १२४ ॥ १२ क्रोध करके १३ म्लेच्छपति आर्यावर्त के बाहर जितने रहनेवाले हैं उन सबको प्राचीन ग्रन्थ-कारों ने म्लेच्छ और यवन लिखे हैं इसी कारण से इस ग्रन्थ में भी अन्य देशवासियों के लिये ये शब्द लगाये गये हैं ॥ १२५ ॥ १४ शीघ्र ॥ १२६ ॥ १५ भस्म करके १६ शीघ्र ॥ १२७ ॥

लायो गृह निज नारि, जो प्रसारि जिततित जसहिं॥१२७॥

दोहा

इत संभर रानी चउ४हि, सुनि मृत नाहर१३४सूर ॥

गई लिदिवे करि सहगैमन, पति सेवन मतिपूर ॥१२८॥

भूप मुहुकर्मा१३५भयो, छेम संभर धारि छत्र ॥

सिक्खयो सब गुन जैनक सम, मति१नय२धर्म३अमत्र१२९

किय कुकृत्य केदार जो, अभिधा धरि उपचार ॥

अनुचित कर्महिं जग अवहु, कहतजात केदार॥१३०॥

गयो जबहि जवनेस गृह, रन तव रचि अनुरूप ॥

केदारहु किन्नों कुरांप, भीम सिंधुपति भूप ॥१३१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो१ तृतीय ३ राशौ

वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने माणिक्यराज१३४प्रतिशरदलोहाऽभि

सरणपुनर्नातिशाकम्भरराज्यवर्द्धनद्वितीयद्वितीयाऽऽशावरी १३४।२

तृतीयजयमा१३४।३चतुर्थसीतो१३४।४पथमनप्रतिशिविरपुर१ग्रामा

२ सती होकर १ स्वर्ग गई ॥ १२८ ॥ ३ समर्थ ४ पिता के समान ५ पात्र ॥ १२९ ॥ लाहोर के राजा के ६ दान ने यह बुरा कार्य किया इससे ८ व्यवहार में उसी ७ नाम को धारण करके अनुचित कार्य करने में ९ केदार कहाजाता है अर्थात् अनुचित कार्य करने की अवस्था में राजपूताना में अब तक यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि "ओ केदारो क्यों कर पार जासी" इसका भावार्थ यह है कि लाहोर के राजा केदार ने सिकंदर को बुलाकर अपनी जाति का नाश किया था ऐसे यह पुरुष भी करता है अथवा केदार के समान अधम काम छेड़ा है सो कैसे पूर्ण होगा ॥१३०॥ सिकंदर अपने घर को चलागया जिस पीछे सिन्धु देश के राजा भीम ने अपने सहस्र(भयंकर)युद्धरचके केदार को भी१०मारलिया॥१३१॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चट्टवाण वंशवर्णन में माणिक्यराज का प्रति शरद ऋतु में शस्त्र पूजा करके शत्रुओं का विजय करना, और प्राप्त हुए सांभर के राज्य को बढ़ाना, द्वितीय विवाह में दूसरी आशावरी तीसरी जयमा चौथी सीता से विवाह करना, प्रति मुकाम पुर ग्राम आदि ब्राह्मण और क्षत्रियों को देना, अकृतब्रह्म सुनि का मृत के वंश को आप देना, और श्रेष्ठ प्रकार से आराधन करके पार्वती



२ऽऽदिबिप्र १ पौराणिका २ऽऽद्यर्पणाऽकृतव्रणसूतसन्ततिशपनस  
 माराधितसाम्बशिवसेविततद्वृषभदत्तवरपौराणिकाऽऽर्यमित्रपुनः  
 स्ववंशवर्द्धनसमाससूचनसमुपयतसीतश्वाशुर्यशुभशक्तदान्तलाहो-  
 रराजकेदारमत्सरिकतद्देशचतुष्क ४ समुद्धरणजयमल्लादि ६ भूसु-  
 जङ्गनिपातनमुहुःकर्मा १३५ दिसम्भरकुमारदशको १० द्रवनक  
 हुरेशजल्हणदोर्दमितपलायितकेदारसमात्तरूमयूनानिसिकन्दरप्र-  
 त्यन्तेन्द्रसमाव्हानसम्भर १ यादवा २ऽऽद्याऽऽर्यनृपजल्हणसहा-  
 य्यकराणारूमप्रेषितपरिणीतकेदारदुहितृकसिकन्दरयुद्धाऽभिसरणा  
 प्रतिहाराऽचलभानुप्रतियुद्धप्रारब्धविक्रमाऽऽर्यभूपसमूहभेदनकर्णा  
 गोकुलचन्द्रा २ऽऽदिभूरिभूमीशपरस्परसमापनम्लेच्छराडार्यावर्तसम  
 भिसरणापुनःसंसृष्टसम्पातवहुनृपमारणा १ विजयन २ कृताने  
 ककौतुकसम्भुक्तचीनादिविषयविभवप्रकुपितगतयवनेन्द्ररूसरा-  
 गिनपातनदग्धतद्देशरूपराजपत्नीप्रत्यानयनमाणिक्यराज १३४रा-  
 ज्ञीचतुष्क ४ सहगमनमुहुःकर्म १३५ शाकम्भराऽधिपत्यप्रापणा स  
 प्तषष्ठितमो मयूखः ॥ ६७ ॥ आदितो नवकोत्तरशततमः ॥ १०९ ॥

सहित-शिव की सेवा करना, और शिव के वृषभ के दिये हुए वर से पौरा-  
 णिक आर्यमित्र का फिर अपने धंश को बढ़ाने की संक्षेप से सूचना, विवाही  
 है सीता जिसने ऐसे सुसरे का शुभ करने में समर्थ और लाहोर के राजा केदार  
 को दमन करनेवाले चहुवाण का उस (स्वसुर) के चार देशों को निकालना,  
 जयमल्ल आदि राजाओं को मारना, चहुवान राजा के मुहुःकर्मा आदि दश  
 पुत्रों का जन्म होना, कांगुरा के पति जल्हण के मुर्जा से दंडित होकर  
 भागे हुए केदार का ले ली है रूम जिसने ऐसे यूनानी म्लेच्छ देश के पति  
 सिकंदर को बुलाना, चहुवान और यादव आदि आर्य राजाओं का जल्ह-  
 ण की सहायता करना, केदार की पुत्री से विवाह करके उसको रूम भेज  
 कर सिकंदर का युद्ध को चलना, प्रतिहार अचलभानु से युद्ध प्रारंभ करना,  
 विक्रम का आर्यभूषों के समूह को भेदना, कर्ण गोकुलचन्द्र आदि बहुत रा-  
 जाओं का परस्पर कटना (समाप्त) होकर म्लेच्छराजा का आर्यावर्त में  
 आना, फिर रचा है समूह जिन्होंने ऐसे बहुत राजाओं को मारना और  
 विजय करना, अनेक कौतुक करके चीन आदि देशों के वैभव को भोगकर  
 क्रोध करके गये हुए यवनेन्द्र (सिकंदर) का रूस के बादशाह को मारना,

इति श्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमयमत्तमिलि-  
दमुखरितचरणचिन्दिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचा-  
हुवाणचूडामणिभारतीभागधेयद्वोपटङ्गिमहाराजाऽधिराजमहा-  
रावराजेन्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽज्ञयागीर्वाणागीरादिषड्भाषावेशसु-  
भ्रभुजङ्गकाव्याऽकूपारकर्णधारवीररसविग्रहपौराणिकवंशविरो-  
चनचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डा-  
ऽशुचण्डीदानाऽत्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्लविहितवंशभास्करे म-  
हाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयो राशिः समाप्तः ॥

उसके देश को जलाकर रूपराज नामक स्त्री को पीछी लाना, माणिक्यराज  
की चारों रानियों का सती होना, सुहुःकर्मा का सांभर का पति होने का  
सङ्गसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥ और आदि से एक सौ नव मयूख हुए ॥  
श्रीमान्, सब राजाओं के मुकुटों में रहे हुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद (पु-  
ष्परस) रूप मय मे मस्त हुए अमरों से शब्दायमान चरण करके चिन्ह यु-  
क्त किये हैं शशुओं के मस्तक जिन्होंने, बुंदीपुरी रूपी स्त्री के विलासी, च-  
हुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से  
कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महा-  
रावराजेन्द्र श्रीरामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृतभाषा आदि छै भाषा रु-  
पी गणिकाओं के पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये), वीरमूर्ति,  
विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के अमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले,  
चारणगण के सूर्य, चण्डीदान के पुत्र मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि  
सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण में तृतीय राशि  
समाप्त हुआ ॥

इति श्री-नीतिनिपुण-बुद्धिबिशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्म-  
मूर्ति-वीर-वदान्य-सोदायारहठ-चारणकुलाऽवतंस-शाहपुराप्रतोलीपात्र-सु-  
योग्यपितुरऽचनाडसिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याऽज्ञारनामजनन्याऽप्राप्तप्रसव-  
पालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः कसरीसिंह  
किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना, कविकोविदिनजमातुल-  
कविराज-रयामलदासादाऽऽप्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्वर्णसम्पन्न-विद्व-  
न्शिरोमणि-परमवैष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽवह-  
यगुरोराऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुरा-  
धिप-राजाधिराजोपटङ्गि नाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-

रघुवंशीय-गुहिलोत्त- मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महाराणा सज्जनसिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा-फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽस्तीवदान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि- तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालक-मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहवर्म्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तवसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-द्वारहठ-कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां तृतीयो राशिः समाप्तः ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार (दातार) सोदा वारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नंग[ दस्तूर] लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता औनाह (अनम्) सिंह के पुत्र, पण्डिता शङ्कारबाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, अष्ट शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किशोरसिंह और जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमान् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणावत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदय पुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की सन्मुखिवाले महाराणा फतहसिंह वर्म्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवन्तसिंह वर्मा से पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि द्वारहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में तृतीय राशि समाप्त हुआ ॥